ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण



डॉ॰ मक्खनलाल मिश्र

श्री गणेशाय नमः

ब्राह्मणोत्पत्ति-दर्पण

लेखक

डा० मक्खनलाल मिश्र "मैथिल"

श्री श्री जगद्गुरु शङ्कराचार्य महासंस्थानम् दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठम् शृङ्गेरी

PRIVATE SECRETARY
To His Holiness Sri Jagadguru Shankaracharya
Dakshinamnaya Sri Sharada Peetham
SRINGERI-577139 (Karnataka)



Camp : शृङ्गेरी
Ref : D 1/ 1991
Date : 27/10/2005

श्रीराधेश्याम गुप्ता जी,

आपके द्वारा प्रेषित '**ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण**' पुस्तक प.पू.जगदगरु महाराजश्री के सान्निध्य में समर्पित की गयी। महाराजश्री ने पुस्तक अवलोकन कर प्रसन्नता व्यक्त की है।

अनादि सृष्टिको सुरक्षित रखने के निमित्त तथा सृष्टि के समस्त प्राणियों के कल्याणार्थ विहित कर्माचरण के विधि-विधान और नियम-अनुशासन निश्चित करनेवाले सृष्टिकर्ता परमेश्वर के निःश्वासरूप वेद ऋषिमुनियों द्वारा श्रुत होकर श्रुति कहलाते हैं जो अपौरुषेय हैं एवं हमारे लिए परमप्रमाण हैं। इनके ही मार्गगामी 'स्मृति' या धर्मशास्त्र और पुराण तत्पश्चात् के प्रमाण हैं। हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्परा की या संबद्ध किसी और विषय की मीमांसा के आधारभूत स्थान ये ही हैं। हमारे शास्त्रों में ब्राह्मण के छः धर्म बताये गये हैं - यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह। इन धर्मो का सही रूप से पालन करने वाले ब्राह्मणों के कारण ही हमारा ज्ञानभण्डार आज तक सुरक्षित है। चाहे कारण कुछ भी हो, जिन लोगों ने अपने धर्म का पालन नहीं किया, वे ज्ञान से वंचित रहे और उनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। वसिष्ठस्मृति में बताया गया है-

ब्राह्मणस्य तु देहोऽयं नोपभोगाय कल्पते।
इह क्लेशाय महते प्रेत्यानन्तसुखाय च।।

इसके रहस्य को जानने से श्रेय का मार्ग अपने-आप सरल हो जाता है। हमारे देश की महान परम्परा और सर्वत्र गौरवप्राप्ति का यही कारण है।
मनु ने कहा है -

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

यह प्रसन्नता का विषय है कि डा. मक्खनलाल मिश्र मैथिल ने 'ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण' पुस्तक परिश्रमपूर्वक लिखकर प्रशंसनीय कार्य किया है और आप ने इसका प्रकाशन करके अपनी निष्ठा प्रदर्शित की है। प.पू. जगद्गुरु महाराजश्री के आशीर्वाद इस पत्र के द्वारा सूचित कर रहा हूँ तथा उनके अमृत हस्तों से प्रदान किये गये श्रीशारदा-चन्द्रमौलीश्वर प्रसाद भेज रहा हूँ।

दक्षिणामूर्ति
इति

Sri Radheyshyam Gupta,
Neeta Prakashan
A-4, Ring Road, South Extn., Part-1
New Delhi-110049
Ph. : 51648400, 24636010

'विषयानुक्रमणिका'

"स्तुति"

"सरस्वत्यै नमः"

जय जय जगजननी जगत् मात माँ सरस्वती,
हो के नतमस्तक "लाल" तुमको मनाते हैं।
होगा कष्ट भारी माँ क्षमा करना पुत्र जानि,
लेखनी ले निज हाथ आज सेवक बुलाते हैं ॥
ब्रह्म लोक क्षणिक त्यागि-त्यागि पिता-ब्रह्मा को,
माँ सोवती जो होय तो जागि तेरे सुत जगाते हैं।
ज्ञानी गुणी साज-बाज गायक की सभा में होय,
तो दे कें तू तसल्ली आ तेरे गुण गाते हैं॥
हंस की सवारी करि पुस्तक ले वींणा हाथ,
भूसुर की बुद्धि से कलिमल छुड़ाय जा।
हृदय है समुद्र ले बुद्धि सीप जानिके,
स्वाँती बूँद वनिके माँ जा सीप में समाय जा॥
विप्रों को लगी है आश ध्यान तेरे चरणों में,
शक्ति का प्रसार करि भेद तू मिटाय जा।
कोटि-कोटि नमन् करें विप्रन को दे जा ज्ञान,
सेवकों के कंठ में आ माँ वेद-श्रुति गाय जा॥

डा0 मक्खनलाल मिश्र "मैथिल"

ब्रह्मणों की आराध्य



माँ सरस्वती



लेखक : डॉ० मक्खनलाल मिश्र (मैथिल)

ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण

1. मङ्गला चरण

श्लोक–श्री गणेशाय नमः । वृष वाहनं विध्ने शौ शिखावाहासरस्वतीम्। स्वेष्टं श्री महीदेवठाकुर नत्वा पितरं तथा श्रील्होरे सिंह ठाकुर नामानं॥ शाखा मध्यान्दिनीय श्री कश्यप गोत्र ओइनवार मैथिल कुलोत्पन्नौ आत्मज–डा. मक्खनलाल ठाकुरः करोत्यत्र ब्राह्मणोत्पत्ति वर्णनम्। ब्रजस्थले मथुरा नगरे वेद व्यासस्य कृष्णस्य जन्माचस्थलीः। यं मथुरा नगरी मम् तत्र जनिर्ममम्। अस्य पुस्तिका उत्तर स्थिति ब्राह्मणोत्पत्ति विशिष्ट रुपेण वर्णन करिस्यामि च दक्षिण दिशि स्थिते ब्राह्मणोत्पति संक्षेपेण वर्णन करोति॥

श्री गणेशाय नमः। ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं। अब लिखेता पुस्तक के प्रारम्भ में मंगला चरण करते हैं। जिस देव का वाहन बैल है, ऐसे जो शिव हैं, तथा जो विद्यापति हैं, सर्व विध्नों को नष्ट करने वाले हैं, श्री गणपति गणेश जी, उनको और जगत–माता सरस्वती जी जो बुद्धिहीनों को भी सुबुद्धि प्रदान करती हैं। उनको और पूर्वज श्री महीदेव ठाकुर जी, पिता श्री ल्होरेसिंह ठाकुर जी उनको नमस्कार करके शाखा मध्यान्दिन। कश्यप गोत्रीय ओइनवार मैथिल ब्राह्मण, पं0 श्रील्होरेसिंह ठाकुर उनका पुत्र डा0 मक्खनलाल मिश्र, मैं इस पुस्तक में ब्राह्मणों की उत्पत्ति, शाखा सूत्र, ऋषि गोत्र, प्रवर आदि का वर्णन करता हूँ। उत्तर प्रदेश में विख्यात मथुरा नगरी यमुना नदी किनारे स्थित है। दूसरे यह स्थान ब्रज़क्षेत्र चौरासी कोस के नाम से विख्यात है। लेखक का मथुरा समीप मिढ़ावली गांव में जन्म हुआ, इसी मथुरा वृजक्षेत्र में श्रीकृष्ण भगवान तथा भगवानवेदव्यास जी का अवतार हुआ, इसी ब्रजक्षेत्र में भगवान बलरामजी व परशुराम जी का अवतार हुआ था। इस पुस्तक में उत्तर दिशि स्थित ब्राह्मणों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

नोट - हमारे वंश का आस्पद ठाकुर है, लेकिन वृज प्रवास में मिश्र कहाये गये, इसलिये हम लोग मिश्र टाइटल नाम के सामने लगाते हैं।

2. सृष्टीरचना

'ब्राह्मण'

दक्षिण दिशि वासी ब्राह्मणों का वर्णन संक्षेप में किया है ।

श्लोक-सुविस्तरतया जाति विवेक स्नाऽसारिता। सकर जातिनां विशेषाद्यत्र निर्णय॥
अस्य पुस्तकः ब्राह्मणस्य जातिरेका प्रकीर्तिता। उक्त च भागवते-पुरूपस्य मुखं ब्रह्मक्षत्रमेतस्य बाहव॥ उर्वो वैश्यो भगवतः पद्भ्यांशूद्रोअध्यजायत।
अन्यद्विकल्पश्च-ब्रह्माऽसृजत्स्वमुखतो युष्मा नात्म परीप्सया। छन्दो मयतपोविद्या योग युक्ता नलंपटान् स्मृतो मुख बाहू रुपञ्जाता स्तस्य वर्ण यथाक्रमम्।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्त्तयत॥ श्रुतिश्च-ब्राह्मणो
अस्य मुखमासी दित्यादि। एवं पूर्वजातिरेका देशभे दादूद्विधा अभवत॥ गौड़ द्रविण भेदेन तयोर्भेदा दश स्मृताः ।
चतरशीतविप्राश्च दिग्भेदाच्चततो भवन् ॥ युगे-युगे
कार्ययोगात्कृता ब्रह्मादिभिः पुनः । (मार्तण्ड)

संकर जाति के ब्राह्मणों का भी संक्षेप से वर्णन है।

इस पुस्तक में 84 ब्राह्मणों की उत्पत्ति दिखायी है पुराणों में तो बड़ा विस्तार से वर्णन दिया गया है। इसमें मात्र सारांश दिया है, जो आसानी से समझा जा सके। प्रथम सृष्टि के प्रारम्भ में ब्राह्मण का भेद एक था इसके प्रमाण 'श्रुतिस्मृति' व अन्य ग्रन्थों में हैं। सृष्टिकर्ता पुरुप ब्रह्मा ने अपने मुख से उत्पन्न किया, उस समय ब्राह्मण वर्ण का भेद एक ब्रह्मऋपिउत्पन्न किया था। वाद एक के गौड़ और द्रविण दो हुए, दोंनो दो अलग-अलग दिशा और देशों में रहे उसमें दो भेद हो गये, बाद में दो के दश भेद हुए, और दश भेद के 84 भेद हुए। आगे सन्तति वृद्धि हुई और लगभग दो सौ अस्सी ब्राह्मण के लेख प्रमाणात मिले हैं। जो स्थान भेदों के आधार स्वरूप हैं विस्तार वर्णन प्रस्तुत किया है।

फिर युग-युग के प्रभाव से जैसे सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलयुग में ब्रह्मादिक देवताओं ने आदि शब्द करके वशिष्ट, गौतम कण्व, वाल्मीकि आदि ऋपिश्वरों ने, और राजा जयसिंह, राजा मानधाता आदि ने अपने कार्य परत्व करके ब्राह्मण स्थापित किये। तथा कितने ही ब्राह्मण ब्रह्मदेव के द्वारा समय-समय पर उत्पन्न हुए।

श्लोक-ताः स्थिता देशभेदेषु गौत्र शून्याश्च शौनकः।

अथदशभिदा ब्राह्मणः कर्णाटिकाश्च तैलंगा द्रविणा महाराष्ट्र काः ॥ गुर्जराश्चे ति पंचैव द्रविणा विन्ध्यदक्षिणे। सारस्वताः कान्यकुब्ज गौड़ा उत्कल मैथिलाः ॥ पंच गौड़ा इति ख्यातातु विन्ध्यास्योत्तर वासिनः। अथ चतरशीति ब्राह्मण नामान्याह डा0 मक्खनलाल मिश्र चतरशीति विप्राणाम् नामानि प्रवदाम्यह्॥ गौड़ द्रविड़ मिश्राणां तथा अन्येषां विशेषतः।

(ब्राह्मण उ0 मार्तण्ड)

अर्थ- मुख्य अब दश प्रकार के ब्राह्मणों के नाम कहता हूँ।

1. तैलंगा 2. महाराष्ट्रा 3. गुर्जर 4. द्रविण 5. कर्णाटिका यह पांच द्रविण कहे जाते हैं, ये विन्ध्याचल के दक्षिण में पाये जाते हैं। तथा विन्ध्यांचल के उत्तर में पाये जाने वाले या वास करने वाले ब्राह्मण 1. सारस्वत 2. कान्यकुब्ज 3. गौड़ 4. मैथिल 5. उत्कल ये उत्तर के पंच गौड़ कहे जाते हैं। अब 84 जाति के ब्राह्मणों के नाम लिखता हूँ। वैसे ब्राह्मण अनेक हैं जिनका वर्णन आगे लिखा है। ऐसी संख्या मुख्य 115 की है। शाखा भेद अनेक हैं। इनके अलावा संकर जाति के ब्राह्मण अनेक हैं। यहाँ मिली जुली उत्तर व दक्षिण के ब्राह्मणों की नामावली 115 की दे रहा हूँ। जो एक से दो और दो से पाँच और पाँच से दश और दश से 84 भेद हुए हैं, फिर उत्तर व दक्षिण के ब्राह्मण की संख्या शाखा भेद से दो सौ तीस के लगभग हैं। तथा- और भी शाखा भेद हुए हैं, जो लगभग तीन सौ के करीब ब्राह्मण भेदों की संख्या का लेखा पाया गया है।

3. 'उत्तरांचल व दक्षिणी ब्राह्मणों के भेद'

84 ब्राह्मणों की 31 शाखा कुल 115 ब्राह्मण संख्या

1. गौड़ ब्राह्मण
2. मालवी गौड़ ब्राह्मण
3. श्रीगौड़ ब्राह्मण
4. गंगापुत्र गौड़ ब्राह्मण
5. हरियाणा गौड़ ब्राह्मण
6. वशिष्ठ गौड़ ब्राह्मण
7. शोरभ गौड़ ब्राह्मण
8. दालभ्य गौड़ ब्राह्मण
9. सुखसेन गौड़ ब्राह्मण
10. भटनागर गौड़ ब्राह्मण
11. सूरजध्वज गौड़ ब्राह्मण (शोभर)
12. मथुरा के चौवे ब्राह्मण
13. वाल्मीकि ब्राह्मण
14. रायकवाल ब्राह्मण
15. गोमित्र ब्राह्मण
16. दायमा ब्राह्मण
17. सारस्वत ब्राह्मण
18. मैथिल ब्राह्मण
19. कान्यकुब्ज ब्राह्मण
20. उत्कल ब्राह्मण
21. सरवरिया ब्राह्मण
21. पाराशर ब्राह्मण
22. सनोडिया या सनाड्य ब्राह्मण
23. मित्र गौड़ ब्राह्मण
24. कपिल ब्राह्मण
25. तलाजिये ब्राह्मण
26. खेटुवे ब्राह्मण
27. नारदी ब्राह्मण
28. चन्द्रसर ब्राह्मण
29. वलादरे ब्राह्मण
30. गयावाल ब्राह्मण
31. ओडिये ब्राह्मण
32. आभीर ब्राह्मण
33. पल्लीवास ब्राह्मण
34. लेटवास ब्राह्मण
35. सोमपुरा ब्राह्मण
36. कावोद सिद्धि ब्राह्मण
37. नदोर्या ब्राह्मण
38. भारती ब्राह्मण
39. पुष्करर्णी ब्राह्मण
40. गरुड़ गलिया ब्राह्मण
41. भार्गव ब्राह्मण
42. नार्मदीय ब्राह्मण
43. नन्दवाण ब्राह्मण
44. मैत्रयणी ब्राह्मण
45. अभिल्ल ब्राह्मण
46. मध्यान्दिनीय ब्राह्मण
47. टोलक ब्राह्मण
48. श्री माली ब्राह्मण
49. पोरवाल बनिये ब्राह्मण
50. श्री माली वैश्य ब्राह्मण
51. तांगड ब्राह्मण
52. सिंध ब्राह्मण
53. त्रिवेदी म्होड ब्राह्मण

54. इग्यर्षण ब्राह्मण
55. धनोजा म्होड ब्राह्मण
56. गौभुज ब्राह्मण
57. अट्टालजर ब्राह्मण
58. मधुकर ब्राह्मण
59. मंडलपुरवासी ब्राह्मण
60. खड़ायते ब्राह्मण
61. बाजरखेड़ा वाल ब्राह्मण
62. भीतरखेड़ा वाल
63. लाढवनिये ब्राह्मण
64. झारोला ब्राह्मण
65. अन्तरवेदी ब्राह्मण
66. गालव ब्राह्मण
67. गिरनारे ब्राह्मण
68. गुग्गुले ब्राह्मण
69. मेरठवाल ब्राह्मण
70. जाम्बु ब्राह्मण
71. वाइड़ा ब्राह्मण
72. कड़ोल ब्राह्मण
73. ओदुवे या दुवे
75. वटमूल ब्राह्मण
76. श्रृंगालभाट ब्राह्मण
77. गौतम ब्राह्मण
78. पाल ब्राह्मण
79. सोताले ब्राह्मण
80. सिरापतन मोताल ब्राह्मण
81. महाराणा ब्राह्मण
82. चितपाक ब्राह्मण
83. कराष्ट ब्राह्मण
84. त्रिहोत्री या अग्निहोत्री ब्राह्मण
85. दशगोत्री ब्राह्मण
86. द्वात्रियदश ब्राह्मण
87. पात्तिय ग्राम ब्राह्मण
88. मिथिनहार ब्राह्मण
89. वैलजीग्राम ब्राह्मण
90. सौराष्ट् ब्राह्मण
91. हेव ब्राह्मण
92. केरल ब्राह्मण
93. तुलव ब्राह्मण
94. नेतरु ब्राह्मण
95. यवराद्र ब्राह्मण
96. कंदाव ब्राह्मण
97. कोढ़व ब्राह्मण
98. शिविल्ली ब्राह्मण
99. दशावाल ब्राह्मण
100. भटमेवाड़े ब्राह्मण
101. तिवारी मेवाड़े ब्राह्मण
102. चौरासी या चौरसिया ब्राह्मण
103. नागर ब्राह्मण
104. वड़नागर ब्राह्मण
105. चित्तौडे नागर ब्राह्मण
106. प्रश्नोरे ब्राह्मण
107. भारड़ नागर ब्राह्मण
108. विसनागर ब्राह्मण
109. साठोदरे ब्राह्मण
110. त्यागी ब्राह्मण
111. कर्णाटक ब्राह्मण
112. तैलगू ब्राह्मण
113. द्रविण ब्राह्मण
114. गुर्जर ब्राह्मण
115. महाराष्ट्रा ब्राह्मण

इस प्रकार उत्तर के 84 और 24+17=41 शाखा मिलाकर 115 और अन्य शाखा हुए इसी प्रकार से दक्षिण के 115 ब्राह्मण और शाखा भेद हुए हैं। सभी जगह पर आजकल सभी ब्राह्मण पाये जाते हैं। आगे इनकी शाखायें हुई हैं।

श्रेष्ठ ब्राह्मणं उत्तर क्षेत्र स्थितां
श्लोक - केवला: शिवभक्ताश्च सर्व वुद्धि विशारदा: ।
तस्य चोत्तर भागे तु उत्तम क्षेत्र राजसा: ॥

अर्थ - उत्तर के सभी ब्राह्मण देव भक्त हैं और राजसी प्रवृती धारण करते हैं। इसलिये उत्तरांचल का ब्राह्मण सात्त्विक और सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण माना जाता है। अन्य देशवासी ब्राह्मण या दक्षिण का आचार सदाचार हीन होता है। देश भाव से दूषित भाव सदाचार भाव शास्त्रानुसार नहीं हुआ करता है। यह शास्त्रों का प्रमाण है।

श्लोक - तत्सर्व निष्फलं ज्ञेय हविर्भस्म हुतं तथा।
सदाचार परोधीरो निरालस्य: स्वकर्मणि॥

वेद शास्त्रेषु सम्पन्न: शान्तो दान्तो जितेन्द्रिय:।
श्रोत्रियो मम् भक्तश्च पात्रभूतोद्विज: स्मृत:॥

शीलं संवसनाज्ज्ञेयं शोचं संव्यवहारत:।
प्रज्ञा संकथनाज्ज्ञेयं त्रिभि: पात्रं परीक्ष्यते॥

यज्ञवल्क्य:सर्वस्यप्रभवोविप्राश्रुताध्ययनशालिन: ।
तेभ्य: क्रियापरा श्रेष्टास्तेभ्योऽप्यध्यात्म वित्तमा ॥

न विद्या केवलाया तपसा वापि पात्रता ।
यत्र वृत्तमिमे चोभेतद्धि पात्रं प्रचक्षते ॥

(ब्राह्मण उ0 मार्तण्ड)

अर्थ - उत्तम प्रकृति के ब्राह्मण अपने आचार में सम्पन्न हैं, अपने ब्रह्मकर्म में आलस्य नहीं करता है। वेदशास्त्र सम्पन्न है, जितेन्द्रिय और किसी प्रकार का व्यसनी नहीं है, देवभक्त है, उसे सत्पात्र ब्राह्मण कहा जाता है। इसलिये शान्ति वाला हो जितेन्द्रिय हो शास्त्र, स्वकर्म करने वाला हो, ज्ञानी भक्त हो ऐसा ब्राह्मण श्रेष्ट और सत्पात्र कहने के योग्य होता है। इसी प्रकार का ब्राह्मण संसार में ख्याति प्राप्त करता है।

4. 'ब्राह्मण महिमा'

श्लोक- ब्राह्मण महिमा-पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि तीर्थानिसागरे।
सागरे सर्व तीर्थानि दक्षिणे पादे वेदास्तन्मुख माश्रिताः ॥

सर्वाङ्गस्वश्रिता देवाः पूजितास्ते तदर्चया।
अव्यक्त रुपणोः विष्णोः स्वरूपं ब्राह्मणां भुवि ॥

नावमान्या नो विरोध्या कदाचिच्छुभ मिच्छता।
ब्राह्मणों नाम किं तत्राहवज्रसूच्यामि ॥
ब्राह्मणः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चत्वारो ।
वर्णास्तेषां वर्णानां ब्राह्मणे गुरुरित ॥
वचनात् निरुपितं स्मृति भिरुक्तं तत्र।

(विष्णु पुराण)

अर्थ - अब मैं उत्तम ब्राह्मणों की महिमा का वर्णन करता हूँ। पृथ्वी पर जितने तीर्थ हैं। वे नदी में मिलते हैं। नदी सब समुद्र में मिलती हैं। समुद्र में जितने तीर्थ हैं, वे सब ब्राह्मण के बायें चरण में हैं। और चारों वेद उसके मुख में हैं, और अंग में सारे देवता आश्रय करते रहते हैं। इसलिये ब्राह्मण की पूजा करने से सभी देवताओं की पूजा होती है। पृथ्वी पर जो ब्राह्मण हैं, विष्णु स्वरूप हैं, इससे जिसको कल्याण की इच्छा होवे उसे ब्राह्मणों का अपमान नहीं करना चाहिए न द्वेष करना चाहिए चारों वर्णो में ब्राह्मण मुख्य है।

सब वर्णों का गुरु है। वैसे दक्षिणी ब्राह्मण स्वाध्यायशील, वेदवक्ता तो रहे हैं, परन्तु माँस भक्षी होने के कारण उत्तम ब्राह्मण नहीं माना जाता है। श्रेष्ठ ब्राह्मण उत्तर क्षेत्र का ही माना जाता है, क्योंकि ये सात्त्विक शाकाहारी होते हैं।

'ब्राह्मण किं भवत्येव'

श्लोक -अन्यच्च। कर्म ब्राह्मण न भवत्येव ।

अन्यच्च। जाति ब्राह्मण न भवत्येव॥

जाति ब्राह्मण इति चेतर्हि अन्य जातौ समुभ्द वा वहवो महर्षयः संति ऋष्य श्रृगो मृग्या जातः कौशिको कुशस्तंजात् गौतमः शशिपृष्ठे वाल्मीकिर्वबल्मीक्यां व्यासः कैवर्तकन्यायां पाराशरश्चांडालिगर्भोत्पन्नः वशिष्ठो वैश्यायां विश्वामित्रः क्षत्रियायांस्त्यः कलसज्जातो मांडव्यो मांडुकिगर्भोत्पन्नः मातंगो मातंगी पुत्रः अनुचरो हस्थिनीगर्भोत्पन्नः भारद्वाज शूद्रीगर्भोत्पन्नो नारदो दासी पुत्रः इति श्रूयतेपुराणे तेषा

जाति। अन्यच्च। धर्माद्ब्राह्मण न भवत्येय। इति चेतर्हि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादयो अपि कन्यादान, गजदान, हिरण्य दानं, महषी दान, पृथ्वीदानदिदातारो वाहवः ।

किन्तु करतलामलकमिव पश्यत्य परोक्षे ब्रह्मकृतार्थतया काम, राग, द्वेषादि रहित शमदमादि सन्तोष मानमात्सर्य, तृष्णां समोहादि दुष्टार्थ निवृत स एवं ब्राह्मण इत्युच्यते न तु वेषधरः। तथाहित्-जन्मना जायते शूद्रः ततवन्धाद्विजोत्तमः वेदाभ्यासी भवेद्विप्रो ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणो भवेत्। अतरग्व ब्रह्मविदेव ब्राह्मणे नान्योऽस्तीति निश्चय॥

किन्च विप्रो वृक्षो मूलकं तस्य संध्या वेदाः शाखा धर्म्म कर्माणि पत्रम्। तस्मानंमूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूलेनेव पत्रं न शाखाः। (ब्राह्मण उ0 मार्तण्ड, व मनुस्मृति)

अर्थ-कर्म करने से ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं कहा जाता है। न जाति से क्योंकि अन्य जाति में उत्पन्न हुए बहुत से ऋषिश्वर हैं। जैसे शृंगी ऋषि जो हिरनी से पैदा हुए, कौशिक ऋषि दाव के गुच्छे से पैदा हुए। वशिष्ठ ऋषि वैश्या से पैदा हुए, गौतम ऋषि शशक से पैदा हुए, वेदव्यास जी कुंवारी कन्या से पैदा हुए, पाराशर ऋषि चांडाली के गर्भ से पैदा हुए, भारद्वाज ऋषि शूद्री से पैदा हुए, विश्वामित्र क्षत्राणी से पैदा हुए, नारद जी दासी से पैदा हुए माण्डव्य ऋषि मेंढकी से पैदा हुए, मातंगी ऋषि हथिनी से पैदा हुए, ऐसा पुराणों में लेख है। ब्राह्मण जाति में इनकी उत्पत्ति नहीं है, लेकिन उत्तम ज्ञान, कर्म, बल, तप से ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया है, इस प्रकार जाति से ब्राह्मण नहीं होते हैं। दूसरे धर्म से भी ब्राह्मण नहीं होता, क्योंकि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि बहुत कुछ दान पुन्य करते हैं, गज, घोड़े, पृथ्वी, धन, गौ, कन्या आदि का दाने दे धर्म करते हैं, फिर भी ब्राह्मण नहीं हो पाते हैं। इसलिये धर्म से भी ब्राह्मण नहीं हो सकता है, तो ब्राह्मण होता कौन है, वो मैं आपको वर्णन कर कहता हूँ जो प्रथम तो ब्राह्मण जाति में जन्म ले वेदोक्त संसारयुक्त होके स्वकर्म करे, शांति धारण करे, तमोगुण त्याग दे काम, क्रोध, मोह का त्याग करे, माँस, मदिरा, तृष्णा, ईर्ष्या, हिंसा, निर्दयता आदि रहित होके वेद, वेदाङ्ग का ज्ञान करे, सो ब्राह्मण कहलाने के योग्य होता है। दूसरा कोई ब्राह्मण नहीं कहा जाता है, ऐसा शास्त्रों का कथन है, और ब्राह्मण जो है, वह कल्पवृक्षरूप है। उस वृक्ष की जड़ संध्या है, चार वेद उसकी शाखायें हैं, तथा धर्म, कर्म उसके पत्ते हैं। मोक्ष उसका फल है, इसी कारण बड़े प्रयत्न से मूल की रक्षा करनी चाहिये। अगर जड़ नष्ट हो गयी तो वृक्ष सूख जायेगा अर्थात नियम, धर्म, संध्यावंदन, स्वाध्याय हवन आदि नियमित करना अति आवश्यक है, यह चक्र ग्रन्थ प्रमाण देता है। जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं परन्तु संस्कार ग्रहण करने पर ही ब्रह्मण कहा जाता है। जो ब्राहण संस्कार वेद रीति से बतलाये हैं। उन्हें ग्रहण करने पर ही ब्रह्मण ब्रह्मणत्व आता है।

उत्तर के 1016 ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा

श्लोक - गुर्जरे विषयचास्ति पुरं मनोहरंम् ।
पत्त नारव्यं हि मनुयः सरस्वती नदी तटे॥

तत्रासीत्क्षात्र वंशस्थश्चामुण्डारव्यो नृपोत्तमः ।
अथै कदानदी तीरे चागुतौ मुनिवेष को।
राजवीजाभिथो पुत्रो पूर्व देशस्य भूपते।
गंगायां सलिलं स्कंन्धे वह्मानोक्षणंत्तदा ॥

(मार्तण्ड)

अर्थ–गुजरात देश में सरस्वती नदी के किनारे पर पाटल नामक नगर है। वह पाटल शहर विक्रमी संवत 802 के साल में चायडावन राजा ने वसाया था। उस समय पाटण कहकर बोलते थे, वाद उसके वंश में आठवीं पीढ़ी पर क्षत्रिय वंशी सोलंकी राजा राज्य करता था। इसे चामुण्डा राजा के नाम से भी जाना जाता है। संवत 1053 में उसका प्रमाण जैनमत के 'प्रवन्ध चिन्तामणि' नामक पुस्तक में दिया है। अव एक दिन सरस्वती के किनारे चामुण्डा देवी के महान मन्दिर में पूर्व देश के राजा के दो पुत्र 'राज और वीज' नाम था, दोनों मुनि का वेष धारण करके गंगाजल की कावड़ लेकर आये। इन राज और वीज दोनों राजकुमारों को चामुण्डा राजा ने अपने ही पास रख लिया, और उनकी शादी अपनी पुत्रियों के साथ कर दी स्त्री गर्भवती हुई, उस स्त्री ने अपना पेट पुत्र लालसा से फाड़ लिया, जो एक पुत्र हुआ, ये मूल नक्षत्र में हुआ था, उसका नाम मूल राजा के नाम से विख्यात हुआ। इसी मूलराजा ने एक महायज्ञ किया जो पाटल राज्य के सिद्धिपुर क्षेत्र में रचा था। आगे सारा वृतांत लिखा है इस महायज्ञ में मूलराजा ने ब्राह्मण आमंत्रित कर बुलाये थे तथा अपने कार्य हेतु ब्राह्मणों को मान सम्मान से याजिक वनाया संख्या 1016 ब्राह्मणें की हो गयी।

'पाटल के मूल राजा का महायज्ञ'

श्लोक – गुरूरुवाच। आचारल्लभत्ते धर्ममाचाराल्लभते धनम् ।
सदाचारेण देवत्व मृणित्वं च धरापते ॥
न जातिर्न कुलं राजन्न स्वाध्याय श्रुतं न च।
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव हि करणम् ॥
सृष्टाऽसृजतं पस्तपत्वा विप्रान्निगममुप्यते।
उदीच्या स्थापयामास ते सुरा न तु मानुषा॥
उदीच्या ऋषयः सर्वे सदा स्वाचार बर्तिनः।
भभोः प्रयात् शीघ्रहि उदक खंडे त्वतंद्रिता॥
तत्र वेद वृत्तस्त्रताः कृतोद्वाहाः प्रियेषिणंः ।
अथभूप गणस्ते च नूनं भ्रमण योगतः॥
अपश्यन्नृणि पुत्राश्च तदा प्रोचुश्च सेवकाः ।
नमस्यामो द्विज श्रेष्ठाः श्रृष्वतु प्रार्थना हि नः ।

गुर्जरे विषये चास्ति तीर्थ स्थलसंज्ञकम् ।
वयं संप्रेसिता श्चात्र मूल राजेन भूभुजा॥
युष्मद्दर्शन लाभाय चागतब्यगतों द्विजाः।
सुमेधा उवाच। तेषा वाक्यं द्विजाः श्रुत्वा तीर्थ दर्शन लालसाः॥
विमानेषु समारूह्य प्राययुः श्री स्थल गणेः।
गंगा यमुनायोः संगादि ग्रामं पंचोत्तरं शतम्॥
च्यवनस्याश्रमात्पुण्याच्छतं वै सौमपायनाम्।
सरैव्वा सिन्धु वर्यायाः शतं च धूतपाम्पनाम॥
वेद शास्त्र रतानांच कान्यकुब्ज मैथिल च्छतद्वयम।
तिग्माषु तेजसां तद्वतच्छतं काशिनि वासिनाम्॥
कुरूक्षेत्रा तथा द्वाभ्यामिधिका सप्तसप्ततिः ।
समीयुर्मुनि पुत्राश्च गंगाद्वाराच्छतं द्विजाः॥
नैमिषाच्च समीयुर्वे शतं च क्रंतुवेदिनाम् ।
तथा चैव कुरुक्षेत्रा दूद्विद्वात्रिंशदधिकं शतम् ॥
इत्थं समागता विप्राः सहस्त्राधिकषोडश।

(ब्रा.उ. मार्तण्ड पृष्ठ 112)

अर्थ–गुरुजी ने मूल राजा से कहा हे राजन्! धर्म और धन, देवत्व, ऋषीत्व तथा ये सदाचार रखने से प्राप्त होते हैं। उत्तर के ब्राह्मणों और ऋषियों में जाति, कुल, शास्त्र कारण मुख्य हैं। ब्रह्मा जी ने तपोबल से वेदों की रक्षा करने के वास्ते ब्राह्मणों को उत्पन्न किया है, और उत्तम ब्राह्मणों को जो देव सदृष्य हैं। उन्हें विन्ध्याचल के उत्तरी भाग में स्थापन किया है। गुरु बृहस्पति देवों के गुरु उत्तर दिशा में रहे, तथा दैत्यगुरु शुक्राचार्य दैत्यों के साथ दक्षिण में रहे। इस प्रकार उत्तर–दक्षिण के भेद अलग–अलग हैं। हे राजन् उत्तर के ब्राह्मण वे मनुष्य नहीं हैं देव और ऋषि हैं, हे राजन् उन ब्राह्मणों को राजप्रतिग्रह विष के समान दृष्टि आता है। तुम शीघ्र से उत्तराखण्ड में जायके ऋषिपुत्रों व ब्राह्मणों को सम्मानपूर्वक लिवा लाओ, राजा ने गुरु के कहने के मुताबिक उत्तराखण्ड के लिये दूत ऋषि तथा ब्राह्मणों को बुलाने के लिये भेज दिया। वह दूत जगह–जगह उत्तराखण्ड में ऋषि आश्रमों पर भ्रमण करता हुआ, बुलावा देता हुआ, ब्राह्मण स्थानों से ब्राह्मणों को निमंत्रित किया, और सभी को दूत ने बताया, मूल राजा पाटण का बहुत बड़ा उत्सव है, सिद्धिपुर क्षेत्र में करने जा रहे हैं, आप लोगों को सादर बुलाया है। आप लोग उन्हें दर्शन दें। दूत की यह बातें सुनकर तीर्थ दर्शन के हेतु तथा उत्सव में शामिल होने सभी ऋषि, मुनि शिष्यों सहित उस उत्सव में पहुँचे। प्रयाग क्षेत्र से च्यवन ऋषि के आश्रम से 105 सरयू नदी के किनारे से 100 कान्यकुब्ज देश से 200 काशी से 100 कुरुक्षेत्र से 171 त्रहुत से 132 नैमिसार से 200 ब्राह्मण इस प्रकार संख्या एक हजार सोलह ब्राह्मण एकत्रित

हुए।

राजा ने बड़ा सम्मान किया, धन, रत्न, वस्त्रादि, हाथी, गौ, आदि देना चाहा परन्तु सभी ब्राह्मणों ने कहा, कि है राजन् हमें तेरे उत्सव में शामिल होने तो आये ही थे, परन्तु मुख्य उद्देश्य सिद्धिपुर तीर्थ से था। इसलिये चले आये, हमें इन हाथी, रत्न, रथ, वस्त्रों से क्या प्रयोजन है। तुम इनसे प्रजा का पालन करो। राजा सुनकर चकित रह गया, और उत्तराखण्ड के ब्राह्मणों को सराहने लगा। (प्रमाण मार्तण्ड पुराण पृष्ठ 76 से 80)

इस उत्सव में सभी 1016 ब्राह्मणों ने त्याग किया, . श ऋषियों ने त्याग किया, तो राजा मूल ने प्रसन्न होकर वस्त्र आदि से सम्मानित करते हुये, सभी ब्राह्मणों को उपनाम या पदवी दी। जो निम्न प्रकार से है, जो पढ़ाने वाले ब्राह्मण थे उसे आचार्य कहते हैं उसको उपाध्याय की पदवी दी, जिस ऋषि के आश्रम के शिष्य थे,उन्हें ऋषि नाम से गोत्र तथा प्रवर कहते हैं। जो एक ही गोत्र में और भी ऋषि हों उनकी संख्या को प्रवर कहा, जो ज्योतिष का ज्ञाता था, उसे जोशी की पदवी दी।

जो यज्ञ काराने वाला था, उसे याज्ञिक की पदवी दी।
राज्य या शासन में भागीदारी रखने वालों को व गाँव के मुख्य प्रतिष्ठित को ठाकुर की पदवी दी।
जो तीन वेदों का पाठ करने वाला था, उसे त्रिवेदी।
जो वेद पाठ तीनों समय करता था उसे त्रिपाठी।
जो दीक्षा देने वाला था उसे दीक्षित की पदवी दी।
शास्त्र पढ़ने या पढ़ाने वालों का पाण्डे या पण्ड्या की पदवी दी।
गाँव का जो गुरु होता था उसे पुरोहित की पदवी दी
वेदों का जो पारायण कराने वाला था उसे पाठक की पदवी दी।
सरकार का काम करने वाले को महता या महंत की पदवी दी।
उपजीविका करने वालो को शुक्ल की पदवी दी।
जो हवन कराने वाला था उसे अग्निहोत्री की आदि पदवियाँ दी।
जो कई विषयों का ज्ञाता था उसे मिश्र की उपाधी दी।

"ब्राह्मणों के भेद वर्णन"

श्लोक-गौड़ा उत्कल मैथिला: च-कान्यकुब्ज सारस्वता: पंच गौड़ा इति ख्याता तु विन्ध्यस्यौत्तर वासिना:॥
कर्णाटकाश्च तैलंगा द्रविड़ महाराष्ट्रा च गुर्जरा:। पंच द्रविण इति ख्यातातुविन्ध्यस्यों दक्षिण वासिना:॥

अर्थ-पंच गौड़ विन्ध्याचल के उत्तर क्षेत्र में निवास करते हैं। ब्राह्मणों की उत्पत्ति एक ही ब्रह्मर्षि से उत्पत्ति है। यह सृष्टि रचना का अवलोकन करें। यहाँ ब्राह्मण के दो भेद देखे जो एक ही पोराणिक पुरुष से उत्पत्ति में गौड़ और द्रविण दो हुए। दो के अलग-अलग पाँच-पाँच भेद है।

1. गौड़ उत्कल मैथिल कान्यकुब्ज सारस्वत यह पाँच शाखा भेद हुए, जो पृथक-पृथक स्थान पर निवास के कारण पाँचों ब्राह्मणों को स्थान नामों से संज्ञा दी, इन्ही को पंच गौड़ कहा जाता है। इन पांच-पांच ब्राह्मणों के दश भेद हुए दस से चौरासी और चौरासी के शाखा भेद हुए 115 की संख्या यह विन्ध्यांचल के उत्तर दिशा में निवास करते हैं। जिनका कि आगे पृथक-पृथक विस्तार से वंश वर्णन किया है। उपरोक्त पंचगौड़ सम्प्रदाय के 115 के लगभग शाखा भेद ब्राह्मण जिनका विन्ध्याचल उत्तर वासी गौड़ सम्प्रदायी है। जिनका भिन्न-भिन्न स्थान के आधारस्वरूप नामों से कहे गये हैं।

5(इति गौड़ सम्प्रदाय)

2. दूसरा द्रविण ब्राह्मण यह विन्ध्याचल के दक्षिण दिशा में द्रविण देश में वास करने से द्रविण कहाये। इसके भी पाँच भेद हुए कर्णाटका ब्राह्मण, तैलंगा ब्राह्मण, द्रविण ब्राह्मण, महाराष्ट्रा ब्राह्मण, गुर्जर ब्राह्मण यह पाँच द्रविण ब्राह्मण कहे गये। जो अलग-अलग देशों में बसने से अलग-अलग नामों की संज्ञा से कहे गये।

इन पंच द्रविणों के भी पंच गौड़ों की तरह पांच भेद हुए हैं। पांच से चौरासी भेद हुए, और चौरासी भेदों से शाखा भेद 115 के करीब हुए यह दक्षिण दिशा में निवास करते हैं। सभी यह पंच द्रविण सम्प्रदायी कहे जाते हैं। अलग-अलग स्थानों में निवास के आधर पर नामों की अलग-अलग संज्ञा से कहे जाते हैं। आगे द्रविण सम्प्रदाय में सभी का विस्तार से वर्णन किया है। सभी के गोत्र स्थानादि के वर्णन प्रस्तुत किये हैं। जो उत्तर और दक्षिण के कुल मिलाकर 230 ब्राह्मणों का वर्णन इस 'ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण' नामक पुस्तक में प्रामाणिक तौर से वर्णित किया है। साथ में संकर जाति ब्राह्मणों का भी संक्षेप वर्णन है। एक सौ पन्द्रह की अन्य शाखा और हुई हैं।

(इति द्रविणा सम्प्रदाय)

"ब्राह्मणों का वृजमण्डल में प्रवास"

ब्राह्मणों की उत्पत्ति मुख्यत: सीमाक्षेत्रें में भी ऐतिहासिक तौर पर पायी गई है। भारत के उत्तर पूर्व में सीमाओं के समीपी देश अधिकतर म्लेच्छों के पाये गये हैं। उन्हीं म्लेच्छों के उत्पातों का प्रभाव देश पर बुरा पड़ा उन बुरे प्रभावों का आगे विस्तार से वर्णन है। जो सबसे अधिक ब्राह्मणों के लिये घातक सिद्ध हुआ। म्लेच्छों द्वारा ब्राह्मणों का उत्पीड़न भी वृजप्रवास का एक मुख्य कारण है। आवागमन व सम्बन्धों का वृजक्षेत्र में होना, धार्मिक जाति ब्राह्मण की होने के कारण भी वृज में आवागमन प्रवास का कारण है। क्योंकि वृजधाम सर्वश्रेष्ठ धाम है, जहाँ 4 मुख्य अवतार एक ही स्थान पर हो चुके हैं। ये पावन, पवित्र ब्रज चौरसी कोस के अन्तर्गत ही हुए हैं। जिनमें भगवान वेदव्यास जी, भगवान परशुराम जी, भगवान बलदाऊजी, भगवान श्री कृष्णादि की प्रमुख जन्मभूमि रही है। तीर्थ तथा तपस्थली साथ में कालिन्द्री उत्तम, पावन, पवित्र जल और रमणरेती, वन, उपवनों की सुन्दर छटा व मथुरा कृष्ण जन्मभूमि, कंसकिला और वृन्दावन की कुंजगली, मनमोहने वाले बाँकेबिहारी के दर्शन आदि का ब्राह्मणों के हृदय पर चुम्बकीय प्रभाव से भी प्रवास का कारण है। ब्राह्मणों ने अपने कर्मकाण्ड तथा सुरक्षा की दृष्टि से भी वृजप्रदेश में प्रवास का कारण है। पूर्वकाल में राजाओं द्वारा अत्यधिक अश्वमेघ यज्ञों का आर्यावर्त क्षेत्र में होना भी ब्राह्मणों का वृजप्रदेश में प्रवास का कारण मुख्य कारणों में से एक है। वृज प्रदेश व समीपी राज्यों में हिन्दू शासकों का होना भी ब्राह्मणों के लिये प्रवास का कारण है।

हिन्दू राजाओं द्वारा ब्राह्मणों के रक्षा का कारण भी मूल है। राजा जनमेजय की सर्पसत्र यज्ञ का होना ब्राह्मणों को वृज प्रवास कराना भी मुख्य है। चारों वेदों की रचना वृज प्रदेश-भूमि मथुरा क्षेत्र ही ब्राह्मणों के चित्त चोरने वाला प्रभाव का भी प्रवास का कारण है। अकबर बादशाह की महानता भी ब्राह्मणों के लिये अपना एक स्थान महत्व का व प्रवास का कारण बना। स्वरक्षा की दृष्टि से यमुना नदी व वृजप्रदेश में सघन जंगल का होना, जो औरंगजेब आदि तुर्क बादशाह के बर्बरतापूर्ण अत्याचारों से बचने के लिये ब्राह्मणों को वृजप्रदेश लाभकारी सिद्ध हुआ आदि अनेकों कारण हैं। वैसे दीर्घकाल से ही ब्राह्मण लोग वृजप्रदेश में प्रवास करते रहे थे। ऐतिहासिक साक्ष्य प्रस्तुत पुस्तक में दिये हैं। अब लेखक विस्तार से कहता है, जैसा कि शास्त्र व लेखों का कथन है, यह मथुरा नगरी भगवान कृष्ण की जन्मस्थली है। इसी मथुरा नगरी में द्वापर में भगवान कृष्ण ने जन्म लिया था। भगवान कृष्ण ने इसी वृजभूमि में अपनी मानव लीलायें की जो कि सारा संसार भगवान कृष्ण के चरित्र से परिचित है। कृष्ण को सभी धर्मो के लोग मानते हैं। उस कर्मयोगी की जन्मभूमि की रज में कौन प्रवास नहीं चाहेगा अर्थात ब्राह्मणों ने भी यही सोच कर कि यह कृष्ण भगवान की जन्मभूमि है, प्रवास किया।

अब मैं इससे भी पूर्व का इतिहास भगवान परशुराम अवतार का थोड़ा सा सारांश कहता हूँ। भगवान कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा नगरी से करीब 22 किमी. पूर्व दिशा में और आगरा से पश्चिम को 15 किमी. की दूरी पर भगवान परशुराम जी का जन्मस्थान है। जिसे आज रुनकता या रेणुका गाँव नाम से विख्यात है।

हम वृजवासियों का भाग्य अति उत्तम है, कि हमारे इस वृज में सबसे अधिक भगवान विष्णु के अवतार हुए। आध्यात्मिकवादी ब्रह्मविद्या की भूमि है, तो वृजप्रदेश है। भक्ति की भूमि है। श्रीमद्‌भागवत एक स्थान पर कहती है॥

श्लोक- अहो अमीषां किमिकारशोभनं प्रसन्न एवां स्विदुतस्वयं हरिः।
यैर्जन्मलब्धं नृषुभारताजिरे मुकुन्द सेवौपयिकं स्पृहाहि नः॥

(श्री मद्भागवत)

अर्थ- आप लोगों को यह वताना चाहता हूँ, पौराणिक साक्ष्यों द्वारा कि इस वृज को ही नहीं बल्कि समूचे भारतवर्ष के लिये ही इन मुख्य अवतारों द्वारा चार चाँद लगे हैं। जिसमें कि वृजवासियों के पुन्य का तो कहना ही क्या है। क्यों कि इन वृजवास करने वालों पर तो स्वयं हरि प्रसन्न हुए हैं। जिसमें कि हरि सेवा के निमित्व तो योग्य पुरुषो का जन्म ही होता है। भगवान ने समय-समय पर अवतार लिये हैं। यहाँ परशुराम भी अवतरित हैं। इसके लिये श्रीमद्‌भागवत के तीसरे अध्याय के 20 वे श्लोक में स्वयं सूत जी ने कहा है॥

श्लोक- अवतारे षोड्श में पश्यन् ब्रह्मद्रष्टोनृपान्।
त्रिः स्पतकृत्वः कुपितोनि क्षत्रामकरोन्महीम॥

(भरतपुराणा)

अर्थ- 16 वें अवातर के रूप में जव परशुराम जी ने देखा कि राजा लोग ब्राह्मणों के द्रोही हो गये हैं। जव क्रोधित होकर उन्होंने पृथ्वी को 21 वार क्षत्रियों से विहीन कर दिया था। यह श्लोक सिद्ध करता है कि भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से एक अवतार परशुराम के रूप में स्वयं जगत पालनकर्त्ता भगवान विष्णु का है। संक्षिप्त रूप में प्रमाण वनपर्व महाभारत में भी मिलता है।

भगवान वेदव्यास-भगवान परशुराम के जन्मस्थान रेणुका से उत्तर दिशा में करीब 4 किमी. दूरी पर यमुना नदी है। इसी यमुना नदी के ठीक बायें तट पर नारदपुरी है, जिसका लेख शास्त्रों में है, यहाँ नारद जी ने तप किया था। आज वर्तमान में यह नारदपुरी व नेरा गाँव नाम से विख्यात है। इसी नारदपुरी गाँव से 1 किमी. पश्चिम यमुना के ठीक किनारे पर नगरी बसी है, जो व्यासपुर नाम से है। यहीं व्यास भगवान का जन्म हुआ था। शास्त्र साक्ष्य है, इस प्राचीन वस्ती व्यासपुर में आज भी 10-15 घर बसे हुए है शेष खेड़ा खण्डहर रूप में है। वहाँ के बसे हुए निषाद लोग खेड़े की पूजा करते हैं।

कहते हैं यह खेड़ा हमारे पूर्वज सत्यवती मत्स्यगन्धा व वेदव्यास जी का बसाया हुआ है। होली, दिवाली पर दीपक जलाकर पूजा करते हैं। निषाद लोग बड़े ही हर्ष और उल्लास से शादियों के समय पर उस व्यासपुर खेड़े को पूजते है। रेणुका नामक (रूनकता) गाँव के पास ही यमुना तट पर ही 'पक्षिमाई' कहकर स्थान का नाम है, यह तपोभूमि है। यहाँ बड़े-बड़े ऋषि, महर्षियों ने तप किये, यहीं जब 'पाराशर' ऋषि तपस्या करने आये थे, तो इस नगरी जो निषादों की थी वहीं यमुना नदी पार, नाव द्वारा मत्स्यगंधा ने करायी और ऋषि अंश से वेदव्यास जी का जन्म 'मत्स्यगंधा' गर्भ से हुआ। बाद इस पक्षिमाई नामक तपोभूमि में पाराशर ऋषि ने तप किया। इस तपोभूमि में प्राचीन समय के मन्दिर, गुफाये आज भी देखने को मिलती हैं। यहाँ सिद्ध पुरुष आज भी उपस्थित पाये जाते हैं। नारदपुरी से 3 किमी. उत्तर में एक वनखन्डी महादेव का मन्दिर है। पास में मिढ़ावली नामक गाँव बसा हुआ है। ये प्राचीन समय का मन्दिर शिवलिंग मूर्ति से है। वनखन्डी महादेव का मन्दिर सघन जंगल के बीच स्थित है। जो किसी समय का ठीक यमुना नदी के किनारे पर स्थित माना जाता है। यह विशाल मन्दिर जमीन से 150 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। उस ऊँचे शिखर का स्थल लगभग दो एकड़ के विशाल क्षेत्रफल में है, इसी उच्च शिखर पर प्राचीन काल का भव्य मन्दिर भगवान शंकर की प्रतिमा जो करीब 6 फुट ऊँची तथा 2 फुट की परिधि में उपस्थित है। इस शिवलिंग प्रतिमा के खण्डित होने से ऐतिहासिक साक्ष्य मुगल शासन काल में इस मन्दिर को तोड़ फोड़ व प्रतिमा को खण्डित करने का साफ-साफ जाहिर होता है। मिढ़ावली व आस-पास के बसे गाँवों के लोगों की किविदन्त कथाओं द्वारा बताया जाता है, कि वेदव्यास जी ने इस भगवान शंकर के स्थल पर तपस्या की थी। और वहाँ के लोग वेदव्यास तपस्थली मानकर चलते हैं। वृज की ये विख्यात तपस्थली है। इसे सिद्धेश्वर मानकर दूरस्थ स्थानों के लोग पूजा करने अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला देव मानते हैं। कहते हैं ये भगवान वेदव्यास जी की तपोभूमि है। आज के समय में भी श्रावण माष तथा शिवरात्रि के समय हजारों कावरें दूसरे प्रान्तों से आती हैं, और सिद्धेश्वर देव वेदव्यास स्थल पर चढ़ाई जाती है। तथा वनखण्डी महादेव मन्दिर पर साधु, महात्मा लोगों का स्वाध्याय, तप चलता रहता है। फिर ऐसे वृज में वास करने के लिये मन में ब्राह्मण जाति को क्यों न भायेगा। जैसे हमारे कृष्णभक्त रसखान ने तो यहाँ तक कहा है।

सवैया – मानुष हों तो वही रसखांन, बसों वृज गोकुल गाँव के द्वारन।
जो पशु हों तो कहा वश मेरो, चरहुँ नित नन्द की धेनु मझारन॥
पाहन हों तो वही गिरि को, जो कियो हरि छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हों तो बसेरो करों नित, कालिन्द्री कूल कदम्ब की डारन॥

प्रिय बन्धुओं हिन्दू धर्म की संस्कृति से पृथक पुरुष की हृदय भावना कितनी गम्भीरता से भक्त वत्सल कृष्ण भगवान की इस पवित्र जन्मभूमि वृज से लगाव की मिलती है। तो धर्म प्रवृति ब्राह्मण

क्यों न वृज में प्रवास करें। आगे इसी बनखण्डी महादेव के स्थल से फरलांग पूर्व में यमुना नदी के किनारे पर ही अष्टभुजी दुर्गा 'आषा देवी' का प्राचीन काल का खण्डहर के रूप में सघन झाड़ियों के बीच विशाल मन्दिर है। बताते हैं कि वेदव्यास जी ने इस देवी स्थल पर भी तप किया था। क्योंकि इस देवी को 'आषा व्यास' देवी के नाम से ही पुकारते है, और आषा व्यास देवी व आषावरी के नाम से यह विख्यात है। बहुत ही रमणीक स्थान है। वृजक्षेत्र में जंगलों के बीच पक्षिमाई वनखण्डी महादेव और आषाव्यास देवी का क्षेत्र ये मिढ़ावली गाँव के समीप सर्वश्रेष्ठ तपोभूमि है, जहाँ आज भी सिद्ध महात्मा लोग स्वाध्याय व तप करते हुए दृष्टि आते है। इससे तथ्यपूर्ण है कि इन स्थानों पर वेदव्यास भगवान का सम्बन्ध रहा होगा। बताया जाता है कि यह देवी वेद व्यास जी की पत्नी मानी जाती हैं। जो बारह वर्ष तक गर्भ धारण करने के बाद क्रोधा अवस्था में विष्णु की तपस्या करि शुकदेव जी को उत्पन्न किया था। यही स्थान शुकदेव जी का जन्म का माना जाता है। यही व्यास जी से वेद पढ़े थे।

देवी भागवत स्कन्ध में लिखा है।

श्लोक मथुरा धन्यतामाप या वेदव्यास जन्मना।
अविर्भावेन कृष्णस्य पुनः पावनतां गता॥

(देवी भागत स्कन्ध)

भगवान वेदव्यास जी का जन्म मथुरा वृजक्षेत्र व्यासपुर निषाद वस्ती में ही हुआ, वहीं उनका निषाद परिवार ने अवश्य पोषण किया होगा।

(देवी भागवत अध्याय 1 में पृ. 2 से 35 तक)

श्लोक - एकदा तीर्थयात्रायां वृजन् पाराशरो मुनिः ।
आजगाम महातेजा कालिन्धास्तट मुत्तमम् ॥
निषादमाह धर्मात्मा कुर्वन्तं भोजनं तदा।
प्रापयस्व पर पारं कालिन्धा उडुपेन माम्।
दासः श्रुत्वा मुनेर्वाक्यं कुर्वाणै भोजन तटे।
उवाच तां सुतां वालां मत्स्यगन्धा मनोरमाम् ॥
उडुपेन मुनि वालं! परं पारं नयस्व ह।
गन्तु कामोऽस्ति धर्मात्मा तापसोऽयं शुचिस्मते॥
इत्युक्ता सा तदा पित्र मत्स्यगन्धाऽथ वासिवी।
उडुपे मुनिमासीनं सम्वाह्यति भामिनी॥
वृजनं सूर्यसुता तोये भावित्वाद्दे वयोगतः।
कामार्तस्तु प्रनिर्जातो दृष्टिवां तां चारूलोच नाम्।

सापि सत्यवती जाता संज्ञां गर्भवती सती।
शुशुवे यमुना द्वीपे पुत्र काममिवा परम्।
जातु मात्रस्तु तेजस्वी तामुवाच स्वामातरम्।
मातर्यदा भवेत कार्यं तव किंचिदनुत्तमम् ॥
स्मर्तव्योऽहं तदा शीघ्रमाग मिष्यामि भामिनी।

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

(भरतपुराण)

अर्थ - उपर्युक्त तथ्यों को प्रमाण मानकर विद्वान ब्राह्मणों ने दूर-दूर देशों से आकर वृजक्षेत्र को प्रवास के लिये, अच्छा समझ कल्याण के लिये प्रवास किया। जो अपनी ज्योतिष, तान्त्रिक विद्या, अस्त्र-शस्त्र विद्या, पठन-पाठन, वेदों का, वेदान्त आदि कार्य विद्वान ब्राह्मणों के ही ऐतिहासिक तौर पर पूर्व काल से ही सराहनीय रहे हैं। क्षत्रिय, राजे, महाराजों के एकमात्र ब्राह्मण ही सर्वोपरि निकटतम रहे हैं। यह साक्ष्य पूर्व इतिहासों से मिलता है। जल व्यवस्था, दिनचर्याव्यवस्था, गुण ग्राही आदि सम्पूर्ण सुविधा व सुरक्षा की दृष्टि से सभी वर्ग के ब्राह्मणों ने प्रवास किया।

''इतिकारणवृजप्रवास''

''ब्राह्मणों के लिये आवश्यक बातें''

दोहा - विद्यावल है ब्राह्मण को, क्षत्री को बल फौज ।
वैश्य शक्ति धन, शूद्र को, सेवा के बल मौज॥

(चाणक्य का कथन)

श्लोक - समवाय: परिज्ञेतो ज्ञाति धर्मेणाय: सदा।
धर्मा: समान वृत्तीनां ज्ञात नाम न कदाचिन॥
तत्र असमान धर्मेषु योनिपिन्डो निषिद्यते।
योनि पिन्डत्स पिन्डस्यो पादानस्यानु संभवात॥
समधर्मेषु तस्मातु योनि पिन्डो विधीयते ।
स्थापित्त स्थल वृत्तीनां ज्ञाति भेद कलोयुगे॥
संकरत्व निषेधाय वर्ततेशिष्ट संग्रहात।
आज्ञातोत्पत्ति भावना भूयस्त्वं सति सान्वय: ॥
सांकर व्याहारोऽत्र मस्तु तस्मान् स्थिति: कृता।

स्थान स्थापित भेदेन स्थान स्थापक नामभिः ॥
समवायो भवेन्ज्ञातिस्यात्कलो युगे।
अतो विधि विधानार्थ धर्म जिज्ञासयास्वयम् ॥
(स्कन्ध पुराण व मार्तण्ड पुराण पृ. 24 श्लोक 1 से 5)

अर्थ - कलयुग में संकर दोष होंने के भय से ब्राह्मण को अपनी जाति के बारे में स्वयं गोत्र, प्रवर वेद आदि की जानकारी होना अति आवश्यक है। इसीलिये शिष्ट सम्प्रदाय ने स्थान और स्थापना करने वाले के भेद तथा जाति शब्द व्यवहार स्थापन किया है, सो विवाह आदि में ग्रहण करना चाहिए॥

श्लोक- परजाति द्विजानां यः कुरुते भोजनं गृहे।
सोऽपि दण्डयः प्रयत्नेन मर्यादा रक्षणाय च॥
तत्र कन्या प्रदात्तव्यात तत्र कार्यहि भोजनंम।
भेदो यद्यपिन प्रोक्तो धर्म शास्त्रे द्विजोत्तमैः॥
तथापि भजनं कार्य स्वज्ञातिषु सदा वुधेः।
गौडा च सारस्वता उत्कल मैथिलाचकान्यकुब्जाः॥
इति पंचगौड़ा ब्राह्मणः मिथो भोजनं मिष्यते।
(ब्राह्मण उ0 मार्तण्ड पृ. 25 श्लोक 1 से 12)

अर्थ - जो ब्राह्मण अन्य जाति के यहाँ कच्चा भोजन जीमता है। उसकी बुद्धि का तेज क्षींण हो जाता है। व कर्म काण्ड में कुबुद्धि हो जाता है। मिथ्या भाष्य करने लगते है। इसलिये अपने धर्म और जाति की व म्र्यादा की रक्षा करने के लिये, पर घर भोजन नहीं खाना चाहिये। न प्रतिग्रह ही ग्रहण करे। अन्य मुख्य सार और भी हैं, जहाँ कन्या दे वहाँ कन्या के घर पर भोजन नहीं खाना चाहिए, पंचगौड़ों के ऐसे ही विचार हैं। तथा आपस में एक दूसरे के यहाँ भोजन पर कोई विचार नहीं है। आपस में कच्ची पक्की रोटी खा लेते हैं ऐसा लिखा है।

(स्कन्ध पुराण व मार्तण्ड पुराणमें)

निम्नलिखित बातों का प्रत्येक ब्राह्मण को ज्ञान होना चाहिए।

निज गोत्र, ऋषिगोत्र, प्रवर, वेद, अवंटक, कुलदेव, शाखा, गणपति, शिव, चरण, मूल, पोराणपुरुष, भैरव, सूत्र, 14 बातें कण्ठाग्र होनी चाहिए।

श्लोक - यस्त्व संयतषडन्वर्गः प्रचेण्डोन्द्रिय सारथि।
ज्ञान वैराग्य रहितस्त्रिदण्डमुप जीवति॥
सुरानात्मात्मस्थं निह्नुते मां च धर्महा ।

अविपक्वकषायो ऽस्मादमुष्माच्चविहीयते ॥

अर्थ - भगवान श्री कृष्ण जी ने उद्धव जी से कहा है, कि हे सखे जिसने पाँच इन्द्रियों पर छटवें मन पर विजय प्राप्त नहीं की है। जिसके इन्द्री रूपी घोड़े तथा बुद्धि रूपी सारथी बिगड़े हुए हैं, और जिसके हृदय-ज्ञान नहीं है, न वैराग्य है, वह त्रिदण्डी संन्यासी का भेष धारण कर पेट भरता है। तो वह संन्यासी संन्यास धर्म का सत्यानाश ही कर रहा है। अपने पूज्य देवताओं को तथा स्वयं अपने को हृदय स्थित मुझको धोखा दे रहा है। उसको समझो कि वह इस लोक से और परलोक दोनों से ही हाथ धो बैठता है। ब्राह्मण की वृत्ति और कार्य का वर्णन करते हुए भगवान शिव, मार्कण्डेय जी से कहते हैं।

श्लोक - ब्राह्मण साधवः शान्ता निस्संग भूतवत्सलाः ।
एकान्ता भक्ता अस्माषु निर्वैणः समदर्शिनः ॥

अर्थ - ब्राह्मण स्वाभाव से ही शान्तचित्त, परोपकारी एवं अनाशक्त होते हैं। वे किसी के साथ वैर भाव नहीं रखते और समदर्शी होने पर भी प्राणियों का कष्ट देखकर उसके निवारण के लिये पूर्ण हृदय से जुट जाते हैं। सबसे वड़ी बात तो ये होती है, कि हमारे अनन्य प्रेमी व भक्त होते हैं। सभी प्राणियों का मेरी तरह भला करते हैं।

श्लोक - येषां सदा वै श्रुतिपूर्ण कर्णं ।
जितेन्द्रियाः प्राणिवधे निवृताः ॥
प्रतिग्रहे संकुचिता गृहस्था ।
स्ते ब्राह्मणा स्तारयितुं समर्थाः ॥

(भरत पुराण)

अर्थ - कृष्ण जी युधिष्ठिर से भाव व्यक्त करते हैं, कि हे युधिष्ठिर जिनके कान वेदों के श्रवण से पवित्र हो चुके हैं। इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है, हिंसा से सदैव दूर रहते हैं, दान लेने में संकोच करते हैं वे ग्रहस्थ आश्रम में निवास करते हुए भी ब्राह्मण दूसरों को तारने में समर्थ हैं। ऐसे सच्चे ब्राह्मण को जो कुछ भी मिल जावे उसे भी लोकहित में लगा देते हैं। ऐसे सच्चे ब्राह्मण की संगति करना या उसे सहयोग देना पुण्य होता है, जिन ब्राह्मणों के आचरण ठीक नहीं हैं -

श्लोक - विप्रा नाम धरा एते लोलुपा ब्राह्मणधर्माः ।
नात्मनं तारयन्त्ये तेन दातरं युधिष्ठिरं ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - हे युधिष्ठिर ये सब विषय लालसा ब्राह्मण नामधारी होते हैं। ये न दाता का ही उद्धार कर सकते

हैं, न अपना। ब्राह्मण के लिये तप और विधाध्ययन द्वारा शक्ति और योग्यता बढ़ाना उचित है। तथा अन्तः करण की निर्मलता अति जरूरी है। बिना निर्मलता के योग्यता भी व्यर्थ है। जैसे दुर्वासा ऋषि तपस्वी भी थे, विद्वान भी थे, किन्तु उनके मन में क्रोध प्रचण्ड था। उनकी प्रचण्डता का आवेश उन्हें शक्ति की दुरुपयोगिता की प्रेरणा दे देता था। भक्त अम्बरीश पर अकारण क्रोध किया। अपनी तप शक्ति से हानि पहुँचायी। लेकिन भक्त अम्बरीश ने किंचित मात्र भी क्रोध नहीं किया। जब विष्णु भगवान ने देखा कि भक्त को दुर्वासा परेशान कर रहे हैं, तो अपना चक्र छोड़ दिया। दुर्वासा को कहीं छिपने तक को स्थान नहीं मिला और न किसी ने शरण दी, तो अम्बरीश पर ही आकर दुर्वासा ने क्षमा माँगी। तव भगवान विष्णु ने उद्दण्डता तथा अन्याय से दूर रहने का उपदेश देते हुए कहा।

श्लोक - तपो विद्या च विप्राणं निः श्रेयस्करे उभे।
ते एवं दुर्विनीतस्य कल्पेते कर्तुरन्यथा॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - इसमें सन्देह नहीं कि ब्राह्मणों के तपस्या और विद्या ही कल्याण के साधन हैं। परन्तु यदि ब्राह्मण उद्दण्ड और अन्यायी हो तो वे ही दोनों उसे उल्टा फल देते हैं।

श्लोक- अकिश्चानानं हि धनं शिलोच्छनं ।
तेनेह निर्वतित साधुत्क्रियः ॥
कथं विग्राह्यां नु करोम्यधीसराः ।
पौरोधप्त हृष्यति येन दुर्मितिः ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - एक समय देवताओं ने ऐसे ही एक ब्राह्मण से कहा कि आप ब्रह्मदेव हमारे पुरोहित वन जाओं, हम आपको बहुत सारा धन द्रव्य देंगे। किन्तु ब्राह्मण ने सव कुछ सुनकर प्रतिग्रह लेने के लिये मना कर दिया, और कहा कि देवगण हम ब्राह्मण हैं। प्रतिग्रह नहीं लेते जब कृषक की खेती कट जाती है, तब हम उस खेती में गिरे हुए दाने बीन लेते हैं, और उसी से अपने देवकार्य व पितृकार्य सम्पन्न कर लेते हैं। इस प्रकार हे देव! मेरी जीविका चल रही है। तो पुरोहिताई की निन्दनीय कृति क्यों करूँ। इससे तो वही लोग प्रसन्न होते हैं जिनकी बुद्धि बिगड़ गयी है।

श्लोक - सीदन विप्रो वणिग्वृत्या पश्यैरे वापदं तरेत् ।
खड़्गेन वाऽऽपदा क्रान्तो न स्ववृत्या कथंचन ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - जहाँ अपने निर्वाह के लिये ज्ञान का मूल लेना भी पड़े तो कोई बात नहीं, परन्तु भीख

माँगना तो महाबुरा है। श्रेष्ठ ब्राह्मण अध्ययन कार्य करें, यज्ञ, योगादि से अपनी जीविका का कार्य न चला सकें तो वैश्यवृत्ति का सहारा ले लें, और जब तक विपत्ति टल न जाये तब तक करें। अगर अधिक बड़ी आपत्ति का सामना करना हो तो क्षत्रियवृत्ति धारण कर अपना कार्य करें, परन्तु स्वानवृत्ति जैसे नीच कर्म को कदापि न करें॥

जाति से ब्राह्मण नहीं कहा जाता है। ब्राह्मण कर्म के द्वारा ब्राह्मत्व को प्राप्त करता है। प्रमाणित है। व्यक्तियों को विचार और आचरण की दृष्टि से आदर्श बनाने का कार्य वर्ण व्यवस्था में सर्वश्रेष्ट माना जाता है। श्री शुकदेव जी राजा परीक्षत को तथ्य बतलाते हैं।

श्लोक - धृष्टाद् धार्ष्टम भूत् क्षत्रं ब्रह्मभूयं गतं क्षितौ।
नृगस्य वंशः सुमित्र भूतज्योतिस्तनो वसुः ॥

(भरत पुराण)

अर्थ - धृतराष्ट के ध्राष्ट नामक क्षत्रिय हुए अन्त में वे इस शरीर से ही ब्राह्मण बन गये। 'नृग' का पुत्र हुआ 'सुमति' उसका पुत्र 'भूतज्योति' और भूतज्योति का पुत्र 'वसु' ब्राह्मण बने ये जैन मत के प्रवर्तक हुए। तथा और भी प्रमाण प्रस्तुत हैं।

श्लोक - गर्गाच्छिनिस्ततो गार्ग्य क्षत्राद ब्रह्म ह्यावर्तत।
दुरितक्षयो महावीर्यात् तस्य त्रय्यारूणिः कविः ॥
पुष्करारूणिरित्यत्र ये ब्राह्मणगति गतः ।
वृहत्क्षत्रस्य पुत्रोऽभूद्धस्ती यद्धस्तिनां पुरम॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - 'उपमन्यु' पुत्र 'गर्ग' से 'शनी' और शनी से 'गार्ग्य' का जन्म हुआ। यद्यपि गार्ग्य क्षत्रिय थे, फिर भी उससे ब्राह्मण वंश चला। महावीर्य का पुत्र था 'दुरित' और दुरित क्षत्रिय के तीन पुत्र हुये। 1. त्रय्यारूण 2. कवि 3. पुष्करारूणि ये तीनो ब्राह्मण हो गये। वृहत्क्षत्र का पुत्र हुआ हस्ती उसी ने हस्तिनापुर बसाया। महाराजा 'गाधि' के पुत्र हुये प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी 'विश्वामित्र जी' जो इन्होंने अपने तपोवल से क्षत्रित्व को त्याग कर के ब्रह्मतेज प्राप्त किया॥

श्लोक - कुशला चरिते नैषामिह स्वार्थो न विद्यते ।
विपर्ययेण वानर्थो निरहंकारिणं प्रभो॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - वे सामर्थ्यवान पुरुष अहंकारहीन होते हैं। शुभ कर्म करने में उनका कोई सांसारिक स्वार्थ नहीं होता और अशुभ कर्म करने में नुकसान नहीं होता।

श्लोक - भारत शांति पर्वणि न विशेषऽस्ति वर्णनां।
सर्व ब्रह्ममिदेत्तम। ब्राह्मण पूर्व शिष्टं हि कर्ममिणतांगतं।
विशिष्ट स्मतो योगस्तयोद्मो दानं सत्य सोचं दया श्रुतम्।
विद्यानमस्तिक्यमेतद् ब्राह्मण लक्षणंम् ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - जाति का वस्तुत: भेद नहीं है, यह सभी जगह ब्रह्म है। काया से जो ब्रह्म द्वारा प्रथम उत्पन्न हुआ। उसके कर्म द्वारा जाति भेद हुआ, जिस मनुष्य में जिस प्रकार के गुण हों, वे उसी के अनुसार धर्मशास्त्र में लिखा है। जो योग, इन्द्रिय, दमन, दान, सत्य, शोच, दया, बहुश्रवण, विद्या, विज्ञान आस्तिक्य, यह ब्राह्मण के लक्षन होते हैं।

श्लोक - ब्राह्मण महिमा - पृथिव्यं यानि तीर्थानि तानि
तीर्थानि सागरे सागरे सर्व तीर्थानि पादे विप्रस्य दक्षिणें ॥
चैत्रमहात्म्ये तीर्थानि दक्षिंगो पादे वेदास्तून्मुख माश्रिता: ।
सर्वाङ्गेष्वाश्रिता देवा: पूजितास्ते तदचर्या ॥
अव्यक्तरूपिणे: विष्णो: स्वरूपं ब्राह्मण भुवि।
नावमान्यानो निरोध्या कदाच्छिभ मिच्छता ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण की महिमा कहता हूँ। पृथ्वी पर जितने तीर्थ हैं, वो सब तीर्थ नदिओं में मिलते हैं, नदी समुद्र में मिलती हैं, समुद्र में जितने तीर्थ हैं, वे सव तीर्थ ब्राह्मण के दाहिने चरण में वास करते हैं। तथा चारों वेद उसके मुख में हैं, और अंग में सारे देवता आश्रय करते हैं। इस वास्ते ब्राह्मण की पूजा करने से सब देवों की पूजा होती है। पृथ्वी पर ब्राह्मण जो हैं, विष्णु रूप हैं। इसलिये इनसे कल्याण की इच्छा होवे तो, इनका अपमान नहीं करना चाहिए। भक्त प्रहलाद ने भगवान 'नृसिंह' से कहा था, कि भगवन मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे अपने मोक्ष की भी आवश्यकता नहीं है, मुझे इच्छा है तो सिर्फ एक है।

श्लोक - प्रायेण देवमुनय: स्वविमुक्तिकामा।
मौनं चरिन्ति विजने न परार्थनिष्ठा: ॥
नैतन्विहाय कृपणन्विमुमुक्ष एको।
नान्यत्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - हे प्रभो बड़े-बड़े ऋषि मुनि तो प्राय: अपनी मुक्ति के लिये निर्जन वन में जाकर मौन वृत धारण कर तप करते हैं। दूसरों की भलाई के लिये कोई प्रयत्न नहीं करते, परन्तु मैं तो असहाय, गरीबों को छोड़कर

मुक्त होना नहीं चाहता, क्योंकि जब प्राणियों के लिये प्रभु आपके सिवाय कोई दूसरा सहारा नहीं दिखता है। इस प्रकार सच्चा आदर्श दिखलाया।

श्लोक – अहिन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यम मन्दिरम् ।

अर्थ – भगवान ने बताया कि समय सीमित है। हमें यह शरीर मिला है, उस शरीर के पीछे मौत खड़ी हुई है। पता नहीं कब मौत की तलवार हमारी गर्दन को उड़ा दे।

श्लोक – अहो देन्यमहो कष्टं पारक्ये क्षणभंगुरे ।
यन्नोपकुर्यादि स्वार्थमंत्यः स्वज्ञाति विग्रहे ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ – महर्षि दधीच ने देवताओं से कहा था, कि धन, जन और शरीर क्षणभंगुर हैं। ये अपने किसी काम नहीं आते हैं। अन्त में दूसरों के ही काम आते हैं।

श्लोक – एतद् विद्वान्पुरा मृत्योरभवाय पठेत सः ।
अथमत्त इन्दं ज्ञात्वा मर्त्यमप्यर्थ सिद्धदम ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ – कृष्ण भगवान ने अपने सखा उद्धव जी से कहा है, कि हे प्रिय सखे यह मनुष्य शरीर है, इसे मृत्यु ग्रसित करती है, यह सभी को पता है, तो इसके द्वारा परमार्थ की सत्य वस्तु की प्राप्ति क्यों न कर ली जाये॥

....

इति

प्रिय बन्धुओं मैंने जैसा शास्त्रों व इतिहास आदि के अध्ययन से प्राप्त किया वह इस पुस्तक में कहा है। वैसे मैं पहले यह कह चुका हूँ, कि न मैं कवि हूँ, और न ही लेखक, परन्तु कुछ उत्साहित मुझे किया गया। माँ सरस्वती की कृपा दृष्टि से यह लेखन कार्य किया है।

कुछ स्वयं अपने हृदय के उद्गारों से लिखने के लिये यह सोचा कि कुछ न कुछ तो बुद्धिजीवियों को अपने जातिय धर्म का ज्ञान आपसी प्रेम का स्त्रोत प्रवाह तो अवश्य होगा ही, और मुख्यतः ये ही इस संसार में आवश्यक है। क्योंकि इन बातों के बगैर तो जीवन ही पशु समान हो जाता है। जबकि गुसाई जी ने भी पवित्र ग्रंथ रामायणमें एक चौपाई में कहा है।

चौ० – महाभाग्य मानुष तन पावा।
मुनि दुर्लभ गति ग्रन्थ न गावा ॥

तो फिर मनुष्य शरीर और चार चाँद लगे, कि ब्राह्मण वंश में जन्म भी मिल गया तो अपने ब्राह्मणत्व को क्यों नष्ट किया जाय, अपने अमोल रत्न संस्कृत भाषा तथा कर्मकाण्ड स्वाध्याय को क्यों त्याग दें। वेदों की रक्षा के लिये सृष्टिकर्ता ने हमें उत्पन्न किया है। उसका पालन क्यों न करें अर्थात अपने वेदों की रक्षा अवश्य करें विद्या अध्ययन करें। उनके द्वारा प्रजा, राजा का हित करें। मेरा सभी ब्राह्मण बन्धुओं से निवेदन है, कि अपना ब्रह्म स्वरूप अवश्य धारण करें, त्रुटि के लिये क्षमा करना।

"ब्राह्मणों का ब्रज में प्रवास का इतिहास"

1. ब्राह्मणों की उत्पत्ति से यह ज्ञात होता है, कि उत्तराखण्ड के पंचगौड़ ब्राह्मण उत्पत्ति का शासेनुसार प्रमाण ब्राह्मण ऋषि वंशों के 84 वंशों के ब्राह्मणों की उत्पत्ति में से अधिकांश उत्पत्ति सीमा क्षेत्रों में हुई। और सीमा क्षेत्र के राज्यों पर म्लेच्छों (मुसलमानों) के आक्रमण होते रहे, इस कारण से ब्रजक्षेत्र धार्मिक श्रद्धा युक्त व व्यास जी तथा परशुराम जी की जन्म भूमि से लालायित होने के कारण भी प्रवास की धारणएं होना भी प्रमुख है।

2. अधिकांश तौर से अश्वमेघ यज्ञों का होना जिससे ब्राह्मणों की विद्या, योग्यताओं का परिचय देते हुए सम्मान और आर्थिक लाभ का प्राप्त होने का मुख्य कारण होता है।

3. राजा जनमेजय की सर्पसत्र यज्ञ का होना भी एक ब्राह्मणों के वृज प्रवास का बड़े ही महत्व का कारण है।

4. स्वरक्षा और धार्मिक क्षेत्र होने से पूजापाठ आदि की सुविधा की उपलब्धि का होना भी एक मुख्य कारण है।

5. दिल्ली, मुसलमान शासकों की राजधानी होने के कारण तथा ब्राह्मण प्रवास अक्सर यमुना क्षेत्रों में दूसरी तरफ या तटीय गाँवों में प्रवास किये हैं। ऐसे स्थानों का चुनना या अन्य जाती समूह के गाँवों में स्वरक्षा दृष्टि से प्रवास किया है। वैसे कुछ ब्राह्मण पहले से प्रवासी होकर मूलवासी बन गये। कुछ उससे पहले मूलवासी मौजूद थे। फिर एक-दूसरे सम्बन्धों के नाते आते गये और प्रवास करते रहे। इस प्रकार से सभी हिन्दू जाती का स्थान परिवर्तित होता रहा है। मुसलमान शासकों ने अन्याय, अत्याचार समस्त हिन्दू जाति के साथ किये। ब्राह्मणों के साथ कुछ ज्यादा अत्याचार किये क्योंकि ब्राह्मण जाति विद्या की धनी होती है। जो कि ज्योतिष, शास्त्र, तान्त्रिक, वेदों की ज्ञाता, शिक्षा-दीक्षा आदि विद्याओं के ज्ञाता होने के कारण राजा महाराजाओं को ब्राह्मणों की अति आवश्यकता रहती थी। क्योंकि धर्म का पालन करने वाला तथा कराने वाला ब्राह्मण ही होता है। धर्म के बगैर कभी राजनीति सफल नहीं होती धर्म और राजनीति का तो चोली दामन का साथ होता है। वही चोली दामन का साथ राजाओं और विद्वान ब्राह्मणों का होता है। जो राजा ब्राह्मण विरोधी रहा है, उसी का सर्वनाश हुआ है, यह शास्त्रों का प्रमाण है। ठीक इसके मुताबिक

जिस-जिस शासन में हुआ उसका साक्ष्य 'भारत का इतिहास' के पन्नों से उदाहरण पेश है। मुख्यत: धर्म उपदेशक ब्राह्मण ही हैं इसी से ब्राह्मणों के साथ अत्यधिक अत्याचार हुए।

सन् 1361 ई. का इतिहास गयासुद्दीन तुगलक तुर्क का: व मुहम्मद तुगलक व औरंगजेब आदि।

कवित्त –

भारी लै सेना तुगलक चढ़ि आया था॥
मन्दिरों को तोड़-तोड़ बनाई उसनेमस्जिदें,
मगा-मगा मूर्तियों को उसने कुँए में गिराया था॥
मरघट सा बनाया देश, रक्त में रंगी थी तेग,
खूँन बेबसों का चारों ओर ही बहाया था॥
ऐसे कानून जारी हिन्दूओं पे करि दिये,
जिंदगी मुहाल दम लवों पर आया था॥
हाय-हाय मार-मार सख्त बेंतों से,
ॐ को भुलाया विसिमिल्ला कहाया था॥

'इतिहास'

तर्ज रस –

सर साफ उड़ाये खन्जर से कुल तिलक लगाने वालों के।
दम खत्म किये थे जालिम ने, सब शंख बजाने वालों के॥
चोटी लीं काटि जबरदस्ती, यज्ञोपवीत भी छींने थे।
हाय हमारे धर्म ग्रन्थ भी, अग्नि भष्म करि दीने थे॥
जिनो इस्लाम धर्म स्वीकार किया, वे हित से हृदय लगाये थे।
जो हिन्दू धर्म पर अड़े रहे, वे भलीभाँति तरसाये थे।
क्या करते हिन्दू बेचारे, बलहीन हुए वसियावै क्या।
थे पराधीन था यवन राज्य, लो पेश किसी की जावै क्या॥

नोट – मुसलमान शासकों का सिर्फ एक लक्ष्य रहा कि, जब हिन्दू धर्म नष्ट हो जायेगा तो फिर हिन्दू हिन्दू नहीं रहेगा। और मुसलमान धर्म ही अकेला रहेगा सभी मुसलमान बन जावेंगे। हिन्दू धर्म को मुख्य मूल हिन्दू धर्म ग्रन्थ, मन्दिर और धर्म संचालक ब्राह्मण हैं, इसलिये ये तीनों चीज खत्म की जानो चाहिए। यह धारण तुर्कों की होंने के नाते से हिन्दू धर्म ग्रन्थों को नष्ट किया गया। मन्दिरों को तोड़-तोड़ कर मस्जिदें बनाई, तथा ब्राह्मणों को कत्ल किया व चोटी काटी गई, गर्म कील करि माथे को तिलक की जगह को भेदा

गया। गर्म कील से जनेऊ की जगह जलाकर जनेठ का स्थान दग्ध किया गया। आदि जघन्य अत्याचार किये। ये ही एक यवन् गयासुद्दीन तुगलकवंश नहीं बल्कि इससे भी गया मुसलमान शासक और अन्त में हुआ, जिसने समस्त हिन्दू जाति का कलेजा चीर दिया। उसका नाम भी लिखने में कलम थरथराती है।

जिसे औरंगजेब का शासन नाम से भारत की पीढ़ियाँ नहीं भुला पायेंगी उस के नाम को और समय-समय पर वो उसके कारनामें हृदय विदीर्ण करते रहेंगे।

'औरंगजेब का शासन काल'

'हिन्दुओं की दुर्दशा'

इतिहास भारत का अकबर बादशाह के शासन काल में तो सभी हिन्दुओं के साथ अच्छा सलूक किया। परन्तु शाहजहाँ बादशाह के शासन काल 1557 ई. सन् में बादशाह बीमार पड़ गया। उसके चारों बेटों में भी फसाद पैदा हो गया, औरंगजेब ने अपने दो भाई 1. मुराद 2. दाराशिकोह को कत्ल कर दिया, तथा शाहजहाँ अपने पिता को कैद करि आगरा के किले में डाल दिया। सन् 1566 में शाहजहाँ की मृत्यु हो जाने पर अत्याचारी धर्मान्ध शासक औरंगजेब गद्दी पर बैठा। इसका स्वभाव अपने पिता जैसा न था यह कठोर हृदय कट्टर धर्मपन्थी सुन्नी मुसलमान था। उसने अपनी गलत नीतियों के अनुसार नियम बनाये जिसके फलस्वरूप उसे जीवन में अनेकों कष्ट झेलने पड़े। औरंगजेब हिन्दू धर्म का कट्टर विरोधी था। उसने ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्त हिन्दू पदाधिकारियों को हटा दिया। हिन्दुओं पर जजिया टैक्स लगाया, हिन्दू मन्दिर व देवालयों को तोड़-तोड़ विध्वन्स करा दिया। ब्राह्मणों और सन्तों का यह जानी दुश्मन था। यह सभी हिन्दुओं को तलवार की धार परमुसलमान बनाना चाहता था। इसी कारणवश सभी हिन्दू मन्दिर और धर्मस्थलों को ध्वस्त करा कर उन्हीं स्थानों पर मस्जिदें बनवायीं। इसी औरंगजेब ने सम्वत् सन् 1726 में भादों माह द्वादशी को काशी विश्वनाथ मन्दिर को तुड़वाकर नष्ट किया, और मस्जिद बनवायी। वहाँ से स्वर्ण जड़ित मूर्तियों को उठा ले गये, कुछ मूर्तियाँ खण्डित करि कुँओं में डाल दीं। वहाँ के पुजारियों को जबरन मुल्ला बनाया, कुछ को कत्ल कर दिया। भगवान कृष्ण की जन्म भूमि मथुरा में स्थित केशवदेव जी का मन्दिर जो बड़ा ही भव्य मन्दिर था। हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थान माना जाता है। उसको भी दुष्ट ने नहीं बख्शा और तुड़वाकर उस स्थान केशव जी के मन्दिर के पत्थरों से मस्जिद बनाई। जो आज भी देखने को मिलती है। इस धर्मान्ध अत्याचारी ने वृन्दावन का गोविन्द देव मन्दिर नष्ट कर दिया और पन्डा पुजारियों को तलवार की धार से उड़ा दिया, सन्तों के स्थान जो यमुना किनारों पर बने थे। उन्हें नष्ट कर साधु सन्तों को कत्ल करा दिया। गोवर्धन में हरिदेव जी के मन्दिर को तुड़वा दिया, और मुर्तियाँ नष्ट करा दीं। सिद्धवली के जंगल में भगवान सिद्धेश्वर के मन्दिर को नष्ट किया।

इस आपत्ति काल की दुख:द घटनाओं को लेखक कहाँ तक वर्णन करें, इस अत्याचारी ने तलवार के जोर से धर्म परिवर्तन कराया। जिन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया, उन्हें मौत के घाट उतारा। हिन्दू धर्म स्थलों को तोड़ा, लूट के साथ ही हिन्दुओं की अविवाहित कन्याओं को जबरन उठवा ले जाता था। अत्याचार का जो नंगा नाच किया, वह लेखनी से लिखना शोभा नहीं देता है। जितना बुरे से बुरा शब्द कहा जाये, वो ही इस अत्याचारी के लिये थोड़ा है। उसका मानना था कि हिन्दू धर्म के मुख्य संचालक ब्राह्मण, सन्त, मन्दिर और हिन्दू धर्म ग्रन्थ हैं। इन्हें खत्म करना चाहिए क्योंकि मार्ग दर्शक, उपदेशक ब्राह्मण और सन्त ही हैं। कुछ ही समय में हिन्दू समाज नष्ट हो जायेगा, और सभी को मुसलमान बना लिया जायेगा। इस सोच ने ब्राह्मणों को अधिक सताया।

मथुरा के आस-पास के आठ गाँवो में दीक्षित ब्राह्मण थे। जब औरंगजेब ने खबर की कि तुरन्त इस्लाम धर्म अपना लें। सभी हिन्दू जाति के लोग तो महावन, गोवर्धन क्षेत्र व फरह क्षेत्र के ब्राह्मण जो दीक्षित ब्राह्मण थे। अपने अपने तिलक बिगाड़कर कन्ठीमाला, जनेऊ तोड़कर धर्म परिवर्तन किया और तड़कर ठाकुर कहलाये। ऐसा लेख मिला है, कि सवा मन जनेऊओं की तोल बैठी थी। जब इकट्ठे होकर पंचायत की थी, उस समय पर वे जनेऊ तथा कण्ठीमाला 'तनतुरा' गाँव के कुँए में डाले थे। और तनतुरा गाँव का ही ये तड़कर ठाकुर अपना निकास बतलाते हैं। औरंगजेब से कह दिया कि अब हम ब्राह्मण नहीं हैं। तगा तोड़कर 'तड़कड़' ठाकुर हैं। ये ही नहीं ठाकुरों ने व जाटों ने भी धर्म परिवर्तन किये कि मलिकाने ठाकुर व मलिकाने जाट चौधरी मेव कहे गये वे चौधरी जाट ही थे। धर्म बदलने से उन्हें मेव कहा जाता है, और इस्लाम धर्म माना।

इस प्रकार से आततायी औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जुर्म ढहाये। यहाँ तक कि मड़राक, सादाबाद, छवारी, नौहझील आदि स्थानों के हिन्दू रईस परिवारों ने भी औरंगजेब के भय से धर्मपरिवर्तन किये। कुछ को कहीं-कहीं हिन्दुओं ने मिला लिये कुछ ज्यों के त्यों हैं। जो आज तक मुसलमान धर्म को मान रहे हैं। हमारे देश के अन्दर आखिरकार मुसलमान जाति थी कहाँ? ये इतिहास साक्ष्य है कि भारत पर यवनों ने शासन कर के जबर्दस्ती हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। जिसमें कि देश के लिये अति दुर्भाग्य का समय तो 1381-82 से गयासुद्दीन तुगलक बादशाह का शासन काल तथा बादशाह औरंगजेब का शासन काल ही हिन्दू जाति के लिये रहा। औरंगजेब का शासन संवत् 1666 से 1726 तक का समय हिन्दू जाति के लिये इतिहास में विधर्मी शासन काले अक्षरों में लिखा गया।

इन शासनों में हिन्दू धर्म की मुख्य केन्द्र ब्राह्मणों, साधुओं तथा हिन्दू ग्रन्थ व मन्दिर, देवालयों को नष्ट किया। अच्छे मान्य मन्दिरों को ध्वस्त किया, व मूर्तियों को खण्डित किया। हिन्दू ग्रन्थ वेद, पुराण, गीता भागवत, रामायण आदि आदि ग्रन्थों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर आग में जलवा दिये। विद्वान ब्राह्मणों को मस्तक पर चन्दन लगाना, जनेऊ धारण करना, वेद विद्या पढ़ना, पढ़ाना आदि ब्राह्मण कर्म पर कड़ी पाबन्दी लगा दी

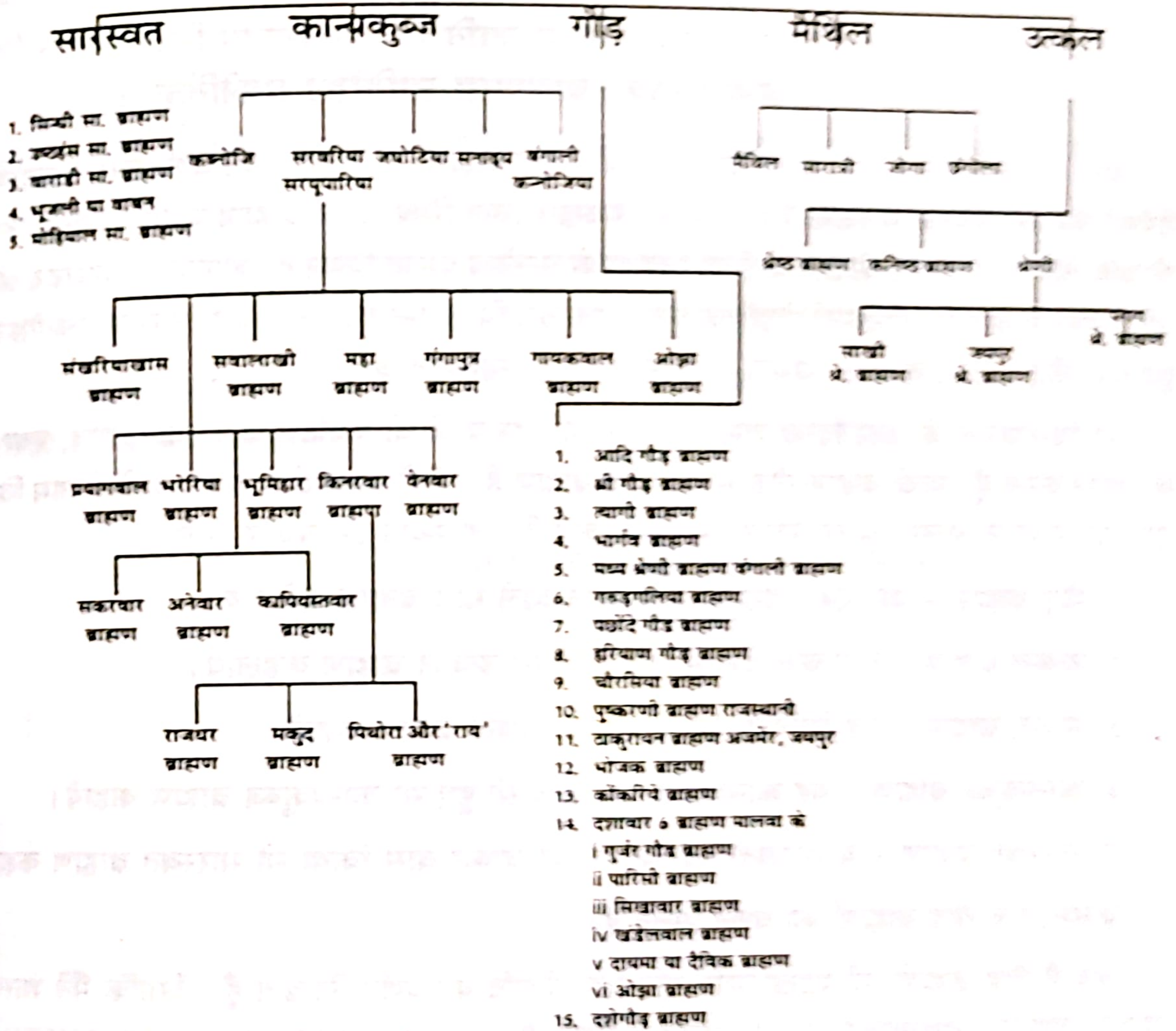
तथा नमाज पढ़ने को बाध्य किया। ब्राह्मणों को जबर्दस्ती मार मार कर माँस भक्षण कराया जाता था। तुर्क आक्रमणकारियों जैसे बाबर, मुहम्मद गौरी, सिकन्दर आदि ने भी भारत में हिन्दुओं व ब्राह्मणों के साथ तो कसर नहीं छोड़ी थी।

परन्तु उपरोक्त दोनों अत्याचारी शासकों के शासनकाल का वर्णन जो ब्राह्मण जातियों के लिये घोर विपदा का समय था। अधिकतर इन्हीं शासनों में धर्म परिवर्तन हुए। इससे पहले तो चारों वर्ण अपने अपने यथा कर्मों पर आधारित थे। इन्हीं समयों में जाट, क्षत्री, वैश्य, ब्राह्मणों में से गाँवों के गाँव मुसलमान बना दिये गये। जिनको आज प्रत्यक्ष देखा जाता है। जबकि ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा साक्ष्य मिल रहे हैं। मलिकाने ठाकुर, मलिकाने चौधरी, वणिक मुसलमान, ब्राह्मण मुसलमान मुल्ला मौलवी,सूफी, फकीर आदि जाति कहलाती है। जनेऊ का त्याग कर कण्ठीमाला फेंक कर तड़कर ठाकुर बन गये पहले दीक्षित ब्राह्मण थे। बहुतेरे ब्राह्मण अपना ब्राह्मण रूप कर्म त्याग कर प्राणरक्षा हेतु जीविकोंपार्जन के लिये अन्य अन्य कर्मों द्वारा गुजारा करने लगे। बहुतेरे ब्राह्मण कृषि के स्वामी बन गये। सार्थत त्तव यहाँ मेल खाता है, कि ब्राह्मण पूर्वज विद्वानों ने समय देखते हुए अपनी प्राणरक्षा हेतु सब मूलों को त्याग कर्म क्षेत्र को ही दृष्टि किया। आन, मान, मर्यादा, प्राण धर्म की रक्षा करते हुए जीवन निर्वाह उन अत्याचारियों, विधर्मियों के समय में घोर आपत्ति काल में किया। जो आज हम उन्हीं की संतति उनके इतिहास को देख पुनरावृत्ति लेखन किया है। और पढ़कर यह सबक मिलता है, कि उस समय उनमें आपस में कितना अगाध प्रेम था। जो घोर आपत्ति काल में किस प्रकार दूर दूर भटकते हुए आपस में समय पर मिल जुल कर प्यार के साथ विना किसी मतभेद के धर्म और जाति को सुरक्षित रखा। सज्जनों पूर्वजों के पद चिन्हों को अवश्य निहारिये समय घातक स्थिति का आ चुका है, मेरा निवेदन है।

धन्यवाद।

5. पंचगौड़ ब्राह्मण

'उत्तरांचल के पंच गौड ब्राह्मण सारिणी'



(उत्तर दिश वासी पंच गौड ब्राह्मणों की शाखा सारिणी)

"पंचगौड ब्राह्मणों का पृथक-पृथक विस्तार वर्णन"

श्लोक - गौड़ाः उत्कलः मैथिलाःच कान्यकुब्जः सारस्वताः ।
पंचगौड़ा इति ख्याता तु विन्ध्यस्योत्तर वासिनः ॥

अथ सुविस्तारतया जाति विवेक स्नाउसारिता ।
अस्य पुस्तकः ब्राह्मणस्य जातिरेका प्रकीर्तिता ॥

अर्थ - अब विन्ध्याचल से उत्तर दिश वासी पंच गौड़ ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन इस 'ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण' नाम की पुस्तक में किया है। इसमें डा. मक्खन लाल मिश्र जी ने ब्राह्मण जाति के लिये जातियता के कर्म, धर्म तथा वंशादि के ज्ञान के लिये विस्तार से उल्लेख प्रस्तुत किया है। शास्त्रों के अनुसार श्री ब्रह्मा जी के मुख से ब्राह्मण सृष्टिकर्ता पोराणिक पुरूष एक ब्रह्मर्षि उत्पन्न हुआ उसी ब्रह्मर्षि से ये पंचगौड़ उत्पन्न हुए। 1. गौड़ 2. उत्कल 3. मैथिल 4. कान्यकुब्ज 5. सारस्वत ॥

यह विन्ध्याचल के उत्तर दिशि वासी हैं। अब आगे इन पाँचों के पृथक पृथक स्थान, गोत्र, प्रवर आदि का वर्णन करता हूँ। पांचों ब्राह्मण गौड़ सम्प्रदाय के ब्राह्मण हैं। पाँचों ब्राह्मणों के स्थान नामों से नाम विख्यात हुए। इन सभी ने अलग-अलग स्थानो पर वास किये हैं। जो स्थान इस प्रकार से है।

1. गौड़ ब्राह्मण - यह गौड़ प्रदेश के वास करने वाले गौड़ ब्राह्मण कहे गये।

2. उत्कल ब्राह्मण - ये उत्कल देश में जाकर रहे सो उत्कल ब्राह्मण कहलाये।

3. मैथिल ब्राह्मण - यह मिथिला देश में रहे सो मैथिल ब्राह्मण कहाये।

4. कान्यकुब्ज ब्राह्मण - यह कान्यकुब्ज देश के वासी हुए सो कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहाये।

5. सारस्वत ब्राह्मण - ये सरस्वती नदी के तट पर जाकर वास किया सो सारस्वत ब्राह्मण कहाये।

क्रमशः पंच गौड़ ब्राह्मणों का वर्णन प्रस्तुत है।

अब मैं गौड़ ब्राह्मणों की शाखा ऋषि गोत्र प्रवर वेदादि का वर्णन लिखता हूँ। जैसाकि मैंने शास्त्रों में पढ़ा है। वही इस 'ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण' पुस्तक में लिखा है। इस पुस्तक को लिखने का आशय पुस्तक पढ़ने वालों व सुनने वालों सभी ब्राह्मण बन्धुओं को करबद्ध निवेदन के साथ बताना चाहता हूँ, कि ब्राह्मण बन्धुओं में परस्पर एक दूसरे से प्यार का भाव उत्पन्न हो क्योंकि आपसी मतभेद, कि मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण वंशी हूँ, दूसरा कहता है, कि मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण वंशी हूँ सोचो ऐसी विलावजे की बातें पतन की निशानी हैं। जबकि एक ही पिता के 10 अन्य ब्राह्मण शाखायें हैं, तो फिर मन द्वेष क्यों परन्तु इसमें भी कारण हैं। कारण सिर्फ

यह प्रतीत होता है, कि शास्त्र देखने व सुनने के लिये ब्राह्मण परसमय के अभाव का होना दूसरे पूर्व संस्कृति जो ब्राह्मणों के लिये अति आवश्यकीय है। जैसे – संस्कृत भाषा का पठन–पाठन वेद शास्त्रों का स्वाध्याय हवन आदि नित्य कर्म का करना जिससे अपने ब्राह्मण धर्म का सही से अनुपालन होना पाया जाता है। यही कर्मो की कमी ब्राह्मण जाति के पतन का होना मुझे तो प्रतीत होता है। मैं सभी पढ़ने वाले सज्जनों से क्षमा प्रार्थी हूँ अगर गलती हो तो क्षमा करना।

बाद आगे आने वाले समय में यह 'ब्राह्मणोंत्पत्ति दर्पण' नामक पुस्तक ब्राह्मण जाति को पावन पवित्र बनाये रखने में अमृतरूप सिद्ध होगी। ये मेरी समय को देखते हुए स्वयं की भविष्यवाणी है।

मैं ब्राह्मण बन्धुओं से निवेदन करूँगा कि बच्चों को संस्कृत भाषा का अवश्य अध्ययन करायें। जिससे कि ब्राह्मण जाति का ब्राह्मणत्व लोप न हो कम से कम इतना तो होना चाहिए कि संस्कृत भाषा का अनुवाद हिन्दी में तथा हिन्दी का अनुवाद संस्कृत में कर लें। जिससे अपने ब्राह्मणत्व की रक्षा कर सकें।

मेरा सभी ब्राह्मण बन्धुओं से निवेदन है कि आपस में मतभेद त्याग कर भाईचारे के साथ मेल मिलाप से हार्दिक प्रेम की वर्षा–वर्षा कर एकजुट एक स्थल पर ब्राह्मण बन्धु रहें॥

दोहा – निजभाषा उन्नति अहे, सब उन्नति की मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटहि न हिये के शूल ॥

6. गौड़ ब्राह्मण

'गौड़ ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन'

बंग देश से लेकर अमरनाथ तक गौड़ देश क्षेत्र स्थित है। ऐसा एक श्लोक है, जो 'आदि गौड़ दीपिका' में लिखा है।

श्लोक - गौड़ देशं समारभ्य भुवनेशान्तगः शिवे।
गौड़ देशः समाख्यातः सर्व विद्या विशारदः ॥

अर्थ - जो जंगल देश के नाम से विख्यात था, पूर्व समय में और आज जिसे हरियाणा कहते है। दिल्ली प्रान्त, सोनीपत, करनाल, कुरुक्षेत्र, कैथल, यमुना तट के देश हस्तिनापुर, मारवाड़, झुंझनू, पुष्कर, शेखावाटी, फतेपुर आदि प्रान्त मत्स्य विराट, भिवानी आदि स्थानों में गौड़ ब्राह्मणों का निवास है। तथा अयोध्या के उत्तर में सरयू नदी और सरयू के उत्तर सारवार तथा गौड़ देश हैं, व मत्स्य पुराण में आवस्तीपुरी का वर्णन गौड़ देश में किया है।

श्लोक - श्रावस्तस्चमहातेजा वत्सकस्तत्सुतोऽभवत् ।
निर्मितायेन श्रावस्ती गौड़ देशे द्विजोत्तमाः ।

मत्स्य पुराण अध्याय 12 श्लोक 30 ।

उत्तरा कौशले राज्यं लवस्य च महात्मनः ।
आवस्ती लोक विख्यता श्राविता च लवस्य च॥

वायु पुराण 2 अध्याय 26 श्लोक 198 ।

अर्थ - यह अवस्तीपुरी गौड़ देश में इस समय भी सरयू नदी के उत्तर में गोंडा नगर के समीप मौजूद है। इस देश के सीमा पूरब में गंगा नदी और गंड की नदी का संगम है। पश्चिम और दक्षिण दिशाओं में सरयू है, उत्तर में हिमालय है। इसके बीच के क्षेत्र का नाम गौड़ देश है, गन्ड की नदी के पश्चिम के क्षेत्र को भी गौड़ देश कहते हैं। इस स्थान में जो ब्राह्मण सृष्टि के आरम्भ से निवास करते हैं वे आदि गौड़ कहलाते है।

कहा जाता है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व की बात है, कि बंग देश के राजाओं ने पाँच गौड़ ब्राह्मणों को कार्यवश बुलाया था। और दान मान से संतुष्ट कर वहीं रखा तब से इन आदि गौड़ ब्राह्मणों का निवास

स्थान कहीं भी पाया जाता है। परन्तु यह बंगदेश गौड़ देश में नहीं है। ब्राह्मण उ. मार्तण्ड में लिखा है, कि आर्यावर्त का जनमेजय नाम का राजा था। उसने एक महायज्ञ करने की इच्छा से 1444 शिष्यों के सहित कटेश्वर मुनि को बुलाकर यज्ञ किया, और बहुत दान दक्षिणा दी जब अवभृथ स्नान के पीछे कटेश्वर मुनि को दक्षिणा देने लगे। तब मुनि ने राजप्रतिग्रह को स्वीकार नहीं किया, और आशीर्वाद देकर जाने लगे, तब राजा ने पान के बीड़ा में एक-एक ग्राम का दान लिखकर मुनि शिष्यों को अलग अलग एक-एक बीड़ा दिया, उन शिष्यों ने खुश होकर वे बीड़ा ग्रहण किये, जब वे मुनि शिष्य वहां पर होने लगे तब उनके जल के भीतर पैर प्रविष्ट होने लगे, उन्होंने विचार किया, कि हमारा जल के ऊपर चलना कैसे नष्ट हुआ, तब अपने अपने बीड़ा खोलकर देखे तब उनमें ग्रामदान लिखा देखकर जाना कि राजप्रतिग्रह के कारण जल के ऊपर की गति नष्ट हुई, तब वे सब लौटकर राजा के पास गये। और कहा तुमने ऐसा क्यों किया, तब राजा ने बहुत ही स्तुति विनय करके कहा कि बिना दक्षिणा के यज्ञ भी सफल नहीं होता, इस कारण मैंने ऐसा किया। यह कहकर उन सभी शिष्यों को अपने गौड़ देश में रख लिया, तब से वे ब्राह्मण वहीं रहने लगे और आदि गौड़ कहलाये। इनमें भोजन आचार की न्यूनता है, पक्का अन्न बाजार तक का खा लेते हैं। छुआछूत का दोष कम मानते हैं, इनमें प्रायः शुक्ल यजुर्वेदी मध्यांदिनी शाखा वाले बहुत हैं, सामवेदी भी हैं। इनमें आस्पदादि को अवंटक और शासन कहकर वर्णन करते हैं।

आदिगौड़ 'शाखा 20 गोत्रादि की सारणी'

सं.	अवंटक	आस्पद	वेद	शाखा	सूत्र
1.	किरोट	मिश्र	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
2.	हरितवाल	मिश्र	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
3.	इन्दोरिया	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
4.	बबेरवाल	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
5.	सेयल	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
6.	ढाचोला	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
7.	सुरोला	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
8.	पादोपोता	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
9.	मारस्या	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
10.	पंचरग्या	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
11.	इच्छावत	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर

12.	तासोर्या	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
13.	अष्टान	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
14.	कुन्डालक	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
15.	गिंडा	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
16.	मोरीलिया	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
17.	तुन्गा	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
18.	टिलावत	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
19.	विवाल	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर
20.	भिवाल	जोशी	यजुर्वेद	मध्यांदिनी	पारस्कर

'देशवासी आदि गौड़ ब्राह्मण'

उन प्रवासी ब्राह्मणों के अलावा जो सृष्टी समय के देशवासी ब्राह्मण थे। और ये पछांदे ब्राह्मण यह गौड़ जाति के दो भेद हैं। इनमें देशवासी और पछांदों का परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं है, देशवासियों में मिश्र, तिवारी, पूठिया, चौमोहरिया, गौतम, दुबे आदि होते हैं, और यह अपनी जाति में प्रतिष्ठित गिने जाते हैं। यह भी यजुर्वेदी और सामवेदी होते हैं। एक जाति इनमें शुक्लों की भी है। वे ब्राह्मणों के सिवाय दूसरों का अन्न ग्रहण नहीं करते हैं, परन्तु अब अनपढ़ होने के कारण सम्मान में गिरते जाते हैं। इस जाति में यज्ञोपवीत के समय अधिक खर्च करते हैं तथा बालक का छोटी उम्र में ही विवाह कर लेते हैं। यह कुप्रथा है।

'श्रीगौड़ादि ब्राह्मण की उत्पत्ति'

अव मैं मेड़तवाल ब्राह्मण, श्री गौड गुजराती और खरसोंदें आदि ब्राह्मणों का वर्णन करता हूँ।

विक्रमी सम्वत् 1190 मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी गुरुवार को गुजरात देशाधिपति महाप्रतापी राजा विजयसिंह ने, अपने गुजरात देश में दो सौ ब्राह्मणों को दान मान और ग्रामादि देकर, श्री गौड़ ब्राह्मणों की जाति और उनका कुलगोत्र आचार गुजराती सम्प्रदाय के अनुसार स्थापन किया, पूर्व में ये भी सब गौड़ थे। और कश्मीर के श्रीहट्ट नगर में इनका निवास था, वहाँ अकाल पड़ जाने से यह मालवे में आकर रहे, वहाँ से इनको राजा विजयसिंह ने बुलाकर अपने यहाँ बसाया इनकी लक्षेश्वरी नामक लक्ष्मी कुलदेवी है, इनके नये पुराने अनेक भेद हैं। ग्राम और वृती के अनुसार इनके आस्पद आदि हुए इनमें नये बाईस घर हैं, और ग्यारह घर मध्यम हैं। इनमें मेरठ या मेड़वासी ब्राह्मणों के वंश जो हुए वो मेरठवाल ब्राह्मण

कहलाये। इसका अभिप्राय यह है कि मालवा में जो ब्राह्मण मेरठ से आये थे, वे मेड़तवाल या मेरठवाल कहे गये।

श्री गौड़ ब्राह्मणों में जो भेद है, सो यह है, कि मालवी श्री गौड़ ब्राह्मण मालवा देश से आये, यह वर्णाश्रम धर्म का भलीभाँति पालन करते हैं।

मेंड़तवाल ब्राह्मण मेरठ से आये, प्रवालिये श्री गौड़ बागड़ निवासी हैं, ये धर्म-कर्म में कम आस्था रखते हैं। मालवियों में नये पुराने दो भेद हैं, उन नये में भी चार भेद हैं, खरोला ग्राम में रहने से खारोला श्री गौड़ ब्राह्मण कहे गये, तथा खरसोंद में रहने से खरसोदिये श्रीगौड़ कहाये, इनमें शूद्र कन्या से विवाह कर लेने से एक डेरोला श्रीगौड़ ब्राह्मण कहाते हैं। पर यह सबसे पृथक हैं। पहले ये सब गौड़ ब्राह्मण काश्मीर देश के निवासी थे। लक्ष्मी जी के श्राप से धनहीन होकर देश से बाहर आये, और अनेकों प्रान्तों में फैल गये। कोई मालवे में कोई मारवाड़ में और कोई बागड़ में जा बसे। श्री हट्ट ग्राम के निवास के कारण इनमे श्रीहट्ट शब्द संयुक्त कर दिया गया। डेरोल और प्रवालिये इन दो को छोड़कर इनका परस्पर विवाह सम्बन्ध होता है। लक्ष्मी कुल देवी की पूजा होती है।

'22 शाखायें श्रीगौड़ ब्राह्मणों के गोत्र प्रवरादि और अवटंक लिखते हैं'

सं.	टंक	गोत्र	प्रवर	आस्पद	स्थान
1.	बड़ेलिया	कुशकस	3	पाठक	उत्तर
2.	भाद्रणिया	वत्सस	5	जोशी	उत्तर
3.	छालेचा	कौशिक	3	दुवे	उत्तर
4.	काश्मीरा	गर्ग	3	जोशी	उत्तर
5.	मोटाशिया	कृष्णात्रेय	3	दुवे	उत्तर
6.	मोटाशिया	चन्द्रात्रेय	3	दुवे	उत्तर
7.	नाहापला	भारद्वाज	3	पाठक	उत्तर
8.	माढ़ाशिया	कात्यायन	3	पाठक	उत्तर
9.	कपटाबुठिया	कात्यायन	3	दुवे	उत्तर
10.	कपटाल्लिहा	कात्यायन	3	दुवे	उत्तर
11.	मोडिया	कात्यायन	3	पाठक	उत्तर
12.	कपटा	अत्रि	3	दुवे	उत्तर

13.	मुंडालोढ़ा	मोद्गल्य	3	पंड्या	उत्तर
14.	पंडोलिया	यास्क	3	दुवे	उत्तर
15.	धोलकिया	शांडिल्य	3	दुवे	उत्तर
16.	कपटावोटलिया	अत्रि	3	व्यास	उत्तर
17.	शिहोलिया	वशिष्ठ	3	दुवे	उत्तर
18.	मसूड़िया	पाराशर	3	जोशी	उत्तर
19.	पेटलाद	अत्रि	3	पंड्या	उत्तर
20.	सुन्दरिया	वामकक्ष	3	व्यास	उत्तर
21.	कपटाटिपारिया	वत्सस	3	जोशी	उत्तर
22.	दर्भावत्या	भारद्वाज	3	जोशी	उत्तर

'शाखा 21 कनिष्ट जाति के श्री गौड़ ब्राह्मणों की सारणी'

सं.	टंक	गोत्र	प्रवर	आस्पद
1.	बज्रालिया	वत्सपी	5	दुबे
2.	धोलकिया	वत्सपी	5	उपाध्याय
3.	उपलोटा	वत्सपी	5	पाठक
4.	डिढ़ाणी	वत्स	5	जोशी
5.	धाराशिणा	भारद्वाज	3	पंड्या
6.	चिकड़वारा	भारद्वाज	3	व्यास
7.	चंचोलिया	भारद्वाज	3	दीक्षित
8.	भड़कोढूरा	भारद्वाज	3	मेहता
9.	कर्षडी	कश्यप	3	व्यास
10.	सांगमी	चन्द्रात्रेय	3	जोशी
11.	दुंडावा	कृष्णात्रेय	3	जोशी
12.	चांगड़िया	शांडिल्य	3	जोशी
13.	भागलिया	हारीत	3	पंड्या
14.	भालजा	व्यास	3	दीक्षित
15.	खेड़ाला	बिन्दुलस	3	देवा
16.	गम्भीरिया	कौशिक	3	जोशी

17.	संवाणिया	मौनस	3	जोशी
18.	लांछला	गौतम	3	जोशी
19.	जम्बूसरा	कौशिक	3	दीक्षित
20	धाराशिड़िया	शांडिल्य	3	जोशी
21.	धनसुरा	कश्यप	0	जोशी

'गौड मेड़तवाल (मेरठ) ब्राह्मण'

सं.	अवटंक	गोत्र	आस्पद	प्रवर
1.	जरगाला	अत्रि	पंड्या	3
2.	खलाशिया	सांकृत	तिवाड़ी	3
3.	सिहोरिया	सांकृत	पंड्या	3
4.	हरेसदा	सांकृत	पंड्या	3
5.	धामड़ोदरिया	सांकृत	पंड्या	3
6.	नवमोसा	सांकृत	पंड्या	3
7.	वलायता	सांकृत	पंड्या	3
8.	वणोयला	सांकृत	पंड्या	3
9.	मेहलाड	सांकृत	पंड्या	3
10.	नलतडाकठगोला	सांकृत	पंड्या	3
11.	वेटला	सांकृत	पंड्या	3

इति श्री गौड़ वर्णन

'15 मालवीय श्री गौड़ ब्राह्मण शाखा'

सं.	गौत्र	ऋषिगोत्र	अवटंक	शाखा	सूत्र
1.	आदिगौड़ ब्रा.	गौतम	मिश्र	मध्यान्दिनी	कात्यायन
2.	मालवीय श्री गौड़ ब्रा.	14ऋषि	मिश्र	मध्यान्दिनी	कात्यायन

3.	त्यागीगौड़ ब्रा.	कौशिक	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
4.	भार्गवगौड़ ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
5.	मध्य श्रेंणी वंगाली ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
6.	गरुलियागौड़ ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
7.	पछोंदे गौड़ ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
8.	हरियाणागौड़ ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
9.	चोरसियागौड़ ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
10.	पुष्कर्णीगौड़ ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
11.	ठकुरायन गौड ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
12.	भोजकगौड़ ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
13.	ककड़ियागौड़ ब्रा.	आंगि ऋषि	जोशी	मध्यान्दिनी	कात्यायन
14.	दशावार गौड़ ब्राह्मण				

'6 गोत्री मालवीय मालवा के'

1. गुर्जर गौड़ ब्राह्मण
2. पारिख गौड़ ब्राह्मण
3. सिखावाल गौड़ ब्राह्मण
4. दायमा गौड़ ब्राह्मण
5. खण्डेलवाल गौड़ ब्राह्मण
6. ओझा गौड़ ब्राह्मण

15. दशेगौड़ ब्राह्मण

अवटंक – मिश्र, जोषी, वत्स, व्यास, ओझा, त्रिपाठी, दुबे आदि।

'गौड ब्राह्मण के बारह प्रकार या भेद' उत्पत्ति

श्लोक – मण्डपांचल सान्निध्ये मण्डपेश्वर सान्निध्यौ ।
गौड़ास्ते ऽपि च मांडव्य शिष्यास्ते गुरुवः स्मृताः ॥
मांडव्यास्तत्र श्रीगौडा मुखः शंसित वृताः ।
गौतमो दत्त वास्तेषां गुर्वर्थे तान्श्रृषिन विभुः ॥
श्रीगौड़ास्तत्र शिष्यान्वै गुरवस्ते तपिस्वनः ।
श्री हरिषेश्वर सानिध्ये गतवानृषि सत्तमः ॥
श्री गौड़ास्तसय वै शिष्या गुर्वर्थे संप्रकल्पिताः ।
चतुर्थ तु सुतं तस्य हारीताय ददौ पुनः ।
गृहीत्वा गतवान सोऽपि देशे हरियाणा के शुभे॥

हरियाणाश्चैव श्रीगौड़ा गरुत्वे संप्रणोदिताः ।
देशे ऽर्वुदे महरण्ये बाल्मीकाश्रम संज्ञके ॥
बाल्मीकाश्चैव गुरुवो मुनिनां संप्रकल्पिताः ।
वशिष्ठा ऋषि शिष्याश्च वशिष्ठस्य महात्मनः ॥
सोरभेय शुभे देशे सौरभा गुरुवः स्मृताः ।
अष्टम तु सुतं तस्य दालभ्याय ददौ त्तः ॥
तच्छिष्याश्चैव दालभ्या गुरु त्वे ते प्रकीर्तिताः ।
ततस्तेभ्यो ददौ हंसान शिष्याश्च याजनानि वा॥
विप्रास्तु सुखदाश्चैव सुखसेना महौजस ।
दशम् तस्य पुत्रम तु भट्टाख्य मुनये ददौ॥
तान गुरुत्वेन संपाद्य भट्ट नागर संज्ञकाः ।
एकादशं तु पुत्रं तु सोभराय ददौ त्तः ।
सूर्यध्वजाश्च तच्छिष्या गुरुत्वे ते प्रकल्पिताः ।
द्वादशं तु सुतं तस्य माथुराय ददौ त्तः ।
माथुरीयाश्च गुरुवो वर्तन्ते बहबः स्मृताः ॥

नोट : इस प्रकार बारह भेद गौड़ ब्राह्मणों के हुए पूर्ण विवरण आगे प्रस्तुत है जिसमें ऋषि गोत्र, व स्थान सभी वर्णित किये हैं।

7. 'गौड़ ब्राह्मण के बारह भेद' 3 शाखा का वर्णन

अथ द्वादश विधि गौड़ ब्राह्मणानां ।

अर्थ – एक गौड़ ब्राह्मण के 12 भेद हुए जिनकी व्याख्या अलग-अलग कहता हूँ। तीन शाखा है।

1. गौतम गौड़ ब्राह्मण – यह गौड़ेश्वर क्षेत्र में रहे इनका ऋषि गोत्र गौतम है।
2. माण्डव्य गौड़ ब्राह्मण – यह माण्डव्य पर्वत क्षेत्र में रहे इनका ऋषि गोत्र माण्डव्य है। इन्हें मालवीय गौड़ ब्राह्मण कहते हैं।
3. गंगापुत्र गौड़ ब्राह्मण – कुछ हर्ष गौड़ वंश के गंगाजी सेवक गंगा तट जाकर रहे। इनका ऋषि गोत्र श्री हर्ष है कुछ लोग गंगा सेवक थे।
4. हरियाणा गौड़ ब्राह्मण – यह हरियाणा क्षेत्र में रहे, इनका ऋषि गोत्र हारीत है।
5. वशिष्ठ गौड़ ब्राह्मण – यह अयोध्या क्षेत्र में रहे इनका ऋषि गोत्र वशिष्ठ है।
6. सौभर गौड़ ब्राह्मण – यह सूर्य मण्डल क्षेत्र में रहे, इनका ऋषि गोत्र सोभर है।
7. दालभ्य गौड़ ब्राह्मण – यह दालभ्य देश में रहे, इनका दालभ्य ऋषि गोत्र है।
8. सुखसेन गौड़ ब्राह्मण – यह हंस पर्वत के समीप सुखसैन देश में रहे, इनका हंस ऋषि गोत्र है।
9. सौरभ गौड़ ब्राह्मण – यह सौरभी देश में रहे इनका सौरभ ऋषि गोत्र है।
10. लौंभित गौड़ ब्राह्मण – लौंभित नगर में इसे ये माण्डव्य वंशज थे।
11. निगम गौड़ ब्राह्मण – चित्रगुप्त का पुत्र निगम ऋषि था उसके वंशज है।
12. हर्ष गौड़ ब्राह्मण – ये सरयू तट वासी रहे हर्ष ऋषि गोत्र है।
13. माथुर चौबे गौड़ ब्राह्मण – यह मथुरा नगरी में रहे इनका ऋषि गोत्र माथुर है।
14. भट्ट या भटनागर गौड़ ब्राह्मण – यह भट्टनगर क्षेत्र में रहे, इनका ऋषि गोत्र भट्ट है।
15. वाल्मीकि गौड़ ब्राह्मण – यह आबूगढ़ मध्य प्रदेश क्षेत्र में रहे, इनका वाल्मीकि ऋषि गोत्र है।

उपरोक्त गौड़ ब्राह्मणों की भी अलग-अलग शाखा 3 हुई है, सो उनकी भी शाखाओं का वर्णन करता हूँ। जो मूल, प्रवर, ऋषि गोत्र, अवटंक आदि से परिपूर्ण सूची अलग-अलग तौर से उपलब्ध है।

12 प्रकार के गौड और 3 शाखा '15 गौड ब्राह्मणों की सूची'

सं.	स्थान	नाम	ऋषिगोत्र	अवटंक	वेद	देव
1.	गौडेश्वरक्षेत्र	मालवी गौ. ब्राह्मण	गौतम	उपाध्याय	यजु.	शिव
2.	माण्डव्य पर्वत	श्रीगौड़ ब्राह्मण	माण्डव्य	उपाध्याय	यजु.	शिव
3.	हरियाणा क्षेत्र	हरियाणा गौ. ब्राह्मण	हारीत	उपाध्याय	यजु.	शिव

4.	अयोध्या क्षेत्र	वशिष्ट गौ. ब्राह्मण	वशिष्ट	उपाध्याय	यजु.	शिव
5.	गंगाजी तट	गंगापुत्र गौ. ब्राह्मण	हर्ष	उपाध्याय	यजु.	शिव
6.	सूर्यमण्डल क्षेत्र या (अहिक्षेत्र)	सूरध्वज गौ. ब्राह्मण	सौभर	उपाध्याय	यजु.	शिव
7.	दालभ्य देश	दालभ्य गौ. ब्राह्मण	दालभ्य	उपाध्याय	यजु.	शिव
8.	हंसपर्वतसुखसेनदेश	सुखसेन गौ. ब्राह्मण	हंस	उपाध्याय	यजु.	शिव
9.	भट्टनगर क्षेत्र	भट्ट या भट्नागर	भट्ट	उपाध्याय	यजु.	शिव
10.	मथुरा नगरी	माथुर चौबे गौ. ब्राह्मण	माथुर	मिश्रपाठक	यजु.	शिव
11.	सौरभ देश या(सौराष्ट्र)	सोरभ गौ. ब्राह्मण	सोरभ	पांडे, शर्मा	यजु.	शिव
12.	आबूगढ़ मध्यप्रदेश	वाल्मीकि गौ. ब्राह्मण	वाल्मीकि	उपाध्याय	यजु.	शिव
1.	सरयू नदी तट	हर्ष गौड़ ब्राह्मण	हर्ष	उपाध्याय	यजु.	शिव
2.	लंभित नगर	मांडव्य ब्राह्मण	माडव्य	उपाध्याय	यजु.	शिव
3.	सूर्य मंडल	निगम ब्राह्मण	निगम	उपाध्याय	यजु.	शिव

गौड़ ब्राह्मणों के ऋषि गोत्र 24 हैं। 'फिर इनके भेद होकर 115 गोत्र हुए'

श्लोक - वशिष्ठ कश्चपोत्रिश्च शांडिल्यों वत्स एवं च ।
सावर्णि को भारद्वाजः शौकालीनश्च गौतमा ॥
कल्पिषश्चाग्नि वेश्यश्च मुद्गलश्च वासुकिः ।
सौपायनश्च चित्रृश्च कृष्णात्रेयश्च रोहितिः ॥
व्याघ्रपादश्च हारीतो जमदग्निस्तथां परः ।
कुशिकः कौशिकश्चेव विश्वामित्रश्च पाराशरा ॥
चतुर्विंशतिः गोत्रणि मुख्यानि कथितानि वै ।
एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यन्ते ॥

(आ.गौड़ ब्राह्मण उ. दीपिका)

अर्थ - वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, शाण्डिल्य, वत्स, सावर्णि, भारद्वाज, शौकालीन, गौतम, कल्पिष, अग्निवेष, मुद्गल, वासुकि, सोपायन, कृष्णत्रेय, रोहित, व्याघ्रपाद, हारित, जमदग्नि, कुशिक, कौशिक, विश्वामित्र, पाराशर, ये 24 मुख्य ऋषि गोत्र मान्य हैं। अन्य कुछ गोत्र इन्हीं ऋषियों में से कुछ की संतान हैं सो कहे जाते हैं। जो ऋषि गोत्र और उनकी संतानों को उपगोत्र से सम्बोधित कर वर्णन करता हूँ। शास्त्र

व लेखानुसार 115 को संख्या है। ये ही गौड़ ब्राह्मणों के गोत्र, उपगोत्र है। अलग-अलग नामों का तालिका में विवरण प्रस्तुत है। गौड़ ब्राह्मणों में मूल को शासन कहते हैं। सनाड्यों में मूल को कुरीग्राम कहते हैं। मैथिलों में मूल कहते हैं। कान्यकुब्जों में नूँख कहते हैं।

'गौड़ ब्राह्मणों के गोत्र-उपगोत्र 24 ऋषि तथा उनकी भेद

ऋषि (सन्तानें कुल 115 मुख्य)

सं.	ऋषिनाम	सं.	ऋषिनाम	सं.	ऋषिनाम
1.	वशिष्ठ और सन्तान	16.	मरीच गोत्र	36.	अधमर्षण गोत्र
अ.	अपर वशिष्ठ गोत्र	17.	दक्ष गोत्र	37.	शांडिल्य गोत्र
ब.	पर वशिष्ठ गोत्र	18.	कृतु गोत्र	38.	किण्डव गोत्र
स.	दिवा वशिष्ठ गोत्र	19.	अग्निवेष भारद्वाज	39.	नातुकर्ष्य
द.	पूर्व वशिष्ठ गोत्र	20.	भारद्वाज गोत्र	40.	कौडिन्य
य.	उत्तर वशिष्ठ गोत्र	21.	भरद्वाज गोत्र	41.	गौतम गोत्र
2.	शक्ति गोत्र	22.	कुश गोत्र	42.	काश्यप गोत्र
3.	पाराशर गोत्र	23.	कुशिक गोत्र	43.	कश्यप गोत्र
4.	अत्रि गोत्र	24.	कौशिक गोत्र	44.	जमदग्नि गोत्र
5.	आत्रेय गोत्र	25.	धृत कौशिक गोत्र	45.	हारीत गोत्र
6.	पराशर गोत्र	26.	आप्टायन कौशिक गोत्र	46.	कर्ण गोत्र
7.	कृष्णात्रेय गोत्र	27.	साख्यायन कौशिक गोत्र	47.	कर्दम गोत्र
8.	कृष्णांत्रि गोत्र	28.	दमदग्नि कौशिक गोत्र	48.	गृत्समद गोत्र
9.	भृगु गोत्र	29.	कुत्स गोत्र	49.	गोभिल गोत्र
10.	भार्गव गोत्र	30.	कौत्स गोत्र	50.	च्यवन गोत्र
11.	अंगिरा गोत्र	31.	वत्सायन गोत्र	51.	देवराज गोत्र
12.	आंगिरस गोत्र	32.	वत्स गोत्र	52.	धनंजय गोत्र
13.	पुलिस्त्य गोत्र	33.	अगस्त्य गोत्र	53.	पातंजलि गोत्र
14.	पौलस्त्य गोत्र	34.	मुद्गल गोत्र	54.	पाणिन गोत्र
15.	पुलह गोत्र	35.	विश्वामित्र गोत्र	55.	बुधायन गोत्र

56. माण्डव्य गोत्र
57. मध्यान्दिनी गोत्र
58. मार्कण्डेय गोत्र
59. यास्क गोत्र
60. यज्ञवल्क्य गोत्र
61. लोगाक्षि गोत्र
62. वीतहव्य गोत्र
63. अज गोत्र
64. चित्र गोत्र
65. वासुकि गोत्र
66. अनावृक गोत्र
67. व्याघ्रपाद गोत्र
68. मित्रवरुण गोत्र
69. वामदेव गोत्र
70. दालभ्य गोत्र
71. अम्बरीस गोत्र
72. शांकृत्य गोत्र
73. ओर्व गोत्र
74. आयास्य गोत्र
75. आप्लवान गोत्र
76. उद्दालक गोत्र
77. मैत्रेय गोत्र
78. उद्वाह गोत्र
79. अनूप गोत्र
80. आसुरि गोत्र
81. उदथ्य गोत्र
82. सौकाशीन गोत्र
83. आश्वलायन गोत्र
84. रोहित गोत्र
85. मनु गोत्र
86. आष्टिपेणा गोत्र
87. कपिल गोत्र
88. आपस्तम्व गोत्र
89. जैमुनि गोत्र
90. जावाल गोत्र
91. उपमन्यु गोत्र
92. उपलभ्य गोत्र
93. द्रढ़ गोत्र
94. धौम्य गोत्र
95. सोपायन गोत्र
96. कल्पिय गोत्र
97. कन्चन गोत्र
98. अव्यय गोत्र
99. विष्णु गोत्र
100. विल्व गोत्र
101. गर्ग गोत्र
102. गालिव गोत्र
103. कात्यायन गोत्र
104. अलम्पायनगो.
105. शांकल्य गोत्र
106. शौनक गोत्र
107. सुनक गोत्र
108. सावर्णि गोत्र
109. सोपर्णि गोत्र
110. सुपर्ण गोत्र
111. वशिष्ठ मुनि
112. की पंचशाखा
113. उत्पत्ति शाखा
114. शाखाएँ
115. शाखा

कुल संख्या 108 इनकी छोटी सात शाखा और हुई हैं कुल संख्या ११५ है।

नोट : यज्ञ में दूर–दूर से आये हुए विद्वान ब्राह्मणों की संख्या 1444 थी राजा जनमेजय ने सबको गाँव देकर वसाया वे गांव शासन कहे गये।

राजा जनमेजय ने सर्पसत्र यज्ञ पूर्ण होंने पर 1444 ब्राह्मणों को कुरुक्षेत्र आर्यावर्त में एक–एक ग्राम धनदेकर प्रवास कराया था। फिर इन्हीं ग्रामों में उन ब्राह्मणों के रिस्तेदार आ–आकर बस गये थे। जिस कारण से बहुगोत्री ब्राह्मण एक ही ग्राम में वस गये, तथा इसी प्रकार एक ही गोत्र के कई–कई गाँव भी पाये जाते हैं।

'ऋषि गोत्रीय - गाँव या - शासन'

1. वशिष्ठ गोत्रीय गाँव या शासन के नाम 209

गौड़पुरिया, सत्य पुरिया, पूजाचार्य, शुक्लाचार्य, वटवालिया, शिरोहवाल, ब्रह्मपुरिया, स्यामपुरिया, निर्वाणपदिया, धर्मपालिया, वृतपाल आचार्य, झर्मरिया, यज्ञपलिया, वृद्धाचार्या, विपुनगरिया, जटिल प्रधान, कमलपुरिया, स्वामीपुरिया, शांतिपुरिया, सत्यपालिया, विश्वपालिया, वेदधराव्यास, धर्मोपदेशक, झर्मरपुरिया, वेदपुरिया, कुरुक्षेत्रीया, कनरवलिया, पंगस्थलिया, माधवप्रस्थिया, विष्णुपुरिया, गंगाकाशी पिंडारा, व्याघ्रप्रस्थिया, कसुरिया, उदयपुरिया, विज्ञानिया, चौकरा, हापुरिया, गोरवाल, बबरेवाल, वसुंधरिया, कांकरोलिया, धरवालिया, मुनिस्थलिया, कस्थलिया, कोषवाल, झगड़ोलिया, कुलतड़िया, चूरवाल, ज्ञानोपदेशक, उद्गातास्वामी, ब्रह्मक्षेत्रीया, पुष्करिया, हरिप्रस्थिया, शिवप्रस्थिया, शक्तिपुरिया, प्रयागकाशी, दिलवालिये, सफीदमिया, कुशस्थलिया, ईकड़ीवाल, धौपवाल, वगसरिया, सीकरिया, स्यमलपुरिया, श्रीवाल, करौलिया, अन्वरिया, तैतिल, करवालिया, कोटवाल डोहरवाल, बुढ़ाड़िया, बयालिया, रोहीवाल, वड़वरिया, व्योमवाल, अमरावतिया, खोलवाल, श्रीवाल, रातवाल, श्रीनगरिया, नागवाल, वृद्धस्थलिया, व्याघ्रस्थलिया, सुरेरपुरिया, घटाणिया, पड़कलिया, धपतड़िया, काशीपुरिया, कनरवलिया, चन्द्रपुरिया, शिलाकरा, शुक्रप्रस्थिया, कल्याणपुरिया, मुरथलिया,गणवारिया, घुल्काड़िया, व्यास, हरवाल, सारोलिया, बहादुरगढ़िया, ब्रह्मक्षेत्री, गौड़पुरिया, कौस्व, नरवाणिया, रामसठिया, करनालिया, पिढ़तारिया, पृथ्दकिया, स्वर्णपाट, प्रस्थिया निर्मला, सारोरिया, रिठालिया, बल्लभगढ़िया, मामडोलिया, वशिष्ठ स्थलिया, राईवाल, प्रतापवाल, करोलिया, पाराशरप्रस्थिया, धनेसरिया, भटाणिया, बुढ़ाड़िया, मोलनया, हरसोलिया, ऐलमवाल, कुलताड़िया, मगरोलिया, हरप्रसूधिया, मुक्तपुरिया, हरितवाल, बंगड़हद, गिल्लाणि, मिरालिया, धमाणिया, उग्रपुरिया, कर्णपुरिया, माथुरा, गुलावटिया, वेहरिया भट्टपुरिया, मंकवाल, कवाड़िया, धोहरवाल, अंगानिया, श्रीधरा, चौकर, नीतिवाल, पहाड़वरिया, गन्धर्व, उसरिया, भसौलिया, वरवालिया, अरकवाल, भड़वालिया, दशावाल, जसड़वाल रामपुरिया, ज्वालापुरिया, सारोलिया, गंगोलिया, नरपालिया, नालोड़िया, वारोलिया, हर्ष नगरिया, माधवपुरिया, चूरोल्या, महमिया, गंगा तटिया, भुटाड़िया, कपिस्थलिया, शुकस्थलिया, पाटस्थाण, कृष्णपुरिया, सोणपतिया, धनपतिया, नरेलिया, परवती, केड़ेलिया, गौड़ग्रामिया, पुष्करिया, इन्द्रपुरिया, शोभाश्रमी, नगरवाल, चौराणिया, पानीपतिया, केमाश्रमी, गनवरिया, शक्तिपुरिया, भोकरिया, धर्माणिया, शाकवान, भागलपुरिया, करनालिया, इन्दोरिया, नीदिया, सिरसोलिया, फटवाड़िया, गौधड़िया, शिवप्रस्थिया, पूटिया, नरहणा, घमणिया, ब्रह्मवेदिया, धर्माश्रमी, चांदीवाल, चौढ़ाड़िया॥

इन क्षेत्रे में वशिष्ट वंश के 5 वंशधर वासी कहे गये॥

६ शक्ति गोत्री 'शासन'

ब्रह्माश्रमी, व्यासाश्रमी, वशिष्ठाश्रमी, तपोलिया, कपिलाश्रमी, शुक्रस्थलिया, शक्तिपुरिया, रसाहारी, दुबे, गयावाल, गौड़स्थली ॥ यह 11 की संख्या है।

7 पाराशर गोत्री 'शासन'

पुनिस्थलिया, इन्दोरिया, बड़ोतिया, पानटिया, सिनापलिया, मिठोलिया, मूगल्य, सायस्थली, न्यूपुरिया, कुपवाल, रमोलवाल, नरेहड़वाल, पोजपुरिया, कड़ेलिया, खेड़ीवाल, करौंदावड़िया, पराशरप्रस्थिया, कुरुखेड़ी, श्यामतीर्थिया, मंगवाल, खिरवाल, दागवाल, मौलीगढ़े, दूदुवीवाल, इमनिया, सालोनिया ॥ यह संख्या 26 है ॥

8 पराशर गोत्री 'शासन'

विष्णुस्थलिया, व्यासनगरिया, उज्जैननगरिया, धर्मप्रस्थिया, पराशरप्रस्थिया, निर्जलिया, मूदड़ह, करनालिया, वशिष्ठस्थलिया, धौत्रिय, ब्रह्मनगरिया, नरेशवाल, दईवाल, जवलिया, सोमप्रस्थिया, पारधेरिया, हेड़लिया, बगल, पंचोली, शोभापुरिया, बड़ोहलिया, शुकपुरिया, पारवाल, दशालिया, वेदवाल, गुरुस्थली, विकारप्रस्थिया, बवाड़िया, असौंधिया, कटवालिया, सूरजपुरिया, सोमपानिया, कल्पगढ़िया ॥ इनकी संख्या 33 है।

9 अत्रि गोत्री 'शासन'

अग्निस्थलिया, गौड़पुरिया, कोथलिया, दंडपाडि, नवलगढ़िया, मोटालिया, बड़ीवाल, पलनाटी, ब्रह्मरंधिया, विश्वम्भरा, धर्मपालिया, मामडोलिया, डिडवाडिया, गुरुप्रधान, सोमपुरिया, गोलवाल, खेड़वाल, जुसालिया, मरभानिया, दुर्गपाणि, तपोभरा, हिमारिया, ज्वारिया, परीक्षतगढ़िया, करस्थलिया, धनोलिया, कर्नमं, करांडिया, तुलामणिया, परीक्षतगढ़िया, फूलोरिया, खेड़वाल, ओसवाल, सिवाड़िया, कपिस्थलिया, रामस्थलिया, कैथलिया ॥ 37 संख्या है।

10 आत्रेय गोत्री 'शासन'

ऋतुम्भरा, आत्रस, पातरस, सत्यधरा, अतरस, भिक्षुकरा, शिक्षिका, उज्ज्वला, मुक्तनगरिया, कंचनपुरिया, अमृतपानिया ॥ इनकी संख्या 11 है।

11 कृष्णात्रि गोत्री 'शासन'

खरड़वाल, बड़ीवाल, विप्रप्रस्थिया, बसूड़वाल, बबेरवाल, ददरोडिया, ब्रह्मवेदिया, सामोदरा, सिरसापत्तनिया, पर्णासिया, माधोपुरिया, बिजनौरिया, रेवालिया, करपालिया, अतरापिया ॥ इनकी संख्या 15 है।

12 अंगिरा गोत्री 'शासन'

गौड़पुरिया, शिवस्थलिया, धर्मपुरिया, ब्रह्मस्थलिया, पिन्डारिया, पताड़िया, चुल्लीवाल, देवाचार्य, देवप्रधान, ऋषिस्थलिया, वेदप्रधान, वटुवाल, मिश्रस्थलिया, भद्रवाल, देवगुरु, वरदानिया ॥ इनकी संख्या 16 है।

13 आंगिरस गोत्री 'शासन'

अंगिराश्रमी, देवाश्रमी, नरहारिया, नेमवाल, सप्तकुंभिया, गुरुस्थलिया, यज्ञस्थलिया, डाभड़ा, उपदेशलिया, रामहृदिया, हरिपुरिया, सिरमेड़िया, पानीपतिया, पिंडरा, धनाडिया, बृहस्पतिप्रस्थलिया, धनेसरिया, कल्याणनगरिया, शुभ्रवाल ॥ संख्या 19 है।

14 कृष्णात्रेय गोत्री 'शासन'

कैलवाल, बड़वाल, धरीनगरिया, प्रथदकिया, मोटिया, कुशंधरा, किठोरिया, वीरपुरिया, कलातिया॥ इनकी संख्या 9 है।

15 भृगु गोत्री 'शासन'

दैत्याचार्य, कर्मप्रधान, दीक्षित , भींडा, गयाथलिया, वीरहठ, दैत्यपाल, अभिचारक, नोरंडे, मघपुरिया, भट्टपुरिया, नीतिपाल, धनारिया, बिबरिया, ब्रह्माश्रमी ॥ संख्या 15 है।

16 भार्गव गोत्री 'शासन'

भृगुस्थली, च्यवनश्रमी, च्यवनिया, वगदोड़िया, त्रवणिया, बड़कलिया, इन्द्रप्रस्थिया, बगड़वाल, कांचवाल, चींकादनुगुरावा, रामपुरिया ॥ संख्या 12 है।

17 पुलस्त्य गोत्री 'शासन'

गोपालिया, घोरतया, तंतरिया, तुण्डवाल, महोदयपुरिया, चन्दनपुरिया, शिवाश्रमी, मंत्रवाल, लंकापुरिया, सेंनिया, पौलिया, सांडलिया, यंत्री, सांवर्ण, विजनोरिया ॥ संख्या 15 है।

18 पोलस्त्य गोत्री 'शासन'

पर्णासिया, विजयपुरिया, मुनिप्रधान, लंकपुरिया, वारीवाल,चाखल्याणि ॥ संख्या 6 है।

19 पुलह गोत्री 'शासन'

शंकरवाल, शंकाहारी, कर्मकरा, सेतुवाल, उच्छंधरा, सिद्धिवाल, पलवाल, चोबेप्रधान, जीवनवाल, शांतिपुरिया, पलवाल, ब्रह्माणिया ॥ संख्या 12 है।

20 पुलह गोत्री 'शासन'

पुलहाश्रमी, चन्डीपूजक, डामरिया, कामरूपांडे, धर्मक्षेत्री ॥ संख्या 5 है।

21 दक्ष गोत्री 'शासन'

दक्षपुरिया, शिलहरी, कनरवलिया, योगस्थली, जादूगरिया ॥ संख्या 5 है।

22 मरीच गोत्री 'शासन'

मिरचू, शंखवाल, निगमबोधिया, बरोदिया, अर्णपाड़िया, अनूपनगरिया, निर्भयपादिया, गरवाड़ा,

गरनावटिया, छत्रवाल, भूवलिया ॥ संख्या 12 है।

23 कृतु गोत्री 'शासन'

ऋद्धिवाल, दुर्वाहारी, चुल्काड़िया, मुनिपुरिया, दूसवाल, कुरुक्षेत्री, वत्सवाल, धनेसरिया, वरवाल, सापुरिया, ज्ञानस्थलिया ॥ संख्या 11 है।

24 भारद्वाज गोत्री 'शासन'

करनालिया, पवांलिया, प्रयागस्थलिया, खेड़ीवाल, नारनोलिया, अड़ीचवाल, डोहरवाल, शंकरोड़िया, खेलवाल, सहलूदिया, दुलीणहट, हसनगड़िया, मंडावरिया, मैलूया, बहूड़वाल, कटवालिया, टरवालिया, करस्थलिया, ललाणिया, बिसरकिया, गुरुलिया, वरदोलिया, सलमोरवरिया, उपास्य, उपरस, झुंझदिया, डोडरावता, दांतोलिया, अमटोला, औदड़िया, सांकला, साकोलिया, कोटवाल, गीझवाल, भटाणिया, ऊधराणि, बबारिया, निगमस्थलिया, खैरवाल, नीदला, सांणवाल, अजमेरिया, महरावणा, डभोलिया, वहलिया, मठारिया,नवरंगिया, विजोलिया, विश्वामित्रस्थलिया, खुर्जवाल, स्वालकोरिया, वकड़वाल, दहेणिया, विहड़वाल, दीक्षितव्यास, बाबलिया, उटवाल, सिंडोलिया, न्यायतवाल, डिगथलिया, धीमरिया, वोहरिया, वलमिया, मामडोलिया, कोनोडिया, रामपुरिया, आभटोला, समड़वाल, बुढ़ालिया, जावाल, दनकोरिया, हरियाणिया, लवानिया, गढ़मुक्तेश्वरिया, पल्हेड़िया, हस्तपुरिया, सकरपुरिया, सरधनिया, बदरीपुरिया, गेढ़ेलिया, कायतवाल, बधोतिया, अधोपिया ॥ सं 63 है।

25 अग्निवेष गोत्री 'शासन'

दिगम्बरा, मरुस्थलिया, अग्निपाल, लीलाणिया, समाजरीतिया, भिन्डोलिया, अग्निवाल, लढोरिया, गोकर्णिया, वंशावलिया, नोहरवाल, सोंनलवाल, बबेरवाल, गंगोलिया, धनस्थलिया, धरोडिया, मुराड़िया, पाणानप्रस्थिया, न्यायपुरिया ऋषिपुरिया, मायापुरिया ॥ संख्या 21 है।

26 भरद्वाज गोत्री 'शासन'

भातराणिया, सोंथिया, सरेया, कथूरवाल, वाघडालिया, नाभड़िया, नावालिया, बगदोड़िया, नरहणावाल, पिल्हाट, जाणोलिया, आरड़िया, आहमिया, जारुयेवाल, कंकरिया, पाटड़िया, मुखाड़िया, त्रिगुणायत, रोहितवावल, बांवसणिया, तिगड़ारिया, तिवाड़िया, मंड़ोलिया इन्द्रपस्थिया, कोल्हूवाड़, आप्टोलिया, नूड़ीवाल, बबेलिया, नोंहरिया, संभलिया, डुसावत, गोरखवाल, पावड़ा गड़ीलवाल, महरावल, पातड़िया, लाल्यारिया, बबनालिया, शिशानिया, संमढ़वाल, धरवाल, शिलोठिया, ग्रामड़ीवाल, कोटड़िया, रामगड़िया, पपरोलिया, निदाणिया, मोईवाल, कलोटिया, गांणरवाल, सेहीवाल, ठरवाल, सांकड़ोथिया, अनूपवाल, संगेलवाल, अंगूठया, सिरसापटनिया, रिटोलिया, कांकरोलिया, चूड़ोदिया, ढ़िचोलिया, विरहड़वाल, रणोलिया, सेवालिया, मुजेड़ऋवाल, महरावरे, वसाखिया, कलातिया, व्योहालिया, सन्निहितिया, राजपुरिया, वनप्रस्थिया, मगरोलिया, पशवाड़ा मोवाल, लहड़रिया,महरोलिया, भपावाल, कलोखरवाल, ओलीनिया, पोसरिया, भवरिया, शिशोलिया, तिलोकड़िया, जैवाल्य, ढ़ाचवाल, सेखूपुरिया, भगवानपुरिया, यावड़े मुपरिया, खेड़वाल,

पूठिया, देवलिया, सांतोरिया, गोस्वामिया, मुसकेसरिया, पुरवाल, पलोंडिया, दोघटिया, भोंडवाल, वाकप्रस्थिया, मोटावलीवाल, चूलहटिया, राईवाल, शामलिया, जींदराणि, किलोकड़िया, धरेड़, श्यामपुरिया, खारवाल, किस्तोलिया, डवोधिया, मरवड़िया, वयोरवाल, हरियाणिया, मेंडवाल, गोधड़िया, गीझवाल, मल्हाणिया, नीमराणिया, पहाड़ीरसिया, बुढ़ाड़िया, पोरवाल, तेहनगरिया, खिड़वालिया, पंडायाणि, फटवाड़िया, कसेरवाल, चाकलाण, ओवाल, बांकनेरिया, द्रोंणपुरिया, दिलवाल, वादवाल, भीतेलिया, दोहलिया, गोरनिया, लालपुरिया, बटानिया, बोधलिया, संसारिया, ढ़ाच्योल्या, अड़ीगवाल, तोसावड़, नीमरिया, दुहे, मैलूमिश्र, सुजानिया, हरसरणि, मलकपुरिया, यवलिया, चौमिया, भटयानिया, काकनोरिया, महरावरिया, डोड़रावत, आमटोलिया, बबेलिया गलोणं, मवानिया, उगडोलिया, कोंशलिया, ओदिया, वामोलिया, एखोंदिया, नरथालिया, महवने, सारगपुरिया, झगीरिया, खैरवाल, नावावाल, गुलावटिया, डसनवाल, मोनिया, कैरवाल, वड़ेवाल, वोहरिया, सोंकरिया, भटेलिया, डुहरिया, भैंआ, कौख, अमरथलिया, शिरसोलिया, लाढ़नू, हावड़ीवाल॥ संख्या 187 है।

27 कुश गोत्री 'शासन'

महमिया, चंदेलीवाल, सफीदमिया, परधानिया, नीदिया, कुशवाल, टाकरिया, नाथलागड़िया, बीजपुरिया, मेहरावल, कोर्थलिया, इन्द्रप्रस्थिया, महोदिया, घोलिया ॥ संख्या 14 है।

28 कुशिक गोत्री 'शासन'

श्रीकरिया, धरमपालिया, अमरपुरिया, सीकरिया, फोकरिया, दिवाच, सत्यधरा, घुड़वाल ॥ संख्या 8 है।

29 धृत कोशिक गोत्री 'शासन'

ऋतुम्भरा, तपोधरा, सहोदरिया, मिगड़ायत, कामिया, न्यानिया, अग्नाणि, हरिणांक्षिया, बुढ़ानिया, काशीपुरिया ॥ संख्या 10 है।

30 कौशिक गोत्री 'शासन'

मढ़ोलिया, कुरुक्षेत्री, मंडोरवाल, सूकरथलिया, विभीषवाल, फटवाड़िया, मुंडेलिया, विसकरिया, दीयल, पंचौली, विजयचाणि, कांकरिया, नेतवाल, भटांनिया, टोकरवाल, पल्लीवाल, लाकड़े हरियाणिया, इन्दोरिया, बहरवाल, सारल, खदरिया, उपराणि, चन्द्रपुरिया, नागलिया, भटसाड़िया, जोहणि या, कंकरवाल, ईगरवाल, विश्वामित्रप्रस्थिया, पल्हेड़िया, मिरचे, अज्ञाणिया, झीमरिया, वांकोयि, कसूपुरिया, फत्तहणिया, डोहरवाल, नेथलिया, छरिया, प्रतापवाल, बसवाणिया, जीवतवाल, बड़विदिया, रोहटवाल, कविपालिया, खिसणिया, घसेणिया, मुंडलाड़िया, सिवाल, साटकिया, भोगलिया, मालचिया, धुलाड़िया, सागवाल, कुवादवाल, भरटिया, समालिया, गोधड़िया, कलोरिया, चौणाणिया, तिगरायत, मढ़ावाल, गोमतिया, सूर्यपुरिया, हरथाणिया, वामोलिया, महेशराणि, असोधिया, कसेरिया, हापुड़िया, महरग, गौड़वालिया, चौराणिया, अस्त्रेणिया, विवाड़िया, धरवाल, मढ़ावाल, भिवाड़िया, प्रहरावरिया, मैंदिया, पिलखवाल,

डिडवाणिया, कटेसरिया, कड़खेरिया, महराग, बेरीवाल, भूमिवाल, गोधड़िया, मजाकवाल, पिस्योलिया, मीरपुरिया, लाटवाल, लोधाड़िया, पिलखवाल, विजयवाड़, तपस्विया, कसनिया, पटोधवाल, पहरवाल, बिजनोरिया, लाहोरिया, वरनेया, झाडोलिया, दिवाचिया, कर्णवाल, कलावड़िया निरहट ॥ संख्या 108 है।

31 अष्टायन कौशिक गोत्री 'शासन'

थनेसरिया, समालिया, दशाहट, सफीदमिया, महरोलिया, मंढेलिया, अष्टालिया, वाधपतिया, धमाणिया, टंटपुरिया, पहोवरिया, जीदिया, मरवड़िया, रुधसाड़िया, रामहदिया, गढ़वालिया ॥ संख्या 16 है।

32 कुत्स गोत्री 'शासन'

देवयज्ञिया, कटारिया, कुन्डेवाल, अग्निहोत्रीया, टराटिया, धींगड़िया, मंडारिया, रगड़या ॥ संख्या 8 है।

33 कौत्स गोत्री 'शासन'

अमरपुरिया, भटाणिया, पथरवाल, सफीदमिया, कंकरिया, इगरहट, लाटास्वामी, नीदिया, सकुलवाल, ओडम्बरिया ॥ संख्या 10 है।

34 सांख्यायन गोत्री 'शासन'

मिहरवाल, कंकरवाल, पुरवाल, लोचवडाग, मंगूरवाल, मेरठिया, टोहरीवाल, सिरसवाल, संख्यायन, मुंडहालवाल, त्रवड़ीवाल ॥ संख्या 11 है।

35 जमदग्नि गोत्री 'शासन'

भूदरा, कंकरवाल, छारैया, अजमेरिया, सिंगवाल, खंडवाल, खेलनिया, जोहरिया, फल्गुवाल, करारा, महदीपुरिया ॥ संख्या 11 है।

36 वत्स गोत्री 'शासन'

थमोड़िया, झामरिया, झाडोदिया, कन्होरिया, कांणोडिया, सांडोलिया, खरवाल, रिटोलिया, भोलाणि, वेरवाल, डाभड़ा, कांकरिया, धोलपुरिया, कतेड़वाल, जाडोतिया, रिठालिया, घाघसांणि, विरेचना, खेड़वाल, खैरवाल, टटोलिया, सनोटिया, बदलवाल, निसविषय, बुढ़ाड़िया, लजवाड़िया त्रयणवाल, ववेरवाल, सांतोरिया, किठोड़िया, शिवपुरिया, डिड़ोलिया, नागरिया, कड़ालिया, गोरखपुरिया, सूंडयाणि, वगसरिया, धड़ेल, रूपवाल, इन्द्रप्रस्थया, समचाड़िया, तिलोकड़िया, हरवाणिंया, व्यासआश्रमो, बदरवाल, हरसवाल, पतड़िया, रिटोलिया, कांड़ोदिया, निमोठिया, गढ़वालिया, मामडोलिया, ठाकराणि, गरवालिया, कामीवाल, जानोलिया, हरियाणिया, इकनोलिया, चौरवाल, वारिकपुरिया, त्रवड़ि या, विजनहट, मुनिस्थलिया, वदरवाल भाष्यकरा, पाठनिया, देहरिया, वहणालिया, छपरोलिया, कांणोलिया, भटोलिया, भटयाणिया, भेंनवाल, कनोखरिया, नारनोलिया ॥ संख्या 74 है।

37 वत्सायन गोत्री 'शासन'

व्यासाश्रमी, शिवपुरिया, भाष्यकरा, मुनिस्थत्तिया, मधुराणि ॥ संख्या 5 है।

38 शाण्डिल्य गोत्री 'शासन'

ढाचोला, निग्रहवाल, चुल्हीवाल, ववरवाल, शाण्डिल्य गोत्री शासन, भट्टवलिया, हिसारिया, डिडवाड़िया, राजपुरिया, रोहितवाल, बुढ़ाड़िया, पुरवाल, रखोतिया, मंगलोरिया, चन्द्रपुरिया, नीदवाल, कारविया, वाहड़े, वाझड़े, धर्मपुरिया, भूमिवाल, मन्त्रवाल, डाभला, राजवतिया, रेबलिया, परतापुरिया, बगड़ाट, लजवाड़िया, बंशवाल, सहारनपुरिया, खेकड़िया कलहोरिया॥ संख्या 31 है।

39 मौदगल्य गोत्री 'शासन'

कांकड़ोदिया, बहादुरगढ़िया, मकड़ोलिया, परधानिया, थनेसरिया, नैडाणिया, पालिया, सफीदमिया, गुराणिया, रोहणिया, हावड़िया, काकराणि, भूपतिया, विसरिवया, श्यामपुरिया, सिद्धिपुरिया, रामपुरिया, सैनवाल, दूणहट, मवणिया, सिखायण, चरोलिया॥ संख्या 22 है।

40 अगस्त्य गोत्री 'शासन'

शुक्लपुरिया, कुरुक्षेत्री, म्याणिया, विद्याधर, तपोधरा, तन्त्रवाल, उंच्छला, हरिभजिवाल, जनपोषिया, सागरवाल, जोधपुरिया, लंबोदरा, वायुभखिया, ग्राजवाल, सिंधुवाल ॥ संख्या 15 है।

41 जमदग्नि गोत्री 'शासन'

जमदग्नि, डाभड़ा, पुरवाल, जामिनिया, स्थानप्रस्थिया, गुसवाल, रामपुरिया, रतेलवाल, परशुरामस्थलिया, गुसवाल, रामस्थलिया, सनेमई, अग्निपाल॥ संख्या 13 है।

42 अघमर्षण गोत्री 'शासन'

शुक्लपुरिया, सितावरिया, धोलिया, पपाध्ना, अघमर्षण ॥ संख्या 5 है।

43 विश्वामित्र गोत्री 'शासन'

विश्वामित्रस्थलिया, राजपुरिया, भूधरा, धुनुर्वाल, रजोधरा, शास्त्रधरा, शंकरा, रिसभरा, तपोधरा ॥ संख्या 9 है।

44 हारीत गोत्री 'शासन'

गरुणिया, पुरवाल, महमिया, काणुड़िया, गंगतटिता, संभलिया, चंभलिया, चुआल, व्यासस्थलिया, जीदवाल, चुवाल, जैवाल, भीमवाल, दुर्बला, खोलवाल, चौहान, वासटवाल, घनोरवाल, गुणगामिया, रिटोलिया, बड़ेवाल, चौहोवाल, चौभाल, रिमेलिया॥ संख्या 23 है।

45 कपिल गोत्री 'शासन'

साख्यशास्त्रिया, शुक्लपुरिया, सद्धोलिया, कपिलस्थलिया, सिंधुतटिता ॥ संख्या 5 है।

46 दालभ्य गोत्री 'शासन'

हरियाणिया, मलापुरिया, मकटवाल, अरनावलिया, कलापुरिया, पुठिया, हरनवालिया, गौड़स्थलिया, अमरपुरिया, जलाशया, अरनावलिया, दिगम्बरिया ॥ संख्या 12 है।

47 कश्यप गोत्री 'शासन'

कल्याणपुरिया, सत्यबोला, योगपुरिया, गढ़ेलिया, शिलाकरिया, महोधरा, ब्रह्मपुरिया, आकरिया, योगधरा, अधोरिया, स्वामीपुरिया, डीडवाल, वटाणिया, केरवाल, बडोदिया, पटवाल, गोहितवाल, लटानिया, हमीरपुरिया, जीवनवस, इन्दोरिया, अरण्डवाल, प्रजावित्त, उपाहणिया ॥ संख्या 24 है।

48 सांकृत्य गोत्री 'शासन'

ब्रह्मक्षेत्रीया, मथनपुरिया, विदरवाल, चुल्हीवाल, मायापुरिया ॥ संख्या 5 है।

49 काश्यप गोत्री 'शासन'

नन्दग्रामिया, धर्मक्षेत्री, अघोरिया, ज्वालापुरिया, गुणग्रामिया, हिसारिया, गोंगाड़िया, गिरिराजिया, भरतपुरिया ॥ संख्या 9 है।

50 कण्डव गोत्री 'शासन'

पाशोरिया, धीरपुरिया, तुसारिया, पहासोरिया, पातड़ा, चुनकटिका, धरमपालिया, पहोसोरिया, भरोजेरिया, लोकसरिया ॥ संख्या 10 है।

51 गौतम गोत्री 'शासन'

शिशुलिया, सिसाड़िया, बिजनोरिया, नोडोलिया, इन्दोरिया, धनाड़िया, मांमडोलिया, दोहलिया, स्टोधिया, कबीरपुरिया, सफीदमिया, लजवाड़िया, अग्निवाल, डोहलिया, बड़ोदिया, बीकानेरिया, गढ्ढीवाल, खेड़ीवाल, वरवालिया,वपनवाल, तुमिरिया, भोपवाल, मगलोरिया, सारवड़िया, भिलाड़िया, बराहिया, भालड़िया, कुरुक्षेत्रिया, नोताड़िया, खड़वाल, सुरोलिया, रोहटिया, चन्द्रपुरिया, पत्रवाल, ननेरिया, दोहलिया, मुन्डनवाल, अभदवाल, कलातिया, नाभवाल ॥ संख्या 40 है।

52 मैत्रेय गोत्री 'शासन'

मित्रवाल, ब्रह्मस्थली कुठारिया, वलेणिया, वैरवाल, किरवाल, वहरवाल, चहणिया, मेरठिया, भद्रकरा, भयहरा ॥ संख्या 11 है।

53 गर्ग गोत्री 'शासन'

गर्गाश्रमी, विसाणिया, वैद्यकिया, मधुपुरिया, योगवाल, सांकमिया, कृष्णपुरिया, पालीवाल,

जोधपुरिया, ऐवरिया, ऐंचवाल, वैणवाल, टंडोलिया, मधुपुरिया, गोपिया, निरालिया, वसूरमिया, झुपरिया ॥ संख्या 18 है।

54 कौडिन्य गोत्र 'शासन'

महोदयपुरिया, सूत्रधार, अनन्तनिया, थनेसरिया, बुवाणीवाल, मगलोरिया, वोहणिया, पेहावाल, महमिया, मद्दीवाल, पत्थरवाल, जीदिया, डाहरवाल, भलोदिया, सूत्रवाल, पांचलीवाल, डीरवाल, डोरीवाल ॥ संख्या 18 है।

55 जैमिन गोत्र 'शासन'

विदूरिया, दृढ्वृत्तिया, वसंडवाल, धर्मपुरिया, मीमासक ॥ संख्या 5 है।

56 सुवर्ण गोत्र 'शासन'

गरुणस्थलिया, ओचन्दवाल, विष्णुस्थलिया, संसारिया, गढ़वाल ॥ संख्या 5 है।

57 सौपर्ण गोत्र 'शासन'

प्रभाकर, नगरवाल, जीदवाल, गारडू विषहरा ॥ संख्या 5 है।

58 सावर्णि गोत्र 'शासन'

ज्योतिसिया, पाटणिया, जयपुरिया, बगड़हट, हरणिया, जोधपुरिया ॥ संख्या 6 है।

59 सुनक गोत्र 'शासन'

मिश्रकिया, निभिपेक्षेत्रिया, पुराणिया ॥ संख्या 3 है।

60 शोनक गोत्री 'शासन'

नैंमिसारिया, कथकड़ा, व्योहनिया, टीडवाल, वंशिया, ॥ संख्या 5 है।

61 शांकल्य गोत्री 'शासन'

जनकपुरिया, भंगवाल, दुर्वेश, गंगोलिया, वंगवाल, विगरवाल, दुर्वेधर, दुर्वला, दोहटवाल, दिलवाल॥ संख्या 10 है।

62 कात्यायन गोत्री 'शासन'

मधुपुरिया, मांदकोरिया, कमलिया, विमोलिया, सोंनिया, गलहलिया, मेरठिया, शिविकराणि, बुढ़ाणिया, व्रिजवासनिया ॥ संख्या 10 है।

63 आलम्पायन गोत्री 'शासन'

रम्या, थनेसरिया, जटाधरा, त्रवड़िया बुढ़ानिया, कामिया, पतड़िया ॥ संख्या 7 है।

64 गालिब गोत्र 'शासन'

मूणीवाल, जेवनवाल, काटा, काछड़ लोचिव, वाबलिया ॥ संख्या 6 है।

65 विल्च गोत्र 'शासन'

दूधाधारी, भीड़ा, जीदिया, व्याघ्रपदिया, पर्वतिया, मैढ़िया ॥ संख्या 6 है।

66 विष्णु गोत्र 'शासन'

वृद्धापन, श्रीकरिया, गौडवाल, भेड़िया, द्विजाड़िया, कसेरवाल ॥ संख्या 6 है।

67 उपलभ्य गोत्र के 'शासन'

सूत्रकारिया, संखवाल, उपलवाल, कलाहरी, भरटिया, पटोलिया, संडरवाल, चिकित्सका ॥ संख्या 6 है।

68 अव्यय उगोत्र के 'शासन'

चौंधराणिया, सूरवाल, भुवारिया, जयवाल, भूवाल ॥ संख्या 5 है।

69 उपमन्यु गोत्र के 'शासन'

शुक्रस्थलिया, कपिस्थलिया, विश्वंभरा, सांपला, कोटिवाल, जटाधरिया, शरटिला, बुढ़ाड़िया, सर्पस्थलिया, पाईवाल ॥ संख्या 10 है।

70 कल्पिष गोत्र के 'शासन'

लालपुरिया, मरुस्थलिया, रामगढ़िया, भुजक्कड़ा, चूरवाल ॥ संख्या 5 है।

71 जावाल गोत्र के 'शासन'

सहारनपुरिया, करवाटिया, धोलिया, मूसेपुरिया, उठोलिया ॥ संख्या 5 है।

72 कंचन गोत्र के 'शासन'

कंचनपुरिया, सुनारिया, सोमपुरिया, कंचनगरिया, गोरखिया, चूरवाल, श्यामपाड़िया, मरुस्थलिया ॥ संख्या 8 है।

73 वामदेव गोत्र के 'शासन'

अम्बरीषस्थलिया, राशिया, वारिकपुरिया, नायका, विरजवा॥ संख्या 5 है।

74 अनावृक गोत्र के 'शासन'

पावकिया, मनाणिया, कराणिया, चुल्काणिया, शालवाल ॥ संख्या 5 है।

75 सौपायन गोत्र के 'शासन'

लालसरेया, कुलंधरा, अजस्थलिया, वोधड़ा, भंगवाल ॥ संख्या 5 है।

76 [illegible] गोत्र के 'शासन'

[illegible] ॥ संख्या 7 है।

77 दृढ़ गोत्र के 'शासन'

[illegible] ॥ संख्या 7 है।

78 चित्र गोत्र के 'शासन'

चित्रनंदा, शंकरवाल, [illegible], [illegible], [illegible] ॥ संख्या 5 है।

79 व्याघ्रपाद गोत्र के 'शासन'

वाघ्रपदिया, कंवरिया, अन्तरवेदिया, कसारिया, जननिया ॥ संख्या 5 है।

80 वंतहव्य गोत्र के 'शासन'

वंशावाल, वंतरागिया, बहुरागिया, हव्यस्थलिया, सत्रस्थलिया ॥ संख्या 5 है।

81 मित्रावरुण गोत्र के 'शासन'

ब्रह्मपुरिया, सर्पदमिया, महेंदिया, सौतिया, स्वर्गिया ॥ संख्या 5 है।

82 अजगोत्र गोत्र के 'शासन'

अजमेरिया, बड़ग्रामिया, बगड़वाल, अजमोढ़िया ॥ संख्या 4 है।

83 अनावृक गोत्र के 'शासन'

बकस्थलिया, शरभिया, बकोदरा, वीरासना, शस्त्रधारिया ॥ संख्या 5 है।

84 यज्ञवल्क्य गोत्र के 'शासन'

यज्ञपालस्थिया, वजावाल, मेहरवाल, जनकस्थलिया, महलवाल, जीतिया, निर्भया ॥ संख्या 7 है।

85 वासुक गोत्र के 'शासन'

धरवाल, सर्पदमना, चित्यावना, विहारिया, उज्वलग्रामिया ॥ संख्या 5 है।

86 पाणिन गोत्र के खेड़े 'शासन'

पाणिनप्रस्थिया, पाढ़िया, पानीपतिया, सढ़िया ॥ संख्या 4 है।

87 माण्डव्य गोत्र के 'शासन'

पाठकिया, गौधूमिया, शूरपुरिया, शरटिया, तंडूलवाल ॥ संख्या 5 है।

88 मार्कण्डेय गोत्र के 'शासन'

मार्कण्डेयस्थलिया, झावड़ा, तिरईया, पोराणिकिया, ओयड़िया ॥ संख्या 5 है।

89 बौधायन गोत्र के 'शासन'

बोधपुरिया, धावड़िया, महताणिया, अधहरा, पुष्पदन्ता ॥ संख्या 5 है।

90 यास्क गोत्र के 'शासन'

यशकरा, पाकवाल, ग्वालिया, करमिया, दुधवाल ॥ संख्या 5 है।

91 माध्यन्दिनी गोत्र के 'शासन'

मध्यान्दनी, बाजसनईया, शाखाधारी, उज्वला, घोखया ॥ संख्या 5 है।

92 लौगाज़ गोत्र के 'शासन'

अन्नवाल, भ्रमहरा, कोटवाल, कौंणापिया, अक्षिपाल ॥ संख्या 5 है।

93 कर्ण गोत्र के 'शासन'

कुरुक्षेत्री, कानपुरिया, कलारिया, करनालिया, कर्णप्रस्थिया ॥ संख्या 5 है।

94 कर्दम गोत्र के 'शासन'

कर्दमस्थलिया, कपिलाश्रमी, झिंझिटिया, सांख्यपाल, गरपालिया ॥ संख्या 5 है।

95 उतथ्य गोत्र के 'शासन'

उतथ्यग्रामिया, कौड़िया, शकूरपुरिया, विषहरिया ॥ संख्या 4 है।

96 आपस्तम्ब गोत्र के 'शासन'

श्रापस्थम्बिया, भटनिया, जलतईया, शिवकरा, वनवासिया ॥ संख्या 5 है।

97 गृत्समद गोत्र के 'शासन'

भिन्डपालिया, करारा, गमनिया, मदनग्रसिया, हुकारिया ॥ संख्या 5 है।

98 आष्टिषेणा गोत्र के 'शासन'

अरिष्टहरा, कर्णवाल, धुरैया, परपक्षिया ॥ संख्या 4 है।

99 गोभिल गोत्र के 'शासन'

गोभिया, ओपधिवाल, लाभवाल, सुखकरा, रोगहरा ॥ संख्या 5 है।

100 अश्वलायन गोत्र के 'शासन'

अश्वपुरिया, शुभ्रस्थलिया, घुड़सालिया, कुंकड़िया ॥ संख्या 4 है।

101 च्यवन गोत्र के 'शासन'

च्यवनश्रमी, कुन्डलिया, कल्याणिया, दूसिया ॥ संख्या 4 है।

102 ओर्व गोत्र के 'शासन'

लंवनिया, स्वर्णप्रस्थिया, मनाणिया, तनमारा, जंघपालिया ॥ संख्या 5 है।

103 देवरात गोत्र के 'शासन'

देवपुरिया, अमरिया, छड़वाल, सोमनगरिया, दोसवाल, भलवाल, धूसरा, कुन्डिया, च्यवनिया, भारगू ॥ संख्या 10 है।

104 धनंजय गोत्र के 'शासन'

धनपतिया, शलाधरिया, पानवाल, द्रव्यवालिया, व्यापारिया ॥ संख्या 5 है।

105 उद्दालक गोत्र के 'शासन'

उदलपुरिया, सुगंधिया, गुणिया, अष्टांगिया, निरोधिया ॥ संख्या 5 है।

106 पातंजली गोत्र के 'शासन'

भाष्यकरा, योगधरा, गुणिया, अष्टांगिया, निरोधिया ॥ संख्या 5 है।

107 उद्वाह गोत्र के 'शासन'

गुणवाल, करपाणिया, पुष्पवाल, घाटिया, वाहकारिया ॥ संख्या 5 है।

108 रोहित गोत्र के 'शासन'

धनपालिया, यज्ञवाल, शंखवाल, गोपालिया, रोहितवाल ॥ संख्या 5 है।

109 अयास्य गोत्र के 'शासन'

शंखिया, जूटिया, अटोरिया, लवणपुरिया, घोरनादिया ॥ संख्या 5 है।

110 सौ कालीन गोत्र के 'शासन'

अनंगपालिया, न्यायवाल, सकोलपुरिया, अग्निहुतिया ॥ संख्या 4 है।

111 आप्लावान गोत्र के 'शासन'

पापालिया, शूरपुरिया, आप्लश्रपिया, जड़ीवाल, करमेदिया ॥ संख्या 4 है।

112 आसुरि गोत्र के 'शासन'

भलाणिया, भलैया, अभिचारिया, पांचालिया ॥ संख्या 4 है।

113 अनूप गोत्र के 'शासन'

अनूपनगरिया, कुसुमपुरिया, पारसिया, गंगस्थलिया ॥ संख्या 4 है।

114 जातूकर्ण्य गोत्र के 'शासन'

भापड़ोदिया, इन्द्रप्रस्थिया, कर्मपुरिया, आदिनगरिया, सोधिया, वसोंदिया, भीष्मपुरिया, धरनालिया, सोंदिया, कधरिया ॥ संख्या 10 है।

ऊपर के वर्णित शासन गोत्र हैं। 114 ऋषि गोत्र के लोगों को राजा जनमेजय ने कुरुक्षेत्र, धर्मक्षेत्र, ब्रह्मक्षेत्रों के अन्तर्गत 1444 विद्वान ब्राह्मणों को ग्राम, धन, गौ आदि दान देकर उपरोक्त नामक गाँवों व क्षेत्रें में बसाया। जो उन्हीं ग्रामों व क्षेत्रों के उपगोत्र के नाम से शादी व्योहारों में व्यवहार से मान्य किये गये । जिन्हें शासन के नाम से जानना चाहिए। ऋषि गोत्र व खेड़े गोत्र ही मुख्य प्राणी मात्र के लिए जीवन चक्र में जानना अति आवश्यकीय है। जिनके आधार से जाति धर्म शादी, सम्बन्ध, राज्य, कर्म, पद, नौकरी आदि के लिए मुख्य हैं। ऊपर के 115 ऋषि गोत्र और 115 ऋषियों के गोत्रों वासियों के अलग-अलग स्थान, गाँव, क्षेत्रों का उल्लेख प्रस्तुत किया है। इन स्थानों व ऋषियों से परे कोई भी गोड़ ब्राह्मण पृथक नहीं है। सम्पूर्ण ब्राह्मण वंश के मुख्य 24 ऋषि गोत्र है फिर 24 ऋषियों के भेद से 115 गोत्र हुए हैं उन्हें ही पृथक-पृथक 115 ऋषिगोत्रें में डा0 मक्खनलाल मिश्र ने उल्लेख प्रमाणानुसार किया है। जो मार्तण्ड पुराण व आदि गौड़ोत्पत्ति नामक तथा गौड़ स्मृति से जाना जा सकता है। 115 ऋषि गोत्रें के ब्राह्मण विद्वानों को मूलवासी बनाया गया । जो ब्राह्मण पहले से मूलवासी थे उन्हें आदि गौड़ कहा गया। जो यज्ञ समय 1444 ब्राह्मणवंशी विद्वानों को मूलवासी बनाया आदिगौड़ ब्राह्मण नहीं कहा जाता है पछोंदे गौड कहे जाते है। वैसे सभी ब्राह्मण आदि गौड़ ब्राह्मण है। ऐसा शास्त्रों का मत है। जैसा कि मैंने पढ़ा है। और मुझे प्रमाण मिला है, उसी प्रमाण से आपके सामने लेख प्रस्तुत किया है। देश, स्थान व ऋषि वंश के आधार से ब्राह्मणों के वंश हैं। उसी प्रकार नाम जाने जाते हैं। वैसे ब्राह्मणों का वंश एक ही ब्राह्मण जाति या ब्रह्मर्षि हैं। जिसके द्वारा एक-एक के दो और दो के दस फिर दस के चौबीस-चौरासी तथा चौरासी के 115 गोत्र तथा अन्य शाखा और हुई हैं।

यह जो लिखा है वह साक्ष्य और प्रमाणित तौर से लिखा है। पाठक गण इसमें सन्देह न करें।

इति गौड़ ब्राह्मण सम्प्रदाय

....

....

सारस्वत ब्राह्मण

'सारस्वत ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्लोक - गौडाः उत्कल मैथिलाः च-कान्यकुब्जा सारस्वताः ।
पंच गौड़ा इति ख्यातातुविन्ध्यस्योत्तर वासिनः ॥

अब में यहाँ पंचगौड़ों में से सारस्वत ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन करता हूँ।

श्लोक - अथ नर्वदोत्तर व कांगड़े वासि सारस्वत ब्राह्मणोत्पत्तिप्रसंगमाह
उक्तं च महाभारते गदापर्वणि।
वैशम्पायन उवाच यत्रेजिवानुडुपति राजसूर्येन भारत ॥
तस्मिंस्तीर्थे महानाशीत्संग्राम कुरुवंशयोः।
सारस्वतस्यधर्मात्मा मुनेस्तीर्थ जगाम ह ॥
तत्र द्वादश वार्षिक्या मनावृष्टयां द्विजोत्तमान ।
वेदानध्यापया मासपुरा सारस्वतो मुनिः।
जनमेजय उवाच। कथं द्वादशवार्षिक्यामनावृष्टियाद्विजोत्तमान।
वेद वेदनध्यापयामास पुरा सारस्वतो मुनिः॥

वैशम्पायन उवाच।

आसीत पूर्व महाराज मुनिर्धीमान्महातयाः ॥ दधीच इतिव्याख्यातो ब्रह्मचारी जितेन्द्रितः तस्याति तपसः शक्रो विभेति। सततं विभो न स लोभयितुं शक्यः फलैर्वहु विधेरपि॥ प्रलोभनार्थ तस्याथ प्राहिणोत्पाक शासनः। दिव्यामप्सरसं पुण्यां दर्शनीयामलंवुषाम ॥ तस्य तर्पयतो देवान सरस्वत्यां महात्मनः । समीपतां महाराज सोपतिष्ठत भामिनी॥

(सतसहस्त्री संहिता पृ.22 मार्तण्ड पृ.406)

अर्थ - नर्वदा के उत्तर में जो सारस्वत ब्राह्मण हैं। उनकी उत्पत्ति को कहते हैं। वैशम्पायन ऋषि ने जनमेजय राजा से कहा कि एक समय में वल्देव जी तीर्थ यात्र को निकले जहाँ तारिकासुर दैत्य से बड़ा घोर संग्राम हुआ। तथा चन्द्रमा ने जहाँ राजसूय यज्ञ किया था। वहाँ आय के स्नान कर दान पुन्य किया। फिर सारस्वत मुनि के तीर्थ गये वहाँ उस क्षेत्र में अनावृष्टि से सारस्वत मुनि ने ब्राह्मणों को वेद पढ़ाये और पालन किया। जनमेजय ने पूछा ऋषिवर अनावृष्टि के समय सारस्वत मुनि ने कैसे वेद पढ़ाये सो वृतांत आप मुझे बतलायें। तब वैशम्पायन ने कहा हे राजन पूर्व काल महातपस्वी, वड़ा बुद्धि, जितेन्द्रिय, ब्रह्मचारी दधीच नाम करके एक ऋषि विख्यात हुए उनकी तपस्या से इन्द्र भयभीत था। तव इन्द्र ने प्रयत्न किया, परन्तु इन्द्र के सभी उपाय विफल हुए। फिर इन्द्र ने दधीच ऋषि को मोहित करने के लिए 'अलम्बुषा' अप्सरा को भेजा। उस समय ऋषि तर्पण कर रहे थे। वहाँ आकर वह अलम्बुषा नाम की अप्सरा खड़ी रही।

श्लोक- ता दिव्य वपुषं दृष्टा तस्यर्षेर्भा वितात्मनः ।
रेतः स्कंन्नं सरस्वत्यं तत्सा जग्राह निमग्रा॥
कुक्षौ चाप्यदधद धृष्टा तद्रेतः पुरुषर्षभ।
सा दधार च तं गर्भं पुत्र हेतोर्महानदी॥
सुषुवे चापि समये पुत्र सा सरिता वरा।
जगाम पुत्रमादाय तमृर्षि प्रति च प्रभो॥
ऋषि संसदि तं दृष्टा सा नदी मुनिसत्तमम् ।
तत्तः प्रोवाच राजेन्द्र ददती पुत्र मस्यतम् ॥
ब्रह्मर्षे तव पुत्रेऽयं त्वभ्दत्तया धरितोमया।
दृष्टा तेप्सरसं रेतो यत्स्कन्नं प्रागलंवुषाम् ॥
तत्कुक्षिणां वै ब्रह्मर्षे त्वभ्दत्तया धृतवत्यहम।
न विनाश मिदं गच्छेत्वत्तेज इति निश्चयात॥
प्रतिग्रह्णीष्व पुत्रं स्वमयादत्तम निंदित्तम।
इत्युक्तिः प्रति जग्राह प्रीतिंचावाप पुष्कलाम् ॥
स्वंसुतं चाप्य जिघ्रत्तं मूर्धि प्रेम्णा द्विजोत्तम।
परिष्वज्य चिरकालतदा भरतसत्तम॥
सरस्वत्ये वरं प्रदात्प्रीयमाणों महामुनिः।
विश्वदेवाः सपितरोगन्धर्वाप्सरसां गणाः।
तृप्तिं यास्यंति शुभगे तर्प्यं मणास्तवांभसा।
इत्युक्तां स तु तुष्टाव वचौभिवै महानदीम् ॥

(ब्रा. उ. मार्तण्ड पृ. 408)

अर्थ – तब सुन्दरी अप्सरा को देखि के उस तपस्वी ऋषि का वीर्य सरस्वती नदी के जल में रखलित हो गया। तव सरस्वती ने उस वीर्य को ग्रहण करि गर्भ धारण किया, और नौ माह बाद एक दिव्य पुत्र को उत्पन्न किया। उस पुत्र को लेकर दधीच के पास पहुँची ऋषि दधीच को पुत्र देती हुई सरस्वती ने बताया, कि उस अलंम्बुषा अप्सरा को देख के जो आप का वीर्य रखलित हुआ, सो मैंने अपने गर्भ में धारण किया। आपकी भक्ति से मैं प्रभावित हो गई थी। अब आप इस पुत्र को ग्रहण कर इसका पालन पोषण करिये। ऐसा वचन सरस्वती का सुनकर मुनिवर अति प्रसन्न हुए। पुत्र को ऋषि ने अपनी गोदी में लिया, और मस्तक सूँघा। ऋषि ने सरस्वती को वरदान दिया कि तेरे जल से विश्वदेव पितृ गन्धर्व अप्सरा आदि सब तृप्त होवेंगे। ऋषि मुनियों को प्रिय होवेगी। ये तेरा पुत्र तेरे ही नाम से सारस्वत मुनि करके इस संसार में विख्यात होवैगा। यह जो मुझे लेख के साक्ष्य प्राप्त हुए सो मैंने वर्णन किया है। भेद जो हुए सो भी आगे वर्णन करता हूँ।

सारस्वत मुनि की शाखा भेद संख्या साठ के लगभग है। दूसरे एक खाखा भेद त्रेता युग का भी वर्णन दिया है॥

'सारस्वत ब्राह्मण वंश के भेद' 144 हैं।

संख्या	ऋषिगोत्र	अवंटक	अन्य गोत्र अल्ल के आधार
1.	जमदग्नि	भृगु	सारस्वत वंश

दधीच

पुरुष, ब्रह्म, दालभ्य, जैमुनि, तांडव, दिक्पाल, दक्ष, प्राची, कण्व, दाक्षायण, गोपाल,शंख, पाल, सरस्वती नदी, शांभल आदि, समालास, शक्ति, पातांजलि, पलासी, गोमय, दीपदेव, निष्णुक, रुद्र, क्षेत्रपाल, सुसिद्धि, अपर, पर, धर्म, नारायण, तिमिर, धर्मिण, तैतरि, दुर्दर, जमदग्नि, जगत, कपाल, संभ्यक, सुदर्शन, शिशुमारक, च्यवन, शुक्क, चन्द्र, सुवंद, मानद, आक्रदक, नन्द, मानक, मानसा, चंपक, व्यास, पिप्लादि, अधातुक, देवल, धृत, कौशय, सूर्य, मर्क, अज, भैरव, कृष्णात्रि, विश्वपालक, नरपाल, तंवुर, तुलसि, वामदेव, वामनाकारक, ब्रह्मचारी, भैरव, नरकपाल, वक, सुसभ, त्रह, कपि आदि 88 मुख्य ऋषि।

कुल 88 सारस्वत ऋषि गोत्र शाखा 60 है।

(ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड)

शादी सम्बन्ध ऋषि गोत्र व खेड़ों तथा अल्ल नामों के आधार से किये जाते हैं। सभी ब्राह्मण वंश मुगल शासनों से कर्मच्युत हुए। जो अन्य देश देशान्तरों में धर्म व प्रांण रक्षा हेतु प्रवास किये हैं। और पूर्व संस्कृति से च्युत हो गये। सारस्वत ब्राह्मणों के शादी सम्बन्ध सारस्वतों में ही किये जाते हैं। आदि गौड़ संतति है।

"कांगड़े के सारस्वतों की उत्पत्ति"

श्लोक - रामायणो च सम्पूर्णो रामो लक्ष्मण संयुतः ।
चित्रकूटं समागत्य गंभीरायास्तटे शुभे ॥
आगतो वानरैः सार्ध हनुमत्प्रमुखंस्ततः।
प्रसांगत्कुरुते वार्ता श्री रामः कपिना सह ॥

अर्थ - ऊपर का श्लोक ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड से लिया गया है। जिस समय रामचन्द्र जी रावण को मारकर सीता लक्ष्मण सहित साथ में पवनसुत हनुमान आदि थे। उस समय चित्रकूट पर्वत के निकट क्षेत्र गम्भीरा नदी के तट परआकर रुके और हनुमान जी से अनेकों तरह की वार्ता करते हुए रामचन्द्र जी ने कहा।

श्लोक - यदा अयोध्यां गमिष्यामि प्राप्स्यामि विपुला श्रयम्।
हनुमंश्च्छयतां वीरं नियमोअ ऽयं पुरा कृतः॥

यदापि प्रप्स्यते सीतां तदा यास्ये कपार्टकम।
प्रयाणं च ततश्चके वानरै वहभिर्युत:॥

(ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड)

अर्थ – श्री रामचन्द्र जी ने कहा कि हे हनुमान मैंने ऐसा निश्चय किया था, कि जब सीता सहित अयोध्या आऊँगा तो पहले हिंगुला देवी के दर्शन करने के बाद राजगद्दी पर बैठूँगा। इस संकल्प को याद करके मुझे अपने हृदय भाव आपके सामने खोलना आवश्यक हुआ है। शुभ विचार हनुमान जी ने बताते हुए देवी दर्शन करने को कहा। और भगवान श्री राम सीता लक्ष्मण व वानर कटक को साथ लेकर देवी हिंगुला के दर्शनार्थ वहाँ से प्रस्थान किया।

श्लोक - ततः सप्तदशे चान्हि श्री रामो अगाद्व लोधने ।
महाघोरे महारष्ये दृष्ट्रां सुप्तं च कार्पटिम ॥
हनुमान बोधयामास रामं दृष्ट्वा ब्रवीच्य सः ।
आस्यता मास्यतां राम जातो भाग्योदयो मम् ॥

(ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड पुराण)

अर्थ – भगवान श्रीराम सीता, लक्ष्मण आदि के साथ दिन सत्तरह यात्रा की और पंजाब क्षेत्र में हिंगुला देवी के भवन से पहले ही बड़े घोर जंगल में एक साधु रास्ते में लेटता हुआ गहरी निद्रा में मिला। साधु को सोता हुआ देख हनुमान जी ने जगाया। साधु ने सामने खडे हुए भगवान श्री राम को निहारा और हर्षित होकर बोला, कि आओ राम आओ। आज आपके दर्शन कर मैं धन्य हो गया।

श्लोक - तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रामः प्रोवाच को भवान।
सो अप्याह राम सिद्धोहं कार्पटी दग्ध किल्विष :॥
षडविंशद्युगपर्यन्तं निद्रा ससक्तं मानसः।
नाम में कार्पटी राम कपाटे चाश्रमो मम्॥

(ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड)

अर्थ – ऐसा वचन साधु का सुन श्री रामचन्द्र जी ने पूछा तुम कौन हो यहाँ रास्ते में क्यों सोये हुए हो। तब साधु ने कहा कि मैं साधु हूँ आपका भक्त हूँ। मैं छब्बीस युग तक जागने के बाद सोया हूँ और यहाँ से थोड़ी ही दूर हिंगुला देवी के पास मेरा आश्रम है।

श्लोक - अथ रामो अब्रबीत्सिद्धं भोः सिद्धि श्रूयतां वचः ।
कपाटं मे दश यात्रां तव भविष्यति महत्पुण्य : ॥
यथेत्युत्वा ततः सिद्धो कार्पटी वेणधारक : ।
अग्रे गच्छंस्ततो रामो विहारं ददृशे परम् ॥

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - तब रामचन्द्र जी ने कहा कि हे महात्मन हमें देवी हिंगुला के दर्शन करादो तो तुम्हारा बड़ा पुन्य होगा। राम का ऐसा वचन सुनि वह तपस्वी साधु आगे-आगे चल दिया। श्री राम अपने साथियों सहित उसके पीछे-पीछे चल दिये। कुछ दूर चलने पर एक सुन्दर आश्रम आया।

श्लोक - तं प्रोवाच सबनस्कधो महाप्रज्ञ उदारधीः ।
भुज्यतां राम चात्रेय पश्चाद्यामोह हिंगुलाम् ॥
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा प्रोवाच राघवस्तदा ।
अधुना न वयं भोज्यं कुर्म हे ब्राह्मणैर्विना ॥
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - तब वह महात्मा श्री रामचन्द्र जी से बोला हे राम! पहले अब आप लोग इस सुन्दर आश्रम में बैठकर भोजन कर लीजिये। उसके बाद हिंगुला देवी के दर्शन करने के लिये चलेंगे। ऐसा वचन उस साधु का सुनकर श्री रामचन्द्र ने कहा कि हम लोग ब्राह्मणों को भोजन कराये बिना भोजन नहीं ग्रहण करेंगे।

श्लोक - लक्षमेकं वृताः पूर्व भोजनार्थे मयानध ।
प्रस्थमेकं ददे चाहं द्विजेभ्यो हेम निर्मलम् ।
तस्करस्य भये नैव सर्वे विप्राः पलायिताः ।
बिना विप्रान्न भोक्ष्येऽहं यावन्नो नियमः कृतः ॥

अर्थ - श्री रामचन्द्र जी ने कहा, कि मैंने संकल्प किया है। कि ब्राह्मणों को भोजन कराके स्वर्ण दान करके तब भोजन करूँगा। परन्तु इस सघन जंगल में डर के कारण ब्राह्मण लोग दूर चले गये हैं। अब यहाँ ब्राह्मण मिलेंगे नहीं इसलिये मैं भोजन नहीं करूँगा।

श्लोक - रामस्य नियमंश्रुत्वा कार्पटीर्वाक्यमब्रवीत।
उद्वेगं मां कृपा राम दर्शयामी अधुना द्विजान ॥
रामस्य पश्यतस्तत्र प्रादुरासीत्सरस्वती ।
रामं प्रोवाच सादेवी वरं वृणुहृदीप्सितम् ॥
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - श्री रामचन्द्र का ऐसा संकल्प सुनकर वह महात्मा सिद्धि बोला कि तुम चिन्ता मत करो मैं अभी ब्राह्मणों के दर्शन कराऊँगा। ऐसा कहते ही वहाँ सरस्वती देवी प्रत्यक्ष प्रकट हुई और राम से कहने लगी हे राम! अब तुम इच्छित वर माँगिये।

श्लोक - तदा राम स्ववृतांतं चोक्त्वा वब्रे द्विजानमम देहीत शेष : ।
तदा सा शारदा देवी स्वपार्णी धृष्य भूतले ॥
सारस्वतस्तदोत्पन्ना दीप्तपावक सन्निः ।
त्रयोदश शतं तेषा चतुर्न्यूनं तथैव च ॥
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - जब रामचन्द्र जी ने अपने संकल्प का वृतांत शारदादेवी को सुनाया कि मैं ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहता हूँ। ऐसा सुनि उस देवी ने अपने हाथ की हथेली पृथ्वी पर घिसी जिसके घिसने से वहाँ से अग्नि सरीखे तेजस्वी 1296 बारह सौ छियानवै ब्राह्मण उत्पन्न हुए।

श्लोक - दत्वां रामाय विप्रास्तां स्तरर्चांतर्दधे सती ।
तेऽपि सारस्वता विप्रा शारदा तिलकं यथा ॥
रामोऽपि ताद्विजान सर्वान भोजयित्वा वरान्न कै: ।
प्रत्येकं प्रस्थमात्रं व सुवर्णं दक्षिणाम दात् ॥

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - उन ब्राह्मणों को श्री रामचन्द्र जी के सन्मुख प्रस्तुत कर वह सरस्वती देवी अन्तर्ध्यान हो गई। वे ब्राह्मण सरस्वती ने उत्पन्न किये इस वास्ते सारस्वत ब्राह्मण कहलाये। उनको रामचन्द्र जी ने भोजन कराये स्वर्ण दान पुन्य किया। सरस्वती नदी के तट पर बस गये और वेदों के ज्ञाता हुए।

'सारस्वत वंश का विस्तार वर्णन'

श्लोक - जनयामास पुत्रै द्वौ सुकन्याश्च भार्गव: ।
आत्मवानं दधीचं च तावुभौ साधु सम्मतौ ॥
सारस्वत: सरस्वत्यां दधीचाच्चोपपद्यते ।
भारुकच्छा समाहेया: सह सारस्वतैस्तथा ॥

(मत्स्यपुराण अध्याय 144 श्लोक 50)

अर्थ - भृगु महर्षि की पत्नी का नाम 'पुलोमा' था, जो पुलोम्न की बेटी थी। जिस समय पुलोमा नाम का राक्षस पुलोमा को ले गया। तब भय के कारण उसके आठ माह का गर्भपात हो गया। गर्भच्युत हो जाने से ही इसी बालक च्यवनऋषि के तेज से वह दैत्य तत्काल भष्म हो गया। इन च्यवन ऋषि की दूसरी पत्नी जो राजा सर्याति की कन्या थी उससे दधीच ऋषि उत्पन्न हुए। इन्हीं के पुत्र सारस्वत नर्वदा के समीप भारुकच्छ, समाहेया और सारस्वत यह विन्ध्याचल के निकट के देश हैं। और श्री हर्ष चरित्र के आरम्भ में लिखा है। कि ब्रह्मलोक में एक समय दुर्वासा के मुँह से कोई एक शब्द अशुद्ध निकल गया, उस समय सरस्वती हँसी तब दुर्वासा ने श्राप दिया, कि तुम मृत्युलोक में मानसी हो, तब सरस्वती मानसी होकर दधीच से विवाही गई। उसकी संतान सारस्वत ब्राह्मण के नाम से विख्यात हुई। यह स्कन्ध पुराण के हिंगुलादि खंड के उत्तर संहिता में लिखा है, कि सिन्धु देश में हिंगुल तीर्थ के समीप दधीच ऋषि का आश्रम था। वहाँ सिन्धु नदी और साबर का संगम है, तथा अनेक तीर्थ है। एक समय तल में वर्षा नहीं हुई, तब देवताओं ने भूलोक में आकर, सरस्वती नदी के समीप सारस्वत तीर्थ में यज्ञानुष्ठान किया। और एक कलश में शौत्रमणि अमृत रखा और सरस्वती देवी की स्तुति किया, उस समय सरस्वती प्रत्यक्ष रूप से दर्शन देकर

वर मांगने को कहा तब देवता बोले।

भिषजोर्हसगागर्भात्पुत्रे भवति निश्चियतम् ।

कि अश्वनी कुमार के वीर्य से तुम्हारे पुत्र उत्पन्न हो तो उसके द्वारा वर्षा होगी, तब सरस्वती ने लज्जित होकर कहा यदि अपना भाग और बल ब्रह्मा जी अश्वनी कुमार को दें तो ऐसा हो सकता है। यह स्वीकार होने पर अश्वनी कुमार ने प्रसन्न हो देवी से रमन किया और सरस्वती के गर्भ रहा। परन्तु छटे महीने वह गर्भ स्राव हो गया, जिससे देवताओं को बड़ी चिन्ता हुई ब्रह्मा जी ने अपने हाथ में वह गर्भ ले शीत्रमणि कलश में रखा, और सरस्वती को दिया। सरस्वती ने जल में जाकर उस गर्भ को देखा तो उस गर्भ के दो रूप दीखे, तब देवी ने सोचा कि इनमें से एक देवताओं को दूँगी और एक मैं रखूँगी। सौ वर्ष में वह गर्भ पुष्ट हुआ, और देवी ने जो तटस्थ दृष्टि से पुत्र को देखा, तो वह लाल रंग का हो गया। वेद में यही लोहितेन्द्र नाम से विख्यात है। देवता वृष्टि के निमित्त इसको स्वर्ग में ले गये।

मन्नाप्यपर: पुत्र: सारस्वत दधीचक: ।

तब देवी ने कहा यह दूसरा पुत्र मेरे नाम से सारस्वत दधीच कहावेगा, ब्रह्मा जी ने भी वरदान दिया है कि -

अयं पुत्र दधीचस्तु सारस्वत कुलाधिप: ।
भविता मृत्युलोके तु ऋषीणं कुलपालक: ॥

अर्थ - यह पुत्र सारस्वत कुल का प्रवर्तक ऋषियों का पालक होगा। वेदमती आतृकर्ण्य ऋषि की कन्या से दधीच का विवाह हुआ। फिर दधीच की सन्तान बहुत हुई उनमें से कुछ मुख्यों का वर्णन किया है। तीन कन्या भी दधीच के उत्पन्न हुई जिनके नाम 1. मालिनी 2. केशनी 3. धूमिनी करके कहे गये हैं।

"सारस्वत ब्राह्मण के अवंटकादि"

पन्चजाति

'आद्यकुल अढ़ाई धर'

1. उपनाम गोत्र, प्रवर, वेद पूर्वशब्द, 1 कुमड़िये, जमदग्नि, भार्गव, च्यवन, वत्स, अप्लवान, और्व, जमदग्न्य यजुर्वेद कुमार उपासक ।
2. जैतली गौतमवत्स्य। अंगिरस, गौतम, औसनस 3 जैत अर्थात कुलपृक्ष, जयन्ती से।
3. झिंगढ़ भारद्वाज, अंगिरस, बार्हस्पत्य, झंगढ़।
4. तिक्खे, पाराशर, वशिष्ट, शक्ति, तुल्गृ, पराशर 3 ।
5. मोहले, सोमस्तम्भ, काश्यप, अवत्सार, नैधुव, मुशल ।

'चारघर'

कुमड़िये, जैतली, झिंगड़, तिक्खे, मोहले, यह चारघर भी कहाते हैं, गोत्रादि ऊपर लिखे हैं।

'तीसरी श्रेणी'

1. तुमड़िये (कुमड़िये)
2. पेतली (जेटली)
3. पिंगड़ (झिंगड़)
4. पिक्ख (ओडलेतिक्खे)
5. वोहले (मोहले)

उपरोक्त चारघरों के गोत्र हैं ये ही पूर्ववत चारघरों के नामान्तर कुल न्यूनता लिये है।

'काँगड़ा के सारस्वत ब्राह्मण अन्य उत्तम श्रेणी'

1. वग्गे
2. प्रभाकर
3. परदूल
4. श्यामपोतरे
5. भट्टूरिये
6. दत्त
7. चूर्ण
8. भोजेपोतरे
9. कालिये
10. झिब्बर
11. अर्ण
12. धन्न
13. धन्नपोतरे
14. मालिये
15. वाली
16. सरदल
17. शेतपाल
18. कपूरिये
19. वैद्य (वारी)
20. खेतुपोतरे
21. नेवले
22. लव
23. कालिये
24. सिन्धुपोतरे
25. रावड़े
26. मुह्यल
27. प्रभाकर
28. वदेपोतरे
29. चूनीवालंम्ब
30. मोहन लखनपाल
31. द्रवड़े
32. सर्वालिये मुह्यल
33. वद्रेपोतरे
34. ऐरी
35. गैधर
36. पंढ़ित
37. पंडित
38. वखतलाड़िली
39. (1) अष्ठवंश
40. पाठक
41. मन्नन
42. धामादासी
43. (2) संढ़
44. ठन्डे
45. भवी
46. पुश्रत
47. (3) पाठक
48. गड्डूरेपत्ती
49. धारद्वाजी
50. (4) कुरल
51. द्रोकच
52. चितचोर
53. काठपाल
54. (5) भरद्वजो
55. छकड़े
56. शारद
57. घोरके
58. (6) जोशी
59. अजपोत
60. पुषणि
61. (7) शोरी
62. सन्नरेपुन्न
63. मनोत
64. सिन्धुपाल
65. (8) तोवाड़ी वन्दू
66. (9) मरुढ़
67. न्यासी

वामनजाई
'अन्य उत्तम श्रेणी'

1. अग्निहोत्री
2. अग्रफक्क
3. आचारन
4. अल
5. अंगल
6. आरी
7. ईसर
8. ईसराज
9. ऋषि
10. ऐरे
11. ओगे
12. कपाल
13. कुन्दि
14. कलन्द
15. कुसरिति
16. कपाले
17. कुण्ड
18. कण्डचारे
19. कलि
20. काई
21. पल्हण
22. कर्दम
23. करडम
24. कुसरित
25. किरार
26. कुतवाल
27. कुरुरपाल
28. कलस
29. कुच्छी
30. केजर
31. कोटपाल
32. कारडगे
33. काठपाल
34. खटवंश
35. खती
36. खोरे
37. खिन्दडिये
38. गंगाहर
39. गांदर
40. गांधे
41. गजेसू
42. गन्दे
43. गांधी
44. गुटरे
45. घोटके
46. चनन
47. चित्तचोर
48. चुनी
49. थकपालिये
50. चभ्भे
51. चितचोट
52. चन्दन
53. चूड़ामन
54. जालप
55. चूनी
56. चूखन
57. छिब्बे
58. जालपोत
59. जोतशी
60. जल्की
61. जेठके
62. जयचन्द
63. जोति
64. जलप
65. जसक
66. डिडूडि
67. जठरे
68. जचरे
69. झमाण
70. वेले
71. टाढ़
72. टगले
73. टनिक
74. तिवाड़
75. डगले
76. डंगवाल
77. ठन्डे
78. तिवाड़ी
79. त्रिपाणों
80. तेजपाल
81. तिनूनी
82. तल्लण
83. तोले
84. तोते

85. तिनमणी
86. दंगवल
87. तगाले
88. दगाले
89. तंगणवते
90. धायी
91. पारशर
92. नाद
93. नाभ
94. दवेसर
95. द्वारे
96. धम्मी
97. पांघे
98. पंजन
99. पाल
100. पुंज
101. पाधि
102. पलतू
103. पुजे
104. पट्टू
105. परींजे
106. पंढ़े
107. पाड़े
108. पिपर
109. पन्च
110. पठल्ल
111. पठरू
112. पुच्छतन
113. ब्रह्मी
114. वाहोये
115. ब्रह्मसुकुल
116. वटूरे
117. विजराये
118. विवढ़े
119. बन्दू
120. भाखरखोरे
121. भारखारी
122. भारद्वाजी
123. भारधे
124. भिन्डे
125. भूत
126. भणोत
127. भटरे
128. भाजी
129. भम्बी
130. भोग
131. भागी
132. भटेर
133. मज्जू
134. मोहन
135. मकावर
136. गन्दार
137. मरुद
138. मसोदरे
139. मन्दहर
140. मैत्र
141. मदरखम्म
142. मेडू
143. मेहद
144. मच्छ
145. महे
146. मुसतल
147. मण्डहर
148. मधरे
149. यम्य
150. रतनपाल
151. रूपाल
152. रनदेह
153. रति
154. रमताल
155. रतनिये
156. रुथड़े
157. रांगड़े
158. लखनपाल
159. लालडिये
160. लक्कड़फाड़
161. लालीबचे
162. लुद्र
163. लट्टू
164. लाहद
165. लुघ
166. विनायक
167. वासदेव
168. वशिष्ठ
169. विरद
170. व्यास
171. वटेपोतरे
172. विरार
173. श्रीखर
174. श्रीडट्टे वासदेव
175. शेतपाल
176. शालवाहन
177. सीढ़ी

178. संगद
179. संधि
180. सूरन
181. सहजपाल
182. सनखोतरे
183. सोयरी
184. सणावल
185. सैली
186. संगर
187. सांग
188. सुन्दर
189. सट्टीय या सेठी
190. हरद
191. हांसिले
192. सधीर
193. हरिये
194. हरी
195. हंसतीर

नोट – इस वंश के ज्वार सतकवंश हुशियारपुर जिला प्रचलित हुआ है। लगभग 400 वर्ष हुए जुए में जीतने से ज्वार कहाये अव इस गाँव का नाम रामट्टवाली है।

यह जाति लाहोर, अमृतसरप्रान्त से गुरुदासपुर, वटाला, जलंधर, मुलतान, लुधियाना, उच्च, झंग और शाहपुर तक निवास करती हैं। इनके सिवाय तत्तापुर, हुशियारपुर के पृथक हैं। जम्मू, जसरोठा के डोंगरे सारस्वत तथा कांगडे के सारस्वतों में अल्ल से ही जाति विभाग माना है। नवान नाम निकास के देशों के अनुसार ही प्राय: पाये जाते हैं। इन नेवले, रावड़े आदि पाचं जातों में 'चूनी' नही लिये गये हैं। इनके पहले में लम्ब है। दत्त और प्रभाकर दान, प्रतिग्रह नहीं लेते, वग्गे, भटूरियों की पज्जा जाति की कन्या पज्जा जाति में ही व्याही जाती हैं। पर इस समय नेवाल, रावडे, सखलिये, पंडित और चूनि ये भी वग्गे, भटूरियों की पज्जा जाति में कन्या देते हैं।

अप्टवंश अपनी आटों जाति में विवाह करते हैं। ऐसा ही होना चाहिए। जव तक समान कुल के विवाह होते रहेंगे।

'दत्तारपुर, हुशियारपुर के सारस्वतों की उत्तम श्रेंणी'

1. खजूरिये 2. दुवे 3. डोंगरे 4. पांधे 5. घोहसनिये 6. खिदड़िये 7. ढ़ोलवालवैये 8. पाधेददिये 9. लखनपाल 10. सरमायी ।

'दूसरी श्रेंणी'

1. अल 2. कमाहटिये 3. कुटल्लेडिये 4. कालिये 5. गदोत्तरे 6. चपड़ोहिये 7. चिवमे 8. चंधियल 9. चिरणोल 10. छकोत्तर 11. जलरैये 12. जुआल 13. झुम्मुटियार 14. झौल 15. स्वाहिये 16. डोसे 17. ताक 18. ताड़ी 19. थानिक 20. दगड़ 21. दल्लोहल्लिये 22. पटडू 23. पन्याल 24. पंडित 25. वाधले 26. भरधियाल 27. भटोल 28. भसूल 29. भदोये 30. भटोहये 31. रजोहद 32. लाहद 33. लाठ 34. लई 35. वंटडे 36. शारद 37. समनोल 38. सेल 39. संड 40. ढ़प्पे 41. भगोतरे 42. वंभवाल 43. सपोलिये पांधे 44. केसर 45. दवे 46. मोहन 47. खजूरे 48. नाध 49. लव 50. छिव्वर 51. वढ़याल 52. लट 53. वैद्य 54. वालिये 55. अम्वूआल पंडित 56. प्रोहित 58. भटर 58. मकड़े 59. मुचले 60. मदोदे 61. मिश्र 62. मैते 63. मिरट 64. भुकाती 65. श्रीधर।

'मध्य श्रेणी'

1. अधोत्रे 2. पाराशर 3. मिश्र 4. सपनोत्रे 5. कटोत्रे 6. वड 7. मलोत्रे 8. सुध्रालिये 9. कश्मीरी 10. पंडित वनालपाधे 11. रैणो 12. मुदालिये 13. केर्णिये 14. पंडित 15. वनगोत्रे 16. ललोत्रे 17. पन्धोत्रे 18. डगोत्रे 19. भगोत्रे 20. विल्हानोच 21. महिते 22. भरेड 23. सतोत्रे 24. पुरोच

'तृतीय श्रेणी'

1. उपाधे 2. गराडिये 3. धरिओच 4. भरंगोल 5. टदिहल 6. घोड़े 7. धमानिये 8. भलोंच 9. टत्रियाल 10. धम्मे 11. नभोत्रे 12. भैंनखरे 13. कलंपरी 14. चरगांट 15. पटल 16. भृरिये 17. किरले 18. चन्दन 19. पिन्चड 20. भूत 21. कुन्दन 22. चकोत्रे 23. पृथ्वीपाल 24. मुण्डे 25. कीड़े 26. छच्चियाले 27. पलाधू 28. मरोधे 29. कमनिये 30. जलोत्रे 31. पंगे 32. मगडोल 33. कम्यो 34. जखोत्रे 35. फनकड़ 36. मनसोत्रे 37. कुडिदव्य 38. जरडवगनाछाल 39. मगदियालिये 40. कर्नाटिये 41. महीजिये 42. वसमोत्रे 43. माथर 44. कठियालू 45. जड 46. वरात 47. महीजिये 48. कानूनगो 49. जम्ये 50. पडकुलिये 51. मधोत्रे 52. कालिये 53. ऊनगोत्रे 54. वाल्ली 55. मखोत्र 56. कफनखो 57. झिन्वड 58. वनोत्रे 59. मच्छर 60. खरोत्रे 61. झल 62. ब्रहमिये 63. यन्त्रधारी 64. खगोत्रे 65. झावड़ू 66. वरगोत्रे 67. रजूलिये 68. खिदड़िये 69. पाधेझवाड़ू 70. वच्छल 71. रजूनिये 72. गौड़पुरोहित 73. टकुरेपु 74. वाटियालिये 75. रतनपाल 76. मशोच 77. डडोरिच 78. यवनोत्रे 79. विसगोत्रे 80. मुहलिये 81. तिरपद 82. वहल 83. रेडाधिये 84. गुड्डे 85. यवनोत्रे 86. विसगोत्रे 87. लाढ़श्चन 88. गोकुलिये 89. थनमथ 90. वुधार 91. लम्वनपाल 92. गल्हन 93. दव्व 94. वड़दोलवादो 95. गन्दरघाल 96. टुहल 97. भूरे 98. लभोत्रे 99. शशगोत्रे 100. सागड़े 101. सशेच 102. सेनहसन 103. सूदन 104. सुनचाल 105. सरमाई सुहण्डिये 106. सुक्ले 107. सिरखडिया 108. सुथड़े 109. सोल्हे 110. संगडोल 111. सलूर्ण 112. सिघाड 113. सागुडिये 114. साणद्दोच ॥

'कांगड़े के पहाड़ी सारस्वतों की प्रथम श्रेंणी'

1. आचारिये 2. ओपदी 3. कसटु 4. दीक्षित 5. नाग 6. पंडित 7. कश्मीरी 8. पंचकर्ण 9. मिश्र कश्मीरी 10. मदिहारी 11. राइणो 12. सोत्रि 13. वेदवे, चुणामणी।

'द्वितीय श्रेंणी'

1. खजूरे 2. सुरवध 3. गलवढ़ 4. गुटरे 5. चिथू 6. चलिवाले 7. छुववन 8. डुमरे 9. डींगमार 10. डेहेड़ी 11. धामुड़ 12. पनयालू 13. पम्वर 14. पोतअड टोटरोटिये 15. पाधे सरोज 16. पाधेरवजूवू 17. पाधेमहिते 18. मनवाल 19. मगरूडिये 20. मैते 21. रक्खे 22. रम्वे 23. विष्टप्रोत ।

अर्थ – अव हम थोड़ा सा विवरण भी देते हैं। कुमुडिये सारस्वतों का शुक्ल यजुर्वेद है। मध्यान्दिनी शाखा उपवेद धनुर्वेद सूत्र कात्यायन सारस्वत देश, सरस्वती नदी, विल्व वृक्ष, कुलेश वावा जय जय कुमार

पूज्य कार्तिकेय, ओसनस तीर्थ है। जूतली अंगिरा के गण में गौतम वंश की ओसनस शाखा में कहे जाते हैं। द्धमथुरावृत्ति, श्रीगोकर्णेश्वर मंदिरश्व महामहेश आत्म कुल देवताऋ 'पंचाजातिय कुलदेवतार्चना पद्धिति' में लिखा है। यह मथुरा प्रान्त के निवासी रहे 'नीलरू)' इनके उपास्य देव है। जयन्ती समी वृक्ष का इनके यहाँ पूजन होता है। इनको 'जंड' भी कहते है। इस कारण उत्सवों को इस समय जेडी कहा जाता है।

झिंगड सारस्वत परमर्षि अंगिरा की भारद्वाज शाखा में है। इनका वेद शुक्ल यजुर्वेद है। झ नाम बृहस्पति का है। झंगड भारद्वाज ही झिंगड नाम से प्रसिद्ध है।

मध्यांदिनी शाखा है। कुलदेव की भाटियानी, चंडिका, भवानी, मह गौतम , नाई मेढ़ा धर्म्मा गौतम भई ही, असीर पूरीनां रुवानी जवारी, सन्ने और टण्डन यजमान, सत्ती दी निकास, झिंगड भारद्वाजों में बाबा पैड के थंमे में सर्व जयेष्ठ अत्तू मध्यम नत्थू और कनिष्ठ सहोदर गौतम से अत्तू पोतरे, नत्थूपोत्रे, और गौतम पोत्रे, यह तीन शाखा उत्पन्न हुई। गुसांई बाबे और व्यास नाम से इनकी प्रसिद्धि हुई। इनकी कुलदेवी की मूर्ति भट्ट के घर रहती है। डाउडदेव सर्पमूर्ति का पूजन होता है। कहते हैं इस कुल में किसी स्त्री के गर्भ से सर्प जन्मा था, और वह शांत भाव से उसी घर में रहता था। एक दिन नई आई हुई वधू ने दुअच्चिआ चूल्हे में से आग डाल दी, और वह सर्प भष्म हो गया। तब से इनमें दुअंचिया चूल्हा नहीं बनता सर्प की पूजा होती है। नत्थू पोत्रे झिंगड़ों में बिहारी गुसांई के पुत्र मिश्र मूलचन्द जी से कक्काड वाले झिंगड़ों की वंशावली का आरम्भ होता है। मात कोरी और विवाचन्द्रतपा इनके कुलपूज्य हैं।

तिक्खे महर्षि वशिष्ठ के कुलप्रसूत हैं। सम्भव है तृत्सू शब्द जो वशिष्ठ गणों के ऋग्वेद सप्तम मण्डल के द्धउदद्यामिर्वेत + तृसुभ्यो अकृणोदुलोकमऋ मन्त्र में आता है। उससे बिगड़ कर तिक्खा शब्द बना हो और तीखा स्वभाव इनका रहा हो। इस वंश में वट के सात पत्रें को सालू के टुकड़े लपेट कर शुभ कार्य में पूजन करते हैं। वट वृक्ष ही इनका कुलेश, वीरमाता इनकी कुलपूज्या है। वट वृक्ष शास्त्रें में शंकर रूप से माना है। पदमपुराण, इनके यजमान तालवाड़ है। इनके गोत्रदि पूर्व लिखित के अनुसार हैं।

इनकी शिखा दक्षिण तुर्कभट्ट, तामसी नाई ततिला मिरासी, तेजपाल, असारत धर्म विदित नहीं। उज्जे, दुज्जे, पड़ोवन्दे, आटुडे आदि इनके कुलों की अल्ल है।

मोहले – यह पंच्जाजातिमें फिर से मिलाये गये है। जब से पम्बू इस जाति से अलग किये गये हैं। कहते हैं कि पंचाजाति की पंचायत के समय जब यह विचार हो रहा था कि पम्बूओं को निकालकर किसको ग्रहण किया जाय, उस समय कोठे से एक मूसल अकस्मात गिर गया था। उस समय पंचों ने इस घटना कोदेवी समझ कर मोहलों को पंचजाति में ग्रहण किया। कारण कि पंजाबी भाषा में मूसल चूहा को मोहल कहते हैं। मोहलों का सोमस्तम्य गोत्र है। और स्तम्ब शब्द जिसके अन्त में आता है, उसको द्वामुष्यायण वा दो कुलों की संतति में गिना जाता है। पुत्री का पुत्र कृत्रिम दत्तक आदि द्वामुष्यायण कहे जाते हैं। प्रवर इनके लिख दिये है। यह भारद्वाज नहीं हैं। इन मोहले भारद्वाजों के यजमान शैगल, खत्री है। यह शैगल ही छागल्य है,

इसमें सन्देह नहीं। इनके तीन थम्भे है, दिलवालिये, सिरन्दिये और गुजरातिये। परन्तु यह देशानुसार नामान्तर हैं। थंमे नहीं है। गुजराल, मिरासी, चंडीदास, भट्ट और मेढ़ा नाई इनकी वृत्ति कमाते हैं। यद्यपि पंम्बू इस समय पंच जाति सम्मिलित नहीं हैं। परन्तु इनका उपमन्यु गोत्र हैं चौजाति के कुलीन, कपूर क्षत्रियों की यजमानी वृत्ति भी इनके हाथों से जाती रही है। पम्बू संज्ञा पवयान प्रदेश के निकास कारण से प्रसिद्धि हुई है। यथार्थ में यह भी वशिष्ठ कुल के कहे जाते हैं। इनकी कुलदेवी भगवती चंडिका ईश पूज्य माता कही जाती है। इनका महोत्सव वैसाख शुक्ल नवमी को होता है। इनकी दक्षिण, शिखा, भट्टमाहल, नाई मेड़ा है। इनके खोती पोतरे, मनोहर पोतरे और सरन पोतरे यह तीन थम्बे हैं। सारस्वतों में बामन जाईयों की जाति संज्ञा अनेक प्रकार की हैं। और वे अपने–अपने नामों से विख्यात हैं। अष्टकुल वाले अष्टवंश, षट्जाति वाले खिजाति और बारह जाति वाले वारी नाम से कहे जाते हैं। इस जाति के अनेक भेद और विस्तार हो गये हैं। जिनका वर्णन उनकी वंशावली में विशाल रूप से दर्शित किया गया है। पर वास्तव में ब्राह्मणों की जो शाखा सरस्वती नदी के किनारे सारस्वत देश में वसी वही सारस्वत ब्राह्मणों के नाम से विख्यात हुई।

'शरावी सारस्वत उत्पत्ति वर्णन'

सेरावी ब्राह्मणों की उत्पत्ति – कहते हैं कि सह्यादि खण्ड में लिखा है, कि जब परशराम जी तीर्थ यात्रा के निमित्त शूर्पारक क्षेत्र में आये और वहाँ श्राद्ध करने की इच्छा की तब वुलाने से वहाँ के ब्राह्मण नहीं आये। उस समय परशुराम ने भारद्वाज, कौशिक, वत्स, कौण्डिन्य, कश्यप, वशिष्ठ, जमदग्नि, विश्वामित्र, गौतम, अत्रि इन दश ब्राह्मणों को श्राद्ध, यज्ञादि में भोजन व्यवहार चलाने के निमित्त त्रिहोत्र त्रिहुति देश देश के पंच गौडान्तर्गत ब्राह्मणों को मट ग्राम में कुट्ठलांत में केलोशी और गौमांचल आदि आदि स्थानों पर स्थापित किया। इनके कुलदेवता मंगेश महादेव, महालक्ष्मी, ह्यालसा, शांता, दुर्गा, नागेश, सप्तकोटेश्वरादिक हैं। इन दश ब्राह्मणों के छियासठ कुल थे। उनमें से कुशस्थली, केलोसी इन दो क्षेत्रों में कोत्स, वत्स्य और कौण्डन्य इन तीन गोत्रों को दस–दस कुल सहित स्थापित किया। यह सब रूप गुण सम्पन्न थे। और मटग्राम, वरेष्य अम्वूजी और लोटली मिल के इन चार गाँवों में छः कुल स्थापित किये।

चूड़ामणि मयाक्षेत्र में दशकुल तीन–तीन देवताओं से युक्त स्थापित किये। दीपवती में आठ कुल स्थापित किये, इस प्रकार छियासठ हुए । इनके साष्ठीकर पहला भेद और सेणवी दूसरा भेद है।

तीसरा भेद – प्रथमस्तेष्वयं भेदः साष्टीकर इतीरितः । साणवीति द्वितीयस्तु भेदस्तेषामुदात्दतः। तथा च कोंकण इत्थं भेदाः सन्ति ह्यनेकशः ।

कोंकण भी कहते हैं, अब इसका कारण कहते हैं।

कर्णाटक देश में 'मयूरवर्मा' नामक एक राजा था। उसका पोत्र शिणिवर्मा था, इसने सारस्वत ब्राह्मणों को छननू ग्राम का अधिकार दिया, इस कारण शास्त्र में छननू अंक का नाम षेणावती है। इस कारण षणवी उपनाम शेणवी हुआ है।

अधिकारं षण्णावति ग्रामाणां च ददौकिल एतदग्रामाधिकाराश्च षाण्णावीत्युपनाकम् ॥

कौंकण देश में रहने से कौंकण नाम वाले कहे गये है।

'दूसरी प्रकार की उत्पत्ति का विस्तार'

एक समय रामचन्द्र जी हिंगुला देवी के दर्शन करने गये तब वहीं लक्ष ब्राह्मणों को भोजन कराने का संकल्प किया पर उस समय वहाँ ब्राह्मण नहीं थे। चोरों के भय से भाग गये थे। उस समय सरस्वती देवी का स्मरण किया उसी समय देवी प्रकट हुई और राम से मन इच्छित वर माँगने को कहा तब रामचन्द्रजी ने ब्राह्मणों के निमित्त सरस्वती से कहा सुनते हैं। सरस्वती ने पृथ्वी मे अपने हाथों को रगड़ कर घिसा उसी समय पृथ्वी से 1296 बारह सौ छियानवै ब्राह्मण उत्पन्न हुए सरस्वती से पैदा होने से सारस्वत कहलाये।

सारस्वतदोत्पन्ना दीपतपावक सन्निभाः।
त्रियोदश शतं तेषा दीप्त पावक सन्निभान् ॥

इस प्रकार उनको भोजन और स्वर्ण दान देकर रामचन्द्र ने अपना वृत समाप्त किया। और ब्राह्मण सारस्वत नाम से पृथ्वी पर विख्यात हुए और चारों दिशाओं में निवास किरने लगे। इनके यजमान लवाण क्षत्रिय हैं।

अथ नवर्दोत्तर वासि सारस्वत ब्राह्मणोत्पत्ति प्रकरणाम।

महाभारत गदापर्व के तीर्थ यात्रा प्रसंग में लेख है कि दधीच ऋषि बड़े तपस्वी थे। उनकी तपस्या डिगाने के फलस्वरूप इन्द्र ने अलंबुषा अप्सरा भेजी उस समय ऋषि सरस्वती नदी में स्नान कर रहे थे। अप्सरा को देखकर सरस्वतीनदी में उनका वीर्य रखलित हुआ, वह वीर्य सरस्वती नदी की अधिष्ठात्री देवी ने ग्रहण किया। और नौ महीने पीछे जब गर्भ में बालक जन्मा तब सरस्वती उस बालक को लेकर ऋषि के पास पहुँची। और वृंतान्त बताया तथा ऋषि ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक उस बालक को ग्रहण किया और कहा –

मम प्रियवर चापि सत्तं प्रियदर्शने। तस्मातसारस्वतः पुत्रे महांस्ते वरवर्णिनि। तवैव नाम्रा प्रथितः पुत्रस्ते लोकभावनः। सारस्वत इति ख्यातो भविप्यिति महातपाः ॥

हे प्रियदर्शने! जिससे कि तेने मेरा प्रिय किया है, इस कारण यह तेरे नाम से महातपस्वी सारस्वत विख्यात होगा। वह पुत्र लेकर ऋषि ने पालन किया और सब विद्या सिखाई कुछ काल में इन्द्र देव ने दधीच ऋषि से वज्र बनाने को उनके शरीर की अस्थिया मांगी ऋषि ने अपनी अस्थि देकर सायुज्य को प्राप्त किया है।

पीछे बड़ी अनावृष्टि होने से वहाँ के ऋषि इधर-उधर गमन करने लगे, उस समय सारस्वत मुनि

ने भी जाने की इच्छा की तब सरस्वती ने उनसे कहा कि तुम कहीं मत जाओ, तुम्हारे निमित्त भोजन का प्रबन्ध यहीं करूँगी, यह सुन ऋषि वहीं रहे। पीछे अनावृष्टि दूर हुई और सब ऋषि एकत्र हुए परन्तु वेद भूल गये। सारस्वत मुनि ने उन सबको वेद अध्ययन कराया, ऐसे साठ सहस्त्र ऋषि सारस्वत मुनि के बालक हैं। वे सब ही सारस्वत नाम से विख्यात हुए परन्तु आदि में जो ब्राह्मण के नाम से विख्यात हुए। मिश्र जी ने वही वर्णन ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण में किया है। यह गौड़ सम्प्रदाय के ब्राह्मण है।

'ब्राह्मण उत्पत्ति वर्णन'

प्रिय ब्राह्मण बन्धुओ ब्राह्मण जाति को सम्मान और श्रद्धा का पात्र बनने के लिए अपने ब्राह्मण कर्मों का बोध करना अति आवश्यकीय है। अपने धर्म के द्वारा ही लोक कल्याण कार्य कर सकते हैं, तभी ब्राह्मण को मान–सम्मान और कीर्ति प्राप्त हो सकती है। सभी ब्राह्मण एक पिता से उत्पन्न हैं, तो आपसी भेद-भाव क्या आपस में मिल–जुल कर प्रेम सजोना जरुरी है। सिर्फ ब्राह्मण जाति में जन्म लेने से ही जाति और लोक कल्याण नहीं हो जाता जब तक कि ब्राह्मण जाति में जन्म लेकर ब्राह्मणत्व प्राप्त न हो। सदाचार ही सार्थक जीवन का सार है। वेदाध्ययन सार मंत्रों को ग्रहण कर संसार में सूर्य चन्द्र की तरह प्रकाशमान होना ही ब्रह्म कर्म है। मैं निवेदन करूँगा कि ब्राह्मण बन्धु संस्कृत भाषा का ज्ञान अवश्य प्राप्त कर आचार सदाचार पालन करने का कष्ट करेंगे तथा नित्य हवन उपासनादि का पाल करेंगे।

ब्राह्मण पृथ्वी का देवता कहा गया है, तथा संस्कृत भाषा को देव भाषा कहा गया है। अर्थात् संस्कृत ही ब्राह्मण की मुख्य भाषा है (देवताओं की देव भाषा) इसलिये अपनी भाषा को ग्रहण करना अति आवश्यकीय है, जभी आपका व संसार को कल्याण का मार्ग दर्शन करा सकने में सक्षम हो पायेंगे। कहा है -

निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटहि न हिय के शूल॥

(इति सास्वत ब्राह्मण वर्णन)

(गौड सम्प्रदाय)

11. "सनोडिया या सनाढ़्य ब्राह्मण"

'सनाढ्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्लोक - अथ सनाढ्य ब्राह्मणोंत्पत्ति सार माह डा. मक्खनलाल मिश्र 'मैथिल' सनाढ्य समाहितां दृष्टा तत्रत्यं किंचिदेवहि॥ कथानकं प्रवक्ष्यामि ज्ञाति ज्ञान प्रदायकम्। रामो दशरथिः श्रीमान पितुर्वचन गौरवात॥ दण्डकारण्यकं गत्वा निवासंम करोत्पुरा। आजौहि रावणं हत्वा सपुत्र बलबाहनम्॥

अयोध्यामगमच्छीमान सीता लक्षिमण संयुतः। ततो ब्रह्मवधाभ्दीतो रामो यज्ञं चकार ह॥ तत्र यज्ञे सामूहिताश्चादि गौड़ा द्विजोत्तमाः। तेषा च-वरणं चक्रे चज्ञे विपुल दक्षिणे॥ विप्राश्च कार यामा सूर्यज्ञं विधि विधानतः। यज्ञान्तेऽव भृथं कृत्वा दक्षिणं दातु मुद्यवत॥ तत्र यज्ञे सार्द्धसप्तसतं ये श्रुत्वि जोऽभवन तेभ्यो रामः सार्द्धसप्तशतं ग्रामान ददो मुदा। ते ग्राम नाम्ना ह्यद्यापि भुपि विख्यात कीर्तयः॥ सनाढ्य ब्राह्मण श्रेष्ठस्तपसा दग्धकिल्विषाः। स्वच्छन्देन तपो ग्राह्यं तेनाढ्या ये द्विजोत्तमाः॥ ते सनाढ्या द्विजाः जाता ह्यादि गौड़ा न शंसयः। तेषा भोजन सम्बन्धं कन्या सम्बन्ध एव च॥ आदि गौड़ेषु भवति स्ववर्गे च विशेषतः ।

(सनाढ्य संहिता पृ. 86 श्लोक 22 से 23)

अर्थ- अव मैं सनाढ्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन करता हूँ। पहले त्रेता युग में अयोध्या नरेश महाराज दशरथ की आज्ञानुसार श्री राम चन्द्र जी वन को गये, वहाँ चौदह साल दण्डकारण्य वन में रहे। अन्त लंका पति रावण को युद्ध में परास्त कर मौत के घाट उतार दिया। वापस होकर अयोध्या नगरी आये ब्रह्म हत्या से मुक्ति पाने के लिए एक 'ब्रह्मदोषनिवारण' यज्ञ कराई। उस यज्ञ को सफल कारण हेतु दूरस्थ क्षेत्रों से ऋषि मुनि तथा विद्वान ब्राह्मण अयोध्या पहुँचे। और विधि विधान से यज्ञ का कार्य सम्पूर्ण हुआ। यज्ञ समापन के बाद भगवान श्रीराम ने विद्वान ब्राह्मण याज्ञिक जनों को दान देकर यज्ञ सुफल का विचार करते हुए गऊ, रत्न, धन आदि स्वीकार करने का निवेदन किया। परन्तु ब्राह्मणों ने निर्दयतापूर्वक भगवान श्रीराम का विरोध करते हुए दान स्वीकार करने को मना कर दिया। और एक साथ मिलकर भगवान श्रीराम से कहा कि तुमने ब्रह्महत्या की है। हम ऐसा दान स्वीकार नहीं कर सकते। यह सुन भगवान श्रीराम ने विद्वान ब्राह्मणों से बहुत अनुनय विनय किया, कि आप लोग संसार में भला करने तथा धर्म की रक्षार्थ उत्पन्न हुए हो मेरी यज्ञ असफल होती है, अगर आप लोग मुझसे दक्षिणा ग्रहण नहीं करोगे तो ऐसा मत कीजिए। इतना कह रामचन्द्र जी उदास हो गये। भगवान श्रीरामचन्द्र को उदासचित्त देखकर कुछ विद्वानजनों का हृदय जो नम्र और कोमल स्वभाव था। उनने श्रीराम की दुर्दशा देख दान स्वीकार के लिए कह दिया। और दक्षिणा में गऊ, धन, ग्राम ग्रहण किये।

याज्ञिक अश्वमेघ यज्ञों व दोष निवारण यज्ञों में इस प्रकार की यज्ञें जो महा यज्ञ कहलाती हैं। उनमें हजारों

की तादाद में ब्रह्मयाज्ञिक बनाये जाते हैं, ऐसा शास्त्र प्रमाण हैं। यज्ञ में दान स्वीकार करने वाले ब्राह्मणों की संख्या 1001 थी। जिसमें 251 संख्या कान्यकुब्जों की है। जिन्हें गऊ, धन और साढ़े दस गाँव दान में भगवान श्रीराम ने अयोध्या के दक्षिण में दिये। यह विस्तार 'पद्मपुराण' व 'मार्तण्डपुराण' में कान्यकुब्ज उत्पत्ति वर्णन पीछे लेखक ने किया है। गाँवों के नाम भी दिये हैं जो आज भी वहाँ देखने सुनने के पाये जाते हैं। और सात सौ पचास 750 अन्य विद्वान ब्राह्मणों को अपने राज्य के अन्तर्गत गाँव दान में दिये। जो कान्य, कुन्जों में व अन्य ब्रह्मणों से थे।

गऊ, धनआदि दान देकर इन ब्राह्मणों को सम्मानित किया, और कहा कि आपने मेरे असने में सम्मान किया है। मतलब धर्म की रक्षा की है मेरी संसार में लज्जा रखी है, इससे मैं तुम्हें सम्मान विशेष देकर 'सनाढ्य ब्राह्मण' नाम की संज्ञा से अलंकृत करता हूँ। तुम आज से सनाढ्य ब्राह्मण कहलाओगे। तुमने मुझ पर दया की है। वैसे भी ब्राह्मण तो दयावान होते हैं। आपका वंश अधिक दयावान वंश होगा। सनाढ्य ब्राह्मणों के वंश की कीर्ति चहुँदिशि में प्रकाशित होगी। संसार में ख्याति प्राप्त करोगे। ऐसा वचन उन भगवान श्री राम ने कहा और 750 गाँवों में बसाया। जो गंगा यमुना के विस्तार क्षेत्र में हैं। उन क्षेत्रों का आगे संक्षेप में वर्णन किया जायेगा। साढ़े दस गाँव उन 251 कान्य कुन्ज ब्राह्मणों को दिये अयोध्या के दक्षिण भाग में और कान्यकुब्ज वंश के ब्राह्मण कहकर सम्मानित किया। जिनका वर्णन पीछे किया है। संक्षेप में यहाँ भी करूँगा। मूल तथ्य लेख से सनाढ्य ब्राह्मण वंश का वर्णन आपकी सेवा में प्रस्तुत किया है। सनाढ्य ब्राह्मण वंशी विशेष दयावान, बुद्धिमान, वेद वेदांग के धुरंधर विद्वान कर्मकाण्डी तथा श्रीराम सेवक होते हैं। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की चौथी शाखा है जो पूर्व पंच गौडों की सारिणी में दर्शाया है। विद्वानजन दृष्टि करें। इसमें संशय की बात नहीं है। यह सनाढ्य ब्राह्मण वंश, कान्य कुब्ज ब्रा. सम्प्रदाय के हैं। ये ब्राह्मण विद्वान होते हैं। विशेष बात यह है कि श्रीराम ने स्वयं अपने मुखारविन्द से यश कीर्ति के लिये वरदान दिया है। आगे इनके क्षेत्र प्रवास का व गोत्रादि का संक्षेप में वर्णन है।

नोट – सनाढ्य ब्राह्मणों के शादी सम्बन्ध सनाढ्यों में होते हैं। इसी प्रकार कान्यकुब्जों के शादी सम्बन्ध कान्यकुब्जों में ही होते हैं। जिस प्रकार गौड़ के शादी सम्बन्ध शासन बचाकर होते है। वैसे ही मैथिलों के सम्बन्ध मूल और खेड़े बचाकर होते हैं। तथा सनाढ्यों में खेड़े व मूल को 'कुरीगाँव' कहते हैं। जो कि कुरीगाँव बचाकर शादियाँ होती हैं।

'सनाढ्य ब्राह्मण वंश का क्षेत्र प्रवास'

श्रीरामचन्द्र ने अपने राज्य अन्तर्गत 750 गाँव जो सनाढ्य ब्राह्मण वंश की संज्ञा देकर दान में दिये। वे गाँव गंगा यमुना के मध्य क्षेत्र आठ जिलों में इस वर्तमान युग में दृष्टिगत हैं। 1. मथुरा जिला 2. एटा 3. अलीगढ़ 4. बुलंदशहर 5. मेरठ 6. बदाँयू 7. मैनपुरी 8. आगरा जिला आदि के अन्तर्गत स्थित हैं।

'सनाढ्य ब्राह्मणों के गोत्रादि'

सनाढ्यों के दस ऋषि गोंत्र होते हैं तथा सात शाखा कुल 17 की संख्या है।

1. वशिष्ठ 2. पाराशर 3. अगस्त 4. वत्स 5. शाण्डिल्य 6. भारद्वाज 7. कृष्णात्रेय 8. च्यवन 9. काश्यप 10. उपमन्यु। अन्य 7 शाखा भेद इस प्रकार ऋषि गोत्र संख्या 17 है।

'सनाढ्य के आस्पद' पदवी (आसपद)

1. शंखधार 2. मिश्र 3. त्रिवेदी 4. जोशी 5. पचौरी 6. पंडा या पंडया 7. चौबे 8. दीक्षित 9. त्रिपाठी 10. पुरोहित 11. दुवे 12. उपाध्याय।

'ऋषि गोत्र सारणी सनाढ्य ब्राह्मण'

सं.	ऋषिगोत्र	प्रवर	वेद	अवंटक	देव	वंश
1.	वशिष्ठ	3	शुक्लयजुर्वेदी	त्रिवाड़ी	गोरी	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
2.	भारद्वाज	3	शुक्लयजुर्वेदी	पाठक	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
3.	कश्यप	3	शुक्ल यजु0	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
4.	कात्यायन	3	शुक्ल यजु0	दीक्षित	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
5.	गौतम	5	सामवेद	रावत	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
6.	गार्ग्य	5	सामवेद	शर्मा	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
7.	कौशिक	5	सामवेद	शर्मा	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
8.	पाराशर	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
9.	विष्णुवृद्धि	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
10.	कौडन्य	3	शुक्लयजुर्वेदी	त्रिवाड़ी	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
11.	कृष्णात्रेय	3	शुक्लयजुर्वेदी	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
12.	सांकृत	3	शुक्लयजुर्वेदी	दीक्षित	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
13.	उपमन्यु	3	सामवेद	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
14.	धनंजय	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
15.	कुशिक	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
16.	वत्स	5	सामवेद	पाठक	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
17.	ब्रह्म	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित

'सनाढ्य ब्राह्मण वंश के भेद कुरीग्राम'

सं.ग्राम	कुरीग्राम
1.	पचोरिया
2.	वैदले
3.	करसोलिया
4.	दुगरोरिया5.
	भिरथरे
6.	कुमार
7.	गिरदोलिया
8.	चुरारी
9.	गोवरेले
10.	हरेले
11.	ठमोले
12.	कंजोलिया
13.	पटसारिया
14.	परवारिया
15.	वछगैजा
16.	मुचोतिया
17.	भुसोरिया
18.	नरोलिया
19.	कांकरोलिया
20.	दुगरोलिया
21.	दुगोलिया
22.	गांगरोलिया
23.	बुधेलिया
24.	सरहेया
25.	जनू
26.	रेहरिया
27.	आस्थेलिया
28.	जरोलिया
29.	उदेलिया
30.	मेरहा
31.	अण्डोलिया
32.	टेहगरिया
33.	समरिया
34.	करैया
35.	कर्तिया
36.	लहरिया
37.	अक्खे
38.	सावर्ण
39.	रावत
40.	मत्सना
41.	ठमेले
42.	उपाध्याय
43.	टांकु
44.	पांडे
45.	चन्दू
46.	जगनवंशी
47.	वरनारिया
48.	व्यास
49.	अवोले
50.	दोरियाकांकरा
51.	बबेरवाल
52.	राजोरिया
53.	वदोले
54.	त्रिगुणाई
55.	वैशंधरे
56.	उदेनिया
57.	मेहरे
58.	सेठिया
59.	कुसवा
60.	चौवे
61.	कंर्मस्वाहा
62.	दीक्षित
63.	गुवरेले
64.	मिश्र
65.	पायक
66.	कोतवाल
67.	वरुण
68.	त्रिपाठी
69.	विनतेरे
70.	पुरोहित
71.	वालकीव्यास
72.	वरूआ
73.	पटोलिया
74.	दुर्वार
75.	हरेनिया
76.	ओरेय
77.	डुगरिया
78.	दन्डोतिया
79.	टैया
80.	भगोलिया
81.	आधुनिया
82.	भगोसा
83.	धुरेले
84.	वेदसार
85.	जोमसी
86.	विवरीलिया
87.	रीलोवा
88.	विवरैया
89.	आगरोवा
90.	कमईया
91.	कानौरिया
92.	कुसोलिया
93.	औरईया
94.	करोर
95.	सेमरिया
96.	कांकरा
97.	षटनावलि
98.	कुलवान
99.	सोंती
100.	कुलवानी
101.	सावर्णिमा
102.	कपरैला
103.	साक्रोलिया
104.	करनियां
105.	साजोलिया
106.	कोई
107.	कहेनिया
108.	काशिप
109.	सहोनिया
110.	धापक
111.	समाधिया
112.	करहेरिया
113.	सुक्ल
114.	कतरैनिया
115.	महामोजी

116. करोलिया
117. करसोलिया
118. कोवादिया
119. उच्छित
120. कुकरेलिया
121. हुच्छिता
122. केलारिया
123. उटगारिया
124. कुम्भवारिया
125. उचेनिया
126. कांकोलिया
127. हुचवारिया
128. कामकर्या
129. कमरिया
130. अरेलिया
131. वरवनिया
132. होविया
133. औदगा
134. अगनैया
135. नाहिला
136. सुरोतिया
137. विनहेरिया
138. सुरोटिया
139. विवहेरी
140. सूरजिया
141. नवग्रहेया
142. नामनिया
143. नवासिया
144. घटोलिया
145. नैजसिया
146. घरवासिया
147. विपर्या
148. कोरतिया
149. नसोंचा
150. चौधरिया
151. नगाइचा
152. चौरासिया
153. नैनेरिया
154. चरोलिया
155. नोंनहरिया
156. चौवे
157. विदाहारिया
158. चरोरिया
159. कोईकेदीक्षित
160. चन्द्रोठिया
161. कोईकेउधारिया
162. चलैया
163. घेरिया
164. चांदसोरिया
165. जमोलिया
166. स्यारहिया
167. तुटोतिया
168. विवनगा
169. मुखरैया
170. चुंगला
171. महलोनिया
172. मरयो
173. वेवारवाल
174. अवरैया
175. निर्खिया
176. कोईकेमुद्गल
177. इन्द्रा
178. कोईकेमुड़ेनिये
179. झासेनिया
180. मुखैया
181. धारिया
182. मुदरैया
183. रावत
184. सिर्सेदिया
185. डुगरोलिया
186. सिरोतिया
187. ठमोले
188. वारोलिया
189. वरनैया
190. वरोलिया
191. वरनैया
192. उड़ोचिया
193. भारिया
194. तुरोलिया
195. ढ़कारिया
196. उभैया
197. झगरिया
198. ठझेलिया
199. हेरिया
200. चलैया
201. चाहिया
202. इरवरिया
203. पिपरोलिया
204. निहारिया
205. सवारिया
206. हरिया
207. डीलवारिया
208. पंचगैया
209. गिरसैया
210. वदेनिया
211. प्रगासिया
212. वसेठिया
213. खिड़पासिया
214. गिलोडिया
215. बुधोलिया
216. चनगीया
217. दुबे (कृष्णात्रेय)
218. ओरगिरिया
219. श्रीयाधानिया
220. बुधकैया
221. गुणोचिया
222. अवस्थी
223. परवैया
224. हात्रऋपिया
225. भामेलिया
226. दांता
227. भारग्रामिया
228. हर्रवैया
229. दुसेठिया
230. भचोड़िया
231. भिरहरिया
232. धर्मध्वजिया
233. तिरवंतिया
234. दुरवारा
235. लवानिया

236. सतरंगिया
237. तलैया
238. तिहोनपालिया
239. तीखे
240. विधिभेदिया
241. सुफलफलिया
242. रैवरा
243. तैहरिया
244. आइया
245. त्रिशूलिया
246. चौंधिया
247. रोरिवलिया
248. षटकर्मिया
249. झुरठिया
250. देखईया
251. गारिया
252. पीचुनिया
253. परसैइया
254. वदईया
255. विरहरुपिया
256. विरहेरिया
257. वुटोलिया
258. गंगालिया
259. सहटामिया
260. द्विधागुधनिया
261. खोईया
262. खेमरिया
263. स्वाहरैया
264. डालवाडिया
265. पेखड़े
266. सुअसिया
267. पैरवड़े त्रिवंग
268. चिरंजिया
269. वुधोलिया
270. गुलपारिया
271. हरसानिया
272. पाथानिया
273. वसैया
274. भेलेमिनिया
275. धनहेरिया
276. हदेनिया
277. भटेले
278. दुगोलिया
279. नदनंगिया
280. धामोंटिया
281. तिहोनगुरिया
282. डचेलिया
283. सैनवैया
284. तामोलिया
285. अतैया
286. तैहुरिया
287. तिगुनाई
288. चटसालिया
289. तपरैया
290. रौरहिया
291. साजोलिया
292. ठोठानिया
293. तैहरैया
294. ढ़ादू
295. डुगवारा
296. दीधरा
297. साजोलिया
298. राजगीया
299. डुगवांणा
300. दुठिया
301. तोहिया
302. दुन्डिया
303. डुगवारिया
304. अष्टक
305. स्नेहिया
306. नरहेरिया
307. आरोलिया
308. मीतरोलया
309. भाईभेड़ी
310. रक्षपालिया
311. थपईया
312. आदिया
313. सतसैया
314. मसेनिया
315. हरदोनिया
316. वालोठिया
317. गुननाथी
318. सुजसीथा
319. गुड़विया
320. वीरिहेरिया
321. गड़ेंविया
322. दुर्हारिया
323. दौसता
324. वसड़ा
325. लावार
326. खैमईया
327. अरगया
328. खोईया
329. नवनीया
330. मांगोलिया
331. गौरसैया
332. गांगोलिया
333. विरहेरियका
334. डीलेवारियका
335. वदैया
336. दोषपिया
337. सवारिया
338. पिपरोलिया
339. निखरैया
340. ब्रहेमैत्रिया
341. घुसेठिया
342. वहोलपालिया
343. विप्रिया
344. दारवारिया
345. टंकारिया
346. दुवारक
347. दाछरा
348. छलीया
349. सारवोसोपुरिया
350. खरोटिया
351. ललीया
352. खरेरिया
353. हुचुगिरिया
354. ठाकोलिया
355. भमालिया
356. भटवालिया
357. सीहरा
358. नन्दवैया
359. डेहरेवारे

360- दुहार
361- वाइसा
362- वेरखरहरिया
363- मघैसिया
364- गांठोलिया
365- कोटम्भाया
366- द्वारवेनिया
367- हुरनारिया
368- वरकरोरिया
369- घनेरिया
370- दुवोल्या
371- राठौठ्या
372- गंगुप्रिय
373- वाम्नोठ्या
374- निहोनगिरिया
375- पंचगद्या
376- संत्रगिया
377- नवेदिया
378- रत्तंगिया
379- खुजोलिया
380- ससाष्ठ्या
381- पूर्वेनिया
382- गालोठ्या
383- सौरया
384- वुष्कैया
385- विरहेरुवका
386- वुठोलिया
387- वालोठ्या
388- दुनेनिया
389- त्रादीया
390- बुलोठ्या
391- सोरहठ्या
392- गुलपारिया
393- गिलोठ्या
394- वाचेडिया
395- पंडासिया
396- मुघोलिया
397- दुरसारिया
398- मानिया
399- सानसैया
400- चिरंजिया
401- धूनिया
402- असतानिया
403- चरनावलिया
404- वैसीडिया
405- हरसानियका
406- मटंले
407- दोजेनिया
408- गैहनैया
409- भमरेले
410- हरदेनिया
411- रघुनाथिया
412- झासेनिया
413- अड़वीया
414- गुलपारिया
415- भारिया
416- शांडिया
417- ववेसिया
418- चौथे
419- ठंठोलिया
420- चांदोरिया
421- पिपरोलिया
422- मुखरैया
423- शांडिल
424- पुरहरिया
425- थापाकिया
426- गोले
427- हथनीया
428- कवैया
429- वरोरिया
430- तैहेलना
431- गठवारा
432- वाम्वरीया
433- चादोरिया
434- पपरोलिया
435- पुरहरिया
436- डडोचिया
437- गोहले

नोट - अन्य और भी कुरीग्राम हैं। यह 437 तो गाँव पूर्व नामों पर हैं। फिर और 313 गाँव अल्ल पर हैं। इस प्रकार 750 ग्राम सनाढ्य ब्राह्मण वंशियों के राजा रामचन्द्र जी ने गंगा यमुना क्षेत्रों में दान रूप में दिये। जिनमें कुछ गाँवों के नाम मौजूद दृष्टि आते हैं। कुछ गाँव दूसरे नामों से अपभ्रंश हो गये हैं कुछ ऊजड खेड़े रूप में हैं और दूसरी जगह दूसरे नाम से गाँव बस गये हैं। क्योंकि दीर्घ समय में एक-एक गाँव एक-एक युग में तमाम तब्दिलियों के रूप में हो जाते हैं, नये बस जाते हैं। मैं सज्जनों से निवेदन करूँगा कि जो सुना है, और जो साक्ष्य मिले हैं। उन्हीं के आधार पर सत्यपूर्वक लिखा है। प्रारम्भ समय से सनाढ्य ब्राह्मण कान्य कुब्ज सम्प्रदाय के थे। इसमें संशय की बात नहीं है। यह सनाढ्य ब्राह्मण कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की चौथी शाखा है।

(कान्यकुब्ज सम्प्रदाय)

(इति सनाढ्य ब्राह्मण वर्णन)

12. "मैथिल ब्राह्मणों का वर्णन"

श्लोक – स्वजाति पूर्वजांवृतां यो जानाति सः पंडितः ।
सतु ब्राह्मण यूथेषु पूजनीयः सदा नरैः ॥

'मैथिल ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्लोक – अथ मैथिल ब्राह्मण निर्णयः काशी सकाशा दीशान्ये ह्यं देश समीपतः। देशो जनक नामा वै तत्र राजा निमिः पुरा। स्वंय गुरु वशिष्ठारव्यं मन्य कर्मणि संस्थितम्। निमिश्चल मिदं ज्ञात्वा ह्यानांय्यान्यान द्विजोत्तमान॥ यज्ञं चकार धर्मात्मा मोक्ष कर्मणि तत्परः। ततो गुरुः समायातस्तयोर्वादो महानभूत॥ तत्र देहे पेतुतुश्च द्वयोः शापान्मिथः किल। मित्रा वरुण योर्वीर्या दुर्वश्यां प्रपितामहः। जातो निमिश्च तत्रैव द्विजे सज्जीवितः पुनः। तदा निमिर्द्विजान प्राहमाभून्मे देहवन्धनम्॥ मम् वंशोभ्दवश्चाग्रे युष्मान संपालयिष्यति। इत्युक्ता तान्निमिः पश्चादेहं त्यक्ता हरं ययौ। श्रृत्विजश्च निमेर्देहं ममंथुर्योग मार्गतः। तस्माच्च पुरुषो जातो दिव्यदेहधरः प्रभु॥ जन्मना जनकः सोऽभूद्धि देहस्तु विदेहजः। मथनान्मैथिलश्चैव मिथिला येन निर्मिता॥ मैथिला ब्राह्मणश्चैव तेन संस्थापिता मुदा। ते सर्वे मैथिला जाता निमियज्ञ समागताः॥ यज्ञवल्क्योपासकाश्च शुक्ल वेद प्रपाठकाः। इति संक्षेपतः प्रोक्तो मैथिलानां विनिर्णय ॥

विष्णु पुराण व मार्तण्ड से पृ. 553-554

अर्थ – अव पुस्तक लिखेता मैथिल ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं। काशी क्षेत्र के ईशान में अंगदेश है। जिसे बिहार के नाम से जाना जाता है। ठीक इसके उत्तरी भाग में जनक देश है। यह प्राचीन समय से ही जनकदेश या मिथिला देश व त्रहुत के नाम से प्रसिद्ध रहा है, इस मिथिला नगरी को बारह नामों से जाना जाता है, जिसका उल्लेख विष्णुपुराण में भी किया है।

श्लोक – मिथिला तैर भुक्तिश्च वैदेही नैमकानाम।
ज्ञानशीलंमकृपापीठं स्वर्णलागल पद्धितिः॥
जानकी जन्मभूमिश्च निरपेक्षा निकल्मष।
इति द्वादश नामानि मिथिलायाः॥

इसी देश के प्राचीन समय में 'वैवस्तमनु' के पुत्र इच्छांकु। इक्ष्वांकु के पुत्र निमि हुए। जो यहाँ के बड़े ही प्रतापी राजा चक्रवर्ती सम्राट हुए। जो इसी राज्य के अधिपति राजा निमि के नाम से विख्यात थे, जिन्होंने अनेको ही अश्वमेघ यज्ञ किये। ये सूर्यवंशी क्षत्री राजा थे। इच्छांकु वंश उत्पत्ति में सूर्य वंश से माना गया है, राजा निमि की राजधानी निमिपाल थी, जिसे नेंपाल के नाम से जान जाता है। राज ने अपने ही नाम से निमपाल नगरी बसाई थी। परन्तु राजा निमि तक ही सूर्य वंश रहा क्योंकि राजा निमि पर निमिवंश का

अन्त हो गया, तथा जनक उत्पत्ति स्त्री संसर्ग से न होकर ब्राह्मणों के द्वारा योग विद्या के फलस्वरूप प्रकट होकर उत्पत्ति के लेख प्रमाणित है। जो राजा जनक मैथिल कुल के अधिष्ठाता हुए इनसे पूर्व त्रिहुतिया ब्राह्मण कहे जाते थे और आज भी मैथिल या त्रिहुतिया से जाना जाता है।

श्लोक - क्षुतवतश्च मनोरिक्ष्वाकु: पुत्रे यज्ञे घ्राणात:।11
तस्य पुत्रशत प्रधाना विकुक्षिनिमिदण्डाख्यास्त्रय: पुत्र बभूवु:॥12
शकुनि प्रमुखा: पञ्चाशत्पुत्र उत्तरापथरक्षितारो बभूवु:।13
चत्वारिंश दष्टौ च दक्षिणा पथ भूपाला:॥14

अर्थ - छींकने के समय मनु की घ्राणेन्द्रिय से इक्ष्वाकु नामक पुत्र का जन्म हुआ। उनके सौ पुत्रों में से विकुक्षि, निमि नामके दो पुत्र प्रधान हुए तथा उनके शकुनि आदि पचास पुत्र उत्तरापथ के और शेष अड़तालीस दक्षिणपथ के शासक हुए॥

(विष्णु पुराण पृ- 232 श्लोक 11 से 14)

श्लोक - इक्ष्वाकुतनयो योऽसौ निमिर्नाम सहस्रं वत्सरं सत्रमारेभे ॥
वसिष्ठं च होतारं वरयामास॥ तमाह वसिष्ठोऽहमिन्द्रेणा पञ्चवर्षशतयागार्थं प्रथमं वृत:॥
तदनन्तरं प्रतिपाल्यता मागतस्तापि ऋत्विगभविष्यामीत्युक्ते स पृथ्वीपतिर्न किञ्चिदुक्तवान॥

(विष्णु पुराण पृ- 252 श्लोक 1 से 4)

अर्थ - इक्ष्वांकु का जो निमि नाम का पुत्र था उसने एक सहस्त्र वर्ष में समाप्त होने वाली यज्ञ (मोक्ष यज्ञ) का आरम्भ किया। उस यज्ञ में उसने वसिष्ठ जी को होता (आचार्य) वरण किया। क्योंकि श्लोक—

इक्ष्वाकुकुलाचार्यो वसिष्ठस्तत्प्रोक्षणाय चोदित:प्राह ॥

(वि-पु-पृ- 233 श्लोक 16)

इक्ष्वाकु वंश के कुल प्रोहित वसिष्ठ जी ही थे।

वसिष्ठ जी ने राजा से कहा कि हे राजा निमि पाँच सौ वर्ष के यज्ञ के लिये इन्द्र ने मुझे पहले ही वरण करि लिया है। अत: इतने समय तुम ठहर जाओ। वहाँ से आने पर मैं तुम्हारा भी ऋत्विक हो जाऊँगा। उनके ऐसा कहने पर राजा ने उन्हें कुछ भी उत्तर नहीं दिया॥

श्लोक - वसिष्ठोऽप्यनेन समन्वीप्सितमित्यमरपतेर्यागमकरोत् ॥
सोऽपितत्काल एवान्यैर्गौतमादि भिर्यागमकरोत ॥

(वि पु- पृ- 252 श्लोक 5 व 6)

अर्थ - वसिष्ठ जी ने यह समझकर कि राजा निमि ने मेरा कथन स्वीकार करि लिया है, इन्द्र की यज्ञ कराने हेतु चले गये। किन्तु राजा निमि ने भी उसी अपने निश्चित किये हुए शुभ महूर्त समय पर गौतमादि

अन्य होताओं (आचार्यों) द्वारा अपना यज्ञ करने लगे ॥

श्लोक – समाप्ते चामरपतेर्यागे त्वरया वसिष्ठो निमियज्ञं करिष्यामीत्याजगाम।
तत्कर्मकर्तृत्वं च गौतमस्य दृष्ट्वा स्वपते तस्मै राज्ञे मां प्रत्याख्यायैतेन गौतमाय कर्मान्तरं
समर्पितं यस्मात्तस्मादयं विदेहो भविष्यतीति शापं ददौ ॥ प्रबुद्धश्चासाववनिपतिरपि प्राह।
यस्मान्मामसम्भाष्याज्ञानत एवं शयानस्य शापोत्सर्गमसौ दुष्टगुरुरकरोत् तस्मात्तस्यापि देहः-
पतिष्यतीति शापं दत्वा देहमत्यजत् ॥

(वि. पु. पृष्ठ 252 श्लोक 6 से 10)

अर्थ – देवराज इन्द्र का यज्ञ प्रारम्भ कराकर मुझे निमि का यज्ञ कराना है इस विचार से वसिष्ठ जी भी तुरंत ही आ गये। उस यज्ञ में आचार्य का कर्म गौतम को करते देख उन्होंने राजा निमि को निद्रावस्था में कहा कि हे राजा निमि तू बड़ा अभिमानी पाखंडी है जो मेरे आने से पूर्व ही यज्ञ प्रारम्भ करा दी या मैं तुझे श्राप देता हूँ और वसिष्ठ ने क्रोध अग्नि में जलते हुए राजा को श्राप दिया, कि तूने मेरा अपमान किया है और सम्पूर्ण कर्म का भार गौतम को सौंपा है इसलिए तेरा देहपात हो जाए। यह श्राप मुनि का सुन स्वप्नावस्था में शयन किए बैठे हुए से खड़े होकर राजा निमि ने ऋषि से कहा कि हे गुरुदेव मैं तो शयन किए हुआ मैं था, यह आपने इस देह धर्म का डर भी ख्याल नहीं किया, और अपना लालच के वशीभूत होकर मुझे श्राप दे दिया। इसलिये मैं भी कहता हूँ कि जो श्राप आपने मुझे दिया है वही श्राप आपके लिए है। इस प्रकार से निमि राजाने व वसिष्ठ ने अपने-अपने शरीर छोड़ दिये ॥

श्लोक – तच्छापाच्च मित्रावरुणयोस्तेजसि वसिष्ठस्य चेतः प्रविष्टम् ॥
उर्वशीदर्शनादुद्भूतबीजप्रपातयोस्तयोस्सकाशाद्वसिष्ठो देहमपरं लेभे ॥
निमेरपि तच्छरीरमति मनोहरगन्धतैलादिभिरुपसंस्क्रियमाणं नैव क्लेदादिकं
दोषमवाप सद्यो मृत एव तस्थौ ॥

(वि. पु. पृष्ठ 252 श्लोक 11 से 13)

अर्थ – राजा निमि के शाप से वशिष्ठ जी का लिंगदेह मित्रावरुण के वीर्य में प्रविष्ट हुआ और उर्वशी के देखने से मित्रावरुण का वीर्य स्खलित होने पर उसी से ऋषि ने दूसरा शरीर धारण किया। निमि का शरीर भी अति मनोहर गन्ध और तैलादि में सुरक्षित रहने के कारण गला सड़ा नहीं बल्कि तत्काल मरे हुए देह के समान रहा।

नोट – इन्द्र देव निमि राजा के तप बल से भयभीत थे। इधर मित्रावरुण के तप से भयभीत थे। इसी वजह से उर्वशी अप्सरा मित्रावरुण ऋषि के पास भेज कर तपस्या में विघ्न डलवाया। यह सभी काम इन्द्र देव का था। उधर पूर्वानुसार वशिष्ठ जी का समय समाप्त होने का वक्त था।

श्लोक - यज्ञसमाप्तो भागग्रहणाय देवानागता नृत्विज उचुर्यजमानाय वरोदीयतामिति ॥ देवेश्चछन्दितोऽसौ निमिराह॥ भगवन्तोऽखिलसंसारदुः- खहन्तारः ॥ न ह्येतादृगन्यद् दुःखमस्ति यच्छरीरात्मनोर्वियोगे भवति॥ तदहमिच्छामि सकललोकलोचनेषु वस्तुं न पुनश्शरीर ग्रहणांकर्तुमित्येवमुक्तेर्देवैरसावशेष भूतानां नेत्रोषृवतारितः ॥ ततो भूतान्यु न्मेषनिमेषं चक्रुः ॥

(वि. पु. पृष्ठ 252 श्लोक 14 से 18

अर्थ - यज्ञ समापन होने पर जव देवगण अपना भाग ग्रहण करने के लिए आये, तव उनसे ऋत्विग्गण वोले कि यजमान को वर दीजिए। तव सभी देवताओं द्वारा प्रेरणा किये जाने पर राजा निमि पुनह जीवित हुए और ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर बोले कि भगवन आपलोग सम्पूर्ण जगत के दुखों को हरने वाले हैं। मेरे विचार से तो शरीर और आत्मा के वियोग होने में जैसा दुख होता है, वैसा दुख और कोई नहीं है। इसलिये मैं अब फिर शरीर ग्रहण करना नहीं चाहता हूँ। देह वन्धन से मोक्ष के वास्ते तो मैंने यज्ञ का अनुष्ठान ही कराया था। आप अगर प्रभु मुझे वर देना ही चाहते हैं, तो एक वर यह दे दीजिये कि समस्त लोगों के नेत्रों के पलकों में ही वास करना चाहता हूँ। राजा के ऐसा कहने पर देवताओं ने उनको समस्त जीवों के नेत्रों के पलकों में अवस्थित कर दिया। तभी से प्राणी निमेषोन्मेष (पलक खोलना व मूँदना) करने लगे हैं। राजा ने ब्राह्मणों से निवेदन करते हुए कहा कि आप मुझे परलोक गमन की इजाजत दें में शरीर नहीं चाहता हूँ। राजा निमि ऐसा कहि परलोक गमन करि गये। तदन्तर मुनि वसिष्ठ की उत्पत्ति का देवों द्वारा ज्ञात हो गया था, उधर वसिष्ठ जी भी अपने क्रोध का पश्चाताप करते हुए रानी के पास आ गये और गौतमादि ऋषियों के साथ वैठ कर निमि वंश के समाप्ती की ओर विचार करने लगे। तथा राज्य की तरफ देखा।

श्लोक - अपुत्रस्य च भूभुजः शरीरमराजक भीरवो मुनयोऽरण्या ममन्थुः ॥

तत्रा च कुमारो जज्ञे॥ जननाज्जनकसंज्ञां चावाप॥ अभूद्विदेहोऽस्य पितेति वैदेहः मथनान्मिथिरिति॥ तस्योदावसुः पुत्रेऽभवत ॥

(वि. पु. पृष्ठ 252 श्लोक 21 से 24)

अर्थ - ऋषियों ने विचार गहन किया और राज्य को नष्ट होता हुआ देखि तथा निमि वंश का अन्त व अपना त्रिस्कार देखि सभी मुनिजनों ने अपनी ब्रह्म विद्या के योग शक्ति द्वारा मन्थन कर एक दिव्य वालक को उत्पन्न किया तथा मिथि नाम की संज्ञा दी जो मैथिल कुल का कर्त्ता हुआ।

श्लोक -उत्पन्नाः मैथिल कुले जनकश्य महात्मनः।
सीतोत्पन्नाः तु सीतेति मानुषीः पुनरूच्यते॥

(बाल्मीकि रामयण पृष्ठ 44 पर श्लोक 6 से 16)

राजा जनक मैथिल कुल के अधिष्ठाता (उत्पन्न कर्त्ता) थे। उन्ही के द्वारा मिथिला नगरी बसाई गई। उन्हीं के वंशज मैथिल कहि के संसार में विख्यात हुए पूर्व में त्रहुतिया कहे जाते थे। मिथिलांचल के मैथिल अधिकांस याज्ञवल्क्य पूजक होते हैं।

नोट - निमि राजा का वंश समाप्त हो गया, जनक वंश या मिथि वंश (मैथिल) उत्पन्न हुआ। वशिष्ठ मुनि का प्रथम से पिछले जन्म घट से हुआ है। जब मित्रावरुण का तप क्षींण करने के लिए इन्द्र ने उर्वशी अप्सरा भेजी तब मित्रावरुण का वीर्य रखलित हुआ। वह वीर्य मित्रावरुण ने घड़े में रखा। उससे वशिष्ठ जी की उत्पत्ति हुई। इसी प्रकार से पाँच बार उत्पत्ति वशिष्ट जी की हुई है। इधर राजा निमि के देह त्यागने पर यज्ञ मण्डप में बैठे याज्ञवल्क्य गौतमादि विद्वान ब्राह्मणों ने अपना अपमान देखि कि मुनि ने राजा को हमारी वजह से शाप दिया है। जिस कारण से राजा का शरीर पतन हो गया, और यह दोष हम सभी ब्राह्मणों को लगेगा। तथा यज्ञ पूर्ण नहीं हुई कौन दक्षिणा देगा कौन भोजन करायेगा। संसार में ब्राह्मणों की ब्रह्म शक्ति का अपमान है। यह विचार कर सभी विद्वान ब्राह्मणों ने वेदपाठी, योगशक्ता, विद्या के धनियों ने योग शक्ति का गहन मन्थन किया। अपनी योगशक्ति से मन्थन करते-करते एक दिव्य धारी बालक प्रकट हुआ। इन्हीं विद्वानों ने बालक को तीन नाम संस्कारित किये। योग विद्या से उत्पन्न होंने के कारण जनक नाम दिया। किसी स्त्री पुरुष के संसर्ग से पैदा न होंने के कारण 'विदेह' या वैदेह नाम रखा गया। तथा ब्रह्म विद्या मन्थन करने से पैदा होने के आधारस्वरुप 'मिथि' नाम रखा गया। राजा जनक ने अपने ही नाम से एक अलग नगरी बसाई जिसका नाम मिथिलापुरी हुआ। इसी को जनकपुरी कहा जाता है। वैसे इस नगरी को बारह नामों से बोलते हैं। जो पहले श्लोक में बता चुका हूँ। राजा मिथि के राज्य को मिथिलान्चल कहते है। मिथिला के ब्राह्मण मैथिल कहे जाते हैं। मिथिला प्रदेश की मिट्टी वो पावन मिट्टी है, कि उस मिट्टी से पैदा ब्राह्मण गर्भ से ही वेद वेदांगों के पारंगत होते हैं। अन्य प्रकार के प्रकाण्ड विद्वान जैसे-ज्योतिष शास्त्र, तान्त्रिक विद्या, व्याकणाचार्य, गणितज्ञ, अर्थशास्त्र, न्यायशास्त्र, आदि-आदि विषयों के मनीषी मिथिला के पूर्व काल से सर्वज्ञ विख्यात हैं। मिथिला राज्य की राजगद्दी अधिपति मिथिला के मैथिल ब्राह्मण ही हुए हैं। ये 19 गोत्री मिथिलापुरी के मैथिल ब्राह्मण 'यज्ञवल्क्य' ऋषि के उपासक होते हैं। शुक्ल यजुर्वेदीय वेद के साँगोपाँग से परिपूर्ण श्रेष्ठ ब्राह्मण मिथिलावासी ही पूर्व समय से ख्याति प्राप्त हैं। यह गौड़ ब्राह्मण सम्प्रदाय के हैं। नीचे का यह श्लोक महाभारत से लिया है, जो एक प्रमुख प्रमाण है,

श्लोक कृष्णो जानाति वै सम्यक् किंन्चित् कुन्तीसुतो अथवा,
व्यासो वा व्यास-पुत्रो वा याज्ञवल्क्यो ऽमैथिलः।

अर्थ- गीता के बारे में कहा है कि इसका वास्तविक रहस्य तो एकमात्र वही पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण जानते हैं, या उनके शिष्य अर्जुन या व्यास अथवा पुत्र शुकदेव इनके अलावा धरती पर यदि कोई गीता का तात्पर्य जानता है, तो महाभारत कहता है, मैथिल सम्प्रदाय के परमाचार्य (आद्याचार्य) महर्षि याज्ञवल्क्य या इनके शिष्य विदेह राजामिथ, जनक जिनके बारे में श्रीमद्भागवत कहता है।

श्लोक - एत वै मैथिला राजन्नात्मविद्याविशारदा।
योगेश्वरप्रसादेन द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि।

अर्थात इनके वंशी मैथिल राजा से लेकर बहुलाश्व पर्यन्त 53 जनक राजा योगेश्वर महर्षि याज्ञवल्क्य की कृपा से गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी द्वन्द्वो से मुक्त होकर आत्मविद्या-विशारद थे। महाभारत ने जिन मैथिल राजाओं के लिये गीता का परम तात्पर्य वेत्ता कहा है, भागवत ने ब्रह्मविद वरिष्ठ कहा है।

श्लोक - कश्यपो वत्स शाण्डिला कौशिकश्च धनंजया॥
पंचतो विप्राः सामवेदाः शेषे यजुर्वेदिनः ॥

ऊपर के श्लोक के अनुसार वेदों का मानना ऋषि वंशों के वंश धर के लिय मान्य बताया है।

आगे ऋषि वंशों की वंश व्याख्या उत्पत्ति स्थान आदि के संक्षेप वर्णित की हैं।

मिथिला की राजगद्दी पर शासन मैथिल ब्राह्मण वंशी मुकटबन्ध राजा ही अधिकतर राज्य करते रहे हैं। जिनका संक्षेप में आगे वर्णन प्रस्तुत किया है।

'मैथिल ब्राह्मणों के आस्पद'

मैथिल ब्राह्मण वंश के चौदह (14) आस्पद हैं जो नाम के अन्त में लगाये जाते हैं।

1. झा 2. ठाकुर 3. चौधरी 4. सिंह 5. पाठक 6. मिश्र 7. श्रोत्रिय 8. आचार्य 9. राय 10 अवस्थी 11. उपाध्याय 12. ईश्वर 13. सरस्वती, 14 कुमर॥

'मैथिल ब्राह्मणों की शाखा'

1. श्रोत्रिय 2. गृहस्थ 3. वंश 4. जोग्य या जोगा 5. पांजी 6. गरीब ॥

'मैथिल ब्राह्मणों के ऋषि गोत्र 19 हैं।' लेकिन वृज में 15 गोत्र के हैं।

1. वशिष्ट 2. वत्स 3. गौतम 4. शाण्डिल्य 5. कश्यप 6. पाराशर 7. भारद्वाज 8. कौशिक 9. गार्ग्य 10. विष्णुवृद्धि 11. कृष्णात्रेय 12. कौण्डन्य 13. मौदगल्य 14. कात्यायन 15. सावर्ण ॥

"आस्पदो की परिभाषा"

श्लोक झा-पाठको, मिश्रः प्रतिहस्तोऽथ चौधरी ।
ठाकुरः कुमरः सिंहः शुक्लश्चेतिदशास्पदाः ॥
पादरी, पूरखां, राय, सादा, ईश्वर, मण्डलाः ।
सरस्वतीति विख्याता अष्टो केणच्चिदास्पदा॥
उपाध्याय स्तथा आचार्या राजहसा तथेवचः।

स्नातको उपाधि युक्तस्य प्राप्ते मैथिले ॥

अर्थ - उपरोक्त उपाधियाँ राजा महाराजाओं ने कार्यानुसार ब्राह्मणों को दीं। प्राकृत व्याकरणानुसार उपाध्यायका उपनाम (झा) होता है। अध्यापन कार्य जो किया उनको उपाधि उपाध्याय की दी गई। शिक्षादिकों को आचार्य की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आचार्य की उपाधी से अलंकृति किये गये तथा गुरु को महामहोपाध्याय पदवी दी गई।

मिश्र - नाना प्रकारक योग्यता रखनहार तथा मिमांसाकजाता के लिए मिश्र कहा गया।

पाठक - पठन-पाठन करने वालों को पाठक की उपाधी दी ।

चौधरी - चारों वेदों के धारण करने वाले प्रजा (समाज) को चोर बदमाशों से स्वरक्षित रखने वाले व चोरों को पकड़ने वालों को चौधरी की उपाधी दी ।

ठाकुर - ब्राह्मणों में राजा के द्वारा ठाकुर की उपाधी जब दी गई कि समाज में मुख्य और धर्म प्रतिष्ठित धनी दवंग जो दीखा उस प्रमुख व्यक्ति ब्राह्मण को ठाकुर की उपाधी दी गई। झा-नाम बृहस्पति का है, ये देवताओं के गुरु थे इसलिए गुरु नाम से जाना जाता है।

जो शासक राजा हुए उन्हें अंग्रेजों के शासन काल में 'सिंह' व 'कुमर' की उपाधियाँ दीं गई आदि-आदि जैसा गुँण व कार्य योग्यता के आधार उपाधी प्राप्त हुई।

ब्रजस्थ "मैथिल ब्राह्मण के पन्द्रह (19 ऋषि) गोत्र नाम"

श्लोक - शांष्डंल्यों वत्स सावणों भारद्वाजोंऽथ काश्यपः।
पाराशरो गौतमश्च कात्यायनक कौशको ॥
कृष्णात्रैयी वशिष्ठश्च विष्णुर्वृद्धश्च मौदगलः ।
कौष्डिन्यः कपिलस्तषिडल रूपमन्युर लम्बुकाः।
उन विशति गोर्त्रणा गार्ग्य युक्तानिमैथिले ॥
वत्स सावार्णा गार्ग्यशिच पश्चप्रवर भागिः।
एतद्भिन्नस्त्रिवरा ॥

नोट - ब्रज प्रवास में मात्र 15 गोत्र के मैथिल पाये गये हैं। मैथिलों के १९ ऋषि गोत्र होते हैं।

प्रवरका अर्थ - श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य होता है। शाण्डिल, असित, देवल ये तीन मुख्य प्रवर है।

'मैथिल ब्राह्मणों के ऋषिगोत्र शाखा प्रवरादि'

सं.	ऋषि नाम	प्रवर	नामप्रवर या वंशधर	वेद
1.	कश्यप	3	काश्यप, वत्स, नैधुव	सामवेद
2.	वत्स	5	और्व, च्यवन, भार्गव, जमदग्नि, अप्लवान	सामवेद
3.	शाण्डिल्य	3	शांडिल्य, असित, देवल	सामवेद
4.	कौशिक	3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि	सामवेद
5.	सावर्णि	5	और्व, च्यवन, भार्गव, अप्लवान, जमदग्नि	सामवेद
6.	मुदगल्य	3	मौदगल्य, आंगिरस, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद
7.	वशिष्ठ	3	वशिष्ठ, अत्रि, सांकृति	यजुर्वेद
8.	विष्णुवृद्धि	3	विष्णुवृद्धि, च्यवन, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद
9.	कौण्डिन्य	3	कौण्डिन्य, आस्तीक, कौशिक	यजुर्वेद
10.	कृष्णात्रेय	3	कृष्णात्रय, आप्लवान, सारस्वत	यजुर्वेद
11.	गौतम	3	अंगिरा, वशिष्ठ, बार्हस्पत्य	यजुर्वेद
12.	कात्यायन	3	कात्यायन, विष्णु, आंगिरस	यजुर्वेद
13.	गार्ग्य	5	गार्ग्य, घृत, कौशिक, मांण्डव्य, वैशम्पायन	यजुर्वेद
14.	पाराशर	3	पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ	यजुर्वेद
15.	भारद्वाज	3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद'

ऋषि उत्पत्ति' 15 गोत्री

शांण्डिल्य गोत्र प्रवरों की उत्पत्ति

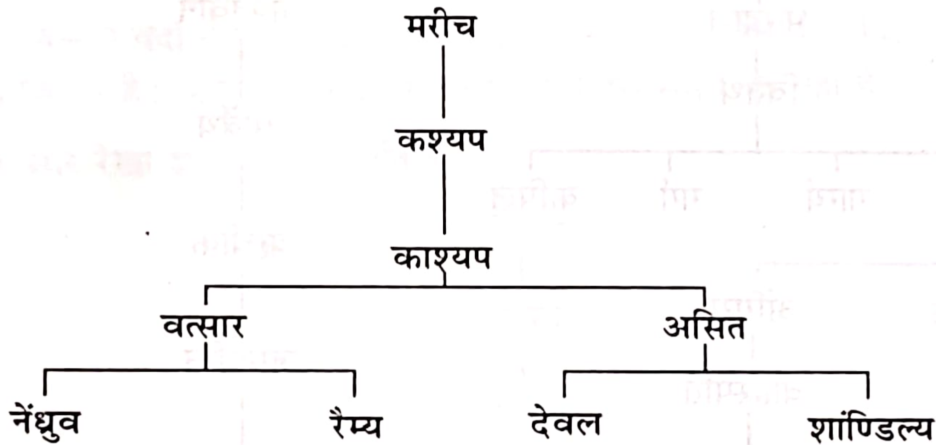
अर्थ ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना के समय मानुष पुत्र 'मरीच' को उत्पन्न किया। इसके बाद अत्रि को फिर अंगिरा को इसके बाद पुलस्त्य को इसके बाद पुलह को उसके बाद कृतु को फिर प्रचेताओं को, उसके बाद वशिष्ठ को फिर भृगु को फिर नारद को उत्पन्न किया। इनका क्रम भी इस प्रकार से प्रमाणित है। दाहिने नेत्र से अत्रि को बांये नेत्र से कृतु को नाशिका से अरुणी को मुख से अंगिरा और रुचि को दायें पार्श्व से दक्ष को और बांये पार्श्व से भृगु को स्कन्ध से मरीच को, गले से अपान्तर-तमा को, जिव्हा से वशिष्ठ को और होठ से प्रचेता को उत्पन्न किया।

भृगु की पत्नी का नाम ख्याति था, भृगु जी ने भृगु संहिता की रचना की थी, जो भृगु जी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। शिव जी की पत्नी सती थी, जिन्होंने अपने पति की निन्दा सुनते ही प्राण त्यागे थे। मरीच की पत्नी संम्भूती थी। मरीच ने भी धर्म शास्त्रों की रचना की थी। अंगिरा की पत्नी का नाम स्मृति था। अंगिरा

ऋषि ने भी अंगिरा संहिता बनाई। पुलिस्थ जी की स्त्री प्रीती थी। पुलह की स्त्री का नाम कीलमा था। कृतु की पत्नी का नाम सन्तति था, तथा अत्रि की पत्नी का नाम अनुसुईया था। अत्रि ऋषि ने 'अत्रि संहिता' ग्रन्थ की रचना की। वशिष्ठ जी की पत्नी का नाम उज्जी व अरुन्धती दो पत्नी थी। अग्नि की पत्नी का नाम स्वाहा था। पितर की पत्नी स्वधा नाम की थी।

मरीच के पुत्र कश्यप थे कश्यप की दो पत्नी थीं, 'कद्रु और विनता' इनके पुत्र काश्यप हुए। जिससे उनके अग्रिम वंशज कश्यप कहलाये। काश्यप के वत्सार और असित नाम के दो पुत्र हुए। वत्सार के नैध्रुव और रैम्य दो पुत्र हुए। असित का हिमालय की पुत्री एकपर्णा से विवाह हुआ। नैध्रुव की पत्नी सुमेधा थी, जो च्यवन की पुत्री थी। असित के दो पुत्र हुए 'दवल और शांडिल्य', शांडिल्य ने अथर्ववेद की रचना की लेकिन स्वयं ने सामवेद को ग्रहण किया। देवल की पत्नी रत्नमाला थी। जो राजा सुयम की पुत्री थी। आदि ये सभी ऋषि ब्रह्मा जी के द्वारा उत्पत्ति हुई। आगे उनके वंशज उत्पत्ति उन्हीं से है। प्रवरों के मुख्य गोत्र पूर्व के वंश से मान्य हैं। शाण्डिल्य ऋषि की उत्पत्ति वर्णन हो चुकी है। आगे अन्य का वर्णन प्रस्तुत करता हूँ। और प्रत्येक ऋषि के वंशजों की रेखाचित्र से उत्पत्ति दर्शायी है सो पाठकगण गौर से पढ़ें और देखें, कि कौन ऋषि का कौन पौराणिक वंश ऋषि है।

1. 'शाण्डिल्य ऋषि गोत्री रेखाचित्र'



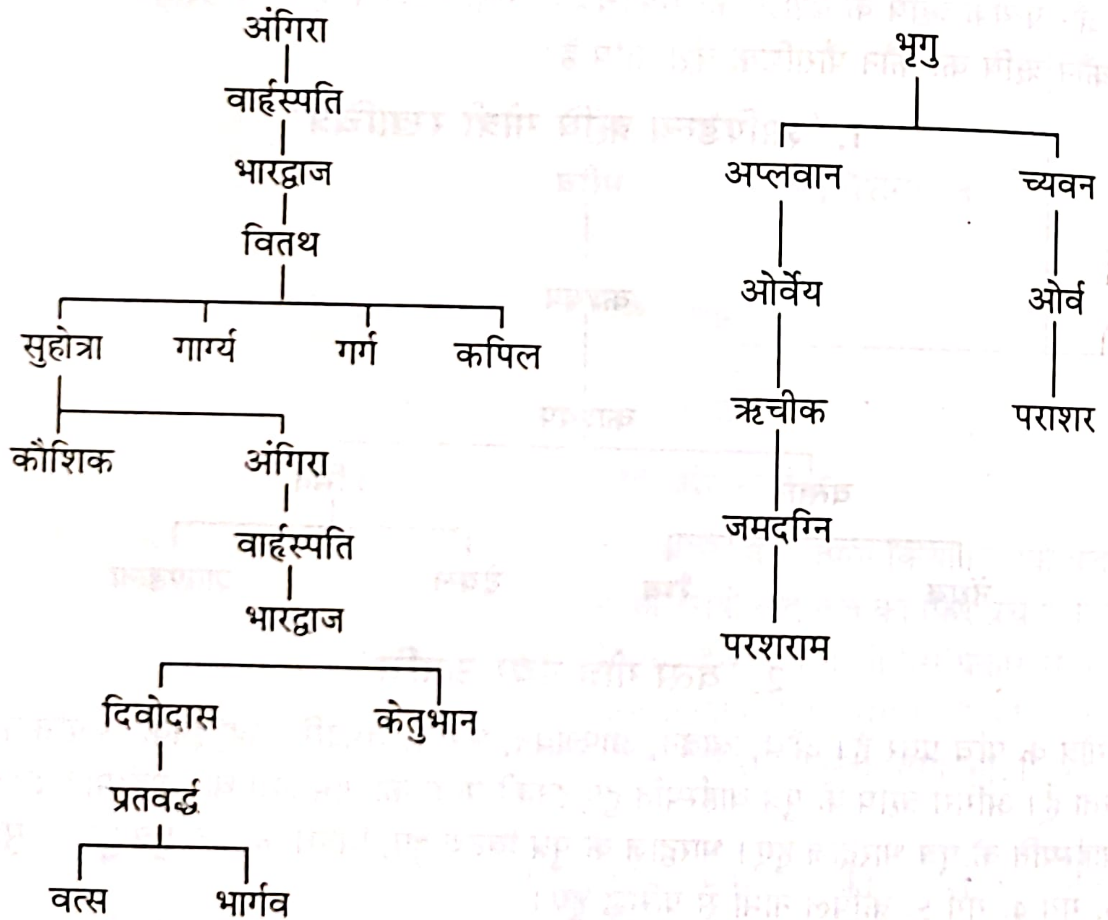
2. 'वत्स गोत्र प्रवर उत्पत्ति'

वत्स गोत्र के पांच प्रवर हैं। और्व, च्यवन, आप्लावन, भार्गव, जमदग्नि यहाँ इनकी उत्पत्ति का वर्णन प्रस्तुत करता हूँ। अंगिरा ऋषि के पुत्र वार्हस्पति हुए इनकी पत्नी का नाम तारा था, वार्हस्पति देवताओं के गुरु थे। वार्हस्पति के पुत्र भारद्वाज हुए। भारद्वाज के पुत्र वितथ हुए, वितथ के पाँच पुत्र हुए 1. सुहोत्रा 2. सुहोतार 3. गय 4. गर्ग 5. कपिल नामों से प्रसिद्ध हुए।

सुहोत्रा के कौशिक, गृत्समद दो पुत्र हुए गृत्समद का दीर्घतमा और दीर्घतमा का धनवन्तरि नाम का पुत्र हुआ, यही धनवन्तरि ऋषि आयुर्वेद चिकित्सा के प्रवर्तक हुए। इनने 'धनवन्तरि चिकित्सा तत्व

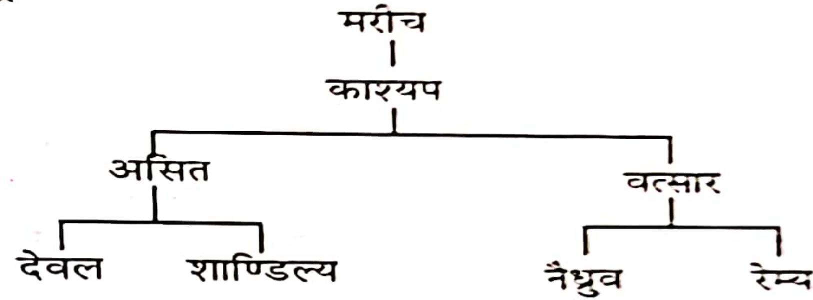
विज्ञान' नामक चिकित्सा ग्रन्थ की रचना की। धनवन्तरि के दिवोदास पुत्र हुए, जिनकी पत्नी का नाम हर्षद्वती था। जिससे प्रतर्द्धन नामक पुत्र हुआ, प्रतर्द्धन के दो पुत्र हुए जो वत्स और भार्गव नाम से प्रसिद्ध हुए। वत्स मुनि अंगिरा के कुलोत्पन्न होने से अंगिरा संतति कहलाए, और वत्स गोत्र के कर्ता हुए। इनके वंशज वत्स गोत्रीय कहलाए। 'भृगु' वंश में उत्पन्न भृगु के पुत्र च्यवन मुनि हुए। जिनकी स्त्री आरुषी नाम की थी इनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम ओर्व था। च्यवन व अप्लवान की माता अर्थात भृगु की पत्नी का नाम पीलोमी था। अप्लवान का पुत्र ओर्वेय हुआ, ओर्वेय का पुत्र ऋचीक नामक ऋषि हुआ। जिनकी गाधि राजा की पुत्री सत्यवती या कौशिकी नाम की स्त्री थी। जिससे जमदग्नि नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। जमदग्नि की स्त्री का नाम रेणुका था। जो रंणु की पुत्री थी। जिससे परशुराम पैदा हुए। भृगु से वंश उत्पन्न यह सर्व वंश भार्गव कहलाया और च्यवन तथा अप्लवान, भार्गव, जगदग्नि आदि वत्स गोत्र के प्रवर 5 कहलाये। इनकी ग्यारह पुस्तक रेखाचित्र द्वारा तालिका प्रस्तुत है। आगे के पृष्ठ पर देखें।

2. 'वत्स गोत्र प्रवर रेखा चित्र'



3. 'काश्यप गोत्र, प्रवर, रेखाचित्र'

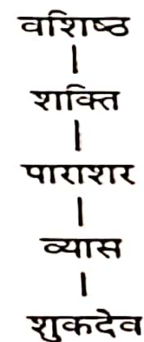
कश्यप गोत्र में कश्यप, वत्सार, नैध्रुव तीन प्रवर प्रमुख एवं श्रेष्ठ हैं। यहाँ तीनों का वंश परिचय मैं पहले लिख चुका हूँ।



4. 'पाराशर गोत्र प्रवर उत्पत्ति'

'पराशर' गोत्र के शक्ति, वशिष्ठ, पाराशर तीन प्रवर श्रेष्ठ हैं। ब्रह्मा पुत्र वशिष्ठ को उर्ज्जा व अरुन्धती नाम की दो स्त्रियाँ थीं। अरुन्धती से शक्ति नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। शक्ति की स्त्री का नाम अद्रश्यन्ती था। जिससे पाराशर नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। पाराशर का कालीरयोजनगंधा से विवाह हुआ जिससे व्यास जी उत्पन्न हुए। जिन्होंने वेदों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर प्रसारित किया, वैसे कुछ विद्वानों के व्यास जी के सम्बन्ध में अन्य विचार हैं। अन्य लेख हैं। परन्तु वो विषय इस समय का नहीं है।

पराशर गोत्र प्रवर रेखा द्वारा आगे प्रदर्शित हैं।

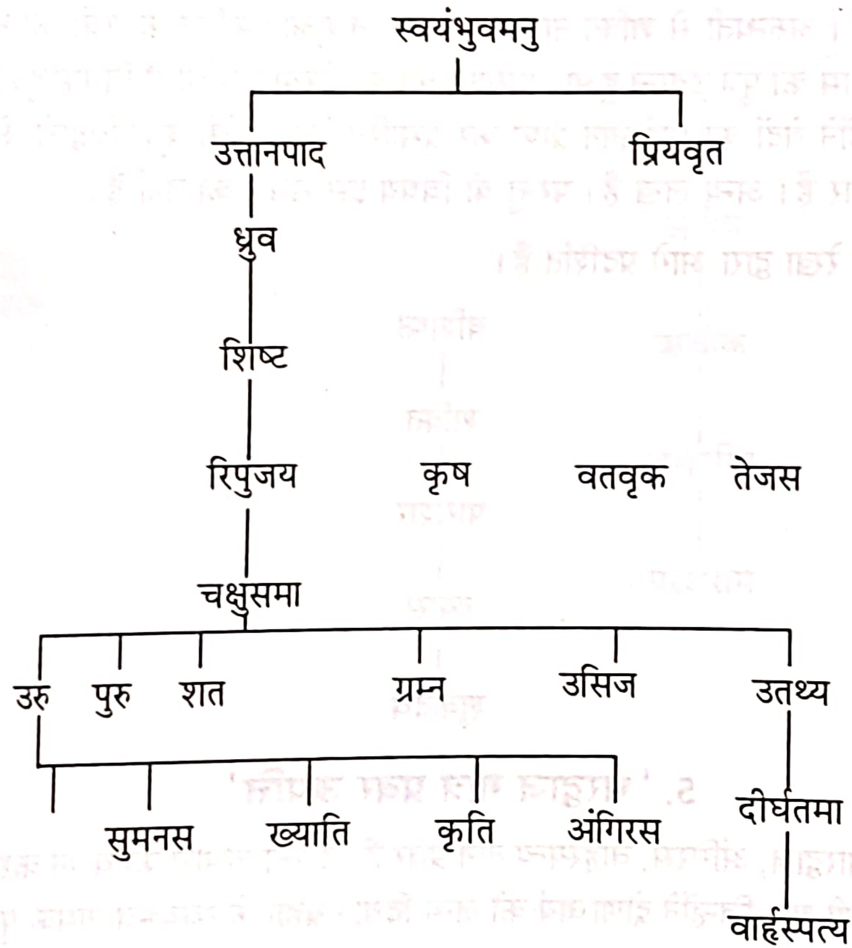


5. 'भरद्वाज गोत्र प्रवर उत्पत्ति'

भरद्वाज गोत्र में भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य तीन प्रवर हैं। इनकी उत्पत्ति का वर्णन करता हूँ। भारद्वाज की पत्नी का नाम द्रोंणी था। जिन्होंने द्रोंणाचार्य को जन्म दिया। ब्रह्मा के स्वयंभव नामक पुत्र हुए, जिनकी

सतरूपा और अवन्ती नाम की दो पत्नी थी। अवन्ती से वृत्त और उत्तानपात नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए। उत्तानपात की सुरुचि और सुनीति नाम की दो पत्नियाँ थी। सुनीति से ध्रुव उत्पन्न हुए। जिन्होंने बाल्यावस्था में बड़ी ही घोर तपश्या की, और चन्द्रमण्डल में अपना अचल स्थान प्राप्त किया। जो आज भी ध्रुवतारे के नाम से जगत विख्यात है। ध्रुव की स्त्री का नाम धन्या था, जो मनु महाराज की कन्या थी। धन्या से शिष्ट नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। शिष्ट की स्त्री का नाम सुच्छा था। ये अग्नि की पुत्री थी। सुच्छा के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न हुए, जो निम्न प्रकार हैं। 1. कृष 2. रिपुंजय 3. वतवृक 4. वृक 5. तेजस नामक पाँच पुत्र थे। रिपुंजय की स्त्री वीरणीं थी, जो वीणा की पुत्री थी। वीरणीं के चाक्षुसमा नाम का एक पुत्र पैदा हुआ। चाक्षुसमा की पत्नी का नाम नंगला था। जिसके उरू, पुरुसत, गधम्न, उसिज, उतथ्य इत्यादि पुत्र थे। उरू की पत्नी षडतग्निवी नाम की थी। इसके गर्भ से तेजस्वी दिव्य रत्न अंगिरस पुत्र पैदा हुए। उतथ्य की ममता नाम की स्त्री थी। जिससे दीर्घतमा नामक ऋषि पैदा हुए। ये गर्भ से ही नेत्रहींन थे। महान विद्वान थे। इनकी पत्नी का नाम प्रद्वेष्णी था। इनके गर्भ से वार्हस्पति नामक पुत्र उत्पन्न हुए।

5. 'भरद्वाज गोत्र प्रवर रेखाचित्र'



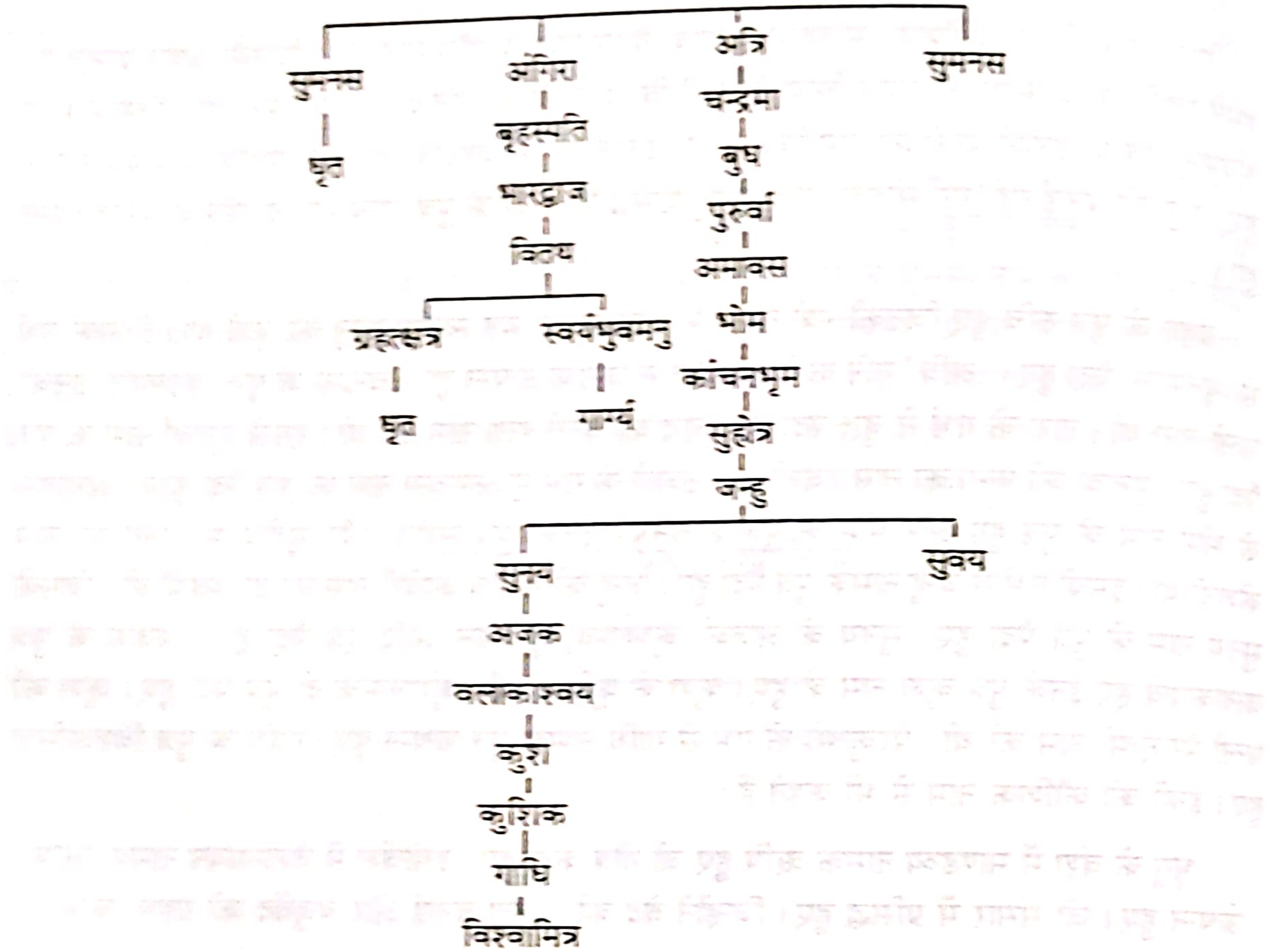
6. 'गार्ग्य गोत्र प्रवर उत्पत्ति'

गार्ग्य गोत्र में धृत, कौशिक, माण्डव्य, अथर्व, वैशम्पायन ये पाँच माने गये। जिनका वर्णन प्रस्तुत है। हमने पहले वितथ ऋषि का वर्णन किया है, इसी वितथ ऋषि की सुनन्दा नाम की स्त्री थी। जिसके स्वयं भुवमन्यु पुत्र थे, इनकी पत्नी का नाम विजया था। इसके गर्भ से वृहक्षव, नर, गर्ग, सहोत्रा ये 4 पुत्र उत्पन्न हुए। गर्ग की बनाई गई 'गर्ग संहिता' ग्रन्थ जगत प्रसिद्ध है। इन्हीं के पुत्र गार्ग्य हुए जो गोत्र के मुख्य ध्याता हुए।

ब्रह्मा के पुत्र रुचि हुए जिनकी स्त्री का नाम आकृती था, यह स्वयंभुवमनु की पुत्री थी। जिसके गर्भ से 'धृतमुनि' पैदा हुए। 'अत्रि' मुनि के नेत्र के मैल से चन्द्रमा उत्पन्न हुए। चन्द्रमा के पुत्र 'बृहस्पति' इनकी पत्नी तारा थी। तारा के गर्भ से बुद्ध पैदा हुए। बुद्ध की पत्नी इला नाम की थी। इससे पुरूर्वा नाम के पुत्र पैदा हुए। पुरूर्वा की पत्नी का नाम उर्वशी था। उर्वशी के गर्भ से अमावस नाम का पुत्र पैदा हुआ। अमावस के भोम नाम के पुत्र हुए और भोम के पुत्र कांचनभ्रम इनका पुत्र सुहोत्रा और सुहोत्र की पत्नी का नाम केशनी था। इसके गर्भ से जन्हु नामक पुत्र पैदा हुए। जन्हु की गंगा व कावेरी नाम की दो स्त्रियाँ थीं। जिसके सुनयं नाम के पुत्र पैदा हुए। सुनयं के अजकं, कुष्णाम्ब, मूर्तिभान आदि पुत्र पैदा हुए। अजक के पुत्र वलाकाश्व हुए इनके पुत्र कुश नाम के हुए। कुश के कुशिक और कुंशनामक दो पुत्र पैदा हुए। कुश की पत्नी पैरकुत्मी नाम की थी। पैरकुत्मी के गर्भ से गाधि नामक पुत्र उत्पन्न हुए। गाधि के पुत्र विश्वामित्रा हुए। इन्हीं को कौशिक नाम से भी कहते हैं।

भृगु के वंश में माण्डव्य नामक ऋषि हुए जो गोत्र कर्ता हुए। इसीवंश में वैशम्पायन नामक ऋषि उत्पन्न हुए। जो संसार में प्रसिद्ध हुए। जिन्होंने वेद की संहिता बनाई और यजुर्वेद को ग्रहण किया।

6. 'गार्ग्य गोत्र प्रवर उत्पत्ति'



7. 'गौतम गोत्र प्रवरों की उत्पत्ति'

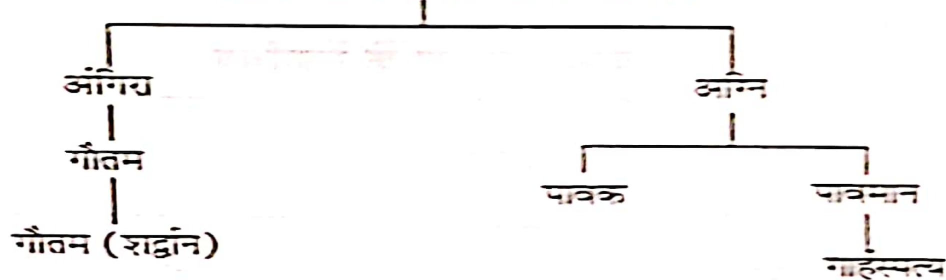
गौतम ऋषि गोत्र की उत्पत्ति का वर्णन करता हूँ। जो साक्ष्यों प्रमाणों से मुझे ज्ञात हुआ है।

गौतम गोत्र के अंगिरा, वशिष्ठ, गार्हस्त्य तीन प्रवर पाये गये हैं। तीनों का वर्णन मैंने पीछे किया है, और कुछ आगे लिखता हूँ। अंगिरा की स्त्री सुरूपा नाम की थी। जो मरीचि की पुत्री थी। जिसके गार्हस्पत्य, गौतम, सम्वर्त, उतथ्य, वामदेव, अजस्य आदि दश पुत्र उत्पन्न हुए। गौतम ऋषि के शर्द्वान पुत्र उत्पन्न हुए। जिन्हें गौतम के नाम से जाना जाता है। इन्हीं शर्द्वान की स्त्री का नाम अहिल्या था। अहिल्या स्थान मिथिला में अभी भी गौतम स्थान के नाम से जाना जाता है। जो प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थस्थल है। गौतम ऋषि ने धर्म शास्त्र, न्याय सूत्र बनाकर उस स्थान पर वेदों का ज्ञान ब्राह्मणों को कराया था। आज भी उस स्थान पर पठन-पाठन चलता है। उस स्थान का नाम गौतम कुटी अहिल्या कुण्ड नाम से अभी तक मिथिला के

प्रमाणक व दार्शनिक स्थानों में विद्यमान हैं।

ये गौतम ऋषि की उत्पत्ति ससक से हुई। गौतम जी के पुत्र शतानन्द के पुत्र अग्नि नाम के हुए और अग्नि के पावक और पावमान नाम के दो पुत्र हुए। पावमान के गार्हस्पत्य नाम के पुत्र हुए। इन्हें मैं रेखाचित्र से आगे दर्शित करता हूँ।

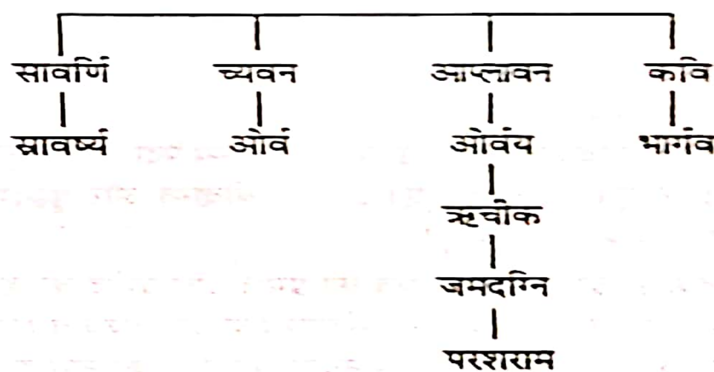
7. 'गौतम गोत्र प्रवरों के रेखाचित्र'



8. 'सावर्णि गोत्र उत्पत्ति'

अब सावर्णि गोत्र व प्रवरों का वर्णन करता हूँ। सावर्णि ऋषि के पांच प्रवर्तक हुए। 1- और्व 2- च्यवन 3- भार्गव 4- जमदग्नि 5- अप्लुवान थे। पीछे परिचय लिखा गया है। स्वयंभुवमनु के ज्येष्ठ पुत्र प्रियवर्त की दो पत्नी थीं, जिनमें एक स्वरूपा थी, जो प्रजापति की पुत्री थी। दूसरी पत्नी वर्हिष्मती जो विश्वकर्मा की बेटी थी। जिनके एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुए। पुत्री का विवाह शुक्र के साथ हुआ। शुक्र की पत्नी का नाम उर्जस्वती था शुक्र की दो स्त्रियां थीं। दूसरी का नाम जयन्ती था। जयन्ती का परिचय पूर्व में लिखा है।

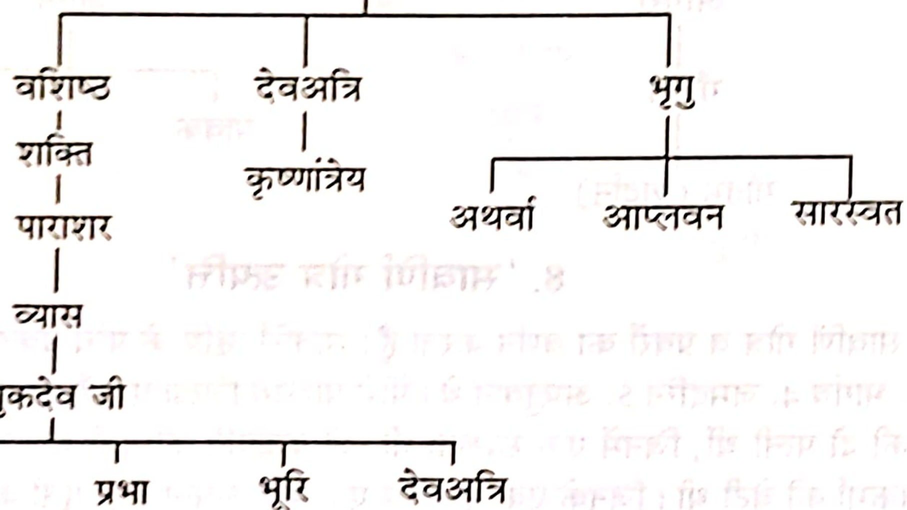
'सावर्णि गोत्र वंश का रेखाचित्र'



9 'कृष्णात्रेय गोत्र, प्रवरों की उत्पत्ति'

कृष्णात्रेय गोत्र के तीन प्रवर्तक हुए ये कृष्णात्रेय, अत्रि और अथर्वा कहे गये। जिनका वर्णन पूर्व में किया गया है। व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी हुए। शुकदेव कीपत्नी का नाम पिवरी था। इनके चार पुत्र हुए 1. कृष्णमुनि 2. प्रभु 3. भूरि 4. देवअत्रि थे। कृष्णमुनि और देवअत्रि अथर्ववेद के साथ वंशज हुए। देवअत्रि के पुत्र कृष्णांत्रेय हुए। भृगु जी के पुत्र सारस्वत हुए। अथर्वा के पुत्र अत्रि हुए। आप्लावन का परिचय पूर्व में दिया है।

'कृष्णांत्रेय वंश के रेखाचित्र'



नोट : कुछ विद्वानों ने कृष्णांत्रेय, आप्लावन, सारस्वत यह तीन वंश प्रवर्तक बतायें हैं। यह विद्वानों के अलग-अलग मत हैं।

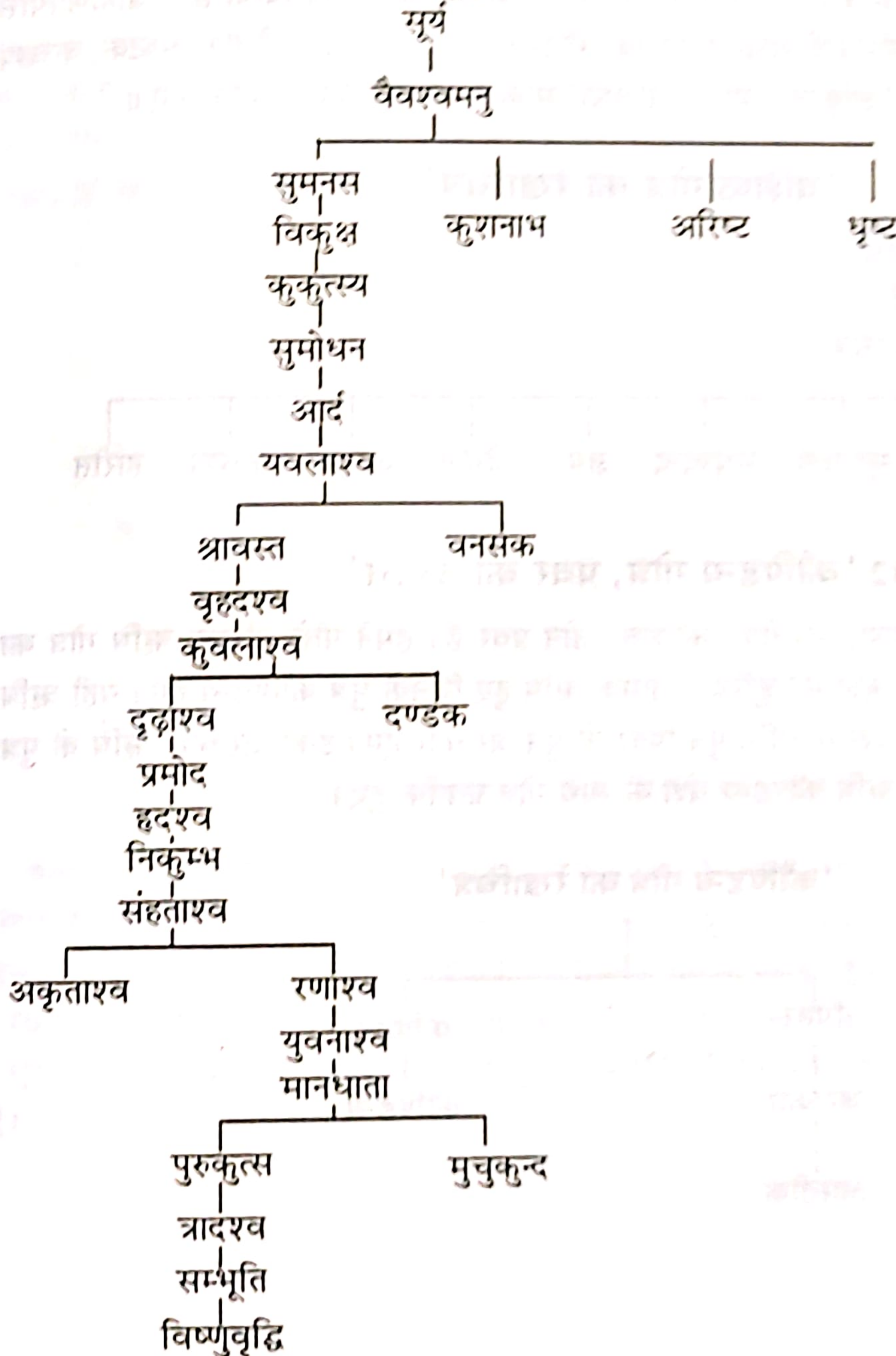
10 'विष्णुवृद्धि गोत्र, प्रवरों की उत्पत्ति'

विष्णुवृद्धि गोत्र में तीन प्रवर हैं। 1. विष्णुवृद्धि 2. च्यवन 3. वार्हस्पत्य। कश्यप ऋषि की स्त्री अदित थी, उसके गर्भ से आदित्य (सूर्य) पुत्र हुए। सूर्य की तीन स्त्रियाँ थीं। जिनके संज्ञा, राष्ट्रों प्रभा नाम थे संज्ञा नामक स्त्री से वैवश्व मुनि पैदा हुए। वैवश्वमुनि के 1. इक्ष्वाकु 2. कुशनाभ 3. अरिष्ट 4. धर्ष्ट आदि दश पुत्र उत्पन्न हुए। इक्ष्वाकु का पुत्र विकुक्षि हुआ। इनका पुत्र कुत्स्य पैदा हुआ। कुत्स्य का पुत्र सुमोधन हुए, इनके पुत्र आद्र और आद्र के पुत्र युवलाश्व हुए। इने पुत्र श्रीवास्त और वृहदश्व दो हुए। वृहदश्व का कुवलश्व पुत्र हुआ। कुवलश्च के तीन पुत्र हुए।

1. द्रढ़लाश्व 2. दण्डक 3. ब्रीव आदि द्रढ़ाश्व का प्रमोद और प्रमोद का ह्रदश्व पुत्र हुआ, ह्रश्व के निकुम्भ पुत्र हुआ। निकुम्भ का पुत्र संहताश्व हुआ। संहताश्व के अकृताश्व व रणाश्व दो पुत्र हुए। रणाश्व का युवनाश्व और युवनाश्व के मानधाता पुत्र हुए। मानधाता की पत्नी का नाम इन्दुमती था। जो शशिबिन्दु की बेटी थी। इनकी माता का नाम गौरी था। मानधाता के दो पुत्र हुए 1. पुरुकुत्स 2. मुचकुन्द, पुरुकुत्स

की स्त्री का नाम नर्भदा था। जिससे त्रासदस्य पुत्र उत्पन्न हुआ। त्रासदस्य के पुत्र सम्भूति नाम के हुए। इसी सम्भूति नामक ऋषि के पुत्र विष्णुवृद्धि हुए हैं। जो ब्राह्मण वंश के गोत्र कारकों में श्रेष्ठ गिने जाते हैं।

'विष्णुवृद्धि गोत्र प्रवरों का रेखाचित्र'

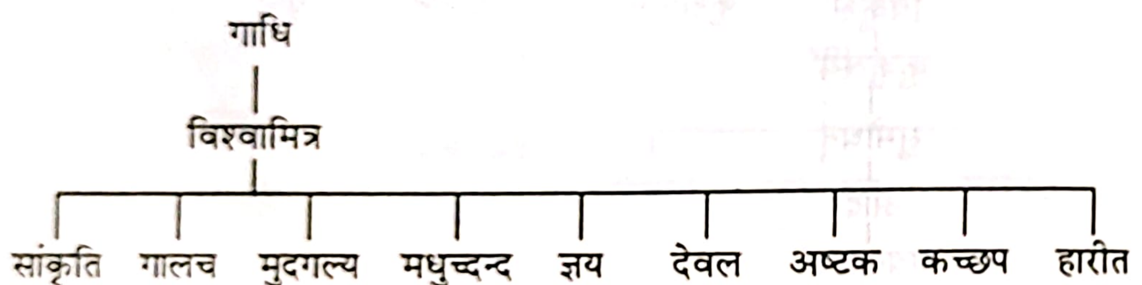


11 'वशिष्ठ गोत्र, प्रवरों की उत्पत्ति'

वशिष्ठ गोत्र में तीन प्रवर हैं। 1. वशिष्ठ 2. अत्रि 3. सांकृति हैं।

गर्ग गोत्र के रेखाचित्र में अत्रि से विश्वामित्र तक सोलह पीढ़ियों का वर्णन किया है। "ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण" नामक पुस्तक में विश्वामित्र के सांकृति, गालव , मौदगल्य, मधुच्छन्द, ज्ञय, देवल, अष्टक, कच्छप तथा हरित आदि पुत्र हुए। ये 'शांकृति' 'मुनि' 'वशिष्ठ' सांकृति के साथ वंश प्रवर्तक हुए॥

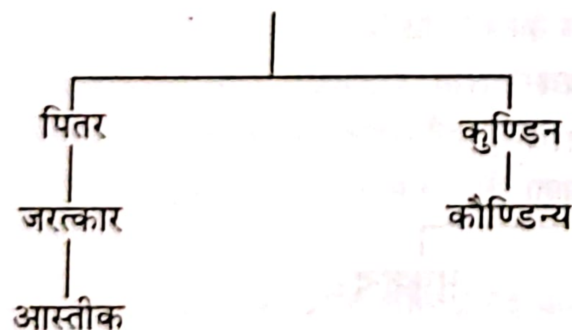
'वशिष्ठ गोत्र का रेखाचित्र'



12 'कौण्डिन्य गोत्र, प्रवर की उत्पत्ति'

कौण्डिन्य गोत्र के कौण्डिन्य, आस्तीक, कौशिक, तीन प्रवर हैं। हमने पीछे वशिष्ठ ऋषि गोत्र का वर्णन किया है। इसी ऋषि के कुल में 'कुन्डिन' नामक ऋषि हुए जिनके पुत्र कौण्डिन्य हुए। यही ऋषि वंश के कर्त्ता हुए। शांण्डिल्य वंश में अग्नि पुत्र पितर के पुत्र जरत्कार हुए। इन्हीं जरत्कार ऋषि के पुत्र आस्तीक हुए। यही आस्तीक ऋषि कौण्डन्य वंश के साथ गोत्र प्रवर्तक हुए।

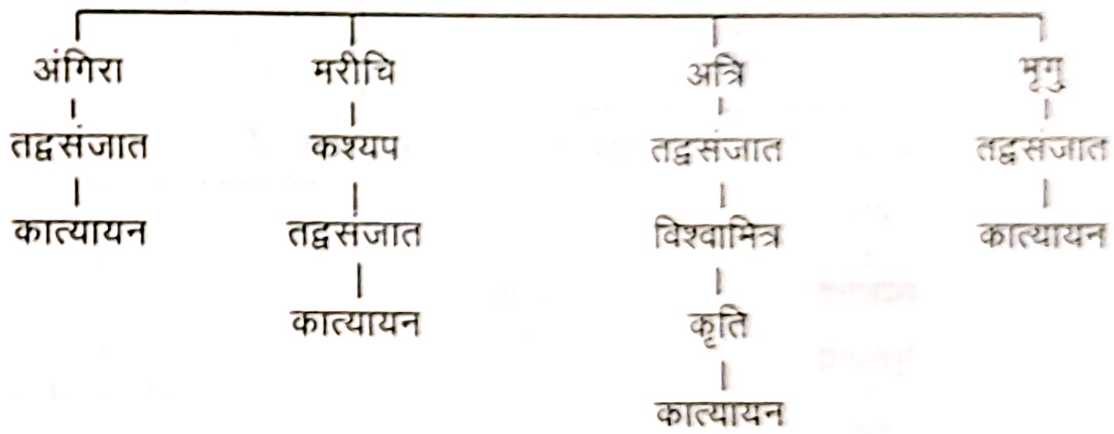
'कौण्डिन्य गोत्र का रेखाचित्र'



13 'कात्यायन गोत्र, प्रवर की उत्पत्ति'

कात्यायन गोत्र के कात्यायन, अंगिरा, विष्णुवृद्धि ये तीन प्रवर हैं। कात्यायन गोत्र के प्रवर्तक कात्यायन ऋषि के बारे में पृथक-पृथक पुराणों में लेख हैं। परन्तु विचार और साक्ष्य के आधार से यह निश्चित होता है, कि कात्यायन गोत्र वंश पोराणपुरुष ऋषि तद्वसंजात के पुत्र थे। लेकिन शंका यह हैं, कि तद्वसंजात ऋषि अंगिरा या मरीचि, या भृगु अथवा अत्रि इनमें से किस वंश के थे। 'पदमपुराण' ब्रह्मखण्ड। लिंगपुराण में तद्वसंजात नाम चारों वंशों में आया है। लेखक "ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण" में चारों के कुल को रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित करते हैं।

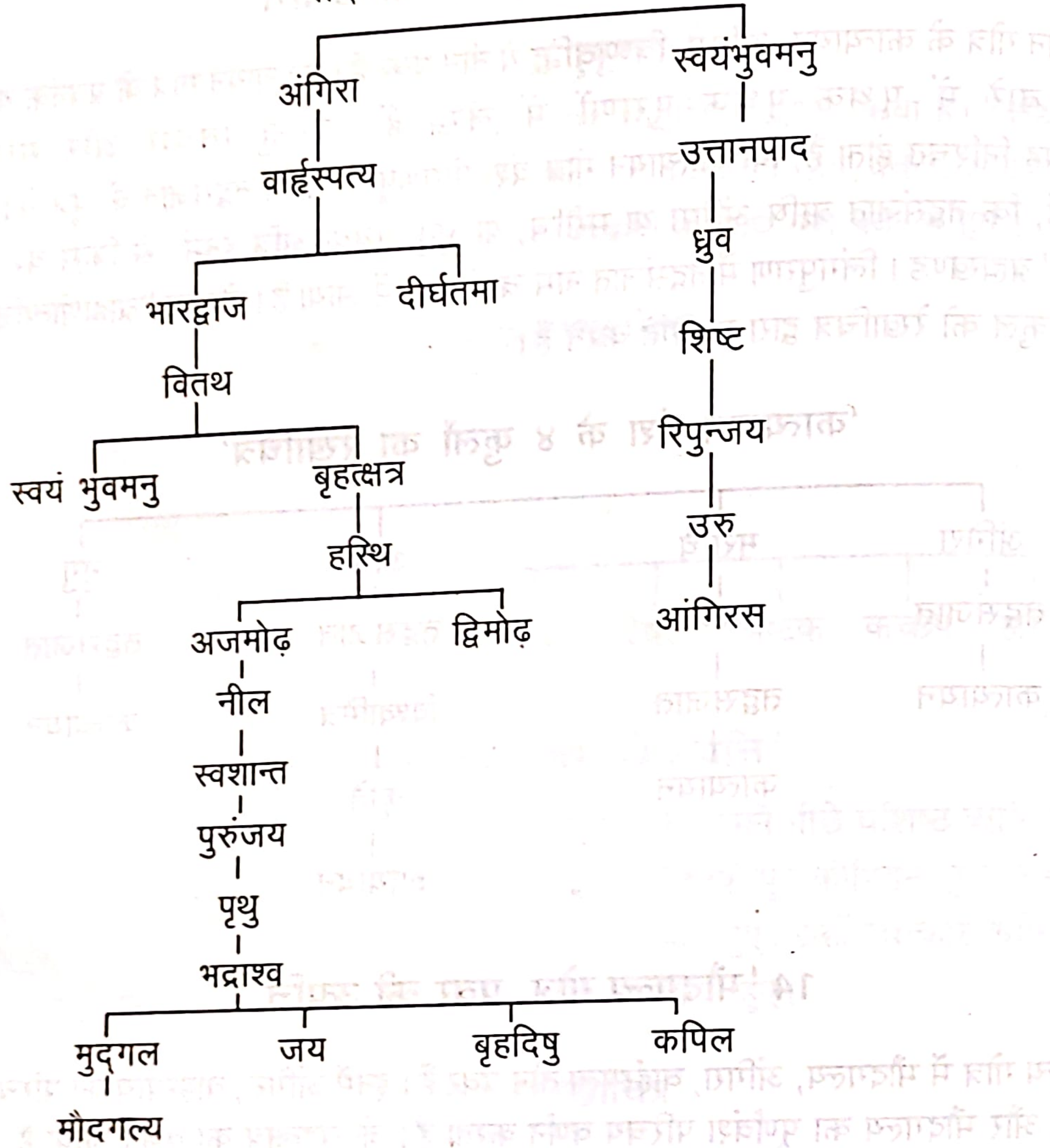
'कात्यायन वंश के ४ कुलों का रेखाचित्र'



14 'मौदगल्य गोत्र, प्रवर की उत्पत्ति'

मौदगल्य गोत्र में मौदगल्य, अंगिरा, वार्हस्पत्य तीन प्रवर हैं। इनमें अंगिरा, वार्हस्पत्य का परिचय पहले दे दिया है, और मौदगल्य का पूर्णवंश परिचय वर्णन करता हूँ। जो वृहत्क्षत्र का वर्णन किया है। उसी में वृहत्क्षत्र के हस्थि पुत्र हुए हस्थि के अजमोढ़ और द्विमोढ़ नाम के दो पुत्र हुए। अजमोढ़ के नील और नील के स्वशांति पुत्र हुए तथा स्वशांति के पुत्र पुरन्जय और पुरन्जय पृथु के पुत्र भद्राश्व उत्पन्न हुए। भद्राश्च के मुदगल्य, जय, वृहदिषु, कपिल चार पुत्र हुए। मुदगल्य के पुत्र मौदगल्य उत्पन्न हुए जो गोत्र के कर्ता हुए।

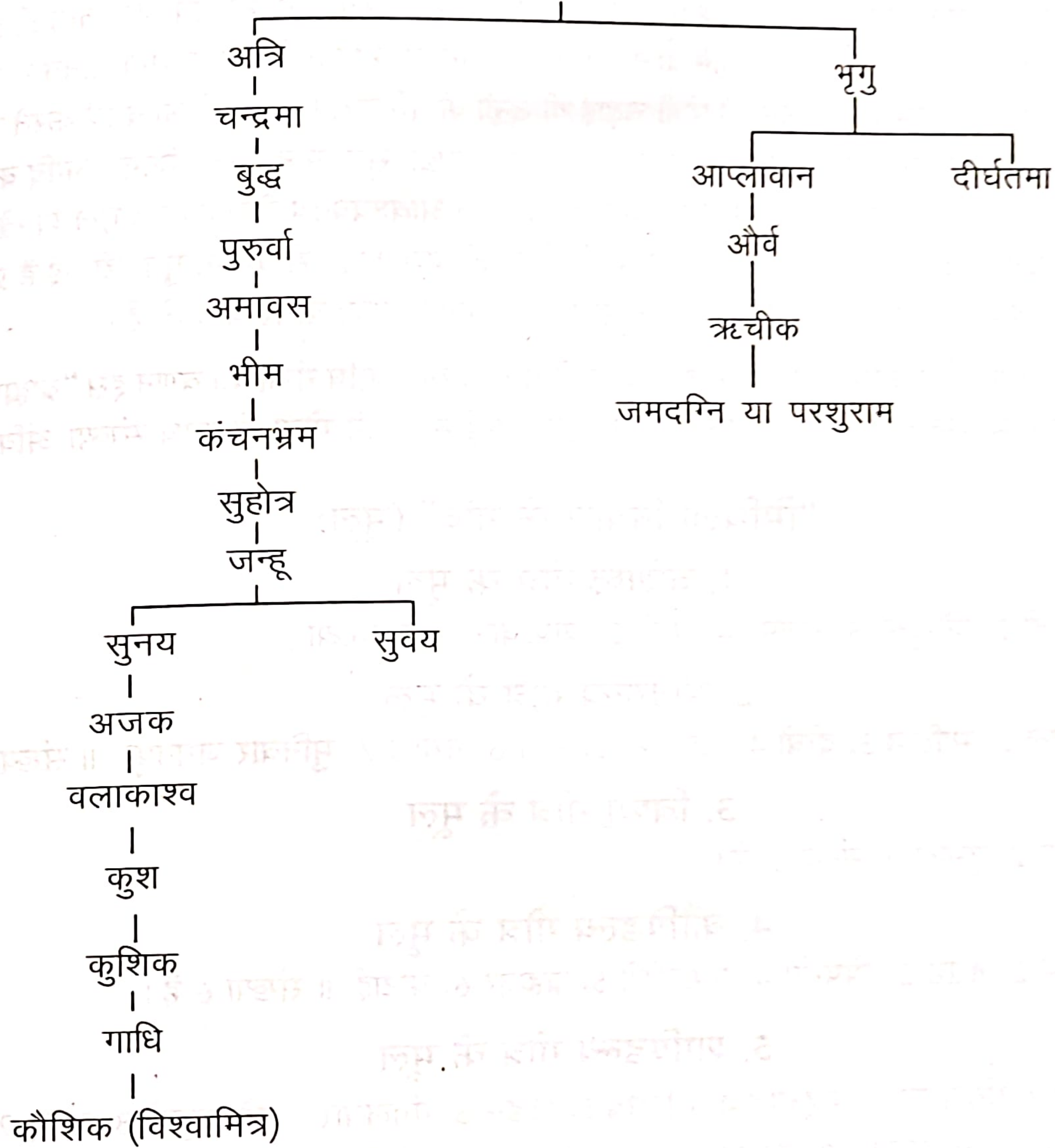
'मौदगल्य गोत्र, वंश का रेखाचित्र'



15 'कौशिक गोत्र, प्रवर की उत्पत्ति'

कौशिक गोत्र के कौशिक, अत्रि, जमदग्नि तीन प्रवर हुए हैं। जिनका पूर्ण विवरण पहले लिखा है। नीचे कौशिक गोत्र का रेखाचित्र अंकित है।

'कौशिक गोत्र, का रेखाचित्र'



नोट : उपरोक्त 15 ऋषियों के नाम वंश व ऋषियों से उत्पन्न सन्तानों के वंश की उत्पत्ति का यह वर्णन डा. मक्खनलाल मिश्र ने प्रमाण तौर से किया है।

'मैथिल ब्राह्मणें के मूल'

श्रीमान हरीसंह देव मिथिला नरेश ने मिथिलान्चल राज्य में सन् 1296 ई. में समस्त मैथिल ब्राह्मण वंशियों की पंजी प्रथा प्रारम्भ कराई। जिसमें मिथिला के ब्राह्मणों को पंजी कार्य के लिय नियुकत किया था।

उन नियुक्त विद्वान ब्राह्मणों ने गाँव-गाँव जाकर मैथिल परिवारों की पंजी की। उस समय जो परिवार जिस गाँव में रहता था, उस परिवार का वहीं गाँव मूल माना। अगर किसी परिवारी ने कहा कि हम लोग तो इस गाँव में आकर रहे हैं। हम तो फलाँ गाँव के रहने वाले थे। तो उस परिवार का फलाँ गाँव ही मूल मानकर पंजीकृत किया। आज भी उस समय जिन लोगों ने पंजी चढ़ाई थी उन्हीं के परिवारी पंजीकारों का कार्य करते चले आ रहे हैं, और उन्हें पंजीकार कहते हैं। उनी पंजी में जाति, गोत्र, शाखा, सूत्र, मूल, प्रवर, शिखा आदि का लेखा किया जाता है, जो शादी सम्बन्धों के समय मूल का जानना अति आवश्यकीय होता है। यह मूल या खेड़ा नाम से सर्वज्ञ विदित शब्द जाना जाता है। वृज में मैथिलों की पन्जी प्रथा 2002 से प्रारम्भ पुनः हो गई है प्रति वर्ष पंन्जीकार प. देवचन्द्र मिश्र व प. गोविन्द मिश्र सौराठ, मधुवनी से पंजी के लिये आते हैं।

आगे डा. मक्खनलाल मिश्र अब मैथिल ब्राह्मणों के मूल के साथ ऋषि गोत्रों का वर्णन इस "ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण" पुस्तक में प्रस्तुत करते हैं। पाठकगण ध्यानपूर्वक पढ़ें मूलों की गोत्रों के साथ संख्या अंकित है।

"मिथिला निवास के गाँव" (मूल)

1. वशिष्ठ गोत्र के मूल

1. पड़ोली 2. कौथुआ 3. नांनपुर 4. बरबे 5. वृष्टिवाल ॥ 5 संख्या

2. मौदगल्य गोत्र के मूल

1. रतवाल 2. मालिछ 3. दीघो 4. जल्लकी 5. मैंनी 6. नेरोछि 7. मुनिवार जगतपुर ॥ संख्या 7 है।

3. विष्णु गोत्र के मूल

1. कौथए 2. तुमोल ॥ संख्या 2 है।

4. कौण्डिल्य गोत्र के मूल

1. परसडे 2. नरोंछ 3. पिपरोंन 4. एकहरिये 5. ब्रह्मतुर 6. कटाई ॥ संख्या 6 है।

5. शाण्डिल्य गोत्र के मूल

1. दिधवे 2. पंगुलवार 3. यजुआड़े 4. सरिसवे 5. खंड़ौरे 6. गंगूलवार 7. सोदरपुरये 8. भराढ़ 9. महुये 10. पंडोलवार 11. यमगायेय 12. दहिमतवार 13. करिअनय 14. तिलेवार 15. सरोनवार 16. मुहरिये 17. सजुआरे 18. सिम्बनामे 19. सिंहाश्रमे 20. कड़रिये 21. परिसरे 22. सिंहासवे 23. अड़रिये 24. वारनामे 25. कोड़आरे 26. उत्तमपुरिये 27. तिल्हनपुरिये 28. कोंदरिये 29. छतिमने 30. ब्रह्मपुरिये 31. बनवासे 32. करमहे 33. मछवाले 34. गंगौरे 35. अनरिये 36. भरोरे 37. घोसिआमे 38. बुधोरे 39. छतौदिवार 40. जनोतीवार 41. भिगुआल 42. तपनपुरिये 43. होइआरे 44. ननौरे 11 संख्या 44 है।

6. कात्यायन गोत्र के मूल

1. कुंजौल 2. ननौती 3. जल्लकी 4. रतिगामे 5. दिगोन 6. भकरुयिन 7. सतेढ 8. लोआम ॥ संख्या 8 है।

7. कश्यप गोत्र के मूल

1. मन्डरे 2. हड्री 3. खोआरे 4. संकराठी 5. वलिआस 6. कटाई 7. सतलखे 8. मलिछावे 9. विसपी 10. मेरन्दी 11. ओइनवार 12. मदुआल 13. जगती, दरिहरे 14. पंचाओत 15. बुधवारे 16. थरिया 17. पकडिये 18. दासती 19. पडुआ 20. भरेहा 21. गौरी 22. कुसुमाल 23. तरवाल 24. जनकभृतहरी 25. नरवाल 26. छामुन 27. नगुड़दहे 28. दहला 29. सुरिमहा । संख्या 29 है।

8. गौतम गोत्र के मूल

1. ब्रह्मपुरा 2. कोयआरे 3. बुधोरे 4. मुररिवार 5. औरिया 6. उत्तमपुर 7. पंडुआ 8. सुरोखार संख्या 8 है।

9. वत्स गोत्र के मूल

1. घोसौत 2. जल्लकी 3. पालीवार 4. बुधवाल 5. तिसौत 6. टन्कवाल 7. हरिअम्ब 8. करमहे 9. वहेरा 10. अलई 11. फनन्द 12. संकोना 13. तिसुरी 14. वम्भआम 15. उजली 16. राओढ़ 17. जनुआड़े 18. पोहद्दो 19. भरवाल 20. लाही 21. कोयआर 22. सोंनी 23. वरेवा 24. करहिया 25. ननौर 26. मौहर 27. बन्दवाल 28. वरुआली 29. डढ़हार 30. पंडोल 31. मराढ़ 32. भंडारिसम 33. चित्रापल्ल 34. जरहठिया 35. विठुआर 36. नरवाल 37. रतनाल 38. सरौनी 39. ब्रह्मपुरा 40. तपनपुरा । संख्या 40 है।

10. पाराशर गोत्र के मूल

1. नरओने 2. सुअरी 3. सकुरी 4. सुरगणे 5. पिहवाल 6. नदामे 7. सौनी 8. नरओन 9. महेसारी 10. तिलयी 11. वरैगा 12. सम्युआल संख्या 12 है।

11. भारद्वाज गोत्र के मूल

1. वैलओंचे 2. देआम 3. भुतहरी 4. गौढ़रा 5. कलिग्रामे 6. एकहरे 7. डमकटारि 8. वरवै 9. धोरी 10. सौंनी संख्या 10 है।

12. कौशिक गोत्र के मूल

1. निकुत 2. तैलनपुरिये। संख्या केवल 2 ही मूल है।

13. गार्ग्य गोत्र के मूल

1. ब्रह्मपुरा 2. बुधोरा 3. ओड़िया 4. वसामय 5. सुरौर 6. वसहा 7. भटोर संख्या 7 है।

14. कृष्णांत्रेय गोत्र के मूल

1. सान्द्रअदोनी 2. गन्धवार 3. अनहोला 4. भुषवाडे राजन, गौरोल संख्या 5 है।

15. सावर्णि गोत्र के मूल

1. सोंदरपुर 2. वरैवे 3. ननौरे 4. मैरन्दी 5. पनचोभ 6. सोंनपुरिये संख्या 6 है।

मैथिल ब्राह्मणों की पन्जी जो हुई, उसे काफी लम्वा अर्सा हो गया। इधर मैथिल विप्रजन परिस्थितयों वश मिथिला से दूर-दूर जा बसे। ऐसी परिस्थिति में पंजी की व्यवस्था विगड़ गई। लेकिन मिथिला के अन्तिम महाराजा श्री कामेशवर सिंह ने अपने कठिन परिश्रम से जगह-जगह जाकर फिर से मैथिल समाज को गोत्र व्यवस्था व मूल खेड़ों के आधार से पुनः पंजीसूत्र में वाँध दिये। नवीन पंजी के कारण कुछ मूल बढ़ गये। दरभंगा राज वंश की महारानी कामेश्वरी देवी वर्तमान में मौजूद है तथा कुमर शुभेश्वर सिंह महाराज कामेश्वरसिंह के लघुभ्राता विश्वेश्वर सिंह के सुपुत्र हैं।

'मिथिला का इतिहास'

मिथिलान्चल (विहार प्रान्त) मिथिला प्रमुख नगरी जगत प्रसिद्ध है। जिसको 12 नामों से पुकारा जाता है। प्रचलित नाम जनकपुरी से जाना जाता है। जहाँ आदि शक्ति सीता जी अवतरित हुई थीं। जहाँ भगवान शंकर का धनुष बड़े-बड़े योद्धाओं से हिल भी न सका उस शिव धनुष को भगवान श्रीराम ने तोड़कर अभिमानी जनों के अभिमान का मर्दन किया। और माता सीता जी का वरण किया था, वह जनक नगरी आज नेपाल राज्य में चली गई है। परन्तु इस मिथिला राज्य पर पूर्व इक्ष्वाकु वंश पश्चात से ही मिथिला के ब्राह्मणों का शासन रहा है। राजा निमि के बाद में भी ब्रह्मविद्या मंथन के द्वारा उत्पन्न राजा जनक मैथिल ब्राह्मण वंश के मुख्य कर्ता हुए। इन्हीं के द्वारा मिथिला नगरी बसाई गई। इस मिथिला की राजगद्दी परशासन करते हुए मैथिल शासकों ने अपनी राजधानी दरभंगा बनाई। वहीं से सारे मिथिला राज्य पर शासन करते थे। इसी कारण मिथिलांचल का मूल स्थान दरभंगा ही माना जाता है। मिथिला क्षेत्र के सात जिले ही बिहार प्रान्त में रह गये हैं। 1. दरभंगा 2. मधुवनी 3. सहरसा 4. समस्तीपुर 5. सीतामढ़ी 6. कटिहार 7. वेगूसराय जिला शेष भाग मिथिला का नेपाल में चला गया जो मुख्य अहम भाग था। पूर्व काल में राजा निमि की राजधानी निमिपाल नामक स्थान पर थी, जिसे आजकल नेपाल नाम से जाना जाता है।

'मिथिला के ब्राह्मणों की विशेषताएँ'

प्रिय बन्धुओं ब्राह्मण एक था सभी ब्राह्मण उच्च हैं, आदरणीय हैं, पूज्य हैं। न कोई बड़ा है, और न कोई छोटा है। ब्राह्मण वंश अलग-अलग क्षेत्रों में रहने के कारण स्थान नामों से पुकारे जाने लगे। फिर यही क्षेत्रीय नाम जाति भेद हुआ। परन्तु मिथिला देश तपस्वीयों की तपस्थली त्याग और बलिदानियों की भूमि सत्य और सम्मान का भण्डार है। जहाँ सीता जी का जन्म, श्रीराम के द्वारा शिवधनुष का तोड़ना ऋषि मुनियों का तपस्थल ये भूमि के प्रभावस्वरूप वहाँ के ब्राह्मण कर्मकाण्डी वेदों के पारंगत विद्वान, ज्योतिषाचार्य, नीतिशास्त्र के ज्ञाता, व्याकरणाचार्य, धुरंधर मीमांसा ज्ञाता, नीति के मर्मज्ञ विद्वान, पंडित हुए हैं वहाँ की अलग मैथिली भाषा जो बोलने में अति मधुर लगती है। वहाँ की एक अलग छवि दिखाई देती है। मैथिल ब्राह्मणों की भाषा ही वहाँ मैथिली है। जो दूर से मिथिला विप्र की पहिंचान कराती है। शासन का इतिहास पढ़ने से ज्ञात होगा कि मैथिल वंश के राजाओं का अपना मिथिला राज्य, मिथिलों की अपनी फौज और अपनी मैथिली ही भाषा रही है।

'मिथिला के राजाओं की वंशावली'

महाराज जनक के काल में मिथिला राज्य स्वतन्त्र था, और वज्जि राजा के समय तक स्वतन्त्र रहा। सभी शासक मिथिला का राज्य स्वतन्त्रा करते रहे। इसके बाद मिथिला राज्य पर विदेशियों का शासन हो गया। विदेशी शासकों के आतंक अत्याचारों से मिथिला राज्य में आतंक फैल गया। प्रजा का जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया। मिथिलावासियों को यह महान संकट की घड़ी थी। 'नान्यदेव' महाराज कर्णाट वंशी मिथिला राज्य पर सिंहासन आरूढ़ हुए। नान्यदेव महाराज एतिहासिक प्रमाण से 18 जुलाई सन् 1097 ई. को सिंहासन पर बैठे, और मिथिला राज्य की बागडोर सभाँली इन्होंने अपनी बुद्धि) और पराक्रम से नेपाल और बंगाल जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। सम्पूर्ण क्षेत्रों पर एकछत्र शासन किया। अनेकों उपाधियों से सम्मानित हुए जैसे – धर्माधार, महासामंतापतिभूपति, मिथिलेश, कर्णाटकुलभूषण, कणट कुल शिरोमणि, रजनारायण आदि नामों से उपाख्यति हुए। इन्होंने 50 वर्ष मिथिला का शासन किया। वर्ष सन् 1147 में शरीरान्त हो गया।

गंगदेव – महाराज नान्यदेव के पश्चात उनके बेटे गंगदेव मिथिला राज्य के शासक हुए। इन्होंने राज्य को सूबों में बाँटा और हर सूबे में परगनाधिकारी, सूबेदार नियुक्त किये। कानून परिवर्तन से गाँमों कोबात अधिकारियों तक और फिर अपने तक मालूम कर लेते थे, गंगदेव महाराज पूर्णत: प्रजा के कल्याण की तरफ अधिक ध्यान देते थे। गंगन्देव के दो पुत्र थे। 1. मल्लदेव 2. रामदेव श्री मल्लदेव जी कन्नौज के राजा जयचन्द के यहाँ राज्य मंत्री थे।

नरसिंहदेव - गंगदेव के पश्चात मिथिला राज्य के उत्तराधिकारी बने। 'इल्तुमस' ने बहुत बड़ी सेना लेकर मिथिला राज्य पर चढ़ाई कर दी, नरसिंह देव महाराज बड़ी वीरता से लड़े घमासान युद्ध हुआ, और नरसिंहदेव ने विजय प्राप्त की। नरसिंहदेव जी ने अपने शासन काल मे राज्य क्षेत्रों में धर्मशालाए, कुँआ, मन्दिर आदि बहुत निर्माण कराए। संस्कृत विद्या का प्रचार प्रसार किया।

रामसिंह देव - नरसिंहदेव के मृत्यु के बाद उनके पुत्र रामसिंहदेव मिथिला सिंहासन पर बैठे। ये धार्मिक विचार के शासक थे। उन्होंने अपने शासन काल में गाँव-गाँव में पंचायतों का गठन किया। गाँवों के आपसी विवाद गाँव पंचायतों के द्वारा निस्तारित किये जाते थे। इनके शासन काल के समय में ही म्लेच्छों (मुसलमान) आक्रमणकारियों का जोर बढ़ने लग गया था। जो मन्दिर मूर्तियों को खण्डित करते थे। प्रजा में आतंक था, राजा रामसिंह देव ने मुसलमानों से कई बार युद्ध किया, और विजय प्राप्त की। लेकिन अपने राज्य और धर्म को सुरक्षित रखा। इन्होंने 58 वर्ष शासन किया। सन् 1275 में इनका शरीरान्त हो गया।

शक्तिसिंह देव - राजा रामसिंह देव की मृत्यु के उपरान्त सन् 1275 में मिथिला की गद्दी के शासक शक्तिसिंह देव हुए, ये बलवान और योद्धा थे। इनकी मित्रता दिल्ली के शासक अलाउद्दीन खिलजी के साथ थी। रणथम्भोर आक्रमण के समय शक्तिसिंह देव ने अलाउद्दीन का साथ दिया था। इन्होंने मुसलमान आक्रमणकारियों से सारे जीवन संघर्ष किया। राज्य सुरक्षित रखा 28 वर्ष शासन किया, और सन् 1303 में स्वर्गवासी हुए।

हरीसिंह देव - राजा शक्तिसिंह देव की मृत्यु के बाद राज्य के उत्तराधिकारी श्रीमान हरीसिंह देव बने लेकिन उस समय हरीसिंह देव 2 वर्ष के थे। इस वजह से युवराज बनने तक ही अवस्था को ध्यान में रखते हुए, शासन का कार्यभार मन्त्रियों नें सँभाला। युवर पद ग्रहण करने पर नंपाल को युद्ध के जीत लिया। ये बहादुर, वीर और साहसी थे, तथा विद्वान भी थे। अपने शासन काल में विद्या का प्रसार किया। जगह-जगह पाठशालायें खुलबाई। मैथिल ब्राह्मण वंश में पंजी प्रथा को जन्मदाता का श्रेय, इन्हीं राजा हरीसिंह देव को है।

पंजी प्रथा का जन्म सन् 1296 में हुआ। उस समय दिल्ली की गद्दी पर शासन गयासुद्दीन तुगलक का था। मिथिला राज्य धर्मावलम्बी होंने के कारण गयासुदीन की दृष्टि मिथिला पर पड़ी, और मिथिला राज्य पर आक्रमण कर दिया। राजा हरीसिंह देव ने जमकर तुर्क का मुकाबला किया, कई दिन घमासान युद्ध हुआ। बहुत सी सेना युद्ध में मारी गई। मिथिला की फौज को मरी देख राजा का मनोबल गिर गया, और अपने को विधर्मियों के हाथों मारे जाने के भय से प्रांण रक्षार्थ नेपाल की तराई में जा छिपे। मिथिला राज्य पर तुर्क गयासुद्दीन तुगलक का शासन हो गया। तुर्क गयासुद्दीन का शासन 1326 से सन् 1330 तक रहा।

इतिहास के प्रमाणों द्वारा मिथिला सदैव से अद्भुत और आकर्षण के रूप में केन्द्र रही यहाँ के शासक

त निवासी मैथिल ब्राह्मण विद्या के धनी रहे। जो ज्योतिष, कर्मकाण्ड तथा वेदों के पारंगत पंडित रहे। जिनकी विद्या की धाक सम्पूर्ण भारतवर्ष में छाई रही, और विद्यावल से ही कई सौ वर्ष तक मैथिल ब्राह्मण वंश के राजाओं ने पींडी दर पींडी मिथिला राज्य पर शासन किया। आज से एक हजार वर्ष पूर्व से अब तक का प्रमाण 'भारत का इतिहास' साक्ष्य है। साथ ही मिथिला का इतिहास इस बात का प्रमाण है, कि सम्पूर्ण ब्राह्मण वंशों में मैथिल ब्राह्मण वंश ही एक ऐसा वंश हैं, जिसने स्वंय बल से कई - कई पींढ़ी शासन किया है, तथा विद्यावल द्वारा दानस्वरूप भी शासन प्राप्त किया है।

1. श्री भोगेश्वर ठाकुर - इन्होंने सन् 1351 से 1388 तक राज्य किया, इनको मुस्लिम बादशाह फिरोजशाह सुल्तान ने मैथिल ब्राह्मण वंश के प्रकाण्ड विद्वान कामेश्वर ठाकुर के बेटे भोगीश्वर ठाकुर को, मिथिला राज्य दान में दे दिया था। इन्होंने अपने जीवन पर्यन्त तक मिथिला का शासन किया था।

2. कुसुमेश्वर ठाकुर - बाद इनके छोटे भाई कुसुमेश्वर ठाकुर ने मिथिला का शासन सँभाला, साथ ही दूसरे भाई ने विवाद खड़ा कर दिया। तब आधा-आधा राज्य बाँटकर दोनों भाईयों ने एक साथ शासन किया।

3 श्री देवीसिंह देव - बाद कुसुमेश्वर के इनके मुख्य सलाहकार देवीसिंहदेव ने शासन सँभाला।

4. महाराज शिवसिंह देव - बाद देवीसिंह देव के उनके उत्तराधिकारी शिवसिंह देव बने। इन्होंने मुसलमानों से कई बार युद्ध किया, और विजय प्राप्त की।

5. श्रीमती महारानी लखमीदेवी - इनके पति शिवसिंह देव अज्ञातवास लेने के उपरान्त श्रीमती लखमीदेवी मिथिला राज्य की शासक बनीं। इस प्रकार 13 शासकों ने 204 वर्ष तक मिथिला का शासन किया।

6. श्रीमान पद्म सिंह - श्रीमती लखमीदेवी के मरणोपरान्त शिवसिंह के छोटे भाई पद्म सिंह जी ने शासन सभाँला।

7. श्रीमती महारानी विश्वास देवी - महाराज पद्मसिंह की मृत्यु के बाद उनकी धर्मपत्नी ने शासन सभाँला और 12 वर्ष तक शासन किया।

8. नरसिंह देव - महारानी विश्वास देवी के देवर हरीसिंह के पुत्र नरसिंह देव को गोद रख लिया। और मिथिला का शासक बनाया ।

9. श्री धीरसिंह देव - महाराज नरसिंहदेव ने अपने बड़े बेटे धीरसिंहदेव को शासक बनाया।

10. श्रीमान मेद्यसिंह देव - महाराज धीरसिंह देव ने अपने छोटे भाई मेद्यसिंह देव को राज्य का उत्तराधिकारी बनाया।

11. भैरवसिंह देव जी महाराज - मैथिल ब्राह्मण वंश के ग्यारहवें राजा थे। इन्होंने अपने शासन काल

में विद्या का प्रसार किया। तेजस्वी धर्मात्मा शासक थे।

12. श्रीमान महाराज लक्ष्मीसिंह देव – महाराज लक्ष्मीसिंह देव जब मिथिला के शासक बने उस समय मुसलमान आक्रमणकारियों का देश में आतंक छाया हुआ था। उसी समय मुगल सम्राट हुमाँयू ने मिथिला पर आक्रमण किया घमासान युद्ध हुआ। कई दिनों तक युद्ध चला और महाराज लक्ष्मीसिंह देव वीरगति को प्राप्त हुए। इस प्रकार 1534 में मिथिला का राज्य मुगलों के अधीन हो गया।

हुमाँयू का शासन सन् 1534 से 1556 तक ऐतिहासिक प्रमाण है। इससे आगे अकवर बादशाह सन् 1556 में गद्दी पर बैठा। यह न्यायकारी बादशाह था। इसके राज्य में हिन्दू–मुस्लिम का समान अधिकार था। ब्राह्मणों का सम्मान करता था। इसके दरबार में हिन्दू विद्वान ब्राह्मण रहते थे और मुसलमान विद्वान लोग भी रहते थे। विद्वान ब्राह्मण सब उर्दू, फारसी का अनुवाद संस्कृत में करते थे, और संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद उर्दू और फारसी में करते थे। अकवर बादशाह के दरबार में नौ महान विद्वान थे। जो धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र, न्यायशास्त्र, नीतिशास्त्र, व्याकरणशास्त्र तथा ज्योतिष के धुरंधर विद्वान थे। इन नौ विद्वानों में 5 मैथिल रत्न थे। इन नौ विद्वानों को 'नवरत्न' कहते थे।

जिनके नाम हैं। 1. फैजी अब्दुल फजल 2. वीरबल 3. टोडरमल 4. पुरुषोत्तम झा 5. देवीमिश्र 6. रघुनन्दन 7. जीवननाथ 8. शिवराम झा 9. तानसेंन बादशाह इन विद्वानों से धर्म प्रवचन सुनते थे। बादशाह ने फतेहपुर सीकरी में भवन के निकट सत्संग भवन बनवाया था, जो आज भी देखने को मिलता है। सन्तान प्राप्ति के उपलक्ष्य में बादशाह ने श्रद्धेय पं. रघुनन्दन झा जी को मिथिला राज्य के 58 परगनों का राज्य दान दिया था। पं. रघुनन्दन झा ने बालकाल में महामहिम पं. महेश ठाकुर से विद्या प्राप्त की थी। पं. रघुनन्दन झा ने आग्रह कर गुरु को मिथिला राज्य का शासक बनाया। महामहोपध्याय पं. महेश ठाकुर ने मिथिला का शासन पुनः सभाँला।

ठाकुर वंश के बाद के शासकों का विवरण

महामहो श्री महेश ठाकुर के शासन के बाद उनके पुत्र गोपाल ठाकुर ने मिथिला का शासन सन् 1569 से 1581 तक सभाँला। श्री गोपाल ठाकुर का शरीरान्त होंने पर इनके छोटे भाई श्रीमान शुभंकर ठाकुर शासक वने वाद इनके पुत्र पुरुपोत्तम ठाकुर ने मिथिला का शासन सन् 1617 से 1623 तक किया। शांतिपूर्वक शासन कर स्वर्गलोक सिधारे। वाद इनके भाई नारायण ठाकुर हुए।

श्रीमान नारायण ठाकुर – श्रीमान पुरुपोत्तम ठाकुर के सौतेल भाई थे। इनने सन् 1623 से 1641 तक शासन सभाँला और अपने शौर्य से प्रजा का हृदय जीता। धर्म कार्य में रुचि शिक्षा क्षेत्र में संस्कृत भाषा का प्रसार किया। अन्त समय में सुरपुर वासी हुए। इनके वाद इनसे छोटे सुन्दर सिंह गद्दी पर बैठे।

श्रीमान सुन्दर सिंह ठाकुर – श्री नारायण ठाकुर के शासनोपरान्त छोटे भाई श्री सुन्दर सिंह ठाकुर ने

मिथिला राजधानी की गद्दी का कार्यभार सन् 1641 से 1668 तक संभाला। ये कुशल शासक सिद्ध हुए। बाद उनके ही पुत्र श्री महीनाथ ठाकुर शासन के उत्तराधिकारी हुए।

श्रीमान महीनाथ ठाकुर – इन्होंने मिथिला की गद्दी सन् 1668 से सभाँली और 1690 तक शासन किया। अपने शासन समय में म्लेच्छों से कई बाद युद्ध हुए। युद्ध में श्री प्राप्त की ये वीर, योद्धा और कुशल शासक थे। ये स्वर्गवासी हुए।

श्रीमान नरपति ठाकुर – श्री महीनाथ ठाकुर की मृत्यु के बाद उनके छोटे भाई नरपति ठाकुर गद्दी पर आसीन हुए। इन्होंने 1690 से 1701 तक शासन किया। श्री नरपति ठाकुर ने अपने शासन काल में अद्‌भुत कार्य किये।

1. आपने स्वयं के विश्राम के लिए 'रहिका' नामक ग्राम में एक 'शांति भवन' बनवाया जो बहुत ही अजब तरीका का स्वर्ग मानिन्द भवन निर्मित है। जो आज भी देखने को मिलता है।

2. साहितिक प्रेमी होने के नाते साहित्य को बढ़ावा दिया।

3. उसी रहिका नामक ग्राम में अपनी प्राण प्रिये पत्नी 'उर्वशी' ठकुराइन के लिए पत्नी के नाम से एक मन्दिर का भी निर्माण कराया। जो 'उर्वशीश्वर' नाम से प्रसिद्ध है। जिसका जीर्णोद्धार श्रीमान महाराजा कामेश्वर सिंह ने अपने शासन काल में कराया ।

4. श्रीमान नरपति ठाकुर ने अपनी राजधानी 'भोंरा' नामक ग्राम में बनाई थी। जो कि मिथिला का शासन भोंरा राजधानी से ही देखा। अपने शासन काल में तुर्कों से अनेकों लड़ाईयां लड़ीं और आपने विजय प्राप्त की । ठाकुर ने अपनी बल और वीरता का परिचय सूर्य की तरह इतिहास में ज्योतिर्मान किया। शासन करते–करते शरीरान्त हुआ। बाद इनके बड़े बेटे राघवसिंह गद्दी पर बैठे।

महाराजा राघवसिंह – अपने प्रतापी पिता के समान ही श्री राजा राघव सिंह प्रतापी राजा सिद्ध हुए। इन्होंने मिथिला का शासन सन् 1701 से 1739 तक किया।

नोट – मैथिल ब्राह्मण वंश में महामहिम श्री महेश ठाकुर को 58 परगने का राज मिथिला राज्य में उनकी विद्धानता पर प्रसन्न होकर अकबर बादशाह ने दान में दिये थे। जिस 58 परगनों के राज्य पर ठाकुर वंश ब्राह्मणों का शासन काल सन् 1556 से 1701 तक रहा। जिसमें ठाकुर वंशी आठ ब्राह्मण शासक हुए, जिन्होंने मिथिला का शासन किया। इसके बाद इसी वंश के राजा राघवसिंह ने अपने बल और पौरुष से व अपने व्यवहारस्वरूप मुसलमान शासक 'नबाब अलीवर्दी खांन' से सम्पूर्ण मिथिला राज्य स्वतन्त्र करा लिया। मिथिला राज्य स्वतन्त्र घोषित होंने पर नबाब अलीवर्दी खांन ने ठाकुर की उपाधि हटाकर 'सिंह' की उपाधि से अलंकृत किया। मैथिल ब्राह्मण वंश के राजाओं के नामों के अन्त में 'सिंह' शब्द लगाया गया।

राजा राघवसिंह – इस मैथिल ब्राह्मण वंश में सिंह उपाधि से अलंकृत हुए और नाम के अन्त में सिंह उपाधि लगी। राजा राघवसिंह ने भौंरा गाँव में अपने नाम से राजधानी स्थापित की तथा नाम से ही एक भव्य मन्दिर का निर्माण कराया। जिसका नाम 'राघवेश्वर शिव मन्दिर' रखा। इस प्रसिद्ध शिव मन्दिर का स्मृति चिन्ह आज भी दृष्टि आता है। अपनी रानी कान्ता व रानी प्रिया के नामें से भी भौंरा में अलग-अलग दो मन्दिर निर्माण कराये। जिनका नाम 'राघव प्रियेश्वरी शिव मन्दिर' तथा दूसरा 'कनका' नामक गाँव में 'राघव कान्तेश्वरी शिव मन्दिर' के नाम से बनवाया।

मिथिला रचित – 'राघव कीर्तिशतक' नामक पुस्तक में इनका पूर्ण परिचय व शासन काल का वर्णन दिया है। राजा राघवसिंह ने 38 वर्ष शासन किया, प्रजा सुखी व सन्तुष्ट रखी ब्राह्मण जनों का आदर सम्मान और विद्या प्रसार किया। सन् 1739 में स्वर्गवासी हो गये। इनके बाद बड़े बेटे विष्णु सिंह ने शासन सत्ता संभाली।

राजा विष्णुसिंह – पिता की मृत्यु के बाद विष्णुसिंह ने मिथिला के शासन सत्ता की बागडोर अपने हाथों में ले ली। सन् 1739 में राजा का युद्ध शुरूआत से जारी रहा इस प्रकार म्लेच्छों से 4 वर्ष संग्राम समय बीता। अन्त में रणभूमि में वीरगति को प्राप्त किया। यह समय सन् 1743 ई. का था। बाद इनके छोटे भाई नरेन्द्र सिंह ने मिथिला राज्य की बागडोर सभौंली।

राजा नरेन्द्र सिंह – इनने सन् 1743 में गद्दी ग्रहण की म्लेच्छों से युद्ध जारी रहा। अन्त में विजय श्री प्राप्त की। शारीरिक रोगग्रस्त होंने के कारण सन् 1760 में स्वर्गवासी हो गया। इनके कोई सन्तान नहीं थी।

माननीय राजा प्रताप सिंह – ये राजा नरेन्द्र सिंह के चचेरे भाई थे। इनके पिता का नाम श्री एकनाथ ठाकुर था। ये राजा नरेन्द्र सिंह ने गोद रख लिए थे। यही मिथिला राजसिंहासन पर बैठे। इन्होंने सन् 1760 ई. से 1775 ई. तक शासन किया। हृदय गति रुक जाने से प्राणान्त हो गया। अपने शासन काल में संघर्ष करते हुए भी धर्म प्रतिष्ठा की ओर ध्यानाकर्षण रहे।

राजा प्रताप सिंह जी के सौतेले भाई ने मरणोपरान्त मिथिला की गद्दी सभौंली इन सौतेले भाई का नाम माधवसिंह था।

महाराज माधवसिंह – इन्होंने सन् 1775 में शासन की बागडोर अपने हाथों में लेते हुए, ब्रिटिश शासन से टकराव हो गया। इस समय देश में चारों तरफ अंग्रेजी शासन फैल रहा था। राजा माधव सिंह ने कालगति को देखते हुए, अपने बुद्धि बल से पड़ोस के अंग्रेज गवर्नर शासकों को कुछ कर देकर राज्य को स्वतन्त्र रखा, और भौंरा से राजधानी हटाकर 'दरभंगा' ले आये। इन्होंने सौराठ नामक गाँव में एक 'माध्वेश्वर' नामक शिवालय का निर्माण कराया। जो आज मधुवनी जिला के अन्तर्गत यह मन्दिर गाँव सौराठ में स्थित है। महाराज ने अपनी माता 'गंगावती' के नाम से 'लोइरीपट्टी नामक गाँव में 'गंगावतीश्वर' एक भव्य शिव मन्दिर का निर्माण कराया था तथा अपनी रानी माधवी के नाम से अल्लापुर गाँव में

'माधवीश्वर शिव मन्दिर' के नाम से मन्दिर की स्थापना कराई थी। ये तीनों मन्दिर मधुबनी जिला में स्थित हैं। अपनी पुत्री के नाम से लालगंज में 'पुण्यवतीश्वर' नाम से मन्दिर बनवाया। जिन्हें देखने और दर्शनों के लिए आज भी हजारों की जनभीड़ प्रतिदिन एकत्रित होती है। महाराज माधवसिंह ने सन् 1807 में काशी में अषाढ़ माह द्वादशी के दिन देह त्याग कर दिया। राजा के स्वर्गवासी होने के पश्चात बड़े बेटे श्री क्षत्रसिंह ने शासन सत्ता सभाँली।

महाराज क्षत्रसिंह – राजा माधवसिंह की मृत्यु के पश्चात पुत्र क्षत्रसिंह ने मिथिला गद्दी का शासन सन् 1807 में सभाँला। अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते हुए कुशल राजनीति की। आर्थिक स्थिति मजबूत करते हुए कला, साहित्य, धार्मिक तथा कानून क्षेत्र में सराहनीय सुधार कार्य किये।

अनेकों विद्यालय स्थापति किये, मन्दिर आदि के निर्माण और अपने पिताश्री के अधूरे कार्य पूर्ण किये। धर्मशाला आदि के निर्माण कार्य किये। इसी दौरान राजा के सराहनीय कार्यों को दृष्टिगत कर अंग्रेजी शासक लार्ड मार्किसस हेस्टिंगस लाट साहेब ने महाराज की उपाधि से अलंकृत किया। महाराज क्षत्रसिंह ने 'दरभंगा हवेली' में एक 'क्षत्रसिन्धेश्वरी देवी' के मन्दिर का निर्माण कराया तथा अहिल्या गौतम स्थान में श्री राम मन्दिर का निर्माण व ननोर में भी श्री राम मन्दिर बनवाया। अन्त में सन् 1839 में देह त्याग विष्णुलोक पधारे। महाराज क्षत्रसिंह की मृत्यु उपरान्त ज्येष्ठ पुत्र रुद्रसिंह मिथिला राजसिंहासन पर आरूढ़ हुए। नामों से पहले महाराज शब्दों से सुसोभित हुए।

महाराज रुद्रसिंह – सन् 1839 में शासन की कमान अपने हाथ में सभाँली। अपने शासन काल में महाराज ने संस्कृत विद्या का अधिक प्रसार किया, साहित्य प्रेमी थे।

रुद्रसिंह ने समस्तीपुर रेलवे स्टेशन के पास नागरवस्ती में महारानी रुद्रलता के नाम से रुद्रलतेश्वर मन्दिर जिसमें शिव की प्रतिमा स्थापित की तथा दूसरी रानी रुद्रप्रिया के नाम से दरभंगा में राधाकृष्ण मन्दिर तथा बह्या पिपराघाट पर रुद्रप्रियेश्वर मन्दिर का निर्माण कराया। सन् 1850 में फाल्गुन चतुर्दशी के दिन 'माधवेश्वर' शिव मन्दिर में जाकर शरीर शांति प्राप्त की। ततपश्चात ज्येष्ठ पुत्र महाराज महेश्वर सिंह मिथिला शासन के शासक बने। महाराज ने भी अपने पूर्वजों की भाँति सराहनीय कार्य किये।

महाराज महेश्वर सिंह तीर्थों में भ्रमण के लिए जा रहे थे, कि एकाएक सकरोहड़ नामक स्थान पर अश्वनी माह शुक्ल पक्ष अष्टमी रविवार के दिन सन् 1860 में बीमारी की हालत में परलोक सिधार गये। महाराज जी के मरणोपरान्त इनके दो वर्ष के बेटे को शासन का उत्तराधिकारी बनाया परन्तु नाबालिग होंने के कारण शासन का कार्यभार चलाने हेतु मन्त्रियों व परिवारीजनों ने (कोर्ट ऑफ बोर्ड) के बच्चों की कचहरी नियुक्त कर शासन की देख-रेख कराई। युवक होंने पर महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह ने स्वयं अपने हाथों में बागडोर संभाली अपने शासन काल में अनेकों उपलब्धियाँ प्राप्त की। ब्रिटिश शासन द्वारा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह को जे.सी.आई.ई. की उपाधि से सम्मानित किया। साथ ही सन् 1897 ई. में ब्रिटिश

गवर्नमेन्ट द्वारा बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया। इनके शासन काल में मिथिला राज्य उन्नति के मार्ग पर रहा। 'महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह' बहादुर, जे.सी.आई.ई. सन् 1898 में परलोक गये। इन्होंने 3 वर्ष शासन किया।

महाराज जी की मृत्यु के बाद उनके छोटे भाई रामेश्वर सिंह जी शासन सत्ता के शासक बने।

हिजहाइनेंस महाराज श्री 5 रामेश्वर सिह जी - मिथिला राजसिंहासन पर महाराज आसीन हुए, यह दिन समस्त मिथिल विप्रों का गर्व का दिन था। दिनों -- 20.12.1898 दरभंगा राज्य शासन में स्वर्ण अक्षरों से अंकित माना जाता है। क्योंकि इस दिन बंगाल, बिहार प्रान्त में इस दिन मन्दिरों में मूर्तियों को वस्त्र, आभूषण, फूल मालाओं से सजाकर झाँकियों की प्रथा महाराज जी ने प्रारम्भ कराई थी। वह प्रथा आज भी जीवित है। महाराज जी की वीरता व कार्य कुशलता से प्रसन्न होकर अंग्रेजी हुकूमत के दौरान अंग्रेज लेफ्टिनेंट सन जॉन ओडवर्न ने महाराज श्री 5 की उपाधि देकर सम्मानित किया था। साथ के.सी.आई. की उपाधि भी दी। अपनी पत्नी सहित भारत आये उसी समय महाराज श्री 5 रामेश्वर सिंह को कलकत्ता में स्वागत समारोह उत्सव के समय सभा का अध्यक्ष पद देकर सम्मानित किया, और वंश परंपरागत मान अंग्रेज जार्ज प्रिंस ऑफ वेल्सद्ध ने स्थाई माहराजा की पदवी की वंश उपाधि दी। बंगाल, उड़ीसा की लेफ्टिनेंट गवर्नर कमेटी के सदस्य रहे थे। सन् 1909 में ब्रिटिश सरकार द्वारा फर्स्ट क्लास 'केसरी हिन्द' की उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1915 में जी.सी.आई.ई. की व 1918 में ब्रिटिश सरकार द्वारा ही के. वी.ई की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा की ओर महाराज जी का बहुत प्रेम था। काशी विश्वविद्यालय के भवन निर्माण के लिए 5 लाख रु. दान में दिये। आजीवन उस छात्रावास में रह रहे विद्यार्थियों के भोजन व्यय का खर्च वहन किया। धार्मिक प्रवृति होंने के नाते महाराज जी को 'धर्म रत्नाकर' की उपाधि से अलंकृत किया गया। महाराज जी का शासन काल भारत के इतिहास में अमर है। इनके शासन से प्रेरणा का स्रोत प्राप्त होता है। संसार में यश प्राप्त कर सन् 1929 में स्वर्गलोक सिधारे। बाद श्री 5 रामेश्वर सिंह के बडे पुत्र कामेश्वर सिंह ने मिथिला की राजगद्दी संभाली।

महाराजाधिराज डा. सर कामेश्वर सिंह जी के.सी.आई.ई.एल.एल.डी.डी.लिट.।

महाराज कामेश्वर सिंह 15 जुलाई सन् 1929 को मिथिला के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुए। ये दरभंगा राज्य कामेश्वर सिंह ने अपने नेत्रों की पुतली के समान पवित्र और स्वच्छ समझ कर पालन किया। राजसिंहासन ग्रहण करने के समय इनकी उम्र मात्र 22 वर्ष की थी। महाराज अपने छोटे भाई विश्वेसर सिंह जी को बहुत प्यार करते थे। दोनों भाईयों ने एक साथ शिक्षा ग्रहण की, साथ यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। इतना अधिक प्यार था, कि दरभंगा राज्य का एक भाग की देख-रेख की व्यवस्था अपने छोटे भाई विश्वेसर सिंह को सौंप दी। राजनगर क्षेत्र से आमदनी उस समय एक वर्ष में मात्र सात लाख होती थी। अंग्रेजी शासन में महाराजधिराज का अधिक सम्मान करते थे। उनकी योग्यता और कार्य कुशलता पर हर अंग्रेज गवर्नर

इज्जत करता था। प्रथम गोलमेज कान्फ्रेंस में भारत से चुनकर प्रतिनिध बनकर लन्दन गये थे। 1942 के आन्दोलन में सर कामेश्वर सिंह ने खुलकर भाग लिया। डा. राजेन्द्र प्रसाद व महात्मा गांधी के महाराज जी दाहिने हाथ थे। इनका विद्या के प्रति अगाध प्रेम था, मैथिली भाषा में शोध करने के लिए उन्होंने एक 'मैथिली रिसर्च इन्स्टीट्यूट' नाम की संस्था की स्थापना की और संचालन भी किया। इस व्यवस्था के लिए उन्होंने एक लाख बीस हजार रुपये दान में दिये। बनारस विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए एक लाख पचास हजार रुपये दान में भेंट किये।

'बिहार संस्कृत आर्गेनइजेशन' कमेटी के आजीवन अध्यक्ष रहे। पटना विश्वविद्यालय की स्थापना महाराज जी ने स्वयं की थी। जो गंगा तट पर निजी भवन 'दरभंगा हाउस' के पास दृष्टिगत किया जा सकता है।

महाराज कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय आज भी उनके दरभंगा राजमहल के एक भाग में चल रहा है, तथा काशी, बनारस दोनों के प्रोचांसलर रहे। महाराजा कामेश्वरसिंह ने ही अजादी के बाद ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण महासम्मेलनों में दरभंगा से पंजीकार साथ लेकर भाग लिया, और ब्रजस्थ व आस–पास बसे प्रवासी मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था को सुधार करते हुए मैथिल प्रवासियों को नवजीवन प्रदान - किया। मथुरा, अलीगढ़, आगरा, अजमेर, झाँसी आदि आदि स्थानों पर सम्मेलन कर मैथिल ब्राह्मण वंश की गोत्र व्यवस्था कर पंजी कराई। यह कठिन परिश्रम महाराजाधिराज ने सन् 1954 में मथुरा, आगरा आगमन किया। और मैथिल सम्मेन में अध्यक्ष पद प्राप्त किया।

अंग्रेजी हुकुमत समाप्त होंने के बाद सन् 1947 में भारत का संविधान लागू हुआ। जमीदारों की जमीदारी समस्त राजाओं की राजधानी भारत सरकार के अधीन हुई। राज अधिकार समाप्त कर दिये गये, और स्टेट असेम्बली बना दी। महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह जी के कोई सन्तान नहीं थी। इसलिये उन्होंने मृत्यु से पूर्व दरभंगा की व्यवस्था सभाँलने हेतु पटना हाईकोर्ट के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्रीमान पं. लक्ष्मीकान्त झा के नाम वसीयत कर दी। उनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति की उचित व्यवस्था झा जी ने जीवन पर्यन्त की झा जी के बाद फिर महारानी जी ने स्वयं व्यवस्था सभाँली। महाराज जी का 1 अक्टूबर सन् 1962 को देह त्याग हो गया। इति । महाराज विश्वेश्वर सिंह के पुत्र सुभेश्वर सिंह व छोटी महारानी महाराज कामेश्वर सिंह की कामेश्वरी देवी आज तक वर्तमान सन् 2062 में मोजूद हैं।

मिथिला के मैथिल वंशी ब्राह्मण राजाओं का इतिहास संक्षेप में काव्यरूप में वर्णन किया है।

'महिमा'

सत्य अहिंसा परम पुजारी, मिथिला देश निहारा है।
त्याग अलौकिक जगत प्रसारित, धर्म, कर्म ही प्यारा है॥
ये पारस मणि सी धरणिं मनोहर, सारा विश्व उबारा है।

उपकारी नर कर्मठ बन भूमि भार उतारा है॥

हैं भिन्न-भिन्न जलवायु वहाँ, अति परम पावनी सुखदाई।
यह भूमण्डल में विदित शिरोमणि, मिथिला भू ग्रन्थनु गाई ॥
धर्म धुरंधर मिथिला ज्ञानी, यहाँ प्रगटें पंडित मुनिराई।
वसुधैव कुटुम्बकम् सत्य-सत्य मिथि परम पावनी छवि छाई ॥

वेदशास्त्र पारंगत ज्योतिष, महा वेदान्ती ज्ञानी ध्यानी।
न्याय नीति व्याकरण विभूषण, तन्त्र शास्त्र के विज्ञानी ॥
आयुर्वेद संजीवन दाता इतिहास पुराणों ने मानी।
कर्म योग कर्मठ धर्मी अवतीर्ण हुए मिथि रजधानी ॥

अवतंस हंस हिमगिरी उत्तर, दक्षिण श्री गंगे महारानी।
पूरब दिशि में बहे कौशिकी पश्चिम दिशि गंडक पानी॥
बिहार प्रान्त उत्तर दिशि में वहाँ मानचित्र मिथिला मानी।
चन्दन रजसी चन्द्र चन्द्रिका, है पूर्वज जननी जग जानी॥

है तीस हजार क्षेत्रफल धरणी वर्ग मील में बतलाई।
गंगाजी से सोलह योजन, हिमगिर तक है चौड़ाई॥
है कोसी में सीमा 'तिरहुत' नदी गंडकी ठहराई।
मधु योजन धन वेद गणित कर मिथिला जी की लम्बाई॥

है दरभंगा रम्य पुरनिया, शुभग मुजफ्फरपुर मानी ।
मुंगेर जिले छः भागलपुर चम्पारन पावन भूमि जानी॥
नैपाल की निकट तराई में है सघन बसावट रसखानी ।
सोहे नगरी स्वर्ग सरिस सी, दरभंगा है राजधानी ॥

मिथिला मैथिल अर्थात मैथिली, मिथिला रज पावन पाई।
कवि योगी मुनि भक्त शिरोमणि प्रकटे ज्ञानी ऋषि राई ॥
अत्रि, अंगिरा, पुलह, प्रचेता जी वेदन की महिमा गाई।
'याज्ञवल्क्य' विज्ञान विशारद, ध्वजा मैथिली फहराई॥

मैथिल वंश प्रभाकर मण्डित मुनि जमदग्नि परम ज्ञानी।
वामदेव पातान्जलि योगी शृंगी ऋषि मण्डल मानी॥
धौम्य भृगु उद्दालक देवल, मुद्गल मुनि विद्या खानी।

भारद्वाज गौतम जी रजकर कात्यायन पिंगल बानी॥

उस पुण्य भूमि में त्यागी अवतर जग में अमर कहानी है।
वैदिक धर्मपरायण मुनिवर धर्म ध्वजा फहरानी है॥
मुनिवर उदयाचार्य शिरोमणि, मीमांसक जग विख्याता।
वेदांत काव्य ज्योतिष वैद्यक इसी मही की निधि त्राता॥

इसी वंश में दधीचि दानीउपकारी तन पाया था।
कौन याचना सुरपति आकर अपना प्रांण गमाया था॥
ऋषि अस्थि से वज्र बनाकर, निशिचर मान गिराया था।
त्याग निराला किया हर्ष कर देवन का कष्ट मिटाया था॥

'मिथिलेश्वर' महाराज शिरोमणि श्री जनक जी ब्रह्म ज्ञानी ।
'राजर्षि वैदेह' सनमानित, वेदान्ती विद्या खानी ॥
दरबार सुसोभित गुण निधि कर महि मण्डल पंडित मानी।
धरा गगन में गूँजे अब तक, आध्यात्मिक सरला बानी॥

विदुषी गार्गी मैथिल वंशज देवी सी अवतारी थी।
भये मुनिश्वर चकित प्रभा से सभा पराभव सारी थी॥
मण्डन मिश्र पराजित होकर, शंकर विजय सुखारी थी।
सास्त्रार्थ किया सती सरस्वती, ज्योति छिपी ब्रह्मचारी थी॥

सिद्धि कवि भवभूति विभूषण, हर्षनाथ वाच पाणिन ज्ञानी।
मुनि चांणक्य सुनीति विशारद, महारथी मैथिल मानी॥
मक्खन मिश्र, उमापति कीरति, घर-घर में गावें प्रांणी।
बिन देखें घटना काव्य करें, विद्यापति विद्या खानी ॥

प्रिय सज्जनों तर्ज में मैंने संक्षिप्त वर्णन मिथिला भूमि तथा उस रज में उत्पन्न हुए विशिष्ट विद्वान व उन मनीषियों का वर्णन किया है। जो कभी भी किसी भी युग में भुलाये नहीं जा सकते, तथा मिथिला भूमि का वर्णन भी कुछ आंशिक रूप में तर्ज ही में प्रस्तुत किया है।

जब राजा निमि ने शरीर त्यागि दिया तब राजा 'जनक' संज्ञा या मिथि संज्ञा से प्रकट हुए और यज्ञ सम्पूर्ण हुई उस समय राजा जनक या मिथिलेश ने विद्वान ब्राह्मणों के स्वयं को वंश कर्त्ता मानते हुए जो दान दिये, और कहा है, कि मैं आपके द्वारा ही उत्पन्न किया हुआ हूँ लिहाजा आपका ही वंशज कहलाऊँगा। इसी नाम के द्वारा मिथिलापुरी बसाई गई। वंश प्रमाण रामायण वाल्मीकि और भागवत पुराण तथा

विष्णुपुराण।

पं. जगन्नाथ मिश्र का काव्य

आनन्द अमित ग्रामादिक दे, संन्तुष्ट किये मिथिला वासी।
सर्वे ब्राह्मण महि मण्डल में भये मैथिल विप्र प्रकाशी॥
कर्म काण्ड रत धर्म धुरंधर, वेद विशारद विज्ञानी।
यज्ञवल्क्य मुनि सभी उपासक, शुक्ल यजुर्वेदी दानी ॥

(अन्य प्रमाण श्री मद्‌भागवत)

तथा अन्य सभी ब्राह्मण वंश 280 के लगभग हैं। उनमें इन मैथिल ब्राह्मणों का इतिहास एक अलग ही विशिष्ट स्थान व चित्त चोरने वाला तथा गौरव का इतिहास है। क्योंकि मिथिला की गद्दी राजा जनक से ब्राह्मण वंश की रही है। और मिथिला राज्य ही एक ऐसा मैथिल ब्राह्मण वंश का राज्य है, जिसमें मैथिल ब्राह्मण वंश के राजा रहे हैं। जो मिथिला की कहावत है। मैथिल ही राजा मैथिली देश, मैथिली फौज, मैथिली भाषा ऐसा अन्य किसी राजा का इतिहास दृष्टि नहीं आया है। जैसा कि मिथिला के मैथिल ब्राह्मण वंशी राजाओं का है। जिसका भी वर्णन इस पुस्तक में संक्षेप रूप में किया है।

याज्ञवल्क्य मुनि और गार्गी विदुषी

एक समय महाराज जनक ने एक महायज्ञ का आयोजन किया, जिसमें दूर-दूर देशों से ऋषि मुनि और विद्वान ब्राह्मण जन पधारे। यह महायज्ञ दीर्घकाल तक चला, वेद रिचाओं तथा स्वाहों की गूँज आकाश मण्डल में हलचल मचा रही थी। ब्रह्मज्ञानियों का यज्ञोपरान्त तर्क संग हुआ। इस यज्ञ में जो शास्त्रार्थ हुआ इसमें विजयी विद्वान के लिए एक हजार एक गऊ बछड़ों वाली दूध की स्वर्ण मढ़ित जिनके सींग थे। जवाहरात जड़ित जिनके ऊपर झूलें पड़ी थीं, ऐसी गऊ राजा जनक ने सजवाकर सभा समक्ष प्रस्तुत की। शास्त्रार्थ हुआ उस शास्त्रार्थ में अच्छे-अच्छे विद्वान थे, उधर दूसरी तरफ यज्ञवल्क्य मुनि और उनके विद्वान शिष्य साथ थे। जब राजा जनक ने कहा कि जो विद्वान शास्त्रार्थ में विजयी होगा वही इन गऊओं को लेने का अधिकारी होगा। यह सुन सभी विद्वान एक-दूसरे के मुँह को ताकने लगे, झट से यज्ञवल्क्य मुनि खड़े हुए, और शिष्यों से कहा कि इन सभी गऊओं को आश्रम के लिए हाँक ले जाओ, हमें गऊओं की आवश्यकता है। कोई भी विद्वान इसमें शास्त्रार्थ करे प्रश्नों के उत्तर हम देंगे अन्य मुनियों ने गार्गी को खड़ा कर दिया। गार्गी ने शास्त्रार्थ किया मुनि के प्रश्नों का उत्तर दिया, विद्वान जन पराजित हुए यज्ञवल्क्य मुनि भी पराजित हुए, गार्गी मिथिला माता ने मुनि को उदास देख कहा, मुनि मुझे गऊएँ नहीं चाहिए, आप अपनी गऊएँ ले जायें। यह देख मुनि व सारी सभा चकित हो गई। गार्गी ने सम्मान सहित यज्ञवल्क्य ऋषि को गऊएँ

देकर त्याग का महान स्थान तथा मिथिला के मैथिल ब्राह्मणों का गौरव महान किया, जो स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। राजा जनक ने उन यज्ञवल्क्य शिष्यों को तथा अन्य विद्वान ब्राह्मणों को स्वर्ण मुद्रा तथा ग्रामादि दान में दिये और अपने राज्य के अन्तर्गत बसाया। ऐसे विद्वान ब्राह्मणों की संख्या 1269 बताई जाती है। जो मिथिलान्चल में बसाये और उनको मैथिल ब्राह्मणों की संज्ञा दी वह मैथिल ब्राह्मण वंश के ब्राह्मण यज्ञवल्क्य पूजक श्रेष्ठ मैथिल ब्राह्मण माने जाते हैं।

'मण्डन मिश्र'

प्रिय बन्धुओं मिथिलान्चल की भूमि के अन्तर्गत महान पुरुष विद्वान ही नहीं उत्पन्न हुए हैं, बल्कि मिथिला भूमि में नारी जाति भी सती शिरोमणि विद्वान ब्राह्मणी उत्पन्न हुई, और उत्पन्न होती हैं। जैसे सीता माता हुई वैसे ही गार्गी, सती सरस्वती हुई, जो कि मण्डन मिश्र की पत्नी थीं। अब मैं मण्डन मिश्र जी के बारे में वर्णन करता हूँ मण्डन मिश्र जी का जन्म भागलपुर जिले में महिष्मती नामक गाँव में हुआ। जो मिथिलान्चल देश में है इसी गाँव को आजकल महिषी गाँव कहते हैं।

इसी गाँव में मिश्र जी का जन्म हुआ, मिश्र जी चारों वेदों के श्रेष्ठ ज्ञाता तथा सभी शास्त्रों के धुरंधर विद्वान थे। इनके बारे में जो विशेषता ग्रन्थों में लिखी हैं, उसे प्रस्तुत करूँगा इससे पहले ये बता देना चाहता हूँ, कि इनकी धर्मपत्नी सरस्वती नाम की श्री मण्डन मिश्र से भी योग्य विद्वान थीं। जिनके बारे में आगे लिखा हैं, अब श्री मिश्र के बारे में प्रस्तुत है। कि इनसें एक शंकराचार्य ब्रह्मचारी नाम के स्वामी जी सास्त्रार्थ करने कालपी गाँव से केरल से मिश्र जी के पास आये। इन स्वामी शंकरचार्य ब्रह्मचारी ने सभी देशों के विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया था। इसी कारण यह मण्डन मिश्र जी को सास्त्रार्थ में पराजित करने के लिए मिश्र जी के पास आये, क्योंकि इन मिश्र जी की विद्वानता का चारों तरफ शोर था। स्वामी जी जब मिश्र जी के गाँव महिषी पहुँचे तो गाँव के बाहर एक कुँए पर पानी भरती पनिहारियों से मिश्र जी के घर को पूछा, तब पनिहारियनों ने हँस-हँस कर स्वामी जी को बताया।

श्लोक – 1. स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं कीरांङ्गना यत्र गिरं गिरन्ति।
2. द्वादस्थ नीडान्तर सनिरुद्धा जानी हि तन्मंण्डन मिश्र तौकः ॥
3. फलप्रदं कर्म्मफल प्रदाज्जः कीरांङ्गना यत्र गिरं गिरन्ति।
4. द्वादस्थ नीडान्तर सनिरुद्धा-जानी हि तन्मंडन मिश्र तौकः॥
5. जगद ध्रुवं स्या जगद् ध्रुव स्यात्कीरांङ्गना यत्रगिर गिरन्ति ॥
6. शिष्यरसंख्यैरपि गीयमान अवैहितन्मण्डन मिश्र तौकः ।

अर्थ – अरे ओ रास्तागीरो मण्डन मिश्र का घर पूछ रहे हो। उसके बारे में तो सारे संसार को विदित है, कि मिश्र के घर के दरवाजे पर दोनों तरफ तोतों के पिंजड़े टंगे हुए हैं। तथा उनमें रहने वाले तोते और मैंना आपस में मनुष्य बोली में मधुर आवाज से युक्त वेदान्त विषय पर प्रश्न उत्तर करते हुए शास्त्रार्थ करते

रहते हैं। और बड़ा ही मनमोहने वाला उनका वो भवन है। सीधे चले जाओ किसी से भी पूछने की जरूरत नहीं है। जो हमने बताया है वैसा जो घर मिले वही घर मण्डन मिश्र का है। और सुनो वहीं दरवाजे पर मिश्र जी मिलेंगे, उनके पास सेवा में उनकी सती शिरोमणि श्रेष्ठ पत्नी सरस्वती मिश्र मिलेंगी। यह सुनि स्वामी शंकराचार्य जी अपनी शिष्य मण्डली सहित आगे चल दिये और महिषी नगरी को निहारा एक घर पर तोता और मैंना उसी प्रकार शास्त्रार्थ करते हुए पिंजड़ों में पाये। स्वामी जी ने सोचा कि यही घर मण्डन मिश्र का हो सकता है, आगे देखा कि एक स्त्री एक पुरुष के पास बैठकर पैर पलोट रही है। तब पक्का जान स्वामी जी तथा सभी शिष्य मण्डल ने मिश्र जी को दण्डवत किया। मिश्र जी ने यथा योग्य सभी को आसन दिया। तत्पश्चात भोजन की व्यवस्था कराकर सभी का अभिवादन किया। स्वामी जी ने अपना स्वयं परिचय दिया, और कहा कि शास्त्रार्थ में मैंने दिग्विजय का विचार बनाया है। सुनकर आपके भी पास शास्त्रार्थ करने आया हूँ। अगर आपको मैं पराजित कर देता हूँ तो मेरी दिग्विजय सम्पूर्ण हो जायेगी। यह सुन ज्ञान शिरोमणि शारदा देवी दर्शन ज्ञानी सरस्वती ने कहा कि अब तो काफी समय रात्री का हो गया है। आप आराम से आसन ग्रहण कर शयन कीजिए सुबह आपकी इच्छा पूर्ण करेंगे और मिश्र जी से पहले तो मैं स्वयं आपसे शास्त्रार्थ करुँगी, जब मैं पराजित हो जाऊँ तो फिर मिश्र जी से करना जी। यह सुनि स्वामी जी ने अपने शिष्यों सहित शयन किया। सुबह होते ही अपने नित्य कर्मो से मुक्त हो शास्त्रार्थ हुआ बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित हुई, जब पहले सती सरस्वती ने स्वामी जी से शास्त्रार्थ किया। जिस प्रश्न में कहा कि स्वामी जी 'कामकला का मर्म' विस्तार से वर्णन करिए तथा गरूण को सर्प ग्रसित कर रहा है, और अँधियार प्रकाश को ग्रसित कर रहा है। यह तीनों की व्याख्या विस्तार से समझाइये ऐसा क्यों और क्या कारण है। यह प्रश्न स्वामी जी ने सुना और सुनते ही मौन हो गये, क्योंकि कामकला का विषय सांसारिक भोगों से सम्बन्धित है, इसमें मुझे कोई ज्ञान नहीं, ऐसा कह स्वामी जी ने अपनी हार मान ली और सती शिरोमणि सरस्वती को धन्यवाद देते हुए, कहा कि हे जगत जननी सीता जन्म भूमि मिथिला तू वास्तव में अपार विद्या विद्वानों की खान है, और स्वामी जी ने मण्डन मिश्र को सराहा।

'मैथिल कोकिल कवि विद्यापति'

महाकवि विद्यापति जी ज्योतिष शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे। साथ ही अपनी ज्योतिष व्याख्यान कविता रूप में गाकर करते थे। इनकी दो कड़ी काव्य जगन्नाथ मिश्र की लिखी हुई कहता हूँ।

आँखों से बिन देखी घटना, विद्यापति कविताई थी।
मैथिल कोकिल कविवर भूषण, पदवी जगत सुहाई थी॥

यह ओइनवार मैथिल वंशीय राजाओं में सबसे अधिक प्रतापशाली वीर राजा शिवसिंह हुए थे। जिन्होंने पन्द्रह वर्ष की उम्र से ही राजकाज में हाथ बँटाया था। उनके पिता के शासन काल में ही मुसलमान राजाओं

ने अनेक आक्रमण किये, जिनमें शिवसिंह जी ने बड़ी वीरता से मुँहतोड़ जवाब दिये। पिता देवीसिंह की मृत्यु के बाद स्वयं शिवसिंह राजगद्दी मिथिला के शासक बने। दिल्ली के बादशाह से युद्ध हुआ जिसमें शिवसिंह को कैद होना पड़ा। राजा शिवसिंह के विद्यापति जी परम मित्र और मंत्री भी थे। विद्यापति ठाकुर धर्मशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे। कई भाषाओं का ज्ञान था। इन्होंने अनेकों काव्य पुस्तकें लिखीं। जब राजा शिवसिंह को दिल्ली बादशाह ने कैद कर लिया, तब ये अपने मित्र को कैदि में व्याकुल अपने मित्र को कैद से छुड़ाने के लिए दिल्ली पहुँचे, पहुँचने के कारण एक मैथिल वंशी राजा स्वयं भी मैथिल वंशी ब्राह्मण थे। दूसरे मंत्री और परम मित्र तथा दरभंगा जिला अन्तर्गत ओइनी, 'रम्य' गाँव के स्वयं राजा शिवसिंह भी रहने वाले थे। उसी गाँव के विद्यापति जी थे। उधर बादशाह ने भी विद्यापति जी की ज्योतिष विद्वानता सुन रखी थी। वह भी मिलने का इच्छुक था। इधर कवि विद्यापति अपने कैद हुए राजा शिवसिंह को कैद से छुडाने के लिए दिल्ली बादशाह के दरबार में पहुँचते हैं। और दिल्ली सुल्तान के सामने जाकर कहा और कवि के रूप में परिचय देते हुए निवेदन किया, कि वे अदृष्ट वस्तु का द्रष्ट वस्तु के समान वर्णन कर सकते हैं। सुल्तान ने कवि की परीक्षा लेने के लिए कहा कि अगर आप अद्रष्ट घटना का वर्णन नहीं कर पाये तो शूली की सजा भुगतनी होगी, और अगर सफल वर्णन हुआ तो आपके मित्र को बन्ध से मुक्त कर दूँगा। इस पर कवि विद्यापति राजी हो गये, और सुल्तान ने कवि को एक सन्दूक में बन्द कर दिया तथा अपनी बेगम को नहाने का आदेश दिया। बेगम ने स्नान किया, और अपने वस्त्र आभूषण पहनते हुए केश सुखाये यह कार्य करने के बाद सुल्तान दरबार में जाकर कवि विद्यापति को सन्दूक के अन्दर बन्द कर रखा था, उनको निकालते हुए कहा कि बतलाइये कविवर हमने महलों में क्या कार्य कराया है। तब महाकवि विद्यापति ने महलों में बेगम के स्नान निवृत का छन्दों के रूप में वर्णन किया है उसको नीचे देखें।

छन्द - मैथिली भाषा में

कामिन करए सनामें, हे रति हि हृदय पंचवाने।
चिकुर गरए जलधारा, जनि मुख शशि डर रोअए अंधारा ॥
कुच-कुच चारु चकेवा, निव कुल आन मिलाओत कौन देवा।
ते सकाये भुज पासे, बाँधि धयेल उड़ि जायतअकाशे
तितल वसन तनु लागए, मुनि हुंक मानस मनमथ जागए॥
भनइ विद्यापति गावए, गुनमति धनि पुनमत जन पावए।

किन्तु ऐसे ज्योतिष काव्य से सुल्तान सन्तुष्ट नहीं हुआ, और उसने विद्यापति की कठिन परीक्षा ली। एक सन्दूक में विद्यापति को बन्द करि एक कुँए में सन्दूक को लटका दिया, और सुल्तान ने एक दासी से कुँए के ऊपर आग जलाने के लिए कहा, तथा विद्यापति कार्य का वर्णन करने के लिए कहा गया। इस पर विद्यापति ने इस प्रकार बादशाह को अपनी मैथिली भाषा में काव्य सुनाया।

सुन्दरि निहुरि फुक आगि ।
तौहर कमल भ्रमर मोर देरवल, मदन ऊठल जागि ॥
जों तेहि भामिन भवन जएवह, ऐवह कोनह वेला।
जों ई संकट सजों जी बाँचत होंयत लोचन मेला ॥

इसे सुनकर सुल्तान को विद्यापति जी के ज्योतिष काव्य पर पूरा विश्वास हो गया। और विद्यापति जी की ज्योतिष काव्य पर खुश होकर राजा शिवसिंह जी को मुक्त कर दिया। अपने मित्र के मुक्त होने पर ऊपर के छन्द की इस प्रकार पूर्ति की –

काव्य छन्द – भन विद्यापति चाहथि जे विधि करधि से लीला।
राजा शिवसिंह बन्धन मोचल तरवन सुकवि जीला ॥

इस विद्यापति जी ने अपनी चतुरता तथा ज्योतिष द्वारा शतावधान की पदवी प्राप्त की। शतवधान का अर्थ है, कि जो व्यक्ति सैकड़ों कार्यो को अपनी बुद्धि बल कौशल द्वारा बिना गलती के हल कर सके, दिल्ली में ही विद्यापति का परिचय मलिक वहारुद्दीन नामक गायक से हुआ था, जैसा कि विद्यापति जी ने लिखा है।

विद्यापति कवि रम्यि से गाँव, मलिक वहारुद्दीन वुझई भाव।

राजा शिवसिंह ने प्रसन्न होकर अपने कवि कुलगुरू विद्यापति को 'विसपी' नामक गाँव दान में दिया। जिसका दानपत्र आज भी सुरक्षित है। यह दान पत्र ताँबे के एक पत्र पर खुदा हुआ है। प्रशंसा और दान की तिथि अंकित है।

'ताम्र पत्र'

अव्दे लक्ष्मण सेंन भूपति मते वह्निग्रहद्वयाकिते,
मासि श्रावण संज्ञके मुनि तिथौ पक्षेऽवलक्षे गुरो।
वाग्वत्याः सरितस्तद गजरथे त्याख्या प्रसिद्धे पुरे,
वित्सोत्साहं विवृद्धवाहुपुलकः सभ्याय मध्येसभम् ॥
प्रज्ञावान प्रचुरोर्वर पृथुतराभोग नदीमातृकं,
सारण्यं ससरोवरं च विसपी नामान भासीमतः।
श्री विद्यापति शर्मणे सुकवेय वाणीरसास्वादादि,
वीर श्री शिवसिंह देव नृपति ग्रामि ददे शासनम् ॥

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, विद्यापति की पदावली

(पृष्ठ 22 - 23)

तथा ऊपर के दोनों काव्य रचना डा. श्री उमेश मिश्र की लिखित विद्यापति ठाकुर पृष्ठ 29 - 30 देखें।

श्री मैथिल कोकिल विद्यापति जी ने अपनी ज्योतिष काव्य के द्वारा अनदेखी घटना अपने बुद्धि बल से इस प्रकार वर्णन कर देते थे, मानों आँखों से देखी हुई वर्णन कर रहे हों। संसार में वह यश कीर्ति की अमर ध्वजा फहरा गये। विद्यापति के पिता गणपति ठाकुर महाराज गणेश्वर ठाकुर के सभासद थे। पिता के साथ ही विद्यापति बचपन से ही राजदरबार में आते जाते थे। पंडित हरीमिश्र से शिक्षा ग्रहण की। पक्षधर मिश्र के नाम से विख्यात न्यायिक जयदेव मिश्र विद्यापति के सहपाठी थे। विद्यापति ने धर्म शास्त्र, न्यायशास्त्र आदि अनेकों विषयों पर रचना की। यह मैथिली भाषा व संस्कृत के धुरन्धर विद्वान कवि थे।

संवत् 1613 के विद्वान

अकबर बादशाह के शासन काल 1613 सम्वत में मिथिला के अनेकों ब्राह्मण विद्वान अकबर के राजदरवार में कीर्तिमान थे। जिनमें महामहोपाध्याय महेश ठाकुर ने अकबर से मिथिला का राज्य प्राप्त किया मात्र अपनी विद्वानता के आधारस्वरूप।

इन्हीं के शिष्य रघुनंदन झा ने अकबर बादशाह से अपनी विद्वानता के अनुसार मिथिला का राज्य प्राप्त किया। अकबर शासन में ही सुखपांणि झा ने न्यायशास्त्र में शास्त्रार्थ करने पर बादशाह से बहुतसा धन सम्पत्ति व गाँव दान में लिए और अपने परिवार सहित आगरा ही बस गये।

'डुमरी गाँव के जीवननाथ मिश्र और 'वहटावेनीपट्टी' के शिवराम झा प्रमुख विद्वान थे। राज टोडरमल भी विहार से लौटते समय बहुत से विद्वानों को साथ लाए थे। इन विद्वानों में फुबबरिया गाँव दरभंगा से श्री कान्त मिश्र वहुत प्रसिद्ध विद्वान थे। इन्हीं के साथ ग्रहपाणि झा, दुर्गादत्त झा, वाचस्पति झा तथा पृथ्वोदर झा आदि विद्वान आये थे। इन्हीं विद्वानों में से पं. पुरुषोत्तम झा ने अकबर को हिन्दू धर्म की तरफ आकर्षित किया था। इनके प्रवचन सुनने के लिए अकबर इन्हें महलों में वुला लेता था।

पं. रामचन्द्र मिश्र का लिखा 'हमारा प्रवास' पृष्ठ 6,8,9,11

महेश ठाकुर एक कुशल शासक तो थे ही साथ ही अपने समय के महान विद्वान भी थे। उनके लिखे ग्रन्थ नेपाल में प्राप्त हुए हैं। जिनमें 'सर्वदेश वृतांत संग्रह' तथा 'कुसुमांजली मंजरी' तथा गणेश उपाध्याय की रचना 'तत्व चिन्तामणि' पर लिखी गई 'दर्पण' नामक टीका अति प्रसिद्ध है।

भगीरथ झा - ये भी उसी समय के मनीषी थे। भगीरथ झा एक महान कवि थे। जो राजा मानसिंह के यहाँ आमेर राजदरबार में रहे। 'जार्ज ग्रियर्सन' ने भगीरथ झा के एक प्रसंग में कहा है, कि उनके एक श्लोक पर राजा मानसिंह ने एक लाख रुपये इनाम में दिये। ब्रज प्रवास का आवास होता है, कि 1454-55 ई. सन्

से ही मिथिला से बड़ा प्रवास होना आरम्भ हो गया। पुरुषोत्तम झा अकबर ने 'राय' की पदवी से अलंकृत किया। इसी कारण राय, झा, बख्शी ये तीनों मैथिल ब्राह्मणों के आस्पद हैं।

आइने अकबरी पृष्ठ 596

दार्शनिक देवी मिश्र - अकबर बादशाह को ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अग्नि, सूर्य, राम, कृष्ण आदि प्रमुख देवताओं तथा देवी महामाया की पूजा की विधि बतलाते थे। उन्होंने पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी समझाया था जो मानता था। हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों के अनुवाद भी करते थे। अकबर ने इन्हें 'शतावधान' की उपाधि से अलंकृत किया।

अकबर दरबार के अन्य मैथिल विद्वान -

मधु सरस्वती, मधुसूदन मिश्र, नारायण मिश्र, हरि जी सूर रामभद्र, यदुरूप, बलभद्र मिश्र, वासुदेव मिश्र, भानचन्द्र मिश्र उल्लेख्य विद्वानों ने अन्य मुस्लिम विद्वानों के साथ – जैसे

जैसे - बदायूनी, फैजी, आदि के साथ हिन्दू ग्रन्थ रामायण, महाभारत, नलदमयन्ती पुराण पुरुषोत्तम झा और देवी मिश्र का प्रमाण व रामभद्र उपाध्याय, बलभद्र मिश्र तथा वासुदेव मिश्र व मधुसूदन मिश्र का उल्लेख बदायूनी की कृति 'मुन्तखबउत्तवारीख' में चर्चा की है। नकीब खाँ द्वारा लिखी 'रज्मनामा' में भी उल्लेख किया है। यह कालखण्ड सन् 1530 का था। इस समय मिथिला में ओइनवार वंश का शासन था। बाद छिन्न भिन्न हो गया। 16 वीं शताब्दी में मिथिला से विद्वान अकबर दरबार में अधिक मात्रा में आये, और 12 दिसम्बर सन् 1594 में नल दमयन्ती की कथा का अनुवाद किया। अबुलफजल ने इन लोगों की मदद से फारसी भाषा में लिखा। सौलह सौ बीसवीं के अन्त तक अन्य बादशाहों के राज्य में भी मिथिला से विद्वान आते रहे, और दरबारों में विद्वत्ता कार्य करते रहे। 1658 के बाद औरंगजेब के शासन काल के प्रारम्भ होते ही ब्राह्मणों पर कहर बर्पाना शुरू हो गया और छिप कर भाग कर गाँवों में शरण ली और प्रवास किया। औरंगजेब का शासन काल बड़ा ही क्रूर और अत्याचारी शासन रहा जो समस्त जाति के लिए दुःख दाई रहा। इसी शासन से ब्राह्मण त्रस्त होकर ब्रह्म कर्म त्याग कर अनेकों व्यवसायों में फस गये और छिपकर दिन बिताने लगे।

पुरुषोत्तम झा मथुरा में बस गये, जो कि आज भी झा वाली गली के नाम से प्रसिद्ध है। झा जी मथुरा आ छिपे परन्तु तुर्कों को पता लगने पर पुरुषोत्तम झा को कत्ल कर दिया। आज भी होली गेट के अन्दर पुरुषोत्तम झा वाली गली के नाम से प्रसिद्ध है। यह उच्च श्रेणी के तान्त्रिक विद्वान थे। जिनका कि तान्त्रिक शास्त्र में विद्वत्ता का इतिहास में नाम अंकित है। ये तांत्रिक पंडित मिथिला की पावन मिट्टी से उत्पन्न थे। आज भी प्रवास्य मैथिलों में श्री बैद्यनाथ झा, डा० ओउम प्रकाश मिश्र, श्री त्रिलोक चन्द झा, श्री रूपराम झा कवि, लेखक श्री रामवीर मिश्र आदि कवि विद्वान मौजूद हैं।

'प्रमाणित संकेतक सन्देश'

प्रिय बन्धुओ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तो अलौकिक शक्ति गुरु ही सर्वश्रेष्ठ होता है। गुरु ही शास्त्रों का सच्चा मार्ग दर्शक होता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि जिस ब्राह्मण ने वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से परिपूर्ण पंडित को गर अपना गुरु बनाया है, तो उस ब्राह्मण ने सम्पूर्ण ग्रन्थ, शास्त्रार्थ का रसास्वादन अवश्य ही प्राप्त किया होगा, और जिन ब्राह्मणों ने श्रेष्ठ गुरु की प्राप्ति न पाकर कुछ ग्रन्थों का सहारा लेकर अपनी जीविका अर्जित बना रखा है, और सच्चा ज्ञान वेद शास्त्रों का है नहीं क्योंकि अभी गुरु की ही जब प्राप्ति नहीं हो पाई, तो शास्त्रों का ज्ञान कहाँ से होगा, वेद शास्त्रों का ज्ञान पुस्तक खरीद कर पढ़ने से नहीं होता। क्योंकि पुस्तक तो चाहे जो पैसे वाला खरीद सकता है, और ज्ञानी बन सकता है। नहीं ऐसा नहीं होता जितना गुरु के द्वारा ही ग्रहण होती है, और गुरु भक्ति से ज्ञान वृद्धि होती है, और जहाँ ज्ञान है उसी ब्राह्मण को ब्राह्मणत्व प्राप्त होता है। तथा वही पंडित कहलाने का भागीदार होता है, और वही संसार से मुक्ति प्राप्त करता है। यह मैंने जो ऊपर लिखा है, मेरे आदरणीय ब्राह्मण बन्धुओं थोड़ा कटु है। क्योंकि लिखने में मैं स्वयं डर रहा हूँ परन्तु फिर भी लिखा है। ये कोई द्वेष भावना से नहीं लिखा है। लिखा है तो सिर्फ ब्राह्मणों के रहन सहन, आहार, व्यवहार, और ब्रह्मकर्म से हीन हालातों को देखते हुए लिखा है। बुरा मानने की कोई बात नहीं है, इसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

प्रिय बन्धुओं जो अज्ञानी है, और उन्होंने ग्रन्थ अवलोकन नहीं किया है। वही नाम के ब्राह्मण कह देते है, अरे हम श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं सबसे ऊँचे हैं, और तो सभी ब्राह्मण हम से छोटे हैं। सोचो ये क्या है? सिर्फ ब्राह्मण जाति में दरार, मनमुटाव करने वाली बात है। अरे कौन बड़ा कौन छोटा सभी ब्राह्मण जाति तो एक जाति है, सिर्फ एक स्थान भेदों से भिन्न हो गये। जिसने ब्राह्मणत्व का पालन किया है, वेद वेदाङ्गों का ज्ञाता है, वही श्रेष्ठ कहो या बड़ा ब्राह्मण कहो, जो ब्राह्मण कर्म से हीन है, वही छोटा है। वैसे तो मैं जानता हूँ कि जाति से ब्राह्मण स्वयं बुद्धि जीवि है, परन्तु बगैर शास्त्र ज्ञान तथा कर्मकाण्ड किये बिना और सदाचार रहित ब्राह्मण साथ ही अपनी जाति और वंश का ज्ञान न हो तो शास्त्रमतानुसार वह ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता इसके लिए इसी पुस्तक "ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण" में ब्राह्मण महिमा को पढ़िए।

तुलसीकृत रामायण में गोस्वामी तुलसीदास ने बालकाण्ड पृष्ठ नं 153-154 पर इन चौपाई में ब्राह्मण जाति के बारे में प्रतापभानु राजा से कपटी मुनि ने कहा है।

चौपाई - कह तापस नृप ऐसेइ होऊ, कारन एक कठिन सुनु सोऊ।
कालउ तुअ पद नाइहि सीसा, एक बिप्र कुल छाड़ि महीसा॥

अर्थ - हे राजा। तेरे कहने के अनुसार ही होगा, पर एक बात कठिन है, कि हे राजा! केवल ब्राह्मण

कुल को छोड़कर तेरे चरणों में काल भी शीश नवावेगा क्योंकि

चौपाई - तपवल विप्र सदा वरिआरा, तिन्ह के कोप न कोऊ रखवारा।
जौ विप्रन्ह वस करहुँ नरेसा, तौ तुअ वस विधि विष्णु महेसा ॥

अर्थ - तपबल से ब्राह्मण सदा बलवान रहते हैं। और उनके क्रोध से रक्षा करने वाला कोई नहीं है। अगर तुम ब्राह्मणों को बस में कर लो तो फिर तुम्हारा ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते और सभी फिर आपके अधीन हो जावेंगे। यह तीसरी चौपाई है। 153 पृष्ठ की

चौपाई - चले न ब्रह्म कुल सन वरि आई, सत्य कहहु दोऊ भुजा उठाई ।
विप्र साप बिनु सुनु महिपाला, तोर नाश नहीं कबनेहुँ काला ॥

अर्थ - हे राजन! ब्राह्मण कुल से जोर जबर्दस्ती नहीं चल सकती। मैं दोऊ हाथ उठाकर सत्य कहता हूँ, और हे राजन ब्राह्मणों के श्राप के बगैर तेरा किसी काल में भी नाश नहीं हो सकता ।

चौपाई - सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा, द्विज गुरु कोप कहहुँ को साखा।
राखइ गुरु जो कोप विधाता, गुरु विरोध नहिं कोऊ जग त्राता ॥

अर्थ - प्रताप भानु राज ने कपटी मुनि के पैर पकड़ कर कहा हे मुनिराज! सत्य ही है, ब्राह्मण और गुरू के क्रोध से कहिए कौंन रक्षा कर सकता है, गर ब्रह्मा भी क्रोध करे तो गुरु बचा लेता है परन्तु गुरु से विरोध करने पर कोई भी नहीं बचाने वाला है।

चौपाई - जौ न चलव हम कहैं तुम्हारे, होउ नाश नहिं सोच हमारे ।
एकहि डर डरपति मन मोरा प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा ॥

अर्थ - यदि मैं आपके कहने के अनुसार नहिं चलूँगा तो भले ही मेरा नाश हो जाइ परन्तु मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। मेरा मन तो हे प्रभु केवल एक ही डर से डर रहा है कि ब्राह्मणों का श्राप बड़ा भयानक होता है। प्रिय ब्राह्मण बन्धुओं परमपिता परमेश्वर ने जबकि ब्राह्मणों को इतना बड़ा वरदान दे रखा है। फिर भी आज ब्राह्मणों का भयक्यों नहीं इसका कारण है, कि ब्राह्मण आज अपने कर्म से च्युत हो गया है। अगर अपने ब्राह्मणत्व का सही से पालन करें तो आज भी ब्राह्मण में वही शक्ति विद्यमान है। जब राजा प्रताप भानु का वृतान्त बालकाण्ड दोहा न. 174 पृष्ठ 160 कहा है।

दोहा - भूपति भावी मिटइ नहिं, जदपि न दूषन तोर ।
किये अन्यथा होइ नहिं, विप्रश्राप अति घोर ॥

अर्थ- ब्राह्मणों का दिया श्राप बहुत भी भयानक होता है, यह किसी तरह भी टाले से नहीं टल सकता। परन्तु एक और भी बात मानी जाती है, जो शास्त्र ही सिद्ध करते हैं जो कि विप्र या कहो भूसुर या कहो

द्विज या कहो ब्राह्मणों का भी कोई अपराध नहीं है, जो अपने ब्राह्मण कर्म से आज च्युत होते दृष्टिगत हैं, क्यों कि कालचक्र का भी प्रभाव बड़ा अनूठा होता है। पृष्ठ 168 बालकाण्ड में एक चौपाई सिद्ध करती है, कि जब धर्म की न्यूनता एवम् अधर्म की अधिकता होंने पर नर संहार होता है, उस ऐसे समय का लिखा है।

चौपाई – शुभ आचरन कतहुँ नहि होई, देव विप्र गुरू मान न कोई।
नहिं हरि भगति जग्य तप ग्याना, सपनेहुँ सुनय न वेद पुराना ॥

अर्थ – परन्तु ऐसे समय आने पर तो परमात्मा की दी हुई शक्ति विद्या ज्ञान के द्वारा ब्राह्मण से ही सृष्टि का कल्यान होता आया है। इसलिए वेदों की रक्षा करने का मुख्य कार्य ब्राह्मण का है उसे न विसारिये यही मेरा निवेदन है।

संग सचिव सुचि भूरि भट, भूसुर बर गुरु ग्याति ।
चले मिलन मुनि नायकहि मुदित राउ एहि भांति ॥

दोहा – 294 नम्बर

अर्थ – जब राजा जनक ने विश्वामित्र मुनि का आगमन समाचार प्राप्त किया। तब वे अपने ब्राह्मण समाज विश्वामित्र मुनि व सतानन्द प्रोहित सहित गये।

कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा दीन असीस मुदित मुनिनाथा ।
विप्र बृंद सब सादर वन्दे जानि भाग्य बड़ राउ अनन्दे ॥

चौपाई – बालकाण्ड पृष्ठ 197 पर

अर्थ – विश्वामित्र मुनि ने राजा को चरणों में देखते हुए आशीर्वाद दिया। फिर सारी ब्राह्मण मण्डली ने सादर प्रणाम किया। आगे की चौपाई बालकाण्ड में पृष्ठ 209 परलिखा है निमि की व्याख्या की है।

चौपाई अस कहि फिर चितए तेहि ओरा, सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ।
भए विलोचन चारु अचंचल, मनहु सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥

अर्थ – जब भी रामचन्द्र जी ने सीता के मुख की तरफ देखा तो चकोर की तरह टकटकी लगाकर सुन्दर नेत्र स्थिर हो गये। उधर सीता जी अपने मनइच्छित पति को देखना तो चाहती हैं। परन्तु मानो निमि जिनके पलकों में सबके निवास माना गया है, इस कारण देखना उचित नहीं इस भाव से सकुचाकर पलकें छोड़ दी अर्थात नेत्र झुका लिए लज्जा भाव से। मिथिला के राजदरबार में स्वयंवर की एक चौपाई बालकाण्ड पृष्ठ 234 पर मिथिला राजगद्दी ब्राह्मणों की रही है यह साफ-साफ साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

चौपाई – सचिव सभय सिख देइ न कोई, बुध समाज बड़ अनुचित होई।
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा, कहँ स्यामल मृदुगात किशोरा॥

अर्थ – मन्त्रीगण डर रहे हैं, इसलिए राजा जनक को कोई सीख भी नहीं देता आज पंडितों की सभा में बड़ा अनर्थ हो रहा है, कहाँ तो वज्र से भी बढ़ कर कठोर धनुष और कहाँ कोमल अंग वाले राम। यह दोहा गौतम ऋषि के निवास स्थान का बोध कराता है, जो कि गौतम निवास स्थान मिथिलान्चल में आज भी विख्यात है। वहीं अहिल्या को तारा है धनुष यज्ञ समय पर ।

दोहा – पृष्ठ 240 पर बालकाण्ड

गौतम तिय गति सुरति करि, नहि परसति पग पानि।
मन विहँसे रघुवंशमनि, प्रीति अलौकिक जानि॥

अब एक प्रमाण तिरहुत अर्थात मिथिला के बारे का जिसकी शोभा वैभव वसावट का लिखता हूँ। जो बालकाण्ड में पृष्ठ 259 पर एक चौपाई और एक दोहे से मिलता है।

चौपाई – जेहि तिरहुत तेहि समय निहारी, तेहि लघु लगहि भुवनदश चारी ।
जो सम्पदा नीच ग्रह सोहा, सो विलोकि सुरनायक मोहा ॥

तिरहुत नाम मिथिलापुरी का है। वैसे नाम तो बारह हैं जिनमें से एक नाम तिरहुत भी है, उस समय जिसने तिरहुत को देखा उसे चौदहहु भवन तुच्छ जान पड़े। जनकपुरी में नीच के घर में भी उस समय संपदा सुशोभित थी। उसे देखकर इन्द्र भी मोहित हो जाता था।

दोहा – बसहि नगर जेहि लच्छि करि, कपट नारि वर वेषु।
तेहि पुर की शोभा कहत, सकुचहि सारद शेषु ।

अर्थ – जिस नगर में साक्षात लक्ष्मी जी कपट से स्त्री का वेष बनाकर बसती हैं उस पुर की शोभा का वर्णन करने में सरस्वती और शेष भी सकुचाते हैं।

चौपाई – भुजवल भूमि भूप बिनु कीन्ही, विपुल वार महिदेवन्ह दीन्ही।
सहस वाहु भुज छेद निहारा, परशु विलोकि महीप कुमारा॥

अर्थ – बन्धुओ यह भी चौपाई तथ्य से परिपूर्ण है, कि जब भगवान परशुराम जी को मिथिलापुरी स्थित शिव धनुष अपने प्राणों से भी प्रिय था। और उसको श्री भगवान राम ने तोड़ डाला उधर 21 बार पृथ्वी क्षत्रिय भूपों से रहित कर पृथ्वी को परशुराम जी ने महिदेवों अर्थात ब्राह्मणों को दान कर दिया।

इधर प्राणों के समान प्रिय शिवधनुष जो शंकर भगवान का दिया हुआ था और जनक जी के संरक्षण में दिया हुआ था, वह खण्डित करि दिया, तो भगवान राम तो क्षत्रिय कुल में उत्पन्न अवश्य हुए, लेकिन त्रिकालदर्शी परशुराम ने विष्णु अवतार श्री राम के अमृत रूपी वचनजो लक्ष्मण के कठोर वचनों को ढ़कते

हुए परशुराम के क्रोध को शांत किया, यह एक चौपाई जनक राजा को ब्राह्मण वंशी सिद्ध करती है, और मिथिला की मैथिल वंश की संपुष्टि करती है।

चौपाई - रानी सुनि-उपरोहित बानी, प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी ।
विप्र वधू कुल वृद्ध बुलाई, करि कुल रीति सुमंगल गाई॥

अर्थ – कुल पुरोहित के वचन सुनकर रानी ने सखियों सहित सभी ब्राह्मण कुल की बूढ़ी और बहुए बुलाकर कुलाचार करते हुए मंगलचार गीत गाए।

तथा संस्कृत भाषा की हिन्दी अनुवाद कर महान विद्वानों के प्रयास और परामर्श से लेखन कार्य किया है। जो ब्राह्मण जाति के कल्याण हेतु अमृत सदृष्य उपयोगी सिद्ध होगी। परन्तु सर्वश्रेष्ठ दोषी तो राजा जनक जी थे। जिन्होंने शिव धनुष तुड़वाने की कठिन प्रतिज्ञा की थी और शिवधनुष खण्डित भी करा दिया। इतने दोषी जनक जी को जानकर भी भगवान परशुराम ने जनक जी से चूँ तक नहीं की ऐसा क्यों हुआ। इसका कारण ऊपर दी हुई चौपाई जो पृष्ठ 245 पर है तथा दूसरी चौपाई बिल्कुल स्पष्ट कर रही है जो बालकाण्ड पृष्ठ नं 245 पर लिखा है।

चौपाई - बालकु जानि बधहुँ नहि तोही, केवल मुनि जड़ जानहि मोही ।
बाल ब्रह्मचारी अति क्रोधी, विश्व विदित क्षत्रिय कुल द्रोही ॥

अरे राजकुमार तू बालक है, यह जान तुझे नहीं मारता हूँ। मूर्ख क्या मुझे निरा साधु ही समझता है। मैं बाल ब्रह्मचारीहूँ और अति क्रोधी हूँ तथा क्षत्रिय वंशों का कट्टर द्रोही हूँ यह बात संसार में विख्यात है।

विश्वामित्र ने राजा जनक से कहा अपने कुलव्यवहारानुसार विवाह करो जैसा कि ब्राह्मण वंशानुसार होता है।

दोहा - जदपि जाय तुम्ह अब, जथा वंश व्यवहार ।
बूझि विप्रकुल वृद्ध गुरु, वेद विदित आचार ॥

'मिथिला के ब्राह्मणों का ब्रज में प्रवास'

प्रिय बन्धुओं मिथिला से आने वाले पूर्वज मैथिल ब्राह्मण एक बार में ब्रजमण्डल में आकर नहीं बसे और न अन्य ब्राह्मण ही एक बार में ब्रजमण्डल में बसे हैं। क्योंकि बंगाल, बिहार, मिथिला आदि पर बादशाह गयासुद्दीन तुगलक आदि का शासन काल था। उनके अत्याचारों से भय भीत होकर ब्राह्मण वहाँ से तितर बितर हो गये और भ्रमण करते करते तीर्थों में से आकर तीर्थ मण्डल ब्रज में प्रवास किया। फिर अलग अलग परिस्थितियों में एक दूसरे के सहारे में आ आकर प्रवास करते रहे। कुछ विद्वान जन ब्राह्मण

सभी वर्गो के मुसलमानी शासन काल में भी राजदरबारों में रहते थे। ये विद्वान जन भिन्न भिन्न विषयों के पंडित थे। जैसे - ज्योतिषशास्त्र, वेद वेदान्ती, तान्त्रिक विद्या के ज्ञाता, गणितज्ञ, व्याकरणाचार्य, साहित्यिक विषयों के ज्ञाता, अस्त्र शस्त्र विद्या के विशेषज्ञ आदि आदि प्रकार के विद्वान ब्राह्मण राजा महाराजा, बादशाहों के दरबारों में रहते थे। यह प्रमाण इतिहास द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल से लेकर सम्वत 1757 तक का मिलता है। इस समय तक बादशाह अकबर का शासन रहा है। प्रथम मिथिला से मैथिल ब्राह्मणों के प्रवास का इतिहास 1381-82 में 75 मैथिल ब्राह्मणों ने मथुरा, आगरा, अलीगढ़ आदि स्थानों के क्षेत्रों में प्रवास किया था। इनके नाम आदि सभी का आगे उल्लेख किया है। यह गयासुद्दीन तुगलक के शासन काल की घटना है। इस समय की चार पंक्ति की कविता प्रस्तुत है। उस समय मिथिला की गद्दी पर हरीसिंह देव का शासन था। ये मैथिल ब्राह्मण राजा बड़े ही धर्मामलम्वी थे। इनकी कीर्ति और ब्रह्मणत्व की दूर-दूर तक चर्चा थी। उसे सुनकर तुर्क ने मिथिला की गद्दी तरफ दृष्टि डाल दी ।

कवित्त - हुआ हिन्द में जब बादशाह गयासुद्दीन,
वंश जाको तुगलक कहायो है।
यवनो का कटक ले भारी साथ,
कोप करि तुरन्त जाय मिथिला पर चढ़ि धायौ है॥
भारी घमासान महाघोर युद्ध होंन लगा,
मिथिला नरेश ने भी पार नहीं पायौ है।
कितने ही राजे महाराजे अधीन हुए,
करें क्या विचारे कछु चले न चलायौ है॥

इस घोर आपत्ति समय पर 75 मैथिल ब्राह्मणों का वर्णन एक कवित्त से है।

कवित्त - ऐसे दुष्काल में नौ गोत्र के पिचहत्तर विप्र,
मिथिला से सिधारे करि तीर्थ का बहाना है।
वाल गोपाल संग स्त्री भी तैयार हुई,
चलो अभी साथ यहाँ खोटा ये जमाना है॥
प्राण रहे तन में तब लों धर्म को न छोड़ें हम,
धर्म को बचाओ चाहे छूटि जाय जमाना है।
भारी भयभीत अति व्याकुल हैं शरीर जिनके,
छिप छिप कर विप्रों ने किया मिथिला से पयाना है॥

नोट - सर्व ब्राह्मणों के प्रवास में विशेप व्याख्या मैंने पूर्व में किया है। जो प्रवास के कारण हुए। उपरोक्त

नौ गोत्रों के मैथिल ब्राह्मणों ने बृजमण्डल में आकर प्रवास किया। इनमें से मात्र पाँच मैथिल ब्राह्मण जो तान्त्रिक विद्या के विशेषज्ञ थे। वो चले गये बाकी सत्तर मैथिल विप्रो ने प्रवास बृजक्षेत्र में किया। एक दोहा प्रस्तुत है यह उसी समय का प्रमाणित है ये पहली बार में आये हुए मैथिल विप्रों ने विसाउली गाँव में प्रवास किया।

भली भंति करि सम्पति, गये न वापस देश।
पांच तान्त्रिक चलि दिए रहे विसाउली शेष ॥

हमारा प्रवास से

ये लोग 70 मैथिल ब्राह्मण नौ गोत्र के थे। इन्होंने सामूहिक रूप से प्रवास मथुरा, राया के पास 'विश्वावली' या विसावली भी कहते हैं, उसमें प्रवास किया। इसके बाद अन्य गाँवों में प्रवास किया। इस घटना चक्र में आने के बाद फिर दुबारा का ससामूहिक रूप में आना हुआ। वो 1454, 1500 व सन् 1613 के करीब तक का समय है। यह दोनों बार के आगमन सामूहिक रूप में इतिहास द्वारा प्रमाणित हैं। सन् 1556-57 अकबर बादशाह के शासन काल का है। इसी समय फिर मिथिला के विप्र बृजक्षेत्र में तथा दिल्ली आदि स्थानों पर प्रवास किया। क्यों कि अकबर बादशाह हिन्दुओं को व मुसलमानों का समान दृष्टि से देखता था। कोई जातीय भेदभाव नहीं रखता था। हिन्दुओं को अच्छे अच्छे पदों पर नियुक्त किया था। कोई जजिया टैक्स वसूल नहीं करता था। न कोई हिन्दुओं के साथ में जास्ती करता था। आपसी प्रेम भाव का आलम बना रखा था। विद्वान ब्राह्मणों की कद्र करता था। तथा सम्मान की दृष्टि से पेश आता था। उपरोक्त कारणों के अलावा अकबर बादशाह में विशेष खूबियां थीं, वह हिन्दू ग्रन्थों को जैसे रामायण, भागवत आदि का पाठ करता था। हिन्दुओं के मन्दिर में आकर पूजा पाठ किया करता था। हिन्दू राजाओं से शादी सम्बन्ध किये, उन रानियों के लिए पूजा पाठ के लिए मन्दिर बनवाये। हिन्दू मुस्लिम सभी को समान अधिकार थे। इस प्रकार शासन देख ब्राह्मण जनों ने देश का त्यागन करि दिल्ली तथा आगरा मण्डल में प्रवास किया। सम्राट अकबर ने सम्पूर्ण भारतवर्ष पर शासन किया। उसके दरबार में विद्वान ब्राह्मण रहते थे, और विद्वानों की खोज में रहता था। मैंने पीछे वर्णन किया है। कि अकबर बादशाह के दरबार में नौ रत्न थे। उनका पहले उल्लेख कर चुका हूँ इसमें भी संक्षेप में वर्णन करता हूँ धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, न्यायशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, तान्त्रिक, संगीत शास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र आदि के प्रकाण्ड विद्वान दरबार में थे। बादशाह नित्य प्रत्येक कार्य से पूर्व विद्वानों से परामर्श लेते थे। निम्नलिखित नौ रत्न थे। 1. फैजी अब्दुज फजल 2. टोडरमल 3. वीरबल 4. तानसेन 5. रघुनन्दन झा 6. देवी मिश्र 7. पुरुषोत्तम झा 8. जीवनाथ झा 9. शिवराम झा।

एक बार अकबर बादशाह पटना में रुके हुए थे। उनने मिथिला के मैथिल विप्रों की विद्वानता की प्रशंसा

सुन रखी थी। वहाँ मैथिल ब्राह्मण मिथिला से बुलाकर धर्म सम्मेलन कराया। जिसमें मैथिल विद्वान पंडितों ने भाग लिया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में अनेकों विषयों पर तर्क वाद हुआ। जिसमें तीन विद्वानों को पुरस्कार प्रदान किया जो 1. रघुनन्दन झा 2. जीवनाथ मिश्र 3. पं. शिवराम झा थे।

सम्राट उनसे प्रसन्न हुए और परिवार सहित आगरा अपने साथ ले आये। जो परिवार आज भी आगरा स्थित प्रवासी हैं। बादशाह इन विद्वानों से गीता भागवत रामायण आदि ग्रन्थों का अनुवाद संस्कृत से फारसी, उर्दू आदि में कराते थे। एक बार रघुनन्दन झा जी के बताने के अनुसार टोडरमल द्वारा मिथिला से 71 विद्वान ब्राह्मण बुलवाये जो परिवारों सहित आकर रहे। बादशाह ने इन सभी के रहने की पूर्ण व्यवस्था कराई। अकबर हिन्दू साहित्य, संस्कृति से बड़ा प्रेम करता था। इसी कारण वस हिन्दू ग्रन्थों का फारसी अनुवाद कराया। महाभारत ग्रन्थ का अनुवाद फारसी के विशेषज्ञ अब्दुल फजल ने किया था। साथ में फारसी विद्वान श्री नकीम खाँ, सेख सुल्तान तथा थानेयवर मुल्ला के साथ मधुसूदन मिश्र पं. रामभद्र उपाध्याय पं. देवीमिश्र आदि विद्वानों द्वारा अनुवाद कराया। लीलावती व नल दमयन्ती आदि कथाओं का अनुवाद पं. मधुसूदन मिश्र के सहयोग से मियाँ फैजी ने किया। अथर्ववेद का फारसी में अनुवाद पं. पुरुषोत्तम झा ने हाजी इब्राहीम सरहिंदी के साथ कराया। पं. पुरुषोत्तम झा, पं. देवी मिश्र श्री बदायूनी ने बाल्मीकि रामायण का फारसी अनुवाद किया। हरिवंश पुराण का फारसी अनुवाद पं. बलभद्र मिश्र फारसी विद्वान शेरा तथा बासदेव मिश्र ने किया। उपरोक्त ग्रन्थों का फारसी भाषा में अनुवाद कराये फारसी में अनुवाद कराने का तात्पर्य अकबर बादशाह का यही हो सकता है कि मुसलमान संस्कृत भाषा नहीं जानते हैं। इसलिए फारसी में अनुवाद कराये कि मुसलमान जन प्रत्येक पढ़ सके और समझ सके। अब्दुल फजल ने एक फारसी पुस्तक लिखी थी। जिसका नाम 'आइने अकबरी' है। उससे प्रमाण मिलते हैं, कि मिथिला से आये हुए मैथिल विद्वान आगरा क्षेत्र में प्रवासी हैं। पीछे ब्राह्मण प्रवास में लिख चुका हूँ कि औरंगजेब बादशाह के शासन काल में समस्त हिन्दू जाति पर घोर आपत्ति का समय आ गया था। जो कि ब्राह्मणों की तो दुर्दशा अत्याधिक हुई। इसका कारण मैं लिख चुका हूँ फिर बताता हूँ ब्राह्मण जाति को हिन्दू धर्म का मुख्य संचालक या केन्द्र बिन्दु तुर्कों ने माना था। विधर्मी बादशाह औरंगजेब के घोर अत्याचारों से पीड़ित होकर मैथिल ब्राह्मणों ने प्राण रक्षा और धर्म रक्षा हेतु अपना ब्राह्मणत्व और वेष - भूषा त्याग कर जीविकोपार्जन हेतु मजदूरी मेहनत कर गुजारा किया। लेकिन भिक्षावृत्ती नहीं की न धर्म नष्ट होंने दिया। अपनी मातृभूमि मिथिला की लज्जा रखते हुए मर्यादा बनाके रखी। जो आज उन्हीं के प्रताप प्रभाव से लेखनी लिखने से नहीं रुकती है। यह उन्हीं पूर्वजों का कृपा प्रसाद है। जो आप सभी सज्जनों के समक्ष प्रस्तुत है। औरंगजेब बादशाह ने अपने पिता के दरबारी विद्वान ब्राह्मणों को भी मुल्ला और मौलवी बनाना चाहा और मुसलमान बनने को बाध्य किया। परन्तु एक दो दिन की मोलत ली कि हम मुसलमान बनेंगे परन्तु रात के समय मौका पाकर सभी विद्वान दरबार से भाग लिए। अपने बीबी बच्चे लेकर और रात्रि

के समय में भटकते हुए, पूजा पाठ छोड़ जनेऊ चन्दन माला आदि का त्यागन किया। और देहात के गाँवों में जा छिपे प्रवास कर लिया। आपस में एक दूसरे से मिलने के मौके देते रहे। जिन-जिन गाँवों में जहाँ-जहाँ जैसे रहे वो ही खेड़े कहे गये। ये खेड़ों की पन्जी होंने पर व्यवस्था की गई। अपने जीवोपार्जन के लिये मजदूरी करि गुजारा करने लगे।

'मैथिल ब्राह्मणों के खेड़ों का वर्णन'

मिथिला से आये हुए मैथिल ब्राह्मण जिस जिस गाँव में प्रथम आकर रहे उसके हिसाब से ही वही खेड़ा माना गया। गौड़ वंश में इसे शासन या मूल गाँव कहते हैं। मिथिलान्चल में इस को मूल कहते हैं। मतलब इसका है कि अमुक वंश के लोग, अमुक गाँव का निवासी है। पंजीकारों ने सम्पूर्ण वृजमण्डल में जहाँ जहाँ मैथिल ब्राह्मण वास करते थे। उनके घर घर जाकर पंजी की गई कि किस वंश का मैथिल ब्राह्मण परिवार कहाँ और किस गाँव में रहता है। कहाँ ननसार है कहाँ ददसार है क्या नाम है कितने बच्चे हैं उनके नाम, कहाँ कहाँ किसके यहाँ लड़की लड़कों के सम्बन्ध हुए हैं, किस वंश, गोत्र में हुए हैं। ऐसा सारा लेखा पन्जीकारों के पास में पाया जाता है। मुगल शासन काल में पन्जी का कार्य बिल्कुल ठप्प हो गया था। परन्तु अंग्रेजी शासन के पश्चात फिर पन्जी कार्य प्रारम्भ हुआ। मैथिल ब्राह्मणों के ब्राह्मणत्व स्मृति शिथिल हो गई थी। क्योंकि समय लम्बा हो गया था। विपत्तियों से झकझोरे हुए अपने को भूल गये थे। परन्तु ब्रजस्थ प्रवासी मैथिल ब्राह्मणों की शुभगढ़ी आजादी के आने पर फिर लौटी। सन् 1947 में जो परमात्मा स्वरूप एक दिव्य पुरुष अवतरे जिन्हें ब्रह्मानन्द स्वामी जी के नाम से जाना जाता है। उन्होंने समस्त मैथिल विप्रों को जो बृज प्रदेश में वास करते थे। उन्हें जगाया और एक ज्योति जलाई ये ज्योति ही नहीं बल्कि प्रवासी मैथिल विप्रों को नव जीवन प्रदान किया।

"श्री ब्रह्मानन्द स्वामी"

आदरणीय श्री ब्रह्मानन्द स्वामी जी का जन्म अलीगढ़ के पास अतरौली तहसील के अन्तर्गत मौसमपुर (मूँसेपुर) नामक गाँव में हुआ था। बचपन का नाम रणधीर था वास्तव में यथा नाम तथा गुण वाला रणधीर ही पुरुष मैथिल परिवार में उत्पन्न होकर मैथिल समाज जो ब्रजमण्डल में प्रवास कर चुका था। और ब्राह्मणत्व को भूलकर भटक गया था। उसे रणधीर वीर ने अपना नाम ब्रह्मानन्द स्वामी के नाम से संसार में ख्याति प्राप्त की और भटके हुए मैथिल समाज के बृज प्रवासियों को नवजीवन प्रदान किया। जो सम्पूर्ण बृजस्थ मैथिलों के दरवाजों पर बिगुल बजाकर जागृत किया। सामूहिक रूप देकर मैथिल ब्राह्मणों के महा सम्मेलन आगरा, अलीगढ़, मथुरा, दिल्ली, झाँसी आदि आदि स्थानों पर कराये। जनक देश पूर्वजों की जन्मभूमि दरभंगा जाकर बृज मैथिलों के बारे में मिथिला नरेश को सन्देश दिया। और अपने अथक प्रयासों द्वारा मिथिला नरेश श्री सर महाराज कामेश्वर सिंह को मिथिला के मैथिल विप्र बृजप्रवासियों के

महासम्मेलनों में सम्मिलित किया। महाराजाधिराज सन् 1954 में भी आये जो महासम्मेलन आगरा में हुआ था। मथुरा में भी पधारे साथ में मिथिला के पन्जीकारों को भी लाए जो बृजमण्डल प्रवासियों की पंजी तैयार कराई और मैथिल ब्राह्मणों को अपनी अमृत वांणी देकर महाराजाधिराम सर कामेश्वरसिंह जी ने अपने गले से लगाया। जीवन नया मिला मैथिल ब्राह्मणों ने आनन्द की साँसे लीं। यह सब कुछ परिश्रम स्वामी ब्रह्मानन्द जी का था। सहयोगी जनों को हम कभी भुला नहीं सकते जो बराबर स्वामी जी के कन्धे से कन्धा जुटाकर साथ देते रहे। जिन महापुरुषों में देवतुल्य भाव कूट कूट कर भरे हुए थे, जाति धर्म के प्रति। कुछ के नाम प्रस्तुत करता हूँ।

पं. फूलचन्द्र मिश्र निवासी मीतई गाँव अलीगढ़ 2. पं. फूलविहारी 3. पं. सर हरगोविन्द मिश्र 4. पं. चतुरविहारी लाल मिश्र आदि प्रमुख अन्य व्यक्ति मण्डल था। साथ ही जैंत निवासी पं. रामचन्द्र मिश्र बुधसागर झा छवा निवासी आदि थे।

जो अधिवेशन हुए और पन्जी लिखी गई उस वक्त मात्र 84 खेड़े लिखे गये। लेकिन यह तर्क का विषय है कि मैथिल विप्र लम्बे समय तक भटकने के कारण मुख्य शिक्षा का ज्ञान उपार्जन न हो सका और अधिवेशनों में बहुत से खेड़ों के लोग पहुँच गये, और वहुत से खेड़े वालों को उस समय की परिस्थितियों ने जकड़ रखा था। कि सम्मेलनों में नहीं पहुँच पाये जिससे पन्जी नहीं लिख सकी। उजागर होंने पर शिक्षा का प्रसार हुआ। अन्य खेड़ों के खेड़े दृष्टि आये। जो शादी सम्बन्धों के द्वारा खुलासा हुए और परिवार रह गये जो स्वजाति थे। धीरे-धीरे समक्ष आने लगे 84 खेड़े थे फिर 107 हुए फिर 114 हुए इस प्रकार संख्या खेड़े की संख्या 146 हुई, वो आगे विस्तार से वर्णन किया है। जिनमें मूल, खेड़े, प्रवर, वेद, सूत्र शाखा, पौराणपुरुष आदि के वर्णन अलग अलग किये हैं। तथा तालिकाओं द्वारा दर्शाया है, जो कि पाठक गणों को कोई परेशानी न हो। जिला तहसील आदि सभी लिखे हैं। वैसे समय परिवर्तनशील है और समय के अनुसार प्राणी भी बदलता है। स्थान भी बदलते रहते है। यह प्रकृति का नियम है।

नोट - मैथिल ब्राह्मण बृजक्षेत्र प्रवासियों के खेड़ों की संख्या लगभग 145 खेड़े 15 ऋषि गोत्र के अन्तर्गत प. देवचन्द्र मिश्र व गोविन्द मिश्र, सौराठ नवटोल जि. मधुवनी (दरभंगा) पन्जीकार की सूची सम्मिलित करते हुए योग लिखा है। पं. जगन्नाथ मिश्र की लिखी पुस्तकमानसरोवर, पं. रामचन्द्र मिश्र आगरा की पुस्तक मैथिल ब्राह्मण गोत्रावली तथा अलीगढ़ सुरेन्द्रनगर के पं. रामस्वरूप शर्मा विसारद की लिखी मैथिल ब्राह्मण परिचय और बलभद्रपुर ग्राम जिला अलीगढ़ के निवासी पं. ज्ञानचन्द्र शर्माचार्य की लिखी मैथिल ब्राह्मण गोत्र कुन्जिका पुस्तकादि के अलग अलग खेड़ों को स्वीकार करते हुए सभी विद्वान पण्डितों के लेखों को मान्य करते हुए, तथा पन्जीकार की सत्य प्रतिलिपि को सँजोकर सम्मिलित खेड़ों की सूची 145 खेड़े होते हैं। सो आप की सेवा में आगे प्रस्तुत की गई है। किसी विद्वान की सूची अमान्य के योग्य नहीं है। क्योंकि जब 150 से परिवार मिथिला से आकर ब्रजस्थ व समीपवर्ती क्षेत्रों में आकर प्रवास किया है। और दमन काल में प्राण रक्षा हेतु छिपे रहे हैं। समय-समय पर दृष्टि आते गये हैं। वैसे-वैसे

ही विद्वानों ने साक्ष्यों द्वारा मान्य किया है 50 वर्षों से दरभंगा मधुवनी स्थानों से आये हुए वृन्दावन धाम में दृष्टि आये हैं। जो लोगों की दृष्टि से परे हैं। और उनकी दृष्टि से वृज मैथिल ब्राह्मण परे हैं।

आगे मैं इन्हीं विद्वान पंडितों के बारे में उनके मूल गोत्र प्रवर व्रज प्रवास तथा यश कीर्ति के बारे में विस्तार से वर्णन करता हूँ, जिससे सभी को इन विद्वानों के बारे में जानकारी हांसिल हो जाये।

पंजीकार प. देवचन्द्र मिश्र व प. गोविन्द मिश्र सौराठ सभा टोला पोयोखरोनी जिला मधुवनी राज्य दरभंगा से वृजमण्डल में पूर्व पन्जियों के लेखानुसार पुनः पंजी व्यवस्था सन् 2002 से प्रति वर्ष अंकलन करने-अगस्त व सितम्बर मास में आकर दो माह वृज मंडल में भ्रमण कर पन्जी कार्य करते हैं। यह पंजी कार्य प्रथा का सन् 2002 में जगत गुरू श्री राधेश्याम शरण देवाचार्य जी महाराज मिथिला कुन्ज वृन्दावन के लिये श्रेय है।

'बृजमण्डल में मैथिल ब्राह्मणों के खेड़े'

सं.	खेड़ा	गाँव का नाम	तहसील	जिला
1.	अरोठिया	अरोठा	सादाबाद	मथुरा
2.	अकोस्या	अकोस	सादाबाद	मथुरा
3.	आरतीवार	आरती	सादाबाद	मथुरा
4.	असौलावार	असौला	सादाबाद	मथुरा
5.	अगवारिया	अगवार	ऐतमादपुर	आगरा
6.	अमरोहिया	आमौर	सादाबाद	मथुरा
7.	अगरईवार	अगराना	सिकन्द्राराऊ	आगरा
8.	अतुर्रावार	अतुर्रा	सादाबाद	मथुरा
9.	इसौंदावार	इसौंदा	सादाबाद	मथुरा
10.	इसौलिया	इसोली	आगरा	आगरा
11.	उदावलीवार	उदावली	आगरा	आगरा
12.	उदसैया	उदैना	आगरा	आगरा
13.	उड़ेसरिया	उड़ेसर	मथुरा	मथुरा
14.	उसएवार	उसयौ (सासनी)	थर	अलीगढ़
15.	ऊषरभूला	ऊषरम	मांट	मथुरा
16.	ऊभईवार	ऊभई	इगलास	अलीगढ़

17.	कसेरूवार	कसेरू	खैर	अलीगढ़
18.	कोंडरीवार	कोंडरी	इगलास	अलीगढ
19.	कचनाडय	कचनाऊ	सादाबाद	मथुरा
20.	किशनपुरिया	किशनपुर	मथुरा	मथुरा
21.	कंकरोठिया	ककरेठिया	मथुरा	मथुरा
22.	ककेथरिया	ककेथरा	जलेसर	मथुरा
23.	कासिमपुरिया	कासिमपुर	सादाबाद	मथुरा
24.	खांमिनीवार	खौंमिनी	मथुरा	मथुरा
25.	खामानीवार	खमानीगढ़ी	सादाबाद	मथुरा
26.	गुरेटावार	गुरेटा	सादाबाद	मथुरा
27.	गुड़ेरावार	गुड़ेरा	मांट	मथुरा
28.	घुरूघुरावार	घाघऊ	जसराना	मथुरा
29.	गुपलियावार	गुपलिया (हरी का नगला)	मांट	मथुरा
30.	गिरधरपुरिया	गिरधरपुर	हाथरस	अलीगढ़
31.	गंगोलीवार	गंगोली	मांट	मथुरा
32.	चंडोसिया	चन्डोस	खैर	अलीगढ़
33.	जलेसरिया	जलेसर	जलेसर	मथुरा
34.	जारुएवार	जारऊ	सादाबाद	मथुरा
35.	जखोंदिया	जखोदा	आगरा	आगरा
36.	जसोलीवार	जसोली	मांट	मथुरा
37.	जेसयेवार	जेसया	मांट	मथुरा
38.	जेंतवार	जेंत	मथुरा	मथुरा
39.	झरोटावार	झरोटा	सादावार	मथुरा
40.	टमोटियावार	टमोटिया	इगलास	अलीगढ़
41.	टिकारीवार	टिकारी	हाथरस	अलीगढ़
42.	तेहरावार	तेहरा	मथुरा	मथुरा

43.	तुरसेंनिया	तुरसेंन	हाथरस	अलीगढ़
44.	थरोरिया	थरोरा	सादाबाद	मथुरा
45.	दीनदयालपुरिया	दीनदयालपुर	मथुरा	मथुरा
46.	धनोलीवार	धनोली	आगरा	आगरा
47.	पोपालिया	पोपालिया	मथुरा	मथुरा
48.	पैसईवार	पैसई	आगरा	आगरा
49.	पहोड़िया	पहोड़	जलेसर	मथुरा
50.	पेंडतिया	पेंडत	जलेसर	मथुरा
51.	पालीवार	पाली	मथुरा	मथुरा
52.	पाढ़मवार	पाढ़म	जलेसर	मथुरा
53.	पचोरीवार	पचौरा	मांट	मथुरा
54.	पिलखुआवार	पिलखतरा	अलीगढ़	अलीगढ़
55.	वमानिया	वमान	सादाबाद	मथुरा
56.	बरामईवार	बरामई	सादाबाद	मथुरा
57.	वरमानिया	वरमाना	सिकन्द्राराऊ	अलीगढ़
58.	विसाउलीवार	विसाउली	मांट	मथुरा
59.	बरसानिया	बरसाना	छाता	मथुरा
60.	बाँदरेवार	बादोर	सिकन्द्राराऊ	अलीगढ़
61.	विलाईवार	विलई	सादाबाद	मथुरा
62.	विलारीवार	विलारा	सादाबाद	मथुरा
63.	बरोलिया	बरौला	छाता	अलीगढ़
64.	वकेनिया	वकेना	सादाबाद	मथुरा
65.	वछरोड़िया	वछगाँव	मथुरा	मथुरा
66.	विसूँधरिया	विसून्धरा	जलेसर	मथुरा
67.	विघोरवार	विघरई	अतरोली	अलीगढ़
68.	विलोंचेवार	वैलोंच	सिकन्द्राराऊ	अलीगढ़
69.	वाँधनूवार	वाँधनू	हाथरस	अलीगढ़

70.	वलरईया	वलरई	सादाबाह	मथुरा
71.	वावसेवार	वावस	जलेसर	मथुरा
72.	वैजुआवार	वैजुआ	कोल	अलीगढ़
73.	वामोलिया	वामौली	सादाबाह	मथुरा
74.	विसामनिया	विसावन (विसाना)	हाथरस	अलीगढ़
75.	विरोनावार	विरोना	सादाबाद	मथुरा
76.	वमनोईया	वमनई	हाथरस	मथुरा
77.	वेलवनिया	वैलवृक्षो का वन	मथुरा	मथुरा
78.	वैलोनिया	बैलोन	अतरोली	अलीगढ़
79.	विलगईया	वलरई	इगलास	अलीगढ़
80.	भालईवार	भालई	मांट	मथुरा
81.	भमोलिया	भमोला	खैर	अलीगढ़
82.	भाड़ीलवार	भद्रवन	मांट	मथुरा
83.	भवनखेरिया	भवन खेड़ा	कोल	अलीगढ़
84.	भगोसिया	भगोसा	सिकन्द्राराऊ	अलीगढ़
85.	भाड़रीवार	भाड़री	मांट	मथुरा
86.	भदोईवार	भदरोई	सिकन्द्राराऊ	अलीगढ़
87.	महावनिया	महावन	मथुरा	मथुरा
88.	मुदावलीवार	मदावली	एतमादपुर	आगरा
89.	मागरोलिया	मागरोल	मथुरा	मथुरा
90.	महावरिया	महवारी	हाथरस	एटा
91.	मांटवार	मांट	मांट	मथुरा
92.	मुनाईवार	मुनी	अतरौली	अलीगढ़
93.	रहनिया	रहना	हाथरस	अलीगढ़
94.	रायटवार	रायट	खैर	अलीगढ़
95.	रिसगमावार	रिसगमा	सादाबाद	मथुरा
96.	लोधईवार	लोधई	कौल	अलीगढ़

97.	लोहवनिया	लोहवन	मथुरा	मथुरा
98.	लुहेटावार	लुहेटा	सादाबाद	मथुरा
99.	लोहवार	लोहवारी	सादाबाद	मथुरा
100.	सिहोरिया	सिहोरा	मथुरा	मथुरा
101.	सुनामईवार	सुनामई	कोल	अलीगढ़
102.	सैपऊवार	सैपऊ	सादाबाद	मथुरा
103.	सदरवनिया	सदरवन	मांट	मथुरा
104.	सुसानिया	सुसायन	हाथरस	अलीगढ़
105.	सोंनवार	सोनई	मथुरा	मथुरा
106.	सेहीवार	सेही	छाता	मथुरा
107.	सिरोईवार	सैरोई	इगलास	अलीगढ़
108.	सतोएवार	सतोहा	मथुरा	मथुरा
109.	सूरवार	सूरज	मथुरा	मथुरा
110.	सेकरीवार	सकराया	मथुरा	मथुरा
111.	हसोनावार	हसोना	सिकन्द्राराऊ	अलीगढ़
112.	हिन्डोलिया	हिन्डोल	मांट	मथुरा
113.	हुसेनीवार	हुसेंनी	सादाबाद	मथुरा
114.	राजोरिया	राजपुर	मथुरा	मथुरा
115.	चुरसेंनिया	चुरसेंन	हाथरस	अलीगढ़
126.	ठूलईवार	ठूलई	हाथरस	अलीगढ़
127.	थरोरिया	थरौरा	सादाबाद	मथुरा
118.	धर्मपुरिया	धर्मपुर	अतरौली	अलीगढ़
119.	नगौलावार	नगौला	खैर	अलीगढ़
120.	नाटनौरिया	नाटनौर	मथुरा	मथुरा
121.	पहावटीवार	पहावटी	अतरौली	अलीगढ़
122.	पारासरिया		मांट	मथुरा
123			किरावली	[illegible]

124.	पुरदिलपुरिया	पुरदिलपुर	हाथरस	अलीगढ़
125.	फरैनवार	फरह	मथुरा	मथुरा
126.	फरौलीवार	फरौली	आगरा	आगरा
127.	बनैलियावार	बनैल	सादाबाद	मथुरा
128.	बहोरिया	बहोरा	सादाबाद	मथुरा
129.	बरामनी वार	बरामनी	हथरस	अलीगढ़
130.	बरहनपुरिया	बरहन	जलेसर	मथुरा
131.	बिलौंठेवार	बैलौंठ	अतरौली	अलीगढ़
132.	भिलावटीवार	भिलावटी	किरावली	आगरा
133.	मढ़ोलीवार	मढ़ोली	अतरौली	अलीगढ़
134.	मिरेंचीवार	मिरेंच	सिकन्दराराहू	अलीगढ़
135.	मौरथरिया	मौरथरा	सिकन्दराराहू	अलीगढ़
136.	मीरपुरिया	मीरपुर	सादाबाद	मथुरा
137.	मुड़सानिया	मुड़सान	हाथरस	अलीगढ़
138.	मुहानिया	मुहानी	हाथरस	अलीगढ़
139.	रामपुरिया	रामपुर	इगलास	अलीगढ़
140.	राममठिया	रामठ	मांट	मथूरा
141.	रोहईवार	रोहई	हाथरस	अलीगढ़
142.	लालपुरिया	लालपुर	हाथरस	अलीगढ़
143.	सोंकवार	सोंक	मथुरा	मथुरा
144.	हाथरसिया	हाथरस	हाथरस	अलीगढ़

नोट – मिथिलांचल से बृजप्रदेश में आने वाले पुरुषों की संख्या ऐतिहासिक तौर पर लगभग 150 के करीब पाई जाती है। जिनमें 15 गोत्रों के मिथिला के मैथिल ब्राह्मण ब्रज प्रदेश में मौजूद हैं। अपने 550 वर्षो में पूर्वजों की जन्म भूमि मिथिला जैसी जन्म भूमि को 10-12 पीड़ियो में भूल कर पुनः स्मरण कर नव जीवन प्राप्त कर पाये हैं।

ब्रजस्थ मैथिल पंजी संग्रह प्रमाणित

जय मिथिला ....जय मैथिल ....जय मैथिली

हम पं० विजय चन्द्र मिश्र उर्फ गोविन्द मिश्र पिता श्री देवचन्द्र मिश्र ग्राम + पोस्ट - सौराठ - टोला - पोखरौनी जिला - मधुबनी (दरभंगा) केर पंजीकार ब्रजस्थ में जतेक मैथिल ब्राह्मणक पंजी संग्रह करबाक अकत प्रयासकय पंजी बैसौने छि, हमर जानकारी आ अनुभव केर सत-सत प्रमाण में जे मिथिला नरेश महाराजा कामेश्वरसिंहक समय में जे अधिवेशन भेल छल, ताहि में पंजीकार कनत मिश्र आ पंजीकार मधुसूदन झा उपस्थित छला, हुनक पंजी आ पूर्व केर पंजीकेर आधार स ऽ नविन पंजी बनाओल जायत अछि, ई अधिवेशन सन् 1954 ई० में भेजयल, ताहिक अनुसार भरहल अछि

ब्रजस्थ में पंजी - कार्य कराव में असिम संघर्ष कऽक वृन्दावन में मिथिलाक जगत गुरु श्री रामजयन शरण देवाचार्य जी महाराज मिथिलाकुन्ज केर रहनिहार आ मथुरा केर शास्त्रीनगर ज्ञानज्योति शिक्षा संस्थान के पू० अध्यक्ष डा० मक्खनलाल ठाकुर जी के प्रयास स ऽ ब्रज में मैथिल ब्राह्मणाक पंजी कार्य सन् 2002 ई० स ऽ प्रारम्भ अछि, अई कार्य में ब्रज में अनेकों जगह स ऽ सहयोग भेट रहल अछि जेना, मथुरा, आगरा, हाथरस, अलीगढ़, बल्लभगढ़, फरीदाबाद, दिल्ली, राया, नगला चूनामन (बल्देव) चन्द्रनगर, वृन्दावन आदि मिथिलाकुन्ज से ऽ सतत कार्य करेवा में ततपर्य रहैय अछि, आ हमरा जावत तक ब्रज से ऽ मैथिल ब्राह्मण सहयोग करता तावत तक हम हुनक सेवा में समर्पित रहब।

ब्रजस्थ मैथिल के सेवा में समर्पित पंजीकार श्री विजय चन्द्र मिश्र उर्फ गोविन्द मिश्र
पिता - पंजीकार - श्री देवचन्द्र मिश्र ग्राम + पोस्ट - सौराठ, टोला - पोखरोनी
जिला - मधुबनी (दरभंगा) मिथिलांचल । दिनांक 21-9-2002

"व्रजस्थ पंजी संग्रह"

(1) शाण्डिल्य 35 "मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र, मूल, ग्राम आदि का भाष्य"

1. अकोस्या	अकोस
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	महुए-संग्राम
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	महेश झा
2. अगरईवार	अगरई
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	सोंदरपुरिये-सुन्दर
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	कमलापति झा
3. असोंदावार	असोंदा
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	सोंदरपुरिये-हसोली
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	महिदेव झा
4. इसोंदिया	इसोंदा
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	पगुलवार-जगत
शाखा	कौथुमी

सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	श्यामादत्त झा
5. उषयेवार	उसरया
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	मघवारे-मलिछवार
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
वीजी पुरूष	जानकी ठाकुर
6. उभईवार	उभई
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	सुदरपुरिये-कटका
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	गोपीनाथ मिश्र
7. ऊषरवोला	उषरम
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	अनरिये-लगुनिया
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	सचिदेव झा
8. किशनपुरिया	किशनपुर
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल

मूल-ग्राम	गंगुलवार-सकुरी
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	गोपाल झा
9. ककरोठिया	ककरेठिया
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	दिघवे-कुकिलवार
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	श्यामसुन्दर मिश्र
10. ककेथरिया	ककेथरा
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	सोंदरपुरिये-वाली
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	सत्यदेव मिश्र
11. जारूयेवार	जारूया
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	परिसडे-नरोंच
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	राघवेन्द्र झा
12. झरोठावार	झरोठा
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल

मूल–ग्राम	दिघवे–कुकिलवार
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	नरदेव मिश्र
13. तुरसेंनिया	तुरसेंन
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल–ग्राम	सोंदरपुरिये–दिगोन
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	नारायण मिश्र
14. थरोरिया	थरोरा
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल

मूल–ग्राम	तिलेवार–ब्रह्मपुर
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	गोविन्द झा
15. दीनदयाल पुरिया	दीनदयालपुर
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल–ग्राम	सोंदर पुरिये, दिगोन
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	नृपति मिश्र
16. धनोलीवार	धनोली
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल

मूल-ग्राम	सिहांसवे-सिहांसव
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	गोवर्धन झा
17. नगोलावार	नगोला
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	तिलहनपुर-तिलहे
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	गोपीनाथ मिश्र
18. पोपालिया	पपलिया
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल

मूल-ग्राम	पगुलवार-भड़ियाम
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	जगन्नाथ झा
19. पललीवार	पलिवा
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	सोंदरपुरिये-सरिसव
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	सज्जन मिश्र
20. जखोंदिया	जखोदा
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल

मूल-ग्राम	गगुलवारी-डुमरा
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	जानकी झा

21. पिलखुआवार पिलखुआ

ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	खड़ोरे-गौर
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
वीजी पुरूष	फूलमणि ठाकुर

22. वरामईवार वरामई

ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	ब्रह्मपुरिये-ब्रह्मपुर
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	अरूणादत्त झा

23. विसाउलीवार (विसाउली)

ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	पगुलवार-भड़ियाम
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	रमाकान्त झा

24. विसूँदरिया विसूँदरा

ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल

	मूल-ग्राम	सोंदरपुरिये-वाली
	शाखा	कौथुमी
	सूत्र	गोभिल
	वेद	सामवेद
	देवता	महालक्ष्मी
	गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
	चरण	वाम
	छन्दोग	छन्द गायन
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	मिश्र
	वीजी पुरूष	धर्मदेव मिश्र
25.	विघोंटेवार	विघोटा (दिघेटा)
	ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
	प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
	मूल-ग्राम	पगुलवार-राजे
	शाखा	कौथुमी
	सूत्र	गोभिल
	वेद	सामवेद
	देवता	महालक्ष्मी
	गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
	चरण	वाम
	छन्दोग	छन्द गायन
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	वीजी पुरूष	विद्याधर झा
26.	वर्लोंचेवार	विर्लोच
	ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
	प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
	मूल-ग्राम	पगुलवार-सकरी
	शाखा	कौथुमी
	सूत्र	गोभिल
	वेद	सामवेद
	देवता	महालक्ष्मी
	गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
	चरण	वाम
	छन्दोग	छन्द गायन
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	वीजी पुरूष	महादेव झा
27.	विरोनावार	विरोना
	ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
	प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
	मूल-ग्राम	पगुलवार-राजे
	शाखा	कौथुमी
	सूत्र	गोभिल
	वेद	सामवेद
	देवता	महालक्ष्मी
	गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
	चरण	वाम
	छन्दोग	छन्द गायन
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	पाठक
	वीजी पुरूष	जमुनाशंकर पाठक
28.	भालईवार	भालई
	ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
	प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल

मूल-ग्राम	यजुआड़े-उदनपुर
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	माधवानन्द झा
29. मिरेंचीवार	मिरेंची
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	ब्रह्मपुरिये-ब्रह्मपुर
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	जानकीनन्दन झा
30. महावनिया	महावन
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	महवारे-माहव
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	गुपाल झा
31. सिहोरिया	सिहोरा
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
मूल-ग्राम	सोंदरपुरिये-दिगोन
शाखा	कौथुमी
सूत्र	गोभिल
वेद	सामवेद
देवता	महालक्ष्मी
गणपति	सिद्धेश्वर महादेव
चरण	वाम
छन्दोग	छन्द गायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	मणिजय मिश्र
32. सुनामईवार	सुनामई
ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य

	प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
	मूल-ग्राम	पजुआरे-अलपुर
	शाखा	कौथुमी
	सूत्र	गोभिल
	वेद	सामवेद
	देवता	महालक्ष्मी
	गणपति	सिद्धिदाता महाशिव
	चरण	वाम
	छन्दोग	छन्द गायन
	शिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरुष	रमापति झा
33.	सुरगणियाँ	सुरगण
	ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
	प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
	मूल-ग्राम	सोदरपुरिये-सिमरिन
	शाखा	कौथुमी
	सूत्र	गोभिल
	वेद	सामवेद
	देवता	महालक्ष्मी
	गणपति	सिद्धिदाता महाशिव
	चरण	वाम
	छन्दोग	छन्द गायन
	शिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरुष	श्रीकान्त मिश्र
34.	सिसवाल	सिसई
	ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
	प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
	मूल-ग्राम	सोदरपुरिये हरौली
	शाखा	कौथुमी
	सूत्र	गोभिल
	वेद	सामवेद
	देवता	महालक्ष्मी
	गणपति	सिद्धिदाता महाशिव
	चरण	वाम
	छन्दोग	छन्द गायन
	शिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरुष	मालजी झा
35.	सिकरिया	सीकरी (आसाम)
	ऋषिगोत्र	शाण्डिल्य
	प्रवर 3	शाण्डिल्य, असित, देवल
	मूल-ग्राम	पजुआरे-पचही
	शाखा	कौथुमी
	सूत्र	गोभिल
	वेद	सामवेद
	देवता	महालक्ष्मी
	गणपति	सिद्धिदाता महाशिव
	चरण	वाम
	छन्दोग	छन्द गायन
	शिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरुष	श्रवणेश्वर झा

(2) वत्स 16 खिड़

1.	अलैयिया	अलैला

	ब्रह्म
अधिपति	[illegible]
मुख्य 5	ब्रह्म, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
	[illegible]
मूल-ग्रन्थ	माध्यन्दिनी
शाखा	कात्यायनी
सूत्र	यजुर्वेद
वेद	आत्मा
देवता	शिव
गणपति	व्यास
नाम	वैराजी
वाजसनेयिन	व्यास
शिक्षा	दक्षिण
मार्ग	ब्रह्म
आम्नाय	[illegible] ब्रह्म
कीर्ति पुरुष	[illegible]
2. [illegible]	[illegible]
अधिपति	ब्रह्म
मुख्य 5	ब्रह्म, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
	[illegible]
मूल-ग्रन्थ	माध्यन्दिनी
शाखा	कात्यायनी
सूत्र	यजुर्वेद
वेद	आत्मा
देवता	शिव
गणपति	व्यास
नाम	वैराजी
वाजसनेयिन	व्यास
शिक्षा	दक्षिण
मार्ग	ब्रह्म
आम्नाय	
कीर्ति पुरुष	[illegible] ब्रह्म
3. [illegible]	[illegible]
अधिपति	ब्रह्म
मुख्य 5	ब्रह्म, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
मूल-ग्रन्थ	[illegible]
शाखा	माध्यन्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	आत्मा
गणपति	शिव
नाम	व्यास
वाजसनेयिन	वैराजी
शिक्षा	व्यास
मार्ग	दक्षिण
आम्नाय	ब्रह्म
कीर्ति पुरुष	[illegible] ब्रह्म
4. [illegible]	[illegible]
अधिपति	ब्रह्म
मुख्य 5	ब्रह्म, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
मूल-ग्रन्थ	[illegible]
शाखा	माध्यन्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	आत्मा
गणपति	शिव
नाम	व्यास
वाजसनेयिन	वैराजी
शिक्षा	व्यास

मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष राघव झा

5. जेसवार जसवार
ऋषिगोत्र वत्स
प्रवर 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम जलेवार-जालो
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यायनी
वेद यजुर्वेद
देवता अम्बा
गणपति शिव
चरण वाम
वाजसनेयिन भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद ठाकुर
वीजी पुरूष जानकी ठाकुर

6. पचोरीवार पचहरा
ऋषिगोत्र वत्स
प्रवर 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम टकवारे-ब्रह्मपुर
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यायनी
वेद यजुर्वेद
देवता अम्बा
गणपति शिव
चरण वाम
वाजसनेयिन भैरवी अनुष्ठम
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष मोहन झा

7. वरमानियां वरमाना
ऋषिगोत्र वत्स
प्रवर 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम करमहे-तरोनी
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यायनी
वेद यजुर्वेद
देवता अम्बा
गणपति शिव
चरण वाम
वाजसनेयिन भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष वासदेव झा

8. विसानिया विसाना
ऋषिगोत्र वत्स
प्रवर 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम बुधवारे-महिषी
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यायनी
वेद यजुर्वेद
देवता अम्बा

गणपति शिव
चरण वाम
वाजसनेयिन भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष विद्याकर झा

9. वरामनीवार वरामनी
ऋषिगोत्र वत्स
प्रवर 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम कुयारे-जरेल
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यायनी
वेद यजुर्वेद
देवता अम्बा
गणपति शिव
चरण वाम
वाजसनेयिन भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष जगदीश झा

10. वेलोनिया बेलोन
ऋषिगोत्र वत्स
प्रवर 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम जलेवार-जाले
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यायनी
वेद यजुर्वेद
देवता अम्बा
गणपति शिव
चरण वाम
वाजसनेयिन भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष मोहन झा

11. वलरईया वलरई
ऋषिगोत्र वत्स
प्रवर 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम पलिवार-कछरा
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यायनी
वेद यजुर्वेद
देवता अम्बा
गणपति शिव
चरण वाम
वाजसनेयिन भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष कपिलेश्वर झा

12. बरहनपुरिया वरहेंन
ऋषिगोत्र वत्स
प्रवर 5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम बुधवारे-महिषी

शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	शिव
चरण	वाम
वाजसनेयिन	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
बीजी पुरूष	रघुदेव झा
13. [illegible]	[illegible]
ऋषिगोत्र	वत्स
प्रवर 5	वत्स, और्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम	पलिवार-हाटी
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	शिव
चरण	वाम
वाजसनेयिन	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
बीजी पुरूष	महिदेव झा
14. मौरथरिया	मौरथरी
ऋषिगोत्र	वत्स
प्रवर 5	वत्स, और्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम	[illegible]
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	शिव
चरण	वाम
वाजसनेयिन	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
बीजी पुरूष	राघव झा
15. सिपकवार	सिपक
ऋषिगोत्र	वत्स
प्रवर 5	वत्स, और्वच्य, अप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम	करमहे-तरौनी
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	शिव
चरण	वाम
वाजसनेयिन	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
बीजी पुरूष	कमलाकान्त झा
16. हुसेनीवार	हुसायन

ऋषिगोत्र	वत्स
प्रवर 5	वत्स, और्वच्य, आप्लवान, भार्गव, जमदग्नि
मूल-ग्राम	पलिवार-हरिपुर
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	शिव
चरण	वाम
वाजसनेयिन	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
बीजी पुरुष	इन्द्रकान्त झा

(3) कश्यप गोत्र के 27 खेड़े (गाँव)

1. अमरोहिया	अमरोहा
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	काश्यप, वत्सार, नैध्रुव
मूल-ग्राम	दरहरे-सहसराम
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायगिनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
बीजी पुरुष	[illegible] मिश्र
2. [illegible]	[illegible]
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	काश्यप, वत्सार, नैध्रुव
मूल-ग्राम	[illegible]
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	पाठक
बीजी पुरुष	ज्ञानदेव पाठक
3. कसेरुवार	कसेरु
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैध्रुव
मूल-ग्राम	भिगवाले-भिगोली
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	अरूणादत्त झा
4. कासिमपुरिया	कासिमपुर
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	दरहरे-डीह
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	सूर्यकान्त मिश्र
5. गुड़ेरावार	गुड़ेरा
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	मड़रे-बाड़ी
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	शिवपाणि झा
6. घुरूघुरावार	घुरूघुरा
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	पंडुए-महेन्द्रो
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	गोविन्द झा
7. जलेसरिया	जलेसर
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	मडरे-ब्रह्मपुर
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र

वीजी पुरूष	मणिकान्त मिश्र
8. जेसयेवार	जेसया
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	सकिरवार-त्तेल
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	राघवेन्द्र झा
9. टमोटियावार	टमोटिया
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	वलियासे-बल्हा
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	रघुनन्दन झा
10. टूलईवार	टूलई
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	मडरे-कटईया
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	नन्दन झा
11. तेहरावार	तेहरा
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	मडरे-डीह
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	नरसिंह झा
12. पैसईवार	पैसई
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	दरहरे-राजनपुर
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	राघव झा
13. पैंड़तिया	पेंड़ती
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	वलियासे-नरसाम
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	उमापति मिश्र
14. पाढ़मवार	पाढ़म
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	बलियासे-सकरी
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	पाठक
वीजी पुरूष	देवदत्त पाठक
15. पहावटीवार	पहावटी
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	नरबारे-रामपुर
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	बाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	श्यामजी झा
16. वाहोरिया	वाहोरा
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	पंडुए-महेन्द्रो
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	बलराम झा
17. बल्लाईवार	बल्लई
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	ओइनवार-ओइनी
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर

वीजी पुरूष	महीदेव ठाकुर
18. वारोलिया	वारोला
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	दरहरे-राजनपुर
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	मण्डन झा
19. बछरोंड़िया	वछगाया
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नेंध्रुव
मूल-ग्राम	कुसमारे-धनोजी
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	कमलाकान्त झा
20. बरोलीवार	बरोली
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैंध्रुव
मूल-ग्राम	खोआड़े-नानपुर
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	मदन ठाकुर
21. भमोलावार	भमोला
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैंध्रुव
मूल-ग्राम	दरहरे-राजनपुर
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	उदियाकर झा
22. मदावलीवार	मदावली
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैंध्रुव
मूल-ग्राम	दरहरे-नुतवार
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	मुकुन्द मिश्र
23. मगरोलिया	मागरोल
ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैंध्रुव
मूल-ग्राम	दरहरे-राजनपुर
शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	शिवदत्त झा	वीजी पुरूष	केशवदत्त ठाकुर
24. मुड़सानिया	मुड़सान	26. लुहेटावार	लुहेटा
ऋषिगोत्र	कश्यप	ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैंध्रुव	प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैंध्रुव
मूल-ग्राम	दरहरे-ब्रह्मपुर	मूल-ग्राम	मड़रे-रजोड़ा
शाखा	माध्यान्दिनी	शाखा	माध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी	सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद	वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा	देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि	गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम	चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी	वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम	सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण	मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा	आस्पद	झा
वीजी पुरूष	गौरीशंकर झा	वीजी पुरूष	शिवपाणि झा
25. लोधईवार	लोधई	27. हसोनावार	हसोना
ऋषिगोत्र	कश्यप	ऋषिगोत्र	कश्यप
प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैंध्रुव	प्रवर 3	कश्यप, वत्सार, नैंध्रुव
मूल-ग्राम	मड़रे-गोर	मूल-ग्राम	दरहरे-राजनपुर
शाखा	माध्यान्दिनी	शाखा	माध्यान्दिनो
सूत्र	कात्यायनी	सूत्र	कात्यायनो
वेद	यजुर्वेद	वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा	देवता	उमा
गणपति	त्रिपुरारि	गणपति	त्रिपुरारि
चरण	वाम	चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी	वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम	सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण	मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा	आस्पद	झा

वीजी पुरूष — श्रीकंठ झा

(4) सावर्णगोत्री 3 खेड़े (गाँव)

1. खमानोवार — खमानोगढ़ो
ऋषिगोत्र — सावर्ण
प्रवर 5 — सावर्ण, ओर्वच्य, भार्गव, जमदग्नि, अप्लवान
मूल-ग्राम — पन्चोभे-ददरी
शाखा — माध्यान्दिनी
सूत्र — कात्यायनी
वेद — यजुर्वेद
देवता — सिद्धेश्वरी
गणपति — एकदत्त
चरण — वाम
वाजसनेय — भैरवी
सिखा — वाम
मार्ग — दक्षिण
आस्पद — झा
वीजी पुरूष — गोविन्द मिश्र

2. वकेनिया — बकेनिया
ऋषिगोत्र — सावर्ण
प्रवर 5 — सावर्ण, ओर्वच्य, भार्गव, जमदग्नि, अप्लवान
मूल-ग्राम — पंचोभे-भिट्टी
शाखा — मध्यान्दिनी
सूत्र — कात्यानी
वेद — यजुर्वेद
देवता — सिद्धेश्वरी
गणपति — एकदत्त
चरण — वाम
वाजसनेय — भैरवी
सिखा — वाम
मार्ग — दक्षिण
आस्पद — झा
वीजी पुरूष — श्यामादत्त झा

3. राजोरिया — राजपुर
ऋषिगोत्र — सावर्ण
प्रवर 5 — सावर्ण, ओर्वच्य, भार्गव, जमदग्नि, आप्लावान
मूल-ग्राम — पंचोभे-झउआ
शाखा — मध्यान्दिनी
सूत्र — कात्यायन
वेद — यजुर्वेद
देवता — सिद्धेश्वरी
गणपति — एकदत्त
चरण — वाम
वाजसनेय — भैरवी
सिखा — वाम
मार्ग — दक्षिण
आस्पद — पाठक
वीजी पुरूष — राधारमण पाठक

(5) भारद्वाज गोत्री 20 खेड़े (गाँव)

1. उड़ेसरिया — उड़ेसरा
ऋषिगोत्र — भारद्वाज
प्रवर 3 — भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम — विलोचे-सुदई
शाखा — मध्यान्दिनी
सूत्र — कात्यानी
वेद — यजुर्वेद
देवता — गौरी

गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	चिन्तामणि झा
2. गुपलियावार	गुपलिया
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाज,आंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	विलोंचे-सुदई
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	वेदराम मिश्र
3. छलेसरिया	छलेसरा
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाज,आंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	विलोंचे-रूतवार
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	अक्रूर झा
4. जसोलीवार	जसोली
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाज,आंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	विलोंचे-रूतवार
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	देवानन्द झा
5. दुनेटियावार	दुनेटिया
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	विलोंचे-सुदई

शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	हरीकान्त झा
6. वनेलवार	बनेल
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	विलोंचे-सुदई
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	वंशीधर झा
7. वादरेवार	विदरका
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	विलोंचे-सुदई
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	मणिधर झा
8. वावसेवार	बवसी
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाजआंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	विलोंचे-ओझोल
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	रघुनन्दन झा
9. वाधँनूवार	बाँधनू
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाजआंगिरस, वार्हस्पत्य

ऋूल-ग्राम	विलोंचे-सुदई
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	रमाकान्त झा
10. बमनोइया	बमनोई
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाजआंगिरस, वार्हस्पत्य
ऋूल-ग्राम	विलोंचे-सुदई
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	रत्ती झा
11. विलारीवार	विलारा
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस,
	वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	विलोंचे-सुदई
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	कमलकान्त झा
12. बेलवनिया	बेलवन
ऋषिगोत्र	भारद्वाज
प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	कलिगामे-कलिगाम
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	माधवेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	जगन्नाथ झा
13. विलोंठेवार	बैलोंठ

	ऋषिगोत्र	भारद्वाज
	प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
	मूल-ग्राम	कलिगामे-कलिगाम
	शाखा	माध्यान्दिनी
	सूत्र	कात्यानी
	वेद	यजुर्वेद
	देवता	गौरी
	गणपति	माधवेश्वर
	चरण	वाम
	वाजसनेय	भैरवी
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरूष	सारूपदत्त झा
14.	भांड़रीवार	भांड़री
	ऋषिगोत्र	भारद्वाज
	प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
	मूल-ग्राम	विलोंचे-कल्होली
	शाखा	मध्यान्दिनी
	सूत्र	कात्यानी
	वेद	यजुर्वेद
	देवता	गौरी
	गणपति	माधवेश्वर
	चरण	वाम
	वाजसनेय	भैरवी
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरूष	मधुसूदन झा
15.	भगोसिया	भगोसा
	ऋषिगोत्र	भारद्वाज
	प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
	मूल-ग्राम	विलोंचे-मुदई
	शाखा	मध्यान्दिनी
	सूत्र	कात्यानी
	वेद	यजुर्वेद
	देवता	गौरी
	गणपति	माधवेश्वर
	चरण	वाम
	वाजसनेय	भैरवी
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	पाठक
	वीजी पुरूष	उदित पाठक
16.	राममठिया	रमठिया
	ऋषिगोत्र	भारद्वाज
	प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
	मूल-ग्राम	विलोंचे-काको
	शाखा	मध्यान्दिनी
	सूत्र	कात्यानी
	वेद	यजुर्वेद
	देवता	गौरी
	गणपति	माधवेश्वर
	चरण	वाम
	वाजसनेय	भैरवी
	सिखा	वाम

	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरूष	जगन्नाथ झा
17.	रायटवार	रायट
	ऋषिगोत्र	भारद्वाज
	प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
	मूल-ग्राम	विलोंचे-सुदई
	शाखा	मध्यान्दिनी
	सूत्र	कात्यानी
	वेद	यजुर्वेद
	देवता	गौरी
	गणपति	माधवेश्वर
	चरण	वाम
	वाजसनेय	भैरवी
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरूष	देवानन्द झा
18.	लोहवनियां	लोहवन
	ऋषिगोत्र	भारद्वाज
	प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
	मूल-ग्राम	इखोरे-कल्होली
	शाखा	मध्यान्दिनी
	सूत्र	कात्यानी
	वेद	यजुर्वेद
	देवता	गौरी
	गणपति	माधवेश्वर
	चरण	वाम

	वाजसनेय	भैरवी
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरूष	माधवानन्द झा
19.	सिरोहीवार	सैरोही (सैरोई)
	ऋषिगोत्र	भारद्वाज
	प्रवर 3	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
	मूल-ग्राम	विलौंचे-सुदई
	शाखा	मध्यान्दिनी
	सूत्र	कात्यानी
	वेद	यजुर्वेद
	देवता	गौरी
	गणपति	माधवेश्वर
	चरण	वाम
	वाजसनेय	भैरवी
	सिखा	वाम
	मार्ग	दक्षिण
	आस्पद	झा
	बीजी पुरूष	लहरदेव झा
20.	इसोलीवार	इसोली
	ऋषि गोत्र	भारद्वाज प्रवर
	मूलग्राम	विलोंचे, सुदई
	साखा	मध्यान्दिगो
	सुत्र	कात्यायनी
	वेद	यजुर्वेद
	देवता	गोरी
	चरण	वाम
	बीजी पुरुष	झम्मन झा

(6) पाराशर गोत्र 10 खेड़े (गाँव)

1. टिकारीवार — टिकारी
ऋषिगोत्र — पाराशर
प्रवर 3 — पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम — नरौंने-सक्तरापुर
शाखा — मध्यान्दिनी
सूत्र — कात्यानी
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
गणपति — पशुपतेश्वर
चरण — वाम
वाजसनेय — भैरवी
सिखा — वाम
मार्ग — दक्षिण
आस्पद — झा
वीजी पुरूष — हरीकान्त झा

2. धर्मपुरिया — धर्मपुर
ऋषिगोत्र — पाराशर
प्रवर 3 — पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम — नरौंने-सोलनी
शाखा — मध्यान्दिनी
सूत्र — कात्यानी
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
गणपति — पशुपतेश्वर
चरण — वाम
वाजसनेय — भैरवी
सिखा — वाम
मार्ग — दक्षिण
आस्पद — झा
वीजी पुरूष — देवी झा

3. पहोरिया — पहोरा
ऋषिगोत्र — पाराशर
प्रवर 3 — पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम — पिहवारे-हरनाडीह
शाखा — मध्यान्दिनी
सूत्र — कात्यानी
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
गणपति — पशुपतेश्वर
चरण — वाम
वाजसनेय — भैरवी
सिखा — वाम
मार्ग — दक्षिण
आस्पद — झा
वीजी पुरूष — मधुसूदन झा

4. पुरदिलपुरिया — पुरदिलपुर
ऋषिगोत्र — पाराशर
प्रवर 3 — पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम — नरौंने-सक्तरापुर
शाखा — मध्यान्दिनी
सूत्र — कात्यानी
वेद — यजुर्वेद
देवता — शुभ्रा
गणपति — पशुपतेश्वर
चरण — वाम
वाजसनेय — भैरवी
सिखा — वाम
मार्ग — दक्षिण
आस्पद — झा

वीजी पुरूष विद्याधर झा

5. बादोरिया वादोरा
ऋषिगोत्र पाराशर
प्रवर 3 पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम सुरगणो-पिलोखर
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यानी
वेद यजुर्वेद
देवता शुभ्रा
गणपति पशुपतेश्वर
चरण वाम
वाजसनेय भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष रमणदेव झा

6. भाड़ीरबनियां भाड़ीरवन
ऋषिगोत्र पाराशर
प्रवर 3 पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम नरोंने-वस्तवार
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यानी
वेद यजुर्वेद
देवता शुभ्रा
गणपति पशुपतेश्वर
चरण वाम
वाजसनेय भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद चौधरी

वीजी पुरूष चन्द्रकान्त चौधरी

7. मांटवार मांट
ऋषिगोत्र पाराशर
प्रवर 3 पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम सुरगणो-लोआम
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यानी
वेद यजुर्वेद
देवता शुभ्रा
गणपति पशुपतेश्वर
चरण वाम
वाजसनेय भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा
वीजी पुरूष पूरनदेव झा

8. मढ़ोलीवार मढ़ोली
ऋषिगोत्र पाराशर
प्रवर 3 पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम सुरगड़े-पिलोखरि
शाखा मध्यान्दिनी
सूत्र कात्यानी
वेद यजुर्वेद
देवता शुभ्रा
गणपति पशुपतेश्वर
चरण वाम
वाजसनेय भैरवी
सिखा वाम
मार्ग दक्षिण
आस्पद झा

बीजी पुरुष	रत्नपति झा
9. घोहियास	घोहि
ऋषिगोत्र	पराशर
प्रवर 3	पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम	नरौने–सेसौल
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	सूर्य
गणपति	सुमुखेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
शिखा	वाम
नख	दक्षिण
आनन्द	झा
बीजी पुरुष	देवनाथ झा
10. हिन्डोलिया	हिन्डोल
ऋषिगोत्र	पराशर
प्रवर 3	पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
मूल-ग्राम	नरौने–नरवनपुर
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	सूर्य
गणपति	सुमुखेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
शिखा	वाम
नख	दक्षिण
आनन्द	झा

बीजी पुरुष	श्रीदेव झा

(7) गौतम गोत्र के 4 खेड़े (गांव)

1. करोतिया	करोत
ऋषिगोत्र	गौतम
प्रवर 3	आंगिरा, वशिष्ठ, बार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	ब्रह्मपुरिये–ब्रह्मपुर
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	गणपती
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
शिखा	वाम
नख	दक्षिण
आनन्द	झा
बीजी पुरुष	दिगम्बर झा व पाठक
2. कनहवार	कनह
ऋषिगोत्र	गौतम
प्रवर 3	आंगिरा, वशिष्ठ, बार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	बुधौड़े–पचाढ़ी
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	गणपती
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
शिखा	वाम
नख	दक्षिण

आस्पद	झा
बीजी पुरूष	गोकुलनाथ झा
3. मीरपुरिया	मीरपुर
ऋषिगोत्र	गौतम
प्रवर 3	अंगिरा, वशिष्ठ, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	ब्रह्मपुरिये-बुसवाड़ी
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	गणपती
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
बीजी पुरूष	महेश झा
4. रामपुरिया	रामपुर
ऋषिगोत्र	गौतम
प्रवर 3	अंगिरा, वशिष्ठ, वार्हस्पत्य
मूल-ग्राम	ब्रह्मपुरिये-ब्रह्मपुर
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	गणपती
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण

आस्पद	झा
बीजी पुरूष	नारायन झा

(8) कौशिक गोत्र के 9 खेड़े (गाँव)

1. गिरधरपुरिया	गिरधरपुर
ऋषिगोत्र	कौशिक
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-वरहो
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
बीजी पुरूष	हसानन्द ठाकुर
2. गंगोलीवार	गंगोली
ऋषिगोत्र	कौशिक
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-वरहो
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम

मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
बीजी पुरुष	दयानन्द ठाकुर
3. चंदौलिया	चंदौल
ऋषिगोत्र	कौशिक
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-बरहो
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठकुर
बीजी पुरुष	विद्यानन्द ठकुर
4. फरोलवार	फरोली
ऋषिगोत्र	कौशिक (विश्वामित्र)
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-निकुती
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम

मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
बीजी पुरुष	श्रीनाथ ठाकुर
5. बैजुआवार	बैजुआ
ऋषिगोत्र	कौशिक
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-निकतो
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
बीजी पुरुष	चिन्तामणि ठाकुर
6. वामोलिया	वामोली
ऋषिगोत्र	कौशिक
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-ब्रह्मपुर
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम

मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	ब्रह्मानन्द झा
7. महावरिया	महारिया (माहनमाला)
ऋषिगोत्र	कौशिक
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-वरही
शाखा	कौथमी
सूत्र	गोभिल
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
वीजी पुरूष	महीनाथ ठाकुर
8. सदरवनिया	सदरवन
ऋषिगोत्र	कौशिक
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-वरही
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम

मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
वीजी पुरूष	दिगम्बर ठाकुर
9. [illegible]	[illegible]
ऋषिगोत्र	कौशिक
प्रवर 3	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि
मूल-ग्राम	निकुतवार-वरही
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यायनी
वेद	यजुर्वेद
देवता	तप्तेश्वरी
गणपति	नागेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
वीजी पुरूष	दिगम्बर ठाकुर

(९) कात्यायन गोत्री 10 खेंड़े (गाँव)

1. कोंड़रीवार	कोंड़री
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल-ग्राम	कुंजिलवार-कुन्जोली
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी

सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	श्रीदेव झा
2. आरतीबार	आरती
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल-ग्राम	कुंजिलवार-कुन्जोली
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	शंकरदेव झा
3. अगवारिया	अगवार
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल-ग्राम	रतिगामे-रतिगाम
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी

सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्प	दझा
वीजी पुरूष	धीरनाथ झा
4. उदावलीवार	उदावली
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल-ग्राम	कुंजिलवार-भकरोली
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	जानकी झा
5. चुरसैंनिया	चुरसैंन
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल-ग्राम	कुंजिलवार-लोआम
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी

सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	हरिदेव झा
6. परसुरिया	पाराशर
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल–ग्राम	कुंजिलवार–दिगोन
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	शिवराम झा
7. वमानियाँ	वमान
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल–ग्राम	कुंजिलवार–उल्लू
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी

सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	ठाकुर
वीजी पुरूष	श्रीपति ठाकुर
8. मुनाईवार	मुनाई (मुनी)
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल–ग्राम	कुंजिलवार–सतेढ़
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	उमानाथ झा
9. रिसगमावार	रिसिगमा
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम

मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	शंकरदेव झा
10. लोहईवार	लोहई
ऋषिगोत्र	कात्यायन
प्रवर 3	कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
मूल-ग्राम	कुंजिलवार-मलगिया
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	क्षेमप्रदा
गणपति	गजानन
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	मुखपाणि झा

(10) कृष्णात्रेय गोत्री 2 खेड़े (गाँव)

1. भमनखेरिया	भमनखेरिया
ऋषिगोत्र	कृष्णात्रेय
प्रवर 3	कृष्णात्रेय,आप्लवान, सारस्वत
मूल-ग्राम	भुसबड़े-राजे
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	शिव
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	केशव झा
2. सिंधोलिया	सिंधोली
ऋषिगोत्र	कृष्णात्रेय
प्रवर 3	कृष्णात्रेय,आप्लवान, सारस्वत
मूल-ग्राम	भुसबड़े-अंदोली
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	उमा
गणपति	शिव
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	रूद्रभाल झा

(11) वशिष्ठ गोत्री 1 खेड़ा (गाँव)

1. रहनियां	रहना
ऋषिगोत्र	वशिष्ठ
प्रवर 3	वशिष्ठ, शक्ति, पराशर
मूल-ग्राम	वरबे-पण्डोली
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी

गणपति	सिद्धेश्वर
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	मिश्र
वीजी पुरूष	राघवानन्द मिश्र

(12) गार्ग्य गोत्री 5 खेड़े (गाँव)

1. गुरेटावार	गुरेटा
ऋषिगोत्र	गार्ग्य
प्रवर 5	गार्ग्य, धृत, कौशक, माण्डव्य, वैशम्पायन
मूल–ग्राम	बसहे–बसाम
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	एकदत्त
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	देवदत्त झा
2. पिथरोलीया	पथोली
ऋषिगोत्र	गार्ग्य
प्रवर 5	गार्ग्य, धृत, कौशक, माण्डव्य, वैशम्पायन
मूल–ग्राम	बसहे–बसाम
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	एकदत्त
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	राघवेन्द्र झा
3. वरसानिया	वरसाना
ऋषिगोत्र	गार्ग्य
प्रवर 5	गार्ग्य, धृत, कौशक, माण्डव्य, वैशम्पायन
मूल–ग्राम	वसहे–बसाम
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	एकदत्त
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	हरीकृष्ण झा
4. सेहीवार	सेही
ऋषिगोत्र	गार्ग्य
प्रवर 5	गार्ग्य, धृत, कौशक, माण्डव्य, वैशम्पायन

शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	एकदत्त
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	रघुनाथ झा
5 सतोहेवार	सतोहा
ऋषिगोत्र	गार्ग्य
प्रवर 5	गार्ग्य, धृत, कौशक, माण्डव्य, वैशम्पायन
मूल-ग्राम	वसहे-दसाम
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अम्बा
गणपति	एकदत्त
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिणा
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	उमेश झा

(13) मौदगल्य गोत्री 1 खेड़े (गाँव)

1. हसायनवार	हसायन
ऋषिगोत्र	मौदगल्य
प्रवर 3	मौदगल्य, वर्हस्पत्य, अंगिरस
मूल-ग्राम	मलिछवार-नरोछ
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	अन्नपूर्णा
गणपति	शिव
चरण	वाम
वाजसनेय	भैरवी
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा
वीजी पुरूष	सुधाकर झा

(14) विष्णुवृद्धि गोत्री 1 खेड़े (गाँव)

1. नाटनोरिया	नाटनोर
ऋषिगोत्र	विष्णुवृद्धि
प्रवर 3	विष्णुवृद्धि,कौरूप, क्षत्रासदस्य
मूल-ग्राम	कोंथुए-तुमोल
शाखा	मध्यान्दिनी
सूत्र	कात्यानी
वेद	यजुर्वेद
देवता	गौरी
गणपति	गणपति
चरण	वाम
छन्दोग	छन्दगायन
सिखा	वाम
मार्ग	दक्षिण
आस्पद	झा

वीजी पुरूष	ग्रहपाणि झा	वीजी पुरूष	रजनीनाथ झा
(15) कौण्डिल्य गोत्री 2 खेड़े (गाँव)		2. सूरबार	सूरज
1. लालपुरिया	लालपुर	ऋषिगोत्र	कौण्डिल्य
ऋषिगोत्र	कौण्डिल्य	प्रवर 3	कौण्डिल्य, आस्तीक, कौशिक
प्रवर 3	कौण्डिल्य, आस्तीक, कौशिक	मूल-ग्राम	परिसडे-नरोंछ
मूल-ग्राम	परिसडे-नरोंछ	शाखा	मध्यान्दिनी
शाखा	मध्यान्दिनी	सूत्र	कात्यानी
सूत्र	कात्यानी	वेद	यजुर्वेद
वेद	यजुर्वेद	देवता	उमा
देवता	उमा	गणपति	त्रिपुरारी
गणपति	त्रिापुरारी	चरण	वाम
चरण	वाम	वाजसनेय	भैरवी
वाजसनेय	भैरवी	सिखा	वाम
सिखा	वाम	मार्ग	दक्षिण
मार्ग	दक्षिण	आस्पद	झा
आस्पद	झा	वीजी पुरूष	शिवदत्त झा

पूर्व पंजी "अनुसार"
पंजीकार प० श्रीदेवचन्द्र मिश्र व श्री गोविन्द मिश्र उर्फ विजयचन्द मिश्र
सौराठ सभा टोला-पोखरोनी, जि० मधुवनी
दरभंगा (मिथिलांचल) दि. 21-9-2002

नोट – ब्रज क्षेत्र में मिथिला के मैथिल ब्राह्मणों की प्रवास में संख्या 150 के लगभग पाई गई है। जो सन् 1454-55 से सन् 1500 तक आये पश्चात भी आगमन होता रहा है। मिथिला से पलायन कर ब्रजमण्डल मैनपुरी, एटा, आगरा, मथुरा, अलीगढ़, राजस्थान, अजमेर, झाँसी, दिल्ली आदि स्थानों के समीप क्षेत्रो में आकर प्रवास किया। अभी व्रज में प्रवासी मैथिल ब्राह्मण और भी दृष्टि आये हैं। जो अभी 50 वर्षो से प्रवासी है।

शुद्ध नाम	अशुद्ध नाम
बकोंनिया	बकेनिया
विघोटेवार	विघोरेवार

वलाईवार	विलाईवार
ऊभईवार	ऊघईवार
ककरोठिया	कंकरोलिया
जखोतिया	जखेदिया
असोदावार	अगोधावार
राजोरिया	रजोलिया
इसौलिया	इसौदिया
धनोलिया	दनोलिया
विसूँदरिया	वसुधरिया
पाहोरिया	पहेड़िया
महावनिया	महावलिया
वाहोरिया	पहोरिया

नोट – खेड़ों का शुद्ध उच्चारण करना ही सार्थक होता है। अशुद्ध खेड़े नामों के उच्चारण से जातीयता का नाश होता है। आगे जो सूची है, वो संदिग्ध खेड़ों की सूची है जो पूर्व सूची के आधार से है उनमें कुछ खेड़े सार्थ सिद्धि हैं उन खेड़ों को चिन्हित किया गया है। यह खेड़े दृष्टि में परिपुष्ट सिद्ध हुए हैं। बाकी खेड़ों के बारे में जानकारी करना जरूरी है। अगर कहीं कहीं कोई जानकारी सज्जनों को हो तो परामर्श सूचना अति आवश्यक है। मेरा जातीय भाईयों से निवेदन है कि जो मैं लिख रहा हूँ, उसमें त्रुटि पाने पर सुधारने का कष्ट करें। मुझे जैसा सुनने और पढ़ने को मिला है वही लिखा है।

'संदिग्ध खेड़े कुछ पुष्टि सिद्धि'

त्योरीवार		धनोलीवार	ॐ
रहीमपुरिया		मोरथरिया	ॐ
कनेनीवार		जैसयेवार	ॐ
जसोलीवार	ॐ	वनेलिया	ॐ
धर्मपुरिया	ॐ	बिठोलीवार	ॐ
गोवरधनिया		मड़ोलीवार	ॐ
नन्दवार		ककेथरिया	ॐ
छलेसरिया	ॐ	पहावटीवार	ॐ
नहैजेवार		भिलावलीवार	ॐ
रोहईवार	ॐ	चंडोसिया	ॐ

रिसगमावार	ॐ	गिरधरपुरिया	ॐ
वहलियावार		मुड़सानिया	ॐ
कन्होलीवार		फरोलीवार	ॐ
हसायनवार	ॐ	झरोटावार	ॐ
भिलावटीवार	ॐ	दीनदयालपुरिया	ॐ
फरेनवार	ॐ	नगोलावार	ॐ
		मिरेंचीवार	ॐ
पाराशुरिया		पुरदिलपुरिया	ॐ
हाथरसिया	ॐ	दूलईवार	ॐ

यह संदिग्ध खेड़ों की संख्या 14 है। तथा बाकी 24 की संख्या पुष्टि युक्त है। जो कि कुछ विद्वान ब्राह्मणों ने कुल 13 ऋषि गोत्रें की सूची व्यवस्था जाहिर की है। यह मुद्गल ऋषिगोत्र व वशिष्ठ ऋषिगोत्र दिखाये ही नहीं है। जब कि 15 गोत्रों के मैथिल विप्र बृजस्थ तथाआस पास के क्षेत्रों में मौजूद हैं। ऊपर के दो ऋषि गोत्रों में यह 24 खेडे हैं। कुछ अन्यों में भी व्यवस्था है। प्रिय बन्धुओं जितनी उपलब्धी हुई है। उतना हीं लिखपाया हूँ। दरभंगा राज्य से आने वाले परिवारों की पूर्व संख्या एक सौ पचास की प्रमाणित है।

(मैथिल ब्राह्मणा गौड़ सम्प्रदाय के है।)

"इति मैथिल ब्राह्मण वर्णन"

11. 'गौतम ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन'

सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के विधि - विधानानुसार पूर्व मन्वन्तरों के अनुरूप ऋषि वंशों की उत्पत्तिया होती रही हैं। जैसा कि-

श्लोक - यदास्य ताः प्रजाः सर्वा न व्यवर्धन्त धीमतः ।
अथान्यान्मानसान्धुत्रान्सदृशानात्मनो ऽसृजत् ॥4
भृगुं पुलस्त्यं पुलहं क्रतमङ्गिरसं तथा ।
मरीचिं दक्षमत्रिं च वसिष्ठ चैव मानसान् ॥ 5
नव ब्राह्मण इत्येते पुराणो निश्चयं गताः ।6

(विष्णु पुराणा पृष्ठ 23 श्लोक 4, 5, 6)

अर्थ - महा बुद्धिमान प्रजापति ब्रह्माजी ने प्रजा न बढने पर पुत्र पौत्रादि क्रम से उन्होंने भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा मरीच, दक्ष, अत्रि और वसिष्ठ इन अपने ही समान अन्य मानस पुत्रों को सृष्टी की पुराणों में यह नौ ब्रह्मा माने गये हैं।

पूर्व काल का वृतांत है कि ब्रह्मा पुत्र अंगिरा ऋषि अंग देश जिसे नेपाल कहा जाता है। जो विहार प्रान्त की सीमा क्षेत्र है, वहाँ राजा जनक की वसाई हुई एक नगरी है। जिसे जनकपुरी या मिथिला पुरी नाम से संसार जानता है। इसी मिथिलान्चल क्षेत्र से एक नदी गौतमी नामकरि के गुजरती है, इसी गौतमी तट पर ऋषि अंगिरा ने घोर तप किया। ऋषि की तपस्या से इन्द्र देव भयभीत हुए और पिलोत्मा नाम की अप्सरा को ऋषितप भंग करने के लिए भेज दिया। अंगिरा ऋषि की आँखे खुलते ही अप्सरा को देखकर वीर्य रखलित हो गया। अंगिरा का वीर्य घास के गुच्छ पर गिरा उस घास के गुच्छ में शसक छिपा हुआ था।

ऋषि वीर्य शसक की पीठ पर पड़ते ही देदीप्तमान दिव्य वालक प्रकट हुआ। जो कि गौतमी नदी तट घोर तपस्या करके और वहीं वास करने के फलस्वरूप गौतम ऋषि करिके प्रसिद्धि हुए। और गौतमनाम से न्यायशास्त्र के प्रवर्तक माने गये, वेद, वेदाङ्गों के भी प्रकान्ड विद्वान हुए। विद्या के धनी संसार में विख्यात हुए।

ये ही गौतम ब्राह्मण करिके वंश प्रवर्तक हुए इनके शाखा भेद हुए।

श्लोक - विवस्वतरसुतो विप्र श्राद्धदेवो महाद्युतिः।
मनुरसंवर्तते धीमान साम्प्रतं सप्तमेऽन्तरे ॥ 30
आदत्य वसुरूद्राद्या देवाश्चात्रा महामुने।
पुरन्दरस्त थैवात्रा मैतेय त्रिदशेस्वर : ॥ 31

वसिष्ठ : काश्यपोऽथात्रिर्जमदग्निस्स गौतमः । 32

(विष्णु पुराणा पृष्ठ 165 श्लोक 30,31,32)

अर्थ – यह सातवें मन्वन्तर में सूर्य के पुत्र महातेजस्वी और बुद्धिमान श्राद्धदेवजी मनु हैं। इस समय मन्वन्तर में आदित्य, वसु और रूद्र आदि देवगण हैं। तथा पुरन्दर नामक इन्द्र है, यह वसिष्ठ, कश्यप अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र और भारद्वाज ये सात सप्त ऋषि हैं वंश प्रवर्तक गौतम के कई गौतम हुए हैं जो निम्न हैं।

आंगिरस, दधीच, कौशिक, दीर्घत्तमस, प्राचेतस, काक्षीतस, श्रावत्स आदि जो सर्वत्र बसे हुए हैं।

श्लोक – मुद्गलाश्च मौद्गल्याः क्षत्रोपेता द्विजातयो बभूवुः ॥60
मुद्गलाद वृहदश्वः ॥61
वृहदश्वाद्दिवोदासोऽहल्या च मिथुनमभूत् ॥62
शरद्वतश्चाहल्यायां शतानन्दोऽभवत् ॥63
शतानन्दात्सत्य धृतिर्धनुर्वेन्तगो जज्ञे ॥64
सत्यधृतेरिप्सरसमुर्वशीं दृष्टा रैतस्कन्नं शरस्तम्वे पपात ॥65
तच्च दिधागतमपत्यद्वयं कुमारः कन्या चाभवत् ॥66
तो च मृगया मुष्यातश्शान्त नु दृष्ट्वा कृपया जग्राह ॥67
ततः कुमारः कृपः कन्या चाश्वत्थाम्रो जननी कृपी द्रोणाचार्यश्य पत्न्य भवत् ॥ 68

(विष्णु पुराणा पृष्ठ 181 श्लोक 60 से 65)

अर्थ – मुदगल से मोद्गल्य नामक क्षत्रोपेत ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई। मुद्गल से वृहदश्व और वृहदश्व से दिवोदास नामक पुत्र एवं अहल्या नामकी एक कन्या का जन्म हुआ। अहिल्या से महर्षि गौतम के द्वारा शतानन्द हुए ये राजा जनक के कुलगुरु (प्रोहित) हुए। शतानन्द के पुत्र उत्पन्न हुए सत्यधृति यह धनुर्वेद के पारदर्शी हुए। एक वार अप्सराओं में श्रेष्ठ उर्विशी को देखने से वीर्य रखलित हो गया और शरस्तम्ब (सरकन्डे) पर पड़ा उससे दो भागो में वट जाने से पुत्र और पुत्री रूप दो सन्तानें उत्पन्न हुई उन्हें मृगया के लिये राजा शान्तुन कृपावस ले आये तदन्तर पुत्र का नाम कृपा हुआ तथा पुत्री का नाम कृपी हुआ जो द्रोणाचार्य की पत्नी व अश्वत्थामा की माता कृपी हुई।

मिथिला में आज भी गौतम कुटी तथा अहिल्या कुन्ड प्रमाणिक व दार्शनिक तीर्थ स्थल विद्यमान है। यही गौतम ऋषि न्याय शास्त्र के प्रचेता हुए जिन्होंने न्यायशास्त्र की रचना करि न्याय की संज्ञा उपलब्ध की।

गौतम ब्राह्मण अपने शादी सम्वन्ध गौतमों में ही करते हैं। इनकी शादी सम्वन्ध व्रज प्रवास होने पर

अल्लगोत्रों की व्यवस्था के आधार से होते हैं। यह मिथिला की पावन पवित्र विद्या की खान से उत्पन्न गर्भ से ही साहसी न्यायप्रिय और श्रेष्ट विद्वान होते हैं।

गौतम ब्राह्मणों का ऋषि गोत्र तो गौतम ही है। अल्लगोत्र स्थानों के आधार स्वरूप हैं, जो मुख्य अल्लगोत्र 52 हैं, परन्तु शाखा हैं जो शाखा मिला कर अस्सी की अल्लगोत्र संख्या हैं। जिसे लेखक ने अल्लगोत्रों की स्थान नाम तथा आस्पदों के सहित तालिका में दर्शाया है। यह अलीगढ़, मथुरा, आगरा, ऐटा, मैनपुरी आदि व्रजसमीपस्थ क्षेत्र में प्रवासी हैं। वैसे अब तो सभी स्थानों पर सभी वर्ग के ब्राह्मणा अक्सर दूर-दूर तक फैले हुए हैं। मुझे जितना जानकारी में पाया है, अध्ययन करि उतना ही प्रमाणिक तोर पर इस "ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण" में दर्शाया है त्रुटि को सुधारने की आवश्यकता है। क्योंकि बुद्धि से स्वयं बुद्धिजीवी और श्रेष्ठ जाति ब्राह्मण की ही हुआ करती है। यहाँ लेखक का समयानुसार निवेदन है, कि गोत्रों की सूची से गोत्र उतार करने की चेष्टा न करें। मान लीजिये साधारण कागज पर आप ने गोत्र सूची उतार ली और सूची जेब में रखली कहीं मार्ग में गिर सकती है नोटों के चकर में जेब काट कर जेबकट के हाथ लगेगी और जेबकट न्यूनजाति का हुआ तो वही उनको अपनी सारी जाती में प्रसार कर गौतम ब्राह्मण अधिक मात्रा में उत्पन्न होंगे या मार्ग में जेब से लिप्ट कहीं गिर सकती है, और वह किसी के हाथ लग ही जायगी तो मामला गड़बड़ हो जायगा। इसलिये इसे पावन पवित्र ग्रन्थ मानते हुए उतार पूर्ण सूची का न करें न करने दें हाँ कोई भी स्वयं के 2-3-4 खास गोत्र ही उतार करें, वैसें ही अन्य जातियों के लोग घुसने की चेष्टा कर ही रहे हैं। कोई गौतम लिखता है कोई शर्मा कोई तिवारी कोई सारस्वत कोई व्यास कोई उपाध्याय आदि आदि आस्पद लगा रहे है। यह हाल देख लेखक ने इस पुस्तक को बड़े कठिन प्रयासो से दसयों वर्ष भटक कर आपकी सेवा में प्रेषित किया है। मात्र ब्राह्मणों के ब्राह्मणत्व का स्वरक्षा कवच गोत्र ही होते हैं। इन्हीं गोत्रों के द्वारा ब्राह्मण जाती अभी जिन्दा है। वरना वर्णसंकर बनने में जरा भी कसर नहीं रह रही है। कुछ लालची लोगों ने पुस्तकें लिखकर अल्प लालच बस बाजार में बेच दी हैं। यह पुस्तक सत्य निष्ठा के साथ बाजार में बिक्री के लिये नहीं है। इस की प्राप्ति के लिये स्थान नियतो की सूची लगी हुई है। मात्रः ब्राह्मण पुत्रों को ही मिलेगी।

"गोत्र-सारिणी"
गौतम ब्राह्मणों के अल्ल व स्थान विशेष सूचक।

सं	ऋषि नाम	स्थान नाम	अल्लगोत्र
	गौतम	-	-
1.	"	नेरे या नेरा	उपाध्याय
2.	"	नोंह	तिवारी
3.	"	-	दीक्षित
4.	"	भ्याऊ	जोशी या ज्योतिषी
5.	"	वद्देपुरा	भट्ट
6.	"	-	प्रधान
7.	"	-	पुरोहित
8.	"	-	चतुर्वेदी
9.	"	-	दुवेदी
10.	"	-	त्रिवेदी
11.	"	-	वेदी व्यास
12.	"	चौमुहां	चौमुहियां
13.	"	गहों	गेंहुआं
14.	"	भमोला	भमोरिया
15.	"	दुहेर	दुहरायत
16.	"	वांकनेर	वांकुनेरिया, वकनेरिया
17.	"	ओहावा	ओविया
18.	"	पटा	पटायत
19.	"	तेगुना	तिगुनायत
20.	"	लमतोली	लमतोलिया, नमतोरिया
21.	"	वामई	वामिया
22.	"	मघेरे या मघेरा	मघहेरिया, मघेरिया
23.	"	वसपुरा	वसपुरिया, विश्वपूरिया
24.	"	खेरिया	खेरिया

25.	"	जटोला	जटौलिया
26.	"	सेंदरे	सेंदरिया, सैंडलिया
27.	"	कोंकेरा	ककैया, कोंकैया
28.	"	रजौरी	राजौरिया
29.	"	करहारी	करहारिया, करारिया
30.	"	रांधेरा	रांधेरिया
31.	"	लुहेटा	लाटया, लहलोटा
32.	"	चमरोला	चमोलिया
33.	"	गुराहे	गुर्रहा, गुरवा
34.	"	गोभिला	गोभिलिया
35.	"	जामुरे	जमुरिया
36.	"	वहराये	वहरायत
37.	"	"	स्वामी
38.	"	वदनोहा	वदनेहिया
39.	"	वढ़ोत	वढ़ोतिया
40.	"	दोहरि	दुहरायत
41.	"	ढूलई	ढूलरिया
42.	"	मिस्सोली	मिसोलिया
43.	"	सासनी	सहसेंनियां
44.	"	कुम्हेर	कुम्हेरिया, कुमेरिया
45.	"	सूर्तिया	सूतिया, खूतिया
46.	"	हरियाना	हरियाला, हण्डीफोरा
47.	"	कुतबार	कुतवालिया
48.	"	चिरावली	चिरावालिया
49.	"	धनौली	धनौलिहा
50.	"	मल्लपुरा	मल्लपुरिया
51.	"	विछगांये	विछगांरिया, वछोरिया
52.	"	चौवहे	चौविया

नोट - ऊपर के दिये हुए गौतम ब्राह्मणों के 52 अल्लगोत्र शादी सम्बंध व्यवस्था के लिये व्रजमण्डल में प्रवास करने के पश्चात विद्वानजनों ने व्यवस्थित किये थे। वैसे गौतम ब्राह्मणों के प्रकार भेद से गोत्र संख्या अस्सी 80 की पाई गई है वही लेखक ने इस "ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण" नामक पुस्तक में उल्लेख किया है।

अव 52 गोत्र और 28 शाखा इस प्रकार से 80 गोत्र संख्या हुई वह नीचे तालिका में देखें 28 शाखा॥

"तालिका" अन्य 28 और गोत्र संख्या

सं	ऋषि नाम	गोत्र	प्रकार (स्थान)	संख्या
1.	गौतम	ज्योतिशी या जोशी	3 प्रकार के	3
2.	"	भट्ट	10 प्रकार के	10
3.	"	प्रधान	2 प्रकार के	2
4.	"	उपाध्याय	3 प्रकार के	3
5.	"	तिवारी	6 प्रकार के	6
6.	"	दीक्षित	2 प्रकार के	2
7.	"	व्यास	2 प्रकार के	2

"इति गौतम ब्राह्मणा वर्णन" निर्णाय

(गौड़ सम्प्रदाय)

12. "कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के वर्णन"

प्रिय बन्धुओं इस ब्राह्मण जाति का नाम कान्यकुब्ज क्यों हुआ। इस विषय को लेकर हम हिन्दू धर्म वाल्मीकि रामायण से साक्ष्यप्राप्तकर इस ब्राह्मणोंत्पत्ति दर्पण नामक पुस्तक में विस्तार से वर्णन करि आप की सेवा में प्रस्तुत करते हैं।

श्लोक- कुशनाभस्तु राजर्षिः कन्याशतमनुत्मम् । जनयामास धर्मात्मा घृतांच्या रघुनन्दनम् ॥
वास्तु योवनशालिन्यो रूपवत्य स्त्वलंकृताः। उद्यान भूमि मासाद्य प्रावृषीव शतह्रदाः।
गायन्तोनृत्य मानाश्च वादयन्त्यश्च राघव । आमोदपरमं जग्मुर्वराभरण भूषिताः॥
दृष्ट्ठा सर्वात्मको वायुरिदं वचनमब्रवीत॥ अहं वः कामये सर्वा भार्या मम भविष्यथ।
(वाल्मीकि रामायण)

मानुषस्त्यज्यताम्भावो दीर्घमायुर वाप्स्यथ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वायोरक्लिष्ट कर्मण अपहास्य ततो वाक्यं कन्याशतमथा ब्रबीत॥ पिताहि प्रभुरस्माकं दैवतं परमं च सः। यस्य नो दास्यति पिता सनो भर्ता भविष्यति॥ तासां तद्ववचनं श्रुत्वा हरिः परम कोपनः। प्रविश्य सर्वगोत्राणिवभज्ज भगवान्प्रभु॥ स च ता दयिता भाग्रः कन्याः परम शोभनाः। दृष्ट्ठा दीनास्तदा राजा सम्भ्रान्त इदम् व्रवीत। किमिदं कथ्यतां पुज्यः को धर्ममवमन्यते। कुब्जाः केन कृताः सर्वाश्चेष्टन्त्यो नाभिभाषथ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कुशनाभस्य धीमतः। शिरोभिश्चरणौ स्पृष्ट्ठा कन्या शतम भाषत॥ वायुः सर्वात्मको राजन्प्रद्यर्षयितुमिच्छति । अशुभं मार्गमास्थाय न धर्म प्रत्यवेक्षते॥ विसृज्य कन्याः काकुत्स्थ राजा त्रिदश विकमः। मन्त्रज्ञो मन्त्रयामास प्रदानं सह मन्त्रिभि॥ सुबुद्धिं कृतवान राजा कुशनाभः सुधार्मिकः। ब्रह्मदत्ताय काकुत्स्थ दातु कन्या शतं तदा॥ तमाहूय महातेजा ब्रह्मदत्तं महीपतिः। ददौ कन्याशतं राजा सुप्रीते नान्तरात्मना॥ स्पष्ट मात्रो तदा पाणौ विकुब्जं विगत ज्वरम्। युक्तं परमया लक्ष्म्या वभौ कन्याशतं तदा॥ कन्या कुब्जाऽभवन यत्र कान्यकुब्जस्ततो ऽभवत। देशोऽयं कान्य कुब्जारव्यः सदा ब्रह्मर्षि सेवितः॥

वाल्मीकि रामायण 1 से 17 श्लोक

अर्थ – महोदयपुर निवासी महात्मा कुशनाभ राजा के घृतान्ची नाम की रानीथी। उससे सौ कन्या पैदा हुई। जिस समय वह रूप यौवन सम्पन्न हुईं, तब एक दिन बाग में विहार करने गईं। जहाँ वे गाने बजाने और नाचने लगीं। हे राम! वह सम्पूर्ण आभूषण पहने बड़ी प्रसन्न थीं। उन सभी रूपयौवनशालिनी कन्याओं को देखकर सर्वात्मा पवनदेव प्रकट होकर सबसे कहने लगे कि मेरी इच्छा तुम सबके साथ विवाह करने

की है। इस कारण तुम सब हमारी भार्या हो जाओ तुम वह मानषी भाव त्याग कर दीर्घायु को प्राप्त हो जाओगी। महापराक्रमी पवन देव के यह वचन सुनकर वे सौ कन्या उनके वचन का निरादर करती हुई बोलीं। पिताजी तुम हमारे प्रभु और देवता हैं। वह पिता जिसके निमित्त हमको देंगे हमारे स्वामी वही हो सकते हैं। उनके यह वचन सुनकर वायुदेव परम क्रोध कर के उनके शरीर में प्रवेश कर अपनी शक्ति से सबके शरीर कुबड़े कर दिये। इस प्रकार वे सब कन्या भग्र होकर अपने घर पहुँची, उनको देखकर आश्चर्य से राजा ने पूछा हे पुत्रियों! यह तुम्हारे शरीर की क्या दशा हुई, धर्म का त्रस्कार किसने किया, किसने तुमको कुबड़ा कर दिया–जो चेष्टा करने पर भी तुम नहीं कह सकतीं। उस महाबुद्धिमान कुशनाभ के वचन सुनकर पिता के चरणों में सिर झुकाकर सौ कन्या कहने लगीं। हे राजन! सर्वात्मा वायु देव हमको घर्षण करने की इच्छा करता है, और शुभ मार्ग में स्थित होकर धर्म को देखने की इच्छा नहीं करता है। देव पराक्रमी राजा ने उनके यह वचन सुनकर उन कन्याओं को विदा करके मन्त्रियों से उनके विवाह सम्बन्धी सम्मति की। इस प्रकार धर्मात्मा राजा ने सम्मति करके व सौ कन्या ब्रह्मदत्त महात्मा को देने की इच्छा की। इस प्रकार महातेजस्वीं राजा ने ज्योंहीं ब्रह्मदत्त को बुलाकर परम प्रसन्न मन से उन सौ कन्याओं को देने का विचार किया। तब ऋषि के कर ग्रहण करते ही उन कन्याओं का समस्त रोग और कुबड़ापन जाता रहा, और वह कन्या परम शोभा को प्राप्त हो ऋषि के साथ आश्रम को चली गईं। हे राम! जिस देश में वह कुब्ज हुई उसी दिन से वह ब्रह्मऋषि सेवित देश कान्य कुब्ज नाम से विख्यात हुआ। जबकि रघुनाथ जी से बहुत पहले देश का नाम कान्यकुब्ज विख्यात हो चुका था। तब रामचन्द्र के समय कान्य और कुब्ज इन दो भाईयों का यज्ञ में जाना और दान से इन्कार करना और फिर अपने नाम से इतने विशाल वंशों का चलना यह सब कुछ श्री रघुनाथजी का ही कृपा प्रसाद है जो कान्यकुब्ज वंश सरसब्ज हुआ।

श्लोक – येन लिङ्गेन यो देशो युक्तः समूपलक्षते।
ते नैव नाम्रा तं देशं वाच्य माहुर्म नीषणिः॥

(भरतपुराण आदि पर्व श्लो0 2–12)

कान्यकुब्जेऽपि वत्सोममिन्द्रेण सह कौशिकः।
ततः क्षत्रा दपाक्रामद्ब्राह्मणो ऽस्मीमिं चाब्रवीत॥

(भरतपुराण वनपर्व 86–16)

अर्थ–जिस देश में जो चिन्ह रहता है, उसी के अनुसार पंडित लोग उसका नाम रखते हैं। उसी कान्यकुब्ज देश में विश्वामित्र ने इन्द्र के साथ सोमपान किया था और क्षत्रियपन से त्यागन करि ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया ऐसा लेख पाया गया है। यह कान्यकुब्ज देश का सीमा क्षेत्र कहाँ से कहाँ तक है, कितने विस्तार क्षेत्र में हैं।

श्लोक - श्रृङ्गिण स्थलमारभ्य दालभ्यो कान्तमायतः।
कौशलाद्दक्षिणे देशः कान्यकुब्जः प्रचक्षते॥

अर्थ-शृंङ्गीरामपुर से दालभ्य ऋषि के आश्रम पर्यन्त कौशलदेश नाम अयोध्या पुरी से दक्षिण में कान्यकुब्ज देश कहा जाता है। यद्यपि इस समय कानपुर, फतेहपुर, फरूखाबाद, इटावा आदि स्थानों में कान्यकुब्ज ब्रा० बहुतायय से फेले हुए हैं। तो भी लखनऊ, बाराबन्की, उन्नाव, रायबरेली, हरदोई, शाहजहाँपुर, भगवन्त नगर आदि स्थानों में इनका मूल निवास हैं। और यही कान्यकुब्ज देशवासी ब्राह्मणों में कुल मर्यादा मान आदि का अभिमान अधिक है। इनके पूर्व पुरुष तो विशेष कर्म काण्डी थे, जो कि कारण इनकी उपाधियाँ साक्ष्य देती हैं।

'कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्लोक-कान्यकुब्ज सरयूतीर वासि ब्राह्मणोत्पत्ति भेद माह डा. मक्खनलाल मिश्र। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कान्यकुब्ज विनिर्णयम्। श्रुत्वा द्विज मुखादेतद् वृतांत पूर्वकालिकम् पुरात्रेता युगे रामोहत्वा रावांमाहवे॥ अयोध्यामगच्छीमानसीता, लक्ष्मण, संयुतः॥ ततः पट्टाभिषेको अभृद्रमस्य परमात्मन राज्यं चकार धर्मात्मा सर्वलोकसुखा वहम्॥ ततः कतिपये कालेगते रामःप्रतापवान। यज्ञं चकार विधिना वशिष्ठादि महर्षिभिः॥ तत्र यज्ञे समायातौ द्वोद्विजौ कान्यकुब्जकौ। कान्यकुब्जोराव्य देशस्थो राम यज्ञ दिदृक्षया॥ भ्रातरौ सहितौ चान्येब्राह्मणै ब्राह्मणोत्तमौ। तत्रैकः कुब्ज संज्ञो वै विचारमकरोद धृति॥

(मार्तण्ड पुराण पृ. 412)

कृत्वा ब्रह्मवधं घोरं चागतो रघुनन्दनः। यज्ञ करोति तस्मा द्वैन गृह्णीमो धनादिकम्॥ इत्युक्ता भ्रातरं त्यक्त्वा कान्य संज्ञं द्विजोत्तमम्। स्वंम् जगाम मतिमान्सरखाश्चत्तरे तटे॥

अर्थ - कान्यकुब्ज ब्राह्मण उत्पत्ति लिखेता अब कन्नौज के ब्राह्मणों की उत्पत्ति भेद लिखते हैं। पूर्वकाल की बात है कि त्रेता युग में रामचन्द्र जी रावण को मारकर लक्ष्मण के सहित अयोध्या में आये। बाद राज्याभिषेक हुआ, कुछ समय उपरान्त ऋषियों की सलाह से साविधियज्ञ किया उस यज्ञ में कन्नौज देश में रहने वाले दो भाई एक का नाम 'कान्य' था दूसरे का 'कुब्ज' था। ये बड़े प्रतापी विद्वान थे, अन्य दूसरे ब्राह्मणों को साथ लेकर यज्ञ देखने गये। उसमें जो कुब्ज नाम का ब्राह्मण था वह मन में सोचने लगा कि रामचन्द्र जी ने बड़ी घोर ब्रह्महत्या करके यहाँ यज्ञ करते हैं। इसलिये इनकी इस यज्ञ में हम दान दक्षिणा कैसे ले सकते हैं, क्योंकि ब्रह्महत्या से कभी निवारण नहीं होता और अन्य दोषों का निवारण तो हो भी जाता

है। ऐसा अपने मन में विचार कर निश्चय किया। तब दक्षिणा का समय आया तो बड़ा भाई कुब्ज तो प्रतिग्रह त्याग नदी के उत्तर में चला गया। उसी के अनुसार दूसरे ब्राह्मण भी निष्ट प्रतिग्रह मानि दान के भय से कुब्ज के साथ चले गये।

श्लोक- राज प्रतिग्रहभिया तदा वै कन्य संज्ञकः। तत्रेव स्थित्वा जग्राह रामदत्तं धनादिकम॥ दक्षिणाश्च तथा ग्रामाश्च गृहुश्चा परे द्विजाः। सरय्वाश्चत्तरे देशे ये गताश्च द्विजोत्तमाः॥ सरयू ब्राह्मणास्ते वै संजाता नामभिः किल। यस्माद ग्रामात्स्व पुत्रार्थे कन्या ग्रह्वंति ते द्विजाः ॥

अर्थ - बाद कान्य नाम के ब्राह्मण ने व कुछ अन्य ब्राह्मणों ने उसके साथ रहकर उस यज्ञ में रामचन्द्र जी से दक्षिणा तथा दान में दिये हुये कुछ ग्राम ग्रहण किये और कान्य कुब्ज की संज्ञा दी। जो सरयू नदी के उत्तर में गये हुये ब्राह्मणों थे उन्हें सरवरिये ब्राह्मण कहते हैं। और जो सरयू नदी के दक्षिण में रहे उन्हे कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहते है। यह ब्राह्मण गौड़ सम्प्रदाय के हैं।

1. सरवरिये ब्राह्मण जिस गाँव में अपनी बेटी देते हैं। उसमें से बेटी लेते नहीं हैं। ये गोरखपुर, जौनपुर, गाजीपुर, मिर्जापुर, काशी, प्रयाग, अयोध्या, वस्ती, आजमगढ़ इनमें हैं।
2. कान्यकुब्ज ब्राह्मण-जो सरयू नदी के दक्षिण में रहे थे। उनका वर्णन करता हूँ ये साड़ेदश गाँवो में बसे थे।

गाँवों के नाम - 1. स्थूली 2. सरवरेज 3. गोर 4. शिवराजपुर 5. ऊमरि 6. मनोह 7. गुदरपुर 8. वरिया 9. हरिवंशपुर 10. पचोर आधे में चिगोसपुरयह गाँव कान्यकुब्जों के हैं।

कान्यकुब्ज या कन्नौजी ब्राह्मणों के गोत्र कहता हूँ। गोत्र ऋषियों के 16 है।

"ऋषिगोत्र"

1. **कश्यप 2. शाण्डिल्य 3. वत्स 4. गार्ग्य 5. गौतम 6. वशिष्ठ 7. धनंजय 8. पाराशर 9. कात्यायन 10. भारद्वाज 11. कौशिक 12. कृष्णात्रेय 13. उपमन्यु 14. कविस्त 15. सांकृत 16. वशिष्ट**

इस प्रकार 16 ऋषि गोत्र हैं।

इनमें 6 गोत्र के ब्राह्मण उत्तम हैं।

1. **शाण्डिल्य 2. कात्यायन 3. भारद्वाज 4. कश्यप 5. उपमन्यु 6. सांकृत ॥ ये 6 गोत्र के ब्राह्मण अपने गोत्रों में सम्बन्ध करते हैं।**

"षटकुली"
"कान्यकुब्ज ब्राह्मण"

संख्या	ऋषि गोत्र	आस्पद
1.	कात्यायन	मिश्र या दुबे
2.	शाण्डिल्य	तिवारी, अवस्थी, दीक्षित, अग्निहोत्री
3.	भारद्वाज	दीक्षित, शुक्ल, त्रिवेदी, अग्निहोत्री
4.	उपमन्यु	दीक्षित, अग्निहोत्री, दुबे, बाल्मीकि, पाठक,
5.	सांकृत	अवस्थी, त्रिवेदी, वाजपेई, शर्मा, चूड़ामणि
6.	कश्यप	तिवारी, अवस्थी, दीक्षित, अग्निहोत्री, मिश्र, त्रिपाठी, मीठे, शुक्ल, पांडे, भट्टाचार्य ।

कान्यकुब्जों के 16 गोत्र प्रवर, आस्पदादि

संख्या	ऋषि गोत्र	प्रवर	वेद	साखा	आस्पद
1.	भारद्वाज	आंगिऋषि	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	दीक्षित
2.	कृष्णत्रेय	अत्रेय, ओर्वच्य	यजु.	मध्या.	अवस्थी
3.	उपमन्यु	वशिष्ठ, भारद्वाज	यजु.	मध्या.	दीक्षित
4.	कौशिक	विश्वामित्र, उद्दालक	यजु.	मध्या	तिवारी
5.	कश्यप	कश्यप, वत्स, नेंध्रुव	यजु.	कौथुसी	अग्निहोत्री
6.	सांकृत	आगिरस, शाक्य	यजु.	मध्या.	शुक्ल
7.	वत्स	भार्गवच्य, ओर्वच्य	यजु.	मध्या.	त्रिपाठी
8.	गार्ग्य	आंगिरस, गार्ग्ये	सामवेद	कौथुनी	तिवारी
9.	गौतम	वृहस्पत्य	यजु.	मध्या.	पाठक
10.	शाण्डिल्य	असित देवल	सामवेद	कौथुमी	दीक्षित
11.	वशिष्ठ	पाराशर	यजु.	मध्या.	तिवारी
12.	धनंजय	अत्रेय, घनंजयेति	सामवेद	कौथुमी	दीक्षित
13.	पाराशर	वशिष्ठ	यजु.	मध्या.	त्रिपाठी
14.	ब्रह्म	वशिष्ठ	यजु.	मध्या.	तिवारी
15.	कात्यायन	अंगिरस, गार्ग्य	यजु.	मध्या.	दीक्षित
16.	काविस्त	ब्रह्मा	यजु.	मध्या.	दीक्षित

यह अवंटक या आस्पद सभी कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के हैं जो ऊपर कान्यकुब्जों के 6 गोत्रों में लिखे हैं।

श्लोक – कश्यपश्च भारद्वाजो शाण्डिल्यः सांकृतस्तथा। कात्यायनोपमन्युश्चमनपुश्च काश्यपश्च धनंजयः॥ कविस्तो गौतमो गर्गो भरद्वाजस्तथैव च। कौशिकश्च वशिष्ठ्श्च वत्सः पाराशरस्तथा॥ इत्ये ते कान्यकुब्जानां गोत्रस्या हुश्च षोडश।

अर्थ – 1. कश्यप 2. भारद्वाज 3. शांण्डिल्य 4. सांकृत 5. कात्यायन 6. उपमन्यु 7. काश्यप 8. धनंजय 9. कविस्त 10. गौतम 11. गर्ग 12. भरद्वाज 13. कौशिक 14. वशिष्ठ 15. वत्स 16 पाराशर।

यह 16 गोत्र बहुत प्रसिद्ध हैं। इनमें पहले छः गोत्र अधिक प्रसिद्ध हैं।

कात्यायनोपमन्युश्च भारद्वाजोअथ कश्यपः। शाण्डिल्य सांकृतश्चैव षडेते गोत्रजोत्तमाः ॥

अर्थ – 1. कात्यायन 2. भारद्वाज 3. उपमन्यु 4. कश्यप 5. शाण्डिल्य और सांकृत यह छै गोत्र कुलीन और षट्कुल नाम से विख्यात हैं। शेष 10 गोत्री कान्यकुब्जों की दूसरी शाखा धाकर कही जाती है।

श्लोक – पाराशरः काश्यप भरद्वाज धनंजया गौतम वत्स गर्गाः वशिष्ठकाविस्तु सु कौशिकाश्च उदाहृता धाकर का दशैते॥

ये 10 गोत्री धाकर साखा के नाम से विख्यात हैं। इस प्रकार से यह दो भिन्न-भिन्न साखा होती है। पहली षटकुली यह उत्तम ब्रा० कुली मानी जाती है। दूसरी धाकर ब्रा0 कुली मानी जाती है। आगे विस्तार से व्याख्या की गई है।

अर्थ – पाराशर, काश्यप, भारद्वाज, धनंजय, गौतम, वत्स, गर्ग, वशिष्ठ, काविस्त, कौशिक यह दश गोत्र आधे भी कहाते हैं, इसी प्रकार साढ़े दश गोत्र कहे जाते हैं। इनका विस्तार होकर वंशावलियों में 72 गोत्र शाखा भेद से हुए हैं।

अब हम पहले कान्यकुब्जों के सोलह गोत्रों का वर्णन करते हैं। इसके बाद धाकर व सरयूपारी के गोत्रों का वर्णन करेंगे।

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के गोत्र, अवंटकादि का वर्णन

यहाँ यह भी लिख देना उचित है, कि प्रत्येक गोत्र के साथ कान्यकुब्जों में आस्पद और प्रतिष्ठा के नाम होते हैं। जो जिस ग्राम का या स्थान का है, उनका नाम भी लिखा होता है। जैसे – पांडे, पाठक, त्रिपाठी, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, अवस्थी, दीक्षित, शुक्ल, मिश्र, उपाध्याय, भट्टाचार्य, अग्निहोत्री, वाजपेई आदि। इनमें वेद पढ़ने से द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि कहाये।

अध्यापक होने से उपाध्याय, पाठक और भट्टाचार्य कहाये गये।

यज्ञादि कर्मानुष्ठान करने से मिश्र शुद्ध निर्मल कर्मो के करने से अनुष्ठान करने वालो को शुक्ल कहाये गये। और अनुष्ठान कर्म करने से ही वाजपेई कहाये। अग्निहोत्री, दीक्षित, अवस्थी भी उपरोक्त कर्म करने से ही कहाये गये।

और स्मार्तकर्तानुष्ठान करने से मिश्र कहाये गये। जो जिस ऋषि के वंश में हुए वह उनका ऋषि गोत्र कहाया गया। और प्रवर जो जिस ऋषि के पोत्र, पुत्र हुए उनके आधार पर शाखा भेद होकर उस ऋषि के वंशजों सहित का प्रवर कहा गया है। ये ध्यान देने की बात है कि कहीं कोई पुरुष प्रसिद्ध हुआ तो उसका नाम व उसके पिता का नाम भी वंशावलियों में लिखा जाता है। और जो पिता के नाम प्रसिद्ध हैं उनका नाम नहीं लिखा। जैसे कश्यप गोत्र में गंगा के पुत्र गौतम थे। वह विद्वान होने के कारण गौतमाचार्य कहाये। और गंगा शाहाबाद में रहने के कारण शाहाबाद के मिश्र कहाये, और गौतमाचार्य रामपुर में रहने के कारण रामपुर के मिश्र कहाये। और गंगा के दूसरे पुत्र पिता के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका नाम नहीं लिखा गया। इसी भाँति शाण्डिल्य गोत्र में त्रिपुर के मिश्र 1. बाबू 2. खेमकरण 3. हेंमनाथ यह तीन पुत्र लिखे गये हैं। इनमें बाबू खानीपुर के मिश्र।

खेंमकरण – ये भोजपुर के मिश्र और हेंमनाथ हमीरपुर के मिश्र, त्रिपुर वाले कहाये गये। त्रिपुर, कम्पिल्य के मिश्र कहाये। इससे यह बात मालूम होती है, कि त्रिपुर के और भी पुत्र थे। जो कम्पिला में रहते थे। और त्रिपुर के नाम से प्रसिद्ध हुए। बहुत से पुरुष ऐसे भी हैं। जो अपने और पिता के नाम जो दोंनो के नाम से प्रसिद्ध हुए। अब आगे सर्वप्रथम कश्यप गोत्र का व्याख्यान करते हैं। जैसा कि मैंने ग्रन्थों में पढ़ा है।

वह 'ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण' में वर्ण लिखता हूँ। त्रुटि के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

'कश्यप गोत्र'

ब्रह्मा के पुत्र 'मरीच' मरीच के पुत्र 'कश्यप' उनके वंश में बहुत समय पश्चात 'देवल' जी पैदा हुए। ये काश्मीर में रहते थे। वहाँ से 'भदावर' में आये। भदावर के अधिपति ने इनका बहुत सम्मान किया और राजपंडित बनाकर अपने यहाँ रखा।

देवलजी के पुत्र महाप्रतापी 'आशादत्त' जी त्रिपाठी नाम से प्रसिद्ध हुए। और इनको अन्तर्वेद देशान्तर्गत शिवराजपुर के राजा ने अपना पुरोहित नियत किया। और इनका यज्ञ कराया। और दक्षिणा में शिवराजपुर के राजा ने अपना पुरोहित नियत किया। और आधे चिंगीसपुर इनका यश कराया। और दक्षिणा में शिवराजपुर के सहित साढ़े दस ग्राम दिये और आधे चिंगीसपुर में राजा ने अपनी राजधानी बनाई इस कारण

चिंगीसपुर कान्यकुब्जों को आधारग्राम है। उन गाँमों के नाम 1. मनोह 2. वरुआ 3. सखरेज 4. गौरी 5. शिवराजपुर 6. पचोर 7. उमरी 8. शिवली 9. हरिवंशपुर 10. गूदरपुर 11. चिंगीसपुर आधा यह साढ़े दस ग्राम कश्यप गोत्रीय कान्यकुब्जों के हैं। आशादत्त जी के पूजक हैं। आशादत्त जी के ग्यारह पुत्र हुए उनमें 1. धनीराम मनोह में बसे 2. काशीराम वरुआ में बसे 3. राजाराम सखरेज में 4. वंशगोपाल गौरी में 5. लोकनाथ शिवराजपुर में 6. वन्दीराम शिवली में 7 हरिराम हरिवंशपुर में 8. चन्दन गूदरपुर में और नन्दनराम चिंगीसपुर में रहे। ये सव जहाँ बसे उन ग्रामों के तिवारी कहलाए। इन सभी के दस विश्वा हैं।

'मनोह ग्राम का वंश विस्तार'

इस ग्राम में धनीराम तिवारी के हरी, धन्नी, लक्ष्मण, खिच्चू या खचेरा ये चार पुत्र हुए। हरी ख्यूरा में रहे सो ख्यूरा के तिवारी कहे गये 4 विशे के।

'हरी' करिंग में रहे सो करिंग के तिवारी कहे गये 7 विशे के।

'लक्ष्मण' शिवपुर में रहे ये शिवपुर के तिवारी कहाये 7 विशे के ।

खचेर या खेंचर औनहा ग्राम में रहे यह 'आवस्थ' अग्न्याधान करने वाले से 'अवस्थी' कहाये गये 7 विशे के।

हरी के दो पुत्र हुए 1. वद्रीनाथ 2. वोदल, वद्रीनाथ इनमें पहले ख्यूरा के आशादत्ती तिवारी कहाये 4 विश्वे के।

वोदल मनोह में रहने से मनोह के वामन ग्रन्थी तिवारी कहाये 6 विश्वे के।

धन्नी	–	के नन्दू और वोदू दो पुत्र हुए, यह चिंचोली ग्राम में निवास करने से चिंचोली के तिवारी कहाये 7 विश्वे के।
वोदू या वोधू	–	यह रतनपुर में रहे सो रतनपुर के तिवारी कहाये 7 विश्वे के।
लक्ष्मण	–	के कल्याण और परमेश्वरदत्त दो पुत्र हुए और लक्ष्मणपुर में स्मार्तयज्ञ कराके ये लक्ष्मणपुर के मिश्र कहाये 5 विश्वे के।
वद्रीनाथ	–	के पुत्र हेमनाथ वदरका के दीक्षित कहाये 10 विश्वे के।
वोदल	–	के केशवराम और कृष्णदत्त दो पुत्र हुए।
केशवराम	–	शिवली ग्राम में रहे सो शिवली के अवस्थी कहाये 8 विश्वे के।
कृष्णदत्त	–	मनोह में रहे सो मनोह ग्राम के वामनग्रन्थी तिवारी कहे गये 5 विश्वे के।
कृष्णदत्त	–	के उदय, क्षेम, प्रयाग और गोपाल चार पुत्र हुए। और मनोह के वामनग्रन्थी तिवारी कहाये 5 विश्वे के।

उदय	-	के पुत्र हेमनाथ, अटेर और परमसुख हुए, इनमें हेमनाथ मनोह के वामनग्रन्थी तिवारी कहाये 8 विश्वे के।
अटेर	-	यह करुलुआ ग्राम के अग्निहोत्री कहाये 1 विश्वे के।
परमसुख	-	ये लक्ष्मणपुर के मिश्र कहाये 5 विश्वे के
खेम	-	के चार पुत्र हुए गंगा, पैकू, करनू और इन नामों से प्रसिद्ध हुए।
गंगा	-	शाहबाद में बसने से शाहबाद के मिश्र कहाये 11 विश्वे के।
पैकू	-	ओहाग में बसे इससे ओहाग के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।
करनू या कन्नू	-	बागरमऊ में बसे ये बागरमऊ के दुबे कहाये 7 विश्वे के।
जन्नू	-	नवाये में बसे ये नवाये के अवस्थी कहाये 8 विश्वे के।
प्रयाग	-	के आशाराम, शिवदत्त और भट्टू यह तीन पुत्र हुए, आशाराम ख्यूरा ग्राम के तिवारी कहाये 6 विश्वे के।
शिवदत्त	-	रतनपुर ग्राम के तिवारी कहाये 4 विश्वे के।
भट्टू	-	मनोह ग्राम के तिवारी कहाये 4 विश्वे के।
गोपाल	-	के शुद्धी, हंसराम और भमानी यह तीन पुत्र हुए।
शुद्धी	-	सखरेज ग्राम के तिवारी कहाये 10 विश्वे के।
हंसराज	-	पड़री ग्राम के तिवारी कहाये 10 विश्वे के।
भवानी	-	सखरेज ग्राम के तिवारी कहाये 10 विश्वे के।
अंटेर	-	के भीम, भैरव, बद्रीनाथ और केदारनाथ ये चार पुत्र हुए।
भीम	-	कलुआ ग्राम के अग्निहोत्री कहाये 8 विश्वे के।
भैरव	-	कोड़ा ग्राम के अग्निहोत्री कहाये 8 विश्वे के।
बद्रीनाथ	-	ख्यूरा ग्राम के अग्निहोत्री कहाये 8 विश्वे के।
केदारनाथ	-	कठेरुआ ग्राम के अग्निहोत्री कहाये 9 विश्वे के ।
परमसुख	-	के कमल और देवसर नाम के दो पुत्र हुए।
कमल	-	नगरा ग्राम के मिश्र कहाये 8 विश्वे के।
देवसर	-	विरामपुर ग्राम के मिश्र कहाये 5 विश्वे के।
गंगा	-	के एक पुत्र गौतम से वेदाध्ययन करने से आचार्य पदवी पाई और रामपुर में बसे रामपुरी गौतमाचार्य मिश्र कहाये 10 विश्वे के।

पैकू	–	के शिवदत्त और भगदत्त दो पुत्र हुए, ये दोनों ओहाग ग्राम के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।
कन्नू	–	के दिवोल और हरिहर दो पुत्र हुए।
दिवोल	–	आटी ग्राम के दुबे कहाये 4 विश्वे के।
हरिहर	–	बीठलपुर ग्राम के दीक्षित कहाये 15 विश्वे के।
जन्नू	–	के स्यूनी और सीरू दो पुत्र हुए।
स्यूनी	–	पिहानी ग्राम के अवस्थी कहाये 4 विश्वे के।
सीरू	–	नवायें ग्राम के रहने से नवाये के अवस्थी कहाये 10 विश्वे के।
शिवदत्त	–	के पुत्र बेनी रतनपुर के तिवारी कहाये 4 विश्वे के।
भवानी	–	के धनई, मनई और शीतल ये तीन पुत्र हुए।
धनई	–	चाँदीपुर ग्राम के तिवारी कहाये 7 विश्वे के।
मनई	–	बकसीर ग्राम के तिवारी कहाये 9 विश्वे के।
शीतल	–	मोरंग ग्राम के तिवारी कहाये 7 विश्वे के।
केदारनाथ	–	के मुन्ना और मोती दो पुत्र हुए।
मुन्ना	–	सिरोज ग्राम के अग्निहोत्री कहाये 4 विश्वे के।
मोती	–	जनसारपुर ग्राम के अग्निहोत्री कहाये 4 विश्वे के।
दिवोल	–	के शिवोल, भवदेव और भवानी ये तीन पुत्र हुए।
शिवोल	–	वांगर ग्राम के दुवे कहाये 5 विश्वे के।
भवदेव	–	शिवरामपुर ग्राम के दुवे कहाये 4 विश्वे के।
भवानी	–	लांथे ग्राम के दुवे कहाये 5 विश्वे के।
हरिहर	–	के भदैन, श्रीकान्त और बबुआ ये तीन पुत्र हुए।
धर्मेश्वर का वंश	–	हडहा ग्राम और एकडला ग्राम में हैं।
श्रीकान्त	–	ऊगू ग्राम में बसे सो ऊगू के दीक्षित कहाये 20 विश्वे के।
भदैन	–	नौगाँव में बसने से नौगाँव के दीक्षित कहाये 15 विश्वे के।
बबुआ	–	बोदलपुर ग्राम में रहने से बोदलपुर के दीक्षित कहाये 15 विश्वे के ।
श्रीकान्त के	–	खगेश्वर, धर्मेश्वर और वीरेश्वर ये तीन पुत्र हुए।
वीरेश्वर	–	का वंश भगवन्त नगर, सखरेज और विराह इन तीन ग्रामों में हैं।

खगेश्वर के - लाल और हरिदत्त दो पुत्र हुए।

लाल - के सन्त और बहोरे दो पुत्र हुए।

सन्त के पुत्र अनन्तदेव हुए इनका एक घर ऊगू में है, तथा कुछ घर सकूराबाद में हैं।

बहोरे के तीन पुत्र हुए सदानन्द, भोलानाथ और भगवत।

सदानन्द के हीरालाल और नैनसुख दो पुत्र हुए।

हरिलाल के नन्दन और कुमार दो पुत्र हुए।

नैनसुख के पुत्र मुकुन्द नाम केहुए।

भोलानाथ के प्राणनाथ और प्राणनाथ के हेमनाथ हुए।

नन्दन और मुकुन्द बड़े प्रतापी हुए। इनके वंशजों के निवास स्थान ऊगू में है 20 विश्वे के वहाँ ये विख्यात हैं।

कुमार के पुत्र बोदल हुए इनका वंश टेड़ा ग्राम में है 20 विश्वे।

भगवत के कुलमणि हुए और दूसरे पुत्र जगमणि हुए।

इनका वंश न्योतिनी और नारायणदास खेड़े में है। यह सभी श्रीकान्त दीक्षित कहाये 20 विश्वे के।

हरीदत्त के देवीदत्त और वैद्यनाथ दो पुत्र हुए।

आगे इनका वंश समाप्त हो गया।

'बरूआ ग्राम वासियों का वंश'

इस गाँव में काशीराम तिवारी के सधारी, गिरधारी, बिहारी, अनन्तराम, मनीराम और कुन्दन ये छः बेटे थे।

सधारी - सुगनापुर के दुबे कहाये 5 विश्वे के।

बिहारी - नागपुर के दुबे कहाये 5 विश्वे के।

गिरधारी - आंटीपुर के दुबे कहाये 5 विश्वे के।

अनन्तराम - बरूआ के तिवारी कहाये 7 विश्वे के

मनीराम - गोपालपुर गाँव के तिवारी कहाये 7 विश्वे के।

कुन्दन 7 वागरमऊ के तिवारी कहाये 7 विश्वे के।

'सखरेज ग्राम वासियो का वंश'

सखरेज में राजाराम के राधे, जानी, चतुरी और कन्है, यह चार पुत्र हुए। राधे और जानी एकड़ा गाँव

के तिवारी कहाये 10 विश्वे के। चतुरी और कन्है हड़हा गाँव के तिवारी कहाये 9 विश्वे के। राधे के राय और विभाकर दो पुत्र हुए।

राय – अविनहार गाँव के तिवारी कहाये 7 विश्वे के।

विभाकर – जूही गाँव के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।

चतुरी के तीन पुत्र हुए चन्दन, मतिराम और सखाराम।

चन्दन – हड़हा गाँव के अग्निहोत्री कहाये 8 विश्वे के।

मतिराम – सांपेपुर के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।

सखाराम – ऊचपुर गाँव के तिवारी 8 विश्वे के।

कन्है के यदुनाथ और चन्दन दो पुत्र हुए। यदुनाथ असनी गाँव के तिवारी कहाये 8 विश्वे के । चन्दन अर्चितपुर गाँव के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।

'गौरी गाँव के वंश'

गौरी गाँव में वंश गोपाल तिवारी के बाबू बेटे हुए ये गौरी के तिवारी कहाये 5 विश्वे के। बाबू के बैनी, मनऊ, सुन्दर, साहेब और हेमान्चल ये पाँच पुत्र हुए ये पचभईया तिवारी कहाये।

बैनी – जनकपुर में रहे 5 विश्वे के।

सुन्दर – विद्वानपुर में बसे 6 विश्वे के। साहब और हेमान्चल बिहारपुर गाँव में बसे, ये जहाँ रहे वहाँ पचभईया तिवारी कहाये।

सुन्दर के खेम और जिज्ञासु दो पुत्र हुए।

खेम – मिधोली के अवस्थी कहाये 4 विश्वे के।

जिज्ञासु – खिर्मीपुर गाँव के अवस्थी कहाये 3 विश्वे के।

'शिवराजपुर गाँव का वंश'

शिवराजपुर में लोकनाथ के चार पुत्र हुए। उनके नाम कन्ते, चूके, आनन्दवन और वगुचार थे।

कन्ते – शिवराजपुर गाँव में रहने से शिवराजपुर के तिवारी कहाये 11 विश्वे के।

चूके – पचभईया गाँव में रहने से पचभईया तिवारी कहाये 10 विश्वे के।

आनन्दवन – वरहमपुर गाँव में रहने से वरहमपुर के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।

वगुचार – शिवराजपुर में रहे इससे शिवराजपुर के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।

'शिवली गाँव वासियों का वंश'

बद्रीनाथ के पुत्र लोकनाथ शिवली गाँव में रहने से शिवली गाँव के तिवारी कहाये 9 विश्वे के। लोकनाथ के रमते, श्यामल और रंजन ये तीन पुत्र हुए।

रमते - फकहापुर गाँव के तिवारी कहाये 9 विश्वे के।
श्यामल - दिलीपपुर गाँव के तिवारी कहाये 10 विश्वे के।
रंजन - ककरदही गाँव के तिवारी कहाये 10 विश्वे के।
रमते - के गौरी, गौली, अंगद और मंगद ये चार पुत्र हुए।
गौरी - पुरवा के तिवारी कहाये 3 विश्वे के।
गौली - बिहारपुर के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।
अंगद - ये चढ़ीक गाँव के तिवारी कहाये 6 विश्वे के।
मंगद - शहाबाद के तिवारी कहाये 3 विश्वे के।
श्यामल - के केशू और वन्सू दो पुत्र हुए।
केशू - नौवस्ता के तिवारी कहाये 7 विश्वे के।
वन्सू - बरूआ गाँ के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।
रंजन - के भग्गी, भोला और दलपति ये तीन पुत्र हुए।
भग्गी - वीरपुर गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।
भोला - बिहारपुर गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।
दलपति - गूदरपुर गाँव के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।
कन्सू - के कश्यप और दिलीप दो पुत्र हुए।
कश्यप - विदारी गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।
दिलीप - दयालपुर गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।

'ऊमरी गाँव वासियों का वंश'

ऊमरी में परमानन्द की पहली स्त्री से बचनू नाम का बेटा हुआ ये ऊमरी के तिवारी कहाये 6 विश्वे के। दूसरी स्त्री से हंसू, जीवन, देवी और शंकर ये चार पुत्र हुए।

हंसू - गुनरी गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।
जीवन - चंचौली के तिवारी कहाये 8 विश्वे के।
देवी - बरगदपुर गाँव के तिवारी कहाये 6 विश्वे के।
शंकर - धतूरा गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।

बचनू के नैनी और माखन दो पुत्र हुए।

नैनी कुम्हराव गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।
माखन – महोली के तिवारी कहाये 4 विश्वे के।
माखन के चन्ड और मुन्ड दो पुत्र हुए।
चन्ड – भगेर गाँव के तिवारी कहाये 9 विश्वे के।
मुन्ड – शिवपुर गाँव के तिवारी कहाये 9 विश्वे के।

'पचोर ग्राम वासियों का वंश'

पचोर में सुखानन्द के पुत्र वंशीधर – दयालपुर गाँव के तिवारी कहाये 10 विश्वे के। वंशीधर के गन्नी, बोदू, नन्दू तीन पुत्र हुए। गन्नी – श्रीपति पुर गाँव के तिवारी कहाये 10 विश्वे के। बोधू – रतनपुर के तिवारी कहाये 10 विश्वे के। नन्दू – चिंचोली के तिवारी कहाये 7 विश्वे के। नन्दू के गंगू और बोदल दो पुत्र हुए। गंगू पचोर के तिवारी कहाये 5 विश्वे के। बोदल विरामपुर गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के।

'हरिवंशपुर गाँव वासियों का वंश'

हरिवंशपुर में हरिराम की पहली स्त्री से एक पुत्र गडरू नाम का हुआ। इसके वंशज हरिवंशपुर के तिवारी कहाये 8 विश्वे के। हरिराम की दूसरी स्त्री से सुखराम पुत्र हुए सो छीतरपुर के तिवारी कहाये 8 विश्वे के। गड़रू – के सुखी, दुखी, श्रीपति और सन्तू चार पुत्र हुए। सुखी बोधीपुर गाँव के तिवारी 5 विश्वे के कहाये। दुखी – गड़रीपुर के गाँव के तिवारी कहाये 4 विश्वे के। श्रीपति – हरबाई गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के। सन्तू – सपरीपुर गाँव के तिवारी कहाये 5 विश्वे के। श्रीपति – के हरजू और प्रसजू नाम के दो पुत्र हुए। ये दोनों घरबाईपुर गाँव के तिवारी कहाये 4 विश्वे के।

'गूदर ग्रामवासियों का वंश'

गूदरपुर में चन्दन के पुत्र हरिनाथ गूदरपुर गाँव के तिवारी कहाये 10 विश्वे के। हरिनाथ के राते, पाते, चन्दू, हर्ष, बछनू और माते ये छः पुत्र हुए। राते और पाते दोनों गूदरपुर के तिवारी कहाये 10 विश्वे के। चन्दू, हर्पू और बदनू तिवारी कहे गये 7 विश्वे के। माते बरुआ गाँव के तिवारी कहाये 7 विश्वे के। कान्हरू के रामनाथ, जगन्नाथ, धनजई, किशोर, धनी, भूधर, जागन और पुरुषोत्तम ये आठ पुत्र हुए। रामनाथ और जगन्नाथ – कठेंरे ग्राम के तिवारी कहाये 14 विश्वे के। धनजई गूदरपुर के तिवारी कहाये 12 विश्वे के। किशोर – महगूपुर के तिवारी कहाये 11 विश्वे के। धेनी – अनंगपुर के तिवारी कहाये 14 विश्वे के। भूधर – छितावले गाँव के तिवारी कहाये 4 विश्वे के। जागन – झगड़गाम के तिवारी कहाये 4 विश्वे के। पुरुषोत्तम – सिहुंडा गाँव के तिवारी कहाये 4 विश्वे के। भावदास की पहली पत्नी से रमई पुत्र हुए जो तिवारी कहाये 17 विश्वे के। घाघ हुए कहाये 10 विश्वे के इनके दो पुत्र हुए दोंनो जहाँगीरवादी तिवारी

कहाये 20 विश्वे, 10 विश्वे। इनकी दूसरी स्त्री से अर्चित, गल्हू, गणपति, माधव चार पुत्र हुए। चारों बरुआ में रहने से बरुआ के तिवारी कहाये 10 विश्वे के। रमई की पहली स्त्री से दमा, गोवर्धन, गोपाल और चत्तू ये चार पुत्र हुए। दमा - सपई गाँव के तिवारी कहाये 10 विश्वे के। गोपाल पड़री में रहने से पड़री के तिवारी कहाये 16 विश्वे के। गोवर्धन कठेरुआ में रहने से कठेरुआ के तिवारी कहाये 19 विश्वे के। चत्तू - जहाँगीराबाद के तिवारी कहाये 20 विश्वे के। रमई की दूसरी पत्नी से आशाधर पुत्र हुए वह जमुनापार रहने से वीरवली तिवारी कहाये 5 विश्वे के। घाघ के नन्दराम, गजराम और महाशर्म तीन पुत्र हुए। ये तीनों जहाँगीरवादी तिवारी कहाये घाघ के नन्दराम, गजराम और महाशर्म तीन पुत्र हुए। ये तीनों जहाँगीर तिवारी घाघ के कहाये 17 विश्वे के और लोकनाथ 18 विश्वे के। लक्ष्मण दमा के तिवारी कहाये 17 विश्वे के। गोपाल के रणधीर और जगन्नाथ ये दो पुत्र हुए। ये पड़री गाँव रहने से गोपाल के तिवारी कहाये 18 विश्वे के। गोवर्धन के - चक्रपाणि, कमलापति, मोहन, मुरलीधर, टमादत्त, धर्मेश्वर और प्रद्युत्रा ये सात पुत्र हुए। ये सभी कठेरुआ गाँव में रहने से गोवर्धन तिवारी कहाये। इनमें चक्रपाणि और कमलापति के 20 विश्वे। मोहन और मुरलीधर के 19 विश्वे। और शेष तीन के 18 विश्वे। चत्तू - के दिठता, लाला, रूपा, मोहन, हीरानन्द पाँच पुत्र हुए। यह सब चत्तू के तिवारी कहाये। इनमें दिठता के 19 विश्वे हीरानन्द के 17 विश्वे शेष तीनों के 20 विश्वे।

'चिंगीसपुर गाँव वासियों का वंश'

चिंगीसपुर रहने वाले नन्दराम के सविता नामक पुत्र हुए। यह चिंगीसपुर के तिवारी कहाये 5 विश्वे के। नन्दराम के वंश मेदिवता और जसराम अपने-अपने नाम से अग्निहोत्री कहाये 4 विश्वे के। यह चिंगीसपुर आधा स्थान है। जहाँगीराबाद अकबर के पुत्र जहाँगीर ने बसाया था। इसकी स्थापना सम्वत् 1674 में हुई। उस समय भारत में ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा सामान्य थी। इसके लगभग 250 वर्ष से पतन हुआ, औरंजेब के शासन काल से सभी ब्राह्मण जाति की दुर्दशा हुई।

'शाण्डिल्य गोत्र की व्याख्या'

ब्रह्मा के पुत्र मरीच, मरीच के कश्यप, कश्यप के यज्ञ करने से अग्निकुंड से शाण्डिल्य उत्पन्न हुए। इनसे शाण्डिल्य गोत्र चला अग्नि का नाम हुतासन भी है, और अग्नि का गोत्र शाण्डिल्य भी कहा जाता है। शाण्डिल्य वंश में एक पुरुष महाप्रतापशाली हुतासन हुआ। हुतासन के वंश में बहुत समय बाद मनोरथ तिवारी हुए। इन्होंने बुन्देलखण्ड के राजा को पुत्रेष्ट यज्ञ कराया, इस राजा का नाम अमरसिंह था और राजपुरोहित का नाम विश्वनाथ था। विश्वनाथ ने मनोहर तिवारी को अपनी कन्या ब्याह दी, पीछे दतिया उड़ेसा महावर के राजाओं ने इनको बुलाया और तीनो शिष्य हुए। कुछ समय बाद हमीरपुर के पुरोहित बने, और राजपुरोहित गंगाराम की कन्या से दूसरा ब्याह रचाया। उस समय से वे तिवारी से मिश्र हुए। इनकी निवास भूमि धतूरा थी। इस कारण ये धतूरा के मिश्र कहाये जाते है 4 विश्वे के। इनकी पहली

स्त्री से कमलनाभि नामक पुत्र हुए ये माता सहित मऊ गाँव में रहे। इससे ये मऊ के मिश्र कहाये 4 विश्वे के। दूसरी स्त्री से पद्मनाभि नामक पुत्र हुए 7 विश्वे के। देवनाभ के दो पुत्र हुए। ये हमीरपुर के मिश्र कहाये 5 विश्वे के। पदमनाभि के पुत्र हरिहर हमीरपुर के उपाध्याय कहाये 3 विश्वे के। देवनाभि के पुत्र शारंगधर हमीरपुर के मिश्र कहाये 4 विश्वे के। हरिहर के गंगाराम, जगन्नाथ और वंशीधर ये तीन पुत्र हुए, त्रिपुर कपिला के मिश्र कहाये 10 विश्वे के। गदाधर - हमीरपुर के मिश्र कहाये 5 विश्वे के। त्रिपुर के बाबू, खेमकरण - भोजपुर के मिश्र कहाये 5 विश्वे के। हेमनाथ - हमीरपुर के मिश्र कहाये 4 विश्वे के। गदाधर - के गंगाधर और श्री हर्ष ये दो पुत्र हुए। गंगाधर भोजपुर रहे सो भोजपुर के दीक्षित कहाये 5 विश्वे के।

श्री हर्ष - खानीपुर रहे सो खानीपुर के मिश्र कहाये 7 विश्वे के। खेमकरण के पुत्र दारी, असनी ग्राम में रहने से असनी के शुक्ल कहाये 4 विश्वे के। गंगाधर की एक स्त्री से बाबू, बलराम, वीरेश्वर और उमादत्त ये चार बेटे हुए। बाबू और बलराम अंटेर गाँव में रहने से अंटेर के दीक्षित कहाये 18 विश्वे के। वीरेश्वर और उमादत्त वटपुर गाँव में रहे इसलिए वटपुर के दीक्षित कहाये 15 विश्वे के। गंगाराम की दूसरी पत्नी से गोपी और हंसराम दो पुत्र हुए। गोपी अपनी माता के सहित नौगाँव में बसे इससे नौगाँव के मिश्र कहाये 10 विश्वे के। हंसराम अटेरी में बसे वे वहाँ के दीक्षित कहाये 14 विश्वे के। श्रीहर्ष के परसू, हिमकर, ललकर और गोपीनाथ ये चार पुत्र हुए। परसू खानीपुर के मिश्र कहाये 20 विश्वे के। हिमकर - भटेउरा गाँव के मिश्र कहाये 19 विश्वे के। ललकर और गोपीनाथ - असनी गाँव के मिश्र कहाये 15 व 10 विश्वे के। बाबू के विद्याधर, बनवारी और रघुनन्दन ये तीन पुत्र हुए और अंटेर गाँव में रहे सो दीक्षित कहाये 16 विश्वे के।

बलराम के कंगू, समाधन, वासी और चतुरी ये चार बेटे हुए। कंगू वटपुर में रहे और दीक्षित कहाये 20 विश्वे के। शेष तीनो अंटेर में रहे सो वहाँ के दीक्षित कहाये क्रमशः 19,18,18, विश्वे के। वीरेश्वर के मुरली, गिरधारी, नित्यानन्द, शिरोमणि और जगजीवन ये पाँच पुत्र हुए। ये सभी वटपुर में रहे और वीरेश्वर के दीक्षित कहाये 20 विश्वे के। जगजीवन के 16 उमादत्त के 17, बुधकेसन 11, यादव 16, और गोविन्द 15 ये चार पुत्र हुए और वटपुर गाँव में रहकर उमादत्त के दीक्षित कहाये 17 विश्वे 11,16 विश्वे 24 विश्वे।

परसू के पद्मपाणि, कमलपाणि, चक्रपाणि और वंशीधर ये चार पुत्र हुए और चारों खानीपुर के मिश्र कहाये 20 विश्वे के। हिमकर के शंकर, क्षेमराज और जयभद्र ये तीन पुत्र हुए। शंकर ने भटेउरा मेंवास किया 15 विश्वे के। क्षेमराज ने असनी में वास किया 19 विश्वे के। जयभ्रद ने गंगासो में वास किया 19 विश्वे। ये तीनों हिमकर मिश्र कहाये। गोपीनाथ के मथुरानाथ, प्रभाकर और श्रीधर ये तीन पुत्र हुए। ये तीनो कन्नौज में बसे और कन्नौज के मिश्र कहाये 17 विश्वे के।

श्रीधर, गोपीनाथ - धोविहा ग्राम में रहे सो धोविहा के मिश्र कहाये 18 विश्वे। कंगू - के श्रद्धा, पुरुषोत्तम, माधवराम और भट्टाचार्य ये चार पुत्र हुए। ये चारों बटेश्वर में रहे और कंगू के दीक्षित कहाये

20 विश्वे के। समाधान के चार पुत्र हुए येचारों इन्द्र, मुकुन्द, जागे और बदले वटपुरा में रहे सो समाधनक दीक्षित कहाये क्रमया: 7,6,7,8, विश्वे के। मुरली के लच्छू, बिरजू, मोहन तथा दिवऊ ये चार बेटे हुए। ये चारों वटपुर वाले दीक्षित कहाये क्रमश: 17,18,18,17 विश्वे के। जगजीवन के धर्मू और शर्मू दो पुत्र हुए। ये वटपुर वाले दीक्षित कहाये 18 विश्वे के। कमलपाणिके, लालमणि, 19 विश्वे के। लोकनाथ, विश्वनाथ, चतुर्भुज ये तीनो असनी वाले परसु के मिश्र कहाये 20 विश्वे के। जयभद्र के लछ्नू और बछ्नू दो पुत्र हुए। ये दोनों गंगासों वाले हिमकर के मिश्र कहाये 17,16 विश्वे के। प्रभाकर श्रीकंठ और माधव दो पुत्र हुए और गोपालपुर में बसे सो गापीनाथ मिश्र कहाये 15 विश्वे के। श्रीधर के एक पुत्र चतुर्भज हुए यह असनी के गोपीनाथ धोविहा के मिश्र कहाये 19 विश्वे के। श्रद्धा के चक्रपाणि, शेखर के 1 विश्वे और श्रीचन्द के 18 विश्वे। धर्मू के पुत्र जयकृष्ण वअपुर वाले वीरेश्वर के दीक्षित कहाये 15 विश्वे के। चतुर्भज के सुक्खे, मुन्ना बुद्धा और दीप ये चार पुत्र हुए। यह चारों पुत्र मीरकीसराय वाले परसू के मिश्र कहाये 20 विश्वे 19,20,20 विश्वे के। श्रीकंठ के प्राणनाथ, केशवराम और हरिनन्दन ये तीन पुत्र हुए भोजावाद के गोपीनाथ मिश्र कहाये 12,13,14 विश्वे। जयकृष्ण के यज्ञपति, ग्रहपति, धीरेश्वर, यज्ञदत्त और खेमकरण ये पांच पुत्र हुए और वटपुर वाले वीरेश्वर के दीक्षित कहाये 6,15,15,14,14 विश्वे। सुक्खे के गांगा और प्रथम दो पुत्र हुए। सो दोनो मीरकी सराय वाले परसू के मिश्र कहाये रामपुरी दोनो मिश्र 20 विश्वे के। क्षेमकरणके रूपनारायण, सूर्यमणि और दीनानाथ यह तीन पुत्र हुए और वटपुर वीरेश्वर के दीक्षित कहाये क्रमश: 14,15,14 विश्वे। दीनानाथ के गोकुल, समाधान, देवकीनन्दन और देवदत्त ये चार पुत्र हुए। ये चारों वटपुरी वीरेश्वर के मिश्र कहाये 13,12,13,13, विश्वे। गोकुल के कृपाराम और भजन ये दो पुत्र हुए और वटपुरी वीरेश्वर दीक्षित कहाये 13, 12 विश्वा। भजन के काशीप्रसाद और रामप्रसाद ये दो पुत्र हुए जो वटपुरी वीरेश्वर दीक्षित कहाये 12,12 विश्वे। काशीप्रसाद के चन्द्रसेन डोडिया खेरे के दीक्षित कहाये 3 विश्वे। रामसहाय – बनिगाँव में बसे और वहाँ के तिवारी कहाये 3 विश्वे के। कालिका कटोता में रहे वहाँ के तिवारी कहाये 3 विश्वे के।

चन्द्रसेन बन्दीदीन, जागन, मनोहर और मोती ये चार पुत्र हुए। बन्दीदीन धतूरा के तिवारी 3 विश्वे के। जागन धतूरा के अवस्थी 3 विश्वे के। मनोहर कटोता के अवस्थी 3 विश्वे के। मोती अमिलगहनी के अवस्थी 3 विश्वे के। रामसहाय के दिवता, जसराम और जवाहर ये तीन पुत्र हुए। दिवता भावपुरा के अग्निहोत्री कहाये 3 विश्व के। जसराम वटपुर के अग्निहोत्री कहाये 3 विश्वे के। जवाहर खभरा के मिश्र कहाये 5 विश्वे के। कलिका के मतिराम और कुन्दन दो पुत्र हुए। मतिराम लखनऊ के उपाध्याय कहाये 2 विश्वे के। कुन्दन चिंचोली के उपाध्याय कहाये 3 विश्वे के। इस प्रकार शाण्डिल्य गोत्र में 17 पीढ़ी और 130 पुरुषों के वंश कर्ता पाये जाते हैं।

'कात्यायन गोत्र का वर्णन'

श्री ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी के वंश में उत्पन्न हुए महिर्षि कात्यायन जी गोत्र में चतुर्भुज द्विवेदी बड़े

विद्वान और प्रसिद्ध हुए। वे टिकरिया ग्राम में निवास करने से टिकरिया के दुबे कहाये 4 विश्वा के। चतुर्भुज के पुत्र गार्गीदत्त हुए यह बड़े विद्वान और प्रतापी हुए। कंजपुर के राजा ने बुलाकर अपना गुरू बनाया। राजपुरोहित हेमनथ की कन्या से इनका विवाह हुआ। यह कंजपुर में ही रहने लगे इस कारण कंजपुर के मिश्र कहाये 10 विश्वा। इनकी पहली पत्नी से ऐंड़े, गैड़े, खट्टे और मिट्ठे यह चार पुत्र हुए। ऐंड़े वदरिया में वसे इसलिये वदरिका के मिश्र कहाये 1 विश्वे। गैंड़े - सिरकिटा में बसे इसलिए वहाँ के दुबे कहाये 10 विश्वा के। खट्टे और मिट्ठे कंजपुर में वसे इससे कंजपुर के मिश्र कहाये 10 विश्वा। ऐंड़े के छः पुत्र मोहनलाल, काशीनाथ, जगन्नाथ, विश्वनाथ, पीया और महाशर्म हुए। इनमें मोहनलाल और महाशर्म वदरका ववनाटोले के मिश्र कहाये 14, 10 विश्वा। काशीनाथ, जगन्नाथ, विश्वनाथ तथा पीया ये वदरका के मिश्र कहाये 16,16,90 विश्वा। गैंड़े के राधारमण, सूर्यप्रसाद, दयाराम, सेवाराम और गुलजारी पाँच पुत्र हुए। इनमें राधारमण जगदीशपुर के मिश्र कहाये 10 विश्वा। खट्टे के पवननाथ और लोकनाथ तथा विश्वनाथ तीन पुत्र हुए। पवननाथ वैजगाँव में वसे सो वैजगाँव के मिश्र कहाये 15 विश्वा के। लोकनाथ पासीखेरे के मिश्र कहाये 14 विश्वा। विश्वनाथ गलेंथें के मिश्र कहाये 11 विश्वा के। मिट्ठे के अनन्तराम और चिन्तामणि दो पुत्र हुए। इनमें अनन्तराम राजपुर के अग्निहोत्री कहाये 10 विश्वे। चिन्तामणि गलेंथे के मिश्र कहाये 13 विश्वा। मोहनलाल के वेदमूर्ति, कमलनयन और मान्धाता तीन पुत्र हुए और तीनों वदरिका ववनाटोले के मिश्र कहाये 14,13,14 विश्वा। पीथा के एक पुत्र विज्ञानेश्वर हुआ सो वरुआ के मिश्र कहाये 14 विश्वा। सेवाराम के भगमी और भगवन्त दो पुत्र हुए भगमी - पत्योना के दुवे कहाये 7 विश्वा। भगवन्त - नलहारपुर के मिश्र कहाये 6 विश्वा। पवननाथ के मुरलीधर, मल्लिनाथ, गोपीनाथ और मधुनाथ ये चार पुत्र हुए और वैजगाँव के मिश्र कहाये 16 विश्वा। लोकनाथ की पहली पत्नी से मथुरानाथ हुए ये पासीखेरे के मिश्र कहाये 15 विश्वा के दूसरी पत्नी से काशीनाथ, रतिनाथ और नीलकंठ ये तीन पुत्र हुए ये गलोंथे वाले मिश्र कहाये 13,14,14 विश्वा।

विश्वनाथ के एक पुत्र शम्भूनाथ - पासीखेरे के हुए और गलोंथें वाले मिश्र कहाये 13 विश्वा। अनन्तराम की पहली पत्नी से मथुरा, अयोध्या और प्रयाग तीन पुत्र हए।

मथुरा - वदरिका के अग्निहोत्री कहाये 5 विश्वा। अयोध्या - विहगाँव के अग्निहोत्री कहाये 10 विश्वा। प्रयाग मोतीपुर के अग्निहोत्री कहाये 3 विश्वा। अनन्तराम की दूसरी स्त्री से मुन्ना और केशरी दो पुत्र हुए। मुन्ना चाँदीपुर के अग्निहोत्री कहाये 8 विश्वा। केशरी रामपुर के मिश्र कहाये 5 विश्वा। चिन्तामणि के केशी, रामनाथ और अनिरूद्ध तीन पुत्र हुए। केशी - सुठिया के मिश्र कहाये 20 विश्वा। रामनाथ आंकन के मिश्र कहाये 19 विश्वा और अनिरूद्ध कन्नौज ग्वाल मैदान के मिश्र कहाये 20 विश्वा।

विज्ञानेश्वर के एक पुत्र श्री दत्त हुए सो लवानी के मिश्र कहाये 12 विश्वा। मल्लिनाथ के एक पुत्र भावनाथ हुए और वट्ट सराय में निवास किया सो वैजगाँव के मिश्र कहाये 14 विश्वा। मधुनाथ के नृहसिंहनाथ पुत्र हुए ये हड़हा में बसे और वैजगाँव के मिश्र कहाये 14 विश्वा। केशी के हरिराम और

माधवराम दो पुत्र हुए। ये दोनो सुठिया के मिश्र कहाये 17,18 विश्वा। रामनाथ के मोहन, कमल, प्रजापति और कन्ते यह चार पुत्र हुए। इनमें मोहन और कमल वदरिका में रहे सो आंकिन के मिश्र कहाये 20 विश्वा। प्रजापति मांझ गाँव के मिश्र कहाये 20 विश्वा। कन्ते – निवादा में बसे और आंकिन के मिश्र कहाये 18 विश्वा। अनिरूद्ध की पहली पत्नी से सदा, शंकर, हंसराम और शिरोमणि ये चार पुत्र हुए। ये चारौ कन्नौज के ग्वाल मैदान के अनिरूद्ध मिश्र कहाये 20,20,20,20 विश्वा। दूसरी पत्नी से गंगाप्रसाद हुए। जो अनिरूद्ध के मिश्र कहाये 18 विश्वा। शंकर – के लाले और वाले दो पुत्र हुए दोनों कन्नौज के मिश्र कहाये 20 विश्वा। श्री दत्त – के पुत्र शुरेश्वर हुए वाँकीपुर के मिश्र कहाये 1 विश्वा। हरीराम – के गनी, गोवर्धन, मार्कण्डेय और भवन ये चार पुत्र हुए। गनी और भवन नौगाँव वाले सुठिया के मिश्र कहाये 17,17 विश्वा। गोवर्धन और मार्कण्डेय सुठिया के मिश्र कहाये 20,18 विश्वा। माधवराव की पहली पत्नी से इन्द्रमणि, भावनाथ और टीकाराम ये तीन पुत्र हुए और सुठिया के मिश्र कहाये 19,18,19 विश्वा। दूसरी पत्नी से राजाराम और वीरभ्रद दो पुत्र हुए। वे सुठिया के मिश्र कहाये 18,17 विश्वा। मोहन मूँके, प्रेम और तेज ये तीन पुत्र और मुरादावाद में बसे आंकिन के मिश्र कहाये 20,20 विश्वा। प्रजापति के हीरानन्द, चतुर्भुज, योगेश्वर, सिद्धि, उर्वीधर और बदले ये छः पुत्र हुए ये सभी माँझा गाँव के मिश्र कहाये 20 विश्वा। कान्ते – के रामदयाल, विद्याधर, घासीराम और वीरेश्वर ये चार पुत्र हुए और निवादा वाले आंकिन के मिश्र कहाये 17,16,16,18 विश्वा। शिरोमणि के दत्त, दिवाकर और हेंमनाथ ये तीन पुत्र हुए। ये तीनो कन्नौज के ग्वाल मैदान के अनिरूद्ध के मिश्र कहाये 19,19,19 विश्वा। गंगाप्रसाद के धना, वला, सतीदास और श्रीहर्ष ये चार पुत्र हुए। धना और वला वौधी के मिश्र कहाये 10,10 विश्वा। सतीदास कन्नौज के मिश्र कहाये 14 विश्वा। श्रीहर्ष गोपामऊ के मिश्र कहाये 10 विश्वा। हीरानन्द के चांचे, देवमणि, भोले, पलटू, कृपा और सन्तोषी ये छः पुत्र हुए। इनमें चाँचे, पलटू, सन्तोषी ये काँकोरी में बसे और माँझ गाँव के मिश्र कहाये 20,18,20 विश्वा। हेमनाथ – के भूले, धमने, गंगाधर, विश्वनाथ और राघुनाथ ये पाँच पुत्र हुए। ये कन्नौज के ग्वाल मैदान के मिश्र कहाये 19,19,19,19 विश्वा। चांचे के पाराशर और खेम दो पुत्र हुए ये कांकोरा में रहे और माँझ के मिश्र कहाये 18,18 विश्वा। भूले के एक पुत्र कमलभाल पिहानी में रहे सो पिहानी के मिश्र कहाये 10 विश्वा। गंगाधर की पहली पत्नी से वन्दन, गुलाल और भगोले ये पुत्र हुए और कन्नौज के ग्वाल मैदान के मिश्र कहाये 19 विश्वा। दूसरी पत्नी के शंभू, वेदनाथ, माधव और हरिनाथ चार पुत्र हुए और दरोली में रहे ग्वाल मैदान कन्नौज के मिश्र कहाये 19,19,19,19 विश्वा। इस प्रकार कात्यायन वंश में 10 पीढ़ी और 116 पुरुष वंश कर्ता हुए।

'भरद्वाज गोत्र का वर्णन'

ब्रह्मा जी के पुत्र अंगिरा और अंगिरा के वार्हस्पत्य तथा वार्हस्पत्य के भरद्वाज, भरद्वाज के वंश में द्रोणाचार्य हुए। द्रोणाचार्य के वंशज अश्वस्थामा हुए। इनके वंश में बहुत समय बाद सत्याधर, वामदेव परमप्रतापी हुए, और तरी ग्राम में वास करने के कारण तरी के शुक्ल कहाये 4 विश्वा। सत्याधर के पुत्र

मधुकर बिगहपुर में रहने से बिगहपुर के शुक्ल कहाये 4 विश्वा। वामदेव के पुत्र गुणकर वनस्थी के पांडे कहाये 7 विश्वा। मधुकर के और गुणकर के पुत्रों से बहुत सी वंशवृद्धि हुई। मधुकर के यदुनन्दन, चन्दन, मणिकंठ, कंजू, वंशी, दुर्गादत्त, धर्मदत्त, महासुख, मिश्री और इन्द्रदत्त यह दस पुत्र हुए। चन्दन तरी के शुक्ल 6 विश्वा। यदुनन्दन नवाये के शुक्ल 5 विश्वा। मणिकंठ पुरवा के शुक्ल 2 विश्वा। कंजू गहरोली के शुक्ल 4 विश्वा। वंशी खरौली के शुक्ल 4 विश्वा। दुर्गादास भैंसोई के शुक्ल 5 विश्वा। धर्मदत्त विगहपुर के शुक्ल 11 विश्वा। महासुख गूदरपुर के शुक्ल 5 विश्वा। मिश्री चन्द्रपुर के शुक्ल 2 विश्वा। इन्द्रदत्त ऊँचेगाँव के शुक्ल 4 विश्वा। गुणकर के 1 पुत्र जगदेव वनस्थी के पांडे कहाये 5 विश्वा। चन्दन के रुदी, पुरुषोत्तम और संत ये तीन पुत्र हुए और तरी के शुक्ल कहाये 6,5,5 विश्वा। यदु की पहली पत्नी से एक पुत्र सत्यशील हुए वे नवाये में बसे और सत्य के शुक्ल कहाये 5 विश्वा। दूसरी स्त्री से सर्वसुख नामक पुत्र हुए वह पाटन के शुक्ल कहाये 10 विश्वा। महासुख के आशादत्त, पदमनाभ और रामचन्द्र यह तीन पुत्र हुए और यह तीनो गूदरपुर के शुक्ल कहाये 5,5,5 विश्वा। मिश्री के छिवमणि और कुभनई दो पुत्र हुए। शिवमणि चौंसा के शुक्ल कहाये 8 विश्वा। कुभनई चन्दनपुर के शुक्ल कहाये 9 विश्वा। जगदेव की पहली स्त्री से भाष्कर पुत्र हुए यह वनस्थी के पांडे कहाये 6 विश्वा। दूसरी पत्नी से लाला, भोजराज और रामनाथ तीन पुत्र हुए। लाला गौरा के पांडे 9 विश्वा। भोजराज कपिला के पांडे 10 विश्वा। रामनाथ पटियारी के पांडे 10 विश्वा। सर्वसुख के भाल घाटम और अजय तीन पुत्र हुए। ये तीनो दिलीपपुर के शुक्ल कहाये 12 विश्वा। शिवमणि के दिनकर, महँगू और पड़ोरे तीन पुत्र हुए। दिनकर चौंसा के शुक्ल कहाये 7 विश्वा। महँगू पटोरे के शुक्ल कोई मिश्र भी कहते हैं, इससे ये शुक्ल मिश्र कहाये और चौंसा में है 8 विश्वा। किसी वंशावली का लेख है कि भानु शुक्ल ने महँगू पटोरे को राशि में बैठाया सो भानु में मिलने के कारण दोनों शुक्ल मिश्र विख्यात हुए। इनके वंशज अब तक अपने को भानु के शुक्ल कहते हैं। कुमनई के सूर्यमणि और गोपीनाथ दो पुत्र हुए। दोनो गौड़हा के शुक्ल कहाये 10 विश्वा। भाष्कर के वछहू और कुलीन दो पुत्र हुए दोनो भीष्मपुर के पांडे कहाये 7 विश्वा। भोजराज के भैरव और पूरन दो पुत्र हुए। पूरन लखनऊ के पांडे कहाये 19 विश्वा। भैरव असनी खोरी गली में निवास करने के कारण खोर के पांडे कहाये। 20 विश्वा। रामनाथ के भानू और कुंठवन, कृष्णदीन, सुक्खू ये चार पुत्र हुए। भानू वेला के पांडे कहाये 9 विश्वा। कुंठवन पटियारी के पांडे 9 विश्वा। कृष्णादीन पाली के पांडे 8 विश्वा। सुक्खू डोडियाखेरे के पांडे 9 विश्वा। सूर्यमणि की पहली स्त्री से एक पुत्र वृन्दावन हुए। ये गोडिहा के शुक्ल कहाये 10 विश्वा। दूसरी स्त्री से एक पुत्र जगदेव, दूसरे रामनाथ और तीसरे नारायण हुए। जगदेव महोली के शुक्ल 10 विश्ना। रामनाथ सिकटिया के शुक्ल 10 विश्वा। नारायण गलेंथे के शुक्ल कहाये 16 विश्वा। गोपीनाथ के होल, हरदास, जगई, कश्यप और भानु ये पांच पुत्र हुए। ये सब विगहपुर के शुक्ल कहाये और अपने अपने नामों से प्रसिद्ध हुए 11,12,10,13,10 विश्वा। सुकुल के देवमणि, अहित, तितई, वतनी, दिउता, ठकुरी और पठगा ये सात पुत्र हुए और सब दिलीपपुर के सुकुल कहाये। 12,11,12,12,11,11,10 विश्वा। घाटम के एक पुत्र भागीरथ हुए वह साढ़ के त्रिवेदी कहाये 10 विश्वा। अजय के अम्बर और कान्हा ये दो

पुत्र हुए। अम्बर अधमपुर के सुकुल कहाये 3 विश्वा। कान्हा के त्रिवेदी कहाये अपने नाम से प्रसिद्ध हुए 11 विश्वा। पूरन के वीरेश्वर, श्रीकृष्ण, शीतल, गिरधर, परमा, हरिनाथ, मणिराम और गंगाराम ये आठ पुत्र हुए। वीरेश्वर, श्रीकृष्ण, शीतल यह तीनो गंगासों के पांडे कहाये 20,20,20 विश्वा। नगई के एक पुत्र सकटे हुए सो विगहपुर के नगई के सुकुल कहाये 12 विश्वा। कश्यप की पहली पत्नी से एक पुत्र ख्यूराज हुए सो विगहपुर के ख्यूरा के सुकुल कहाये 10 विश्वा। दूसरी स्त्री से भगदत्त, भाष्कर और मकरन्द ये तीन पुत्र हुए ये तीनो विगहपुर के सुकुल अपने अपने नामों से प्रसिद्ध हुए 14,10,12 विश्वा। गंगाराम के उध रणनाथ और रामेश्वर दो पुत्र हुए। उधरणनाथ गंगासो के पांडे कहाये 17 विश्वा। रामेश्वर विद्वान होंने से भट्टाचार्य कहाये और लखनऊ ऊँचे टोले में बसे ये लखनऊ के पांडे भट्टाचार्य कहाये 18 विश्वा। परमकृष्ण के भूरे और भाष्कर दो पुत्र हुए और गंगासो के पांडे कहाये 20,20 विश्वा। जगदीश के लाला, राम, वीरे और जीवन ये चार पुत्र हुए। ये अमरा के पांडे कहाये 10,14,14,14 विश्वा। पद्मधर के कल्लू, सन्नू और येनी तीन पुत्र हुए। ये लहुरी गाँव के त्रिवेदी कहाये। कान्हा के तोधकपुर वाले कहाये 12,12,12 विश्वा। बाबू के छन्नो, केशी और परसई ये तीन पुत्र हुए। छन्नो गलैंथे के सुकुल कहाये नाम से प्रसिद्ध हुए 20 विश्वा। केशी टेढ़ा के सुकुल कहाये 18 विश्वा। परसई गलैंथे के सुकुल कहाये 14 विश्वा। भैरव के लालमणि, तिलक और बनवारी ये तीन पुत्र हुए ये अपने अपने नामों से उधन्नपुर के सुकुल कहाये 13,10,10 विश्वा। चन्द्रमणि की पहली पत्नी से बलराम और मधुसूदन दो पुत्र हुए दोनो विगहपुर के सुकुल कहाये 5,8 विश्वा। दूसरी पत्नी से अनिरूद्ध और भीमसेन दो पुत्र हुए दोनों ही भैंसोई के सुकुल कहाये 10,10 विश्वा। माणक्य के आदित्यराम, कल्याणमणि, हरिहर और देवमणि ये चार पुत्र हुए ये चारों पाटन के सुकुल कहाये 8,12,12,11 विश्वा। भवदत्त के चन्द्राकर, दिवाकर, विष्णुदत्त, नारायण और जगन्नाथ ये पाँच पुत्र हुए। इनमें पहले चार भवदत्त के सुकुल कहाये 20,18,15,17 विश्वा। जगन्नाथ दिलीपनगर में रहे सो भवदत्त के सुकुल कहाये 14 विश्वे के। भाष्कर के घनश्याम और लालमणि दो पुत्र हुए विगहपुरी भाष्कर के सुकुल कहाये 14,10 विश्वा। मकरन्द के भाष्कर, मोहन, धनराज, देशाकर और घनश्याम ये पांच पुत्र हुए। ये सभी विगहपुरी मकरन्द के सुकुल कहाये 10,10,10,10,10 विश्वा। रामेश्वर के एक पुत्र गोपीकान्त हुए ये लखनऊ के पांडे भट्टाचार्य कहाये 18 विश्वा। पूरे के लाले, वाले, गंगू, कान्हा और गदाधर के पांच पुत्र हुए ये पांचो खोरीगली के पांडे कहाये 20, 20, 20, 20, 20 विश्वा। भाष्कर के छः पुत्र लाले, निरोत्तम, टोडर, कन्धर, विश्वनाथ और मनीराम हुए। लाले कन्नौज के खोरीगली के पांडे कहाये 20 विश्वा। निरोत्तम असनी के पांडे कहाये 20 विश्वा। टोडर कन्नौज की खोरीगली के टोडरापांडे कहाये 18 विश्वा। कन्धर कन्नौज की खोरीगली के पांडे कहाये 20 विश्वा। विश्वनाथ गंगासो खोरीगली के पांडे कहाये 20 विश्वा। मनीराम तृतीराम खोरीगली के पांडे कहाये 14 विश्वा। वीरभद्र अमरा के पांडे कहाये 10 विश्वा। मनीराम के बिहारी, दलपति, यक्षपति और दिवोल चार पुत्र हुए बिहारी मोरा के पांडे कहाये 7 विश्वा। दलपति नारायणपुर के पांडे कहाये 5 विश्वा। यशपति नौगाँव के पांडे कहाये 5 विश्वा। दिवोल विगहपुर के पांडे कहाये 5 विश्वा। वीरभद्र के नित्यानन्द, छेदी, मथनू, गंगा, खंजन, ज्वालानाथ और बद्रीनाथ ये

सात पुत्र हुए नित्यानन्द इटोजा के पांडे कहाये 7 विश्वा। छेदी वागीशपुर के पांडे कहाये 10 विश्वा। मथनू वनगाँव के पांडे 10 विश्वा। गंगा चम्पापुर के पांडे 4 विश्वा। खंजन मनोह के पांडे 5 विश्वा। ज्वालानाथ नाथपुर के पांडे 4 विश्वा। बद्रीनाथ हरिदासपुर के पांडे 3 विश्वा। जीवन के मोती, मंसा, चेतन, वचनू, केशरी और शिवा ये छः पुत्र हुए मोती लखीमपुर के पांडे 5 विश्वा, वचनू वरी के पांडे 5 विश्वा। केशरी जहाँनाबाद के पांडे 5 विश्वा, शिवा बगरा के पांडे 5 विश्वा। छंगे के सुकलक, देवशर्म, दुलम्भी, मकरन्द, यदुनाथ, पीताम्बर, कमलापति, लोकनाथ यह सात पुत्र हुए। ये सातों गलैंथे के छंगेवाले सुकुल कहाये 19,19,18,18,18,19,18 विश्वा। लालमणि के वाला, वागीश दो पुत्र दो पुत्र। वाला हफीजाबाद के अपने नाम के सुकुल कहाये 20 विश्वा। वागीस न्यायशास्त्र में पारंगत हुए भट्टाचार्य की पदवी पाई और कन्नौज में जाकर बसे सो न्यायाधीश के सुकुल भट्टाचार्य कन्नौज के कहाये 20 विश्वा। बलराम के मनसुखराम, अन्तराम, हरिशंकर और दुर्गादास चार पुत्र हुए ये चारों भैंसई के सुकुल कहाये 10,9,8,14 विश्वा। अनिरुद्ध के जगन्नाथ और रघुनाथ दो पुत्र हुए ये गलैंथे के सुकुल कहाये 10,10 विश्वा। भीमसेंन के उमा और धन्नी दो पुत्र। उमा विगहापुर में अपने नाम से सुकुल कहाये 13 विश्वा। हरिहर के कसनी, धनश्याम और पुरुषोत्तम तीन पुत्र हुए तीनों विगहपुरी हरिहर के सुकुल कहाये 16,16,17 विश्वा। दिवाकर के कमल, कल्याण, निली, कृष्ण और गोविन्द यह पांच पुत्र हुए। ये पांचो दिवाकर के भवदत्त के सुकुल कहाये 16,1615,15,16 विश्वा। गोपीकान्त पांडे के वंशीधर, मुरलीधर, मतिकृष्ण, शिरोमणि, चन्द्रमोल, कमलापति और श्रीपति ये सात पुत्र हुए और सातों कन्नौज में भट्टाचार्य पांडे कहाये 20,20,19,19,20,20,20 विश्वा। मथनू के एक पुत्र जयदेव हुए ये सवालयपुर के पांडे कहाये 7 विश्वा। भूदेवल पहतिया के पांडे कहाये 4 विश्वा। वाला के वीरेश्वर, नन्दराम, रामनिवास, हरिसेवक और जगन्नाथ यह पांच पुत्र हुए, ये पांचो हफीजावादी वाला के सुकुल कहाये 20,20,20,19,19 विश्वा। वागीस के चन्द्रमौल, जयकृष्ण और कुमार ये तीन पुत्र हुए ये तीनों कन्नौज में न्याय वागीस के सुकुल भट्टाचार्य कहाये 15,15,15 विश्वा। जगन्नाथ के हरि हरि तथा पैकू दो पुत्र हुए ये विगहपुर में अपने अपने नाम से सुकुल विख्यात हुए 10 विश्वा। रामनाथ के एक पुत्र मणिकंठ हुए ये एकडला के सुकुल कहाये 12 विश्वा। धन्नी के कशीराम, गोपी, विश्वेश्वर, रामेश्वर और सत्यधर ये पांच पुत्र हुए ये पांचो ओनिहा ग्राम में धनी के सुकुल कहाये 14,14,13,13,14 विश्वा। कशनी के कल्याणकर और ललऊ दो पुत्र हुए ये दोनो सातनपुर में हरिहर के सुकुल कहाये 12,13 विश्वा। घनश्याम के इन्द्रमणि नामक एक पुत्र हुए सो निवादा के हरिहर वाले सुकुल कहाये 13 विश्वा। पुरुषोत्तम के मोहन और रतन दो पुत्र हुए ये दोनो विगहपुर में हरिहर के सुकुल कहाये 13,13 विश्वा। वीरेश्वर के काशीराम, यदुवीर, रघुवीर, गयादत्त और गदाधर ये पांच पुत्र हुए। ये पांचो हफीजाबाद में वाला के सुकुल कहाये 20,20,20,20,20 विश्वा। नन्दराम की पहली पत्नी से विश्वनाथ, गोपीनाथ और अमरनाथ तीन पुत्र हुए तीनों सकूराबादी वाला के सुकुल कहाये 17,17,18 विश्वा। दूसरी स्त्री से हरिशंकर और चक्रपांणि दो पुत्र हुए और सकूराबादी वाला के सुकुल कहाये 18,18 विश्वा। पैकू के बैनीराम, लक्ष्मीराम, चतुर्भज और विश्वनाथ ये चार पुत्र हुए। इनमें पहले तीन विगहपुर में बसे और विश्वनाथ निवई

में बसे लेकिन सभी पैकू के सुकुलन कहाये 19,19,19,19 विश्वा। गोपी के एक पुत्र गोकुल हुए वे ओनिहा में धन्नी के सुकुल कहाये 16 विश्वा। मोहन के मुरलीधर, महामुनि और रेवतीनाथ ये तीन पुत्र हुए। मुरलीधर नोवीपुर के सुकुल कहाये 11 विश्वा। रतन के सोते, बसायन, नित्यानन्द और नन्दू ये चार पुत्र हुए। चारों निवाहा के सुकुल कहाये 12,12,12,12 विश्वा। काशीराम के यमुनादीन, देवीदीन और गंगादीन ये तीन पुत्र हुए। ये तीनों हफीजाबाद में वाला के सुकुल कहाये 20,20,20 विश्वा। चक्रपाणि के रामचरन और शिवचरन दो पुत्र हुए और सकूरावादी वाला के सुकुल कहाये 19,19 विश्वा। विश्वनाथ के गुलाल और देवीदत्त ये वदरिका में रहे और पैकू के सुकुल 16,16 विश्वा। मुरलीधर के असई और दशरथ, भोजराज, सुखमन, गंगाचरण, संकटादीन और विरजू ये सात पुत्र हुए दशरथ और असई ये दोनों वदरिका में अपने नाम से सुकुल कहाये 15,14 विश्वा। भोजराज बसई के सुकुल कहाये 12 विश्वा। सुखमन बिगहुली के सुकुल कहाये 4 विश्वा। विरजू बरौली के सुकुल कहाये 4 विश्वा। भोजराज के सन्तू, भगवान और शक्तिवर ये तीन पुत्र हुए। सन्तू पतिहा के सुकुल कहाये 5 विश्वा। शक्तिधर भल्लई के सुकुल कहाये 3 विश्वा। सुखमन के बिहारी, कोमल और गिरवर ये तीन पुत्र हुए। बिहारी वेला के पांडे कहाये 5 विश्वा। कोमल सुसौरा के पांडे कहाये 4 विश्वा। और गिरवर मौराव के पांडे कहाये 10 विश्वा।

इस प्रकार भरद्वाज गोत्रमें सत्याधर ये गिरवर तक 265 पुरुष वंशकर्ता हुए और 16 पीढ़ी का वर्णन डा. मक्खनलाल मिश्र ने किया है।

'उपमन्यु गोत्र का वर्णन'

ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ जी उनके पुत्र व्याघ्रपाद उनके उपमन्यु के सिन्धुप्रद, सिन्धुप्रद के वंश में बहुत समय बाद 'भूप' नाम के पंडित प्रतापी हुए। इन पंडित जी ने पिनाकपुर के राजा धर्मपाल को अपना शिष्य बनाके जुजुहूतपुर एक यज्ञ कराया तथा राजपुरोहित की कन्या से भूपा जी का व्याह हुआ तब से ये भूपा जी जुजुहूतपुर के दीक्षित कहाये 5 विश्वा। भूपा जी के जानी और यागेश्वर दो पुत्र हुए। जानी नागपुर में बसे और पाइक कहाये 8 विश्वा। यागेश्वर यज्ञपुरा के दुबे कहाये 4 विश्वा। जानी के नभऊ और गदाधर दो पुत्र हुए। नभऊ दरियावादी अवस्थी कहाये 7 विश्वा। गदाधर सेठपुर के पाइक कहाये 8 विश्वा। नभऊ के कमल, नल और भट्ट तीन पुत्र हुए। कमल विसोरा के अवस्थी कहाये 5 विश्वा। नल एकडला के त्रिवेदी कहाये 5 विश्वा। भट्ट चन्दनपुर के वाजपेई कहाये 5 विश्वा। गदाधर के कन्दर्प, सिताबू और बच्चू तीन पुत्र हुए, इनमें कन्दर्प निसुरा के पाठक 5 विश्वा। सिताबू जानापुर के पाठक कहाये 5 विश्वा। बच्चू अंगई के पाठक कहाये 8 विश्वा। कमल के वंशी और गोपी दो पुत्र हुए दोनो ओमीपुर के अवस्थी कहाये 5 विश्वा। भट्ट के एक पुत्र जगन्नाथ चन्दनपुर के वाजपेई कहाये 10 विश्वा। सिताबू के पतिराखन और ब्रजलाल दो पुत्र हुए। पतिराखन शाहाबाद में जानापुर के पाइक कहाये 5 विश्वा। ब्रजलाल मौराये के पाठक कहाये 9 विश्वा के। गोपी के गोशल और धमोई दो पुत्र हुए। गोशल वेनमामऊ के पाइक कहाये 4 विश्वा। धमोई मौराये के अवस्थी कहाये 5 विश्वा के धर्मा की पहली पत्नी से देवर्षि, सुरेश्वर, सिद्धनाथ, खांडे,

जीवन, केदार, नन्दू और ब्रह्मदत्त ये आठ पुत्र हुए। देवर्षि सरवन के अवस्थी कहाये 10 विश्वा। सुरेश्वर जयगाँव के अवस्थी कहाये 10 विश्वा। सिद्धनाथ दरियाबाद के अवस्थी कहाये 10 विश्वा। खांडे और जीवन मतिपुर के अवस्थी 8,8 विश्वा। केदार और नन्दू गोरा गाँव के अवस्थी कहाये 10,8 विश्वा। और ब्रह्मदत्त मौराये के अवस्थी कहाये 10 विश्वा। धमाई की दूसरी पत्नी से शिवदत्त, देवदत्त और यज्ञदत्त ये तीन पुत्र हुए। शिवदत्त मौराये के मिश्र कहाये 5 विश्वा। देवदत्त मौराये के दुवे कहाये 5 विश्वा। यज्ञदत्त मौराये के वाजपेई कहाये 5 विश्वा। ब्रह्मदत्त की पहली पत्नी से जो आठ पुत्र हुए ये अठभईया अवस्थी कहाये दूसरी पत्नी से परशुराम, कान्ह कुमार और दीनानाथ ये तीन पुत्र हुए। परशराम, कान्हकुमार सिंहपुर के अवस्थी कहाये 10,10 विश्वा। दीनानाथ एकडला के अवस्थी कहाये 10 विश्वा। शिवदत्त के एक पुत्र हरदत्त हुए यह वेनमामऊ के पाठक कहाये 5 विश्वा। देवदत्त की पहली पत्नी से बिहारी नामक एक पुत्र हुए ये पसिगवां के दुवे कहाये 8 विश्वा। दूसरी पत्नी से जीवन, जगनी, किन्दर और हरसुख ये चार पुत्र हुए। जीवन – रिबाड़ी के अग्निहोत्री कहाये 11 विश्वा। जगनी – जोनपुर के अग्निहोत्री कहाये 8 विश्वा। किन्दर दरियाबादी अग्निहोत्री कहाये 10 विश्वा। हरसुख वदरका के अग्निहोत्री 11 विश्वा। यज्ञदत्त के विष्णु शर्मा, देवशर्मा, शिवशर्मा, महाशर्मा और लक्ष्मीशर्मा ये पाँच पुत्र हुए और पाँचो लखनऊ के वाजपेई कहाये 17,18,1817,18 परशराम के बडे और गोपाल दो पुत्र हुए। ये त्योरासी में बसे और अपने नाम से ही अवस्थी कहाये 17,17 विश्वा। कान्हकुमार के माधव और माते दो पुत्र हुए दोनो त्योरासी के अवस्थी कहाये 20,21 विश्वा। दीनानाथ के प्रभाकर नामक ऐक पुत्र हुए, यह भी त्योरासी के अवस्थी कहाये 20 विश्वा। हरदत्त के सहतावन, वृन्दावन, पद्मेन्द्र और सर्वाधार ये चार पुत्र हुए। सहतावन सरमऊ गाँव के मिश्र कहाये 5 विश्वा। वृन्दावन लखपुरा के मिश्र कहाये 5 विश्वा। पद्मेन्द्र परसुहिया के मिश्र कहाये 4 विश्वा। सर्वाधार गुर्दवान गाँव के मिश्र कहाये 5 विश्वा। बिहारी के थलई और रूपई दो पुत्र हुए थलई पहुआ में बसे और थलई के दीक्षित कहाये 9 विश्वा। रूपई भैंसई में बसे और दुवे कहाये 5 विश्वा। जगनी के हीरामणि, शिरोमणि और दत्तू ये तीन पुत्र हुए। ये तीनो जोनपुर के अग्निहोत्री कहाये 7,7,7 विश्वा। जगनी के किन्दर के बाबूराम एक पुत्र हुए सो दरियाबादी अग्निहोत्री कहाये 9 विश्वा। विष्णुशर्मा के एक पुत्र ओंकेश्वर हुए सो गौरा में बसे और बाजपेई कहाये 15 विश्वा। माखन कड़री गाँव के वाजपेई कहाये 15 विश्वा। मंगली रामपुर के वाजपेई कहाये 15 विश्वा। ये तीनों अपने को लखनऊ के वाजपेई कहते हैं। शिवशर्मा के सुन्दर, गंगादास और रमण ये तीनो लखनऊ के वाजपेई पुरवा के कहाये 18,14,14 विश्वा। महाशर्मा के निर्मल, कसई और कुलमणि तीन पुत्र हुए। निर्मल – खटोलहा के वाजपेई अपने नाम से प्रसिद्ध हुए 12 विश्वा। कसई और कुलमणि वैदहा के वाजपेई कहाये 13,18 विश्वा। लक्ष्मी शर्मा के एक पुत्र पैदा हुआ कृष्ण शर्मा सो लखनऊ के पुरवा के वाजपेई कहाये 17 विश्वा। बड़े के भोलानाथ, जगपति, रामप्रसाद और देवीदत्त चार पुत्र हुए। ये चारों त्योरासी के अवस्थी कहाये 20,20,20,19 विश्वा। गोपाल के उद्धव नामक एक पुत्र हुए ये त्योरासी के अवस्थी गोपाल के कहाये 20 विश्वा। प्रभाकर के रमई, नारायण, जगनी, हरीकृष्ण, धरनीधर, मुरारी और इन्द्रमणिये सात पुत्र हुए। और त्योरासी में रहे सो प्रभाकर के अवस्थी

कहाये 20,2020,20,20,20,20 विश्वा। माधव के बाबू, बाँके और मुनीस तीन पुत्र हुए ये तीनों त्योरासी में माधव के अवस्थी कहाये 20,20,20 विश्वा। इन्द्रमणि के उदयनाथ, प्रेमनाथ और थानेश्वर तीन पुत्र हुए और प्रभाकर के अवस्थी कहाये 20,20,20 विश्वा। रूपई के दामोदर और कवितांडव विष्णुपुर के ये दो पुत्र हुए इनमें दामोदर एकडला के त्रिवेदी कहाये 11 विश्वा। कवितांडव विष्णुपुर के दुबे कहाये 15 विश्वा। ओंकेश्वर के एक पुत्र छनो हुए सो गौरा के वाजपेई पुरवा के कहाये16 विश्वा। कुलमणि के गुपई, मथुरी, ललकर, काशीराम और मनीराम ये पांच पुत्र हुए। गुपई, ललकर वैदेहा गाँव के वाजपेई कहाये 15 विश्वा। मथुरी गोपालपुर के वाजपेई कहाये 15 विश्वा। काशीराम, मनीराम विलोला के वाजपेई कहाये 15,15 विश्वा। कृष्ण शर्मा की पहली पत्नी से पीथा नाम का एक पुत्र हुआ सो असनी के वाजपेई कहा ये 18 विश्वा। दूसरी पत्नी से हीरा, बीसा, धन्नी और तारा ये चार पुत्र हुए। ये चारों असनी के वाजपेई कहाये 20,20,19,17 विश्वा। दामोदर के साहब, वादे, मंडन और प्रयाग यह चार पुत्र हुए सो चारों एकडला में अपने अपने नामों से त्रिवेदी कहाये 10,10,12,13 विश्वा। कवितांडव के कला और देवराज दो पुत्र हुए सो कला कन्नौज के दुबे कहाये 8 विश्वा। देवराज राजमऊ के दुबे कहाये 5 विश्वा। छनो के रामभद्र और प्रीतिकर दो पुत्र हुए। ये दोनो लखनऊ के वाजपेई कहाये 20,20, विश्वे। काशीराम के लछनी, वछनी, गंगू, यादव, रघुनाथ और शिवदयाल ये सब चिलोली में काशीराम के वाजपेई कहाये 17,16,1716,17,17 विश्वा। मनीराम की पहली पत्नी से लाले, वाले और मनोरथ तीन पुत्र हुए। ये तीनों भोजिया में मनीराम के वाजपेई कहाये 16,16,13 विश्वा। इन मनीराम का दूसरा व्याहवटेश्वर में हुआ सो उस स्त्री नित्यानन्द, महामुनि दो पुत्र हुए। ये दोनो वटेश्वर में अपने अपने नामों से वाजपेई कहाये 17 विश्वा। हीरा के चत्ते, वीर, भगोले और भत्ते ये चार पुत्र हुए। इनमें तीन असनी में बसे और असनी के वाजपेई कहाये 20,20,20 विश्वा। भगोले बिहार में बसे और हीरा के वाजपेई कहाये 19 विश्वा। वीसा के कमले मौहरा में वीसा के वाजपेई कहाये 19 विश्वा। उर्वीधर, केशव और गयादत्त येचार पुत्र हुए। कमले मौहरा में वीसे के वाजपेई कहलाये 19 विश्वा। उर्वीधर, केशव और गयादत्त ये तीनों असनी में बीसा के वाजपेई कहाये 20,20,20 विश्वा। धन्नी के भावनाथ, उदयनाथ, गिरधर और मुसऊ चार पुत्र हुए और मोजमावाद में धन्नी के सुकुल कहाये 18,18,18 विश्वा। तारा के रघुनन्दन नाम का एक पुत्र हुआ सो हाजीपुर में तारा के वाजपेई कहाये 18 विश्वा। प्रयाग के हरी और रघुनन्दन दो पुत्र हुए सो एकडला में अपने नाम के त्रिवेदी कहाये 19,13 विश्वा। कला के कुन्दन और अभई दो पुत्र हुए कुन्दन कचिया गाँव के दुवे कहाये 10 विश्वा। अभई निगेत्तमपुर के दुवे कहाये 7 विश्वा। देवराज के वासदेव, घरवास, वाल्मीकि और जनार्दन यह चार पुत्र हुए।, वासदेव केसरमऊ के दुवे कहाये 12 विश्वा। घरवास - इटावा में अपने नाम के दुबे कहाये 20 विश्वा। बाल्मीक ख्यूरा गाँव के दीक्षित कहाये 8 विश्वा। जनार्दन रिबाड़ी के अग्निहोत्री कहाये 10 विश्वा। रामभद्र के रामकृष्ण और कमलनयन दो पुत्र हुए। दोनों लखनऊ ऊँचे के वाजपेई रामभद्र वाले कहाये 19,19 विश्वा। प्रीतिकर के गणपति, पीताम्बर, नरहरि, बैनीदत्त, रामचन्द्र और बुद्धिशर्म ये छः पुत्र हुए। इनमें पाँच लखनऊ ऊँचे के प्रीतिकर के वाजपेई कहाये 18,19,18,20,18 विश्वा। बुद्धिशर्म खाले के

वाजपेई कहाये 20 विश्वा। रघुनाथ के प्राणसुख, धूमल और चूणा तीन पुत्र हुए। जो अहमदाबाद में बसे और काशीराम के वाजपेई कहाये 18,18,18 विश्वा। महामुनि के चन्द, आनन्द, लालू, घनश्याम और माधवराम ये पांच पुत्र हुए। ये पाँचो वटेश्वर में महामुनि के वाजपेई कहाये 18,18,19,18,18 विश्वा। चन्द के परशराम और मुरलीधर दो पुत्र हुए। दोनों असनी में हीरा के वाजपेई कहाये 20,20 विश्वा। कमले के परमेश्वरी नाम का एक पुत्र हुआ सो वीसा के वाजपेई कहाये 19 विश्वा। हीरा के बादाम, श्याम, मानिक, हीरा, पुरन्दर और आत्माराम ये छः पुत्र हुए ये सब एकडला में रहे सो हीरा के त्रिवेदी कहाये 17,16,20,18,16,14 विश्वा। घरवास के घनश्याम, चन्द्रमणि और मनऊ तीन पुत्र हुए। इनमें घनश्याम, चन्द्रमणि - इटावा में घरवास के दुवे कहाये 19 विश्वा। वाल्मीक के शांति और संतोष दो पुत्र हुए। शांति दरियावादी दीक्षित कहये 10 विश्वा। सन्तोष नेमिष के दीक्षित कहाये 7 विश्वा। जनार्दन के चन्दन और मतिकर दो पुत्र हुए। चन्दन उज्जैन के अग्निहोत्री कहाये 10 विश्वा। मतिकर ऊँगू के अग्निहोत्री कहाये 13 विश्वा। बुद्धिशर्मा के लाला, लक्ष्मण, लोकी, शंकर, भीखू और मनीराम ये छः पुत्र हुए। ये लखनऊ के खाले के वाजपेई कहाये 20,20,20,20,20,20 विश्वा। चूणा के शिवनन्दन स्यूनी और दिवनी ये तीन पुत्र हुए और असनी गाँव में ये काशीराम के वाजपेई कहाये 17,17,17 विश्वा। लालू के कामदेव और रामदेव दो पुत्र हुए। दोनों वटेश्वर में महामुनि के वाजपेई 20,20 विश्वा। मनऊ के जगनू और निरोत्तम दो पुत्र हुए जगनू चिल्लोली के दुवे कहाये 5 विश्वा। निरोत्तम भैंसई के दुवे कहाये 5 विश्वा। शंकर के चूणा, टीका और देवदत्त तीन पुत्र हुए और तीनों लखनऊ के खाले के वाजपेई कहाये 20,20,20 विश्वा। निरोत्तम के बसई, जानकी और बाबू तीन पुत्र हुए। तीनों सेपई में भैंसई के दुवे कहाये 20,6,7 विश्वा। बाबू के एक पुत्र बल्लू हुए सो सेपई में भैंसई के दुवे कहाये 9 विश्वा। बल्लू के चन्द्र, बद्री और मकरन्द तीन पुत्र हुए। चन्द्र और बद्री विलवारे के दुवे कहाये 10,3 विश्वा। मकरन्द भोजपुर के दुवे कहाये 4 विश्वा। बद्री के एक पुत्र सेवकी नाम का हुआ सो उन्नाव में रहे और दुवे कहाये 2 विश्वा। सेवकी के भोपाराम, गोपाल दो पुत्र हुए। गोपाल परोमा के दुवे कहाये 8 विश्वा। भूपराम वरूआ के दुवे कहाये 4 विश्वा। गोपाल के जगवंशी, रघुवंशी, परिवर, और यमराज चार पुत्र हुए, जगवंशी ओमीपुर के अवस्थी कहाये कहाये 2 विश्वा। रघुवंशी, परिवर - पिलोरी के अवस्थी कहाये 4,5 विश्वा। यमराम दरियावादी मिश्र कहाये 3 विश्वा। यमराम के लंकादहन, देवदत्त और ईश्वरी तीन पुत्र हुए। लंकादहन कपिडुलियो में गुर्दवान के मिश्र कहाये 2 विश्वा। देवदत्त एकडला में अग्निहोत्री कहाये 9 विश्वा। ईश्वरी मीटापुर के उपाध्याय कहाये 2 विश्वा।

इस प्रकार उपमन्यु गोत्र 20 पीढ़ी और 204 पुरुष वंशवृद्धिकर्ता हुए। जैसा ग्रन्थ लेख मिला वैसा लिखा।

'सांकृत गोत्र का वर्णन'

ब्रह्मा जी के पुत्र भृगु जी के वंश में सांख्यायन मुनि हुए। इनके पुत्र गगन इन गगन का दूसरा नाम गौर्वे है। गगन के पुत्र सांकृत हुए। सांकृत के पुत्र जीवाश्व बहुत प्रसिद्ध हुए। इनके वंश में महाप्रतापी हुए

पृथ्वीधर, पृथ्वीधर को कौशिकपुर में राजा ने बुलाकर आवसथ्य यज्ञ कराई और पृथ्वीधर जी को अवस्थी कहा तब से यह कौशिकपुर के अवस्थी कहाये 5 विश्वा। पृथ्वीधर के महीधर और धरणीधर दो पुत्र हुए। महीधर - कौशिकपुर के सुकुल कहाये 5 विश्वा। धरणीधर रूपगुणशील होंने के कारण त्रिगुणायत अवस्थी कहाये कौशिकपुर के 4 विश्वा। महीधर के पुत्र नाभूजी हुए इनको पृथ्वीधर ने यथाशक्ति अध्ययन कराया, अब वृद्धावस्था के कारण न पढ़ा सके तब पूर्ण विद्वान होने के लिए मनीराम वाजपेई के पास भेज दिया। मनीराम जी ने इनको पूर्ण विद्वान कर दिया और अपनी भुवनेश्वरी नामक कन्या से विवाह कर दिया और अपने समीप पुरैनिया गाँव में बसाया तब से नाभू जी पुरैनिया के सुकुल कहाये 5 विश्वा। नाभू जी के बुजुरुक और खुर्दपति दो पुत्र हुए, बुजुरुक गुपालपुर के सुकुल कहाये 18 विश्वा। खुर्दपति बहारपुर के सुकुल कहाये 12 विश्वा। बुजुरुक के छत्रपति, आनन्दवन और मुक्ता तीन पुत्र हुए। छत्रपति और मुक्ता पुरैनिया नवेले के सुकुल कहाये 15,15 विश्वा। आनन्दवन अकबरपुर पुरैनिया के सुकुल कहाये 15 विश्वा। खुर्दपति के खेमन, बहेरू और रूपन तीन पुत्र हुए। खेमन गौरा के सुकुल कहाये 10 विश्वा। बहेरू गहेरी के सुकुल कहाये 5 विश्वा। रूपन गौरा के सुकुल कहाये 10 विश्वा। छत्रपति के गंगाराम, माधवराम और सालिगराम तीन पुत्र हुए। गंगाराम डोमनपुर से अपने भाईयो के सहित खजुहा गाँव में रहने लगे। ये छिन्नमस्ता देवी के अनन्य उपासक थे। एक समय बादशाह अकबर विजय करते हुए खजुहा के निकट जाकर उतरे गंगाराम की प्रशंसा सुनकर इनको अपने पास बुलाया और इनका चमत्कार देख कर बहुत प्रसन्न हुए। और खजुहा गाँव का नाम फतेहाबाद रखा। माधवराव असनी पुरैनिया के सुकुल कहाये 18 विश्वा। सालिगराम नरबल पुरैनिया के सुकुल कहाये 20 विश्वा। मुक्ता के एक पुत्र रामवक्स हुए सो गहिरी के सुकुल कहाये 5 विश्वा। खेमन की पहली पत्नी से गणपति, हरिब्रह्म और ईश तीन पुत्र हुए। गणपति फतेहाबाद में पुरैनिया नवेले के सुकुल कहाये 20 विश्वा। हरिब्रह्म अमोह गाँव में पुरैनिया नवेले के सुकुल कहाये 20 विश्वा। ईश असनी में पुरैनिया नवेले के सुकुल कहाये 10 विश्वा। बहेरू के देवीदीन गौरा के सुकुल कहाये 9 विश्वा। दरियाव अढ़ा के सुकुल कहाये 5 विश्वा। जवाहर गूदरपुर के सुकुलि कहाये 7 विश्वा। जानकी अकबरपुर के सुकुल कहाये 8 विश्वा। और भीष्म गहिरी के सुकुल कहाये 8 विश्वा। रूपन के धना और घनश्याम दो पुत्र हुए। धना गौरा के सुकुल कहाये 18 विश्वा। घनश्याम जाजमऊ के सुकुल कहाये 12 विश्वा। गंगाराम के रघुवंश और हरिवंश दो पुत्र हुए। रघुवंश फतेहाबाद में पुरैनिया के सुकुल कहाये 19 विश्वा। हरिवंश डोमनपुर में पुरैनिया के सुकुल कहाये 14 विश्वा। गणपति के विश्वनाथ, गोवर्धन, पेरेलाल तीन पुत्र हुए तीनों ही फतेहाबाद में पुरैनिया के सुकुल कहाये 20,20,20 विश्वा। धना के कृष्णी और बृजलाल दो पुत्र हुए। कृष्णी कौशिकपुर के मिश्र कहाये 20 विश्वा। बृजलाल बिजौली के दुबे कहाये 20 विश्वा। घनश्याम के वीर, वनवारी और प्रजापति तीन पुत्र हुए। वीर जाजमऊ के मिश्र 20 विश्वा। वनवारी चंधेड़ी के मिश्र 18 विश्वा। और प्रजापति इटावा के मिश्र कहाये 18 विश्वा। वीर परम विद्वान रूपवान और गुणवान थे। इनको देखकर अकबर बादशाह ने मिश्र जी कहकर आसन

दिया तब से वीर के मिश्र कहाये। इनके भ्राता भी उत्तम वर्चस्व के कारण वीर के सम्मान मिश्र कहाये और इनको अठारह गाँव विश्वा मर्यादा प्राप्त हुई। विश्वनाथ के हट्टूलाल, नन्दन और दुलीचन्द के भाऊ और शीतल दो पुत्र हुए। दोनों फतेहाबादी पुरैनिया के नमेला सुकुल कहाये 20,20 विश्वा। इस प्रकार सांकृत गोत्र में 8 पीढ़ी और 42 पुरुष वंशवृद्धिकर्ता हुए हैं। यह सांकृत गोत्र॥

'कश्यप गोत्र विवरण'

सम्वत् 1564 में भदारपुर के अधिपति ब्राह्मणों और यवनों में बहुत युद्ध हुआ। उस युद्ध में बहुत से ब्राह्मण मारे गये केवल एक अनन्तराम ब्राह्मण की पत्नी जो गर्भवती थी सो बच गई। सो यवनों के उपद्रव से स्योना नाम के नाई के साथ उसकी सुसराल चली गई, स्योना नाई बहुत वृद्ध था, वह मदारपुर के ब्राह्मणों का परम सेवक था। कुतमऊ गाँव में उसकी ससुराल थी। अनन्तराम की पत्नी के पति, देवर, मारे जाने से वह बहुत दुखी रहती थी, और बहुत कमजोर हो गई इस कारण बालक का जन्म बड़े कष्ट में हुआ और माता तत्काल मर गई, तब स्योना नाई ने अपने पुरोहित कश्यप गोत्रीय चिंचोली के तिवारी को पुत्र रूप में उस बालक को दे दिया, और इसी सुखमणि नामक तिवारी से उस ब्राह्मणी की मृतक्रिया कराई तथा बालक का जाति कर्म संस्कार भी कराया। उस बालक का नाम गर्भू रखा जब बालक आठ वर्ष का हुआ, तब पुत्रहीन सुखमणि तिवारी ने उस बालक को अपना कर स्वीकार किया। सुखमणि ने उस बालक को भलीभाँति वेदाध्ययन कराया, गर्भू के कुल में नाई के उपकार को ध्यान रखते हुए आज भी कटोरे और उस्तरे की पूजा होती है 7 विश्वा। गर्भू के गौरी और गणेश दो पुत्र हुए। गौरी मदारपुर में रहे और कुतुमौवा के तिवारी कहाये कहाये 9 विश्वा। गौरी के मोहन, परमसुख, रजनी और कमोरा चार पुत्र हुए। ये चारों मदारपुर के कुतुमौवा तिवारी कहाये 9,9,9,9 विश्वा। गणेश के पुत्र जुगुनी हुए सो बितोरे के अग्निहोत्री कहाये 5 विश्वा। मोहन के शांति, सीताराम, कर्ण और जयराम चार पुत्र हुए। शांति बड़ेरा के तिवारी कहाये 9 विश्वा। सीताराम लुकऊपुर के तिवारी कहाये 5 विश्वा। कर्ण तिरोली के तिवारी कहाये 5 विश्वा। जयराम गलोथें के तिवारी कहाये 7 विश्वा। कमोरी के ठकुरी, लखनी, रंजन, त्रिभुवन और बहादुर ये पाँच पुत्र हुए। ठकुरी गलहैया के दुबे कहाये 4 विश्वा। लखनी नागापुर के दुबे कहाये 3 विश्वा। रंजन सुगुनापुर के दुबे कहाये 4 विश्वा। त्रिभुवन विनहारपुर के दुबे कहाये 3 विश्वा। बहादुर मगरायलपुर के दुबे कहाये 7 विश्वा। जुगनू के रामकृष्ण परमाई और गोवर्धन तीन पुत्र हुए। रामकृष्ण कृपालपुर के मिश्र कहाये 5 विश्वा। परमाई भागीरथी के दीक्षित कहाये 4 विश्वा। गोवर्धन विबोली के सुकुल कहाये 5 विश्वा। जयराम के एक पुत्र साहब नाम के हुए सो मिगलानी के अवस्थी कहाये 4 विश्वा। जयपाल बिठूर के दुबे कहाये 4 विश्वा। ठकुरी की पहली पत्नी से भग्गा, जुड़ावन और शीतल तीन पुत्र हुए। भग्गा अमृतपुर के अग्निहोत्री कहाये 4 विश्वा। शीतल कठेरूआ के अग्निहोत्री कहाये 4 विश्वा। रामकृष्ण के एक पुत्र देवकीनन्दन नाम के हुए सो नगरा के मिश्र कहाये 3 विश्वा। परमाई के एक पुत्र रतन हुए सो क्यूनापुर के दीक्षित कहाये 10 विश्वा। गोवर्धन के पुत्र सुन्दर हुए सो रिवाड़ी के सुकुल कहाये 4 विश्वा। रतन के गोपी,

गिरधर, गोपाल, गंगा और देवदत्त पांच पुत्र हुए। गोपी मदारपुर में क्यूना के दीक्षित कहाये 4 विस्वा। गिरधर शिवली में क्यूनापुर के दीक्षित कहाये 4 विस्वा। गोपाल विहारपुर में क्यूनापुर के दीक्षित कहाये 3 विस्वा। गंगा वाणापुर में क्यूनापुर के दीक्षित कहाये 9 विस्वा। देवदत्त कुतमऊ में यज्ञ के दीक्षित कहाये 7 विस्वा। गोपी के धलई और रूपई कुतमऊ के दीक्षित कहाये 4,3 विस्वा। मोहन कोंडरी के दीक्षित कहाये 2 विस्वा। चन्द विहारपुर के दीक्षित कहाये 2 विस्वा। भोगी शाहावाद के दीक्षित कहाये 2 विस्वा। गिरधर के खेम, चन्द, यज्ञपति, गुल्दत्त और शिवदीन पांच पुत्र हुए। खेम सँहुडा के दीक्षित 2 विस्वा। यज्ञपति खरमुआ के अवस्थी 3 विस्वा। गुल्दत्त गरहा के दीक्षित कहाये 3 विस्वा। शिवदीप कलुहा के अग्निहोत्री कहाये 7 विस्वा। गोपाल हरी, वावू, आशादत्त सीरू और भीखू पांच पुत्र हुए। इनमें हरी और वावू खिरेली के अवस्थी कहाये 9,9 विस्वा। आशादत्त ख्यूरा के अवस्थी कहाये 2 विस्वा। सीरू मदनिहार के दुवे कहाये 2 विस्वा। भीखू उदविलार के दुवे कहाये 2 विस्वा। भीखू के मदन, भोगी और परमानन्द तीन पुत्र हुए। मदन विहार के दुवे कहाये 2 विस्वा। भोगी इच्छावर के दुवे कहाये 2 विस्वा। परमानन्द लहुरीपुर के दुवे कहाये 2 विस्वा। परमानन्द के शीतल और शिवदत्त दो पुत्र हुए शीतल तिवारीपुर के तिवारी कहाये 2 विस्वा। शिवदत्त नगरा के मिश्र कहाये 3 विस्वा। ।

'गर्ग गोत्र का वर्णन'

श्री गर्गाचार्य जी यदुवंशियों के पुरोहित थे। उनके वंश में वहुत साल वाद महानन्द चौवे प्रतापी हुए 3 वि०। महानन्द के पुत्र महेश्वर हुए ये डोडियाखेरे के चौवे कहाये 5 विस्वा। श्यामल, सुन्दर और छविनाथ तीन पुत्र हुए। श्यामल पिहानी के चौवे कहाये 3 विस्वा। सुन्दर अगरी के चौवे कहाये 2 विस्वा। शिवनाथ जिनखीपुर के चौवे कहाये 2 विस्वा। श्यामल के श्रीधर, मनोहर, विद्याधर और गोपाल चार पुत्र हुए। श्रीधर पचौर के पांडे कहाये 2 विस्वा। मनोहर पिहाने के पांडे कहाये 4 विस्वा। विद्याधर कन्नौज के पांडे कहाये 4 विस्वा। गोपाल पडरी के पांडे कहाये 3 विस्वा। सुन्दर के रंगनाथ और भानाथ सदनिया के मिश्र कहाये 3 विस्वा। गोपाल के गुमानी, ठकुरी और चतुरी तीन पुत्र हुए। गुमानी शिवराजपुर के अवस्थी कहाये 2 विस्वा। ठकुरी संवर के अग्निहोत्री कहाये 2 विस्वा। चतुरी धोकली के उपाध्याय कहाये 1 विस्वा। रंगनाथ के श्रद्धा, महताव और सन्तोष तीन पुत्र हुए। श्रद्धा त्रिपुरारीपुर के पाठक कहाये 2 विस्वा। महताव गुटरीपुर के पाठक कहाये 2 विस्वा। सन्तोष सिरौनी के पाठक कहाये 2 विस्वा। गुमानी के रजनी और किन्दर दो पुत्र हुए। रजनी उन्नाव के दुवे कहाये 1 विस्वा। किन्दर गरगैया गाँव के चौवे कहाये 2 विश्वा। सन्तोष के गिरधर और गोपाल दो पुत्र हुए। गिरधर अमतारा के पाठक कहाये 2 विस्वा। गोपाल सांपी के तिवारी कहाये 2 विस्वा। गिरधर के एक पुत्र भार्गव नाम से हुए सो छीतपुर के पाठक कहाये 2 विस्वा। भार्गव के मुरली और वोधन दो पुत्र हुए। मुरली खिटलिहा के दुवे कहाये 2 विस्वा। वोधन सदनिया के दुवे कहाये 2 विस्वा।

'गौतम गोत्र का वर्णन'

ब्रह्मा जी के पुत्र महामुनि गौतम जी न्यायशास्त्र के आचार्य थे। उनके वंश में गौतमी गंगा के निकट धनावली ग्राम में माधवानन्द सुकुल न्यायशास्त्र के वेत्ता महागुणी हुए। उनकी पांचवी पीढ़ी में त्रिपुरमर्दन नाम के सुकुल महाप्रतापी हुए। और धनावली के सुकुल कहाये 4 विश्वा। त्रिपुरमर्दन के पुत्र क्षेमकर्ण अपने पिता के बसाये हुए त्रिपुरारपुर में जाकर रहे, इस प्रकार त्रिपुरार के सुकुल कहाये 4 विश्वा। क्षेमकर्ण के धनई, विजई और अंगद तीन पुत्र हुए, धनई गहरव के तिवारी कहाये 2 विश्वा। विजई वाढ़पुर के तिवारी कहाये 2 विश्वा। अंगद विसनहार के तिवारी कहाये 5 विश्वा। धनई के यदुवंश और हरिवंश नाम के दो पुत्र हुए यदुवंश चकलापुर के अग्निहोत्री कहाये 2 विश्वा। हरिवंश सुकुलपुर के अग्निहोत्री कहाये 1 विश्वा। विजई के भगवन्त और भगवान दीन दो पुत्र हुए। भगवन्त भदेश्वरी के दुवे कहाये 1 विश्वा। भगवान दीनगलौली के दुवे कहाये 2 विश्वा। अंगद की पहली पत्नी से रूपराम और शिवलाल दो पुत्र हुए। रूपराम चिलोली के पांडे कहाये 2 विश्वा। शिवलाल गुलोली के पांडे कहाये 2 विश्वा। दूसरी पत्नी से कंठमणि हुए सो पोखरा के मिश्र कहाये 2 विश्वा। रूपराम के कालेश्वर और नागेश्वर दो पुत्र हुए कालेश्वर नौदसी के पांडे कहाये 2 विश्वा। नागेश्वर हरिहरपुर के पांडे कहाये 3 विश्वा। कंठमणि के परमसुख और महासुख दो पुत्र हुए। परमसुख गूंगरपुर के मिश्र कहाये 2 विश्वा। महासुख पोखरा के मिश्र कहाये 2 विश्वा। कालेश्वर के भदई, भजनी और सीवंत तीन पुत्र हुए। भदई त्रिपुरारि के अवस्थी कहाये 4 विश्वा। भजनी गूगरपुर के अवस्थी कहाये 2 विश्वा। और सीवंत नवलपुर के अवस्थी कहाये 4 विश्वा। भजनी के मतिकर और यज्ञ दो पुत्र हुए। मतिकर वीरमपुर के दुवे कहाये 2 विश्वा। यज्ञ भोगीपुर के अवस्थी अपने नाम से विख्यात हुए।

'भारद्वाज गोत्र का वर्णन'

भारद्वाज संहिता में लिखा है कि वाणविद्या का प्रचार करने वाले भारद्वाज जी बडे तपस्वी थे। उनके शिष्य तपोधन नामक ब्रह्मचारी ने अपने गुरु की आज्ञा से चित्रकूट के महाराज महिपाल अभिवंशोत्पन्न की सौभाग्यवती नामावली कन्या से विवाह किया। और अंगेठ नाम भाग में रहे वहाँ ब्राह्मणों को बुलाय अग्निहोत्री यज्ञ किया। तथा दान दक्षिणा से परम सन्तुष्ट किया। तव ब्राह्मणों ने प्रसन्न होकर तपोधन जी को अग्निहोत्री कहा और भारद्वाज गोत्र प्रमाण किया। उन तपोधन की सातवी पीढ़ी में धीरधर प्रतापी हुए और अंगेठा के अग्निहोत्री कहाये 4 विश्वा। धीरधर के वालमुकुन्द, देवकीनन्दन, अघमोचन, मदमोचन और विहारी पांच पुत्र हुए। वालमुकुन्द के ऐंधीपुर के तिवारी कहाये 4 विश्वा। देवकीनन्दन तिवारीपुर के तिवारी कहाये 5 विश्वा। अघमोचन चौसा के दुवे 3 विश्वा। मदमोचन भिहोनी के दुवे 3 विश्वा। बिहारी ख्यूला के दुवे कहाये 2 विश्वा। वालमुकुन्द के हीरा, किशन और शंकर तीन पुत्र हुए। हीरा राघनपुर के सुकुल कहाये 5 विश्वा। किशन गडूमऊ के दीक्षित 5 विश्वा। शंकर पहितिया के पांडे कहाये 4 विश्वा। देवकीनन्दन के एक पुत्र दुर्गादत्त हुए सो खोरिहा के तिवारी कहाये 4 विश्वा। अघमोचन के एक पुत्र

त्रिलोकी हुए सो इच्छावन के उपाध्याय कहाये 3 विश्वा। मदमोचन के अंबिकादत्त और दुलारे दो पुत्र हुए। अंबिकादत्त बरूआ के दुवे 4 विश्वा। दुलारे इच्छावर के दुवे कहाये 3 विश्वा। बिहारी के एक पुत्र मनऊ हुए रेगाँव के दुवे कहाये 4 विश्वा। हीरा के एक पुत्र शुभंकर हुए सो राधीन के पांडे कहाये 5 विश्वा। किसन के ब्रजलाल, बुलाकी, बनवारी, केदार, महानन्द और निहाल ये छः पुत्र हुए। ब्रजलाल मवडेल के दीक्षित कहाये 5 विश्वा। बुलाकी खूरा के दीक्षित 5 विश्वा। बनवारी जहानाबाद के दीक्षित 5 विश्वा। केदार डोंडियाखेरे के दीक्षित 8 विश्वा। महानन्द कल्हारी के दीक्षित 3 विश्वा। निहाल हडाडे के दीक्षित 3 विश्वा। ये छैऊ गढ़मऊ में जाकर रहे सो गढ़मऊ के दीक्षित कहाये। शंकर के गंगाधर, शशिधर और शूलधर तीन पुत्र हुए। गंगाधर भसौरा में, शशि सनहा में, शूलधर अमौरा में पहितिया से जाकर रहे इस कारण पहितिया के पांडे अपने अपने स्थान पर कहाये 3,3,2 विश्वा। शुभंकर श्रीपति और पिनाकी दो पुत्र हुए श्रीपति कम्पुरा के सुकुल कहाये 5 विश्वा। पिनाकी शांतिपुर के सुकुल कहाये 3 विश्वा। पिनाकी के एक पुत्र भूरे हुए ये कालिकापुर के सुकुल कहाये 3 विश्वा। भूरे के शिवसहाय, रामसहाय, शिवलाल गंगा, कौशिक और भवदत्त ये छः पुत्र हुए। शिवसहाय पुरवा के तिवारी 2 विश्वा। रामसहाय विनौर के तिवारी 2 विश्वा। शिवलाल ऐन के तिवारी 2 विश्वा। गंगा पुरैनिया के दीक्षित 2 विश्वा। कौशिक इच्छावर के अवस्थी 2 विश्वा। भवदत्त पुरैनिया के दीक्षित 8 विश्वा। शिवलाल के भानू, परमसुख, पुरुषोत्तम, पूरन और रिपुमर्दन यह पांच पुत्र हुए ये सभी ऐन ग्राम में रहे। भानू पराशरी दुवे ऐनी के कहाये 2 विश्वा। परमसुखके कोई सन्तान नहीं थी, इन्होंने महगू पटौरे की दो बेटियों को राशि बैठाया। इने वंशज दोनों महगू पटौरे मिश्र कहाये 8 विश्वा। पुरुषोत्तम टनैया के दुवे कहाये 2 विश्वा। पूरन भदेश्वर के दुवे कहाये 2 विश्वा। पूरन भदेश्वर के दुवे कहाये 2 विश्वा। रिपुमर्दन के कोई सन्तान नहीं तब पूरन के पुत्र को गोद लिया। उसकी सन्तान रिपुमर्दन के नाम से राशि बैठाये। जिन्हें दुवे कहा गया 2 विश्वा। पुरुषोत्तम के जनार्दन, शिवशंकर, हरिनाथ, शोभानाथ और अर्गलस ये पांच पुत्र हुए। जनार्दन अंगेठा के अग्निहोत्री कहाये 4 विश्वा। शिवशंकर जहानाबाद के उपाध्याय कहाये 2 विश्वा। हरिनाथ महीलावादी उपाध्याय कहाये 2 विश्वा। शोभाराम निगोहमपुर के नैरनिया अध्वंयु कहाये 2 विश्वा। अर्गलस सगुनापुर के अध्वंयु का पाठक कहाये 2 विश्वा। हरिनाथ के रामभजन, नारायण, काशीराम और प्रयागू चार पुत्र हुए। रामभजन सोनिहा के पाठक 2 विश्वा। प्रयागू नागपुर के पाठक 2 विश्वा। नारायण के योगेश्वरी, परमेश्वरी, भानु और यज्ञ ये चार पुत्र हुए। योगेश्वरी भगरायल के पाठक 2 विश्वा। परमेश्वरी नवरल के पाठक कहाये 2 विश्वा। भानू चौसा के पाठक 5 विश्वा। यज्ञ जहाँनाबाद के पाठक 3 विश्वा।

इसमें नौ पीढ़ी तक 52 पुरुष वंशवृद्धिकर्ता हुए।

'धनंजय गोत्र वर्णन'

श्री मद्‌भागवत के दशम स्कन्ध उत्तरार्ध में एक कथा है, कि द्वारिकापुरी में एक ब्राह्मण के जब जब सन्तान होती थी तभी मर जाती थी । अन्त में वह मरे हुए बालकों को राजा उग्रसेन की सभा में ले जाकर

रख आने लगा, और अनेक दुर्वचन कह आता था, कि तुम्हारे अपराध से ही राजा मेरे बालक मर जाते हैं। और यदि ऐसा नहीं है तो मेरी सन्तान की रक्षा आपके अधीन है, एक समय जब वह ब्राह्मण मरे हुए बालक को सभा में रख रहा था। और दुर्वचन कह रहा था, उस समय अर्जुन वहाँ बैठा था। अर्जुन ने ब्राह्मण का रुदन सुनकर ब्राह्मण के पुत्र को बचाने की प्रतिज्ञा की और अन्य बालक के जन्म के समय उस ब्राह्मण का घर बाणों से छा दिया। इस पर भी बालक न बचा और होते ही मर गया। तब अर्जुन प्रतिज्ञा भंग होने से अग्नि में जलने को तैयार हुआ, तब भगवान कृष्ण ने अर्जुन को समझाया और साथ ले जाकर महानारायण के समीप से ब्राह्मण के सभी पुत्र लाकर दिये। इससे ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुआ अर्जुन ने उन बालको में से एक पुत्र माँग लिया। और उस बालक का नाम कृष्णानन्द रखा, तब भगवान कृष्णचन्द जी ने अर्जुन से कहा तुमने हमारे नाम के अनुसार इस बालक का नाम रखा, इससे हम वर देते हैं, कि तुम्हारे नाम से इस बालक का गोत्र चलेगा, पश्चात गर्गाचार्य से उस बालक का यज्ञोपवीत कराया अर्जुन ने उस बालक को सान्दीपन ऋषि के पास पढ़ने भेज दिया। वह पढ़कर पूर्ण विद्वान हुए बादसमय इनके वंश में पुष्करानन्द और पुष्पानन्द दो भाई परमप्रतापी हुए। पुष्करानन्द का वंश नहीं चला, पुष्पानन्द नानपारा के तिवारी कहाये 3 विश्व पुष्पानन्द के रामशरण, शिवशरण, हरिभजन और शिवभजन चार पुत्र हुए। रामशरण नौरंगाबाद के तिवारी कहाये 3 विश्वा। शिवशरण विहटा के तिवारी कहाये 3 हरिभजन कचोरा के तिवारी कहाये 3 विश्वा। शिवभजन श्रंगमपुर के तिवारी कहाये 3 विश्वा। रामशरण के सुरेश्वर और ग्रहपति दो पुत्र हुए। सुरेश्वर मनमन्थारिपुर के दीक्षित 2 विश्वा। ग्रहपति चरखारि के अवस्थी 5 विश्वा। शिवचरण के गिरधारी और यज्ञपति दो पुत्र हुए। गिरधारी सुन्दरपुर के दुवे कहाये 2 विश्वा। यज्ञपति अवस्थी कहाये 2 विश्वा। हरिभजन के एक पुत्र शिवशंकर पाली के अवस्थी कहाये 2 विश्वा। शिवभजन के कलानिध और ध्रुवनैन दो पुत्र हुए। कलानिध तलेसरा के अवस्थी कहाये 2 विश्वा। ध्रुवनैन अम्बरसर के अवस्थी कहाये 2 विश्वा।

इस प्रकार धनंजय गोत्र में 3 पीढ़ी और 12 पुरुषों से वंश वृद्धि हुई जो वंश कर्ता हुए।

'वत्स गोत्र वर्णन'

ब्रह्मा जी के वंश में वत्स मुनि प्रतापी हुए, उनके वंश में बहुत समय बाद माधवानन्द जी परम प्रतापी हुए। यह धोकली में रहने के कारण धोकली के तिवारी कहाये 3 विश्वा। माधवानन्द के मदनगोपाल और गोवर्धन दो पुत्र हुए। मदनगोपाल सांपनी के तिवारी कहाये 3 विश्वा। गोवर्धन अर्गलपुर के तिवारी कहाये 2विश्वा। मदनगोपाल के कसनी, रोहन, झुन्नी और गयादत्त चार पुत्र हुए। कसनी वन्धना के तिवारी कहाये 7 विश्वा। रोहन रोतापुर के तिवारी कहाये 2 विश्वा। झुन्नी रायपुर के तिवारी कहाये 2 विश्वा। गयादत्त मकनपुर के तिवारी कहाये 2 विश्वा। कसनी के मौजीराम, जीवन और बद्री तीन पुत्र हुए। मौजीराम आकापुर के पांडे 5 विश्वा। जीवन सत्सरपुर के मिश्र 2 विश्वा बद्री हिंगुजपुर के मिश्र कहाये 2 विश्वा। रोहन के शोभाराम

और रुपई दो पुत्र हुए, सोभाराम सिमौनी के शुक्ल कहाये 4 विश्वा। रुपई हथभरिया के दीक्षित कहाये 1 विश्वा। झुन्नी के गणेशदत्त, सूर्यप्रसाद और शिवनन्दन तीन पुत्र हुए। गणेशदत्त पटनाके दुवे कहाये 2 विश्वा। सूर्यप्रसाद रायपुर के दुवे कहाये 1 विश्वा। शिवानन्द धोकली के दुवे कहाये 4 विश्वा। गयादत्त के रामदयाल और गौतम दो पुत्र हुए। रामदयाल हिरोली के शुक्ल कहाये 4 विश्वा। गौतम जयापुर के पाठक कहाये 3 विश्वा। मौजीराम के मुन्ना, गिरधर, खूबी और गोपाल चार पुत्र हुए, मुन्ना जनावली के पांडे कहाये 3 विश्वा। गिरधर भदरसी के पांडे कहाये 4 विश्वा। खूबी सेढ़रपुर के पाठक कहाये 4 विश्वा। गोपाल भगवानपुर के पांडे कहाये 4 विश्वा। गणेशदत्त के एक पुत्र चिंतामणि धोकली के अग्निहोत्री कहाये 4 विश्वा। सूर्यप्रसाद के एक पुत्र मोहन ख्यूरा के दुवे कहाये 3 विश्वा। शिवानन्द के एक पुत्र भार्गव हुए जो शिवराजपुर के दुवे कहाये 4 विश्वा। गोपाल के शंकर, शिवनन्दन और परमसुख ये तीन पुत्र हुए। शंकर रायतपुर के पांडे कहाये 4 विश्वा। शिवनन्दन धोकली के पांडे कहाये 4 विश्वा। परमसुख ठकुरिया के पांडे कहाये 4 विश्वा। जगदेव हरिदासपुर के पांडे कहाये 4 विश्वा। सुखमन सिमौनी के दुवे 4 विश्वा। सिताव व्योसरिहा के दुवे कहाये 4 विश्वा। बलदेव ख्यूलिहा के दुवे कहाये 4 विश्वा। ये ऊपर के पांच पुत्र मोहन के हैं।

भार्गव के मौरिहा, नगऊ, शिरोमणि, सुखराम और चन्दन यह पांच पुत्र हुए मौरिहा फफुन्द के रावत कहाये 1 विश्वा। नगऊ पडरी नेवला के पांडे कहाये 4 विश्वा। शिरोमणि धोकली के उपाध्याय कहाये 2 विश्वा। सुखराम वन्धना के पाठक कहाये 7 विश्वा। चन्दन मियांगंज के पाठक कहाये 5 विश्वा। सिताव के एक पुत्र परम नाम के हुए। जो बर्गलपुर के दुवे कहाये 2 विश्वा। इस प्रकार वत्स गोत्र में सात पीढ़िया तथा 38 पुरुष वंश वृद्धिकर्ता हुए।

'वशिष्ठ गोत्र का वर्णन'

प्रजापति ब्रह्मा जी के पुत्र वशिष्ट ऋषि हुए जो सूर्यवंश के पुरोहित थे। उनके वंश में बहुत साल बाद अतिप्रतापी महानन्द नामक पंडित हुए वह मौराये के एकावशिष्ठी चौबे कहाये 3 विश्वा। महानन्द के एक पुत्र महिमान नाम के हुए सो सोंतीपुर के चौबे कहाये 3 विश्वा। महिमान के काशीराम और प्रयागदत्त दो पुत्र हुए। काशीराम गांधनी के चौबे 3 विश्वा। प्रयागनाथ मितपुर के चौबे कहाये 3 विश्वा। काशीराम के राघव और भागीरथ दो पुत्र हुए। राघव जलारी के दुवे कहाये 3 विश्वा। भगीरथ लहरपुर के दुवे कहाये 2 विश्वा। प्रयागदत्त के आनन्द, नारायण और नन्दराम तीन पुत्र हुए। आनन्द हन्नूपुर के तिवारी कहाये 2 विश्वा। नारायण ख्यूरा के चौबे कहाये 1 विश्वा। नन्दराम ख्यूरा के पाठक कहाये 2 विश्वा। राघव के महावीर और भवानी दो पुत्र हुए। महावीर ब्रह्मशिला के दीक्षित कहाये 2 विश्वा। भवानी बगरिया के दीक्षित कहाये 2 विश्वा। आनन्द के एक पुत्र वंशी जो सगुनापुर के दीक्षित कहाये 3 विश्वा। नारायण के नत्थूमल और जमदग्नि दो पुत्र हुए। नत्थूमल आंटीपुर के चौबे कहाये 3 विश्वा। जमदग्नि डोडियाखेरे के चौबे कहाये एकावशिष्ठी 2 विश्वा। भवानी के सोहन और मोहन दो पुत्र हुए। सोहन रामपुर के अवस्थी कहाये 2 विश्वा। मोहन सगुनापुर के दुवे कहाये 3 विश्वा। मोहन के एक पुत्र गोवर्धन जो कन्नौज के चौबे

कहाये 3 विस्वा। इस प्रकार से वशिष्ट गोत्र में सात पीढ़ी तक 17 पुरुष वंशवृद्धि कर्ता हुए। महाराज कौशिक गोत्र गाधि के पुत्र विश्वामित्र जी जो तपोबल से ब्रह्मर्षि पद को प्राप्त हुए, उन ऋषि का एक नाम कौशिक भी है। बहुत समय बाद इसमें देवकीनन्दन नामक एक पंडित दो वेदों के ज्ञाता हुए। और भदेसी ग्राम में निवास किया। ब्राह्मणों को बुलाकर पुत्रेष्टि यज्ञ किया।

ब्राह्मणों ने इन्हे पुत्र होंने का आशीर्वाद देकर अवस्थी की पदवी दी सो यह भदेसी के अवस्थी कहाये 3 विश्वा। देवकीनन्दन के एक पुत्र शोभादत्त हुए जो भदेसी के अवस्थी कहाये 2 विस्वा। शोभादत्त के विशम्भर और वैजनाथ दो पुत्र हुए। विशम्भर मुचापुर के अवस्थी कहाये 2 विस्वा। वैजनाथ पिहानी के अवस्थी कहाये 2 विस्वा। वैजनाथ के रतिनाथ और चिन्तामणि दो पुत्र हुए। रतिनाथ कपिला के त्रिगुणायत कहाये 3 विस्वा। वैजनाथ के गिरजापति, द्वारिका, कन्जू, बल्देव और नासिकेत पांच पुत्र हुए। गिरजापति ऐंठन के तिवारी कहाये 2 विश्वा। द्वारिका कपूरथला के पाठक कहाये 1 विस्वा। कुन्नू कलिंग के दीक्षित कहाये 1 विस्वा। बल्देव जिलहपुर के तिवारी कहाये 2 विस्वा। नासकेत इटावा के दुवे कहाये 1 विस्वा। चिन्तामणि के किशोर, गदाधर और गोपी ये तीन पुत्र हुए। किशोर कलिंग के मिश्र कहाये 3 विस्वा। गदाधर संकेतपुर के मिश्र कहाये 3 विश्वा। गोपी बहरामपुर के मिश्र कहाये 3 विस्वा। नासकेत के एक पुत्र भगोले ये शिवराजपुर के दुवे कहाये 3 विश्वा। भगोले के सुधाकर और शक्तिधर दो पुत्र हुए। सुधाकर शिवराजपुर के रावत कहाये 1 विश्वा। शक्तिधर ख्यूरा के अग्निहोत्री कहाये 1 विस्वा। इस प्रकार कौशिक गोत्र में छः पीढ़ी तक अट्ठारह पुरुष वंश वृद्धि कर्ता हुए।

'कविस्त गोत्र का वर्णन'

श्री ब्रह्मा जी के वंश में कविस्त जी परम तेजस्वी हुए। उसवंश में पंडित योगराज परम प्रतापी हुए। योगराज जी के भद्रशील और महावीर दो पुत्र हुए। भद्रशील नसुराले के दुवे कहाये 3 विस्वा। महावीर विलखारी के पाठक कहाये 3 विश्वा। महावीर के किन्नर और कन्दर्प दो पुत्र हुए। किन्नर घाटमपुर के पाठक कहाये 3 विश्वा। कन्दर्प विलखारी के पाठक कहाये 2 विश्वा। किन्नर के हरदेव नाम के एक पुत्र हुए जो नानामऊ के पांडे कहाये 2 विश्वा। कन्दर्प जानकीनाथ, जयराम और कुन्दन तीन पुत्र हुए। जानकी नाथ किनावा के त्रिगुणाय कहाये 1 विश्वा। जयराम गुगुरुहा के दुवे कहाये 2 विश्वा। कुन्दन विट्ठलपुर के चौबे कहाये 1 विश्वा। जयराम के मान्धाता, खेतली और रंगनाथ तीन पुत्र हुए। मान्धाता चंचेडी के चौबे कहाये 2 विश्वा। खेतली कजरी के अवस्थी कहाये 3 विश्वा। रंगनाथ भटपुरा के दुवे कहाये 2 विश्वा। कुन्दन के चुन्नी, पुखराज और शक्तिधर तीन पुत्र हुए। चुन्नी मंगलपुर के मिश्र कहाये 2 विश्वा। पुखराज चिंचोली के दुवे कहाये 2 विश्वा। शक्तिधर शीतला के अग्निहोत्री कहाये 2 विश्वा।

इस प्रकार कविस्त गोत्र में 5 पीढ़ी तक 14 पुरुष वंशवृद्धिकर्ता हुए।

'पाराशर गोत्र का वर्णन'

श्री वेदव्यास मुनि के पिता पाराशर जी के वंश में शक्तिधर पंडित अति प्रतापी हुए सो नागपुरी पाराशरी दुवे कहाये 3 विश्वा। शशिधर के महेश्वरी नामक एक पुत्र हुए सो नागपुरी सुकुल कहाये 3 विश्वा। महेश्वरी के हरिभजन, शिवभजन और रामभजन तीन पुत्र हुए। हरिभजन नागपुर के दुवे कहाये 4 विश्वा। शिवभजन रामपुर के सुकुल कहाये 4 विश्वा। रामभजन नागपुर के तिवारी कहाये 3 विश्वा। हरिभजन के सधारी, महतू और गोविन्द तीन पुत्र हुए। सधारी सिमोनी के पाराशरी दुवे कहाये 1 विश्वा। महतू नरवरपुर के पाराशर दुवे कहाये 1 विश्वा। गोविन्द बसई के पाराशर दुवे कहाये 1 विश्वा। शिवभजन के शंकर, बिहारी और परमानन्द तीन पुत्र हुए। शंकर सिमोनी के पाराशरी अवस्थी कहाये 2 विश्वा। बिहारी सिमोनी के पाराशरी मिश्र कहाये 2 विश्वा। परमानन्द सिमोनी के पाराशरी दीक्षित कहाये 2 विश्वा। रामभजन के विष्णुदत्त और पीतम दो पुत्र हुए। विष्णुदत्त गुदरियापुर के सुकुल कहाये 2 विश्वा। पीतम पहाड़पुर के तिवारी 2 विश्वा। बिहारी के कान्ता और कालीचरण दो पुत्र हुए। कान्ता पटना के मिश्र कहाये 2 विश्वा। कालीचरण सिमोनी के पाराशरी पाठक 2 विश्वा। इस पाराशर गोत्र में पाँच पीढ़ी तक 15 पुरुष वंशवृद्धिकर्ता लिखे हैं।

इति कान्यकुब्ज ब्राह्मण
(गौड़ सम्प्रदाय)

विश्वा या विश्वे से अर्थ है इनके वंशधर जितने गाँवों में वसे उन गाँवों को गिनती कान्यकुब्जों में विश्वा कहते हैं।

'विशेष वक्तव्य'

इस प्रकार से यह 16 गोत्र कान्यकुब्जों के कहे गये हैं। इनमें पहले लिखे हुए छ: गोत्र षट्कुल कहे जाते हैं। शेष दस गोत्र धाकर कहे जाते हैं। इसके अलावा 56 गोत्र और भी हैं। जिनका ब्यौरा इस पुस्तक में खासकर लिखा नहीं है। आगे पुस्तक में वंशावलियों का निराकरण करने के पश्चात ही लिखने का प्रयास किया जायेगा, जितना अध्ययन किया है वही इस 'ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण' नामक पुस्तक में लिखा है। इस पुस्तक का रसास्वादन ध्यानपूर्वक कर निश्चय ही धर्म की रक्षा करने मेंपूर्ण कर्मयोगी सिद्धि होंगे। लेखक का अनुरोध है कि ब्राह्मण जाति मेंजन्म लेना ये प्रभु की अपार कृपा है। फिर जन्म लेकर अपने ब्राह्मणत्व को पहचानते हुए कर्मकाण्ड, हवन, शास्त्र अध्ययन क्यों न ग्रहण कर लिये जायें।

13. 'सरयूपारी ब्राह्मणों का वर्णन'

सरयू नदी के उत्तर दिशा किनारे को वहाँ लोकव्यवहार में साख कहते हैं। वहाँ के उत्पन्न हुए ब्राह्मणों को सारब या सरयूपारी संज्ञा है। इसी कारण यह ब्राह्मण सरवापारिया या सरवरिया के नाम से संसार में विख्यात हैं। इन ब्राह्मणों में भी गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य, पराशर, सार्वर्णि, काश्यप, वत्स, भारद्वाज, कौशिक, उपमन्यु, वशिष्ठ, गार्ग्य, कात्यायन आदि गोत्र हैं।

इनमें त्रिकुल, त्रियोदश (यह कहो तीन तेरह)तथा तृतीय श्रेंणी यह तीन भाग हैं। गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य, भारद्वाज, वत्स, घृतकौशिक, गार्ग्य, सावर्णि, गर्दसीमुख, सांकृत, कश्यप ये ग्यारह गोत्र में तीन और तेरह अर्थात सोलह घर इन ब्राह्मणों के भेद कहे जाते हैं।

गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य इन तीन कुलों की सन्तति त्रिकुल या प्रथम श्रेंणी में गिनी जाती है। पयासी, समुदार, धर्मपुरा, चौराकांचिली, वृहदग्राम, माला, पाला, पिण्डी, नागचोरी, इटाये, त्रिफला, इटिया यह तेरह गाँव या स्थान हैं इन स्थानों वाले दूसरी श्रेंणी के हैं।

इस प्रकार से ये सोलह भेद हैं।

अगस्त्य, केण्डिन्य, पाराशर, वशिष्ठ, गार्ग, कात्यायन, गार्ग्य, उपमन्यु, कौशिक तथा भृगु इनके अलावा अन्य गोत्र वाले तीसरी श्रेंणी में गिने जाते हैं। जिन्हें सरयूपारी तृतीय श्रेंणी के कहते हैं। खोरिया, कोंडरिया, अगस्तपार, सिंघनजोड़ी, नैपूरा, करैली, हस्थग्राम, गुरोली, चारपानी, मीठावेल, सोनोरा, मार्जनी, पोहिला, कोडिराम, कुसोरा, पिपरासी यह इनके गाँव या स्थान हैं। इनमें गर्ग वंश वाले शुक्ल, पयसी, मधुवनी, माजनी, धर्मा, भरसी, पयासी गाँवों के ब्राह्मण मिश्र कहे जाते हैं।

सरैया, सोहगौरा, धतुरा, चेतिया, गुरोली, पाला, टाडा, मिण्डी, नहौली, पोहिला, चौरा तथा सिंहनजोड़ी ग्रामों के ब्राह्मण द्विवेदी और त्रिवेदी कहाते हैं।

इटिया, माला, नागचोरी, हस्तग्राम, धमोली, चारपानी, त्रिफला, इटार और अगस्त्यपार ग्रामों के ब्राह्मण पांडेय या पांडे कहाये।

कांचनी, वृहदग्राम, मीठाबेल, कोडरि, समुदार और सरार ग्रामों के ब्राह्मण द्विवेदी कहे जाते हैं। नेंपुरार तथा पिपरासी ग्रामों के ब्राह्मण चतुर्वेदी कहे जाते हैं। सोनारा ग्राम के ब्राह्मण पाठक कहे जाते हैं। और लखमा ग्राम के उपाध्याय तथा करैली ग्राम के ओझा कहे जाते हैं। कोडन्य गोत्र के शुक्ल मिश्र कहे जाते है। इसके सिवाय और भी अनेक नाम हैं, वैसे सभी ब्राह्मण समान हैं। समान कुल के हैं। अर्थात पंक्ति से च्युत जैसे पयासी, पिण्डी, वरपार आदि यह तीनों भेद ब्राह्मणों के ज्ञान तथा मर्यादा के हेतु हैं। पंक्ति के सब ब्राह्मण देश की सीमा के बाहर भी पंक्ति के घरों को पाकर परस्पर कन्या सम्बन्ध कर लेते हैं।

पंक्ति अर्थात जाति के घरों के सिवाय उत्यत्ति, कुलीन आदि ब्राह्मण कन्या का सम्बन्ध सरवार देश

की सीमा के भीतर अपने तथा देश मर्यादा के हेतु परम्परा के कारण स्वदेशी में ही करते हैं। परन्तु पुत्र का विवाह स्वदेश के बाहर भी कर लेते हैं। सरयूपार के देशों में कुछ ब्राह्मणों के नाम के आगे धर आदि की संज्ञा लगती है। उसका कारण यह है, कि बढ़गो में भारद्वाज वंश के एक ब्राह्मण वास करते थे। इसी ग्राम में आकर कुछ ब्राह्मण कुटुम्ब सहित बस गये सगर गाँव से आकर यह सगर गाँव राप्ती नदी के किनारे स्थित है। कुछ समय बाद राजयक्ष्मा रोग से सारे कुटुम्बी मृत्युलोक सिधारे उसमें से एक गर्भिणी स्त्री बच गई जो पहले से ही अपने पिता के घर थी। जिसके उदर से एक बालक अपने नाना के घर पर जन्म लिया। जब यह बालक बड़ा हुआ तो अपने पिता के बारे में अपनी माता से पूछा माताने रो-रोकर अपना सारा हाल बताया। तब यह बालक आठ वर्ष की उम्र का अपने हृदय में बड़ा दुखी हुआ और अपने एक मित्र ग्वाला को लेकर अपनी पैतृक भूमि सगर ग्राम को चल दिया, जहाँ उसके कुटुम्ब का क्षय हुआ था। परन्तु पीछे कर्मवंश भेद हो गये। जिनकी कुली प्रथम से ही उत्तम रूप से चली आ रही है, वही ब्राह्मण कुल श्रेष्ठ है। जो वेद पारंगत सदाचारीनिष्ट, छैऊ अंगों का ज्ञाता, विनय सम्पन्न, योगी, सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता तथा एक रात्री से अधिक एक स्थान पर न रुकने वाला उपरोक्त गुण जिस ब्राह्मण वंश में व्याप्त हैं वही सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण वंश माना गया है। ऐसा शास्त्र लेख है। ब्राह्मण पंक्ति पावन कहाते हैं। तथा अट्ठारह विद्याओं में किसी एक का ज्ञाता होना अति आवश्यकीय है और त्रिनाचिकेत तीन हैं अर्थात गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि तथा आह्वान का उपासक तीनों वेदों का ज्ञाता, आठवें धर्मशास्त्र का ज्ञाता, नौवें नीतिशास्त्र का भी पंडित, शास्त्रज्ञ एक ब्राह्मण भी पंक्तिदूषकों में बैठ जाय तो पंक्ति पावन करता हैं। गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य, भृगु, सावर्णि, वत्स, भारद्वाज, कश्यप, गर्दभीमुख तथा गार्ग्य गोत्र के ब्राह्मणों में पंक्ति संज्ञा का विरल प्रचार है। इनका विवाह संस्कार सम्बन्ध और भोजनपरस्पर ही होता है। जो ब्राह्मण पंक्ति सीमा को उल्लंघन कर बाहर के ब्राह्मणों में विवाह करते हैं, उनकी त्रुटि संज्ञा है। सरयू पारीणों में पंक्ति की जिनकी कुलीनता आरम्भ से चली आती है, ये स्थान हैं। नगर, नदौली, बेयसी, वृद्धग्राम, भरसी, धतुरा, मलांव, पिपरा, धर्मपुरा, सौंदिया, लखिमा, आदि दूसरे पंक्ति संज्ञक अर्थात स्थितिपंक्ति तथा मधुबनी, रत्नमाना, सिरजम, सरया, सोहगौरा, चैतिया, बलुआ आदि तीसरे त्रुटि वहाँ पहुँचकर उस भूमि को देखा, शोकाकुल होकर कहने लगा जब पूर्वजों का यहाँ क्षय हुआ है, तब मैं भी अपने प्राण यहीं त्यागूँगा। ग्वाले मित्र ने बहुत समझाया परन्तु जब वह किसी प्रकार से न माना तब ग्वाले ने कहा तो पहले नदी में स्नान करो बाद में जैसा हो वैसा करना तब यह सुन बालक नदी में स्नान करने लगा ग्वाले ने उसे आँखों से ओझल देखा कि स्नान करते-करते वह बालक जलमग्न हो गया दोख यह समझ ग्वाले ने अपनी आत्महत्या कर ली। बाद में वह बालक नदी से बाहर निकल कर आया और मित्र की यह हालत देख बड़ा ही दुखी हुआ, और फिर धैर्य धरि अपनी पैतृक भूमि में निवास किया। इस प्रकार स्वभूमि धारण करने से उसका नाम धरणीधर हुआ उस दिन से उसके वंशजों में नामान्तर धर की संज्ञा लगाई जाती है और इस कुल में साधो नामक ग्वाले का पूजन होताहै। इसी सगर ग्राम से पंक्ति का प्रचार हुआ गोरक्षा नाम के ब्राह्मण के चार पुत्र हुए राम आदि नाम उनके

हुए। उनके वंशजों के नाम के अन्त में राम शब्द लगता है। सरार ग्राम के वंशज अपने नाम के अन्त में राम की संज्ञा लगाते हैं। इसी प्रकार सौहगौरा ग्राम के वंशज अपने नाम के अन्त में कृष्ण शब्द की संज्ञा लगाते हैं। धतुरा ग्राम के ब्राह्मण अपने नाम के अन्त में मणि शब्द की संज्ञा का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार चेतिया ग्राम के वंशज अपने नाम के अन्त में नाथ शब्द की संज्ञा का प्रयोग करते हैं। ऊपर वर्णित चारों कुल के ब्राह्मण अपना गोत्र श्रीमुख शाण्डिल्य कहकर उच्चारण करते हैं। यह श्रीमुख संज्ञा व्यवहार मात्रा की है और यह श्रीमुख संज्ञा, वत्स्य, अश्ववलायन, बोधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन तथा गोत्र प्रवर आदि मुनियों के ग्रन्थों में तो नहीं लिखी गई है। प्रतिष्ठा मात्र के लिए प्रयोग कर लेते हैं। त्रिकुल वालों में तो राम, कृष्ण, मणि, नाथ लगाये जाते हैं। इन्हीं शब्दों से यह त्रिकुल वंश के समझे जाते हैं। नादोजी ग्राम केएक नन्ददत्त नामक ब्राह्मण रहते थे। उनके वंश में मेरू, फेरू और सुखपति ये तीन पुत्र हुए। इनमें से दो पुत्रों के नामों के अन्त में नाथ शब्द लगाया जाताहै। और पति शब्द का प्रयोग किया जाता है। वह अब तक उनके वंशो में चलता आ रहा है। फेरू के वंशो के नामों के अन्त में नाथ और पिण्डी ग्राम निवासी सुखपति व शभापति के वंशधर अपने नामों के अन्त में पति शब्द लगाते हैं। ग्राम का पिण्डी इस कारण हुआ कि गौतम कुल के पंक्ति ब्राह्मण ने सभापति के हाथ से जल से सानी सतुओं की पिण्डी भोजन में ग्रहण की और तब उन्हें पंक्ति में मिलाया। गर्दभीमुख नाम के समान पाँच गोत्रकार ऋषि पांच पृथक कालों में उत्पन्न हुए। अर्थात गर्दभी भृगु वंश में गर्दभीमुख वशिष्ठ, गर्दभी विश्वामित्र, गर्दभी आंगिरस तथा गर्दभीमुख कश्यप कुल में हुए हैं। इससे नादौली वासी ब्राह्मणों के गोत्र गर्दभीमुख कहे जाते हैं।

'प्रवर वर्णन'

आंगिरस और भृगु के अलावा यदि प्रवर के ऋषियों में एक भी प्रवर्षि समान दीख पड़े तो सगोत्र समझना चाहिए। हरित, सांकृति, कण्व, स्थीतर, मुद्गल विष्णुवृद्धि यह वह ऋषि स्वच्छ त्रिकुल आंगिरस पक्ष में जाने के कारण केवल आंगिरस कहे जाते हैं। और वीतहव्य, मित्रायु, सुनक तथा वेणु यह चार भृगु पक्ष में जाने के कारण केवल भार्गव कहे जाते हैं। गर्गवंश में गार्ग्य गोत्री, इटिया और कोडरि ग्रामों के ब्राह्मणों के पंचप्रवर अर्थात आंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज, गार्ग्य और सोन्य हैं। सो नौरा, खोरिया, वडगाँव इन तीनों गाँवों के ब्राह्मणों के भारद्वाज गोत्र और आंगिरस, गार्हस्पत्य, भरद्वाज यह तीन प्रवर हैं। इन ब्राह्मणों का समान गोत्र होंने से विवाह सम्बन्ध वर्जित हैं। भरद्वाज, गर्ग रोक्षायण और यह चारों भरद्वाज कहे जाते हैं। इनका भी परस्पर विवाह नहीं है। गौतम कुल में उत्पन्न प्रथम कक्ष के त्रिकुल ब्राह्मणों के अन्तर्गत तथा कांचिनी अर्थात गुर्दवान और दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत ब्राह्मणों का भी गौतम गोत्र है, और वह त्रयार्षेय कहे जाते हैं। इनके प्रवर आंगिरस, ओतथ्य, गौतम हैं। इनका भी परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं हैं। सरैया, सोहगौव, धतुरा, चेतिया, गुरौली, पाली, चोरा ग्रामों के ब्राह्मणों का शाण्डिल्य गोत्र है, और पिण्डी ग्राम के ब्राह्मणों का गर्दभीमुख गोत्र है। यह दोनों गोत्री व्यर्थ कहाते है, और इनके प्रवर काश्यप, असित, देवल

अथवा शाण्डिल्य, असित, देवल हैं। त्रिफला, नैपुरा ग्रामों के ब्राह्मणों का कश्यप गोत्र है, और यह त्रयार्षेय कहाते हैं। इनके प्रवर कश्यप, आवत्सार और असित हैं। शाण्डिल्य, कश्यप और गर्दभीमुख इन तीनों ब्राह्मणों के ग्रामों का समान प्रवर गोत्र होने से विवाह सम्बन्ध नहीं है।

कश्यप, नैधुव, रेम्य तथा शाण्डिल्य ये चारों समान गोत्र होने के कारण परस्पर विवाह सम्बन्ध के योग्य नहीं हैं। भार्गव कुल में उत्पन्न वत्स गोत्री ब्राह्मण चार ग्रामों में वास करते हैं। पयासी, समुदार, नागचोरी, पोहिला, चारपानी और इटार ग्रामवासी ब्राह्मणों का सावर्णि गोत्र है। भृगुसावर्णि और वत्स गोत्रों के पंचप्रवर भार्गव, च्यवन, आप्लावन, ओर्व और जमदग्नि हैं। इन गोत्रों में भी परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं होता।

भृगु, जमदग्नि और वत्स इन तीनों की संज्ञा श्रीवत्स कही जाती है। उसी प्रकार भार्गव, च्यवन, आप्लावन, उर्वज, सावर्णि, जीवन्ति, जावाल, एतसायन, वैरोहित्य, अवटय, मंडुक अनन्तर अर्थत पहले योग से जो उत्पन्न हुए हैं, अर्ष्टिसेन, देवरात और अनूप यह सब सगोत्री हैं समान प्रवर होंने से इनका परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं है। मांडव्य, दर्भ, संज्ञक, रेवत के साथ भृगु तथा जमदग्नि का भी विवाह सम्बन्ध नहीं है। मलाव गाँव के ब्राह्मणों का गोत्र घृत कौशिक है, तथा प्रवर विश्वामित्र घृतकौशिक है। कुसौरा और पिपरासी गाँवों में कात्यायन गोत्र के ब्राह्मण निवास करते हैं इनके तीन प्रवर वैश्वामित्र, कात्य और आक्षील हैं। मीठावेल ब्राह्मणों का कौशिक गोत्र है। इनके विश्वामित्र, आस्मरथ और वाधलू, ये तीन प्रवर हैं। कात्यायन, कौशिक और घृतकौशिक ये तीनों एक ही गोत्र होंने से इनमें विवाह सम्बन्ध नहीं होते। करैली ग्राम के ब्राह्मण अपने गाँव को छोड़कर अन्यत्र निवास करते हैं। इनका उपमन्यु गोत्र है, और वशिष्ठ, ऐंदप्रमद भारद्वसव्य ये तीन प्रवर हैं। मार्जनी ग्राम के ब्राह्मण वशिष्ठ गोत्री हैं। यहं अपने को त्रयार्षेय कहते हैं। इससे इनके वशिष्ठ, आत्रेय जातूकर्ण ये तीन प्रवर हैं। हस्तग्राम, धमोली के ब्राह्मणों का पाराशर गोत्र है, तथा वशिष्ठ, शाक्त और पाराशर्य ये तीन प्रवर हैं। कुंडिन गोत्र के ब्राह्मणों के वशिष्ठ, मैत्रावरूण और कौडिन्य ये तीन प्रवर हैं। वशिष्ठ, कुंडिन, उपमन्यु औरा पाराशर इन चारों के समान गोत्र होंने से इनमें परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं होते।

वेन के पुत्र पृथु हुए इनकी कन्या के एक पुत्र वसु हुए, वसु के पुत्र उपमन्यु कहे जाते हैं। उन्हीं से गोत्र चला है, मित्रावरूण के एक पुत्र कुंडिन एकार्षेय हुए इनके वंश वाले वशिष्ठ नाम से प्रसिद्ध हुए। अगस्तपार ग्राम के निवासी ब्राह्मणों का अगस्त गोत्र है। यह त्रयार्णय हैं। अर्थात आगस्त्य, माहेन्द्र और भायोभूव ये प्रवर वाले हैं। बैलग्राम के ब्राह्मणों का भारद्वाज गोत्र है, और आंगिरस, वार्हस्पत्य तथा भारद्वाज यह तीन प्रवर हैं। सरयू के दक्षिणी तटवर्ती कोई-कोई ब्राह्मण अपने मीठावेल वासी भारद्वाज गोत्री कहते हैं। पर मीठावेल ग्राम के कौशिक गोत्र तथा वैश्वामित्र आस्मरथ तथा वाधूल यह तीन प्रवर हैं। सो इनसे नहीं मिलते, विष्ठोली, हरिपुर, सिंहनजोड़ी आदि ग्रामों के ब्राह्मा जो सरवार देश में रहते हैं। वे अपना गोत्र भार्गव बताते हैं, और पंचप्रवर कहते हैं, पर भार्गव नामक गोत्र कहीं शास्त्रों में नहीं पाया जाता पर सम्भव है, कि विष्ठोली ग्राम वासी ब्राह्मणों का गोत्र भार्गव हो। अंगिरा के दो पुत्र वत्स और भार्ग भृगु के पक्ष में होकर वत्स और भार्गव कहाये हों जिनके भार्गव, च्यवन, आप्लावन, ओर्व और जमदग्नि ये पांच प्रवर है। इस

भांति से वत्स गोत्र वालों के दो भेद हुए यथा जमदाग्न्यवत्स जिनको गोत्र स्मरण न हो वह शास्त्र सम्मित से कश्यप गोत्र जान लें, या अपने पुरोहित के गोत्र को समरण कर लें परन्तु आचार्य के गोत्र में या प्रवरों में विवाह सम्वन्ध न करें इसमें यह श्लोक प्रमाण है।

अविज्ञातः स्वगोत्रश्चेन्द्र वेदाचार्य गोत्रक :।
आचार्य गोत्र प्रवरोद्वाहोप्यामिन्न सम्मत : ॥ मत्स्य पुराण।

आपस्तभ्य कहते हैं।

एकार्षेया वशिष्ठा अन्यत्रा पराशरेभ्यः ॥ (मत्स्य पुराण श्लोक 26)

अर्थात वशिष्ठ गोत्र वालों का वशिष्ठ ही एक प्रवर है इसके पीछे पराशर, उपमन्यु तथा कुंडिन होते हैं। यह हिरण्यकेश की सम्मति है। अत्रि की कन्या से विवाह से पूर्व वशिष्ठ जी से जातूकर्ण उत्पन्न हुए। विवाह होंने पर कन्या का गोत्र पति का गोत्र होता है। विवाह से पहले कन्या का गोत्र पिता का गोत्र होता है। इस कारण जातूकर्ण के प्रवर में अत्रि और वशिष्ठ दोंनो ही आये इससे जातूकर्ण की सन्तान अत्रि तथा वशिष्ठ कुल में विवाह नहीं कर सकती कारण कि यह दोनों ओर के हुए लोगाक्षि, सांकृत और वशिष्ठ तथा कश्यप में इनका विवाह सम्बन्ध वर्जित है। लोगाक्षि कश्यप के पुत्र का यज्ञोपवीत वशिष्ठ जी ने किया। प्रथम जन्म कश्यप कुल में लेने से रात्रि में कश्यप के घर और वशिष्ठ जी के यज्ञोपवीत कराने से दिन में वशिष्ठ जी के घर रहते थे। और वशिष्ठ जी के वंशज इसी कारण कश्यप और वशिष्ठों में होंने से 'द्वामुष्यायण' कहाये प्रयोग परजात और आपस्तम्वसूत्र के अनुसार कश्यप, रेंभ, रैभ्य, शाण्डिल्य, असित, सांकृत, पृतिमास, अवत्सार, और नैध्रुव इस दस कश्यप गणों का परस्पर विवाह सम्वन्ध वर्जित है। यह सरयूपारियों का वशं वर्णन है। गौड़ सम्प्रदाय के हैं।

'इति सरयूपारी व कान्यकुब्ज ब्राह्मण वर्णन'
(गौड़ सम्प्रदाय)

14. 'अहिवासी ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्लोक -

एकदा तु विना रामं कृष्णों वृन्दावनं ययौ। विचचार वृतो गोपैर्वन्यपुष्पस्त्र गुज्ज्वलः ॥
स जगामाथ कालिन्द्रीं लोलकल्लोलशालिनीम। तीरसंलग्नफनौघैर्हं सन्तीमिव सर्वतः ॥
तस्याश्चाति महाभीमं विषाग्निश्रित वारिकम्। ह्रदं कालियनागस्य ददर्शातिविभीषणाम्॥
विषाग्निता प्रसरता दग्धतीरमहीरूहम् । वाताहताम्बुवि क्षेपस्पर्शदग्धविहंगमम् ॥

(विष्णु पु. पृष्ट 325,1,A)

अर्थ–एक दिन भगवान कृष्ण अकेले ही वृन्दावन को गये और वहाँ वन्यपुष्पों की मालाओं से सुशोभित हो गोपगण से घिरे हुए (साथ) विचरने लगे। घूमते-घूमते वे चंचल तरङ्गो से शोभित यमुना के तटपर जा पहुँचे जो किनारों पर फॅन के इकट्ठे हो जाने से मानो यमुनाजी सब ओर से हंस रही थी। यमुना जी में उन्होंने विषाग्नि से सन्ताप्त जलवाला कालियनाग का महाभयंकर कुन्ड देखा। उसकी विषाग्नि के प्रसार से किनारे के वृक्ष जल गये थे और वायु के थपेड़ों से उछलते हुए जलकलों का स्पर्श होंने से पक्षिगण दग्ध हो जाते थे॥ यह विषाग्नि के कारण कालीदह समीपी क्षेत्र कुन्डलीकस्थ तथा अहिक्षेत्र के नाम से प्रसिद्धि हुआ इसी क्षेत्र में सोभरिऋषि व माथुर ऋषि के आश्रम थे। द्वापुरयुग में भगवान कृष्ण ने इसी काली नाग का मन्थन किया है। जो कि सम्पूर्ण वृतान्त विष्णु पुराण कालिय दमन में देखें।

आगे सौभर ऋषि व दालभ्य ऋषि तथा माथुर ऋषि के स्थान व शिष्यों का संक्षेप वर्णन मार्तण्ड से प्रस्तुत है।

श्लोक -

सौभरे ये शुभेदेशे सौभरा गुरूवः स्मृताः ॥ अष्टम तु सुतंतस्य दालभ्याय
ददौ ततः। तच्छिष्याश्चैव दालभ्या गुरूत्ये ते प्रकीर्तिताः । द्वादशं तु सुतं
तस्य माथुराय ददौ ततः। माथुरीयाश्च गुरूवोवर्तन्ते वहवः स्मृताः ॥

(मार्तण्ड, जाति भाष्कर पृष्ट 86)

अर्थ–जो गौड ब्रा० के वारह प्रकार के (भेद) गौड हुए और वारह ऋषि सन्तति कहे गये हैं जो वारह ऋषि इस प्रकार है। 1. गौतम ऋषि 2. श्री हर्ष 3. हारित 4. वाल्मीकि 5. वशिष्ठ 6. सौभरि 7. दालभ्य 8. हंस 9. भट्ट 10. सौरभी 11. माण्डव्य 12. माथुर ऋषि॥ ये सभी पृथक-पृथक स्थानों के वासी रहे। इसका पूर्ण विवरण आदि गौड़ उत्पत्ति में पूर्व ही करि चुके हैं।

उपरोक्त ऋषि शिष्य इन्ही ऋषि स्थानों पर व इन्ही ऋषि नामों से प्रसिद्ध इन्हीं बारह प्रकार या भेदों में से एक सौंभरि ऋषि का दूसरा दालभ्य ऋषि का तीसरामाथुरश्रषिका आश्रम ऊपर लिखे मार्तण्ड के

श्लोकों द्वारा वृन्दावन से पश्चिमदिशि में शौभरि देश के या अहिक्षेत्र या कुन्डली कस्थ आदि-आदि नामों का उल्लेख शास्त्रों के अन्तगत पाया गया है। इन्हीं नामों में से कुन्डालक ब्राह्मण तथा इस अहिक्षेत्र के वास करने वाले ब्राह्मण अहिवासी ब्राह्मण नाम से विख्यात हुए। इसी अहिक्षेत्र अन्तर्गत सौभर का अपभ्रंस होकर सुभरख या सुनरक नामहुआ जान पडता क्योंकि यह अहिवासी ब्राह्मण अपना निकास सुनरख गाँव को ही बतलाते हैं। और अपने ऋषिगोत्र सौभरि ऋषि को ही बतलाते हैं। तथा सुनरख गाँव को ही पौराणि ऋषि तपस्थली मानते हैं। यह ब्राह्मण मथुरा जिले की छाता तहसील में अधिक संख्या में पाये जाते हैं। वृजक्षेत्र अन्तर्गत दाऊजी (वल्देव) महाराज के मन्दिर में सेवायत ये ही ब्राह्मण हैं। इन्हीं का अधिपत्व है। यह गौड़ सम्प्रदाय के श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं अहिवासी ब्राह्मणों के आस्पद - 1. अहिवासी 2. शर्मा 3. पाण्डेय या पाण्डे आदि उपाधी हैं। आगे माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण निर्णय में स्थान गोत्रादि की सारिणी सभी वारह गौड़ साखा सहित उपलब्ध है॥

"अहिवासी ब्रा०"

'इति गौड सम्प्रदाय'

15. "माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों का वर्णन"

ब्राह्मणोत्पति की विवेचना या इतिहास का कथन प्रस्तुत करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना है कि मनुष्य के पास समय का अभाव है। तथा सक्षेंप में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है व भाषा सरल व प्रचिलित हो, जो काल जिसका अन्त हो चुका है उसका ज्ञान को वर्तमान समझ सके व भविष्य में सुरक्षित रह सके भुमाक्षु जिज्ञासु ज्ञान प्राप्त कर सके। शास्त्र वेद पुराण श्रुति स्मृतियों की भाषा जटिल न हो साथ ही भाषा व शब्दों को प्रचलन से सरल समबन्ध हो अन्यथा पढ़ने मैं अभिरूचि नहीं हो पायेगी, इसको ध्यान में रखते हुए भूमिका में संक्षेप विवेचना के साथ ज्ञान हो और अभिरूचि पैदा के लिए विशेष विवरण अथवा साधारण ज्ञान हो ही जायें इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार से प्रस्तुत कर रहे हैं। सृष्टी कर्त्ता पुरुष के चारों अंगों से पैदा हुऐ वर्ण मुख से ब्राह्मण। वाह से क्षत्रिय उरुभाग से वैश्य चरण (पैर) से शुद्र उत्पति है इसमें उत्पति के लिए तीन भागों में विभ्वगत करके विवेचना करते है। 1. सृष्टी कर्त्ता पुरुष से, 2. अवतारों से (महानपुरुष), 3. ऋषियों व संषर्ग से, जिनकी उत्पति का प्रथम उत्पत्यि हुआ। वह ब्रह्मपुत्र हुआ। जमीन मैं कोई बीज डाला जाय पैदा करने वाली तो भूमि ही हैं। जो माता अवश्य है परन्तु बीज के नाम का सम्बोधन पिता से होगा। मुख से अग्नि के साथ ब्राह्मण पैदा हुआ बड़ा पुत्र ब्राह्मण है उसका सम्वन्ध सृष्टिकर्त्ता पुरुष वेद से है। इस कारण जिनको जो कार्य सोपा और वो करने मैं सफल हुए उसकी से चारों की विवेचना इस प्रकार हुई है प्रथम मैं ब्राह्मण एक था वह कैसा था चतुवैद इसके बाद मैं दो भाग गौण और द्रवड़ ये दोनों के बाद का विवरण आगे करेंगे इनको द्विज ब्राह्मण कहा है, 2 क्षत्रिय, 3. वैश्य, 4. शुद्र परन्तु इनके कर्म अलग–अलग होने से छोटे–बड़े पुत्र हुऐ क्षत्रिय को ब्राह्मण की 2. रक्षा स्वरूप, 3. वैश्य को कृषी हो व्यापार सेवा सब की सेवा करना। वेद भगवान का संकल्प है उनका पठन पाठन अनुकरण ब्रह्मण, 4. शुद्र : शब्द हो हेय भाव लेना भूल है इसका मुख्य भाव जो समपादन है उस पर ध्यान देकर विचार करें (नारायण) चारों वर्णों के कर्म आत्म आवश्यक है परन्तु सव एकपिता की सन्तान है – श्रेष्ठ सेवाभाव रखने वाला तीनो बर्णो में एकता रखने का कार्य करना सुख दुःख अर्थात सेवा ही परमोधर्म का अनुयाई आज्ञाकारी पुत्र मात्र का उत्पति होने से शुद्र को छोटा समझना है। प्रथम ब्रह्मण जो उत्पन्न किया था उसको गौलोक धाम (मथुरा पुरी) मैं स्थापित इस उद्देश्य के साथ किया कि (गर्ग सहिता के अनुसार) जो भगवान की विरजा सखी थी उनकी इच्छा पति रूप में पाने की थी वह भगवान के नेत्र जल के रूप में तपस्या हेतु पृथ्वी पर पधारी कालिन्द्र गिर पर आने से कलिन्दी नाम हुआ उनकी रक्षा थीं (सेवार्थ) गौलोकमथुरा श्रेष्ठ समान होने के कारण पठाया यहाँ पर कालियां नाग कालिन्द्र यमुना में गरूड़ के भय से निवास कर रहा था। क्योंकि ये क्षेत्र उसको सुरक्षित था। यहाँ श्री विष्णु का वाहन गरुड़ सारभत्रिपी के श्रापवश आ नहीं सकता था। कालिन्दी कालिया के विष के

कारण श्याह पड़ गई थी तथा लोक उपयोगी नहीं रही जव द्वापर में श्री कृष्ण अवतार हुआ तब कालिमर्दन हुआ व यमुना का प्रभाव वढ़ा व भाई यमराज से आने का आग्रह किया और वरदान प्राप्त किया जो यम दुतिया नाम यम के लोक कबू न जाय यमुना का प्रभाव वढ़ा माथुर ब्रह्मों ने यमुना तट सेवन तपस्या व कालिन्द्री का पुत्र वत स्नेह प्राप्त होनी ही चतुर्वेदी व्रह्मण को युमना पुत्र कहा जाता है।

स्वर्गलोक में पुन्य से निवास मिलता है। क्षीण होने पर अन्य लोक में इसी प्रकार इन्द्र पद है यह भी देव पद बदल जाता है वह सप्त ऋिषी भी बदल जाते हैं। प्रथम ब्राह्मण रूप से ब्राह्मण-मथुरा निवास के माथुर चारों वेदों के वेद पाठी ज्ञाता से चतुर्वेदी इसी कारण इनको यमुना पुत्र–माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण कहा जात है। माथुर चौवे चतुर्वेदी तीन शब्दों का अर्थ हिन्दी विश्व कोष में है। वेद पाठी द्विवैदी–त्रिवैदी चतुर्वेदी इस प्रकार हैं।

श्लोक गौडः उत्कले मैथिलाः कान्यकुन्जा सारस्वताः।
पंच गौडा इतिख्याता विन्धस्योतरे वासिनाः॥

पंच गौड़ ब्राह्मणों की उत्पति जैसे सारस्वत सरस्वति नदी तट के मिथिला के मैथिल तथा उत्काल सनाद्दय : श्री राघवेन्द्र सरकार का ब्रह्म हत्या का विमोचन र्स्वणु–भूमी गऊ धन प्राप्त कर पूज्य सनाढय नाम प्राप्त हुआ वह मृतक कार्य भोज पाडित्य कर्मकान्ड प्रवीण हुऐ प्रव पंचगौड़ ब्राह्मण गौड़, द्वारा कान्य कुब्ज ब्राह्मण हुए शेष परसराम जी द्वारा व व्यास जी वशिष्ट व अन्य द्वारा वर्णन है इसी प्रकार माथुरों का अग्नी से है।

अब माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण के विषय में कुछ चर्चा व प्रमाण प्रस्तुत करना है। ब्राह्मणेत्पति मार्तण्ड के पृष्ठ 2 पर ब्राह्मण भेद एक था। तथा बाद में दो होते हुऐ सात ही चतुर्वेद महिला हस्त लिखित में चतुर्वेद शब्द है। मान्धाता व रामचन्द्र जी सम्वाद वारहा पुराण के मथुरामहात्में चतुर्वेद की व्यापक रूप बताया है कि ये मथुरा में निवास के कारण माथुर ब्राह्मण है और चारों वेदों के ज्ञाता के कारण चतुर्वेदी व प्राचीनत्तम वारहा पुराण में अपने छोटे भ्राता को मथुरा पठाने के सम्बन्ध में वर्णन किया हैं। अग्नी पुत्र व ऋग्वेद के प्रथम श्लोक में वर्णन में श्री बालमुकुद कवि के द्वारा माथुर चतुर्वेद ब्राह्मणों का इतिहास में प्रथम वर्णन मिलता है इनके जो लोग अन्य प्रथा के पर गये उनका वर्णन मिलता है इनके जो लोग अन्य स्थानों पर गये उनका वर्णन भी है तथा ब्रह्मणेत्पति मातण्र्डम में 3 पृष्ठ 3 पर श्रुति वर्णन में चतुर्वैद म्होड लिखा है हूण प्रथम का ही सूचक है, पृष्ट 5 पर 14 नम्बर स्पष्ट मथुरा को वर्णन है। पृष्ट 9 परती, इस प्रकार लिखा है उदीच्य सहाय ब्राह्मण जो है प्राचीन ऋषीयों से ही है (वंश रहे) यदि ब्राह्मण विष्णु-विशदिसे उत्पन्न किये हुए है तो सूक्ष्म विचार से देखे तो चौवै और ग्यावात बिना सभी ब्राह्मण कान्यकुब्ज हैं इस बात का स्पष्ट प्रमाण हुआ वाराह पुराण के पृथ्वी की उत्पति के समय का वर्णन श्री राम चन्द्र जी द्वारा पृथ्वी बाराह सम्वाद

सतयुग का त्रेता में स्वंय के द्वारा प्रवचन संबाद व द्वापर में जन्म की भविष्यवाणी में इनकी सेबा करूँगा। ये मेरे समान मेरा सरूप है का कथन माथुर ब्राह्मण सरूप व यज्ञ पुरुष अग्नि पुत्र का प्रमाण है। इसके बाद में द्वापर में कृष्ण अवतार होगा और प्रचार प्रसार ज्ञान देव सरूप का सम्पादन ध्यान ज्ञान ब्राह्मण को दिया। ब्राह्मण ने अपने भाईयों को विवेक पूर्वक ज्ञान–विकास वितरण किया। परन्तु इस समय मात्र ब्राह्मणों के विषय के उत्पति का ही विवेचन कर रहे है। परन्तु इस बात का वताना महत्वपूर्ण है कि पहले लेखन नही था कठंस्थ था। इसी कारण शाखा पर चारों और कठस्थ करा कर वेद ब्रह्मणों के हदय में थे बाद में इसका प्रकट लेखन के द्वारा व्यास जी ने किया और सुरक्षित कर आपको दे दिया। इनको सबसे बड़ा क्षेय है ऐसे ही मुझे स्मृति की निमार्ण श्रुति भेद कर्म प्रतीज्ञा रचना उत्पति की विवेचना की जो भूतकाल को न भुलाकर निकट काल से आ रही ता. **प्रथम** दृष्टा तो प्रथम ब्राह्मण था।

2. अवतारी पुरुष भगवान के द्वारा जैसे शिव राम परसुराम कृष्ण ऋिषीयों के द्वारा प्रकट जो ब्राह्मण नहो होते हुऐ भी तपस्या से कर्म से ब्रह्म तत्वं को प्राप्त है। जैसे वेद–व्यास नारद वशिष्ठ इनका भी वर्णन करेंगें।

3. ऋषीयों के द्वारा – जो ऋषी चाहै क्षत्रिय हो अथवा ब्राह्मण अथवा दासी पुत्र व शुद्ध जिने ऋषी पद प्राप्त कर ब्रह्मत्व पद पाया था उनके द्वारा दीक्षित – पैदा आदि भी ब्रह्मण हुऐ है उनके वर्णन भी है। आप जिस वंश का ज्ञान प्राप्त करना चाहे सब के नाम प्रवर वर्णन है उनसे प्राप्त हो जावेगा। इसमें मनु व व्यास जी का प्रवल योग है जो सरलता के साथ निकट प्राप्त होता है।

अन्त में श्री मद्भागवत महात्मये पुराण के अध्याय: पृष्ठ 659 मे जब श्री कृष्ण स्वधाम जाने लगे और अपने प्रपौत्र वज्रनाभ को मथुरा का राजा बनाया है तो कहा है कि मथुरा में माथुर ब्राह्मण व बानर जो है वो पुरातन है व मेरा सखा उधव वहां मिलेगा उनसे सब स्थानो का पता करके जो मथुरा मेरे आने से खन्डर हो नव निर्माण कर राज्य करना मथुरा करना मथुरा व माथुर ब्राह्मण श्री कृष्ण से नहीं थे प्राचीनतम है।

वाराहपुराण

अनादि काल से मथुरा पुरी (सप्त पुरियों में एक) में निवास करने वाले चारों वेदों के ज्ञाता, श्रेष्ठतम ब्राह्मणों की एक जाति है। इनके सात गोत्र हैं। गौत्र मानव वंशों की प्राचीनतम प्रमुख पहचान है तथा इनकी उत्पति अग्निवंश है। अग्निदेव, देवता, ब्राह्मण, पुरोहित और इन्द्र यज्ञ के अध्वर्यु ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में ही "अग्निमीडे पुरोहितम् देवस्य यज्ञ ऋषिणम्" की उदघोषणा करके मधुच्छंदा ऋषि (कावेरी निवासी) ने अग्नि देव को प्रथम पूज्य और प्रथम उत्पन्न देव निर्धारित किया है। इस मंत्र से माथुरों की आदि उत्पति और पोरोहित्य कर्म की अतिप्राचीनता का भी निर्धारण होता है।

ऋग्वेद के मंडल 10 पुत्र 90 में मथुरा आदिनारायण क्षेत्र या ब्रह्मभुवन के अधिष्ठाता प्रभु गतश्रमनारायण के द्वारा प्रणीत पुरुष सूक्त के 13 वें मंत्र में विराज पुरुष महाविष्णु (दीर्घविष्णु) के प्राण से वायुदेव तथा मुख (मुखराई) से 'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च' के रूप में इन्द्र और अग्निदेव की उत्पति हुई। इस प्राकर इन्द्र अग्नि और वायुदेव विश्व के आदि पुरुष और सहोदर भाई सिद्ध होते हैं। यही बात भगवत 3-6-30 से भी कही गई है। यी तीनों देव 'ब्राह्मणा: प्रथमं प्रादुर्भूता: ब्राहणोम्यश्च शेपावर्णा: प्रादुर्भूता:' (महाभा॰ शान्ति 342-21) के प्रमाण से ब्राह्मण विश्व की अन्य सभ जातियों के उत्पत्तिकर्त्ता थे। यह समय 9,400 वि॰ पू॰ का था। 'तस्माद ब्राह्मणोग्निदैवत्यो' (वृहदारण्यक उप॰ 4) के प्रमाण से, ब्राह्मण जाति के प्रथम मूल पुरुष थे। वह निमंथ अग्निदेव 'मंथन कर्म से यज्ञाग्नि का उत्पन्न कर्ता प्रथम संज्ञायुक्त, वेद और यज्ञों का मूल तथा देव आह्वान (देवहूति बिद्या) का मूल आविष्कर्ता था। 'म जायसे मध्यमान: (साम उत्तराचिक 3-1-2), 'शाँउवतो अंगिरा जनिष्ठ दन्ने अ 'गिर:' (साम 29) के अरणिमंथन से उत्पन्न अग्नि अंगिरावंशी (कुत्सगोत्रिय) प्रथम या माथुर कुलोदभव था। यही बात ऋग्वेद के 4-1-14, 4-11-5, 5-8-4, 8-23-10, 4-1-14, 4-3-11 आदि अनेक मंत्रों में कही गई हैं। यह अग्नि देव इन्द्रवायु, बृहस्पति आदियों के पार्थ यज्ञ में देवभाग लेने को बैठता था। (ऋन 1-14-3)। सामवेद मन्त्र 1617, 1618, 1619 में इसे देवाधिदेव, सहस्रगणों से युक्त शाश्वततनु, विश्वपति, होता और वरेण्य कहा गया हैं। यह सहस्रों पुत्रों वाला (ऋग 2-7-6) तथा 'ऋषीर्ण्य पुत्रो आधिराज एष: (मैत्रैय संहिता 1-2-7) अर्थात् ऋषि पुत्रों का अधिष्ठाता अधिराज था। यह 'स विद्वा आ च विप्रो यक्षि चिकित्व आनुपक्' (ऋग् 2-6-8) के प्रमाणानुसार परम विद्वान् प्रियकर्मा, दानी तथा आरोग्यकर्ता था।

यह माथुरों का मूल पुरुष अग्निदेव अध्वर नाम के यज्ञों का प्रधान संयोजक था। 'विशामग्निं स्वध्वरं' (ऋग् 6-16-40) के प्रमाण से यह अपने आयोजित अध्वरों में देवों का समादरकर्त्ता था। सामवेद में इसे 'अध्वरेण प्रणीयते' (साम 1478) अध्वरों में समादर प्रापत तथा 'घियांचक्रे वरेण्यो' बुद्धिमानों के मंडल में परमश्रेष्ठ तथा 'भूतानां गर्भ मादधे' (साम 1479) प्राणियों को जन्म धारण कराने वाला कहा है।

माथुर चतर्वेदी ब्राह्मणों का इतिहास नाम ग्रंथ जिसके रचयिता श्री बाल मुकुंद चतुर्वेदी थे जिसकी छायाप्रति इस प्रकार है। (प्र.स. 62)

प्रमाथों का क्षेत्र मथुरा

मथुरा क्षेत्र को इस देवता का निवास क्षेत्र स्पष्ट कहा गया है –

माथुराणां परं क्षेत्र, प्रमथानां परं बलम्।

देवानां तत्वविज्ञानं तदेव मथुरा स्मृता॥16॥

—*योग तंत्र 4-16*

और भी कहा है-

देवो प्रमथराड् यत्र अम्वर्येषु समाहिता।
तदेव मथुरा प्रोक्ता सर्व तत्व सामन्विताः॥24॥
अग्नि मंचं आद्यकर्म से प्रवर्तन्ति माथुराः।
ते देव यज्ञ वेदानां लोकानां जनका स्मृता॥25॥

जहाँ प्रमचराज नाम का देवता अग्नि मंथन कर्त्ता बनकर अध्वरों में स्थित रहता है वही स्थान मथुरा है जो समस्त देव सत्वों से समन्वित है॥24॥

अग्नि मंथन आदि सभ्यता का उद्भव कर्म है इसे जो प्रवर्तन करते हैं वे ब्रह्मपुत्र ही माथुर ब्राह्मण हैं तथा वे ही देवों, यज्ञों, वेदों और लोक धर्म धारण करने वाली मानव प्रजाओं के आद्यजनक है॥25॥

मध्नाति सर्व पापनि ददाति परमं पदम्।
उत्तमौ हि नरो यत्र तेन सा मथुरा स्मृताः॥

—*गोतमीय तन्त्र*

यह पुरी समस्त पापों का मंथन करके भगवत् परम पद दायिनी है और यहाँ उत्तम कोटि के नरदेवता निवास करते हैं, इसी से इसे मथुरा धाम कहा गया है।

मंथुर्नौ माथुराः प्रोक्ता यज्ञानां ये प्रवतैकाः।
प्रमाथिनो महावीर्या अग्नि वंश समुद्भवाः॥
तेषां स्थानं परं पुण्यं माथुरेति निगद्यते।
कालिंद्यायास्तटे रम्ये देव क्रीड़ा मयोहि स॥

—*कदर्मसंहि प्राचीन पत्रमं*

माथुर ही, जो आदि यत्रों के प्रवर्तक हैं 'मंथु' कहे गये हैं, ये यत्र अग्नि मंथनकर्त्ता, महा बलवान और अग्निवंश में उत्पन्न हैं। इनका परम पुण्यमय स्थान मथुरापुर वर्णित हुआ है। जो कालिंदी के सुरम्य तट पर बसा है और देवों की क्रीडाओं से युक्त है।

मद्यातेतु जगत्संर्य ब्रह्माज्ञानेन वै पुरा।
तत्गरभूतं यघत्स्वात् मथुरा सा गिगद्यते॥63॥

—गोपाल तापिनी उपनिषद उतर तापिनी ॥63॥

प्राचीन युगों में जब समस्त जगत की विद्याओं को ब्रह्मज्ञान की रई द्वारा मथा गया था, तब जो उसमें से सार भूत मक्खन निकला वह मथुरा का क्षेत्र ही था ॥63॥

'स जायये मध्यमानः' (साम उतरचिक 3-1-2) माथुरों के अरणी मंथन कर्म ने गौरवयुक्त होने से मथुरा क्षेत्र की उत्पत्ति हुई।

मंथु प्रवर्तिता यत्र प्रमथैः वेदपारगैः।
तं स्थलं माथुरं दृष्टवा देवामुद मवापह॥1॥
माथुरेम्यस्तुमथुरा नहि मथुरातु माथुराः।
गोम्यः आक्य प्रभवति आज्याद् वावोन संभवः॥2॥

—मथुरा मेरु

जहां वेद पारंगत प्रमथ देवों ने मंथन कर्म का प्रवर्तन किया उस माथुर स्थल को देखकर इन्द्रादि देवों को परम आनन्द प्राप्त हुआ ॥5॥ मथुरा माथुरों से उत्पन्न हुई (स्थापित की गई), मथुरा वास से माथुर ब्राह्मणों की माथुर संज्ञा हुई ऐसा कहना सत्य नहीं है, क्योंकि गौओं से घृत उत्पन्न होता है, घृत से गायें उत्पन्न नहीं होती। अन्य सब ब्राह्मण उन देशों में बसने से नामांकित हुए, वे परवर्ती वंशों की शाखायें हैं किन्तु एक माथुरा ब्राह्मण ही ऐसे ब्रह्मण हैं, जिन्होंने अपने क्षेत्र को आप स्वयं ही उत्पन्न किया और उसमें देवों को बसाया।

अग्नि देवता माथुर ही क्यों?

वेद प्रमाणों से सिद्ध अग्नि माथुर ही हैं इसके अन्य भी अनेक परम्पराबद्ध प्रमाण है। ऋग्वेद के मंडल 7-104-2 में अग्नि को 'चरुरग्निवान्' कह कर उसे चरु प्रिय कहा है। चरु यज्ञ का हथिप्य पदार्थ (दूदभात) है। माथुरों की सामाजिक जीवन धारा में चरुआ चरुई चरुनी चरु चरी आदि वैदिक शब्दों की स्थिति अभी भी वर्तमान है। ये शब्द हमारे किसी अन्य समाज से उधार लिये हुए नहीं हैं।

(अथर्व वेद 11) अग्नि मंथन सूक्तों में है। इसमें मंथन यंत्र का प्रधान अंग 'प्रमन्थ' 'प्रमन्धः स्मात्' तथा पाव ओविली नेत्र (नेती) आदिकों का विवरण है। अथर्व के अग्नि मंथन सूत्र में अग्नि देव, सप्त ऋषियों और विश्वे देवों की प्रशस्तियाँ हैं। अग्नि मंथन मंत्र को आरिणी मंथन कहते हैं। अरणी मथुरा मंडल का वृक्ष विशेष है, जो प्रायः ब्रज ब्रह्मार्षि देश में ही होता है। अरणी वृक्षों की प्रधानता के कारण ही ब्रज के वन अरण्य, आरण्यक, द्वादशारण्य, वृहदारण्य, महारण्य, ब्रन्दारण्य आदि नामों से विख्यात हुए

मथुरा मम रूपाहि माथुरा मम वल्लभाः ॥

इनकौ वचन सुनि रामचंद्र वोलत भये॥ तुम मेरे पूज्य हौ सदां सर्वदा॥54॥ तुमारे पूजन करते परमात्मा प्रसन्न हो है। यह भ्रात शुरवीर है॥55॥ तीनों लोक में विख्यात है सो (वादुष्ट) को वध करेंगौ। तवतौलवणासुरके वध के लिये शत्रुधुन कों भेजत भये॥56॥ तव तौ शत्रुघन प्रणाम करत भयौ महात्मा रधुनाथ जी कों चतुरंगिनी सैनाकू लेकरिकें मथुरा पुरी कों आवत भयौ॥57॥ शत्रुघन मथुरा पुरीं कों जायके॥ शत्रुधुन अेड़ लवण सुरै राक्षस घोर पापी ताकूँ मारि के॥ मथुरा पुरी में प्रवेश करत भये॥58॥ हे पृथ्वी मेरे रूप जोमाथुर ब्राह्मण है तिन्हें स्थापन करतभयै कैसे ब्राह्मण हैं॥ छतीस हजार वेदांग जानन वारे हैं॥59॥जहां वेदन ही पढ़ौ एसौ माथुर ब्रह्मण है वही चारों वेदन का पढ़े और ब्रह्मण हैं सो चातुर्वेद के पढ़न वाले हो पूजन करै॥ मेरौ स्वरूप माथुर ब्रह्मण हे उनको कौ पूजन करै॥60॥ खेती के करने वाले, वली दुराचारी॥ धर्म मार्ग रहित एसे हूजो माथुर ब्रह्मण है सोहपूजनीय है क्योंकि मेरौ रूप मेरो है माथुर ब्राह्मण॥61॥ हे वंसुधरे माथुरन कौ रूप मेरौ है रूप ये मेरो ही स्वरूप हो॥ माथुरिया के एक को भोजन कराऐ को फलएक करोड़ ब्राह्मण भोजन कराये कौ फलहौ है॥62॥ केशव देव के समान देव नहीं॥ माथुर ब्राह्मण के समान और ब्राह्मण नहीं॥ विश्वेश्वर शिव के समान शिवलिङ्ग नहीं है। हे वसुंधरे सांच-सांच है॥63॥माथुर मेरौ रूप है माथुर मम्।

वाराह पुराण के मथुरा महातम में राजा मान्धाता के कार्य काल में लवणासुर ने माथुर ब्राह्मणों के द्वारा यज्ञ आदि कर्म में व्यवधान डाला था। उससे व्यथित होकर अयोध्याश्री राघवेद्रसरकार के पास गये और आपने अपने छोटे भ्राता को माथुरों के रक्षार्थ मथुरा भेजा और वो मथुरा के राजा हुए। उसी प्रसंग में श्री रामचन्द्र जी ने वाराह व पृथ्वी सम्वाद का उल्लेख किया है। उससे सतयुग के पूर्व व सतयुग में ये थे और इनको श्रेष्ठतम चतुर्वेद ब्राह्मण व अपने समान व एक ब्राह्मण एक करोड़ के समान बताया है। यही वाराह जी द्वारा पृथ्वी और यही श्री रामचन्द्र जी द्वारा द्वापर में यह कहा मैंने भी भार्गववंश में जन्म लेकर इनका पूजन किया व ये मेरे ही स्वरूप हैं तथा जब मैं त्रैतायुग में (कंस के वध हेतु) जन्म लूंगा मैं इनका पूजन करूँगा। यह तीनों काप्य कथना तीनों के युग के प्रमाण है तथा कलियुग में महाभारत के यक्ष सम्वाद में युधिष्ठर को भी माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों श्रेष्ठत्तम बताया है। श्री महाभागवत पुराण में कृष्ण अवतार में इन की यज्ञ पत्नीयों द्वारा भिक्षा मांगकर। दूध भात भोजन करना उनकी सम्पर्ण साध्य मती-आशीष के प्रमाण है। ये त्यागी, सन्तोषी, हठीले, चातुर्य पूर्ण ब्राह्मणों में जाने जाते हैं। श्री वाराह पुराणं की छाया प्रति भी सतगामी है। तथा इनके गौत्र प्रवर, गडकुलदेवी श्री महाविद्या है व सामवेदीयों श्री चर्चिका है। ये आज भी श्री महाविद्या पीठाधीश्वर व श्री वाराह जी के प्राचीनतम काल वाराह के पुजारी हैं। साथ ही श्री यमुना जी के विश्राम तीर्थ के पुजारी है पुचरे के रूप में मान्य हैं। ये मथुरा के अलावा होली पुरा उचाड़-डबरा

छरोरा छोटा राजस्थान, बम्बई, गुजरात, कलकता आदि सभी क्षेत्रों में विद्यमान हैं। वाणी विवेक के चातुर्म, हाज़िर जवाबी व सभी समप्रदायों के अधिष्ठिताओं से पूज्य व सम्मान प्राप्त मथुरा इतिहास में मिलते हैं। यह सत्य है कि अनादि काल से प्राचीनतम चतुर्वेद-चारों वेदों के ज्ञाता श्रेष्ठ कर्मी व त्यागी ब्राह्मण हैं।

इनके प्रवर गौत्र शाखा कुछ ही मिलते है अन्य ब्रह्मणों परंतु कुछ भिन्न है। जो इस प्रकार इस प्रति में प्रस्तुत है।

1. दक्ष गौत्र, 2. कुतस्य गौत्र, 3. वशिष्ट गौत्र, 4. भागर्व गौत्र, 5. भारद्वाज गौत्र प्रवर, 6. धौम्य गौत्र, 7. साश्रवसगौत्र, सात गोत्र है।

दक्षगौत्र के तीन प्रकार है ? 1. आत्रेय, 2. गाविष्ठ, 2. कुत्स्यगौत्र = अंगिरा भृगु 3. वशिष्ठ शाक्रे पाराशर, 4. भार्गव गौत्र प्रवर।

माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों की उत्पत्ति वर्णन"

माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों का वंश अग्नि वंश हैं। अग्निदेव को प्रथम पूज्य और उत्पन्न देव मान्य किया हैं। (ऋगवेद 6-16-40) का प्रमाण है :

श्लोक : **मंथु वै माथुराः प्रोक्ता यज्ञानां ये प्रवर्तकाः।**
प्रमाथिनो महावीर्या अग्नि वंश समुदभवाः॥
स्थानां परं पुण्यं माथुरेति निगद्यते।
कलिंद्यायास्तटे रम्ये देव क्रीड़ा मयोहि स॥

(कर्दम संहिता प्राचीन पत्रक)

सूरसेन पुरी मथुरा स्वयं भूमनु की राजधानी थी, जो बाद में उत्तानपाद तथा ध्रुव की राज्यस्थली रही। मनु के स्थापित सप्तऋषि तथा अन्य देव स्थल मथुरा में वर्तमान है। यही ऋषि माथुरों के मूलगोत्र प्रवर्तक है। इन ऋषियों का वर्णन अथर्ववेद 18-3-20, 18-4-8 तथा ऋगवेद 3-4-5 में भी है ऋगवेद 4-18-12 के प्रमाण से इन्होंने मथुरा में अग्नि तीर्थ पर अग्नि उत्पन्न कर यज्ञ धर्म की स्थापना की थी। अग्नि तीर्थ में अग्नि का नित्य निवास था, जिसे अब मोक्षा तीर्थ माना जाता है। इस अग्नि सृजेता-अग्निदेव का रूप अति उग्र था।

श्लोक : **अग्नये रक्तनेत्राय ज्वालमाला चितथि वै।**
शक्ति हस्ताय ताम्राय नमो वै कृशणा वर्त्मने॥

(भविश्य पुराण पृश्ठ 145)

लिंग पुराण में इन्हें ''प्रमथा प्रीतिवर्धना'' अर्थात स्नेही स्वभाव वाले मिठबोला कहा हैं। माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों के सात गोत्रों का अब आगे वर्णन करता हूँ।

"प्रथक प्रथक गोत्र, प्रवर व आस्पद वर्णन"

1. दक्ष गोत्र - प्रवरतीन

क. आत्रेय ख. गाविष्ठर ग. पूवातिथि।

क. **आत्रेय** - महर्षि अत्रि के पुत्र थे। ये चन्द पुत्र अत्रि के छोटे पुत्र थे। महर्षि दक्ष के पुत्र न होने से इन्हें मानस पुत्र बनाया था तथा चन्द्रमा दत्तत्रेय के माह होने पर भी दक्ष वंश में चले जाने से उन्हें अग्नि वंश में नही गिना गया ये वेदज्ञ विपुल यज्ञ करता थे मन्टी ऋषि के ये शिष्य थे तथा इनमें तैत्तरेय संहिता का पद पाठ निर्धारण किया था इनकी शास्त्रीय रचना आत्रेयी शिक्षा तथा आत्रेयी संहिता है।

ख. **गाविष्ठर** - ये यज्ञ और वेद विद्या के महान आचार्य थे। सामाइगय राजेश्वर वभ्रु के यज्ञों को इन्होंने गृत्समद ऋषि के साथ सम्पन्न कराये थे।

ग. **पूर्वातिथि** - ये अत्रि कुल के महान आचार्य थे। इनका समय 8758 वि.पू. है। भारतीय इतिहास काल में दक्ष दो हुए हैं। पहले दक्ष प्रजापति पुत्र दक्ष दूसरे प्राचेतस दक्ष। माथुरों के गोत्रकार प्रथम दक्ष हैं। दक्ष का वेद ऋगवेद है। साखा आश्वलायनी है तथा कुल देवी महाविद्या देवी है। इनकी चार अल्ल हैं : 1. दक्ष 2. ककोर 3. पूर्वे 4. साजने। अल्ल उपजाति या आस्पद को कहते हैं, मनु ने इसे विख्यात नाम दिया है। आस्पद का अर्थ है आदर्शपद जो कुल के आदर्श कर्म या स्थान को संकेत करता है अलंकृति सूचक कुल नाम को अल्ल कहते हैं।

1. **दक्ष** - ये दक्ष प्रजापति के पदासीन ज्येष्ठ पुत्रों का वर्ग है। ये अधिकतर द्विजातियों के यज्ञोउपवीत, विवाह, यज्ञ, अनुष्टान आदि संस्कार कराते हैं मूल अल्ल हैं।

2. **ककोर** - ये यादवो की कुकुर साखा के कुलाचार्या थे इनका मथुरा में कुकुर पुरी, घाटी ककोरन नाम से स्थित है, ये यादवों के प्रोहित होने से बड़े सम्बृद्ध और सम्पत्तियों के स्वामी थे। कोंकेरा, ककोरी, कक्कु, काकरोली, काकरवार, ककोड़ा आदि इनके विस्तार क्षेत्र थे इनके वंश में महापूज्य श्री टजागर देव जी 52 राजाओं के प्रोहित बड़े चौबे जी थे जो बादशाह अकबर के दरबार में सम्मान पाते थे।

3. **पूर्वे** - ये सम्राट पुरूर्वा चन्द्र वंशी के प्रोहित कुल में से हैं।

4. **साजने या फेंचरे** – ये साध्य जनों के पति गन्धर्व राज उपरिचर वशु (फेंचरी बृज के प्रोहित थे। उपरिचर वशु बहुत शक्तिशाली सम्राट था जिसे इन्द्र देव ने अपना झण्डा देकर इन्द्र ध्वज पूजन की उत्सव विधि का उपदेश किया था। जिसे गन्धारी केतुओं ने सद्दे और अलम के रूप में पूजना तथा रण में फहराना सिखाया। उपरिचर मगध देश के जरासंध परिवार का पूर्व पुरुश था तथा मतस्य देश के राजा मतस्य और वेद व्यास माता मतस्य गंन्धा (सत्यवती) भी इसी वंश में उत्पन्न हुए थे उसका राज्य गोपाचल क्षेत्र (ग्वालियर) में पिछोर, पचार, डाग क्षेत्र में था।

5. **शोंखीया** – मीठे वर्ग में अल्ल है जो सौख खेड़ा में सौनक क्षेत्र में बसने से विख्यात हुई है।

6. **जुनारीया** – यह अल्ल अब देखने में नहीं आती है जाहन्वी गंगा के प्रर्वतक जन्हु राजा के शासन क्षेत्र जन्हुयर, जानु, जुन्होती आदि जाहन्वी गंगा जी अब विलुप्त है लोप होने के साथ ही अलक्ष हो गया।

कुत्स गोत्र – कुत्स वंश के आदि पुरुश महर्षि अंगिरा थे। अंगिरा और भृगु आदि अग्नि उत्पादक यज्ञ प्रर्वतक थे इनका मथुरा में आश्रम कुत्स सुपारूस्व श्रृंग अपभृन्स में कुत्तापायसा कहा जाता है। महर्षि कुत्स का एक आश्रम गुजरात में भी था जिस लोग कुतियाना गाँव कहने लगे। कुत्स स्वरूपवान थे एक वार इन्द्र के महल में सजिधजि कर जाने पर इन्द्रानी इन्हें पहिचान न सकी क्योंकि यह बज्र धारण कर इन्द्र के संग्रामों में जाते थे। इन्द्र से इनकी मित्रता थी एक बार सूर्य देव से इनका विरोध होने पर इन्द्र ने सूर्य के रथ का एक पहिया निकाल लिया तथा दूसरा भी निकालकर इन्हें दे दिया। एक बार घर आने पर कहना न मानकर हार जाने को तैयार इन्द्र को इनने रस्सियों से बाँध लिया इनके वंशधर कोत्स ने अयुध्या सम्राट रघु से अपने गुरु विश्वामित्र के शिष्य बरतन्तु (तंन्तुरा गाँव मथुरा को गुरु दक्षिणा देने को चौदह करोड़ मुद्रका माँगी। रघु उस समय महान विश्व जित यज्ञ में सारा धन दान कर चुके थे। कोसागार की सूचना से क्रुद्ध होकर रघु ने कुवेर पर चढ़ाई करने का निश्चय किया। सायंकाल रथ आयुधों से सजवाया प्रातः ही चढ़ाई करने वाले थे तभी रात्री में कुबेर ने स्वर्ण वर्षा कर राज्य का कोश स्वर्ण मुद्राओं से भर दिया। प्रातः ही कौशागार ने सूचना दी है राजन सारा कोश तो स्वर्ण से भर गया है। रघु ने हर्शित होकर कोत्स मुनि से सम्पूर्ण कोश का स्वर्ण ले जाने की प्रार्थना की परन्तु कोत्स ने कहा राजन में चौदह कोट से एक कोडी भी ज्यादा नहीं लूगा इतना ही तो मुझे गुरु दक्षिणा में देना है। राजा चकित रह गया और आज्ञा अनुसार द्रव्य वर तन्तु मुनि के आश्रम में ऊँट व बैल गाड़ीयों से पहुँचाया। आँगिरसो के परिवार में गोत्र प्रर्वतक ऋषियों के नाम इस प्रकार हैं वृहस्पति, भारद्वाज, आश्वलायनि, गालव, पैल, कात्यायन, वामुदेव, मुदगल, मार्कन्ड, तैतरैय, शुंग, पातान्जलि, दीर्घ तमा, शुक्ल, मानद्याता, योवनाश्व, अम्वरीश आदि कुत्स गोत्र का वेद ऋगवेद साखा आश्व लायनी कुलदेवी

महाविद्या आस्पद वर्णति हैं : 1. मिहारी, 2. शाण्डिल्य, 3. अकोर और 4. अकोस

4. **धोरमयी** – ये मथुरा के निकट ध्रुवपुरी धोरेरा के निवासी थे। यह अटल्ला चौकी वर्तमान में वृन्दावन के निकट है। जो ध्रुव का अटल पद माना जाता हैं।

5. **मुनारे** – मथुरा के मधुवन के समीप फाल्गुन तीर्थ पाली खेड़ा तथा फालेन में इनका निवास था। गुना क्षेत्र ग्वालीयर गोपाचल में भी है।

6. **खलहरे** – ये यज्ञ कार्य में जो, धान, औखली में कूट कर यज्ञ हब्य प्रस्तुत करते थे।

7. **मोरोठीया** – 49 मरूतगडोंका प्रदेश (मारवाड़) प्रसिद्ध है मरूदगड़ वंशी मारोठीया, मराठा, राठौर प्रसिद्ध है।

8. **सनोरे** – ये 12 आदित्यौ में पूर्वज सूर्य के वंशधर हैं। उसीनर देश के राजा शिव महादानी के प्रोहित थे। बृज में अपने क्षेत्र चौमा में ये सन्, पटसन, फुलसन कुटवाकर ऋषियों व ब्रह्मचारीयों के लिए क्षौममेखला और छोमपट बनवाकर प्रसतुत करते थे।

9. **सौनीया** – ये वृज सीमा सौनहद के वासी थे गाँधारी शकुनी को सकुन शास्त्र विद्या सिखाने से तथा सकुन चिड़िया द्वारा प्रश्नों के उत्तर देने से ये सकुन विद्या के आचार्य कहलाये सगुनीयों से सौनीया नाम पाया ये मीठों में ही हैं।

10. **सद्द** – ये सद्द देवों की या ऋषियों की धर्म परिषद के धर्म निर्णायक सदस्य हैं। श्री नाथ जी के समय से जतीपुरा में हैं। प्रिय वंशी सम्राट की पुरी बहेड़ी उत्तर पानचाल में वर्तमान है। यही प्रियव्रत पुरी पीली भीत तथा हलद्वानी नाम से जाने जाते हैं।

11. **कुस्कीया** – ये विश्वामित्र के दादा कुस्सिक के पुर कुस्सक गली मथुरा के प्राचीन निवासी हैं। ये मीठों में हैं। कुस्सका पुर के लोग पीछे मुस्लिम बना लीये गये तथा कुस्सक पुर मस्जिद बनाकर कब्जा कर लिया गया। कुस्सक के पुत्र गाधि का गाधी पुरा (नया गोकुल के निकट तथा विश्वामित्र तीर्थ स्वामी घाट मथुरा ही में है।

12. **सिरोहीया** – ये सिरोही राज्य में जा कर आस्था पाने से सिरोहीया कहे गये ये भी मीठे वर्ग में हैं। इसी समय सिरोही की तलवारे वहुत प्रसिद्ध होती थी।

वशिष्ठ गोत्र – ये ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से यह गोत्र प्रवर्तित हुआ ये ब्रह्मा के प्राण समान प्रियभाव से उत्पन्न हुए थे। प्रजापति दक्ष ने अपनी ऊर्जा पुत्री इन्हे दी थी। ब्रज के सांख्याचार्य कपिलदेव जी की बहिन कर्दम ऋषि की पुत्री अरुन्धती भी इनकी पत्नी थी। अरुन्धती की साखा में ही वशिष्ठ,

शक्ति, पराशर, वेदव्यास और शुक मुनि आदि हुए हैं। शुक पुत्र भूरश्रवा, प्रभु, शम्भु, कृष्ण और गौड़ (गौहरे ठाकुरे हुए तथा वशिष्ठ जी को धृतान्ची अपसरा से महात्मा उपमन्यु हुए जिनका आश्रम कृष्ण गंगा के निकट था जहाँ पुत्र प्राप्ती के लिए भगवान कृष्ण ने द्वारिका से आकर पशुपति दिक्षा लेकर कठोर दिनचर्या करके साँव पुत्र पाया था। विमल कुन्ड इन्द्र के स्वर्ग लोक आदि वृन्दावन कामवन सभी यथा स्थान है वशिष्ठ गोत्र के प्रवर तीन है वशिष्ठ, शक्ति, पाराशर वशिष्ठ का आश्रम (वाटी योष्ठा वनवी शक्ति का सटीकरा (छटीकरा पाराशर का (पारसौली वेदव्यास का (व्यासपुर या वीपुर पश्चिमायी मथुरा ही परमपुण्य स्थान है वशिष्ठ के पुत्र चित्र केतू गन्धर्व राज थे जो प्रारम्भ में मथुरा सूरसेन जनपद पर शासक थे इनके पुत्र को इनकी सौतेली माताओं ने विश देकर मार डाला तव अतिशोकाकुल महर्षि अंगिरा ने योग विद्या द्वारा जीवित कर संम्वाद कराया और राजा को आत्मतत्व का उपदेश दिया वशिष्ठ की व्याघ्री पत्नी से मनु आदि क्रोध के कुन्ज देवता जो सूर सेनाओं के अधिपति थे जिनका क्षेत्र ब्रज में नौह या नौह वाजना जाट आदि था।

अल्ल – इनकी अल्ल या आस्पद इस प्रकार है:-

1. **काहो** – ये कहोड़ ऋशि के वंशज हैं। ये याज्ञवलक्य के समकालीन थे। ये उद्दालक के शिष्य थे तथा जनक सभा विजेता अस्टावक्र ऋषि इसके पुत्र थे।

2. **वट्ठिया** – ये स्वयंभुमनु के शासिक प्रदेश ब्रह्मवृत में निवास करने के कारण ये ब्रह्मवृतीया वट्ठिया संज्ञा से प्रसिद्ध हुए हैं।

3. **दारे** – ये श्री कृष्णा के प्रिय नन्द गाँव में श्रीकृष्ण रक्षक बनकर रहने वाले माथुर विनारे या दारे कहे गये।

4. खोखावत, 5. सात, 6. निनोलिया, 7. डुन्डवार, 8. उटोलीया ये ऊट पर बैठकर घूमने वाले थे जो राजस्थान में भृंमण करते थे, 9. जौनमाने

मीठे चौबों में कुछ प्रथक अल्ले

10. **पैठवार** – ये पैठे गाँव के रहने वाले थे।

11. **तिन्छरे** – हिमाचल किन्नौर क्षेत्र के किन्नरगण जो ब्रज कन्झोली क्षेत्र में बसे थे। उनके सहवासी जन किन्नर नाज गान कुशल उपदेश जिनका राग कान्ड़ा माथुरी नारियों द्वारा मंगल कार्यों के आरम्भ में मिठाई बाँट कर सम्पन्न होता था।

12. **वैहरामदे** – ये मुगल सरदार वैहराम खाँ के अधीनस्त रहे थे

13. **तिहरीया** - ये वृन्दावन के निकट क्षेत्र में तेहरा गाँव तथा पाण्डवों के इन्द्रप्रस्त महानगर में निवास करते थे।

14. **मौरेसरीया** - इनका मुडेसी गाँव में निवास होने के कारण प्रसिद्धि हुई।

15. **मैठीया** - ये अम्बस्ठ नरेसो की राजधानी अमेठी के निवासी होने से मैठीया कहाये गये।

16. **सिहोरीया** - ब्रज के सिहोरा गाँव के वासी हैं।

17. **जुन्सुटीया** - ये जुन सुटी गाँव में बसने के कारण जुन्सुटीया कहलाये गये।

18. **रिसिनीया** - ये अम्वरीश टीला या माथुर चतुर्वेदी पुर जहाँ पहले चौबों के पूर्वज रहते थे।

19. **जैतीया** - ब्रज के अजित शेशनाग के तपों वन जैंतगाँव में बसे माथुर जैंत में प्राचीन नागमूर्ति सरोवर तटपर है। जो कितनी गहरी यह खोदने पर ज्ञात नहीं हुआ है आदि मीठे चौबों की अल्ले हैं।

भार्गव गोत्र - भार्गव गोत्रीय माथुर चौवे भृगु वंशी है। भृगु, वाल्मीक, अगस्त की उत्पत्ति है। भृगु क्रोधी और आसरी विद्याओं के आचार्य थे। सौनक (सीखटीला तथा बिहार में सौनभद्र तटवासी चाण्डक्य, कोटल्य हुए हैं। माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों के ऋगवेदी समूह की आश्वलायन साखा के प्रर्वतक महर्षि ऋषि आश्वलायनि इस सौनक्य के ही शिष्य थे। गृह सूत्र में अश्वमेध, राजश्वीय आदि की कर्मकाण्ड विद्या का विवेचन है भार्गव गोत्र के पाँच प्रवर है 1. भार्गव, 2. च्यवन, 3. आप्लवान, 4. औंर्व एवं 5. जग्मदग्न।

(भार्गवों की अल्ल या आस्पद)

1. सकना, 2. गुगीलया, 3. तर्र, 4. धोरेरा, 5. सौतीया, 6. गहबारीया, 7. मकना, 8. कन्हेरे, 9. दीक्षित, 10. शाण्डिल्य और 11. मरोटीया मीठे वर्ग में कुछ इनसे अलग आस्पद हैं जो परिवर्ती काल की मथुरा से जाने की वाद की हैं।

1. **गुदोआ** - नीला गुदना या गोदने वाले लिलहारो के गाँव गढूमराव (गढ उमराव ब्रज में निवासी थे।

2. **कोटा** - कोटा छरोरा ब्रज के निवासी थे।

3. **रीड़ा** - ये रीड़ा दाऊजी स्थान के निवासी थे।

4. **गुड़वी** - यह गिडोह के निवासी थे। च्यौला ये चम्बल नदी तट के वासी थे। जो मथुरा में रत्ती का नगरा बसाकर रहे थे।

भारद्वाज गोत्र - भारद्वाज गोत्रीय सामवेदी हैं। ये महर्षि वाल्मीक के शिष्य थे। इनका शिल्प

शास्त्र है। विमानविद्या (हवाई जहाज रचना का वर्णन है स्थान भारद्वाज पुर भारद्वाज नगर, वाजनो गाँव मथुरा परिक्रमा में हैं इनके तीन प्रवर 1. आंगिरस, 2. बहिस्पत्तीय और 3. भारद्वाज।

(भारद्वाजों की अल्ल या आस्पद)

1. पाँण्डे, पाठक अन्य अल्लों में रावत, माविले, अझुनीया, कुहरे, चौपोलीया, तीवारी (त्रवेदी) लोहरे, नशवारे, सिकरोलीया, उचाणे, गुनारे, मिश्र, जुन्सूटी, चतुर, डुन्डवारीया, पैठवाल, मारोठीया, जिखनीया, अगरैया, दुसाध, सुमिरधनी आदि अल्ले हैं।

सौश्रवस गोत्र – ये विश्वामित्र के वंशज है मथुरा के क्षेत्र में सौसासाहिपुर में रहते थे तीन प्रर्वर है 1. विश्वामित्र, 2. देवराट और 3. औदले हैं सौश्रवस सुर्सवा महर्षि के पुत्र थे।

(सौश्रवसो की अल्ले या आस्पद 140 हैं)

1. **मिश्र** – ये मिश्र मर्गोरा और साकलद्वीपी है इनके 6 भेद हैं 1. छरोरा, 2. प्रोहित, 3. अनुस्ठी, 4. चन्दवारीया, 5. वंशाधर, 6. धोर्यमयी, 7. चकेरी, 8. सुहावली, 9. साधि, 10. चौपोलीया, 11. बुदोआ, 12. तोपजाने, 13. चातुर और 14. छिरोरा सौश्रवसों की साखा आश्वलायनी वेद ऋगवेद है।

धौम्य गोत्र – ये महर्षि कश्यप के वंश में महाप्रतापी हुए हैं। पाण्डवों के रक्षक और प्रोहित रहे। मथुरा में धौम्य आश्रम गोपाल बाग सूर्य क्षेत्र है। इनके तीन प्रवर हैं 1. कश्यप, 2. आवतसार और 3. नैध्रुव साखा अश्वलायनी वेद ऋगवेद है।

(धौम्य गोत्र के आस्पद और अल्ले)

1. लायसे, 2. भरतवार, 3. घरवारी, 4. तिलमने, 5. शुक्ल, 6. ब्रह्मपुर, 7. आत्मोती, 8. मौरे, 9. चन्द्रकेरखी, 10. जीजले, 11. सौतीय (श्रोती ये भदावर आदि क्षेत्रों में जाकर बस गये थे, 12. सौंहारे, 13. चौंपरे इसके अलावा कुछ अन्य आस्पद हैं छोंका, भारवारे, तिवारे, नौसेनावासी, तक्तवारे, महलवारे, कारेनाग, सकना, होरीवाले, भरोंच, चिगोड़ा, वधोरीया, नगरावार, दक्ख, टोपी दास के देवमन, मन्साराम के लाल चौबे के गहनीया के पंण्डित के भारवाले, आरतीवाले, कर्मफोरके को भी राम के काहा, स्वामी मुकक्दम, चौधरी, पटवारी, निधायेके, हाथरसीया, मुडसानीया, करोया आदि।

दोहा

सात गोत्र तेईस प्रवर, चौंसठि अल्ल प्रमाण।
द्वै शाखा देवी युगल, मान करत संज्ञान॥
कंठ वसत जिनके विरूद, बाढ़त वैभव वंश।
देव पितर मन मगन हैं, आदर देत श्रसंस॥

माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण चारों वेद वेदांगों के पारागत विद्वान होते हैं। प्रवल बुद्धि मधुर वाणी चातुर्य प्रवृतिवान होते हैं।

माथुर ऋषि - यह मथुरेश्वर के समीप रहने से माथुर ऋषि कहे गये। इनके शिष्य व संसदि माथुर चौवे कहे गये। मथुरा नगरी में इनकी अधिक संख्या है। वैसे ब्रज समीपी क्षेत्रों में फैले हुए हैं। जैसे मैनपुरी, आगरा आदि-आदि दूरस्थ स्थानों में प्रवासी हैं। माथुर चौवे या माथुर चतुर्वेदीयों के कुछ विशेषताएं हैं। - खट्टे मीठे, कडुए, कुलीन आदि है। इसका आदि गौड़ उत्पत्ति में हमने पूर्व ही वर्णन किया है यहाँ पृथक-पृथक दिया है।

माथुर चतुर्वेदीयों के अल्लगोत्र -

मिश्र, पाठक, चतुर्वेदी आदि। यह गौड सम्प्रदायी हैं। श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मकाण्डी स्वाध्यायी होते हैं ये देवाश्रई हैं। माथुरचतुर्वेदी ब्राह्मण राधा कृष्ण के उपासक होते हैं। वेद वेदाङ्गो के ज्ञाता होते हैं। यह गौड़ ब्राह्मणों के वारह भेदों में से माथुर ऋषि की संतति हैं। चारों वेदों का पाठ करने वाले विद्वान पन्डित हुए इसी से माथुर चतुर्वेदी नाम करि संसार में विख्यात हुए हैं।

'इति माथुर चतुर्वेदी या चौवे ब्राह्मण निर्णय'

"गौड ब्राह्मण 12 प्रकार के" 3 शाखा सहित सारिणीं प्रस्तुत है।

क्रम संख्या	ब्रा. के नाम	श्रषि नाम	आस्पद
1.	आदि गौड़ ब्राह्मण	बाल्मीक	उपध्याय
2.	श्री गौड़ ब्राह्मण	गौतम	उपाध्याय
3.	मेंड़तवाल गौड़ ब्राह्मण	माण्डव्य	उपाध्याय
4.	गंगापुत्र गौड़ ब्राह्मण	हर्ष	उपाध्याय
5.	हरियाणा गौड़ ब्राह्मण	हारीत	उपाध्याय
6.	वशिष्ठ गौड़ ब्राह्मण	वशिष्ठ	उपाध्याय
7.	सोभर गौड़ ब्राह्मण	सोभरि	पांडेय, पांडे, शर्मा, उपाध्याय आदि
8.	दालिभ्य गौड़ ब्राह्मण	दालभ्य	"
9.	सुखसेन गौड़ ब्राह्मण	हंस	"
10.	भटनागर गौड़ ब्राह्मण	भट्ट	"
11.	सूर्यध्वज गौड़ ब्राह्मण	सौरभ (सौराष्ट्र)	"
12.	माथुर गौड़ ब्राह्मण	माथुर	चतुर्वेदी, मिश्र, पाठक

आगे की सारिणी वारह प्रकार के गौड़ ब्रा0 व तीन शाखाओं सहित पूर्ण सारिणीं प्रस्तुत हैं, देखिये।

उपरोक्त 12 प्रकार के गौड़ ब्राह्मणों की ऋषि, गोत्र, प्रवर, आस्पद, व मूल स्थानों की सारिणी है। आगे सारणी प्रस्तुत है 15 गौत्री ॥

'सारणी 12 गौड़ ब्राह्मण 3 शाखा'

इन 12 गौड़ ब्राह्मणों की संख्या, स्थान, गोत्रादि

संख्या	ऋषि गोत्र	अवंटक	देव	वेद	स्थल
1.	माण्डव्य	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	माण्डवपर्वतक्षेत्रयामालवा
2.	गौतम	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	गौड़ेश्वर या गौड़ प्रदेश
3.	श्रीहर्ष	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	गंगातटस्थ क्षेत्र
4.	हारीत	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	हरियाणा क्षेत्र
5.	बाल्मीक	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	आवूगढ़ मध्य प्रदेश
6.	वशिष्ठ	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	सरयूनदीक्षेत्र अयोध्यादि
7.	शोभरि	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	सोभरि क्षेत्र (अहिक्षेत्र)
8.	दालभ्य	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	दालभ्यनदीतटयादालभ्यदेश
9.	हंस	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	सुखसेनदेशहंसपर्वतक्षेत्र
10.	भट्ट	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	भट्टनगर या भटनागर
11.	सोरभ	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	सूर्यमण्डल क्षेत्र (सोरों)
12.	माथुर	उपाध्याय	शिव	यजुर्वेद	मथुरा नगर, माथुर, चौबे चतुर्वेदी

इन 12 गौड़ ब्राह्मणों में 3 गौड ब्राह्मण और है।

13. ककरिया गौड ब्राह्मण
14. दशावार गौड़ (ब्राह्मण इसकी 6 गोत्री शाखा हुई)
15. दशेगौड़ ब्राह्मण

इस प्रकार 15 गोत्री गौड़ ब्राह्मण हुए आगे इन 15 गौड़ ब्राह्मणों की शाखा 24 हैं जिनका विवरण पूर्व में है।

(इति 15 गौड़ ब्राह्मण साखा)

(गौड़ सम्प्रदाय)

16. 'उत्कल ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्लोक - इलः किम्पुरुषत्वे च सुद्युम्न इति चोच्यते ।
पुनः पुत्रत्रयमभूत् सुद्युम्नस्यापराजितम् ॥
प्रमाण मत्स्य पुराण अ. 12 श्लोक 16
उत्कलो वै गयस्तद्व द्वरिताश्वश्च वीर्यवान ।
उत्कलस्यो उत्कला नाम गयस्य तु गया मता ॥
हरिताश्वश्य दिक पूर्वा विश्रुता कुरुभि सहः ।
इत्थं राष्ट् त्रयं जातं पौरवं समनुत्तमम् ॥
तेषा मेकस्तु राजेन्द्र उत्कलश्चेति चोच्यते ।
जगन्नाथः प्रान्त देशस्तूत्कलं परिकीर्तितः ॥
तस्य देशे जानपदा ब्राह्मण वृतशालिनः ॥
(मतस्य पुराण, विष्णु पु0)

अर्थ - इक्ष्वाकु वंश में इला नाम का एक प्रतापी पुरुष उत्पन्न हुआ। जिसे सर्वथा सुघुम्न नाम से जाना जाता है। इन्हीं राजा के तीन पुत्र उत्पन्न हुए। 1. उत्कल 2. गय 3. हरित नामों के थे। उत्कल ने अपने शासन काल में एक उत्कल नाम से नगरी बसाई। इसी उत्कल राज्य के अन्तर्गत जितने ब्राह्मण रहते थे। वे सभी उत्कल ब्राह्मण कहाये। गय नामक पुत्र ने गया नामक नगरी बसाई तथा हरिताश्व ने हरित नगर बसाया।

श्लोक - तत्रादो उत्कल नामः ब्राह्मण निर्णयः ॥
उत्कलो हि नृपेन्द्रस्तु पुरा स्वविषये द्विजान।
गंगा तटस्थितान काश्चिदानध्य विषये स्वके ॥
पुरुणोत्तमपुर्या वे जगदीशस्य सेवने ।
यज्ञान्ते स्थापया मास स्वनाम्ना तां द्विजोत्तमान ॥
ते द्विजाश्चोत्तकला जाता जगदीशस्य सेवकाः ।
वेदं वेदांङ्गशास्त्रज्ञा मत्स्य भक्षणा तत्पराः ॥
(ब्राह्मण उ0 मार्तण्ड)

अर्थ - यह श्लोक मार्तण्ड पुराण से है।

अब यहाँ उत्कल ब्राह्मण उत्पत्ति के साथ-साथ उत्कल ब्राह्मण के विषय में कहता हूँ। पहले इन ब्राह्मणों को ओडिया ब्राह्मण कहते थे। बाद में जब उत्कल नाम का राजा हुआ है, उसने वहाँ के पूर्व मूलवासी

ओडिया नाम के ब्राह्मणों को जो भागीरथी नामक गंगा के पूर्व भाग में रहते थे। उनको बुलाय के पुरुषोत्तम जगन्नाथपुरी में यज्ञ कराई। बाद में यज्ञ समाप्त के श्री जगन्नाथ जी की सेवार्थ अपने विवेक से उन्हें वहीं स्थापित किया। वे ब्राह्मण उत्कल ब्राह्मण कहलाए, और संसार में विख्यात हुए। उत्कल ब्राह्मण श्री जगन्नाथ जी के पूजक होते हैं। वेद शास्त्रों के ज्ञाता होते हैं, मछली, चावल का भोजन करते हैं। कर्मकाण्ड में श्रेष्ठ होते हैं। ये भी ब्राह्मण गौड सम्प्रदाय के हैं।

'उत्कल ब्राह्मणों की उपाधियां'

1. सामन्त 2. मिश्र 3. सतपति 4. सेनापति 5. दास 6. राउत 7. उपाध्याय 8. पति 9. महापत्र 10. खुटिया 11. नेकाव 12. महताव 13. आचार्य 14. दुवे आदि।

'उत्कल ब्राह्मणों के गोत्र शाखा'

1. श्रेष्ठ उत्कल ब्राह्मण
2. कनिष्ठ उत्कल ब्राह्मण
3. श्रेंणी उत्कल ब्राह्मण 4 शाखा
   1. शाखी श्रेंणी उ. ब्राह्मण
   2. जयपुरी श्रेंणी उ. ब्राह्मण
   3. पराग श्रेंणी उ. ब्राह्मण
   4. उत्कल श्रेंणी ब्राह्मण

नोट – जो मेरी दृष्टि में आया वह वर्णन किया है। मात्र मेरा 'ब्रह्मणोत्पत्ति दर्पण' इस पुस्तक को लिखने का आशय ब्रह्म ज्ञान होने व वंश में आपस में प्यार हो कि हम एक पिता की संतान हैं। मात्र वास स्थान अलग हैं, ब्रह्मकर्मग्रहण करने से है।

(इति उत्कल ब्राह्मण गौड़ सम्प्रदाय)

17. 'दक्षिणी पंच द्रविण ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

जिस प्रकार एक ब्रह्म पुरुष को गौड़ क्षेत्र में वास करने के कारण गौड़ ब्राह्मण नाम की संज्ञा से कहा गया ठीक उसी प्रकार द्रविड़ क्षेत्र में वास करने वाले ब्रह्म पुरुष कों द्रविण ब्राह्मण संज्ञा से कहा गया है। एक द्रविण के भी पांच भेद हुए। जो अलग अलग पंचगौंड़ो की तरह ही पंच द्रविण कहे गये।

श्लोक – कर्णाटकाश्च तैलंगा: द्रविणा महाराष्ट्र गुर्जरा: ।

पंचद्रविण इति ख्याता तु विन्ध्यस्यो दक्षिण वासिन: ॥

अर्थ – ये ऊपर के पंचद्रविण हैं क्रमश: नाम देशवास कारण से निम्न प्रकार हैं।

1. कर्णाटक ब्राह्मण – कर्णाटक प्रान्त में रहने वालों को कहा गया है।
2. तेलंगा ब्राह्मण – तेलंगु देश में रहने वालों को कहा गया है।
3. महाराष्ट्र ब्राह्मण – जो महाराष्ट्र प्रान्त में रहे सो महाराष्ट्र ब्राह्मण कहे गये।
4. गुर्जर ब्राह्मण – जो गुजरात प्रान्त में रहे सो गुर्जर ब्राह्मण कहे गये।
5. द्रविण ब्राह्मण – जो उत्तर से दक्षिण के क्षेत्र में रहे सो द्रविण ब्राह्मण कहे गये।

ये ऊपर के पाँचो द्रविण ब्राह्मण अलग–अलग देशवास के कारण अलग–अलग नामों से बोले जाते हैं। विन्ध्यांचल पर्वत के दक्षिण में रहते हैं। ये पाचों पंच द्रविण ब्राह्मण सम्प्रदाय नाम से विख्यात हैं। ऐसा शास्त्रों में लिखा है, सो कहा है। ये ही एक से पाँच और पाँच से दस औस दस से चौबीस फिर चौबीस से चौरासी और 115 संख्या ठीक गौड़ ब्राह्मणों की तरह हो गई है।

यह वर्णन डा. मक्खनलाल मिश्र ने द्रविण ब्राह्मणो का विस्तार से नहीं किया है मैंने द्रविणों का वर्णन संक्षेप में इस 'ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण' नामक पुस्तक में किया है। वो विस्तार से न कर तथ्य रूप में है और स्पष्ट है, जो समझने में सज्जनों को कोई कठिनाई मालूम नहीं हो पायेगी। आगे के संस्करण में विस्तार से लिखा जायेगा। यह मेरी अभिलाषिक भावना है। दक्षिंण के सभी ब्राह्मण वेद वेदांगों से परिपूर्ण स्वाध्याय तप हवनादि कर्मकाण्डी विद्वान, ज्योतिष वक्ता पाये जाते हैं। दिनचर्या में मांस भोजी आचरण हीन अपवित्र होते हैं। दक्षिणीं ब्राह्मण शक्ति के पूजक होते हैं, उत्तर के ब्राह्मण भक्ती के होते हैं।

अब आगे आपकी सेवा में दक्षिणी 5 द्रविण ब्राह्मणों का विस्तार से तो नहीं लेकिन संक्षेप में पृथक-पृथक वर्णन इस 'ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण' नामक पुस्तक में आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

'द्रविण ब्राह्मणोत्पत्ति'

श्लोक - विन्ध्यस्योत्तरदिग्भागे नर्वदायास्तटे पुरा।
अनेके ब्राह्मणास्तत्र ह्यवसन ये शुचिव्रता॥
तेषा मध्ये तु यथार्थ निरगुः केचन द्विजाः
द्रविणख्ये महादेशे ह्यनेकतीर्थ संयुते ॥
तत्र प्राप्तान्द्विजान्दृष्ट्वा पांडयो द्रविण सत्तमः।
विद्या प्रताप संयुक्तान्यराजा हर्षित मानसः ॥
सम्मानंकरोत्तेषां मधुपर्कार्ध संयुत्तम् ।
चकार पूजनं पश्चादं ग्राम दान मथा करोत् ।
अग्रहारान् मनोज्ञाश्चं योगक्षेम समन्वितान ।
तीर्थक्षेत्रेष्वाधिपत्यं ददो तेभ्यो महातपाः ॥

ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड श्लोक 1 से 5

अर्थ – विन्ध्यांचल के उत्तर भाग में नर्वदा नदी के तट पर रहने वाले जो ब्राह्मण थे। उनमें से कुछ परिवार दक्षिण दिशा में तीर्थ करते–करते द्रविण देश में पहुँचे। वहाँ पांड्य नाम का राजा राज्य करता था। उस राजा ने इन ब्राह्मणों का विद्या तेज देखकर बहुत सत्कार किया। अपने राज्य में उन ब्राह्मणों को सौ ग्राम दान में दिये सभी को जीविका हेतु मन्दिर मठादि तीर्थ स्थानों का अधिकारी बनाया।

श्लोक - प्रलब्धवृतयो विप्रास्तद्देशाचार संयुता ।
तद्देश भाषा संयुक्ता न्यवसंस्तत्र तत्र च ॥
वैंकटाचलमारभ्य कुमारीकन्यकावधि।
द्रविणाख्यो महादेशः सर्पा कारेण संस्थिता॥
तत्रस्थिताश्च ये विप्रा द्राविणास्ते प्रकीर्तिताः ।
द्राविणेष्वपि विप्रेषु ग्रामाचार प्रभेवतः ॥

ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड श्लोक 6 से 8

अर्थ – जो ब्राह्मण उत्तराखण्ड की भाषा बोलने वाले भी द्रविण देश में रहने से वहीं की भाषा, रहन, सहन, आचार, विचार करने लगे और उस क्षेत्र में जैसें ही बसे। कुछ समय बाद वे ब्राह्मण वैंकटाचल, काचीमण्डल, प्रभृति से कावेरी, कृतमाला, ताम्रपर्णी, कुमारी, टोंक तक जाकर बसे। अर्थात द्रविण देश में बसने से द्रविण ब्राह्मण कहलाये।

'दक्षिणी दिशी ब्राह्मण'

"सारिणी"

'पंचद्रविण दक्षिणी ब्राह्मण'

महाराष्ट्रा ब्रा.

1. कन्होड़े
2. चित्पान (कोंकस्थ)
3. देशस्थ
4. शुक्ल (यजुर्वेदी)
5. आभीर
6. मैत्रायपना
7. चरक
8. नार्मदी
9. मालवी
10. देवरूखे
11. कन्नण
12. किरवंशी
13. सव्वासे
14. त्रिगुल

तैलंगा ब्रा.

1. तेलंगानियन
2. वेलनाइटी
3. वेगीनाइटी
4. गुरूकीनाइटी
5. काशलनाइटी
6. करणकामा
7. नियोगी
8. श्रणिन्धानासाखी

द्रविण ब्रा.

1. वारमा
2. चन्दलादेश
3. वाँसदेश
4. वृहतप्रहर्ण
5. अष्टसहस्त्र
6. संकेत
7. आरमा
8. लन्नेयर
9. तन्नायर
10. नावुद्री
11. त्रिगुणकोर (कोचीन, कालीकट)
12. कोनसून
13. मुनियत्रा या मुनित्राया

कर्नाटका ब्रा.

1. हेव
2. क्वात
3. शिवल्ली
4. वारागिंनिनारा
5. कांड़वा
6. कर्नाटकी
7. मेंहसूर
8. श्रीनाद

गुर्जा ब्रा.

1. गुर्जर 84 शाखा सिरपुर पट्टन की कर्नाटकी उदिच शाखायें हैं

नागर

- भिच्छु
- मेहता

कुल 10 ब्राह्मण जिनमें से 5 दक्षिण के

'द्रविण ब्राह्मणों के भेद'

अव द्रविण ब्राह्मणों में बहुत से जातिय भेद उत्पन्न हो गये हैं। जिनमें से एको का वर्णन प्रस्तुत करता हूँ।

1. पुदुर ब्राह्मण 2. तुम्मगुठ 3. चालेदेश द्राविण 4. तुर्पुनादि द्राविण 5. कातासिम द्राविण 6. अष्टसहस्त्र द्राविण 7. त्रिसहस्त्र द्राविण 8. सहस्त्र द्राविण 9. काड़माणिक्य द्राविण 10. वृहच्चण द्राविण 11. औतरेय द्राविण 12. दक्षिणात्य द्राविण 13. माध्यम द्राविण इनके चार भेद हैं। 14. वड़हल द्राविण 15. मुक्काड़ द्राविण 16. शोलिया द्राविण इनके चार भेद हैं। 17. तिलंग द्राविण 18. वैखानिस द्राविण 19. पांचरात्र द्राविण 20. आदि शैव द्राविण इनके तीन भेद हैं। 21. वरमा द्राविण चार प्रकार के 22. तन्नाई द्राविण 23. तल्लीमुनयर द्राविण 24. कांचिवटारण्य द्राविण ब्राह्मणों के भेद हैं। इनके अतिरिक्त इन्हीं में से कुछ और भेद शाखा उत्पन्न हुई हैं।

कर्णाटका ब्राह्मणोत्पत्ति'

श्लोक – कृष्णाया दक्षिणं भागे पूर्वेवै सह्यपर्वतात् ।
उत्तरे हिमगोपाला द्रविणाचैव पश्चिमे॥
देश कर्णाटको नामः तत्रत्यश्च महीपति ।
स्वदेशे वासयामास महाराष्ट्रोभ्दवान्द्विजान ॥
तेभ्यश्चजीविका दत्ता ग्रामाणि विविधानि च ।
कावेर्यादि नदी संस्थ देवतायत नानि च॥
स्वदेशे नाम्ना विख्यार्ति प्रापितास्तेन भूभुजा ।
ते वै कर्णाटका विप्रा वेद वेङ्गांग पारगाः ॥

(ब्राह्मण उ0 मार्तण्ड)

अर्थ – कृष्णा नदी दक्षिणी तट की ओर सह्यादि पर्वत से पूर्व में तथा हिमगोपाल से उत्तर दिशा में द्राविण देश से पश्चिम दिशा में कर्णाटक देश है। वहाँ के राजा ने महाराष्ट्र देश से ब्राह्मणों को बुलाकर अपने देश में प्रवास कराया। उनके निर्वाह के लिए जमीन व कई ग्राम दान में दिये, तथा कावेरी तुंगभद्रा एवं कपिला आदि नदियों के किनारे देवी देवताओं के मन्दिर भी सौंप दिये। महाराष्ट्र से आकर ये ब्राह्मण इसी देश में स्थाई निवासी हुए। इस कर्णाटक देश में रहने के कारण क्षेत्रीय नाम के आधार पर इन ब्राह्मणों को कर्णाटक ब्राह्मण कहा जाने लगा और दीर्घ काल के बाद यह क्षेत्रीय नाम ब्राह्मणों को जातिय भेद बना जो कर्णाटक ब्राह्मण कहाये।

'कर्णाटक ब्राह्मणों के भेद'

कर्णाटक ब्राह्मणों के छै भेद हुए सो नीचे वर्णन करता हूँ।

1. सब्बासे ब्राह्मण 2. षष्टिकुल ब्राह्मण 3. व्यास स्वामी मठ सेवक ब्राह्मण 4. राघवेन्द्र स्वामी मठ सेवक ब्राह्मण 5. उड़पी तुलव मठ सेवक ब्राह्मण 6. उत्तरादि मठ सेवक ब्राह्मण।

'तैलंगा ब्राह्मणों का वर्णन'

देशे जैमुनि संज्ञे च राजा धर्मव्रतो महान।
सिद्धिर्हि वर्तते तस्य मनोगमन संज्ञका ।
तथा भूमो स राजा वै पुण्य क्षेत्राणि यानि च।
द्रष्टुं परिश्रमन गेहं स्वकीयं पुनरागमत् ॥
स्नानं दानं तर्पण च पूजां तत्र करोति च।
वर्तयन्यात्रा धर्मेण राजधर्मेण चैव हि ॥
एवं राजा मनोगामी प्रत्यहं चारुणोदये।
वाराणास्यां समायाति स्नानार्थं निजमन्दिरात ॥

(ब्राह्मण उ0 मार्तण्ड)

अर्थ – जैमुनि देश में धर्मव्रत नाम का राजा राज्य करात था। ईश्वर भक्ति के प्रताप से स्वेच्छा गमन सिद्धि थी। जिसके बल से राजा नित्यप्रति भिन्न भिन्न तीर्थ क्षेत्रों में जाकर स्नान दान तर्पण पूजा पाठ इत्यादि कर्म कर के घर वापस आकर राज्य का कार्य करता था। उस धर्मात्मा सिद्ध पुरुष राजा का ऐसा नियम था, और हर रोज काशी में जाकर गंगा स्नान करता पूजा पाठ करता और प्रातः होंने से पूर्व घर वापस आ जाता था।

श्लोक – पुनः स्वभवनं याति तदैकस्मिन्दिने सति ।
अपस्यमाना स्वपति चोत्थान समये तदा॥
मां विहाय कुत्तो वायं नित्यं संगच्छतीति च।
विशंकमाना भर्तार मागतं तम प्रच्छत ॥
क्वयासि नित्यं भोः स्वामिन्नत्ति पृष्टे च चाव्रवीत।
काशीं गमिष्ये इति ता मुक्ते सा पुनरब्रवीत ॥
अहो नित्यं मां विहाय कथं काशी गमिष्यसि।
अहमप्या गमिष्यामि श्वः प्रभृत्येव निश्चितम् ॥

(ब्राह्मण उ0 मार्तण्ड)

अर्थ – एक दिन राजा की पत्नी सोकर जगी तो राजा का पलंग खाली देखा, फिर विचार करने लगी कि राजा रात्रि में उठकर कहाँ गया। यह सोच उसके मन में विचार आया कि मेरा पति दुराचारी है। इतने में राजा वापस आया तो पत्नी ने कहा कि मुझे सोती छोड़कर प्रतिदिन कहाँ जाते हो, रानी के आशंकायुक्त वाक्य सुनकर राजा ने उसके मन के सन्देह को समझ लिया, और उत्तर में कहा कि मैं नित्य काशी जी जाकर गंगा स्नान करके आता हूँ रानी ने कहा कि मुझको छोड़कर आप अकेले कैसे जाने लगे। कल से मैं भी साथ चलूँगी।

श्लोक – तथेत्युक्त्वा स नृपतिस्ततः प्रभृति नित्यशः ।
गत्वा स्वभार्यया साकं स्नानं पूजां विधाय च ॥
पुनः स्वभवनं यात्येवं नित्यक्रमे सति ।
एकस्मिन्दिवसे तस्य भार्या भागीरथी तटे ॥
गवनावसरे तीर्थात्पुष्पिणी ह्यभवत्तदा ।
तस्मिन्नेव दिने राजा नगरं शत्रुवेष्टितम् ॥
(ब्राह्मण उ० मार्तण्ड)

अर्थ – राजा की सहमति से उसके पश्चात रानी प्रतिदिन पति के साथ गंगा स्नान के लिए जाने लगी। बहुत दिनों के बाद एक दिन जब राजा धर्मब्रत पत्नी सहित काशी गया हुआ था। उस समय गंगा पर्व का अवसर था। इस कारण राजा ने कुछ साल गंगा तट पर रहकर दान पुण्य किया। पश्चात राजा जब घर लौटने लगा तो वहीं पर रानी रजशवला होंने लगी, उधर उसी दिन राजा के नगर पर शत्रुओं ने हमला कर दिया।

श्लोक – ज्ञात्वा स्वसिद्धि योगेन चिन्तयामास चेताति।
रजस्यन्तेयदि गच्छानि राज्यं शत्रु ग्रहीष्यति ॥
त्यक्त्वैनां यदि गच्छामि धर्मशास्त्रंहि दूषणाम ।
नरैर्यात्रा न कर्तव्या येषां भार्या रजश्वला ॥
इति चिन्ता समाविष्टो विप्रानाहूय सत्वरम् ।
विप्रतिषेधविरुद्धं कार्य विज्ञापयामास ॥
तदा सर्वे विद्वांसो विलोक्य नृपसंकटम् ।
शास्त्रा धारेण वचनं प्रोचुर्नृपसमीपतः ॥
युष्मुज्जाया तु योग्यास्ति गमने च त्वया सह ।
इति तद्वचनं श्रुत्वा नृपो हर्षित मानसः ॥

अर्थ – राजा ने अपनी दिव्य दृष्टि से जान लिया, कि शत्रु ने मेरे राज्य पर आक्रमण कर दिया है। यह जान राजा चिन्ता करने लगा कि तीन दिन तक तो मुझे यहीं रहना पड़ेगा क्यों कि रानी रजशवला की हालत

में है। परन्तु जब तक शत्रुराज्य पर कब्जा कर लेगा और रानी को यहाँ छोड़कर जाता हूँ तो यह भी अनुचित है, क्योंकि रजश्वला पत्नी को छोड़कर पति का जाना शास्त्रों के विरुद्ध है। अब क्या करना चाहिए? यह चिन्ता उस राजा के मन में व्याप्त थी। अतः राजा ने काशी के विद्वान ब्राह्मणों को बुलाकर सारा वृतान्त सुनाया। तब विद्वान पंडितों ने राजा रानी को तुरन्त जाने की आज्ञा दी यह सुन राजा अति हर्षित हुआ।

श्लोक - भार्या गृहीत्वा निरगात्तदा राजानम ब्रुवन् ।
राजंस्त्वया रक्षितव्या वयं सर्वे च दुखत : ॥
सः उवाच तदा कर्ष्य चाहो हे द्विजवर्य काः ।
मयस्थिते च युष्माकं का विपत्तिर्भविष्यति ॥
दुःखं तथापि युष्माकं भवेच्चेन्निकटे मम् ।
आगन्त व्यमिति प्रोक्त्वा नत्वा भार्या प्रग्रह्यं च ॥
आगत्य नगरं स्वं वै रिपुन्निर्जित्यं चैकराट् ।
धर्मेण राज्यमकरोत्ततः कालांतरेण च ॥

अर्थ – जब राजा अपनी पत्नी सहित स्वनगर जाने लगा तब वे ब्राह्मण राजा से कहने लगे हे राजन! कदाचित हम पर कोई संकट आवै तो आप हमारी सहायता करना। तब राजा बोले मेरे रहते आपको कोई दु:ख नहीं हो सकता,यदि हो तो आप मेरे यहाँ आवें मैं आपकी पूरी मदद करूँगा। ऐसा कह ब्राह्मणों का आशीर्वाद ले राजा अपनी पत्नी के साथ स्वनगर में आये। राजा ने शत्रुओं के साथ युद्ध किया। उधर काशी के विद्वान पंडितों ने राजा की विजय कामना हेतु जप किया। जिसके प्रताप से राजा की युद्ध में विजय हुई, शत्रु परास्त होकर भाग गये। फिर राजा प्रसन्न हो धर्मानुसार जैमुनि का राज्य करने लगा।

श्लोक - वाराणस्यामना वृष्टि दोषेण सर्व जंतवः।
दुखिता ह्यभवंस्तत्र लुप्ते च पुष्य कर्मणि॥
सभां कृत्वा द्विजाः सर्वे निश्चयं चक्रुरादरात् ।
पूर्व धर्मव्रते नास्मानुत्कं किमित श्रूयताम ॥
विपत्तिकाले युष्मान्वै रक्षिष्यामीति निश्चितम् ।
अतो वयं तन्निकटे गमिष्यामः सशिष्यकाः ॥
इति निश्चित्य निरगुः संप्राप्ता नगरं प्रति ।
धर्मव्रतस्य निकटे शिष्यः संप्रेषितस्तदा ॥
औत्तरेया वयं प्राप्ता नाद्याश्चोन्तरे तटे ।
जलपूर्ण नदी यस्मात्त स्मादत्रैव संस्थिताः ॥

ब्राह्मण उ. मार्तण्ड पुराण श्लोक 1 से 15 तक

अर्थ – बहुत समय बाद एक समय ऐसा आया जब काशी में जल वृष्टि न होने से अकाल पड़ा तब सब ब्राह्मणों ने मिलकर सलाह की कि ऐसे दुष्काल में जैमुनि के राजा धर्मवृत की शरण में जाकर कुछ मदद मागेंगे। राजा भी हमें विश्वास देकर गया था, कि विपत्ति काल में मुझे याद करना ऐसा विचार कर काशी के कुछ ब्राह्मणों ने जैमुनि देश के लिए प्रस्थान किया। कुछ दिन यात्रा करने के बाद जब वे ब्राह्मण जैमुनि देश के निकट पहुँचे तो एक नदी को देखा। जिसमें जल उफान ले रहा था। यह देखि सब ब्राह्मण नदी के उत्तर तट पर ही रुक गये, और एक शिष्य के हाथों राजा को संदेश भिजवा दिया।

श्लोक – **तच्छुता नृपतिस्तूर्णमुत्थाय च सवांधवा ।**
नौका मारूह्यं तेषां वै निकटे स जगाम ह ॥
स्वागतं चाब्रवीद्राजा बहुमानपुरः सरम् ।
प्रणाम्य संपूज्य ततः पप्रच्छागमकारणम् ॥
औत्तरेया ऊचुः ॥
अस्मद्देशे अति दुर्भिच्छ पीड़ा चासीन्महत्तरा ।
तेन त्वन्निकटे प्राप्ता रक्षास्मान कर्मपीड़ितान ॥
श्रुत्वा तद्वचनं राजा तदर्थं स्थलमुत्तमम् ॥
खान पान युतं कृत्वा तत्र चावासयच्चतान् ॥

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड पुराण श्लोक 26 से 29 तक)

अर्थ – काशी से आये ब्राह्मणों का संदेश पाकर राजा अपने मन्त्री, सभासदों को साथ लेकर नदी तट पर आया। सभी ब्राह्मणों का उसने उचित सत्कार कर बहुत धन दान दिया, तथा उनके आने का कारण जाना ब्राह्मण कहने लगे हमारे देश में अकाल पड़ा है, इस दुख के कारण आपके पास आये हैं। आप हमारी रक्षा कीजिए तब राजा ने कहा कि आप चिन्ता न करें ऐसा कहकर राजा ने उन काशी से आये ब्राह्मणों का उसी नदी के उत्तरी तट पर रहने का तथा भोजनादि का उचित प्रबन्ध किया।

श्लोक – **ततः कालान्तरे तत्र नदी दक्षिण वासिनी ।**
तद्देशिया द्विजा ये वै जैमुनिय मतानुगाः॥
उत्कर्षमौत्तरेयाणां दृष्टवा चेर्ष्यापरायणः ।
वैचित्र्यं पश्यत ह्येतैरहो आधुनकैर्द्विजेः॥
अस्मन्महत्वां नृपतेः समीपे लोपितं किल ।
अत एतान्विजेष्यामो विद्यावादेन निश्चयम् ॥
इति ते समयं कृत्वा सभार्य नृपतिंद्विजा।
गृहीत्वां च ततो जग्मुरौत्तरेय द्विजान प्रति॥

ब्राह्मण उ. मार्तण्ड पुराण श्लोक 30 से 33 तक

अर्थ – बहुत दिन बीतने के उपरान्त जैमुनि क्षेत्र के मूल निवासी ब्राह्मण जो उस नदी के दक्षिण में रहते थे, उनको उत्तर तटवासी ब्राह्मणों का राजा के द्वारा प्राप्त आदर सत्कार देख ईर्ष्या होंने लगी सोचा हमारा निरादर कर उन बाहर से आये ब्राह्मणों का विशेष सत्कार करता है। यह शिकायत राजा रानी तक पहुँची राजा ने कहा उत्तरवासी ब्राह्मण योग्य पूज्य एवं महान हैं। रानी ने कहा दक्षिण वासी ब्राह्मण महान हैं।

श्लोक – तदा तत्र मिथस्तेषां शास्त्र वादो महानभूत।
प्रसन्नौ च सदा जातौ दंपती श्रवणोत्सुकौ ॥
महांतो ह्योत्तरेयाश्चेत्युक्ते वै जायया तदा।
जैमिनीया महान्तश्च नृपेणोत्कमिति स्फुटम् ।
दंपत्योश्च मिथो वादे प्रवत्ते सति तत्र वै।
कार्यमालोचितंचैकंपरीक्षार्थ द्विजान्मनाम् ॥
कुंभे सर्प च संस्थाप्य ह्याच्छाद्य मुखरंध्रकम् ।
संस्थाप्य च सभायां वै पृष्टवान्नृपतिर्द्विजान ॥
एतत्पात्रे च यद्वस्तु वर्त्तते भो द्विजोत्तमाः ।
येरुक्तंस्पष्टरीत्या ते पूज्या मान्याश्च नान्यथा ॥

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड पुराण श्लोक 34 से 38 तक)
(तैलंगा सम्प्रदाय)

अर्थ – इस वडे छोटे पूज्य–अपूज्य का निर्णय जानने के वास्ते दोनों पक्ष के ब्राह्मणों का शास्त्रार्थ होंना निश्चय किया। उस समय राजा रानी ने मिलकर योजना बनाई और एक ताम्र कलश मगवा कर उसमें एक सर्प को वन्द कर दिया, फिर सभा में आकर हुक्म कर दिया कि उस कलश के अन्दर क्या है। जो कोई सही बतलावेगा वही श्रेष्ठ विद्वान माना जावेगा । राजा का ऐसा निर्णय सुनते ही।

श्लोक – तदां तं जैमिनी या वै पात्रं दृष्टवा च दूरतः।
एतन्मध्ये च सर्पोऽस्तीत्येवं प्रोचुर्नृपं प्रति ॥

अर्थ – जैमुनि के आदिवासी ब्राह्मणों में से एक ने तुरन्त उठकर उत्तर दिया महाराज! इसके अन्दर सर्प है।

श्लोक – मुखावलोकनं चक्रुरोत्तरेया परस्परम् ।
अस्माभिः किमु वक्तव्यमिति ते व्यथिताऽभवन् ॥
व्रह्मण्यो भगवान्विष्णु रक्षणार्थ द्विजिन्मनाम् ।
व्रह्मचारिस्वरूपेणगत्य तानब्रवीद्दिम् ॥

औत्तरेयाः किमिर्थ भोश्चिताग्रस्तास्त दुच्यताम् ।
तदोचुस्त्वं बालको ऽसि कथं प्रच्छसि कारणम् ।
तन्मध्ये केन विप्रेण सात्विकेन च तं प्रति ।
कथितं सर्व वृतांत तदा प्रोवाच बालकः ॥
विप्र विनोदिनी वंशे जातो ऽहं ब्रह्म बालकः ।
गूढ़ार्थ ज्ञानवानस्मि तस्मात्कार्य भवेद्यथा ॥

ब्राह्मण उ. मार्तण्ड पुराण श्लोक 39 से 44 तक

अर्थ – सही उत्तर जानकर काशी से आये ब्राह्मण सब एक दूसरे के मुँह की ओर ताकने लगे कि अब हम क्या कहें उत्तर तो पहले ही दे दिया। ऐसा सोच सब लोग अधिक चिन्ता करने लगे तब ब्राह्मणों के कृपालु विष्णु भगवान एक ब्रह्मचारी बालक के भेष में उपस्थित हुए, और उन ब्राह्मणों से उनके दुख का कारण पूछा कि तुम चिन्ता ग्रस्त क्यों हो तब उनमें से एक ने कहा कि तू बालक है, तुझे बताने से क्या लाभ होगा। तब वह बालक बोला मैं विप्रविनोदी वंश में उत्पन्न हुआ बालक हूँ और गूढ़ार्थ को जानता हूँ इसलिए मैं आपके लाभ की ही ब्रात कहूँगा।

श्लोक – श्रोमतां च तथा सर्वे समीकुर्या न संशयः ।
मद्वंशजानां युष्माभिर्मान्यं कार्य सदैव हि ॥
इत्युक्त्वा नृपतेरग्रे गत्वा राजानम ब्रवीत ।
शिष्योऽहंमौत्तरेयाणां तव प्रश्नोऽति तुच्छकः ।
न ब्रह्म विद्या तत्रास्ति तद्वक्ष्यामि तवोत्तरम ।
पात्रा मध्ये सुवर्णस्य कृष्णमूर्तिर्हि वर्तते ॥

ब्राह्मण उ. मार्तण्ड पुराण श्लोक 45 से 47 तक

अर्थ – वह बालक बोला में आपकी मर्यादा स्थापना करता हूँ। तुम सब मेरे वंशस्थों का नाम करना ऐसा निश्चय कर वह बालक राजा के निकट गया, और कहा मैं उत्तर तटवासी ब्राह्मणों का शिष्य हूँ आप ने प्रश्न रखा है वह तो बहुत तुच्छ है। उसका उत्तर तो मैं दे सकता हूँ हमारे पंडितजनों की क्या आवश्यकता है। ऐसा कह के हाथ में अक्षत लेके सभा के बीच में रखे उस कलश के ऊपर डाले और कहा कि हे राजा! इस कलश में स्वर्ण से बनी कृष्ण की मूर्ति है।

'तैलंगा ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्लोक – राजा विलोकयामास स्त्री मुखं हास्यसंयुतः ।
पात्रमुद्घाट्य च ततो दृष्टवां मूर्तिमनुत्तमाम् ॥

दंपति विस्मयाविष्टावैत्तरेयाः प्रहर्षिताः ।
तस्मात्स्थानान्निरगमज्जेमिनीया पराजिताः ॥
अथ राजाति संत्हृष्टस्तेभ्यो ग्रामान्प्रदत्तवान ।
ते औत्तरेया ह्यभवंस्तैलंग ब्राह्मणाः ॥

ब्राह्मण उ. मार्तण्ड पुराण श्लोक 48 से 50 तक

अर्थ – उस बालक का ऐसा वचन सुन वह राजा अपनी स्त्री के मुख की ओर देखकर हंस दिया। राजा रानी की ओर देखकर हंसे कारण तो राजा जान रहा था, कि उन दोनों ने स्वयं अपने हाथों से उस पात्र में सर्प बंद किया था। इसलिए राजा रानी को उस बालक की बात झूँठ लग रही थी। तभी वह बालक बोला हे राजा सभा के बीच इस पात्र को खोला जाय, ऐसा सुन राजा ने उस कलश का मुँह खोला तो देखा कि उस पात्र में सचमुच सोने की कृष्ण मूर्ति थी। वह देख राजा रानी दोनो आश्चर्य से चकित रह गये, और जैमन से आये ब्राह्मण अपनी हार मानकर वहाँ से चले गये। बाद राजा ने उन सब ब्राह्मणों को ग्राम दान देकर अपने राज्य में बसाया। यह सब ब्राह्मण जिस क्षेत्र में रहे वह तैलंग क्षेत्री व वहाँ के निवासी ब्राह्मण तैलंग ब्राह्मण कहे गये।

'तैलंग ब्राह्मण भेद'

तैलंग ब्राह्मणों के छः भेद हैं।

1. वैलनाडु 2. वैगीनाडु 3. मुर्किनाडु 4. कर्णकर्मा 5. तिलंगणि 6. कासलनाडू॥

23. तल्लीमुन्नायर द्रविण 24. कांचिवटारण्य द्राविण ब्राह्मणों के चौबीस भेद हैं। इनके अतिरिक्त इन्हीं में से कुछ और भेद शाखा उत्पन्न हुई हैं।

(तैलंग सम्प्रदाय)

'महाराष्ट्र ब्राह्मणोत्पत्ति'

श्लोक – आसीन्नृपो महातेजाः पुरुरवाकलोद् भवः ।
महाराष्ट्रेति विख्यातो यस्य राज्यं महत्तरम् ॥
तेनायं भुवि विख्यातो विषयो राष्ट्र संज्ञकः ।
महाशब्द प्रपूर्वश्च यस्य पूर्वे विदर्भकः ॥
सह्याद्रि पश्चिमे प्रोक्ता तापी चौवोत्तरे स्थिता ।
हुवलीधारवाडाख्यौ ग्रामो दक्षिण संस्थितौ ॥
तत्र राज्य प्रकर्तावै महाराष्ट्रोनृपोत्तमः ।

यज्ञार्थे कृति संकल्पो राजाऽसीद्दीक्षितो यदा॥
आहूता ब्राह्मणास्तेन विन्ध्यस्योत्तर वासिनः ।
तैस्तदा कारितो यज्ञो विधि पूर्वेद्विजोत्तमैः ॥
(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड पुराण श्लोक 1 से 5)

अर्थ – महाप्रतापी पुरुवा राजा के वंश में महाराष्ट्र नाम का एक राजा था। उसका राज्य क्षेत्र बहुत बड़ा था। इस महाराष्ट्र के राजा के राज्य क्षेत्र को भी महाराष्ट्र कहा जाता था। उसके राज्य के पूर्व में (विदर्भ) वराड़ जिला पश्चिम में सह्याद्रि पर्वत नासिक, त्रयंवक, इगतपुरी, खण्डाला, सतारा हैं। उत्तर में ताप्ती नदी तथा दक्षिण में हुवली धारवाड़ है। इन सीमाओं के अन्तर्गत इस क्षेत्र को महाराष्ट्र कहते हैं। एक बार यहाँ के राजा ने यज्ञ कराने का निश्चय किया। और यज्ञ कार्य हेतु उत्तरवासी ब्राह्मणों को बुलाया। इन विद्वानों ने विधि विधान से यज्ञ प्रारम्भ कराई।

श्लोक – तेन राजा प्रसन्नोऽभूद्ददोदानान्यनेकशः ।
गौ भूहिरष्य वस्त्राणांमन्नस्य च विशेषतः ॥
स्वदेशे वासयामास तांद्विजान्यज्ञ आगतान।
स्वनाम्ना ख्यापयामास दत्वा ग्रामान सदक्षिणानं॥
ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड श्लोक 6 से 7

अर्थ – यज्ञ कार्य को देख उन ब्राह्मणों की योग्यता से प्रभावित होकर राजा ने गौदान, अन्नदान, स्वर्णदान, पृथ्वीदान, बहुत सारा दान दिया। और उन सब पंडितों को अपने राज्य तपती, गोदावरी, कृष्णादि नदियों के तट पर रहने की व्यवस्था करा दी। महाराष्ट्र राजा के द्वारा महाराष्ट्र क्षेत्र में बसे इन ब्राह्मणों का महाराष्ट्री ब्राह्मण नाम पड़ा।

'महाराष्ट्र ब्राह्मणों के उपनाम, गोत्र, प्रवरादि'

सं.	उपनाम	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	कुलदेवी
1.	जोशी	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मातापुरी
2.	गीते	वच्छल	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मातापुरी
3.	विडवार्द्र	उपमन्यु	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मातापुरी
4.	कांयदे	हारितस	3	श्रगुवेद	शाकल	बालाजी
5.	मूले	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	बालाजी
6.	वैद्य	गार्ग्य	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	गणपति

7.	गौंहे	पाराशर	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	केशवगोविन्द
8.	जोशी	कृष्णत्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मल्लारी
9.	पाठक	वच्छस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	गणपति
10.	देशपांडे	सांख्याय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	व्यंकटेश
11.	शुक्ल	हरितस	3	श्रगुवेद	शाकल	महालक्ष्मी
12.	वंडवे	कश्यप	3	श्रगुवेद	शाकल	महासरस्वती
13.	पुंड	कौशिक	3	यजुर्वेद	आपस्तव	तुलजापुरी
14.	धर्माधिकारी	जमदग्नि	5	श्रगुवेद	शाकल	मातापुरी
15.	गुरुजी	गार्ग्य	5	यजुर्वेद	कण्व	मातापुरी
16.	महाजन	वत्सस	5	यजुर्वेद	कण्व	मातापुरी
17.	कुलकर्णी	अत्रि	3	यजुर्वेद	कण्व	गोपालकृष्ण
18.	रालेगणकर	मौनभार्ग	3	श्रगुवेद	शाकल	तुलजापुरी
19.	अग्निहोत्री	काश्यप	3	यजुर्वेद	आपस्तम्व	याज
20.	मूले	कृष्णत्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	सप्तश्रृंगी
21.	पिंगले	हारित	3	यजुर्वेद	आपस्तम	तुलजापुरी
22.	भालेराव	कौडिन्य	3	ऋगुवेद	शाकल	रासीन
23.	वैद्य	गार्ग्य	3	यजुर्वेद	आपस्तम	मातापुरी
24.	देसाई	मौनभार्ग्य	3	श्रगुवेद	शाकल	वोधन
25.	कानूगो	भरद्वाज	5	यजुर्वेद	आपस्तम्ब	मातापुरी
26.	रहकोले	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	आपस्तम्ब	मातापुरी
27.	लाभगांवकर	धनंजय	3	ऋगुवेद	शाकल	मातापुरी
28.	कुलकर्णी	जमदग्नि	5	ऋगुवेद	शाकल	सप्तश्रृंगी
29.	पाटील	विश्वामित्र	3	ऋगुवेद	शाकल	मातापुरी
30.	स्मार्त	वशिष्ठ	1	ऋगुवेद	शाकल	मातापुरी
31.	जोशी	वच्छस	5	यजुर्वेद	कण्व	मातापुरी
32.	भूले	श्रीवत्स	3	यजुर्वेद	आपस्तंव	कुन्दनपुर
33.	हढ़गे	कश्यप	3	ऋगुवेद	अश्वलायन	बोधन
34.	मदन	अत्रि	3	यजुर्वेद	आपस्तंब	कुन्दनपुर
35.	वांडी	मौनमाग	5	ऋगुवेद	शाकल	आपनी
36.	भगवन	कौडिन्य	3	ऋगुवेद	शाकल	रासिनिवो
37.	जोशी	लोहित	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	कोल्हापुर

38.	जोशी	भारद्वाज	3	ऋगुवेद	शाकल	योगेश्वरी
39.	पन्नावरी	शाण्डिल्य	3	ऋगुवेद	शाकल	कोल्हापुर
40.	सामक	हरितस	3	सामवेद	राणायसी	मातापुरी
41.	लेकुरवाले	वत्सायन	4	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
42.	पंचभैया	उपमन्यु	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
43.	ऋषि	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	शांकृत
44.	धर्माधिकारी	उपमन्यु	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
45.	रजभोर	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
46.	करविद	विश्वामित्र	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
47.	दवड़े	गौतम	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
48.	वोवड़े	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
49.	गोजे	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
50.	देवदास	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
51.	कचरे	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
52.	विचारे	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
53.	कावले	वच्छस	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
54.	सप्तर्षि	उपमन्यु	5	"	"	"
55.	दल्लाल	गार्ग्य	5	"	"	"
56.	देव	भारद्वाज	3	"	"	"
57.	भोकरे	कौशिक	3	"	"	"
58.	मौजे	भारद्वाज	3	"	"	"
59.	लेले	काश्यप	3	"	"	"
60.	शाहणे	शाण्डिल्य	3	"	"	"
61.	चादुपाले	पाराशर	3	"	"	"
62.	लधु	वशिष्ठ	3	"	"	"
63.	सावले	काश्यप	3	"	"	"
64.	रवादार	काश्यप	3	"	"	"
65.	कायदे	कौशिक	3	"	"	"
66.	सोगदे	धनंजय	3	"	"	"
67.	समुद्रे	मौनस	3			"

68.	रांणे	अत्रि	3	"	"	"
69.	आवारे	काश्यप	3	"	"	"
70.	आचवले	मौदगल्य	3	"	"	"
71.	जिराफे	काश्यप	3	"	"	"
72.	आदनने	मौदगल्य	3	"	"	"
73.	कंठ	वच्छस	3	"	"	"
74.	गौरटे	कौशिक	3	"	"	"
75.	वोल्हे	भारद्वाज	3	"	"	"
76.	दह्यडरान	वशिष्ठ	3	"	"	"
77.	गोडले	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	मोहनीराज
78.	वाफले	काश्यप	3	"	"	"
79.	सीवपाटकी	वशिष्ठ	3	"	"	"
80.	रेवते	गौतम	3	"	"	"
81.	भडके	गौतम	3	"	"	"
82.	कमलपाटकी	कृष्णत्रेय	3	"	"	"
83.	निझ	काश्यप	3	"	"	"
84.	सोंनटके	वच्छ	3	"	"	"
85.	वेदरी	वशिष्ठ	3	"	"	"
86.	अवटी	काश्यप	3	"	"	"
87.	वारगजे	कृष्णात्रेय	3	"	"	"
88.	हडप	वशिष्ठ	3	"	"	"
89.	शुक	मौनस	3	"	"	"
90.	गाजरे	उपमन्यु	3	"	"	"
91.	गजगट	भार्गव	3	"	"	"
92.	कोलेश्वर	काश्यप	3	"	"	"
93.	चतुर	कृष्णात्रेय	3	"	"	"
94.	ताभोली	मौदगल्य	3	"	"	"
95.	ढुकरे	वशिष्ठ	3	"	"	"
96.	तवनीसु	काश्यप	3	"	"	"
97.	मोताले	जातूकर्ण	0	"	"	"
98.	वाघ	विदर्भ	0	"	"	"

99.	उपासनी	गौतम	3	"
100.	तिलिवे	भारद्वाज	3	"
101.	पाठक	भारद्वाज	3	"
102.	सेवाले	व्याघ्रपाद	3	"
103.	रोधे	गार्ग्य	5	"
104.	घोलप	कौडन्य	3	"
105.	काथे	अत्रि	3	"
106.	यज्ञोपवीतम्	मार्कण्डेय	0	"
107.	आपटे	धनंजय	3	"
108.	गायधानी	सांकृत	3	"
109.	सींगड़े	वच्छ	5	"
110.	वोधले	काश्यप	3	"
111.	तानवडे	कृष्णात्रेय	3	"
112.	कली	भारद्वाज	3	"
113.	डोंगरे	पाराशर	3	"
114.	विजापुरे	वशिष्ठ	3	"
115.	भोलेराव	पैंग्य	3	"
116.	ण्कवीटे	वशिष्ठ	3	"
117.	सरोक	गर्ग	3	"
118.	मुकुटकर	लोगाक्षि	3	"
119.	काकडे	गर्ग	3	"
120.	वैद्य	वशिष्ठ	3	"
121.	नीसेद	गौतम	3	"
122.	शुक	शाण्डिल्य	3	"
123.	हुल्ल	कात्यायन	3	"
124.	मांडे	काश्यप	3	"
125.	थठ	भारद्वाज	3	"
126.	अयाचित	वशिष्ठ	3	"
127.	मगरी	काश्यप	3	"
128.	चौक	यास्क	3	"
129.	मुसुमदार	विश्वामित्र	3	"

130.	परसायू	मांडव्य	3	"
131.	सेटे	कौशिक	3	"
132.	क्षीरसागर	वशिष्ठ	3	"
133.	औताडे	भारद्वाज	3	"
134.	महाजनजारी	श्रीवच्छ	3	"
135.	पिलिपिले	गौतम	3	"
136.	भटली	कृष्णात्रेय	3	"
137.	उल्हे	भारद्वाज	3	"
138.	कापसे	कौण्डिन्य	3	"
139.	कोरडे	कौण्डिन्य	3	"
140.	आभीर	भारद्वाज	3	"
141.	घुले	काश्यप	3	"
142.	तोवरे	काश्यप	3	"
143.	रोटे	गौतम	3	"
144.	विडवाई	शाण्डिल्य	3	"
145.	महात्मे	वच्छ	3	"
146.	नवग्रहे	आंगिरस	3	"
147.	वाकड़े	पाराशर	3	"
148.	सावकार	काश्यप	3	"
149.	भोपे	भारद्वाज	3	"
150.	वेणी	भारद्वाज	3	"
151.	पतकी	गौतम	3	"
152.	परमार्थी	अत्रेय	3	"
153.	सोंनटे	मौनस्व	3	"
154.	पंजपारे	प्रथमात्र	3	"
155.	पावड़	उपमन्यु	3	"
156.	डुवे	काश्यप	3	"
157.	व्यापारी	अत्रि	3	"
158.	वेटो	पाराशर	3	"
159.	पितले	वच्छ	3	"
160.	मानके	विश्वामित्र	3	"

इस जाति के यजमान साढ़े बारह जाति के है। वे सब शूद्र वर्ण हैं उनका वर्णन महाराष्ट्री क्षत्री वंशावली में लिखा है। स्कन्ध पुराण में लिखा है, कि ताप्ती महात्म में रुद्र कहते हैं। एक समय भगवान रामचन्द्र जी ताप्ती नदी के तट पर जब वन में आये तब वहाँ श्राद्ध करने के निमित्त हनुमान जी से एक शिला मँगाई और उस पर श्राद्ध किया। और उस स्थान का नाम काष्ठपुर रखकर वहाँ ब्राह्मणों को स्थापन किया। वे ब्राह्मण काष्ठपुर वासी ब्राह्मण कहलाए। यहाँ स्नान ध्यान व दान का बड़ा पुन्य हैं, यह महाराष्ट्र सम्प्रदाय के हैं।

(महाराष्ट्रा सम्प्रदाय)

अथ ओदीच्य सहस्त्रा ब्राह्मणोत्पत्ति । "गुर्जर ब्राह्मण वर्णन "

पुराणानुसार संग्रह के तथा श्री सलि प्रकाश ग्रनी के लेखे से विदित है कि, सम्वत् 802 चावड़ा वन राजा ने पाटल शहर बसाया। उसके वंश में सोलंकी क्षत्रिय वंशी चामुण्डा राजा हुआ इसी का एक पुत्र मूल नाम का राजा हुआ।

श्लोक -

गंगायमुनयोः संगादग्रामं पंचोत्तरं शतम। च्यवन स्याश्रमात्युष्याच्छतं वै सोमपायि नाम्॥
सरय्वाः सिन्धुवर्यायाः शतं च धूतपाम्प नाम्। वेदशास्त्ररतानां च कान्यकुब्जाच्छतद्वयम्॥
तिग्माशुतेजसा तद्वच्छतं काशिनिवासिनाम्। कुरुक्षेत्रात्तथा द्वाभ्यामधिका सप्तसप्ततिः॥

प्रयाग क्षेत्र से च्यवन के आश्रम से सरयू के किनारे से काशी के क्षेत्र से कुरुक्षेत्र से कान्यकुब्ज से विद्वान ब्राह्मण जन ऋषि 1016 की संख्या में आये। जो मूल राजा ने एक यज्ञ रचाई थी। और ये ब्राह्मण जन सिद्धिपुर दर्शनों की लालसा से पहुँचे थे।

श्लोक - समीयुर्मुनि पुत्राश्च गंगाद्वाराच्छतं द्विजाः ॥
नैमिषाच्च समीयुर्वै शतं च क्रतुवेदिनाम् ॥
तथा चैव कुरुक्षेत्रादि द्वात्रिं शदधिकं शतंम् ।
इत्थं समागता विप्राः सहस्त्राधिक सोडश॥

इन 1016 ब्राह्मणों के एकत्रित होंने की संख्या थी। राजा मूल ने उनका बड़ा सत्कार किया। यज्ञ सम्पूर्ण होंने पर उन्हें अनेक प्रकार के दान दिये। ब्राह्मणों ने प्रतिग्रह लेने के लिए असहमति प्रकट की और कहा कि हे राजा! हम तो सिद्धिपुर क्षेत्र तीर्थ के दर्शन करने के लिए आये थे। हमें इस तेरे रथ घोड़े और धन सम्पत्ति से क्या लेना देना हमें नहीं चाहिए। कुछ समय यहाँ ठहर कर आनन्द लेंगे। राजा ने ब्राह्मणों की यह बात सुन कर अपने हृदय में बड़ा दुखी हुआ, और महलों में चला गया। बाद कुछ लालची ब्राह्मणों को स्वर्ण आदि दान देकर काठियावाड़ के अन्तर्गत सिहोर ग्राम को दान में दिया। तथा अन्य और ब्राह्मणों को भी

271 ग्राम दान में दिये। इस प्रकार 500 ब्राह्मणों को बसाया जो सिद्धिपुर सम्प्रदायी सहस्त्रा ओदीच्य हुए। फिर सिहोर ग्राम के आठ दिशाओं में 81 ग्राम थे, वह 490 ब्राह्मणों को दिये वे 500 ब्राह्मण सिहोर सम्प्रदायी कहाये। इस प्रकार वह सहस्त्रा ओदीच्य ब्राह्मण कहाये। और जिन 16 ब्राह्मणों ने राजप्रतिग्रह स्वीकार नहीं किया, अपनी एक टोली बनाये बैठे थे। ये टोलक ओदीच्य ब्राह्मण कहाये। गोत्रादि इनके जो भेद हैं सो चक्र में समझ लेना।

'श्री सिद्धपुर के 21 पद का कोष्ठक'

सं	अवटंक	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	कुलदेवी	गणपति	यज्ञ	शर्म
1.	पंड्या	कौशिक	3	ऋगुवेद	अश्वाला	विध्नेश्वरी	महोदर	सोमेश्वर	विष्णु
2.	देव	भार्गव	6	ऋगुवेद	अश्वाला	आशापुरी	वक्रतुण्ड	वीरेश्वर	सोम
3.	प्रथम पर्द पुत्राय दत्त त्रातीय पित्रे दत्तं पद या गोत्र एक मेवास्ति अत): गोत्रदिकं								
4.	त्रिवाड़ी	वल्लभ	5	सामवेद	कौथुमी	महागौरी	विध्नीव	देवेश्वर	दत्त
5.	दुवे	गौतम	3	ऋगुवेद	अश्वला	हिंगुलाज	महोदर	सोमेश्वर	सोम
6.	ठाकुर	वच्छास	6	यजुर्वेद	मध्या.	भद्रकाली	विध्नवि.	वीरेश्वर	भव
7.	दुवे	पाराशर	3	यजुर्वेद	मध्या.	महागौरी	बहुरूप	वीरेश्वर	सोम
8.	उपाध्याय	कश्यप	3	यजुर्वेद	मध्या.	उमा	महोदर	कुबेर	सोम
9.	दुवे	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्या.	चामुण्डा	महोदर	वीरेयश्व	भव
10.	दुवे	शाण्डिल्य	3	यजुर्वेद	मध्या.	महालक्ष्मी	गजकर्ण	सोमेश्वर	वटुक
11.	पंड्या	सोनक	3	यजुर्वेद	मध्या.	महागौरी	विध्नवि.	सोमेश्वर	दत्त
12.	त्रिवाडी	वशिष्ठ	3	सामवेद	कौथुमी	शुभ्रा	वक्रतुण्ड	सोमेश्वर	भव
13.	ठाकुर	मौनस	3	यजुर्वेद	मध्या.	घारपीठ	महोदर	वीरेश्वर	वियुल
14.	जानि	गर्ग	3	यजुर्वेद	मध्या.	अम्बा	वक्रतुण्ड	सोमेश्वर	भव
15.	दुवे	कुच्छस	3	यजुर्वेद	मध्या.	उमा	महोदर	सोमेश्वर	सोम
16.	दुवे	उद्दालक	3	यजुर्वेद	मध्या.	उमा	महोदर	वटुक	सोम
17.	दुवे	कृष्णात्रेय	3	यजुर्वेद	मध्या.	शुभ्रा	वहुरूप	वीरेश्वर	दत्त
18.	दुवे	कौडिन्य	3	यजुर्वेद	मध्या.	महाकाली	लम्बोदर	वीरेश्वर	दत्त
19.	पंड्या	मांडव्य	3	यजुर्वेद	मध्या.	महागौरी	प्रसन्नबदन	वीरेश्वर	दत्त
20.	उपाध्याय	उपमन्यु	3	ऋगुवेद	अश्वव.	बहुस्मरा	विध्नवि	सोमेश्वर	दत्त
21.	दुवे	यवेतात्र	3	यजुर्वेद	मध्या.	जया	एकदन्त	सोमेश्वर	दत्त

इनमें तीन ओदीच्य ब्राह्मणों का आपस में भोजन और विवाह सम्बन्ध होने में कोई बाधा नहीं है। अगर कोई बाधा मानते हों, तो उन्हें विचार करना चाहिए, कि गुजरात प्रान्त में ओदीच्य ब्राह्मणों की कन्या टोलकिया ब्राह्मणों में और टोलकियों की कन्या ओदीच्यों में दी, ली जाती हैं। 1016 ओदीच्य जो बसे पीछे उनके इष्ट मित्र जो आये, वह निकृष्ट जातियों का आहार्यत्व करने लगे। इस कारण ऊपर लिखे तीन कुलों के साथ उनका भोजन विवाह सम्बन्ध नहीं रहा। वे कुनवीगौर, गौलागौर, काछियागौर, ग्रन्थपगौर, गरजी गौर, कौलीगौर, मोचीगौर कहाये। गौर, कच्छ, वाग्ड़िया, पारकरिया, खरड़ी, संवा, कालावाड़ी, सुखसंवा इन नगरों में बसे और भिन्न-भिन्न आचार होंने से सबका संवा पृथक हुआ, और जो मारवाड़ी ओदीच्य गुर्जर देश में रहे वे छोटे संवा कहाये। और जो मारवाड़ अन्तरवेद मध्यदेश मालवा में रहे वे वडसंवा कहाये। राजा की दी हुई पदवीयों का नाम अवंटक कहाता है। इनमें मुख्य राजा के अधिकारी ठाकुर कहाते हैं। राजकर्मचारी महता कहाये है। पंचकुल में मुख्यों को पंचोली चतुर योधा को भट कहते हैं। राजगुरू को रावल शुद्ध आजीविका वाले को शुक्ल कहते हैं। पुराण कथा वाँचने वाले को व्यास कहते हैं। शेष नाम दुवे आदि कहते हैं।

अब टोलक ओदीच्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति कहते हैं।

ओदीच्यप्रकाश में मुनि और सुमेधा सम्वाद में कहा है, कि टोलक ब्राह्मणों की उत्पत्ति किस प्रकार है। इसपर सुमेधा ने मुनियों से कहा कि कुछ मुनि पुत्र जो अपनी टोली बाँधे प्रतिग्रह के भय से अलग बैठे थे, शिवजी की आज्ञा से मूल राजा ने उनको बुलाकर बड़ा सम्मान किया। ब्रह्मतेज की बुद्धि की इच्छा कर ब्राह्मणों ने राजा से कहा कि लोक में जिस को खंवात कहते हैं, उसको स्तम्भ तीर्थ के सहित तथा ग्रामों सहित उसको दान करो। राजा ने तत्काल छः ब्राह्मणों को साठ घोड़े सहित स्थम्भ तीर्थ का दान किया, और खंवात की आठों दिशाओं में ब्राह्मणोली आदि ग्रामों का दान किया। इस प्रकार 16 ब्राह्मणों को दान किया। इनको जो ग्राम दिये उनमें 13 को पादर और 3 को उपादर कहते हैं। एक सरवरेज दूसरा उत्तर सण्डा और तीसरा अंकलाव कहाते हैं। उत्तरसण्डा, उपाध्याय कश्यप कहाते हैं। शेष दो अवतार भेद हैं, और छोटे कनीज ग्राम के व्यास जो अपना ग्राम त्यागकर अहमदाबाद के विपरा में आकर रहे, इस कारण उनका नाम वीपरा पोलस्ती पड़ा। उसमें के जो अहमदाबाद, आलिद्रा, वास्तना, नायका, मारवाड़, विरमग्राम, हाटकीरडु, धोलका के इत्यादि स्थानों में जाकर रहे, वे उनके नाम सहित पौलस्ती कहे जाते हैं। मातर के जान के चार भेद हैं। जानिभट, शुक्ल और आकचिया, ड़भाड़ ग्राम के उपाध्याय पद बदलकर भटपंड्या और शुक्ल इस प्रकार कहे जाते हैं। खेड़ा के पंड्या कुल का पद बदलकर व्यास हुआ और वे यजुर्वेद छोड़कर ऋगुवेदी हुए। खंवाते कृष्णात्रे पंड्रू की तीन शाखा हुई जो पांचा, दशा, वीसा कहाती हैं। ब्राह्मणों में मौलापंड्या

पूर्वी उत्तम हैं, परन्तु विद्याहीन और कुग्राम में वास के कारण हीनत्व को प्राप्त हो गये। टोलकिये ब्राह्मणों का यजुर्वेद मध्यान्दिनी शाखा है। यदि दूसरी शाखा वाले दीखें तो जानना चाहिए कि ये सिद्धिपुर से आये हैं।

"टोलकिया ओदीच्य ब्राह्मण का कुल चक्र"

गौ दि.	ग्राम नाम	अबटंक	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	कुलदेवी	गण	शर्म	नदी सागर
4	ई.ब्रह्मोली	पण्ड्या	कश्यप	3	यजु.	मध्या.	शुभ्रा	वक्रतुंड	सोम	महासागर
2	खम्बात	पण्ड्या	कृष्णात्रेय	3	यजु.	मध्या.	उमा	वक्रतुंड	मित्र	महासागर
अं 3	हरियाली	पण्ड्या	कश्यप	3	यजु.	मध्या.	उमा	वक्रतुंड	मित्र	नीलकंठ
5 ई	खेड़ा	पण्ड्या	कश्यप	3	यजु.	मध्या.	क्षेमप्रदा	विघ्नलि.	मित्र	नीलकंठ
2अं5	सिन्धुवा	पण्ड्या	वशिष्ठ	3	यजु.	मध्या.	गौरी	एकदंत्त	भव	महासागर
6	सिन्धुवा	पण्ड्या	वत्स	3	यजु.	मध्या.	उमा	एकदंत्त	मित्र	महासागर
8 पू.	कन्नोज	व्यास	पौलस्त्य	6	यजु.	मध्या.	गौरी	एकदत्त	भव	महेश्वरी
4 ई.	मातर	जान	शाण्डिल्य	6	यजु.	मध्या.	शुभ्रा	गजकर्ण	विष्णु	वामक नदी
5 उ.	डभाड़	उपाध्याय	भारद्वाज	3	यजु.	मध्या.	चामुन्डा	महोदर	आनन्द	खेडी नदी
4 ई.	भरकुन्ड	व्यास	कश्यप	3	यजु.	मध्या.	क्षेमकरी	विघ्नराज	संहार	दत्त
8 उ.	महुधा	व्यास	कश्यप	3	यजु.	मध्या.	अन्नपूर्ण	महोदर	मित्र	मनोहर नदी
3 ने.	श्रगुण	जोशी	सांकृत	3	यजु.	मध्या.	महालक्ष्मी	गजकर्ण	भव	नदी
5 ई.	दरेवो	जोशी	कश्यप	3	यजु.	मध्या.	शिव	डुदिराज	मित्र	खेड़ी नदी
9 ई.	कोचख	व्यास	वच्छस	3	ययु.	मध्या.	उमा	एकदत्त	भषटु	खेड़ी नदी

1 उत्तराखन्ड 2 सखरेज 4 अंकलाव यह तीन उपपार हैं।

यह गुर्जर सम्प्रदायन्तर्गत टोलकिया ब्राह्मणों की उत्पत्ति है।

इति

(गुर्जर सम्प्रदाय)

'नागर ब्राह्मणोत्पत्ति वर्णन'

स्कन्द पुराण के नागर खण्ड से यह प्रमाण लिया गया है।

शोनक के पूछने से सूत जी ने कहा कि जो आनर्त देश है, जिसे आज हम द्वारिका कहते हैं। यहाँ पर ही वन में शंकर भगवान का निवास है। वहाँ शूलपर्णि भगवान ने अपने स्वरूप विशेष लिंग का पात किया, और वह भूमि को भेद कर पाताल में प्रविष्ट हो गया।

इस कारण वहाँ अनेको उत्पात हुए, तब इन्द्र आदि देवताओं ने आकर कहा आप भगवन अपने चिन्हरूप तेज को ग्रहण करिये। तब भगवान बोले कि मेरे इस लिंग की जगत पूजा करें तो मैं इसे धारण कर सकता हूँ। ब्रह्मा जी बोले भगवान शंकर से कि भगवन सर्वप्रथम पूजा मैं ही करता हूँ, पीछे ये सारा संसार करेगा। यह कहकर ब्रह्मा जी ने पूजा की और पीछे वहाँ एक स्वर्ण का लिंग स्थापित किया। उसका हटकेश्वर नाम रखा और पाताल में उसका पूजन है चार पदार्थ देने वाला है। शंकर ने अपने ज्योतिर्लिंग को जिस मार्ग से उद्धार किया उसके नीचे जल की धार निकली वही जलधारा भूमि के ऊपर आकर गंगा कहाई, इस हटकेश्वर महादेव के दर्शन करने से व उस गंगा में स्नान करने से सहस्त्रों प्राणी स्वर्ग गमन करने लगे। तब इन्द्र ने उस तीर्थ को मृत्यिका से भर दिया। यह देख नागों ने यहा एक बिल बना लिया और पाताल से निकल कर भूमि पर भ्रमण करने लगे। उसी दिन से पृथ्वी पर वह स्थान नागबिल नाम से विख्यात हुआ। जब इन्द्र को वृत्तासुर के वध से ब्रह्महत्या लगी तब नागबिल के मार्ग से पाताल में जाकर गंगा स्नान कर भगवान शंकर का लिंग पूजन किया, और ब्रह्महत्या से मुक्ति पाई। फिर यह बात विचार कर कि जो इस मार्ग से स्नान करेंगे वे सभी पवित्र हो जायेगे। यह सोच उस नाग बिल को हिमालय के रक्तश्रृगु नामक पर्वत खण्ड से उस मार्ग को बन्द कर दिया। पीछे उस पर्वत पर अनेकों मन्दिर और तीर्थ हुए। उस देश का चमत्कार नामक एक राजा कुष्ठ रोग से पीड़ित था। एक मुनि के आदेश से राजा ने उस पर्वत पर स्थित शंख तीर्थ में स्नान किया, तत्काल ही राजा का रोग दूर हो गया। तब राजा प्रसन्न हो कर वहाँ के ब्राह्मणों से बोला कि आपकी कृपा प्रसाद से मेरा शरीर शुद्ध हो गया है, इस कारण आप मनवांछित फल की प्राप्ति करो। तब ब्राह्मणों ने कहा कि हम राजप्रतिग्रह स्वीकार नहीं करते हैं। तुम आनन्द से घर जाओ। राजा उदास हो अपने घर चला आया। वे ब्राह्मण अपने तपोबल से आकाश मार्ग से तीर्थो में जाया करते थे। एक समय वे 5 दिन के पुष्कर क्षेत्र को गये जब राजा ने यह बात जानी कि 72 ऋषियों में से इस समय यहाँ कोई नहीं है। तब उसने अपनी दमयन्ती रानी को अनेकों वस्त्र आभूषण ले जाकर दिये, और कहा इनको ऋषि पत्नियों को शीघ्र दे आओ आज विष्णु प्रबोधनी एकादशी है, और तुम अपनी इच्छा से भी चाहो जितने वस्त्र आभूषण ले जा सकती हो, रानी प्रसन्न होकर ऋषि पत्नियों के पास जाकर वस्त्र आभूषण उन्हें ग्रहण कराये, तो चार स्त्रियों ने ग्रहण किये। अन्य 68 तपस्विनियों ने ग्रहण नहीं किये। जिन चार स्त्रियों ने ग्रहण किये थे, उनके पति शुनः शेफ, शास्त्रेय, बोद्ध और दांत्त कहे गये और 68 पत्नियों के पति जो प्रतिग्रह स्वीकार नहीं किया वे ऋषि पुत्रों की आकाशगति नष्ट नहीं हुई। वे 68 ऋषि आकाश मार्ग से आये जिन 4 ऋषि पत्नियों ने प्रतिग्रह स्वीकार किया था। उनके चारों ऋषिपति आकाश मार्ग से नहीं आये। आकर चारों ऋषियों ने अपनी पत्नियों से वृतांत हांसिल किया, तथा चारों ऋषि क्रोधित होकर रानी को श्राप दिया, कि तू पत्थर की शिला हो जा, यह देख राजा उन चारों ऋषियों को प्रसन्न करने के निमित्त चला तत्काल वे चारों ऋषि राजा का आगमन विचारि अग्निहोत्र के सहित कुरुक्षेत्र चले गये। राजा ने उस शिलायुक्त रानी का मन्दिर बनवाकर वहाँ पूजा

का प्रबन्ध किया। पीछे कुछ दिनों में वे चारों ऋषि ब्राह्मण वहाँ पहूँचे और पत्नियों को वस्त्रालंकार से सुसज्जित देखा तथा अपनी अपनी पत्नियों से हाल पूछा तब उनसे कारण जानकर वे श्राप देने को तैयार हुए तब सभी की स्त्रियों ने कहा कि, यदि राजा को श्राप दोगे तो हम सभी अपने प्राणों का त्यागन कर देंगी। यह सुनि ब्राह्मणों ने हाथ में लिया जल पृथ्वी पर डाल दिया, पृथ्वी उस जल से दग्ध हो गई और ऊसर भूमि बन गई। ब्राह्मणों ने क्रोध त्यागन किया। राजा यह जानकर वहाँ गया, और ब्राह्मणों की बड़ी प्रार्थना की तब ब्राह्मण बोले कि तेरे कारण हम यहाँ रह गये। इस कारण तुम यहाँ एक नगर बनाकर उसका दान करो। राजा ने अविलम्ब एक कोस लम्बा चौड़ा एक नगर बनाकर कोट बाँधकर तीन मार्ग और चार भागों से युक्त करके 68 घरों में सब पदार्थ भरकर शास्त्रनुसार चमत्कारपुर का दान कर दिया और आप तपस्या करने बैठ गये। पीछे तपस्या से शंकर भगवान प्रसन्न हुए और अचलेश्वर नाम से वहाँ निवास करने का वचन दिया। चैत्र कृष्णा चतुर्दशी को उस पुर की प्रदक्षिणा से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। उन 68 ऋषियों ने यह प्रतिज्ञा की कि यदि जब हमारे घरों में विवाह आदि कार्य सम्पन्न होगा, तो पहले दमयन्ती का पूजन करेंगे। कन्या पहले दमयन्ती के दर्शन कर पीछे वेदी में जायेगी तो पति को अधिक प्यारी होगी। उस दिन से नागर ब्राह्मण और वैश्यों में दमयन्ती का पूजन होता है। इस प्रकार चमत्कारपूर में 68 गोत्री ब्राह्मण हुए और उनमें से चार गोत्रों वाले ब्राह्मण सर्पो के भय से चले गये और शेष 68 गोत्री ब्राह्मण स्थापन हुए। पूर्वोक्त 8 वंश उच्च कोटि के अष्टाकुल हुए। सर्पो के भय का कारण इस प्रकार लिखा है, कि आनर्त देश में एक प्रभंजन नाम का राजा था। उसके वृद्धावस्था में एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसको ब्राह्मणों ने गड़ान्तयोग में जन्म लेने के कारण सर्वनाशी बताया। तब वह राजा चमत्कारपुर में तपस्वियों के पास आकर अपने पुत्र जन्म का वृतान्त सुनाया, और प्रार्थना की कि कोई उपाय बतलाइये तब ऋषियों ने सुनकर कहा कि हम 16 ब्राह्मण प्रतिमास तेरे पुत्र के कल्याणार्थ शांति करेंगे राजा ने सामग्री भेज दी शांति का उपचार करने पर भी राजमहलों में अधि व्याधि बढ़ने लगी, तब ब्राह्मण ग्रहों को श्राप देने को तैयार हुए तब अग्निदेव ने प्रकट होकर कहा कि ग्रहों का दोष नहीं है। तुम 16 ब्राह्मणों में एक त्रिजात नामक ब्राह्मण बड़ा निकृष्ट है, उसके कारण से ग्रह आहुति नहीं लेते उसको त्याग कर शांति करोगे तो शांति होगी और उसके नीचत्व की परीक्षा यह है कि इस स्वेद के जल में तुम सव स्नान करो, इसमें जो त्रिजाति होगा उसके तत्काल विस्फोट रोग हो जायेगा। तब शुद्धि के निमित्त ब्राह्मणों ने उसमें स्नान किया तब उनमें से एक के विस्फोट रोग हो गया। वह तत्काल लज्जित होकर पुर के बाहर चला गया, और 15 ब्राह्मणों के जप हवन से राजकुल में शांति हुई। उधर वो त्रिजाति ब्राह्मण वन में जाकर विचारने लगा कि माता के व्यभिचार दोष से मैं इस दशा को पहुँचा पश्चात विचार करके तपस्या करने को बैठ गया। इधर चमत्कारपुर में एक निहुष वंश का कथ नाम का ब्राह्मण था। उसने नागपंचमी के दिन नागतीर्थ पर एक खेलते हुए नाग बालक को लकड़ी से मार डाला उसकी माता उस बालक को ले रोती हुई पाताल में शेषनाग के पास गई। तब शेष ने नागिन और नागों का

विलाप सुनकर कहा कि पृथ्वी पर हटकेश्वर क्षेत्र के समीप जाकर जिसने इस बालक को मारा है, नाग उसको नष्टकर के समस्त चमत्कारपुर को भष्म कर दें, नागों ने तत्काल अपने विष से समस्त चमत्कारपुर को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। मृत्यु से बचे ब्राह्मण नगर छोड़कर भागने लगे। यह दशा जातिभाईयों की देखकर वह त्रिजात रोने लगा। तब उसने शिवजी की स्तुति की और शिव ने प्रसन्न होकर उससे वर मांगने को कहा तब उसने कहा भगवन हमारा पुर नागों ने घेर रखा है। इस कारण वहाँ के सब नाग क्षय हो जायें और ब्राह्मण फिर निवास करे, यह वर दीजिये शंकर जी ने कहा कि सब नागों को मारना तो ठीक नहीं है। पर मैं एक मन्त्र देता हूँ जिसके शव्द सुनने मात्र से नाग विषरहित हो जायेंगे। तुम ब्राह्मणों के साथ जाकर यह शब्द उच्चारण करो जो नाग इस मन्त्र को सुनकर पाताल में प्रवेश नहीं करेंगे वे सब विष रहित हो जायेगे।

(मन्त्र सर्पो को भगाने को तथा विषरहित करने को)

न गरं न गरं चैतच्छुत्वा ये पन्नगाधमाः ।
तत्र स्थास्यंति ते वध्या भविष्यंति यथा सुतः ॥

अर्थ - न गरं विष नहीं है, ऐसा सुनकर जो नीच सर्प वहाँ रहेंगे वे अवश्य वध को प्राप्त होंगे यह सुन त्रिजात ने अन्य ब्राह्मणों के साथ न गरं न गरं ऐसा कहते उस स्थान में प्रवेश किया, और उस मन्त्र के श्रवण मात्र से सब सर्प पाताल में चले गये उस दिन से चमत्कारपुर का नाम वृद्ध नगर या वड़ नगर पड़ा और त्रिजात को मुख्य नायक मानकर वे सब ब्राह्मण वहाँ निवास करने लगे। उपमन्यु, कौच और कौशोर्य गोत्र के ब्राह्मण सर्पो से नष्ट हुए, शुनकादि गोत्र के उनके पितर थे। और त्रिजात ब्राह्मण के साथ जितने गोत्र के ब्राह्मण आये उनका वृतान्त चक्र में लिखा है।

'त्रिजात ब्राह्मण और साथ में आये ब्राह्मण वंश के गोत्र'

सं.	गोत्र	पुरुष सं	सं.	गोत्र	पुरुष सं
1.	कौशिक	26	2.	काश्यप	87
3.	लक्ष्मण	21	4.	भारद्वाज	3
5.	कौडिन्य	14	6.	नैध्रुव	55
7.	पैनित्त	70	8.	गोभिल	5
9.	पिकाश	5	10.	ओसनस	3
11.	रैम्य	20	12.	पाराशर	8
13.	गर्ग	22	14.	हारीत	23
15.	भार्गव	25	16.	गौतम	26

17.	आयुभायन	20	18.	माण्डव्य	23
19.	वहवृच	23	20.	सांकृत	10
21.	वशिष्ठ	10	22.	आंगिरस	5
23.	आत्रेय	10	24.	शुक्लात्रेय	10
25.	वात्स्य	5	26.	कौत्स	2
27.	शाण्डिल्य	5	28.	मौद्गल्य	20
29.	बोधायन	30	30.	कौशिक	30
31.	अथर्व	55	32.	मौनस	77
33.	याजुक	40	34.	च्यवन	37
35.	अगस्ति	32	36.	जैमिन	10
37.	लोगाक्ष	60	38.	रेणिस	72
39.	कापिल	77	40.	शार्करस	77
41.	दार्व्य	77	42.	शार्कव	100
43.	कात्यायन	3	44.	वैदक	3
45.	कृणात्रेय	5	46.	दत्तात्रेय	5
47.	नारायण	100	48.	शोनकेय	0
49.	जालवा	0	50.	गोपाल	0
51.	जमदग्नि	0	52.	शालिहोत्र	0
53.	कणिक	8	54.	भृगुरायण	0
55.	मात्रिक	0	56.	त्रौण्व	0
57.	उपमन्यु	0	58.	क्रौंच	0
59.	कैशोर्य	0	60.	भार्गव द्वतीय	5

नागराणा या नागर ब्राह्मण

उन कौशिकादि गोत्रों के 46 संस्कार विधाता ने कहे हैं। यह त्रिजात ब्राह्मण ब्रह्मा जी के वरदान से भर्तृयज्ञ नाम से विख्यात हुआ, नगर में रहने वाले नागर ब्राह्मण विख्यात हुए। इनके 10 भेद ओर 64 गोत्र हैं। त्रिजात ने 15 सौ ब्राह्मण लाकर बसाये पर जैसे पूर्व में 68 ब्राह्मणों का लाभ अधिकार था। इन 1500 का सामान्य और मध्यम रीति से हुआ। पीछे और बहुत से ब्राह्मण यहाँ आकर बसे इस स्थान में शंखतीर्थ, ब्रह्मदेव मन्दिर, बालमन्डल तीर्थ, मृगतीर्थ, विष्णुपद तीर्थ, गौकर्ण तीर्थ, नागतीर्थ, सिद्धेश्वर, महादेव, सप्तर्षि तीर्थ, अगस्त्य आश्रम, चित्राश्वर पीठ ऐसे अनेकों तीर्थ हैं।

एक समय दुर्वासा ऋषि उस नगर में आये। और देव मन्दिर बनाने के लिए वहाँ के ब्राह्मणों से भूमि

की याचना की तो ब्राह्मणों ने कुछ उत्तर नहीं दिया। तब क्रोध कर दुर्वासा ने श्राप दिया कि तुम सब मन्दोन्मत्त होकर पिता पुत्र तक छूट जायेंगे। ऐसा कहकर जब दुर्वासा ऋषि जाने लगे तो एक सुशील नाम के ब्राह्मण ने उठकर रोका और कहा कि आप यहाँ देवालय निर्माण करें, तब दुर्वासा ने वहाँ देव की स्थापना की इधर ब्राह्मणों ने यह बात जानकर कि सुशील ने दुर्वासा को भूमि दी है। तब उन ब्राह्मणों को क्रोधकर कहा कि आज से उस ब्राह्मण का नाम दु:शील होगा, और नगर से बाहर निवास होगा। तब उस ब्राह्मण ने पुर के बाहर निवास स्थान बनाया। उसके वंशधर तब से बाह्यनागर या बारड नगर हुए। अब यहाँ के तीर्थो के नाम वर्णन करता हूँ। धुन्धमारेश्वर, द्रपतीश्वर, चित्रशिला, जलशायी, विश्वामित्र कुन्ड, त्रिपुष्कर, सारस्वत, उमा महेश्वर, कलशेश्वर, रुद्रकोटेश्वर, भ्रूणगर्मर्न, उज्जयनीपीठ, चर्म, मुण्डा, सम्बादित्य, वटेश्वर महादेव, नारादित्य, सोमेश्वर, नलतीर्थ, शर्मिष्ठातीर्थ, परशुराम डोह, चमत्कारेश्वरी देवी, आनर्तेश्वर महादेव, स्कन्द शक्ति, यज्ञभूमि, विवाहदेवी, रुद्रशीर्ष शिव, बालखिल्य आश्रम, सुवर्णाश्रम, महालक्ष्मी देवी, आमवृद्धा देवी, श्रीमातु, पादुका, ब्रह्मतीर्थ, ब्रह्मकुण्ड, गोमुख, लोहयिष्टिका, कामप्रदा देवी, राजवापिका, श्री रामेश्वर, आनर्त तीर्थ, अम्बादेवी, रेवती देवी, भट्टिका तीर्थ, कात्यायनी देवी, क्षेमकरी देवी, शुक्ल तीर्थ, मुखार तीर्थ, कर्णोत्पल तीर्थ, वटेश्वर महादेव, याज्ञवल्क्याश्रम, पंजीपण्डा गौरी, वास्तुपाद, अजाग्रह, दीर्घिका, धर्मराजेश्वर, भिष्टानेश्वर, तीनगणपति, जवालेश्वर, अमरकुण्ड, रत्नादित्य, गततीर्थ इत्यादि अनेक तीर्थ हैं। इनमें स्नान करने से और दर्शन करने से अनेकों मनोकामना पूर्ण होती हैं। हटकेश्वर सबसे मुख्य तीर्थ है। इसमें गत तीर्थ निवासी ब्राह्मणों से ब्रह्मलोक से लौटे राजा सत्यसंग का सम्वाद हुआ, कि आप हमको पुर बनाकर दान करो, राजा ने कहा मैं तो सब त्याग कर चुका हूँ और तपस्या करता हूँ आप इन मेरे दिये हुए चमत्कारपुर में रहने वाले नागर ब्राह्मणों की सुश्रुसा में रहो तब नागर ब्राह्मण उनको बडनगर में ले गये, और उनकी सम्मति से सब काम करने लगे। और उनकी बड़ी वृद्धि हुई, नागर बनिये और चित्तोर नागर बनिये यही गर्त तीर्थ वासी कर्म त्यागी ब्राह्मण हैं। अब ब्रह्मनागर ब्राह्मणों का निरूपण करते हैं, जो भेद हुए हैं। एक पुष्कर नामक ब्राह्मण ने एक राजा का वध कर उसकी स्त्री और धन को ले शुद्ध के लिए हाटक क्षेत्र में माया ब्राह्मणों से प्रायश्चित कहा नागरों ने उसका तिरस्कार किया। परन्तु एक चण्डशर्मा ब्राह्मण ने कहा कि पुरुश्वरण सप्तमी का वृत करने से इस पाप का श्रय होगा। पुण्य तो इस वृत के आचरण से पुष्य तो शुद्ध हो गया और अपने धन का छुआ भाग चन्ड को दिया। इस पर नागरों ने पंचायत करके उसको जाति से च्युत कर दिया। और यह भी नियम किया कि जो कोई इसके साथ सम्बन्ध करेगा वह हमारे समूह से बाहर हो जायेगा। पुष्य ने सूर्य की तपस्या की और उसके कल्याण का वर माँगा। भगवान भाष्कर ने कहा ब्राह्मणों के वचन तो मिथ्या नहीं हो सकते हैं। परन्तु यह नागर ब्राह्मणों के भेद में बाह्यनागर नाम से पृथ्वी में विख्यात होगा। इसके पुत्रादिक जो होंगे उनका भी राज्य सभा में सम्मान होगा। यह कहकर सूर्यदेव अन्तर्ध्यान हो गये। तब पुष्य ने चन्ड से सब वृतान्त कहा और उसको साथ ले नगर से बाहर हुआ और सरस्वती नदी के दक्षिण तट पर महत् स्थान बनाकर दोनों रहने लगे तथा शंकर की उपासना करने लगे। वहाँ चन्ड ने नगरेश्वर महादेव की स्थापना की। पुष्य ने पुष्यादित्य सूर्य की स्थापना की चन्ड

शर्मा की शाकंभरी स्त्री ने सरस्वती के तट पर दुर्गा देवी की स्थापना की उस दिन से वहाँ शाकंभरी देवी प्रसिद्ध हुई, और ब्राह्मणों का वह स्थान पौत्रादि से विशेष वृद्धि को प्राप्त हुआ। एक समय विश्वामित्र के श्राप से सरस्वती नदी रुधिरवाहिनी हुई। इस कारण वहाँ राक्षसों को निवास विशेष रूप से होने लगा, और ब्राह्मणों को भी भक्षण करने लगे। तब बाह्यनागर वह स्थान छोड़कर दूर चले गये। तब कांदिशीक नागरों का भेद पृथक हुआ। समय पर सरस्वती की श्राप अवधि पूरी होने से स्वच्छ हुई एक समय ब्रह्मा जी ने हटकेश्वर में यज्ञ किया तब कैलाश से 68 मात्रिकायें आई। ब्रह्मा जी ने उन 68 देवियों को नागरों के 68 गोत्रों में स्थापन किया, और कहा कि विवाहादि मंगल कार्यो में जो तुम्हारी पूजा होगी उससे तुम तृप्त होंगी। पूजा न करने से अनिष्ट होगा। तब से वहाँ देवियों ने निवास किया। इनमें अष्टकुली ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं। अष्टकुली उत्तमता से यह कथा है, कि एक समय इन्द्र ने भगवान विष्णु से कहा कि श्राद्ध करने से जहाँ मुक्ति हो सो कहिए। विष्णु जी ने कहा कि हाटक क्षेत्र में कन्या संकान्ती होने पर चतुर्दशी या अमावस्या में अष्टकुली नागरों से श्राद्ध कराने से मनोकामना सिद्ध होगी। हाटक क्षेत्र में उत्पन्न हुए वे ब्राह्मण आनर्त राजा के दान के भय से हिमालय पर तपस्या करते हैं। उनसे श्राद्ध कराओ यह सुनकर इन्द्र हिमालय पर जाकर उन ब्राह्मणों से बोले कि तुम श्राद्ध कराने को हाटकेश्वर महादेव क्षेत्र में चलो, यदि न चलोगे तो तुमको श्राप दे दूँगा। तब वे कश्यप, कौडिन्य, ओक्षणस, शार्कव, द्विष्य, कपिष्ठ और उषिप ये आठ गोत्रवाले ब्राह्मण इन्द्र के साथ गयाकूप में आये, और इन्द्र को श्राद्ध कराया। उसमें देवीपितर जो प्रेत रूप हुए थे, उनकी मुक्ति हुई और इन्द्र बहुत प्रसन्न हुए। बालमण्डन तीर्थ के समीप इन्द्र ने शंकर की मूर्ति स्थापना की और आघाट नाम को एक उत्तम नगर वहाँ के निवासियों को दिया। पीछे अष्टकुली ब्राह्मणों को बुलाकर कहा कि यह शंकर की पूजा आप सभाँलो और बारह ग्राम आप को देता हूँ तब इन ब्राह्मणों ने इस देवधन को स्वीकार न किया, और कहा इससे हमारा कल्याण न होगा। उनमें से देवशर्मा ने हाथ जोड़कर कहा कि यह आपकी देवपूजा के काम को मैं चलाऊँगा पर आप मुझे पुत्र दीजिए। तब इन्द्र ने प्रसन्न होकर कहा तुम्हारा वंशवृद्धि करने वाला सत्यसंघ बड़ा विख्यात होगा, और मैंने जो चतुर्वकेश्वर महादेव की पूजा के निमित्व 12 ग्राम दिये हैं इनमें जो ब्राह्मण रहेंगे वे मांगलिक कृत्यों में इनका श्राद्ध करके नन्दीश्राद्ध करेंगे तो कोई विध्न नहीं होगा, अन्यथा विध्न होगा। शेष सप्तकुली ब्राह्मणों को इन्द्र ने कहा यद्यपि इनको लक्ष्मी की प्राप्ति होगी परन्तु निर्धन ही रहेंगे और निडर होकर भक्तों का त्याग करेंगे, यह कहकर इन्द्र अपने स्थान को गये। अब नागर ब्राह्मणों का भेद वर्णन करते हैं। प्रथम अब विहत्तर गोत्र के जो ब्राह्मण बणनगर में रहे वे वड़नगरे कहे जाते हैं। उनमें भिक्षुक और गृहस्थ यह दो भेद कहे जाते हैं। विलासनगर के ब्राह्मणों की उत्पत्ति इस प्रकार है, जो पृथ्वीराज राय से में लिखी है कि 936 सम्वत् में गुजरात में वीसलदेव नाम का राजा राज्य करता था। उसने अपने नाम से वीसल नामक एक नगर बसाया और पाप दूर करने के निमित्त वहाँ एक यज्ञ किया। उसमें बड़नगरे नामक ब्राह्मण आये थे। राजा ने उनसे दान लेने को कहा उन्होंने निषेध किया। पीछे राजा ने ताम्बूल में वीसल नगर उनको लिख कर दे दिया। जब उनको विदित हुआ तब अपने सम्बन्धियों को उसमें निवास कराया। यह नगर सिद्धिपुर से

दक्षिण में बारह कोस है। बड़नगर से पूर्व पांच कोस है वे यहाँ के निवासी उस दिन से विसल नगरे ब्राह्मण विख्यात हुए उनमें दोसंवा है, एक विसल नगर दूसरा अहमदावादी इनमें परस्पर कन्या का लेन-देन नहीं है। फिर विसलदेव ने ब्राह्मणों को साटोद, कृष्णोर और साचोरे नागर विख्यात हुए। यह पहले सब बड़नगरे थे, परन्तु अब पृथक हो गये हैं। पीछे कहे बाह्यनागरों से वारडनागर एक जाति प्रगट हुई है। उसका विवरण इस प्रकार है कि अन्य जाति के ब्राह्मण की कन्या के साथ व्याह करके पीछे जाति में दण्ड देकर जो रहते हैं। वे वारडनागर ब्राह्मण होते है। पीछे दुर्वासा ने जो पृथ्वी के निमित्त प्रश्न किया। उसका उत्तर सुशील ब्राह्मण ने दिया, इस कारण उसके वंश के ब्राह्मण प्रश्नोत्तरे नागर ब्राह्मण कहे जाते हैं। कोई कहे जाते हैं अहिच्छत्रा ग्राम का रहने वाला ब्राह्मण एक समय घर से बाहर यात्रा को गया मार्ग में रात्रि को ग्रामान्तर में टिका। रात में एक राक्षस आकर उसके घर के एक बालक को उठा ले गया। इस ब्राह्मण ने अपनी मन्त्र विद्या के सामर्थ्य से बालक को राक्षस से माँग लिया। इस पिशाच दुष्ट से हरण किया हुआ होंने के कारण उस वंश के पिसुनहर नागर ब्राह्मण हुए। वही पिसुनहरी प्रश्नोत्तरी नाम से हुए। ब्राह्यनागर में ही कांदिशीक भेद है, वे ही कदाचित प्रश्नोत्तरे हो सकते हैं। उनमें अष्टकुली बड़नगरे उत्तम कहे जाते हैं। क्षेत्र स्थापना के समय ब्राह्मणों के 84 गोत्र थे। उनमें 12 गोत्र खड़ायते ब्राह्मणों के निकल जाने से शेष 72 गोत्र रहे हैं। उनका वर्णन नागर खण्ड के 195 वें अध्याय में लिखा है। इनमें अब अपने वर्ग में ही भोजन सम्बन्ध होता है अन्य में नहीं तथा अपने वर्ग में ही कन्यादान करते हैं। बड़नगरे, विलासनगरे तो एक के घर में जलपान तक नहीं करते सूरत मेंतो जलपान कर भी लेते हैं। दक्षिण हैदराबाद, मैसूर में भोजन व्यवहार है। परन्तु यथार्थ में धर्म स्थिति जिसमें रहे वही बात उत्तम है।

'इति नागर भेद वर्णन'

(गुर्जर सम्प्रदाय)

"खड़ायत ब्राह्मणों की उत्पत्ती"

पद्मपुराण के कोटि अर्वुद महात्मय में लिखा है, कि जिस समय विष्णु भगवान के कर्णमेल से मधु, कैटभ उत्पन्न हुए उस समय भगवान ने कोट चक्र रूप धारण कर उनका वध किया। तब ब्रह्माजी ने स्वयं स्तुति करिके उस स्वरूप की मूर्ति स्थापन की स्वेत मूर्ति नंद सुनन्द से संयुक्त स्थापन की कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन यह रूप प्रकट हुआ उनके पूजन करने और गणेशजी की अर्चना करने से अनेक मनुष्य स्वर्ग में नमन् करने लगे भगवान विष्णु और गणेशजी ने निज अंश से रहने का वचन दिया।

श्लोक-तत्र कृता महापूजा कोटचक्रस्थ महात्मन।
खण्डपूर्वेद्विजेः सर्वे वैष्णव महात्ममिः॥

अर्थ-प्रथम खण्ड शब्द पूर्व वाले द्वजों अर्थात् खण्डायत ब्राह्मणों ने और-वैष्णवों ने भगवान की पूजा की एक समय एक देवशर्मा ब्राह्मण तीर्थ यात्रा करते-करते सरस्वती नदी के किनारे जाकर वहाँ दुर्गादेवी की पूजा की पीछे वहाँ से वारह योजन दूर कोटचक्र तीर्थ की महिमा सुनकर अपने में शक्ति ने देख देवी की प्रार्थना की तब भवानी ने महावीर जी के द्वारा उसको वहाँ पहुँचाया, और उनको वहाँ रहने को कहा तब से वहाँ उस देवशर्मा से प्रतिष्ठित होकर महावीरजी विराजे वहाँ कपिलेश्वर शंकरजी विराजमान हैं।

उसको वहां पहुँचाया और उनको वहां रहने को कहा। तब से वहाँ उस देव शर्मा से प्रतिष्ठित होकर महावीर जी विराजे, वहाँ कपालेश्वर शंकर विराजमान हैं। दूसरी कथा इस प्रकार है, कि विद्या विनय सम्पन्न एक धीर नामक ब्राह्मण था, वह एक समय बड़नगर में आया वहाँ उसने हाटकेश्वर भगवान के दर्शन किये। और स्तुति की कि मैं दरिद्रता और जाति के विरोध से बहुत दुःखी हूँ, आप कृपा करें तब भगवान शंकर ने कहा कि तुमको सुख होगा, और कहा कपाल मोचन के समय मैंने तुम अट्ठारह ब्राह्मणों का यज्ञ के निमित्त समागम किया। और यज्ञ के उपरान्त वर माँगने को कहा तब वे स्वयं निश्चय करके स्त्रियों से पूछने लगे और स्त्रियों से खटपट करने लगे उस कारण। ये खण्डायते कहाये॥

श्लोक - तसस्ते ब्राह्मणा सर्वे स्त्रियं पृष्ट्वा गृहे गताः।
ताभिः सार्द्धं खट्ट पट्टे सं प्रवर्ते पुनः पुनः॥

अर्थ - उन सबका खड़ायत नाम हुआ, उनके वंश भी खड़ायत कहाये। और अट्ठारह ब्राह्मणों को मैंने दो-दो सेवक वड़नगर से बुलाकर दिये, ये खड़ायत वैश्य कहाये। इनके कर्मपुराणोक्त मन्त्री से होते हैं। परन्तु विवाह चतुर्थ कर्म में चरूभक्षण के समय वाल नामक धान्य की दाल की चरू बनाकर ग्रह शांति पूजा हवन आदि होते हैं। कोई रामेश्वर की पूजा करते हैं पीछे एक नगर बनाकर ब्राह्मणों को दिया, सब प्रसन्न हुए पर तेंने मेरा वचन नहीं सुना इस कारण तू दरिद्री हुआ, अब तुम कोटपर्क तीर्थ में कपालेश्वर के समीप निवास करो। वहाँ तुम्हारे सब दुख दूर होंगे। शंकर जी यह कहकर अन्तर्ध्यान हो गये। ब्राह्मण उस क्षेत्र में जाकर कष्ट से मुक्त हुआ। खड़ायते ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार हैं। जिनका कृष्णात्रेय, कौशिक,

वशिष्ठ, भारद्वाज गार्ग, वत्स ये सात गोत्र हैं। और बाराही, खराशाना, चामुण्डा, बालगौरी, बन्धुदेवी, सौरभी और आत्मछन्दा ये सात कुल देवी हैं।

कपालेश्वर, नीलकण्ड चर्मक्षेत्र सूर्यक्षेत्र, श्रीगलतेश्वर, शकलेसतीर्थ, वाल्मीकि जी का आश्रम भी यहाँ है। खण्डपूर भी यहीं है।

यह खड़ायत ब्राह्मणों की उत्पत्ति है, मेरा पाठकों से निवदेन है, कि त्रुटि को शुद्ध करने की कृपा करें क्रोधाध्यान न हों। यह गुर्जर सम्प्रदाय के ब्राह्मण हैं।

'वायडा ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

वायु पुराण में मारुत की उत्पत्ति प्रसंग में लिखा है।

श्लोक - अत्रेरभून्महातेजा वाडवो मानसः सुतः।
तमुवाचात्रिस्तनयं प्रजाः सृज ममेच्छया॥

(ब्राह्मण उ० मार्तण्ड)

ब्रह्मा जी के पुत्र अत्रि, अत्रि के पुत्र वाडव नामक एक मानसी पुत्र हुए, ऋषि ने उसको प्रजा उत्पन्न करने की आज्ञा दी तब वाडव जी ने एक लक्ष वर्ष पर्यन्त तपस्या की तव ब्रह्मादिक देवताओं ने वरदान माँगने को कहा, तब सूर्य के समान प्रकाशमान वाडव ऋषि ने विष्णु आदि देवताओं से कहा, कि यदि आप प्रसन्न होकर वरदान देते हो तो यही दीजिए कि पृथ्वी में मानसी सृष्टी की वृद्धि हो। तब देवताओं ने कहा कि तुमको अयोनिसंभव दर्भ के संतान होंगे। जब वायुदेव शरीर बनकर उत्पन्न होंगे। तब उनकी सुश्रूसा के निमित्त तुम्हारे दर्भ से उत्पन्न पुत्र होंगे। चौबीस ब्राह्मण, अड़तालीस वैश्य वाशूद्री भार्या के सहित वर्तमान होंगे।

श्लोक - तेषां समुभ्दवाः सर्वे वणिजो वायडाभिधाः ।
भविष्यांति द्विजाः सर्वे तन्नामानो विचक्षणाः॥

अर्थ - फिर 48 वैश्यों से चौबीस सहस्त्र वायडा वैश्य होंगे, और चौबीस दर्भ के ब्राह्मणों से बारह द्वादस सहस्त्र ब्राह्मण भूमि में उत्पन्न होंगे। तब तक तुम यहाँ बड़ी वापी निर्माण कर निवास करो, चार कुण्ड यहाँ विश्वकर्मा जी निर्माण करेंगे।

श्लोक - वायडारव्यं पुरं श्रेष्ठ वणिग्वप्रविभूषितम् ।

अर्थ - वायडा नाम का एक नगर वैश्य और ब्राह्मणों से विभूषित होगा, और यह तीर्थ होगा। यह कहकर जब देवता चले गये तब वे ऋषि वहाँ निवास करने लगे। पीछे जब दिति के गर्भ से 49 मरुद्गण जन्मे तब उनके पोषण के निमित्व इन्द्र ने वाडव ऋषियों को बुलाकर कहा कि तुम दर्भ से चौबीस वायडे ब्राह्मण और उनके सेवक वायडे वैश्य, शूद्र भार्या युक्त दोगुने उत्पन्न करो।

श्लोक - वायडाख्यां भविष्यंति सर्वेषां देवता मरूत ।

यह सब वायडा नाम से विख्यात होंगे और सबके देवता मरूत होंगे। पहले चौबीस की मर्यादा स्थापन की है, इस कारण चौबीस सहस्त्र ब्राह्मण, अडतालीस सहस्त्र वैश्य होंगे, कुल देवता तुम्हारी स्थापन की हुई, वापी होंगे, ब्राह्मण यहाँ आकर छेलकर्म करेंगे, यह सुनकर वायडादित्य ने ब्राह्मण और वैश्यों को भार्या के सहित उत्पन्न किया। ब्रह्मा ने भाद्रपद शुक्लाष्टमी को उन बालकों को स्नान कराया, इस कारण वह स्त्रापिनाष्टी कहाई और सातवे महीने से चैत्र शुक्ल षष्टी को दोलारोहण कराया, इस कारण वह हिण्डोलिनीषष्टी कहाई है। उस दिन का उत्सव करने से वायुरोग की पीड़ा नहीं होती। वहाँ वायडादित्य के तपोबल से विश्वकर्मा ने वायडो के निमित्त बड़ा स्थान निर्माण किया। वहाँ बारह मातृका और बारह महादेव के निवास स्थान हैं। अम्बिका, माट्यला, अखिला, जाखिला, ल्यम्बुजा, ख्यम्बजा, आख्याता, नयला, सिद्धिमाता, आशापुरी, श्री रन्जना यह बारह मातृका और रामेश्वर, भीमेश्वर, त्रिरेश्वर, पवनेश्वर, बालकेश्वर, उत्तरेश्वर, बिल्वकेश्वर, सिद्धेश्वर, कर्दमेश्वर, नीलकण्ठेश्वर, हनुमदीश्वर यह बारह महादेव हैं। विवाह में सब चौहट्टे में जाकर स्नान करते हैं। क्षेत्रपाल की पूजा बलि करते हैं।

यह वायडा ब्राह्मणों की उत्पत्ति प्रमाणत: लिखी है।

(गुर्जर सम्प्रदाय)

'उनेवाल ब्राह्मण उत्पत्ति'

यह उन्नत क्षेत्र भी तीर्थ है, इसके उत्तर में ऋषितोय नदी के तट पर ब्राह्मणों ने ब्रह्मेश्वर नामक शिव की प्रतिष्ठा की है, जहाँ विद्या और तप से ऋषि बड़े उत्कृष्ट हुऐ।

श्लोक - उन्नापितं पुनस्तत्र यत्र लिंगं महोदये।
तदुन्नतमिति प्रोक्तं स्थानं स्थानवतां वरम् ॥

(ब्राह्मण उ० मार्तण्ड)

अर्थ - उसे उन्नत स्थान कहते हैं। जहाँ शंकर की लिंग रूप मूर्ति की पूजा साठ सहस्त्र वर्ष तपस्या करके ऋषियों ने बड़े उत्साह से की, इस कारण उस स्थान का नाम उन्नत हुआ। शंकर ने वहाँ ब्राह्मणों की बड़ी भक्ति देखकर विश्वकर्मा द्वारा एक नगर निर्माण कराया और वह पश्चिम समुद्र के समीप काठियावाड़ में देलवाड़ा ग्राम के पास जिसको उना कहते हैं। वही नगर जिसके चारों ओर नग्रहर देश है, जहाँ शंकर भगवान दिगम्बर रूप में विराजे हैं। वहाँ के ब्राह्मणों को शिवजी ने जब यह नगर दान किया, तब से उनमें निवास करने वाले उने वाले ब्राह्मण कहाये यहाँ शंकर का पूजन होता है यह भी तीर्थ है।

'इति'

(गुर्जर सम्प्रदाय)

18 'गिरिनारायण ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

प्रभासखण्ड के वस्त्रापथ क्षेत्र महातम्य में लिखा है - नारद जी बोले

श्लोक - महापुण्यतमेक्षेत्रे शुचौ वस्त्रापथे द्विजाः ।
गिरिनारायणास्ते वै निवसंति पितामह ॥
गिरिनारायणख्या वै कथमेषामभूत्किल ।
(ब्रा० उ० मार्तण्ड)

अर्थ - हे पितामह ! वस्त्रापथी जो गिरिनारे ब्राह्मणों का निवास है, उनकी उत्पत्ति कहिए उनका यह नाम कैसे हुआ ?

ब्रह्मा जी बोले एक समय भगवान विष्णु और शंकर चन्द्रकेतु राजा के ऊपर कृपा करने के निमित्त रेवताचल पर्वत पर स्थित हुए, और विचारने लगे कि ब्राह्मणों के बिना हमारी स्तुति कैसे हो सकती है। यह विचार कर अपने रूप ब्राह्मण का स्मरण किया, और आप गिरिनारायण दामोदर नाम धारण कर रेवताचल पर्वत पर आये और हिमालय की गुहा आदि में बैठने वाले ऋषियों के पास आकर कहा हे मुनीश्वरो ! शिव और विष्णु प्रत्यक्ष मूर्ति धारण कर रेवताचल पर बैठे हैं। वहाँ जाकर तुम उनका दर्शन करें। वहाँ जाकर ऋषियों ने गिरिनारायण राम से स्तुति की तब भगवान ने दर्शन दिया, और कहा कि तुम सबको यहाँ निवास करना उचित है, और मैंने अपना नाम गिरिनारायण धारण किया है। तुम्हारी -

श्लोक - गिरिनारायण इति ममाख्या कथिता मया ।
यथा त्वहं तथाऽप्येतेगिरिनारायणं कृताः॥

भी यहाँ रहने से गिरिनारायण संज्ञा होगी, और चन्द्रकेतु राजा यहाँ आकर तुमको ग्राम देगा और अश्वमेध यज्ञ यहाँ चन्द्रकेतु का पुत्र करेगा। चौसठ गोत्र के ब्राह्मणों को 64 ग्राम देगा और मैं बामन रूप में यहाँ एक बामन नगर बनाऊँगा। जो बावनवस्ती नाम से विख्यात होगा। यह स्थान जूनागढ़ से पश्चिम 4 कोस है। अब तुम यहाँ निवास करो समय समय पर मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा भगवान इस तरह ब्राह्मणों की स्थापना करके अन्तर्ध्यान हो गये। रविवार को रेवती नक्षत्र में रेवताचल पर्वत के ऊपर रेवती कुण्ड में स्नान करके राधादामोदर का दर्शन करना यह पंचस्कार दुर्लभ है।

'गिरिनारायण ब्राह्मणों के गोत्रादि'

सं.	अवअंक	ग्रामादि	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा
1.	जानि	जेतपरा, घोड़ादरा	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
2.	भट	सिन्धाजीया	भारद्वाज	3	ऋग्वेद	अश्वालायन

3.	जोशी	पाणिछन्दा	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
4.	जोशी	वामावडत्रामाधव	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
5.	जोशी	दिवेचा	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
6.	जोशी	सोमपुरा	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
7.	मेता	पसवलिना	कश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
8.	भट	कंसादिया	कश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
9.	जोशी	स्वस्थनिया	कश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
10.	परोत	लिवोडिया	कौच्छस	3	सामवेद	कौथुमी
11.	ठाकर	चाट	कौच्छस	3	ऋग्वेद	अश्वालयन
12.	तिवाड़ी	चाट	कौच्छस	3	सामवेद	कौथुमी
13.	ठाकर	वाधरा	कौच्छस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
14.	व्यास	दात्राणीय	कौत्सस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
15.	पंड्या	मगजूपुरा	कौत्सस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
16.	ओसीओखा	खेरियावा	कौत्सस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
17.	ठाकर	वामणसिया	मानस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
18.	ठाकर	मारड़िया	सदामस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
19.	ठाकर	भाड़ेरा	सदामस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
20.	ठाकर	खेरिया	सदामस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
21.	जोशी	खामलिया	सदामस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
22.	जोशीभट	शाकलिया	वशिष्ठ	1	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
23.	उपाध्याय	माधुपुरा	वशिष्ठ	1	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
24.	पाठक	चोरवाड़ा	कृष्णात्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
25.	पुरोहित	माधुपुरा	कृष्णात्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
26.	ठाकर	नगरौत	कृष्णात्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
27.	ठाकर	पठियार	कृष्णात्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
28	जोशी	पाजोधा	कृष्णात्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
29.	जोशी	पिरवोरिया	कृष्णात्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
30.	ठाकर	ठिलाकर	शाण्डिल्य	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
31.	ठाकर	चोपड़ा	शाण्डिल्य	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
32.	उपाध्याय	बालगमित्रा	शाण्डिल्य	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
33.	ठाकर	कंकासिया	वत्स	5	सामवेद	कौथुमी

34.	पंड्या	गिदन्डिया	वत्स	5	सामवेद	कौथुमी
35.	भट	कोठदिया	वत्स	5	सामवेद	कौथुमी
36.	आवडि	भदेश्वर	कौशिक	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
37.	जोशी	वगसदिया	कयसि	1	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
38.	जोशी	लौडिया	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
39.	जोशी	कांकडिया	कौरवस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
40.	होजा	खेरिया	कौरवस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
41.	उपाध्याय	कौशिकेया	कृष्णात्रि	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
42.	जानि	पीपलिया	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
43.	जोशी	मीठापरा	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
44.	ठाकर	अहिरिया	सदामस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
45.	ठाकर	मांडेरा	सदामस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
46.	जोशी	चोरवाडा	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
47.	जोशी	मोडविया	वत्स	5	सामवेद	कौथुमी
48.	पंड्या	माधोपुरा	सदामस	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
49.	जोशी	पठियारमाधोपुरा	कृष्णात्रेय	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
50.	नायक	माधुपुरा		2	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
51.	जोशी	वुधेचा	कश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
52.	जोशी	पारवरिया		3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
53.	जोशी	आदकिया		3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
54.	दुवे	पारवरिया		3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
55.	कलकिया	पारवरिया		3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
56.	पाठक	बालदरा	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
57.	व्यास	ध्योडिया	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
58.	जोशी	लाटोदरा	शाण्डिल्य	7	सामवेद	कौथुमी
59.	ठाकुर	पसेजिया	शाण्डिल्य	7	सामवेद	कौथुमी
60.	प्रोत	पालकिया	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
61.	प्रोत	पालकिया	काश्यप	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
62.	उपाव्या	टिडसारिया	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
63.	जोशी	मलाडिया	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
64.	पंड्या	खिलखिल	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी

65.	पंड्या	गीतिया	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
66.	पंड्या	वारडला	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
67.	पंड्या	नगिचरणी	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
68.	पंड्या	नगिचरणी	भारद्वाज	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी

(गुर्जर सम्प्रदाय)

'अन्य उत्पत्ति' (गुर्जर सम्प्रदाय)

गिरनार - ब्राह्मण -

यह कठियावाड़ में जैन सम्प्रदाय का एक तीर्थ है। यहाँ गुजरात देश में 64 प्रकार के गुजराती ब्राह्मणों का यहाँ एक भेद है। गिरनारगढ़ से निकास होंने के कारण ये गिरनार कहाये इनके दो भेद हैं। एक जूनागढ़ गिरनार दूसरा चोरवदा गिरनार अर्थात जो जूनागढ़ के आस पास हैं वे जूनागढ़ गिरनार कहाते हैं। जो चोरवदा नामक कस्बे के रहने वाले हैं, उन्हें चोरवदा गिरनार कहते हैं। चोरवद नगर, पटना सोमनाथ और मंगलौर के बीच में हैं। और अजक ग्राम से निकास होंने से तीसरा भेद अजक्य गिरनार कहे जाते हैं। अजक्य श्रेणी को एक विद्वान ने कनिष्ट श्रेंणी का लिखा है। इनमें बहुतों का शुक्ल यजुर्वेद तथा सामवेद है।

'कंड़ोल ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

स्कन्द पुराण में स्कन्द जी शिवजी से पूछते हैं।

श्लोक - काण्डूल स्थान पर्वस्य महात्म्यं वद संकर ।

हे शंकर ! आप कण्डूल स्थान पर्व का महात्म्य कहिये। सौराष्ट्र देशान्तर्गत पंचाल देश में वड़वाद गाँव है, उससे वायुकोण में बारह कोस पर कण्वाश्रम है। जिसको इस समय कण्ड़ोल कहते हैं, वर्तमान है। वहाँ कण्व ऋषि का निवास था। एक समय उस स्थान में मान्धाता राजा दर्शन को आये और ऋषि से कुछ कार्य सम्पादन के लिए कहा तब ऋषि ने कहा कि मैं यहाँ एक नगर स्थापन करना चाहता हूँ आप उसकी रक्षा करना राजा स्वीकार कर चले गये फिर ऋषि ने भगवान भाष्कर और महावीर जी का स्मरण किया, वे दोनों देव आये तब ऋषि ने नगर बसाने की इच्छा प्रकट की औरदोनों देवों से रक्षा चाही, देवों ने स्वीकार किया, और महावीर जी बोले मैं ब्रह्मा की आज्ञा से यहाँ आया हूँ। आप इस स्थल में 18 सहस्त्र ब्राह्मण और छत्तीस सहस्त्र वैश्य स्थापन करिये। चारो युगों में इस स्थान का नाम क्रम से कण्वालय, कलुषापह, क़ापिला और कलयुग में कण्डूल होगा। यहाँ ब्रह्म कुण्ड के स्नान से अनेक पाप दूर होंगे। तब महावीर जी तो कहकर चले गये, जाने के बाद कण्व ऋषि ने ब्राह्मणों के लाने के लिए गालव जी को आज्ञा दी, गालव ऋषि प्रभास और रेवताचल पर्वत पर होते हुए सरस्वती के किनारे रहने वाले ब्राह्मणों के पास आये। और इनकी स्तुति की तब प्रसन्न होकर ब्राह्मणों ने गालिव जी से वर माँगने को कहा तब गालिव जी ने कहा कि अगर आप

प्रसन्न हैं, तो सुनो हमारे गुरुदेव एक नगर बसाना चाहते हैं, इसलिए आप सब वहाँ चलिए। तब वचनबद्ध होंने के कारण ऋषियों ने वहाँ जाना स्वीकार किया। इतने में सौराष्ट्र देशवासी यज्ञोपवीतधारी बहुत से वैश्य भी वहाँ आ गये। उन्होंने गालिव जी को देखकर कहा कि हमको महावीर जी ने यहाँ आने की प्रेरणा की है। तुम्हारी इच्छा हो तो आप हमें आज्ञा करिए, सुनकर गालिव जी ने कहा कि पांचाल देश कण्व नाम के ऋषि है। पापापनोदन तीर्थ पर उनका स्थान है, वह एक नगर स्थापन करना चाहते हैं। आप छत्तीस-सहस्त्र वैश्य चलकर वहाँ निवास करें। वैश्यों ने गालिव जी की बात बड़े गौर से सुनी, और चलना व बसना स्वीकार किया। गालिव जी सभी को साथ लेकर आये कण्व ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, और गालिव जी से वर माँगने को कहा। तब गालिव जी ने कहा कि प्रभु अगर आप प्रसन्न हैं, तो इनमें से छः हजार मेरे नाम से स्थापन किये जायें। गुरु ने तथास्तु कहा विश्वकर्मा से नगर बनवाया वहाँ सब ब्राह्मणों को स्थापन किया, और छत्तीस सहस्त्र वैश्य इनके सहायक के रूप में स्थापित किये। वहाँ सूर्य देव ने साक्षी रूप में व कुलार्क रूप से रहना स्वीकार किया। सभी देवताओं ने अपने अपने नामों से वहाँ तीर्थ स्थापन किये, गालिव ऋषि के स्थापन किये वे गालिव वैश्य कानों में कुण्डल पहनते हैं, और कपोला वैश्य भी उन्हीं का नाम है।

श्लोक -

गालवस्थापिता ह्येते गालवाः सन्तु नामतः त एवापि कपोलाख्याः कपोलभ्दुत कुण्डलाः। प्राग्वाडाः स्युरभिख्याता गुरुदेवार्चनेरताः। येषां प्रग्वा भवेद्वाडो मदीयस्थापनात्मकः॥ ते प्राग्वाडा अमीज्ञेयाः सौराष्ट्राः राष्ट्रवर्धनाः॥

(ब्राह्मण उ० मार्तण्ड)

अर्थ - और जो प्राग्वाडा और वैश्य गुरुसेवा के निमित्त विचरते हैं, वे प्राग्वाडव नाम से विख्यात हैं। इनका वाड़ा पूर्व दिशा में है। इस कारण यह प्राग्वाडव कहाते हैं। दूसरा नाम सोरठ वैश्य हैं, यद्यपि इनके भी अनेक गोत्र, महालक्ष्मी, कलेश्वरी, भोगादेवी, वरा, घाघा यह इनकी कुलदेवी हैं। वैश्यों से कण्व ने कहा कि तुम निष्कपट भाव से ब्राह्मणों की सेवा करना और ब्राह्मणों से कहा कि तुम्हारे गौतमादि अट्ठारह गोत्र, प्रवर और वेद, शाखा इस प्रकार होंगी यह नीचे लिखे चक्र या सारणी से समझ लेना।

श्लोक - मदीयरस्थापनायोगात्सवे काण्वा भवन्ति हि।

मेरी स्थापना के योगसे अट्ठारह सहस्त्र ब्राह्मण सब काण्व अर्थात कंडोल ब्राह्मण होंगे और सदा सदाचारी होंगे, चामुण्डा, सामुद्रीदेवी, रजकायलमातर, नित्या, मण्डिता, सिद्धा, पिप्पलवासिनी यह आपकी कुलदेवी होगी, तुम जहाँ निवास करोगे कुल देवता पूजित होकर वही तुमको फल देंगे।

'इति गुर्जर सम्प्रदाय'

'कंडोल ब्राह्मणों की गोत्र, अवटंक सारणी'

सं.	अवटंक	गोत्र	वेद	शाखा
1.	पंड्या	गौतम	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
2.	0	सांकृत	0	0
3.	जोशी	गार्ग्य	सामवेद	कौथुमी
4.	भट	वत्स	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
5.	पंड्या	पाराशर	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
6.	जोशी	उपमन्यु	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
7.	व्यास	उपमन्य	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
8.	अध्यारू	उपमन्यु	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
9.	0	वन्दल	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
10.	0	वशिष्ठ	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
11.	0	कुतस	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
12.	0	पोल्कस	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
13.	0	काश्यप	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
14.	0	कौशिक	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
15.	0	भारद्वाज	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
16.	0	कपिष्ठल	अथर्ववेद	मध्यान्दिनी
17.	0	सारंगिरी	अथर्ववेद	मध्यान्दिनी
18.	0	हरीत	सामवेद	कौथुमी
19.	0	शाण्डिल्य	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी
20.	पंडचा	सनिक	सामदेव	कौथुमी
21.	अध्यारू	वत्स	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी

(गुर्जर सम्प्रदाय)

इति (गुर्जर सम्प्रदाय)

19 गढ़वाली ब्राह्मण

गढ़वाली ब्रा. पर्वती ब्राह्मणों के तीन भेद पाये जाते हैं। 1. सुरोला 2. गंगाही 3. खस। एक राजा कनकपाल जो चन्दनपुर में रहता था। उसके वंशधर सुरोला कहाते हैं। जहाँ उसका निवास था, उनकी सन्तान कुछ ऐसे विशेषकर विभाग में रहती थी, जो कि अब चाँदपुर के परगने में विख्यात है। जैसे पट्टी, तैलो, सिली, कपूरी, सिरगाँव व रामगढ़ उनमें से जो दूसरे उनके साथ थे, और जो उनके वंशधरों में थे, जैसा कि सुरोल के भाइयों का गोत्र था, वही उनके साथ थे, परन्तु जो नीचे के मुल्क में बसे थे, वे गंगाही या गंगाराही हैं। राजा जिन ब्राह्मणों के साथ का भोजन करता था। जो कि ब्राह्मण ऊपर के देश में उसके साथ रहते थे। उनके साथ और कोई ब्राह्मण भात आदि रसोई नहीं खाते थे, और जो ब्राह्मण नीचे के भाग में रहते थे उनको ऐसे भोजन बनाने का अवसर ही नहीं पड़ता था। इस प्रकार इन दोनों ब्राह्मणों के बीच में अन्तर पड़ गया। और सुरोला ब्राह्मणों की जाति पकड़ती गई जो देश के ऊपरी भाग में रहते थे। वे गंगाही ब्राह्मणों के हाथ के बनाये चावलों को खाने में असम्मत थे। यद्यपि प्रथम वह एक ही जाति थी, परन्तु पीछे से वह दो जाति बन गई। यद्यपि गंगाही ब्राह्मणों में और उनमें बहुत ही कम अन्तर है, तो भी इस जाति का प्रत्येक पुरुष शिष्टाचार सम्पन्न है। सुरोला ब्राह्मण गंगाही की कन्या से विवाह कर सकता है। परन्तु इस प्रकार से वह गंगाही की सन्तति कही जाती है चाहे वे जाति के दायभागी ही क्यों न हों। खस या खसिया ब्राह्मण शूद्र के हाथ काखाना खा लेते हैं। इनके भेद - धोवल, पटियाली, कनियानी, गरवाल, मुनवाल, पराजोई, उपरेती, चौवाल, कुठारी, घुसरी, दौर्वास, सनवाल, घुत्तीला, पानली, लोमडारी, चवनराज, फुलौरिया, ओलियाल, ननियाल, चौदसी, दलाकोटी, बुढ़ाकोटी, धुलारी, धुलाती, पंचोली, बनेरिया, गरमोला, बलौनिया, विरारिया, वनारी आदि पाये जाते हैं तथा इनका सम्बन्ध भी शूद्रो में पाया जाता है।

'सुरोला ब्राह्मणों की जाति का विवरण' (उप ब्राह्मण)

1. नोतियाल - इनके पुरुखा नौतीपट्टी, तल्लीचाँदपुर के ग्रामों में रहते हैं। इस कारण इनका नाम नौतियाल पड़ा। यह नीलकंठ, देवीदास गौड़ ब्राह्मणों की सन्तान हैं। जो गौड़ देश बंगाल प्रान्त में आकर वहाँ रहे थे। ऐसा विदित होता है कि सन् 700 ई. में यह चाँदपुर के राजा कनकपाल के साथ पूजा करने के निमित्त आये थे। यह पूजा करने में टिहरी और गढ़वाल में विख्यात हैं।

(उप ब्राह्मण)

2. दोवाल - यह इस कारण कहे जाते हैं, कि दोवपट्टी, तल्लीचाँदपुर के रहने वाले हैं। यह अपने को कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहते हैं। जो दासपाल और कर्मजीत दो ब्राह्मण कन्नौज से आये यह भी राजा कनकपाल के साथ थे। ऐसा ज्ञात होता है कि राजा के साथ किसी ऊँचे पद पर थे, और इनके पास बहुत धन था। इन्होंने बहुत अच्छे मन्दिर बनवायें। श्रीनगर व अन्य प्रान्त में उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हैं।

3. **खानीनाई** – यह नाम इस कारण हुआ, कि खनौरा ग्राम सिली चाँदपुर की पट्टी में है। यह अपने को गौड़ ब्राह्मणों के वंशधर कहते हैं। जो कि शारंगधर और महेश्वर के नाम से विख्यात हैं। यह राजा कनकपाल की गढवाल की चढ़ाई में विद्यमान थे। इनके वंशधरों में से ब्रिटिश गवर्नमेंट अपने यहाँ कानूनगो रखती थी।

4. **रतूड़ी** – यह नाम इस कारण पड़ा कि सिलीपट्टी चाँदपुर के समीप रतूडा गाँव है। वहाँ के यह निवासी हैं, और अपने आदि गौड़ की सन्तान बताते हैं। यह लोग भी पुजारी का कार्य करते हैं और गौड़ देश के कनकपाल राजा के समय में आना बताते हैं। यह अपना निवास 1200 वर्ष पूर्व का बताते हैं।

5. **गौरोला** – इनका निकास गौरोली गाँव पट्टी तली चाँदपुर है। यह भी अपने को आदि गौड़ की सन्तान बताते हैं। गयानन्द और विजयानन्द के वंशधर अपने को कहते हैं। यह भी राजा कनकपाल के साथ आये थे, और गढ़वाल के उच्च श्रेंणी के मुखियाओं में गिने जाते हैं।

6. **दीमरी-डीमरी** – इनका निकास दिमार ग्राम पट्टी तली चाँदपुर से है। यह अपने को द्रविण ब्राह्मण होंने की उत्पत्ति रखते हैं। इनका कर्तव्य बद्रीनाथ जी की सेवा पूजा करने का है। यह भी राजा कनकपाल के साथ आये, और राजा की कृपा से मन्दिर की सेवा पूजा पाई।

7. **थापलयाल** – इनका निकास थापली ग्राम पट्टी सिल्ली चाँदपुर से है, यह भी अपने को आदि गौड़ सन्तान कहते हैं। जयचन्द, भावचन्द और जयपाल यह अपने स्थान से निष्कासित किये गये, और यह गौड़ कहाये, यह 1100 वर्ष के निवासी कहे जाते हैं, और पुजारीपन का आधिपत्य करते हैं।

8. **मायथानी** – इनका निकास मायथाना ग्राम पट्टी तल्ली चाँदपुर से है। यह भी अपने को आदि गौड़ कहते हैं। इसके पुरुष रूपचन्द नामक राजा कनकपाल के समय से चाँदपुर गढ़ में बसे थे, और यह भी पूजा के काम में शुरू से संलग्न हैं।

9. **विजलावार** – एक वैजू नामक गौड़ ब्राह्मण 1100 वर्ष के लगभग हुआ, जो पर्वत पर आकर बसा उसकी सन्तान विजलवार कहाई।

10. **हर्तवाल कोटियाल** – यह भी गौड़ ब्राह्मणों के वंशधर सुदर्शन और विश्वेश्वर दो भाई 900 वर्ष के लगभग हुए यहाँ आकर वसे थे। हतवाल और कौटियाल कहाये। ये पहले तो हट और कोटि पट्टी दसौली में वसे और नौतियाल ब्राह्मणों से इस जाति के पुरुषों ने मिलाप करके, तथा राजा से मिलाप करके एक पर्वत की वड़ी चट्टान जिसको ब्रह्म कपाल कहते हैं, वहाँ की पूजा का अधिकार प्राप्त किया।

11. **सोती या सुती** – इस जाति के ब्राह्मण लगभग 1200 वर्ष हुए कि गुजरात से आकर गढ़वाल में रहे थे, और इनका कर्म भी पुजारियों की भाँति था, सिवाय इस जातियों की नीचे लिखी गुरेला ब्राह्मणों

की गढ़वाली जातियां हैं। दाई, उनदीले, मालती, लेम्वाल, लखेला, गाजखोला, गुजियालदी, गर्द, ढूढ़गयवीर, पाटी, मसेता, डूडी, मदूरी, भटोला, चमोली, गोरवाल, वर्षवाल, वगीसारी आदि यह सब जातियां भी आई, और चाँदपुरगढ़ में राजा कनकपाल के साथ इस जाति के मनुष्यों ने कुछ भलाई करके अपना नाम प्रसिद्ध किया।

'गंगारही ब्राह्मणों में विख्यात' उप ब्राह्मण

1. **बुधाना** – इस जाति का निकास बुधनी पट्टी चालस्यू से है, वहाँ के अधिपति कृष्णानन्द थे। यह भी अपने को आदि गौड़ कहते हैं, और 1200 वर्ष का आबाद हुआ बताते हैं। ऐसा विदित होता है कि उस समय यह लोग संस्कृत और ज्योतिष के बड़े प्रेमी थे। ये बहुत से विद्यार्थियों को विद्या पढ़ाते थे। जिसके कारण राजा पर इनकी बड़ी कृपा थी। इस जाति से विवेकी होने के कारण मालगुजारी नहीं ली जाती थी।

2. **डंगवाल** – इनका निकास डंगी गाँव पट्टी असवालस्यूँ से है, यह अपने को द्रविण वंश में मानते हैं, और 1200 वर्ष हुए दक्षिण से आया मानते हैं। यह भी पूजा का कार्य करते हैं, और यह अपने को धरनीधर हिर्मीप्रेमी की सन्तान मानते हैं। जो पहले गढ़वाल में आकर बसे थे।

3. **सकुलानी** – इनका निकास ग्राम सुकलाना जो टेहरी राज्य की असूल पट्टी में है। यह अपने को कान्यकुब्ज ब्राह्मण कहते है, और एक सहस्त्र वर्ष के लगभग आया हुआ मानते हैं। यह पुराने राजाओं के यहाँ मन्त्री का काम करते थे। यह अपने को केशरचन्द्र और रामेश्वर के वंशधर मानते हैं।

4. **उनियाल** – यह अपने को मैथिल ब्राह्मण कहते हैं। जो दरभंगा से आया हुआ बतलाते हैं। कोई 400 वर्ष हुए कि यह ऊनी गाँव पट्टी इहवालस्यूँ में आकर बसे थे। यह जंत्र मंत्र विद्या से अपनी आजीविका करते हैं, और गढ़वाल निवास अपने पूर्व पुरुषों को लक्ष्मण मानते हैं।

5. **घिलडयाल** – यह अपने को आदि गौड़ कहते हैं, यह अपने को लूथमदेव और गंगदेव की सन्तति कहते हैं। कोई 800 वर्ष हुए कि यह गढ़वाल में आकर बसे थे। इनका संस्कृति का बड़ा प्रेम था, और राजपुरुषों के साथ इनका घना सम्बन्ध था। घोरी गाँव में रहने के कारण यह घिलडयाल कहलाए।

6. **घोंदियाल** – इनका निकास घोंद गाँव से है इनके पूर्व पुरुष ईजू, वीजू और रूपचन्द इस गाँव में रहते थे। ये अपना सम्बन्ध गौड़ ब्राह्मणों से बतलाते हैं, और अपने पूर्व पुरुषों को राजपूताने का वासी बताते हैं। करीब 200 वर्ष से गढ़वाल में आया हुआ बताते हैं। राजा की कृपा से बहुत से गाँवों के अधिपति हो गये। ढ़ढ़यालस्यूँ के समान इस गाँव के यह लोग थोकदार हो गये और पूजा भी करते हैं।

7. **नौदयाल** – यह अपने को हरिहर और शीशधर दो भाई जो गौड़ ब्राह्मण थे, उनकी सन्तान बताते

हैं। पहले ये चिंरगा में रहे पीछे ये 300 वर्ष हुए नौदीगाँव पट्टी चपरकोट में आकर बसे और नौदयाल कहाये। यह खास राजपूतों के पुररोहित हैं।

8-**मामगाई** - यह एक गौड़ ब्राह्मण सक्ननी जो कि गौड़ ब्राह्मण उज्जैन का निवासी था। उसकी औलाद अपने को बताते हैं, और 300 वर्ष से गढ़वाल में निवास बताते हैं। उसके पुत्र शीतल, विधिजोत, वीरसू और डीपू यह मालती ग्राम में रहते थे। इनके चाचा, मामा के नाम से यह मामगाई कहाये ये भी खास राजपूतो के पुरोहित हैं।

9. **नैंथानी** - इनका निकास गाँव नैंथाना गाँव पट्टी मनयारस्यूँ से है। यह भी पूरनमल व इन्द्रपाल दो भाई कान्यकुब्ज भाईयों के वंशधर है, और 700 वर्ष से अपना आगमन कर वास बताते हैं। पूजादि कार्य करते हैं।

10. **जोयाल** - इनका निकास जीवाई ग्राम पट्टी घमरस्यूँ से है, यह अपने को दक्षिणी महाराष्ट्री की सन्तान बताते हैं। इनके पुरुखा वासुदेव और विजयानन्द विलहार दक्षिण से कोई 300 वर्ष हुए आकर बसे।

11. **चन्दोला** - यह जालिधरी ब्राह्मण पंजाब के वंशधर हैं। थोला, मोला और मूलराज ये तीन भाई कोई 400 वर्ष हुए चन्दौसी जिला मुरादाबाद से आये थे।

12. **वर्थवाल** - यह जाति गौड़ ब्राह्मणों की वंशधर है, चार भाई अबल, सबल, सूरजकमल और मुरारी कोई 400 वर्ष हुए गुजरात से आये थे। वर्थवाल ग्राम पट्टी ढांगू में हैं। उसी से ये वर्थवाल कहाये।

13. **कुकरेती** - यह गुरुरपट्टी के निवासी हैं। कोई 600 वर्ष हुए एक वीलवाल ब्राह्मण जो कि विलीहाट दक्षिण से आया था, वह कुकट्टा ग्राम में रहने के कारण कुकरेती कहाया, यह राजा के कृपापात्र रहे, और राजपूत और खसों का पुरोहित्य करते रहे।

14. **धासमुना** - यह भी अपने को गौड़ ब्राह्मण रुक्मिणी की सन्तति बताते हैं। जो कि 400 वर्ष हुए उज्जैन से गढ़वाल में आया था। उसके तीन पुत्र हरिदेव, वीरदेव और माधोदास घसमान गाँव पट्टी मोहरस्यूँ परगना चौकोट में निवास करने के कारण धासमुना कहाये। यह भी राजपूत और खसों के पुरोहित हुए।

15. **कैथोल** - यह गुजराती भाट की सन्तति हैं। आलू, तालू, रामवितल, रामदास और नारायण दास भाट गुजरात से करीब 400 वर्ष हुए आये थे, जो राजपूत और खसों के भाट कहाये।

16. **जोशी** - यह लोग कुमाँयू के रहने वाले और पूजा कर्म करने वाले हैं। यह 200 वर्ष हुए कुमाँयू से गढ़वाल पहुँचे यथार्थ में यह द्रविण ब्राह्मण हैं। जो कि दक्षिण से आये थे। और गढ़वाल में इस खानदान के नौरंगदेव, श्योरंगदेव आये थे। यह वास्तव में जोतिष विद्या के ज्ञाता थे।

17. **धानी** - यह भी गौड़ ब्राह्मण हैं। विष्णुदास, किशुनदास और हरिदास के वंशधर हैं। गढ़वाल में 200 वर्ष से बसे हैं। इनका भी कार्य पुजारीपन का हैं।

18. **सूयाल** - यह गुजराती भाटों के वंशधर हैं, और तीन भ्राता सुई, वाजल और वैजनारायण जो लगभग 400 वर्ष के गढ़वाल में पहुँचे हैं, यह भी पुरोहित्य या पूजा कार्य कर्तो हैं।

19. **बौढ़ाई** - यह जाति भी गौड़ नौटियाल ब्राह्मणों की वंशधर है वह गाँव वैठाल में कोई लगभग 600 वर्ष हुए आकर बसे थे, और इनका भी कार्य पुरोहित्य का है।

20. **दोवरयाल** - यह जाति कोई 600 वर्ष हुए पंजाब से आकर बसी थी और दोवरा गाँव में आकर रहे, यह जलधरी ब्राह्मण कहे जाते हैं। इनका कार्य पूजा करने का है।

21. **पानोली** - यह अपने को गौड़ ब्राह्मणों के सम्बन्ध का कहते हैं। यह गढ़वाल में कोई 800 वर्ष से आकर बसे हैं। यह भी पुरोहित्य कर्म करते हैं।

22. **सुन्दरयाल** - यह भी दक्षिणी भाट जाति है। यह गढ़वाल में लगभग 300 वर्ष हुए दक्षिण से आकर बसे हैं, और पूर्व पुरुष महीदेव सबसे पहले सुन्दरौली में आकर रहे थे, इस कारण सुन्दरयाल कहे गये।

23. **कलास** - यह गुजरात के भाट गढ़वाल में कोई 600 वर्ष हुए आकर बसे हैं।

24. **मिश्र** - यह महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं। कोई 100 वर्ष से आकर बसे थे, और कुमाँयू से आये गढ़वाल में बसे।

25. **किमोथी** - यह दक्षिणी ब्राह्मण दक्षिण से आकर कोई 1200 वर्ष हुए गढ़वाल में बसे थे।

26. **पूर्विया** - यह भी कनौजिए ब्राह्मण कन्नौज से आये हुए हैं, और कुमाँयू के गाँव पाटिया में कोई 1000 वर्ष हुए बसे तथा 100 वर्ष हुए गढ़वाल में गये, और वहाँ पूर्विये कहाते हैं।

27. **कौठारी** - यह कुमाँयू से कोई 200 वर्ष हुए गढ़वाल में गये हैं, यह सुकल वंश कहाता है।

28. **बदोला** - यह एक औजल गौड़ ब्राह्मण वंश है। यह उज्जैन से 400 वर्ष हुए आकर बसे हैं, और वदोली यही विचला उदयपुर में निवास के कारण बदोला कहाये।

29. **अन्थवाल** - यह पंजाब के जलंधरी ब्राह्मणों की सन्तान हैं, और 100 वर्ष से यहाँ इनका निवास है। इस जाति का यह नाम इस कारण हुआ कि यह गाँव अनैथ पट्टी कपोलस्यूँ में आकर प्रथम बसे थे।

30. **बोखण्डी** - यह महाराष्ट्र ब्राह्मण विलिहार दक्षिण से आये थे। 300 वर्ष हुए यह वोखण्डी गाँव खाती की पट्टी में आकर बसे थे। इस कारण बोखण्डी कहाये।

31. **जोगदीन** – यह कुमाँयू के पण्डा हैं। यह चार भाई प्रेमा, पदेना, मनीराम और देवदीन 200 वर्ष हुए गढ़वाल में आकर बसे हैं, और तोला सेला की पट्टी जोगदीन में आकर बसे थे। इस कारण जोगदीन कहाये।

32. **मालकोटी** – यह अपने को गौड़ ब्राह्मणों के वंशधरकहते हैं, और 300 वर्ष हुए गढ़चसन में बसे हैं। इनके पुरखा सदाल, नागपुर की पट्टी मालकोट में रहे इस कारण मालकोटी कहे जाते हैं।

33. **वालोदे** – एक चन्द्रसारवन नामक द्रविण ब्राह्मण 400 वर्ष हुए दक्षिण से आकर बसे और वालोदे कहाये।

34. **धनसाला** – कहते हैं कि भग्नदेव और सगनदेव गौड़ ब्राह्मण गुजरात से आये वे 300 वर्ष हुए यहाँ आकर बसे।

35. **पारहवल** – यह दोराहटा कुमाँयू से आकर 200 वर्ष हुए बसे हैं यह भी गौड़ सन्तान हैं पूजा पाठ करते हैं।

36. **देवरानी** – आलू और तालू गुजरात के दो भाट थे। कोई 400 वर्ष हुए गुजरात से आकर गढ़वाल में बसे हैं।

37. **नौनी** – कहा जाता है कि यह गोवर्धन की सन्तान हैं। जो कि एक साठी ब्राह्मण गुजरात से आकर नौनगाँव सितोसियून की पट्टी में आकर बसा था, इसको 400 वर्ष हुए हैं ये भी पूजा पाठ करते हैं।

38. **पोखरियाल** – यह जाति एक विलिहाट दक्षिण निवासी वीलवाल ब्राह्मण गुरूरासेन के वंशधर हैं। 400 वर्ष से यह इस देश में स्थित हैं, और पूजा पाठ करते हैं।

39. **पन्थारी** – कहा जाता है अन्तू और पन्तू दोनो भाई, जालंधर से आये हुए जालंधरी ब्राह्मण थे। यह चोकोट के पन्थार गाँव में 300 वर्ष हुए आकर बसे यह भी पूजा पाठ करते हैं।

40. **मुसरहा और वालोनी** – यह दोनों जाति के जलंधरी ब्राह्मण पंजाब से आकर कोई 400 वर्ष हुए इस देश में बसे हैं।

41. **वीजोल और भादोल** – यह दोनों जाति उज्जैन से आये द्रविण ब्राह्मण की हैं। पर यह विदित नहीं हुआ, कि निवास कहाँ आकर किया। यह गंगारी ब्राह्मणों की जाति के भेद हैं। इनके सिवाय और भी बहुत सी जातियाँ अपने को गंगारी ब्राह्मण कहती हैं। पर वास्तव में वे मालूम नहीं पड़ती हैं। परन्तु वे कहते हैं कि हम भी गाँवों के नाम से नामवाले हैं। कुछ दूसरे भी वंश है पर वे ब्राह्मण हैं जैसे – चौकरहा, नौगाई, धनसाला, सुन्दली, कठौलिया, परोरिया, भूरदोला, थमवान, खेतवाल, छिद्वाल, भदवाल, कोटिया, बूदरी, मैदोलिया, कुलासरी, वालोदी, जालोदरी, जखवाल, विलारिया, कोटवाला, सेलिया, भदाला,

वोतयाल, गौनयाल, विजौरा, थुलदी, कुरहा, खनतवाल, कुन्दारा और खारी, मून्दयापि, कन्दयाला, दुरारा, ह्यूदाल, फरसोला, नोला, कुनियाल, खनसरी, पानूनी, सिटवाल, डूँगरयाल, पुरवान, वीलवान, कनीछगला, भटवान, सेतरो, खगोरा, समारी, दर्दगाल, संगारी, बुसाई, वरसोतिया, श्रृंगवाल, चोकवाल, कन्धारी, धमकवाल, नामवाल, वंगथाली, सारंगवाल, विजराकोट, थालासी, खानाई, उपारती, भगवान, डकोटी, कुसूवाल, नगरसाली, तिमिरवाल, चितवान, चौदयाल आदि नाम वाले हैं

"इति" (उप ब्रह्मण)

यह गढ़वाली ब्राह्मणों का वर्णन हुआ और पर्वत निवासी हैं।

(गढ़वाली ब्राह्मण पहाड़ी क्षेत्र के)

'कूर्माचली ब्राह्मणों का वर्णन'

ब्राह्मण - जो देश में आकर यहाँ बसे हैं उनमें विद्या इत्यादि शुभ गुण होंने से यहाँ चन्द्रवंशी राजाओं के गुरू, पुरोहित, उपाध्याय, आचार्य, वैद्य, ज्योतिषी, मन्त्री, दरवारी हुए। उन्हीं की सन्तान कुमाँयू की उच्च ब्राह्मण जाति हुई। वे पंत, पांडे, जोशी, भट, उप्रेती, पाठक, मिश्र आदि कहलाते हैं। कुछ इनकी सन्तान आदि में ब्राह्मणों से मिल गई उनके आचार विचार उन्हीं केसमान हो गये। अधिकांश पंत, पांडे उच्च श्रेंणी में हैं। इस समय भी शिक्षित, सभ्यनेता यही लोग हैं। अंग्रेजी विद्या में भी निपुण हैं और उच्च राजपदों में हैं।

पंत - भारद्वाज गोत्री (भारद्वाज, आंगिऋषि, वारहस्पत्य तीन प्रवर शाखा मध्यान्दिनी) महाराष्ट्र जाति के पांड़ेजयदेव पंत दक्षिण कोंकड़ देश से 10 वीं शताब्दी में आये थे। जो काली जी के दर्शनार्थ गंगोली में आये थे। सामयक मणिकोटी राजा ने रिवाड़ी ग्राम दान में दिया था। इसी गाँव में बसाये, पीछे उप्रडा गाँव दिया, दस पीड़ियों के बाद सरम, श्रीनाथ, नाथू और भौदास ये चार घराने हुए। तीन घराने के माँस नहीं खाते थे, चौथे भौदास घराने के खाते हैं। सर्वत्र कुमाँयू में पंथ या पंत कहाते हैं। कुमाँयू के राजा के गुरु राजवैद्य, पोराणिक हुए अब नौकरी पेशा है।

पंत - पाराशर गोत्री जयदेव पंथ के साथ उनके बहनोई दिनकर राय, पाराशर गोत्री दक्षिण कोंकड़ देश से आये, मणकोटी राजा ने कोटचूड़ा ग्राम में जागीर दिया, गंगोली के चिटगल, कालीसिया, गाँवों में पाराशरी पंथ रहते हैं।

'पांडे'

भारद्वाज गोत्री पांडे - अवध से श्रीबल्लभ उपाध्याय, बद्रीनाथ यात्रा को आये, गणनाथ में अनुष्ठान किया। उनी विद्वता और यान्त्रिक सिद्धिया देखकर कुमाँयू के राजा ने सत्रह आली जमीन दी और विनयपूर्वक ठहरा लिया, गुरू पद भी दिया- पाटिया, पिलखा, भैंसोडी, कसून, त्यूनरा आदि के पांडे

कहलाते हैं। उक्त ग्रामों में रहते हैं। पांडे लोहना में रहने वाले कांडपाल या कन्याल लोहनी कहलाते हैं। लोहे का हवन करने से लोहहोत्री या लोहनी कहलाए।

सारस्वत गोत्री पांडे - सारस्वत ब्राह्मण पंजाबी बलराज पांडे, ज्वालामुखी, काँगड़ा पंजाब प्रान्त से यात्रार्थ आये। काली कुमाँयू दरबार में पहुँचने पर राजा ने रोक लिया धोली गाँव जागीर में दिया। पुरोहित भी बनाया इनके चार पुत्र हुए, बडे भाई की सन्तान धोली गाँव के पांडे कहाये, दूसरे भाई दाना गाँव के पांडे कहाये, तीसरे पल्यूँ के पांडे हैं, चौथे भाई महादेव की सन्तान नेपाल राज्य में है, पांडे, खोला, संग्रोली, दोताई जिला मेरठ में भी यही पांडे हैं वत्ससभार्गव गोत्री पांडे और मिश्र।

पंथीमिश्र - कोट कांगड़े से राजा संसारचन्द के समय में आये, राजा के वैद्य हुए इनकी सन्तति में अनूपशहर के मिश्र हैं। सीरा के और मझेड़ा के पांडे भी इसी कुल में हैं।

काश्यप गोत्री वरखोरा पांडे - महनी पां कन्नौज से आये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके सिंह और नृसिंह दो पुत्र हुए, पांडे गाँव सिलोटी में सिंह की सन्तान है। वेड़तीपान में नृसिंह की सन्तान है, राजा ने वरखोरा गाँव जागीर में दिया, इससे वरखोरा के पांडे कहाये।

'उपमन्यु गोत्री पांडे और वैद्य'

उपमन्यु गोत्री श्रीनिवास द्विवेदी प्रयाग से काली कुमाँयू में आये, पांडे कहाये, राजा के वैद्य हुए मिश्र पांडे कहाये, दिवतिया के मिश्र कुज्ज के वैद्य हैं।

छरवता में भी वही वैद्य हैं। शिमिलटिया पांडे राजा सोमचन्द के समय राजगुरू पांडे कुमाँयू में अवध से आये, शिमिला, सालम, ढ़ोलीगाँव, अल्मोड़ा के चम्पानौला मुहल्लें में रहते हैं। कुमाँयू के सब लोग इनका बनाया हुआ भोजन खा सकते हैं। कहलाने वाले कुछ अन्य भी ब्राह्मण हैं। उनका पक्का परिचय ठीक तरह मेरी समझ में नहीं आया है। ठीक पता मालूम कर आगे के संस्करण में देखना, जब तक इन्तजार करिए। मैं पता मालूम कर अवश्य लिखूँगा।

'जोशी (ज्योतिषी का अपभ्रंश जोशी है)'

गर्ग गोत्री सुधानिधि चौबे अवध देश के उन्नाव जिले में दधिवा खेडा के रहने वाले राजा सोमचन्द के साथ दशमी शताब्दी में झूँसी से कुमाँयू आये, राज्य ज्योतिषी और राजमन्त्री चतुर्वेदी जी हुए। ज्योतिषी होने से जोशी कहलाए, सेलाखोला, झिजाड़, कलोन, कोतवाल ग्राम आदि के जोशी इसी कुल में हैं। यह घराना कुमाँयू का मुख्य राज मन्त्री रहा, दीवान जोशी कहलाते हैं। अनेक विद्वान राजनैतिक नेता इनमें हुए वर्तमान समय में भी अनेक उच्च राजपदों पर हैं। अंग्रेजी के अनेक ग्रेजुएट हैं, चौबे गर्ग गोत्री वंश में हैं।

यह कान्यकुब्ज चौबे हैं।

आंगिरस गोत्री जोशी – अवध से नाथूराम, विजयराम दो भाई कत्यूरी राजा के समय यात्रार्थ आये राजा ने दरबार का ज्योतिषी नियुक्त किया, रोडीगाँव जागीर दिया। माला, सर्प और गल्ली के जोशी इसी कुल में हैं। इनमें नामी ज्योतिषी हुए, अब भी अनेक अच्छे अच्छे ज्योतिर्विद इसी कुल में हैं। सन् 1626 ये गल्ली के जोशी दीवान कहलाए।

माला के जोशियों का तिथिपत्र प्रसिद्ध रहा, कौशिक गोत्री जोशी पंजाबी कृष्णानन्द जो कौशिक गोत्री डोढ़ी नेपाल राज्य से देवदर्शनार्थ आये गंगोली के मणिकोटी राजा ने भैरंग में पुष्करी ग्राम दिया। राज्य का ज्योतिषी बनाया, राजा राजबहादुरचन्द के समय में चन्द राजाओं के ज्योतिषी हुए, यह भैरंग के ज्योतिषी कहलाते हैं। दरबार के सिलोटी गाँव में भी रहते हैं। अच्छे अच्छे नामी ज्योतिषी इस कुल में हुए इनका पंचांग भी कुमाँयू का मुख्य है। यह ज्योतिषी कृष्णानन्द जी वंश देशी नदियां के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे।

उपमन्यु गोत्री जोशी – प्रयागराज के समीप जयराज मकाऊँ गाँव के रहने वाले श्री निवास द्विवेदी 14 वी शताब्दी में राजा थोहरचन्द के समय कुमाँयू में आये। राजा ने चौकी गाँव दिया, काशी से ज्योतिषगढ़ आये, वे जोशी कहलाये, चन्द्र राजाओं के मन्त्री हुए, यह कुल भी दीवान कहलाता है। इनमें अनेक विद्वान और उच्च कर्मचारी हुए। दन्या में रहने से दन्या के जोशी कहलाए। ललोटा, जोशीपंचारद दुवे, कान्यकुब्ज सुकुटम्ब बद्रीनाथ की यात्रा को आये। मणकोटि राजा से ज्योतिष की वृत्ति मिली, ललोटी, प्रभृती ग्राम जागीर मिली ललोटी जोशी कहलाए। ये ज्योतिष की वृत्ति करते हैं। अनेक नामी विद्वान ज्योतिर्विद इनमें हुए हैं।

भारद्वाज गोत्री जोशी – कन्नौज के निकट असनी गाँव के निवासी त्रिवेदी लंकराज शुक्ल यात्रार्थ इधर आये। कुमाँयू के राजा ने शिलाग्राम जागीर देकर रोक लिया, ज्योतिष के विद्वान थे। अल्मोड़ा और निसोत्त में रहे। चीनाखाणा के जोशी उच्च पदों पर हैं।

मकेड़ी खुर्द जोशी – जोशी टोला में रहते हैं, ज्योतिष वृत्ति और नौकरी वृत्ति करते हैं।

'त्रिपाठी'

गौतम गोत्री त्रिपाठी – दक्षिण गुजरात देश 'अमलावार' वडनगर के निवासी सामवेदी श्रीचन्द त्रिपाठी गौतम गोत्री चन्दराय के आरम्भ में बदिरिकाश्रम की यात्रा को आये कत्युरीराजा ने इनकी अनेक सिद्धियाँ देखकर रोक लिया। अल्मोड़ा की भूमि जागीर में दी, कुमाँयू के अनेक गाँवो में व अल्मोड़ा में यह त्रिपाठी रहते हैं। अनेक विद्वान, कर्मकाण्डी, कर्मचारी, वैदिक, पोराणिक, पंडित इनमें होते हैं।

'भट्ट'

विश्वामित्र गोत्री अच्युत भद्र दक्षिण तैलंगदेश के मणिकोटीर राजा के समय में कुमाँयू में यात्रार्थ आप इनको शास्त्राज्ञ देखकर राजा ने रोक लिया। यह विसाड, पल्यूँ, रेवती, ग्राम सेर में रहते हैं। अच्छे विद्वान इस कुल में होते रहे हैं। कुछ लोग डोटी नेपाल को गये। भट्ट तीन प्रकार के यहाँ बसे हैं। उनरोक्त वंश के अतिरिक्त दो प्रकार के भट्ट और भी हैं। इनके भिन्न भिन्न गोत्र हैं।

पंच द्रविण ब्राह्मण भट्ट – दक्षिण द्रविण देश में राजा भीष्मचन्द्र के समय कुमाँयू में आये, दरवार में हलवाई. नियुक्त किया। यह कुल हलवाई का पेशा करते हैं।

मध्य प्रदेश से आये भट्ट ब्राह्मण वागेश्वर तीर्थो के तटो में रहे, वे ग्रहण तथा शनि का दान लेने की वृत्ति करते हैं।

'उप्रेती'

दक्षिण द्रविण देश के महाराष्ट्र ब्राह्मण शिवप्रसाद मणिकोटी राजा के समय यात्रार्थ आये काली देवी के दर्शनार्थ गंगौली गये, राजा ने उप्रेडा ग्राम देकर विनयपूर्वक रोक लिया, राजा के मन्त्री हुए। चन्द्र और गौरखा राजाओं ने भी अनेक गाँव दिये, खेती, सूपाकोट, वाँक, विन्डा इत्यादि ग्रामों में रहते हैं। उपरेती या उप्रेती ब्राह्मण कहे जाते हैं।

'पाठक'

शाण्डिल्य गोत्री कान्यकुब्ज पाठक आस्पद निरोत्तम वेदपाठी अवध से शांडीपाली ग्राम के रहने वाले यात्रार्थ आये। राजा ने मणिकानली ग्राम दिया फिर पठक्यूडा ग्राम चन्द्र राजाओं ने दिया।

'पाटणी'

अवध से कान्यकुब्ज ब्राह्मण मिश्र आस्पद के कुमाँयू सोर में बसे राजा के समय आये, चन्द राजाओं ने पीछे पाटण ग्राम दिया, यह पाटणी कहे जाते हैं।

'अवस्थी'

पंजाबी ब्राह्मण कत्यूर राजा के समय अस्कोट में पंजाब से 700 वर्ष पूर्व आये वह राजदरबार में पुरोहित कहाये और अवस्थी की पदवी दी।

'झा'

त्रिर्हुत से नेपाल होते हुए अस्कोट में पहुँचे राजदरबार में वृत्ति मिली। ये भी 700 वर्ष पूर्व के हैं।

'उपाध्याय'

यह कान्यकुब्ज देश से आये, यह कर्मकाण्डी ब्राह्मण कहे गये ये भी 400 वर्ष पूर्व ही पहुचे हैं।

'कोठारी'

कोंकण देश सूर्यप्रसाद दीक्षित आये कुठारका गाँव राजा ने दिया कोठारी कहे गये।

'कर्नाटक'

कृष्णात्रे गोत्री वशिष्ठ कर्नाटक देश से आये कुमाँयू में रहे, उनके कुल में कर्नाटक हैं। विष्ट, मनटीनया, पनेरू दक्षिण से आये वडुवा शंकराचार्य स्वामी के साथ आये।

ब्राह्मणों की अनेक जातियाँ पेशे और ग्राम के नाम से प्रसिद्ध हैं। रानी का गुरू, गुरुरानी, मठरक्षक, मठपाल, दुर्गापाल, हरीबोला, बेल्वाल, हेडिया, सनवाल आदि पेशे के और ग्राम के नाम की संख्या सैकड़ों में हैं। अधिकांश कान्यकुब्ज, महाराष्ट्र, सारस्वत, मैथिल, गौड़ द्रविण यहाँ पाये जाते हैं। यहाँ की सज्ञा ब्राह्मणों को देते हैं।

कपिलाश्रमी तोलिया

कपिलाश्रमी तोलिया दुर्गपाल वमेटा इत्यादि ग्राम के नाम या पेशे से जातियाँ हुई हैं। कान्यकुब्ज के वंशज यह मठपाल, गरजोला सब ब्राह्मण हैं। गौड़ सनाड्य भी इनमें मिले हुए हैं। ठीक ठीक पता नहीं है, सत्ती, नैलिया, लगता, करीब तीन सौ से अधिक संज्ञा याचक ब्राह्मण यहाँ पर हैं, सुनाल, पलडिया मुख्य का हाल ऊपर लिख दिया है। विम्बाल, भसाल, दिम्वाल, नन्वाल, सनवाल टुमका, सुपाल खोलिया, गुनी दाणी आदि। मूल निवासी यहाँ के राजी, किरात, भिल्ल, हूण, शक, डोम आदि हैं। राजी वनमानुष की तरह हैं। मध्यकाल में राजपूत खासिया तीन सहस्त्रा वर्ष के रहने वाले राजपूत वंश से हैं। आदम पर्वती ब्राह्मणों में कराव होता है। यह हल भी जोतते हैं। खस ब्राह्मण, खस पुरोहित पीतल के आभूषण पहनते हैं। इससे पीतलिया ब्राह्मण कहते हैं।

20 'श्रीमाली ब्राह्मणों की उत्पत्ति वर्णन'

स्कन्द पुराण के कल्याण खण्ड में लिखा है। कि एक समय गौतम ऋषि ने हिमालय के समीप भृगुतुंग क्षेत्र में शिवजी की आराधना की शंकर ने वर माँगने को कहा तब गौतम जी बोले ऐसा स्थान बतायें जहाँ निर्भय होकर तपस्या करूँ तब शिवजी ने कहा कि सौगन्धिक पर्वत के ऊपर उत्तर अर्बुदारण्य सक वायव्य कौण को जाओ वहाँ त्र्यम्बक सरोवर है, उसी के पास आश्रम बनाओ यह जगत प्रसिद्ध तीर्थ होगा। तब गौतम जी ने वहाँ जाकर कठिन तपस्या की तब ब्रह्मादिक सब देवताओं ने आकर वर दिया कि आज से यह गौतम नाम से विख्यात होगा, और सभी देवता यहाँ निवास करेंगे। यह कहकर देवता चले गये। इसी आश्रम का नाम श्रीमाली क्षेत्र हुआ। उसका कारण यह सुना है कि भृगु ऋषि की अद्वैतरूपिणी श्री नाम की एक कन्या थी। नारद जी ने विष्णु भगवान के निमित्त उस कन्या को देने को कहा, भृगु सम्मत हो गये, तब भगवान विष्णु ने नारद के वचन से माघ शुक्ल एकादशी को उसका पाणिग्रहण किया। तब नारदजी बोले भगवन् अब इस वधू को त्रयम्बक सरोवर में स्नान कराया जाय तब यह अपने स्वरूप को पहिचानेगी, स्नान करते ही वह दिव्य गात्र अर्थात लक्ष्मी स्वरूप को प्राप्त हो गई। सब देवता विमानों में बैठ स्तुति करने लगे। तब लक्ष्मी ने देवताओं से कहा कि जैसा यहाँ का आकाश विमानों से सुशोभित है, वैसी यहाँ की पृथ्वी घरों से शोभित हो जाय। अनेक गोत्र के ऋषि मुनि यहाँ आवे मैं उनको यहाँ भूमि दान करूँगी। अपने अंश से मैं यहाँ निवास करूँगी, देवताओं ने तथास्तु कहा। विश्वकर्मा ने वहाँ सुन्दर नगर बनाया तब ब्रह्मा जी बोले

श्लोक - श्रियमुद्दिश्य मालाभिरावृता भूरियं सरैः ।
ततः श्रीमालनाम्ना तु लोके ख्यातमिदं पुरम् ।

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

श्री के उद्देश्य से देवताओं की विभागमाला से यह पृथ्वी व्याप्त हुई हैं, इस कारण श्रीमाल नाम से यह नगर विख्यात होगा। इसी अवसर में विष्णु जी के दूत अनेक ऋषि मुनियों को बुलाकर लाए। कौशिकी, गंगातटवासी, गयाशीर्ष, कालिंजर, महेन्द्राचल, मलिचायल, शूपार्क, गौकर्ण, गोदावरी, प्रभास, उज्जयंत, गोमती, नन्दिवर्द्धन, सौगन्धिक पर्वत, पुष्कर, वैडूर्य शिखर, च्यवनाश्रम, गंगाद्वार, गंगा यमुना के समीपवर्ती देशों से प्रयाग, कुरुक्षेत्र, जामदग्न्यपर्वत, हेमकूट, सरयू, सिंध, समीपी अनेक तीर्थो से 45000 सहस्त्र ब्राह्मण आये। सभी को बड़े सत्कार के साथ घरों में सब सामग्री रखकर लक्षदान करने लगी, और सबसे पहले गौतम की पूजा करने लगी। इसका सिन्ध देश वासी ब्राह्मणों ने विरोध किया, तब आंगिरस ब्राह्मणों ने कहा तुम महातपस्वी गौतम का विरोध करते हो, इस कारण तुमसे वेद पृथक हो जायेगा। वे यह सुनकर चले गये। वे सिन्धुपुष्करणों कहाते हैं। तब लक्ष्मी जी ने कहा कि यह पृथ्वी ब्राह्मणों को दान में देती हूँ और साथ में चार लाख गायें भी दी। वरुण देवताओं ने उस समय लक्ष्मी के वक्षस्थल में उस समय 1008 स्वर्ण

के कमलों की माला पहनाई। उसके पत्रों में स्त्री पुरुषों के प्रतिबिम्ब दीखने लगे, और वह प्रतिबिम्ब के स्त्री पुरुष भगवती की इच्छा से कमलों से बाहर निकल आये, श्री जी से कहने लगे कि हमारा नाम और कर्म क्या है। भगवती बोली हे प्रतिबिम्बोत्पन्न ब्राह्मणों तुम नित्य सामगान किया करो, और इस श्रीमाल क्षेत्र में कलाद नाम वाले होगे, और ब्राह्मणों की स्त्रीयों के आभूषण बनाना तुम्हारा काम होगा।

श्लोक - श्रीमाले च ततो यूयं कलादा वै भविष्यथ।
भूषणानि द्विजेन्द्राणां पत्नीभ्यो रत्नवन्ति यत्।
कर्तव्यानि मनोज्ञानि संसेव्याश्च द्विजोत्तमाः ॥

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

इस प्रकार ये प्रतिविम्व से उत्पन्न 8064 कलाद त्रांगड ब्राह्मण हुए। उनमें से वैश्यधर्म बसोनी हुए, यह पटनी, सूरती, अहमदावादी, खम्भाती, ऐसे अनेक भेद वाले हुए यह जिन ब्राह्मणों के पास रहे उन्हीं के नाम से कलादत्रांगड ब्राह्मणों का गोत्र चला, इस प्रकारयह त्रांगड ब्राह्मण भी अध्ययन करते और भूषण बनाते रहे फिर ब्राह्मणों के धनादि रक्षा के लिए विष्णु ने अपनी जन से गूलर, दण्डधारी, दो वैश्य उत्पन्न किये, और उनको ब्राह्मणों की सेवा में लगाया। गौपालन व्यापार कर्म हुआ और नब्बे हजार वैश्यों ने वहाँ निवास किया, और उनके स्वामी ब्राह्मणों के गोत्रों से उन वैश्यों के गोत्र हुए। उस नगर के पूर्ववासी प्रग्वाट, पोरवाल, कहाये दक्षिण के पटोलिया पश्चिम के श्रीमाली और उत्तर के उर्वला कहाये।

श्लोक - प्राग्वाट् दिशि पूर्वस्यां दक्षिणास्यां धनोत्कटाः।
तथा श्रीमालिनो याम्यामुतरस्यामथो विशः ॥

अर्थ - फिर उनके पुत्र पौत्रादि से वह वंश वृद्धि को प्राप्त हुआ। फिर भगवान ने उन ब्राह्मणों को वस्त्रादि प्रदान करने की इच्छा से वैश्यों को उनकी सेवा में नियुक्त किया। उन्हीं ब्राह्मणों के गोत्र उनके गोत्र हुए, और वे पटवा गुजराती वैश्य कहाये। वे सब कोई ब्राह्मणव वैश्य भगवान अन्तर्ध्यान होने पर उस श्रीमाल क्षेत्र में निवास करने लगे। इस क्षेत्र में अनेक तीर्थ हैं। विवाह में कुलदीप की पूजा होती है। एक पात्र में शंख, लालसूत्र, मिश्री लाल, पीताम्बर, वादाम, वस्त्र, कौशेय, जल, दुग्धपात्र, कुमकुम पुष्प, इत्यादि पदार्थ लेके कन्या के घर आते हैं। शंख का जल कन्या पर छिड़ककर वह वस्त्रादि तिलक कर कन्या को देते हैं, और जब तक कलेवा करे, वधू को गुप्त स्थान में रखते हैं। इसी प्रकार कन्या की माता कुमकुम, म्होर, नारियल, लालसाड़ी, पान सुपारी, फूल, चावल, गुड़, कंकोड़ी, नेत्रांजन, मंशी आदि सामान लेकर वर के स्थान पर आती हैं। इस प्रकारपहला फेरा होता है, दूसरे फेरे में साधे की गठरी, तीसरे फेरे में घृतपात्र, चौथे फेरे में गुणपात्र, पाँचवें में मृतिका पात्र छटवें में बरी, पापड़ सातवें में सेव ले जाती हैं। इस प्रकर वर की माता को तिलक कर फिर घर को लौटती हैं। पीछे कन्या की माता अपने

घर आय, शुद्ध भूमि पर लाल सूत की बत्ती बनाय घी का दीपक जलाती है। इसकी पूजासे पितर प्रसन्न होते हैं। विवाह में शंख का शब्द और वेद पाठ होता है। वह अपने घर से कम्बल ओढ़ शस्त्र अपने हाथ में लिए हुए चोर के समान कन्या के घर जाकर गोधूम की मिट्टी की बनी हुई, गौरी को लेकर अपने घर आता है। फिर वर घोड़े चढ़िकर के वह गौरी और नारियल को लेकर विवाह को आता है। आधी रात के समय वर की माता और स्त्री घर में मंगलद्रव्यों से स्नान करके वह पहले दी हुई दो साड़ी पहन मंगलद्रव्य ले एक स्त्री के हाथ में जलपात्र, झारी और नारियल दूसरी के हाथ में दीपपात्र लेकर कन्या के घर प्रवेश करती हैं। कन्या की माता मध्यमार्ग से उनकी अगौनी कर ले जाती है, और वेदी में खड़ा कर तिलक करती हैं। वही सुपारी आदि परस्पर गुड़ खिलाती हैं और वेदी में जलपात्र में जल व दीपक में घृत डालती हैं। कन्या और वर की माता दीपक ले चार परिक्रमा करती हैं। फिर आर्छिगन करके विदा के समय कठिनता से हाथ छुड़ाकर घर को जाती हैं। फिर 108 दीपक रखना गोधूमपिष्ट के बनाते जलकुण्ड करते इत्यादि अनेक कुलाचार करते हैं। नीचे इनके कुलके प्रवर, गोत्रादि का वर्णन किया है।

वर्तमान समय में श्रीमाली ब्राह्मणों के चौदह गोत्र हैं। परन्तु मूल ग्रन्थ में अट्ठारह हैं। 1. कश्यप गोत्र और तीन प्रवर, कश्यप, वत्सश्नैध्रुव, कुलदेवी योगेश्वरी है, सो सब चक्र में आगे लिखते हैं। यह अट्ठारह गोत्र त्रांगड और श्रीमाली ब्राह्मणों के जानिये। श्रीमालियों के चौदह गोत्रों के नाम स्पष्ट हैं, शेष आंगिरस आदि गोत्र वालों का वंश नहीं मिल पाया है। लक्ष्मी के विवाह मे 45000 ब्राह्मण आये, वह सब श्रीमाली कहाये उनके साथ में श्रीमाली वैश्य, पोरवाल वैश्य, श्रीमाली सोनी, पटवे, गाँठे बौर गुर्जर आदि भी वहाँ रहने वाले श्रीमाली नाम से अभिव्यक्त हुए। विवाह आदि में इनसे कर लिया जाता है।

इनमें से 5000 ब्राह्मण भोजक हुए जो इस समय जैन धर्म पालन करते हैं। इनकी वृत्ति श्रावक लोगों की है। ओसवाल वैश्यों के उपाध्याय गोर कहाते हैं, यह वैश्यों के हाथ का भोजन करते हैं। 5000 श्रीमाली सुमारे गुजरातमें आये सो कच्छ, गुजरात और कठियावाड में रहते हैं। यह धोधारी, खम्वाती और सूरती, अहमदाबादी आदि भेदों से विख्यात हैं। शेष 35000 मारवाड, मेवाड, जोधपुर आदि स्थानों में आ रहे यह मारवाडी श्रीमाली कहे जाते हैं। इनमें एक भेद दसकोसी श्री माली कहाते हैं। एक श्रीमाली ब्राह्मण एक विधवा स्त्री को लेकर दूसरे गाँव में जा रहा पीछे सन्तान होंने पर अपनी योग्यता वाले ब्राह्मण से विवाह करते हैं। वे दस कोंसी श्रीमाली कहाते हैं। अहमदावाद जिले में पाये जाते हैं। श्रीमालियों में चौदह गोत्र और दो वेद हैं। उनमें सात गोत्र के यजुर्वेदी हैं।

इनके नाम गौतम, शाण्डिल्य, चन्द्रास, जलवान, मौदुलास व मौदगल्य कर्पिजलस और हरितस हैं।

सामवेदी भी – सात गोत्र के हैं, उनके नाम शौंनकस, भारद्वाज, पाराशर, कौशकश, वत्सस, उपमन्यु और कश्यप हैं। इनका विवाह सम्बन्ध स्ववर्ग में होता है।

यह कोकिल ऋषि के मत को मानते हैं। इनमें मरने के पीछे स्त्री अपने पिता के गोत्र में मिलती है वह 45 शहस्त्र से अधिक जो पांच सहस्त्र ब्राह्मण आये सो पुष्करण वा पोकरर्णी ब्राह्मण कहाये।

श्लोक - तेतु पुष्टिकराः प्रोक्ता उत्तमाधम भेदतः ।
ये गौतमायमाने तु वेद वाह्या द्विजैः कृताः ॥

अर्थ - उसमें भी भेद हैं जो सैधवारण्यवासी ब्राह्मण आये थे और गौतम के अपमान करने से ब्राह्मणों ने जो उनको वेद वाह्य किया तो वे ब्राह्मण सिन्ध प्रदेश में जाकर रहे सो उत्तम और देशवाले मध्यम कहाये। यह लोकिक बात है कमल के प्रतिविम्व से जो उत्पन्न हुए वे काशदित्रागड़ ब्राह्मण कहाये।

श्लोक - पद्मानां प्रतिविम्बेश्च ये चोत्पन्ना द्विजातयः ।
ते त्रांगड़ाः समाख्याता द्विजा ह्येव न संशय ॥

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - श्रीमाल क्षेत्र का नाम भिन्नमाल हुआ है। इसका कारण यह है कि कुण्डपा नामक एक श्रीमाली ब्राह्मण गुजरात देश में सौगधिक पर्वत से एक इच्छुमती नामक कन्या व्याह करके लाया और कहा कि मैं पाताल से कंकोल नामक नाम की कन्या को व्याह कर लाया हूँ। यह सुनकर सभी श्रीमालियों ने उसे धन्यवाद दिया, उसी समय एक सादिका नामक राक्षसी जो श्री मालियों की कन्याओं का हरण कर कंकोल नाम के स्थान में छोड़ आती थी। उनके लिए कुण्डपा के पुत्रों ने नागराज की प्रार्थना कर उन कन्याओं के विषय में कहा कि आपने हमारे कुल की कन्याओं की रक्षा की है। इस कारण विवाह आदि में श्रीमाली मात्र पूजन करेंगे ऐसा कहकर उन कन्याओं को नागराज से ले आये। तब से विवाह आदि के समय कंकोल नामक नागराज की श्रीमाली पूजा करते हैं। पीछे श्रीमाल नगर ऊजड़ पड़ा रहा। श्रीपुंज नामक आबू के राजा ने उसे बसाया। राजा भोज के समय में माघ कवि इसी वंश में हुआ है। प्रबोध चिन्तामणि में लिखा हैं, कि यह कवि खर्चीला बहुत था। राजा भोज ने उसे एक लाख रूपये दिये थे, तो भी उसकी मृत्यु धन के अभाव में हो गई तब राजा ने क्रोध कर श्रीमाल नगर निवासियों को धिक्कारा और उस नगर का नाम भिल्लमाल व भिड़माल रखा। जब अनहलवाला पाटल बसा तब भिल्लमाल टूटा और जो श्रीमाली पाटण में आकर बसे वह कुलदेवी महालक्ष्मी की मूर्ति साथ लेते आये, और उसकी पूजा होती है। यह श्रीमाली और त्रागड़ ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वणन कहा यह प्रमाण ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड का है। जो मैंने अपनी इस "ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण" पुस्तक में किया है।

(गुर्जर सम्प्रदाय)

'काची श्रीमाली'

यह कच्छ देश के श्रीमाली ब्राह्मणों का एक भेद है।

श्रीमाली ब्राह्मणों के गोत्र, अवटंक, शाखादि

सं.	अवटंक	उपनाम	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	कुलदेवी
1.	ओझा	टोकर	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	वरयक्षिणी
2.	त्रिवाड़ी	टोकर	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
3.	त्रिवाड़ी	वलासरा	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
4.	जोशी	चीपि	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
5.	त्रिवाड़ी	वाकुलिया	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
6.	व्यास	वाकुलिया	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
7.	ओझा	वाकुलिया	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
8.	व्यास	उवलिया	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
9.	दुवे	भटकई	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
10.	त्रिवाड़ी	जेरवलिया	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
11.	त्रिवाड़ी	सांगड़ा	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
12.	दुवे	भोपाल	सनकस	गृत्समद	सामवेद	कौथुमी	विजयक्षिणी
13.	ओझा	उमामण	भारद्वाज	आंगिरस	सामवेद	कौथुनी	बन्धुदेवी
14.	त्रिवाड़ी	भोपाल	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
15.	व्यास	भोपाल	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
16.	मोहित	डाभिया	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
17.	व्यास	चोखाचटणीरिणं	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
18.	त्रिवाड़ी	कोठिया	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
				वहिस्पत्य	यजुर्वेद		
19.	जोशी	भोपाल	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
20.	दुवे	नवलखा	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
21.	व्यास	नवलखा	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी

22.	ओझा	नवलखा	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
23.	दुवे	फाडिया	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
24.	दुवे	नरेचा	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
25.	पंड्या	नरेचा	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
26.	ओझा	नरेचा	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
27.	ओझा	गरिया	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
28.	वोहराव	त्रवाड़ी	भारद्वाज	गृत्समद	सामवेद	मध्यान्दिनी	बन्धुदेवी
29.	त्रवाड़ी	गाधेया	पाराशर	3–वशिष्ठ, शक्ति	सामवेद	कौथुमी	वरूण
30.	व्यास	गाधेया	पाराशर	3–वशिष्ठ, शक्ति	सामवेद	कौथुमी	वरूण
31.	त्रवाड़ी	कोटिया	पाराशर	3–वशिष्ठ, शक्ति	सामवेद	कौथुमी	वरूण
32.	त्रवाड़ी	त्रांडिसा	पाराशर	3–वशिष्ठ, शक्ति	सामवेद	कौथुमी	वरूण
33.	त्रवाड़ी	लाडआ	पाराशर	3–वशिष्ठ, शक्ति	सामवेद	कौथुमी	वरूण
34.	त्रवाड़ी	नरेचा	पाराशर	3–वशिष्ठ, शक्ति	सामवेद	कौथुमी	वरूण
35.	त्रिवाड़ी	उपालिया	भारद्वाज	वाहिसपत्य	सामवेद	कौथुमी	वरूण
36.	ओझा	शल्या	कौशिक	देवराज,उद्दालक	सामवेद	कौथुमी	वरूण
37.	त्रवाड़ी	काड़ोदरा	कौशिक	देवराज,उद्दालक	सामवेद	कौथुमी	वरूण
38.	अवस्थि	शल्या	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	त्रिम्बिका
39.	त्रवाड़ी	शल्या	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
40.	जोशी	सनरवलपुर	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
41.	जोशी	वड़वाड़िया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
42.	जोशी	आंसलिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
43.	जोशी	नरेचा	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
44.	ठाकुर	डिमिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
45.	ठाकुर	डिमिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
46.	ठाकुर	खिरखटिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
47.	दुवे	वोरसधा	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
48.	त्रिवाड़ी	कुदाली	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
49.	दुवे	पहाड़पुर	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
50.	दुवे	उपरससाकुमार	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
51.	दुवे	केशविकार	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी

52.	दुवे	झा	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
53.	दुवे	झगुड़आत्रा	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
54.	दुवे	सिरखडिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
55.	दुवे	मुडिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
56.	दुवे	मकड़िया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
57.	ठाकुर	उनामणा	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
58.	ठाकुर	वजुरिया	देवराज, उद्दालक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
59.	दुवे	टोटाणिया	देवराज, उद्दालक	3	सामवेद	कौथुमी	व्याधेश्वरी
60.	वोहरा	चमारिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
61.	पोहरा	पुंतार	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
62.	प्रोहित	पारकरा	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
63.	प्रोहित	हाल	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
64.	पंड्या	झोडिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
65.	प्रोहित	सनापरा	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
66.	पंड्या	जोडरिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
67.	पंड्या	भाद्रणिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
68.	त्रवाड़ी	सिरवुडिया	कौशिक	3	सामवेद	कौथुमी	देवी
69.	त्रवाड़ी	दशोत्तरा	वच्छस	5	सामवेद	कौथुमी	आत्मदा
70.	अग्निहोत्री	दशोत्तरा	वच्छस	5 और्व	सामवेद	कौथुमी	देवीनदी
71.	अवस्थी	दशोत्तरा	जमदग्नि	5 अग्नि	सामवेद	कौथुमी	वानानणि
72.	दुवे	कोडिया	जमदग्नि	5 अग्नि	सामवेद	कौथुमी	वानानणि
73.	दुवे	दशोत्तर	जमदग्नि	5 अग्नि	सामवेद	कौथुमी	वानानणि
74.	दुवे	पडोचा	जमदग्नि	5 अग्नि	सामवेद	कौथुमी	वानानणि
75.	दुवे	पडोचा	जमदग्नि	5 अग्नि	सामवेद	कौथुमी	वानानणि
76.	त्रवाड़ी	सामला	जमदग्नि	5 अग्नि	सामवेद	कौथुमी	वानानणि
77.	त्रवाड़ी	मेहर, उपमन्यु	जमदग्नि	3 अगस्त्य	सामवेद	कौथुमी	नदिवागिनी
78.	त्रवाड़ी	जाजरला	अगस्त्य	इम्बबाह	सामवेद	कौथुमी	नदी
79.	त्रवाड़ी	आयया	कश्यप	कश्यप, नैधुव	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी

80.	त्रवाड़ी	करचडा	कश्यप	कश्यप, नैध्रुव	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
81.	त्रिवाड़ी	द्रहवाडिया	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	नदिवागिनी
82.	त्रिवाड़ी	वाडिसुहालिया	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
83.	त्रिवाडी	पावडी	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
84.	जोशी	चंड	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
85.	जोशी	पंचपीडिया	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
86.	व्यास	पंचपीडिया	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
87.	वोहोरा	पुरेच्या	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
88.	भट	वोरवा	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
89.	अवस्थी	लोह	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
90.	वोहरा	वावडिया	कश्यप	3	सामवेद	कौथुमी	योगेश्वरी
91.	जोशी	गौतग्रीवा	गौतम	8	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	महालक्ष्मी
92.	दुवे	गौतग्रीवा	गौतम	8	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	महालक्ष्मी
93.	दुवे	लम्पाडवा	गौतम	8	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	महालक्ष्मी
94.	दुवे	साछलवाडिया	गौतम	8	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	महालक्ष्मी
95.	दुवे	पुछत्रोड	गौतम	8	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	महालक्ष्मी
96.	ठाकुर	लापसा	गौतम	8	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	महालक्ष्मी
97.	वोहरा	पीडिया	शाण्डिल्य, आत्रेय	3 आचनरेम्य	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	क्षेमकरी
98.	दुवे	पेसा	शाण्डिल्य, आत्रेय	3 आचनरेम्य	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	क्षेमकरी
99.	दुवे	काकिडिया	शाण्डिल्य, आत्रेय	वाआसल्य आचनरेम्य	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	क्षेमकरी
100.	दुवे	धोगलवाडिया	शाण्डिल्य आत्रेय	असित आचनरेम्य	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	क्षेमकरी
101.	वोहोरा	धोगलवाडिया	शाण्डिल्य अत्रेय,	असित आचनरेम्य	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	क्षेमकरी
102.	पन्डया	धोगलवाडिया	शाण्डिल्य आत्रेय,	असित आचनरेम्य	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	क्षेमकरी
103.	दुवे	असोल्या	शाण्डिल्य	असित	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	क्षेमकरी

			अत्रेय, आचनरेम्य				
104.	दुवे	चपानेरिया	आंगिरस	3	यजुर्वेद	मधन्दिनी	चामुण्डा
			भारमा, मौदगल्य				
105.	दुवे	चपानेरिया	आंगिरस	3	यजुर्वेद	मधन्दिनी	चामुण्डा
			भारमा, मौदगल्य				
106.	दुवे	गोधा	आंगिरस	3	यजुर्वेद	मधन्दिनी	चामुण्डा
			भारमा, मौदगल्य				
107.	दुवे	हाडिया	चान्द्रास	111	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	महालक्ष्मी
108.	दुवे	अश्ण	चान्द्रास	111	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
109.	दुवे	केलवाडिया	चान्द्रास	111	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
110.	दुवे	वातडिया	चान्द्रास	111	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
111.	दुवे	भाटिया	चान्द्रास	111	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
112.	दुवे	वोनईया	चान्द्रास	111	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
113.	दुवे	जोशी	वालड	111	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
114.	दुवे	कोचर	लवडास 12				
			नढ़मवार 2	दुर्गा	यजुर्वेद	वा.	चामुण्डा
115.	व्यास	वालोद्रस	उतथ्य,	दुर्गा	यजुर्वेद	वा.	चामुण्डा
			आंगिरस, वालोद्रस				
116.	दुवे	पाटक	लोढ़वान	दुर्गा	यजुर्वेद	वा.	चामुण्डा
117.	दुवे	पानोलिया	कर्पिजलस वशिष्ठ	भारद्वाज	यजुर्वेद	वा.	चामुण्डा
118.	दुवे	कोचर	इन्द्रप्रमद	12	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
119.	मेहता	रमणोवा	इन्द्रप्रमद	12	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
120.	दुवे	रमणोवा	इन्द्रप्रमद	12	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
121.	दुवे	जीवाणोचा	इन्द्रप्रमद	12	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
122.	दुवे	खाडिया	इन्द्रप्रमद	12	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
123.	दुवे	जमिया	इन्द्रप्रमद	12	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
124.	ओझा	धाधलिया	इन्द्रप्रमद	12	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
125.	दुवे	वालिया	इन्द्रप्रमद	12	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
126.	दुवे	रेटिया	इन्द्रप्रमद	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
127.	दुवे	उपाध्याय	इन्द्रप्रमद	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा

128.	दुवे	पाठक	इन्द्रप्रमद	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
129.	दुवे	वदरखाना	इन्द्रप्रमद	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
130.	जोशी	स्वयंदेव	इन्द्रप्रमद	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
131.	व्यास	स्वयंदेव	इन्द्रप्रमद	3	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
132.	ओझा	आचडिया	हारित	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
133.	दुवे	पाठक	हारित	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
134.	दुवे	चारूचा	हारित	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
135.	दुवे	आचडिया	हारित	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
136.	दुवे	चोकना	हारित	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
137.	दुवे	कुतेचा	हारित	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा
138.	दुवे	सिलेवा	हारित	5	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	चामुण्डा

139. होता – 7 वलासडा – सिरोरोहिया – सिरसुडिया मनमुडिया न्याचेष्टा रथभद्रया

(गुर्जर सम्प्रदाय)

श्रीमाली गुर्जर सम्प्रदाय

'इति'

लाम

'14 गोत्र अल्ल'

सं.	अवटंक	उपनाम	प्रवर	कुलदेवी
1.	त्रवाडी	टीकर	10	उमा
2.	ओझा	त्रपिय	13	उमा
3.	व्यास	माघे	5	वटयक्षिणी
4.	ओझा	शल्या	8	कमला
5.	त्रवाडी	दशोत्तर	6	बालगौरी
6.	त्रवाडी	महेर	1	नागिनी
7.	त्रवाडी	जाजरोला	12	योगेश्वरी
8.	दुवे	नपटया	6	अरिष्टा
9.	दुवे	नपट्या	4	महालक्ष्मी
10.	दुवे	कांकडिया	4	क्षेमकरी
11.	दुवे	कामेर	3	चामुण्डा
12.	दुवे	कलवाडिया	4	चामुण्डा
13.	दुवे	पंतोनिया	10	चामुण्डा
14.	ओझा	पंतोनिया	1	चामुण्डा

'श्रीमाली ब्राह्मणों की चौदह छकड़ियों के नाम'

सामवेद छकड़ी				यजुर्वेदीय छकड़ी		
1. भोपाल	1. लाहा	1. चामुण्डा	1. गोधा	1. भोपाल	1. उपरसप्ता	1. मटाकिया
2. रोकर	2. भाद्रणिया	2. चडक	2. कोचर	2. पहत्तर	2. गंगाठ	2. उनमसिया
3. शला	3. त्यघु	3. मनमुडिप	3. मनआत्र	2. खजुरिया	2. कोरका	2. सहीसरा
4. गाव्रेज	4. पावडात्रा	4. कटिया	4. पेय	4. टकसाली	4. कोटसुहा	4. वेणंगण
5. कर्णाद्र	5. लाडआ	5. कातेचा	5. करत्रोह	5. करचंडा	5. झझुवाडिया	5. मसकमुकिया
6. मेहेर	6. काश्यप	6. रूपेचा	6. हारि	6. खांडा	6. करयाणिाय	6. पहाणकुछ

सामवेद छकड़ी				यजुर्वेदीय छकड़ी		
1. दशोत्र	1. खाजलिया	1. मानवेचा	1. फटिया	1. खाकमीचा	1. छणगण	1. रंकासण
2. ऐयात्र	2. पडशल्या	2. मठधालेचा	2. राणिया	2. पूरना	2. दातिया	2. मलिया
3. जादरोला	3. चित्रोडा	3. कुत्तेचा	3. नारँचा	3. चारँना	3. धसंकरा	3. नरउद्य
4. डबलाया	4. कर्पिछलार	4. आजरामरि	4.लपाडमा	4. चडा	4. मीनीसात्र	4. बकरा
5. वाकलाया	5. वलवाटिया	5. माछिया	5. गौतमा	5. जोखना	5. वालुआ	5. उण
6. भाभट	6. उपरसा	6. फलपहुआ	6. लापसा	6. मुन्डा	6. चांचडचोर	6. नवलखा

श्रीमाली गुर्जर ब्राह्मणों की गोत्र प्रवरादि सारणी

सं.गोत्रा	प्रवर	शर्म	देवी	गणपति	यक्ष	शिव	भैरव
1. सनकस	सहोत्र, गोचर्मद, गृत्समद	नंद	वरुणर्चि	अन्नीनन	वत्स	वनकेश्वर	आनन्द
2. भारद्वाज	आंगिरस, वार्हस्पत्य भारद्वाज	शिव	वंधुयक्षिण	उदियादुधीय	रामेश्वर	नवलक्षेश्वर	ईशान
3. पाराशर	वशिष्ठ, शक्ति पाराशर	त्रति	वटयक्षिणी	नर्क	चित्रेश्वर	पारेश्वर	सिद्धिदास
4. कौशिक	आंगिरस, देवराज उद्दालक	भव	बालगौरी	स्वर्ग	कामेश्वर	त्रम्बाकेश्वर	काल
5. वत्सस	भृगु, च्यवन, औंर्व आप्लावान, जम	मित्र	नागिन	गोवत्सल	गनगजी	धारेश्वर	मंगलमूर्ति
6. उपमन्यु	भृगु, औंर्व,उपमन्यु	भूत	योगेश्वर	सिद्धिविनायक उपयी	भुवनेश्वर	वटुक	
7. काश्यप	वत्स, नैधुव, काश्यप	भूत	अरिष्टा	मृत्यु	लक्ष्मणेश्वर	काश्चपेश्वर	जटिल
8. गौतमस्	ओतथ्य, आंगिरस, गौतम	दास	महालक्ष्मी	साध्य	दमयन्तीश्वर	चनद्रेश्वर	ग्रामपाल
9. चान्द्रस	अत्रेय, गौतम, ओतथ्य	नाग	क्षेमकरी	दुढ़िराज	देव	प्रभूतेश्वर	रूद्रचन्द्र
10. शाण्डिल्य	आशौल, देवल, शाण्डिल्य	सोम	चामुण्डा	उदय	त्रिशूल	जडेश्वर	असितांग
11. लौडवान	आंगिरस, ओतथ्य, लोडवान	गुप्त	बराननना	कर्म	धनेश्वर	भूतेश्वर	त्राणदास

12.	मौदगल्य	आंगिरस, मांडव्य मोडलस	धीस	बरानन्ना आय		हर्यस	गणेश्वर	देवयतसाल
13.	कपिंजलस	वशिष्ठ, भारद्वाज इन्द्रप्रमद	दत्त	सुरभपिंग	अभय	दुर्धर	नागेश्वर	रक्तांग
14.	हरितस	हरितस 1	देवी	दत्तचन्डी	अजन	सूर्य	जोगेश्वर	वटपाल

(इति श्रीमाली ब्राह्मण उ.) गुर्जर सम्पद्राय

21 'बाल्मीकि गौमैत्रीयख्यालय ब्राह्मणोत्पत्ति'

(बाल्मीकि गोमित्र ब्राह्मण व ख्यालय ब्राह्मण वंश)

पद्मपुराण के पाताल खण्ड में लिखा है कि -

श्लोक - तत्रैकदा तु बाल्मीकि रामाल्लब्धनो महान् ।
श्री मद्रामसहायेन सर्वसंभार सम्भृतः ॥
सरस्वत्यग्निकोणे तु कृत्वां स्थानमनुत्तमम् ।
उत्तमं मण्डपं कृत्वा गौतमादीनमहामुनीनम् ॥

अर्थ – वाल्मीकि जी ने रधुनाथ जी से बहुत सा धन पाकर सरस्वती से अग्निकोंण में यज्ञ करना आरम्भ किया, और गौतमादि मुनियों का वरण किया। वह आश्रम छत्तीस कोस चौड़ा वामन कोस लम्वा था। बाल्मीकि जी ने यज्ञ करके गौतमादि ऋषियों से प्रार्थना की जिस प्रकार मेरे आश्रम की प्रतिष्ठा हो सो कार्य होंना चाहिए। तब ऋषियों ने कहा कि ऐसा ही होगा।

श्लोक - सर्वे ते शिष्य लक्षैकमुत्तमा वेद वित्तमाः।
तेषां विहित संख्यानां गोत्राणि विमलानि च॥
त्रियोदश सतानुच्चेदं सजातान महात्म नाम ।
पंचाश्च सहस्त्राणि गोरक्षणं नियोजिताः ॥
गोमित्रीयास्ते विज्ञेयाः सर्वदा विवुधोत्तमैः ।
अष्टौ च चत्वारिंशिच्च ब्राह्मणानांसहस्त्रशः ॥
ख्यग्रे प्रेषिता ह्येते ते वै ख्यालयाः स्मृताः ।

अर्थ - उन ऋषियों के पास उस समय एक लाख शिष्य थे, उनमें से उन्होंने पचास सहस्त्र को गोरक्षा में नियुक्त किया, वे सब गौमैत्री ब्राह्मण कहाये। उन सबकी निर्मल गोत्र संख्या 13000 थी। शेष दो सहस्त्र जो रहे वे बाल्मीकि नाम से विख्यात हुए।

बाल्मीकास्ते तु विज्ञेयां विख्याता भुवनत्रये ।
इन ब्राह्मणों का शुक्ल यजुर्वेद मध्यान्दिनी शाखा है।

कोकिलमुनि का मत – यह मानते हैं कि इनके सेवक ग्यारह सौ कापिस्थ भी बाल्मीकि कापिस्थ कहाये, दूसरा मत मार्तण्ड के अनुसार – बाल्मीक कापिस्थ ब्राहमण की लिखी गई है। परन्तु माण्डव्य ऋषि के श्राप से ब्राह्मणत्व क्षींण हो गया। इन ब्राह्मणों का निवास बाल्मीकपुर में है। हल से भूमि शोधन के कारण इनका नाम हल भी है। यह कर्मनिष्ठ, सात्वकी और इनके नाम, गोत्र का वर्णन चक्र में लिखा है।

'बाल्मीकि ब्राह्मणों के गोत्रादि'

सं.	गोत्र	प्रवर		
1.	भारद्वाज	0		
2.	वशिष्ठ	वशिष्ठ		
3.	काश्यप	काश्यप,	वत्स,	नैधुव
4.	गार्ग्य	काश्यप,	वत्स,	नैधुव
5.	अत्रेय	अत्रेय,	अर्चना,	नारशावश्वा
6.	गौतम	0	"	"
7.	वत्स	0	"	"
8.	कौडन्य	वशिष्ठ,	मैत्रावरूण,	कौडन्य
9.	भार्गव	भार्गवच्यवनाप्तवान,	आष्टिसेण,	अनुपेक्षा
10.	मुदग्ल्य	आंगिरस,	ब्राहमुद्गल	
11.	जमदग्नि	भार्गव,	आर्वच्य,	जमदग्नि
12.	आंगिरस	ब्राह्म,	मुद्गल,	आंगिरस
13.	कुत्स	मांधावा,	आंगिरस,	कौत्सस
14.	कौशिक	0	"	"
15.	विश्वामित्र	देवत,	देतश्रवसा,	विश्वामित्र
16.	पुलस्त्य	0	ठ	ठ
17.	अगस्त्य	विश्वामित्र,	स्मरथ,	वार्घुला
18.	शाण्डिल्य	0	ठ	ठ
19.	कात्यायन	भार्गव,	ओर्व,	जमदग्नि

(इति वाल्मीकि ब्राह्मण उत्पाद)

22 'शाकल, शाक द्वीप ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

भविष्य पुराण के 133 वे अध्याय में कहा है कि -

श्लोक - कृष्णपुत्रोऽतितेजस्वी सांम्वो जाम्ववतीसुतः।
सूर्यस्य च महाभक्तः प्रासादं स चकार ह ॥
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - कृष्ण के महातेजस्वी जाम्ववती से उत्पन्न पुत्र साम्व ने सूर्य देव की भक्ति के निमित्त एक वड़ा महल बनाया। उसमें भगवान सूर्य की मूर्ति स्थापित की और पूजा के निमित्त गौरमुख ऋषि से कहा कि हम मन्दिर की पूजा का प्रतिग्रह नहीं करेंगे। तव साम्व ने इसके निमित्त सूर्य का आराधन किया। तव प्रसन्न होकर सूर्यदेव कहने लगे।

श्लोक - ममार्चनेऽस्मिन द्वीपे तु ह्यधिकारी न कोपि च।
शाकद्वीपे ते वसन्ति वर्णाश्चत्वार एव च॥
मगश्च मगसश्चैव मानसो मन्दगस्तथा ।
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - अर्थात मेरे पूजन का अधिकारी यहाँ कोई नहीं है, शाकद्वीप में चार वर्ण मग, मगस, मानस और मन्दग यह निवास करते हैं। उनको तुम यहाँ लाकर बसाओ।

श्लोक - साम्वः सूर्यवचः श्रुत्वा चारूह्य गरूणां द्रुतम् ।
शाकद्वीपात्समानाय्यचाष्टादश कुलोभ्द्वान् ॥
कुमारान स्थापयामास चन्द्रभागा नदी तटे ।
ते तु नित्यं पूजियन्ति सूर्ये भक्तिपुरः सराः ॥

अर्थ - साम्व यह बात सुनकर गरूणपर चढ़कर शाकद्वीप को गये और शाकद्वीप से अट्ठारह कुल के कुमार लाकर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थापन किया। वे सूर्य भगवान की नित्य पूजा करने लगे।

श्लोक - तन्मध्ये मन्दगाश्चाष्टो मगाश्च दशसंख्यकाः ।
ततः साम्बो भोजकन्याः समानाय्य प्रयत्नतः ॥
मगाख्यदशविप्रेभ्यो दत्तवान विधिपूर्वकम् ।
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - वे साम्बपुर में निवास करते उन अट्ठारह में आठ कुल मन्दगवर्णो के शूद्र थे। और दश कुल मगवर्ण के ब्राह्मण वर्ण थे। साम्ब ने भोजवंश की कन्याओं से उन ब्राह्मण कुमारों का विधिपूर्वक विवाह कर दिया।

श्लोक - ततो जाताश्च ये पुत्रास्ते तु भोजकसंज्ञकाः ।
ब्राह्मणेन समानाश्च तापसिव्यंगधारकाः ॥
वेद पाठ विपर्या साम्नगास्ते परिकीर्तिताः ।
भोजने मौनिनः सर्वे श्रृपिवत्कूर्चधारकाः ॥
वर्चांर्च्यांश्चाष्टवर्षे च ह्यमाहकविधारकाः ।
सव्याहृतेर्हि सूर्यस्य गायत्र्या जपतत्पराः॥
अग्निहोत्रारतासर्वे मद्यं संस्कारपूर्वकंम ।
सौत्रामणे ब्राह्मणवत्पानं कुर्वन्ति ते मगाः ॥
अष्टभ्यः शककन्याश्च दत्तास्ते शूद्रकाः स्मृताः ।
तेऽपि सूर्यस्य भक्ताश्च मंदगा नात्र संशयः ॥

अर्थ - उन कुमारों के जो बालक उत्पन्न हुए वे भोजक कहाये। वे सब ब्राह्मणों के समान कर्म करने वाले हुए। कपास का बना भीतर से पोला साप की केंचली के समान यज्ञोपवीत सरीखा वस्त्र धारण करते हैं। वह 132 अंगुल का उत्तम 120 का मध्यम और 108 का अधम होता है। वह अव्यंग आठवें वर्ष में धारण कराते हैं। वेद का उलट-पुलट पाठ करने से यह मग नाम से प्रसिद्ध हैं। भोजन के समय मौन रहते हैं। ऋषियों के समान दाढ़ी रखते हैं। सूर्य की पूजा करते हैं, और सूर्य को अर्चा कहते हैं। उनके पूजक होंने से यहवर्चार्च्य कहे जाते हैं। आठवें वर्ष में अव्यांग धारण करते हैं अमाहक, पठितांगसार अव्यंग का पर्याय हैं। मैथुन और सूतक के समय यह उतार दिया जाता है। यह तीनों व्याह्रति पूर्वक सूर्य गायत्री का जाप करते हैं, और अग्निहोत्र करते हैं। अभिमन्त्रित मद्य सौत्रामणी के समान पीते हैं। जो आठ कुल के वे उनको शकों की कन्या दी गई वे शूद्र कुल हुए। वे भी सब सूर्य के भक्त हुए परन्तु मदगधी कहलाए।

'इति शाकद्वीप ब्राह्मण उत्पत्ति'

23 'शुक्ल यजुर्वेदी ब्राह्मण उत्पत्ति'

1220 शालिवाहन शाके में प्रतिष्ठानपुर (मुंगीपट्टन) का एक राजा जिसका नाम विम्व था। उसने कोंकड़ देश में जाकर राज्य किया और पीछे अपने गुरु रघुनाथ के पुत्र पुरुषोत्तम को उस देश में बुलाकर उनको उत्तर कोंकड़ की सब वृत्ति दी। पुरुषोत्तम जी ने प्रतिष्ठानपुर से अपने सब इष्ट मित्रों को बुला लिया और उस प्रकार विशेष वृत्ति मिलने से शुक्ल यजुर्वेदीयों का वहाँ एक समूह एकत्रित हो गया। पीछे राजा की मृत्यु होंने पर भी इनकी वृत्ति पूर्ववत चलती रही। पीछे जब चित्तपावन पेशवा का राज्य हुआ, उस समय वॅन राजा कोंकड़ास्थ चित्तपावन ब्राह्मण थे। उन्होंने अपनी पंक्ति में महाराष्ट्र ब्राह्मणों को भोजन के निमित्त आग्रह किया। जब दक्षिण कोकड़ में यह बात उठी तब उत्तर कोंकड़ की वृत्ति वाले पुरुषोत्तम भट्ट के सम्बन्धी शुक्ल यजुर्वेदीयों के संग कराड़े और चित्तपावनों का बहुत विरोध हुआ। कुछ दिनों पीछे उत्तर कोंकड़ में बसाई के निकट पलसीवन कुट्ट गाँव में एक तुकंभट अग्निहोत्री रहते थे। 1668 में चित्तपावन और कराड़ों ने उनका अग्निहोत्र भंग किया। तब तुकंभट ने अपने शुक्ल यजुर्वेदीयों को साथ लेकर सतारे में पहुँचकर छत्रपति से अपना दुख निवेदन किया। और छत्रपति ने निर्णय करके उनका अग्निहोत्र फिर चलवाया। परन्तु वहाँ के लोग इनको पलशीकर नाम से पुकारने लगे। परन्तु यह शुक्ल यजुर्वेदीय अधिकतर उत्तर कोंकड़ में रहते हैं, और इस समय भी उत्तम कर्मकाण्ड में रत रहते हैं। इस समय यह महाराष्ट्र सम्प्रदाय के अन्तर्गत आते हैं। इन मध्यान्दिनी शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मण का उपनाम तथा गोत्र और कुलाचार सब देशस्थों के समान है। महाराष्ट्र से इनका भोजन और कन्या सम्बन्ध होता है।

'इति शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मण'

(महाराष्ट्री सम्प्रदाय)

24 त्रवेदी म्होड़ ब्राह्मण

पद्म पुराण के पाताल खण्ड में लिखा है कि जब महाराज युदिष्ठिर ने धोम्प ऋषि से गुजरात देश के धर्मारण्य तीर्थ का महत्व पूछा तो उन्होंने कहा उस स्थान में ब्रह्माजी ने घोर तपस्या की और विष्णु भगवान से वर मांगने के उपरान्त तीनों देवताओं ने वहाँ निवास करने को तीन गुणों के सहित निर्माण किय।।

श्लोक - गुणैस्त्रिभिस्त्रिभिः काले ब्राह्मणः प्रकीटीकृर्त्ताः।
अष्टादशसहस्त्राणि त्रैविद्यास्ते द्विजोत्तमाः॥

अर्थ–तीनों गुणों के सहित 18000 सहस्त्र ब्राह्मण उत्पन्न किये वे त्रैविद्य त्रवेदीम्होण ब्राह्मण कहे गये। इनमें छै सहस्त्र विष्णु ने छै सहस्त्र ब्रह्मा ने और छै सहस्त्र शंकर ने उत्पन्न किये, यह सात्विक, राजसिक तामसी हुए इनकी सेवा को शूद्र और वैश्य उत्पन्न किये इनके चौबीस गोत्र हैं। आगे चक्र में स्पष्ट किये हैं।

ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड में लिखा है, त्रैविध ब्राह्मणों के वकुल नाम के स्वामी हैं। इनका निवास मोहेरपुर में हुआ इस मोहरपुर ग्राम में अनेक देवी देवताओं का निवास हुआ, मातंगी देवी का इनके विवाहादि में विशेष पूजन होता है। ब्रह्मवर्त के अन्तर्गत सरस्वती के दक्षिण तट पर हैं। कलिंगे वह धर्मारष्य मेहपुर है। जब रामचन्द्र जी धर्मारण यात्रा करते यहाँ आये, तब एक रात रहे वहाँ रात को एक स्त्री के रोने की आवाज सुनी जब रामचन्द्र जी ने जाकर रोने का कारण पूछा तब उसने कहा कि, मैं इस पुर की अधिष्ठात्री श्रीमाता हूँ ब्राह्मण चले गये, उनको लाकर बसाईये। तब राजचन्द्र जी ने वहाँ त्रैविध ब्राह्मणों को लाकर बसाया और गौभुज ब्राह्मणों का भी फिर स्थापन किया। ब्राह्मणों को एक ताम्रपत्र ग्राम प्रदान सम्बन्ध में लिख दिया। भगवान रामचन्द्र तीर्थयात्रा कर घर को लौट गये। जब कलि के आरम्भ में आम्र नामक बौद्ध धर्मी राजा इस देश का हुआ तव उसने रामचन्द्र का वह ताम्रशासन नहीं माना और ब्राह्मणों से कहा कि या तो हनुमान जी के दर्शन कराओ नहीं तो ग्राम छीन लूंगा। तब उनमें से पन्द्रह सहस्त्र ब्राह्मण तो प्रारब्ध को प्रबल मान कर्तव्यविमूढ़ हो बैठे रहे, कि अब इस ग्राम में हमारा अंश नहीं रहा। शेष तीन सहस्त्रों ने कहा कि तुमने शास्त्रों में पारंगत होकर प्रारब्ध को भी प्रमुख माना इससे तुम चतुर्वेदी म्होंड़ नाम से विख्यात होंगे। परन्तु हम उद्योग को मुख्य मानकर जायेंगे और हनुमान जी के दर्शन करेंगे, और 64 गोत्र के 72 वर्गो में से एक एक को साथ चलने के लिए कहा कि जो कोई अपने वर्ग से नहीं आवेगा, वह स्थान और अपने वर्ग से भ्रष्ट समझा जायेगा। और न तो वैश्यों से वृत्ति मिलेगी और न विवाह सम्बन्ध ही होगा। यह सुनकर चतुर्वेदी ब्राह्मणों के घरों से बीस बुलाये और त्रिवेदी म्होंड़ों में से ग्यारह ब्राह्मण भक्ति से हनुमान जी के दर्शन को निकले उसमें वह बीस तो मार्ग में ही बैठ गये। कि दर्शन हे या नहीं हो परन्तु ग्यारह ब्राह्मण जितेन्द्रिय होकर रामेश्वर को गये और वहाँ अन्न, जल त्याग कर बैठ गये। तब हनुमान जी ने दर्शन दिया और उनका दुख देख अपने दाहिने व बायें अंग के दो रोम देकर कहा कि राजा को बायें अंग का रोम दिखाना जब वह क्रोध करे तो कहना कि तेरा राज्य भष्म हो। यह कहकर तुम शीध्र नगर के बाहर चले आना जब नगर जले और राजा शरण हो तो दूसरी पुड़िया डालकर शांति कर देना। वे चिन्ह लेकर ब्राह्मण गाँव में आये और राजा

को चमत्कार दिखाया, राजा ने अपराध क्षमा कराया और धर्मारण के अलावा सुखवासपुर और एक ग्राम उनको रहने के लिए दिया। चतुर्वेदी सुखवासपुर में रहे कुछ सीतापुर और श्रीक्षेत्र में रहे। उनमें से जो वीस चतुर्वेदी ब्राह्मण जो अधबीच में से ही लौट आये थे, दोनों जातियों से पृथक हो आचार भ्रष्ट होंने से जेठी मल्ल म्होड़ ब्राह्मण कहाये। कितने ही नीच जाति के पुरोहित हुए मल्ला म्होंड़ों के गोत्र पहले कहे हैं। इनकी कुलदेवी लिम्बजाशक्ति धर्मेश्वर महादेव से पक्षिम की ओर इसका स्थान हैं।

(चतुर्वेदी म्होड़)

श्लोक –

चतुर्वेद्या महाराज संस्थिताः सुखवास के। केचित सीतापुरे वासं श्रीक्षेत्रे चापरेऽबसन् ॥
हनूमंत प्रति गतां व्यावृत्य पुनरागताः । केचिन्मल्लाश्च संजाताः केचिच्छौडिक याजकाः ॥

धेनुजा म्होड़

उनमें से जो ग्यारह थे वे इग्यार्षण नाम से विख्यात हुए। वे स्थान वृत्ति से दूर होकर साभ्रमती नदी के किनारे और ऊपर जहाँ तहाँ निवास करने लगे। यह जो त्रवेदी म्होड़ ब्राह्मण थे, इनके घरों में गाय बहुत थीं। उनके चराने के निमित्त विद्याहीन ब्राह्मणों के मूर्ख बालक नियुक्त किये, वे सब ग्वाल में ही रहते थे। गाँव की कुमारी तथा विधवायें उनके संसर्ग से गर्भवती हुई यह देख उनके माता पिताओं को बड़ा दुख हुआ, और उन्होंने वे कन्याए और विधवा जिन जिन से दूषित हुई थी। उन उन को देदी उनकी वो कानीन और गौलक सन्तान धेनुजा म्होड़ के नाम से विख्यात हुई, और वह उनकी जाति से भिन्न हुई पूर्व ब्राह्मणों के साथ उनका विवाहादि सम्बन्ध बन्द हो गये। यह मोहरपुर के पूर्व सात कोस पर धेनुज नगर में रहते हैं। यह ब्राह्मणत्व से गिरे हुए हैं।

श्लोक – भिन्ना जातिस्तथैतेषां सम्बन्धो नैव तैः सह।
धेनुजा म्होड़ संज्ञाये लोके विख्यात कीर्तयः ॥
धेनुजाख्यं पुरं तत्र स्थापितं वासहेतवे ।

और दूसरे म्होड़ ब्राह्मणों के त्रिपाला म्होंड़, खिजड़िया, सम्वा के म्होंड़, तालाजिए म्होंड़ और सुरती कपड, बंन्जी, सरसेजी, कच्छी, हालारी, घोघारी आदि देश ग्राम भेद सम्वा के अनेक भेद हुए। इस म्होंड़ जाति में अहमदाबाद के पास सखरेज ग्राम है। वहाँ सामवेदी शिवराम म्होंड़ ब्राह्मण विद्वान पंडित थे। इन्होंने शांति चिन्तामणि आदि कई ग्रन्थ बनाये। इन ब्राह्मणों के दिव, कोडिनार, जूनागढ़, कूतियाण, पोरबन्दर, झालावाड़, हलवद, धागद्रु, मोरवी, बीकानेर, राणोपुर, सियोर, भावनगर, अहमदाबाद, सूरत, धोलका, भरूच, अंकलेश्वर, विरमगांम, काशी, जामनगर, मांडवी, भुज, नगर यह चौवीस ग्राम हैं। इनमें यह अपनी आजीविका करते हैं।

(इति म्होंड़ ब्राह्मण गुर्जर सम्प्रदाय के)

(श्रीमाली गुर्जर का सम्प्रदाय)

'झालोरा ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

ब्राह्मणोत्पत्ति सार संग्रह में लिखा है कि विवाह समय में प्रजापति का वीर्य उमा के दृष्टि आने पर पतित हुआ, उस समय सत्य कहने से शंकर ने कहा।

श्लोक - यावन्त्यः सिकतां रेतसः प्लुताश्चतुरानन।
तावन्त एव मुनयो भवन्तु तव तेजसां॥

अर्थ - कि तुम्हारे वीर्य से इस रेत के जितने कण भीगेंगे उतने ही तपस्वी बालखिल्य नाम के प्रकट होंगे। ऐसे कहते ही 88928 तत्व ज्ञाता ऋषि कुमार प्रकट हो गये और जहाँ वह प्रगट हुए वहाँ आश्रम पांच कोस के मध्य में बालखिल्य आश्रम कहाया। उनमें से 60000 साठ हजार सूर्य की उपासना करते हुए सूर्य लोक में गये, 495 ने गंगा यमुना के मध्य में तप किया वे अन्तर्वेदी ब्राह्मण कहाये।

श्लोक - गंगा यमुायोर्मध्ये तेपुस्ते परमं तपः
परे नव सहस्त्राणि जम्बुवत्यास्तटे गताः ॥
रक्षिता गरूड़ेनैव पतमाना द्विजोत्तमाः ॥
ततः पश्चशतान्येव पंचयुक्तानि वै द्विजाः ॥
द्वारकायां गतास्ते वै रक्षार्थ स्थापिता हरेः ॥
अष्टादश सहस्त्राणि ह्यष्टाविंशच्छताधिकाः ॥
ते सर्वे मुनिशार्दूलाश्चक्रुः स्वाश्रममुत्तमम् ॥

अर्थ - नौ सहस्त्र जम्बुवती के किनारे पर जाकर तप किया, वे जम्बु ब्राह्मण कहाये। पांच सौ ब्राह्मण द्वारिका में गये वे गुग्गुली ब्राह्मण कहाये। और अट्ठारह हजार एक सौ अट्ठाईस जो आश्रम पर रहे वे गुरीला ब्राह्मण कहाये, गुरीले ब्राह्मणों के एकसौ अट्ठाइस गोत्र हैं, शेष एक सौ पचपन गोत्र का विभग्य वैदिक ग्रन्थों में हैं। 60000 में से 32 ऋग्वेद के गौत्री और 33 शाखा हैं। वह इस प्रकार हैं काश्वायण, आग्रयण, व ग्रीवायण, वृहत, धाम, च्यवन, वसुहारिणा, सत्सश्रव, टत्तश्रव, टद्दालक, वृहत्तर, धूम्रायण, वृहदवभु, गर्हित, काष्टायन, शाकटायन, मण्डुक, नैधुव, मरीच, शाकल्य, काश्यप, वात्स्य, शौसिर, मुद्गल, अत्रेय, गोलक, जातूकर्ण, स्थौतर, और बलाक।

यजुर्वेद के 33 गोत्र हैं, और छियासी शाखा हैं। वे गोत्र इस प्रकार हैं। पौलस्त्य, वैजभृथ, क्रौंच, सानुनी, चपल, धावमान, मांडव्य, गौतम, गार्गी, कात्यायन, भारद्वाज, पाराशर, अग्निमान, अनुलोम्य, शाण्डिल्य, पौलिस, पुशल, चन्द्रमास, अरुण, ताम्रयण, काण्वायन, अर्म, वत्स, नारायण, जमदग्नि, वशिष्ठ, पतांजिली, आलवि, हारुणि, भार्गव, पौण्डकयण, सायकायणि: ।

'त्रिवेदी म्होड ब्राह्मणों का गोत्र चक्र

सं.	गोत्र	प्रवर	देवी	वेद	शाखा	गुण
1.	गार्ग्यायनस	भार्गव, च्यवन, और्व, आप्लावन, जमदग्नि	शांता	सामवेद	कौथुमी	सात्वकउत्तम
2.	गंगानस	विश्वामित्र, विल्वकात्यायन	सुखदा	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	राजसमध्यम
3.	कृष्णात्रेय	आत्रेय, और्ववान, श्रावाश्व	भट्योगिनी	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	तामसअधम
4.	माण्डव	भार्गवच्यवन, शांत, आप्लावन, जमदग्नि	धारमधारिका	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	तामसमध्यम
5.	वैशम्पायन	आंगिरस, अम्बरीस युवनाश्व	लिम्बजा	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	तामसअधम
6.	वत्स	भार्गव, च्यवन, आप्लावन परोथस, वत्स	अन्जा	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	सात्वकउत्तम
7.	कश्यप	वत्स, नैधुव, कश्यप	गोत्रद्धा	0	0	तामसअधम
8.	धारणास	अगस्त्य, दातृव्य, इध्मवाह	धत्रजा	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	सात्वकउत्तम
9.	लौगाक्षि	काश्यप, वत्सार, शारस्तम्ब	महायोगिनी	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	राजसीमध्यम
10.	कौशिक	विश्वामित्र, देवरात, उद्दालक	यक्षिणी	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	राजसीमध्यम
11.	उपमन्यु	वशिष्ठ, भारद्वाज, प्रमह	गोत्रडा	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	त्रजसीमध्यम
12.	वत्सायन	भार्गवच्य, आप्ल, दांत, भारद्वाज	भट्टारिका	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	राजसीमध्यम
13.	वत्सर	भार्गवादि 5	चंडिका	यजुर्वेद	मध्यान्दिनी	सात्वकीउत्तम
14.	भारद्वाज	आंगिरस, भारद्वाज वार्हसपत्य	श्रीमती	0	0	सात्वकीउत्तम
15.	गांगेय	गार्गेय, गांगीय, शंखणि	सिंहरोहा	0	0	राजसीमध्यम
16.	शौनक शौनक	भारद्वाज, गृत्ससमद,	महाकाली	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	तामसीअधम
17.	कुशिक	देवरात, उद्दालक विश्वामित्र	तारण	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	तामसीअधम
18.	भार्गव	च्यवन, जेमिन, आप्लावन, मधि 5	चामुडा	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	तामसीअधम
19.	पैंग्य	अत्रि, कण्व, अर्चि	द्वारवासिनी	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	सात्वकोउत्तम
20.	आंगिरस	गौतम, औतथ्य, आंगिरस	मातंगी	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	राजसीमध्यम
21.	अत्रि	आत्रेय, श्रावश्व, ओर्ववान	चंद्रिका	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	राजसीमध्यम
22.	अघमर्षण	भारद्वाज, गौतम, अघमर्षण	दुर्गा	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	सात्विकोउत्तम
23.	जैमिनी	विश्वामित्र, देवरात, उद्दालक	विशालाक्षी	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	राजसीमध्यम
24.	गार्ग्य	भार्गव, च्यवन, आप्लावन	नंदा	यजुर्वेद	मध्यान्दिनो	राजसीमध्यम

'इति' (श्रीमाली गुर्जर सम्प्रदाय)

इसी प्रकार सामवेद के बत्तीस गोत्र और तेरह शाखायें हैं। वे इस प्रकार हैं। विश्वामित्र, देवराज, चितिद, गालव, कुशिक, कौशिक, हयूदन्त, सान्तम, उदधि, खलवानैल, जावालि, यज्ञवल्व्य, आहुल, सैनधवायन, गोभिलायन, शौरकि, लांगलि, कुथल, औदल, सरलद्वीप, अशम, अपावयन, वेदवृद्धि, वैशाख, भाजुकि, लोभगायन, लोगाक्षि, पुष्यजित, कंद, राणायणन।

इसी प्रकार अथर्वणो के इकतीस गोत्र हैं नौ शाखा हैं।

ओतथ्य, गौतम, वात्स्य, सौदेव, वर्चस, शाण्डिल्य, कपि, कौडिन्य, माण्डव्य, त्रयारूणि, सोंनक, नोलक, औदवाह, वृहद्रथ, शोल्कयन, संविघ, सोमदत्त, सुशर्मक, सावर्णि, पिप्लादि, हस्तिन, वैंसम्पायन, जांजलि, मुंज्जकेश, अंगिरा, अभिवर्चस, कुमुद, आदिगुह, पथ्य, रोहिण, रोहिणायन यह इकत्तीस गोत्र हैं। यह सब एक सौ अट्ठाईस होते हैं। परन्तु सात गोत्र उसी समय नहीं रहे। इससे एक सौ इक्कीस गोत्र मौजूद हैं। झालोरा में रहने से झालोरा ब्राह्मण कहाये उनके 128 गोत्र हैं।

(झालोरा ब्राह्मण)

जम्बु ब्राह्मणों के –

वैगायन, वीतिहव्य, पौल, अनुसातिक, शोनकयन, जीवंति, कावेदी, पार्षति, वैहेति, निर्विरूपाक्षि, आदित्यायन, मृतभार, पिंगाक्षि, जहिन, वीतिन, स्थूल, शिखापर्ण और शार्कराक्ष यह 18 गोत्र हैं। अन्तरवेदी ब्राह्मणों के – व्याघ्रपाद, उपवीर, लैलव, कारलायन, लोभायन, स्वर्णिकार, चांद्रालि, गाविनी, शैलेय, सुमना और वैधृत ये ग्यारह गोत्र हैं।

गुग्गुली ब्राह्मण के – कौडिन्रू, शौनक, वत्स्य, कौत्स, शांडायनीक यह पांच गोत्र हैं। इस प्रकार 263 गोत्र की संख्या होती है।

ब्रह्मा जी ने झालोरा ग्राम में रहने वाले ब्राह्मणों के निमित्त एक कलस में हवन करके 18128 कन्या उत्पन्न की और उनसे उनका विवाह कर दिया वे सब झालोरा कहाये। इनका स्थान इस समय शमीदूर्वा नाम से विख्यात हैं। इसी को जाल्योदशमी कहते हैं।

'गुग्गुला ब्राह्मणों की उत्पत्ति वर्णन'

श्लोक – ब्रह्मविष्णुशिवैश्चैव वरान् दत्वां महर्णयः ।
स्थापिता द्वारिकायां च देवदेवेन विष्णुना ॥
स्वीयाश्रम विशुद्धयर्थ सामिद गुग्गुल जुह्वकाः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तास्तेनं गुग्गुलिकाः स्मृताः ॥

अर्थ – जिस समय बालखिल्य ऋषियों को वरदान दिया, उस समय भगवान विष्णु ने कुछ ब्राह्मणों को द्वारिका में स्थापित किया। उन्होंने वहाँ अपने आश्रम की शुद्धि के लिए समिधा और गुगुल से होम किया। वह इस कर्म से सब पाप से रहित हुए और गुग्गुली ब्राह्मण कहाये। वह द्वारिका में श्रेष्ठ ब्राह्मण निजकर्म में तत्पर हुए, इनको दान देने से द्वारिका की यात्रा सफल होती है। इनका भेद यजुर्वेद शाखा मध्यान्दिनी और कुलदेव श्री द्वारिकाधीश जी हैं। सत्ताईस अवटंक हैं। इनमें से बारह नष्ट हो गये हैं। मौजूदा पन्द्रह अवटंक मिलते हैं। उनके नाम आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं।

सं	अवटंक	सं	अवटंक
1.	मीन	11.	मांडियार
2.	वायडा	12.	उपाध्याय
3.	पाढ़	13.	व्यास
4.	पाठक	14.	वटकाई
5.	पुरोहित	15.	वेगटा
6.	जोशी	16.	ठाकोर
7.	द्विवेदी	17.	चारणवीर ठाकोर
8.	भट	18.	वेगटा ठाकोर
9.	चुमानभट	19.	कर्णवीर गोर ठाकोर
10.	पढ़ीयार	20.	होरा ठाकोर
		21.	पिंडारिया ठाकोर

(इति गुग्गुला ब्राह्मण)

"चित्तपावन कोंकड़देश ब्राह्मण उत्पत्ति"

स्कन्ध पुराण के सह्याद्र खण्ड में महादेव जी कहते हैं कि एक समय परशराम जी से भूमि मागकर सूपार्क क्षेत्र में निवास करते हुए, वहाँ ब्राह्मण स्थापना की इच्छा करने लगे और प्रभात समय में सागर के किनारे खड़े थे कि–

श्लोक– चिन्स्थापने तु सहसा ह्यागताश्च ददर्श सः।
का जातिः कश्चधर्मश्चकस्थाने चैव वासनम्॥

कैवर्तका ऊचुः-

ज्ञातिं पृच्छसि हे राम ज्ञातिः कैवर्त कीतिच।
तेषां षष्टि कुलं श्रुत्वा पवित्रम करोत्तदा॥

ब्रह्मस्यं च ततो दत्वा सर्वविद्या सुलक्षणाम्।
चितास्थाने पवित्र त्वाच्चित्त पावन संज्ञकाः॥

अर्थ–वहाँ अकस्मात चिता भूमि के निकट कुछ पुरुष आकर खड़े हुए उनसे परशराम ने पूछा तुम कौन हो वो बोले हम कैवर्त है। हमारा साठि गाँव का समूह है। परशराम ने चितास्थान पर उनको अपने तपोवल से ब्राह्मणत्व में परिवर्तित किया, और चितास्थान पर पवित्र होने से उनका नाम चित्तपावन रखा वे सब परशराम की कृपा से गौरवर्ण विद्या सम्पन्न हो गये उनके चौदह गोत्र और साठि उपनाम दिये, पीछे प्रारब्धि। योग से उन्होंने परशराम की ही परीक्षा करनी चाही, तब परशराम के श्राप से वे निंदनीय और कर्म से हीन हो गये, पीछे परशराम ने इनको चिपलोन नामक गाँव में बसाया फिर यथा स्थान को गमन किया। इनमें बहुतों की तैतरीय शाखा सम्बन्धी यजुर्वेद है। यह लोग व्यापार निष्ट और गुणी होते हैं, भोजन व्यवस्था इनकी महाराष्ट में होती है। कन्या सम्बन्ध कौंकड़स्थों में होता है।

माधवकृत प्रश्नावली में लिखा है, कि सहस्त्रादि के पीछे कि गृहस्थी वेद शास्त्र सम्पन्न चौदह ब्राह्मण रहते थे। दैवयोग से सागरतीर वासी वर्वरम्लेच्छ उनको पकड़ कर ले गये। (श्लो0–नीतासागर सध्यस्थे म्लेच्छैर्ववर कादिभिः) और उनके संगति से वे कर्मभ्रष्ट हो गये उनकी सन्तान हुई पीछे वे अपना ब्राह्मत्व विचार परशराम की शरण में गये और परशराम ने अपने तपोवल से उनको शुद्ध किया। उनको पूर्वोक्त चौदह गोत्र और साठि उपनाम दिये उनकी चित्त पावन हुआ। तैत्रीय और शाकल यह इनकी दो शाखा हैं। इनका एक भेद कर्कंस है। वे मत्स्य भोजी, कन्या विक्रियकर्त्ता होते हैं। पक्षीपालक और मधुरभाषी होते हैं। सह्याद्र खण्ड का 22वां अध्याय से इनकी विशेष जानकारी मिलती है। एक तीसरा भी भेद है जिसे किरबन्त कहते है।, ये पानों का व्यापार करते हैं। पान से कीड़े मारने के कारण ये किरबन्त कहे जाते हैं। जवल और कुन्डव इनके दो भेद हैं, यह समान प्रवर में कन्या सम्बन्ध करते हैं। आगे चित्त पावनों की गोत्र 14 तथा उपनाम गोत्रों की सारिणी उपलब्ध है।

'कोंकणस्थ चित्तपावन ब्राह्मणों के गोत्रादि'

सं	उपनाम	प्रवर	गोत्र	संख्या	सं	उपनाम	प्रवर	गोत्र	संख्या
1.	चितले	1	अत्रि	1	7.	चिपलूँणकर	7	अत्रि	7
2.	आठ्यले	2	अत्रि	2	8.	चाफेकर	8	अत्रि	8
3.	फड़के	3	अत्रि	3	9.	चोलकर	9	अत्रि	9
4.	मोने	4	अत्रि	4	10.	दाभोलकर	10	अत्रि	10
5.	जोगलेकर	5	अत्रि	5	11.	भांडभोके	11	अत्रि	11
6.	वाडदेकर	6	अत्रि	6	12.	पेंडसे	1	जमदग्नि	1

सं	उपनाम	प्रवर	गोत्र	संख्या	सं	उपनाम	प्रवर	गोत्र	संख्या
13.	कुन्टे	2	जमदग्नि	2	42.	लिमये	1	कपि	1
14.	भागवत	2	जमदग्नि	3	43.	खांबेटे	2	कपि	2
15.	वाल	1	वाभ्रव्य	1	44.	माहुल	3	कपि	3
16.	वेहेरे	2	वार्भव्य	2	45.	जाश्यल	4	कपि	4
17.	काले	1	वाभ्रव्य	3	46.	काले	1	कपि	5
18.	वैशम्पायन	1	नैतुन्दन	1	47.	विद्वांस	2	कपि	6
19.	भाडभोके	2	नैतुन्दन	2	48.	करंदीकर	3	कपि	7
20.	भिडे	1	नैतुन्दन	3	49.	मराठे	4	कपि	8
21.	सहस्त्राबुद्धे	2	नैतुन्दन	4	50.	साने	5	कपि	9
22.	पिंपलखेरे	3	नैतुन्दन	5	51.	खराटे	6	कपि	10
23.	पटवर्द्धन	1	कौडिन्य	1	52.	भागवत	7	कपि	11
24.	फड़से	2	कौडिन्य	2	53.	दलाल	8	कपि	12
25.	आचारी	1	कौडिन्य	3	54.	चक्रदेव	9	कपि	13
26.	मालसे	1	वत्स	1	55.	धारप	10	कपि	14
27.	टकिडवे	2	वत्स	2	56.	आचवल	1	भारद्वाज	1
28.	गांगुल	3	वत्स	3	57.	टेएडे	2	भारद्वाज	2
29.	जोशी	4	वत्स	4	58.	दरवे	3	भारद्वाज	3
30.	काले	5	वत्स	5	59.	बंचाल	4	भारद्वाज	4
31.	घावरेकर	1	वत्स	6	60.	बागुरडे	5	भारद्वाज	5
32.	सोहनी	2	वत्स	7	61.	रानडे	6	भारद्वाज	6
33.	गौरे	3	वत्स	8	62.	गोले	1	भारद्वाज	7
34.	दाभोलकर	4	वत्स	9	63.	वैद्य	2	भारद्वाज	8
35.	किडमिडे	1	विष्णुवृद्धि	1	64.	मनोहर	3	भारद्वाज	9
36.	नेने	2	विष्णुवृद्धि	2	65.	घेसास	4	भारद्वाज	10
37.	परांजये	3	विष्णुवृद्धि	3	66.	सोवनी	5	भारद्वाज	11
38.	मेहदले	4	विष्णुवृद्धि	4	67.	जोशी	6	भारद्वाज	12
39.	मंडलीक	1	विष्णुवृद्धि	5	68.	आरवते	7	भारद्वाज	13
40.	देव	2	विष्णुवृद्धि	6	69.	राहलकर	8	भारद्वाज	14
41.	वेलणकर	3	विष्णुवृद्धि	7	70.	कण्या	9	भारद्वाज	15

सं	उपनाम	प्रवर	गोत्र	संख्या	सं	उपनाम	प्रवर	गोत्र	संख्या
71.	करवे	1	गार्ग्य	1	100.	भावये	3	कौशिक	8
72.	गाडगिल	2	गार्ग्य	2	101.	आगासे	4	कौशिक	9
73.	लोंडे	3	गार्ग्य	3	102.	गोडवोले	5	कौशिक	10
74.	माटे	4	गार्ग्य	4	103.	पालन्दे	6	कौशिक	11
75.	दावके	5	गार्ग्य	5	104.	देवधर	7	कौशिक	12
76.	जोशी	1	गार्ग्य	6	105.	सटकर	8	कौशिक	13
77.	थोरात	2	गार्ग्य	7	106.	कानिटकर	9	कौशिक	14
78.	घाणेकर	3	गार्ग्य	8	107.	देवल	10	कौशिक	15
79.	खंगले	4	गार्ग्य	9	108.	वर्तक	11	कौशिक	16
80.	केलणकर	5	गार्ग्य	10	109.	खरे	12	कौशिक	17
81.	गोरे	6	गार्ग्य	11	110.	शेंड्ये	13	कौशिक	18
82.	वझे	7	गार्ग्य	12	111.	कोलटकर	14	कौशिक	19
83.	भुसकुटे	8	गार्ग्य	13	112.	फटक	15	कौशिक	20
84.	सुतार	9	गार्ग्य	14	113.	खुले	16	कौशिक	21
85.	वैद्य	10	गार्ग्य	15	114.	लावणोकर	17	कौशिक	22
86.	वेडेकर	11	गार्ग्य	16	115.	लेले	1	कश्यप	1
87.	भट	12	गार्ग्य	17	116.	गानू	2	कश्यप	2
88.	भागवत	13	गार्ग्य	18	117.	जोग	3	कश्यप	3
89.	म्हसकर	14	गार्ग्य	19	118.	लवाटये	4	कश्यप	4
90.	केतकर	15	गार्ग्य	20	119.	गोखले	5	कश्यप	5
91.	दावके	16	गार्ग्य	21	120.	दातार	1	कश्यप	6
92.	राजमाचीकर	17	गार्ग्य	22	121.	करमरकर	2	कश्यप	7
93.	गद्रे	1	कौशिक	1	122.	शिंत्रो	3	कश्यप	8
94.	वाम	2	कौशिक	2	123.	जोशी	4	कश्यप	9
95.	भाद्रे	3	कौशिक	3	124.	वेलडकर	5	कश्यप	10
96.	वाड	4	कौशिक	4	125.	भानु	6	कश्यप	11
97.	आपटे	5	कौशिक	5	126.	शत्रो	7	कश्यप	12
98.	वर्वे	1	कौशिक	6	127.	खडिलकर	8	कश्यप	13
99.	वापये	2	कौशिक	7	128.	पालकर	9	कश्यप	14

सं	उपनाम	प्रवर	गोत्र	संख्या	सं	उपनाम	प्रवर	गोत्र	संख्या
129.	ठोंसर	10	कश्यप	15	158.	पेंडसे	4	वशिष्ठ	15
130.	ओगले	11	कश्यप	16	159.	धारपुरे	5	वशिष्ठ	16
131.	विवलकर	12	कश्यप	17	160.	पर्वत्ये	6	वशिष्ठ	17
132.	वडवे	1	कश्यप	18	161.	अभ्यंकर	7	वशिष्ठ	18
133.	कन्हेरे	14	कश्यप	19	162.	दात्ये	8	वशिष्ठ	19
134.	भटकर	15	कश्यप	20	163.	मोडक	9	वशिष्ठ	20
135.	फालके	16	कश्यप	21	164.	सावरकर	10	वशिष्ठ	21
136.	सुंकले	17	कश्यप	22	165.	भातखण्डे	11	वशिष्ठ	22
137.	भ्ट	18	कश्यप	23	166.	दांणोकर	12	वशिष्ठ	23
138.	तरणों	19	कश्यप	24	167.	कोपरकर	13	वशिष्ठ	24
139.	तरणों	19	कश्यप	24	168.	वैद्य		वशिष्ठ	25
140.	भेलाद	21	कश्यप	25	169.	विनोद		वशिष्ठ	26
141.	कुडवे	22	कश्यप	26	170.	दिवेकर		वशिष्ठ	27
142.	वेंद्रे	23	कश्यप	27	171.	नातु		वशिष्ठ	28
143.	कायसे	24	कश्यप	28	172.	महाबल		वशिष्ठ	29
144.	साठे	1	वशिष्ठ	1	173.	साठ्ये		वशिष्ठ	30
145.	बोडस	2	वशिष्ठ	2	174.	राणे		वशिष्ठ	31
146.	ओक	3	वशिष्ठ	3	175.	शोमण		शाण्डिल्य	1
147.	वापट	4	वशिष्ठ	4	176.	गांगल		शाण्डिल्य	2
148.	वागुल	5	वशिष्ठ	5	177.	भाट्ये		शाण्डिल्य	3
149.	धारप	6	वशिष्ठ	6	178.	गडपुले		शाण्डिल्य	4
150.	गोगटे	7	वशिष्ठ	7	179.	दामिले		शाण्डिल्य	5
151.	भाभे	8	वशिष्ठ	8	180.	जोशी		शाण्डिल्य	6
152.	पोकसे	9	वशिष्ठ	9	181.	परचुरे		शाण्डिल्य	7
153.	विंसे	10	वशिष्ठ	10	182.	थत्ते		शाण्डिल्य	8
154.	गोवडे	11	वशिष्ठ	11	183.	ताम्हनकर		शाण्डिल्य	9
155.	करलेकर	1	वशिष्ठ	12	184.	टकले		शाण्डिल्य	10
156.	दातार	2	वशिष्ठ	13	185.	आंमडेकर		शाण्डिल्य	11
157.	दांडेकर	3	वशिष्ठ	14	186.	थामडकर		शाण्डिल्य	12

187.	पुलपुले	शाण्डिल्य	13
188.	तोवरेकर	शाण्डिल्य	14
189.	माटे	शाण्डिल्य	15
190.	पावगो	शाण्डिल्य	16
191.	डोंगरे	शाण्डिल्य	17
192.	केलकर	शाण्डिल्य	18
193.	विद्वान	शाण्डिल्य	19
194.	काले	शाण्डिल्य	20
195.	माइल	शाण्डिल्य	21
196.	भोगले	शाण्डिल्य	22
197.	सहस्त्राबुद्धे	शाण्डिल्य	23
198.	कांणो	शाण्डिल्य	1
199.	टिलक	शाण्डिल्य	2
200.	कानडे	शाण्डिल्य	3
201.	नित्सुरे	शाण्डिल्य	4
202.	गोडसे	शाण्डिल्य	5
203.	पाटणकर	शाण्डिल्य	6
204.	शिंत्रे	शाण्डिल्य	7
205.	व्यास	शाण्डिल्य	8
206.	धनवटकर	शाण्डिल्य	9
207.	लावणोकर	शाण्डिल्य	10
208.	पद्ये	शाण्डिल्य	11
209.	मये	शाण्डिल्य	12
210.	चेहरे	शाण्डिल्य	13
211.	रिसवुड	शाण्डिल्य	14
212.	सिद्धये	शाण्डिल्य	15
213.	उपाध्ये	शाण्डिल्य	16
214.	राजवाडकर	शाण्डिल्य	17
215.	सिधोरे	शाण्डिल्य	18
216.	कौझकर	शाण्डिल्य	19
217.	पलनिटकर	शाण्डिल्य	20
218.	वाटवेकर	शाण्डिल्य	21
219.	नरवणो	शाण्डिल्य	22
220.	पावसे	शाण्डिल्य	23
221.	कोंपरकर	शाण्डिल्य	24
222.	माटे	शाण्डिल्य	25

139.	दामोदर	20	कश्यप	25

(इति चित्त पावन कोंकड़ ब्राह्मण)

(गुर्जर सम्प्रदाय)

"चित्तपावन 14 ऋषि गोत्र"

सं.	गोत्रसं.	उपनाम	गोत्र प्रवरो के नाम
1.	11	अत्रि	आत्रेयार्चनासश्यावास्वेति 3
2.	3	जमदग्नि	
3.	3	वाभ्रव्य	
4.	5	नैतुन्दन	
5.	3	कौडिन्य	
6.	9	वस्त	भार्गव, च्यवना, आप्लावन, और्व, जमदग्नि 5

7.	7	विष्णुवृद्धि	आंगिरसपौरकुत्सत्रासदशवेति 0
8.	14	कपि	आंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज 3
9.	15	भारद्वाज	आंगिरस, भारद्वाज, वार्हस्पत्य 3
10.	22	गर्ग	आंगिरस, सैन्य, गार्ग्य, 3 पंच वा.
11.	22	कौशिक	विश्वामित्रा, वत्स, नैध्रुव 3
12.	29	कश्यप	कश्यप, वत्स, नैध्रुव 3
13.	21	वशिष्ठ	शक्ति, वशिष्ठ, पाराशर 3
14.	48	शाण्डिल्य	असित, देवल, शाण्डिल्य 3

(इति प्रवर ऋषि गोत्र)

"चित्तपावन 14 ऋषि गोत्र"

'साठ उपनाम चक्र'

सं.	उपनाम	सं.	उपनाम	सं.	उपनाम
1.	अभ्यंकर	16.	गाडगोल	31.	ताम्हनकर
2.	अठवले	17.	गडवोले	32.	तुलपुले
3.	आचवले	18.	गोखले	33.	थत्ते
4.	उकिडवे	19.	गांगल	34.	दर्वे
5.	करवें	20.	घेघाल	35.	दावके
6.	करंदीकर	21.	घागुरेडे	36.	धामणकर
7.	काले	22.	चितले	37.	नेने
8.	कारलेकर	23.	चापेकर	38.	नातु
9.	किडमिडे	24.	क्षत्रो	39.	पराजपे
10.	कुंटे	25.	जोशी	40.	पटवर्धन
11.	कोकेकर	26.	जोग	41.	फडके
12.	केलकर	27.	जोगलेकर	42.	फडसे
13.	खाडिलकर	28.	टेंवे	43.	वर्वे
14.	खोत	29.	टकले	44.	वाल
15.	गणफुले	30.	डोंगरे	45.	वेहेरे

46. वत
47. भांडभोके
48. मराठे
49. माइल
50. रानडे
51. लिमये
52. लोंढे
53. वेलणकर
54. वैशंम्पायन
55. शिवे
56. साठे
57. सोमण
58. सोपनी
59. सोहनी
60. सहस्त्राबुद्धे

"उपनाम संख्या 60"

(कोंकणस्थ चित्तपावन ब्राह्मण वर्णन)

इति चक्रम

25 'बंगाली ब्राह्मण' "वर्णन"

बंगाल देश में राठी और वारेन्द्र वैदिक प्रकृति के कई एक श्रेंणी के ब्राह्मण रहते हैं। उनमें राठी ब्राह्मणों की अधिक संख्या है, और श्रेष्ठ दर्जे के मान्य हैं। इनमें कान्यकुब्ज, अन्य ब्राह्मण ने जाकर के वहाँ प्रवास किया। आगे ये कब और कैसे गये हाल विस्तार पूर्वक प्रस्तुत हैं। बौद्ध धर्म के समय में धर्म प्रसारण अति उग्र अवस्था में होंने के कारण वंग देश आदि देशों में सनातन धर्म की प्रभा प्रायः अस्तसी हो गई थी। नये धर्म के प्रतिघात से प्राचीन आर्य धर्म थरथर कंपित होता था। संसार में उससमय नये धर्म के प्रतिघात से विश्वास होने लगा था। वैदिक क्रिया कर्म भय के कारण लोप होंने लगा था, जब कालक्रम से भगवान शंकराचार्य ने जन्म ग्रहण कर 1032 मतों का निराकरण कर बौद्धों को भी सभी स्थनों पर परास्त किया, और आर्य धर्म की उन्नति होंने लगी। उस समय महा पराक्रमी राजा आदि शूर वंगदेश के वग सिंहासन पर विराजमान थे। उस समय ब्राह्मणों के धर्म की अवस्था सोचनीय थी। एक समय राजा आदिशूर ने पुत्रेष्ठ यज्ञ करने की इच्छा की और विद्वान ब्राह्मणों को तलाश किया परन्तु देखा कि बंगाल में उस समय ब्राह्मणगण वेद विहींन और आचारभ्रष्ट दृष्टिगत आये। इस कारण उन ब्राह्मणों को आचार भ्रष्ट व शास्त्रों से अनभिज्ञ जान कार्य सम्पन्न होंने की संभावना न जान वेदों के पारंगत यज्ञ कार्य विशारद योग्य ब्राह्मणों भेजने को कान्यकुब्ज देश के महाराज वीरसिंह तथा त्रिहुत को दूत भेजा। कान्यकुब्ज व त्रिहुत से उनकी प्रार्थना के अनुसार दक्ष वेद विशारद पांच पांच दोनों ने दश ब्राह्मण भेद दिये। इन ब्राह्मणों ने शाके सम्वत 999 में वंगदेश में गमन किया था। साथ में दोनो राजाओं ने पाँच पाँच पुरुष सेवार्थ भेजे। जो आगे विवरण में दिये हैं।

(शशिनाथ चौधरी)

श्लोक – कान्यकुब्जात्समानीतान्दूतेन द्विजपंचकान् ।
वेदशास्त्रेष्ववगतान्त्सर्वास्त्रे च विशारदान् ॥
गोयानारोहितान्वि प्रान्खङ्ग चर्मादिभिर्युतान् ।
पत्तिवेशान्त्समालोच्य विशादो जायते हृदिः ॥
अश्रद्धा जायते राज्ञ इति ज्ञात्वा द्विजोत्तमाः ।
आशीर्वादार्थ निर्माल्यं मल्लकाष्ठो परिस्थितम् ॥
तदा काष्ठं सजीवं स्यात्फल पल्लव संयुत्तम् ।
इति दृष्टवा नृपस्तस्मिन्कम्पान्वित कलेवरः ॥
स्तोत्रं च बहुधा तेषाम करोत्स नृपोत्तमः ।

(देवीवर – घटककृतकारिका)

अर्थ – देवीवर घटककृत कारिका में लिखा है, कि कान्यकुब्ज देश से दूतों के द्वारा बुलाए हुए वेद शास्त्रों के ज्ञाता ढाल, तलवार लिए बैलों की गाड़ी में बैठे दश ब्राह्मणों को राजदरबार में उपस्थित हुए, देख

कर दूत ने राजा से कहा, और उनके वीर भेष की कथा सुनकर दुखी हुआ। वे ब्राह्मण राजा के अश्रद्धा भाव को जान गये, और जो राजा को आशीर्वाद देने के लिए फूल माला लाये थे, वह माला एक सूखे हुए वृक्ष को पहना दी माला वृक्ष के ऊपर पड़ते ही उन ब्राह्मणों के प्रताप से सूखा हुआ वृक्ष नव पल्लवों से फलफूल कर हरा भरा हो गया। उन ब्राह्मणों का यह अद्भुत कृत्य देखकर वह राजा भय से कम्पित हो गया, और उन ब्राह्मणों की अनेकों प्रकार से स्तुति करने लगा। तब ब्राह्मणों ने प्रसन्न होकर राजा को आशीर्वाद दिया, फिर राजा ने दश महापुरुषों के द्वारा पुत्रेष्ठ यज्ञ कराया। इस यज्ञ के प्रभाव से राजा के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ, और राजा ने उन ब्राह्मणों को अनेको तरह के दान देकर सन्तुष्ट करते भये अपने राज्य में रहने का अनुरोध किया। ब्राह्मणों ने राजा की विनय भक्ति और भाव पर विचार करते हुए, रहने के लिए इच्छा स्वीकार की। तव राजाने पंचकोटि, हरिकोटी, कंकग्राम, कामकोटि और वटग्राम ये पाँच उनके निवास करने को दिये जिनमें वे निवास करने लगे। इन पांच पांच महापुरुषों से दो स्थान भेदो से वंगदेश में राठी, वारेन्द्र श्रेंणी के ब्राह्मण समूह उत्पन्न हुए और उनके साथ जो पाँच–पाँच अनुचर थे उनके सहयोग से उस देश में कायस्थ जन उत्पन्न हुए।

श्लोक – भट्टनारायणों दक्षो वेदगर्भोऽथ छान्दडः ॥
अर्थ श्री हर्ष नामा च कान्यकुब्जमैथिलात्समागतः ।
शाण्डिल्य गोत्रज श्रेष्ठों भट्टनारायणः कविः ॥
दक्षोऽथ काश्यपः श्रेष्ठो वत्स्य श्रेष्ठो ऽथ छान्दडः ।
भारद्वाज कुलश्रेष्ठः श्रीहर्षों हर्षवर्द्धनः ॥
वेदगर्भोऽथ सावर्णो यथा वेद इति स्मृतः ।
पंचकोटिः कामकोटिर्हरिकोटीस्तथैव च ॥
कंकग्रामों वटग्रामस्तेषां स्थानानि पंच च ।

यह श्लोक कुलदीपिका से है।

कुलदीपिका नामक पुस्तक में लिखा है। भट्टनारायण, दक्ष, वेदगर्भ, छान्दड और श्रीहर्ष ये कान्यकुब्ज देश से आये थे। कवि भट्टनारायण शाण्डिल्य गोत्री, दक्ष काश्यप गोत्री, छान्दड वात्स्य गोत्री, हर्षवर्द्धन हर्षभारद्वाज गोत्री, वेदगर्भ सावर्णि गोत्र में उत्पन्न हुए, पंचकोटि, कामकोटि, हरिकोटी, कंकग्राम, वटगाँव ये पांच इनके स्थान हैं।

श्लोक – भट्टतः षोडशोद्भूता दक्षतश्चापि षोडश ।
चत्वारः श्रीहर्षोज्जाता द्वादशा वेदगर्भतः ॥
अष्टावथ परिज्ञेया उद्भूताच्छान्दडान्मुनेः ।

(यह कुलरभः)

अर्थ – भट्ट से सोलह पुत्र श्रीहर्ष के चार पुत्र, वेदगर्भ के बारह पुत्र और छान्दड के आठ पुत्र सुयोग्य उत्पन्न हुए। इस प्रकार इन पांचों ब्राह्मणों के 56 पुत्र हुए। इन 56 को रहने के निमित्त राजा की आज्ञा से

एक एक गाँव मिला था। वे जिस जिस गाँव व ग्रामवासी कहने लगे। भट्ट नारायण के सोलह पुत्र थे उन्होंने राजा से 16 गाँव दान में प्राप्त किये इस वजह से सोडसागांई की उपाधि प्राप्त की थी।

श्लोक – वन्यः कुसुमो दीर्घांगी घोषली वटव्यालकः ।
पारी कुली कुशारिश्च कुलभिः सेयको गडः ॥
आकाशः केशरी माषो वसुयारिः करालकः ।
भट्ट वंशोद्भवा एते शाण्डिल्ये षोडस स्मृताः ॥

कुलदीपिका पुस्तकाः।

अर्थ – कुलदीपिका में लिखा है वन्य, कुसुम, दीर्घागी, घोषली, वटव्यालक, पारी, कुली कुसारि, कुलभि, सेयक, गढ़, आकाश केशरी, माष, वसुयारी, करालक ये शाण्डिल्य गोत्री सोलह पुत्र भट्ट के थे।

दक्ष – के सोलह पुत्र हुए, इन्होंने भी सोलह ग्राम दान में प्राप्त किये थे, और सोलह गाँव की उपाधी प्राप्त की थी।

श्लोक – चट्टोऽम्बुली तैलवाटी षोडारिर्हडगूढ़कौ ।
भूरिश्च पालधिश्चैव पर्कटिः पुषली तथा ॥
मूलग्रामी च कोयारी पलसायी च पीतकः ।
सिमिलायी तथा भट्ट इमे काश्यप संज्ञकाः ॥

कुलदीपिका पु.।

अर्थ – चट्ट, अम्बुली, तैलवाटी, षोडारि, हड, गूढ़क, भरि, पालधि, पर्कटि, पुषली, मूलग्रामी, कोयारि, पलसायी, पीतक, सिमिलायी, भट्ट ये काश्यप गोत्री दक्ष के पुत्र हुए।

श्री हर्ष के चार पुत्र हुए इस कारण यह वंश चारगांई कहलाया।

श्लोक – आदो मुखटी डिण्डी च साहरी रायकस्तथा ।
भारद्वाजा इमें जाताः श्री हर्षस्यं तनूभ्दवाः ॥

अर्थ – मुखटी, डिण्डी, साहरी, रायक ये चार पुत्र जो भारद्वाज गोत्री श्री हर्ष के उत्पन्न हुए। वेदगर्भ के – बारह पुत्र उत्पन्न हुए इसके अनुसार इन्हें बारहगांई की उपाधि मिली।

श्लोक – गांगलि पुंसको नन्दी घंटाकुन्दसियारिकाः ।
साटो दायो तथा नायी पारी वाली च सिद्वलः ॥
वेदगर्भोभ्दवा एते सावर्णो द्वादश स्मृताः ।

अर्थ – गांगल, पुसिक, नन्दी ग्रामी, घन्टेग्रामी, सियारिक, साटे, दायी, नायी, पारीहालवाली, सिद्वल ये बारह पुत्र विख्यात हुए जो सावर्णि गोत्री वेदगर्भ के हुए। बारहगांई कहे गये।

छन्दड के – आठ पुत्र हुए उनके अनुसार ये आठ ग्रामी या अष्टगांई कहे गये।

श्लोक - काश्चिबिल्ली महिन्ता च पूतितुण्डश्च पिप्पली ।
घोपालो वापुलिश्चैव काज्जरी च तथैव च ॥
सिमिलालश्च विज्ञेता इमे वात्स्यक संज्ञकाः ।

कुलदीपिका पुस्तकाः ।

अर्थ - कांश्चिविल्ली, महिन्ता, पूतितुण्ड, पिप्पली, घोपाल, वापुलि, कांजरी, सिमिलाल, ये वत्स्य गोत्री छान्दड के आठ पुत्र थे।

आदिशूर राजा के बुलाए ब्राह्मणों के वंश के कई एक पुरुष समाप्त हो गये। इन वंशों को विद्या चर्चा और सदाचार का लोप होंने लगा। इनके दोषों के निवारण की इच्छा से आदिशूर के दौहित्रि वंश के अधस्तन सप्त पुरुष वंशाधिपति महाराज वल्लालसेंन ने कुल की पृथा संस्थापित की। इन्होंने नौ लक्षणों को कुलीनता का गूण निर्धारित किया वे यह हैं। जो नीचे लिखे गये हैं।

श्लोक - आचारो विनयो विद्या प्रतिष्ठा तीर्थ दर्शनम् ।
निष्ठा वृत्तिस्तपो दानं नवधा कुललक्षणम् ॥

अर्थ - कुलदीपिका में लिखा है, कि आचार, विनय, विद्या, प्रतिष्ठा, तीर्थ दर्शन, कर्मनिष्ठा, श्रेष्ठ वृत्ति, तप और दान यह नौ ब्राह्मण कुल के लक्षण हैं। जिन ब्राह्मण वंशों में ये जो नौ गुण पाये गये हैं। उन्हें कौलीन पद की पदवी प्रदान की गई। राठीय ब्राह्मणों के 56 गाँव थे। उनमें वन्ध, चट्ट, मुखटी, घोपाल, पूतितुण्ड, गंगोली, कांजीलाल और कुन्द ग्रामी ये आठगांई सप्पूर्ण रूप से नवगुण विशिष्ट थे। इस कारण इनका कौलीन मर्यादा प्राप्त हुई। पालवी, पर्कटी, सिमिलायी, वापुली आदि 34 गांई आठ गुण विशिष्ट थे। इस कारण इनको श्रोत्रिय संज्ञा प्राप्त हुई और दीर्घागी, परिहा, कुलगामी, पोंडारी, प्रभृति ये चौदह गांई न्यून गुणों से संयुक्त थे। इसलिए इनको गौण कुलीन संज्ञा हुई। इनके सिवाइ वंशज नाम और प्रकार के ब्राह्मण हैं। ये सब कुलीन निकृष्ट वंश में कन्या लेने देने से अपने महात्म्य से रहित हो गये। उन्हीं की वंशज संज्ञा हुई है। वंशजों की मर्यादा गौड कुलीनों के सम है।

(गौड़ सम्प्रदाय)

'बारेन्द्र श्रेणी के ब्राह्मणों का वर्णन"

कान्यकुब्ज देश से आये हुए पंच ब्राह्मण रूप यह बंगाल देश में महावृक्ष रोपित हुआ। राठी और वारेन्द्र श्रेर्णी उनकी दो शाखा मात्र हैं। दोनो श्रेर्णी ही आदिशूरराजा के बुलाए थे जो कान्यकुब्जा व त्रिहुतिया के थे पंचयाज्ञिक ब्राह्मणों से अपनी उत्पत्ति का दावा भरते हैं। राठी कुल शास्त्र के मत से पाँच ब्राह्मणों के नाम भट्टनारायण, दक्ष, वेदगर्भ, छान्दड और श्रीहर्ष हैं, और वारेन्द्रों के मत से उनके नाम नारायणभट्ट, सुसेन, पाराशर, गदाधर और गौतम हैं। परन्तु गोत्र दोनों पक्षों में एक ही प्रकार के हैं। कि समय और किस प्रकार कान्यकुब्ज सन्तान दो श्रेणियों में विभक्त हुई, इसका ठीक से निर्णय करना बहुत कठिन है। कुछों का

अनुमान है, कि सात आठ पीढ़ी के उपरान्त कान्यकुब्जों की वृद्धि बड़ी विलक्षण हुई। तब उनके परिवार के मध्य ग्रह विच्छेद हुआ तब वे दो भागों में विभाजित होकर पृथक - पृथक दो स्थानों पर निवास करने लगे। जो भागीरथी के पश्चिम और गंगा के दक्षिण तट के मध्यवर्ती राठी या राठ्देश है वहाँ निवास करने लगे इसी से उनकी संज्ञा राठी हुई।

और जो वारेन्द्र देश अर्थात पद्मा नदी के उत्तर एवं करतोया और महानदी के मध्यवर्ती प्रदेश में वास करने लगे, वे वारेन्द्र नाम से कहे गये, कोई कोई कहते हैं, कि इनको महाराजा बल्लालसेंन ने कौलीन मर्यादा स्थापन के पहले ब्राह्मणों को दो श्रेणियों में विभक्त किया। जो भी हो श्रेंणी बन्धन से पहले दोनों श्रेंणी का जाति सम्बन्ध एक बार लोप सा हो गया था। और परस्पर आहार, व्यवहार, आदान, प्रदान आदि रहित हो गया था। मौजूदा समय में भी दोनों श्रेंणी की अवस्था देखने से एक ही आदि पुरुष से सम्भूत है। यह बात सहसा प्रतीत नहीं होती है। वारेन्द्रों ने राजा के समीप जाकर निवास के निमित्त एक एक गाँव पाया था। उनमें एक शतगांई है उनमें पन्द्रह गांई प्रधान है। महाराजा बल्लालसेंन ने इनके मध्य में भी कौलीन प्रथा स्थापित की थी, सुतराम इनके मध्य में श्रीकुलीन, श्रोत्रिय और कष्टश्रोत्रिय ये तीन श्रेंणी हैं। मैत्र, भीम, रूद्र, वागत्री, संयामिनी, लाहिडी, और मादुड़ी ये एक गाँव कुलीन हैं।

करंज, नन्दनावासी, भटोशाली, चम्पटी, मम्पटी, लाडुली, कामदेवक और आदित्य ये सिद्धि श्रोत्रिय कहलाए। अवशिष्ट 85 गांई गौड़ और कष्ट श्रोत्रिय कहकर विख्यात हुए हैं, वारेन्द्र के वंशजों को काप कहते हैं।

पंचब्राह्मणों के आगमन से पहले वंगदेश में ब्राह्मणों के सात सौ घर थे, वह विद्या ब्राह्मरात्व और आचारादि विषयों में कान्यकुब्जों से न्यून थे। इनके गोत्र भी पंचगोत्र से भिन्न थे। इस कारणबस कान्यकुब्जोंके साथ जातिवंश से इनका मिलन न हुआ। इनकी सप्तशती नाम से विख्यात एक पृथक सम्प्रदाय अश्रद्धेय होकर निवास करती थी। इनके मध्य में आरथ, वालखाभि, भगाये, जगाये, पिखूरी, मुलकजूरी, गांई आदि इनकी उपाधि थीं। इस समय सप्तशती ब्राह्मण बहुत थोड़े हैं। इससे बोध होता हैं, कि कितने एक इनमें से कालक्रम से राटी, वारेन्द्र और वैदिक श्रेंणी में मिल गये। कोई कोई नीच जातियों के पुरोहित स्वीकार करके तथा कोई निकृष्ट दान ग्रहण करने से वर्णब्राह्मण कोई कोटि अग्रदानी उनके बीच में दो चार घर अब भी स्वभाव में निवास करते हैं।

'वैदिक श्रेंणी"

वैदिक नाम से प्रसिद्ध इस देश में ब्राह्मणों की और एक सम्प्रदाय है, यह भी दो श्रेंणीयों में विभक्त है, दक्षिणात्य वैदिक, पाश्चात्य वैदिक। यह द्रवडादि दक्षिण देश निवासी हैं, और वहीं से आये हैं। वे दक्षिणात्य वैदिक है और जो वाराणसी आदि पश्चिम देश के निवासी अथवा दक्षिणात्यों से पीछे आये हैं वे पश्चात वैदिक कहे जाते हैं।

'गदाधार'

बंगाल प्रान्त के नंदिया जिले के राठी और वारेन्द्र ब्राह्मणों की साम्प्रदायिक अल्ल है।

'विशेष विवरण'

कुलीन - यह बंगाल प्रान्त के राठीय ब्राह्मणों की एक जाति का सर्वोच्च भेद हैं। राठीय ब्राह्मणों के मुख्य भेद-वंशज, श्रोत्रीय, कष्टश्रोत्रिय, सुधाश्रेष्ठी और कुलीन हैं। इनमें कुलीन सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं। यदि कोई कुलीन अपनी किसी सुधाश्रेष्ठी, कष्टश्रोत्रिय आदि को देना चाहे तो उसका कुलीनत्व सदां के लिए नष्ट हो जाता है। और यदि कोई श्रोत्रिय आदि अपनी कन्या किसी कुलीन को व्याह दे तो वह भी कुलीन हो जाता है। इससे कुलीनों की कन्याओं की दशा उनके उत्तम, मध्यम के पद विचार से जो होती है वह कथन से बाहर है इनका विचार तो कान्यकुब्जों से भी बढ़ कर माना जाता है। राजा बल्लालसेंनी ने गुणों के विचार पर वहाँ के ब्राह्मणों के तीन विभाग किये कुलीन, श्रोत्रिय और वंशज जो सभी

प्रकार कुल गुण सम्पन्न थे। वह कुलीन, जो वेद पाठी कर्मठ थे, वे श्रोत्रिय ओर जो साधारण स्थिति के थे, वे वंशज कहाये। इनमें कुलीनों की मान मर्यादा बहुत बढ़ी, यह कन्या दान कुलीनों के सिवाय अन्यत्र नहीं करते, श्रोत्रिय यदि अपनी कन्या इनको देना चाहें तो बहुत सा धन लेकर इनकी कन्या को व्याहते हैं। श्रोत्रिय आदि यह समझते हैं, कि कन्या यदि कुलीन के घर जायेगी कन्या की सन्तान भी कुलीन कही जायेगी। कुलीन ब्राह्मण सौ सौ दो दो सौ व्याह करते हैं, और वारी वारी फिर ससुराल में जाया करते हैं। प्राय: उन कन्याओं का समय पीहर में ही बीता करता है। और पति देव समय समय पर भेंट सत्कार लाया करते हैं और इस प्रकार से एक एक ससुराल में वर्षो बाद फेरा होता है, स्त्रीयां अपने पति को पति और अपनी स्त्रीयों को पहिचानते तक नहीं एक पति के परलोक गमन होंने से उसको व्याही गई सभी स्त्रीयां विधवा हो जाती हैं। इन वंशों में कुरीतियां जो हो रही है, अगर यह ठीक कर दी जाये तो ब्राह्मण जाति का बड़ा उपकार होगा।

काप - यह बंगाली ब्राह्मण जातिका एक भेद है, ये वारेन्द्र समुदाय के अन्तर्गत आते हैं। कहा जाता था कि ये मन्त्र से वर्षा देते थे। इस कारण से इनकी वारेन्द्र संज्ञा हुई इनकी उपाधि का लेख इस प्रकार है। कि मधुमोइत्र नाम के ब्राह्मण की कई स्त्रीयां थी उनकी पहली स्त्री से काप उत्पन्न हुए, यह मधुमइत्र अतरई नदी के किनारे एक नये गाँव का रहने वाला था। यह भी कुलीनी कुलीनों के समान कई विवाहों के अधिकारी हैं। उनके प्रथम विवाह का वर्णन इस प्रकार है, कि एक समय एक अकुलीन ब्राह्मण कुलीनों के मध्य में जीमने को चला गया वहाँ उसका बड़ा अपमान हुआ। तब उसने कुलीन होंने का प्रयत्न किया, और अपनी कन्या किसी कुलीन को देनी निश्चय कर अपनी स्त्री, कन्या तथा गऊ को लेकर और नाव पर सवार होकर जहाँ मधुमोइत्र रहता था, उसी गाँव के किनारे गया। उसने वहाँ मधुमोइत्र ब्राह्मण का पता पूछा जिससे पूछा वह मधुमोइत्र ही था। वह उस समय सूर्य को अर्द्ध दे रहा था। उसने कहा मधुमोइत्र मेरा

ही नाम है, कहिए क्या आज्ञा है। तब उस अकुलीन ने कहा कि या तो आप हमारी कन्या व्याह लें नहीं तो मैं अपने स्त्री तथा कन्या व मऊ सहित नाव डुबाकर मर जाऊँगा। मधु दयावान था। उसने उसकी करूण पुकार सुनकर उसकी कन्या से विवाह रचा लिया, मधु के पूर्व पुत्रों ने इस बात से बहुत बुरा माना, और उसी दिन से अलग रहने लगे। उस समय वृद्ध मधु का पालन उसका एक कुलीन जीजा करता था। मधु ने क्रोध कर के अपने पुत्रों को काप अर्थात कर्तव्यहींन कहकर पुकारा उस दिन से वह वंश काप कहा गया। यह वंश कुलीन और श्रोत्रियों के मध्य माना जाता है।

'गंगोली'

यह वंगीय राठी ब्राह्मण समुदाय का कुल नाम है। इसका अपभ्रंश अब गंगो व गंगोली है। यथा गंगोपाध्याय यह कुल उस प्रान्त में प्रतिष्ठित समझा जाता है। बल्लालसेंन ने जिन ब्राह्मणों को गंगा के समीपी नगरों की उपाध्यायी दी थी, वे गंगोपाध्याय कहलाए। कोई कहते हैं, इसका अपभ्रंश गंगोली हो गया हैं। परन्तु अब तो गंगोली ही विख्यात पदवी है।

'कश्मीरी ब्राह्मण'

कश्मीर देशनिवासी ब्राह्मण कश्मीरी ब्राह्मण कहाते हैं। सौन्दर्य, विद्या, सद्गुण, सम्पन्नता इनमें इस समय तक मौजूद है। इसजाति ने आज तक भी हींनता नहीं दिखाई जैसा कि अन्य ब्राह्मण जाति दींन, हींन होकर विचर रही है। यह अपनी मान मर्यादा को इस समय तक निवाह रहे हैं। इनका कुलपद पंडित कहाता है। दूसरे ब्राह्मणों के समान इनके गोत्र, प्रवर भी हैं। इनका विवाह देखने योग्य होता है।

गुह – यह दक्षिणी राठी ब्राह्मणों की एक जाति है।

'शुक ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्री वैंकटेश महात्म्य में लिखा है, कि छाया शुक के विवाह होंने पर उन्होंने वेंकटाचल पर्वत पर जाके पद्म सरोवर के समीप कठिन तपस्या की।

श्लोक – प्राप्यं कृत्वा तपस्तीव्रं सरोम्बुजदलैः सृजनं ।
समेयान्मान सान्पुत्रानष्टोत्तर शतं द्विजान् ॥

वहाँ कमलपत्रों से एक सौआठ मानसी पुत्रों को उत्पन्न किया। और भारद्वाजादि छः गोत्र उनके किये और बेंकटराजी के अर्चनादि में उनको नियुक्त किया। उस दिन से ब्राह्मण तथा उनकी सन्तान शुक ब्राह्मण नाम से विख्यात हुई यह द्रविड़ सम्प्रदायी हैं।

26 'दधीच कुल उत्पत्ति वर्णन'

यह वर्णन दधीच संहिता से लिया गया है, जो कि नीलकण्ठ विरिचित हैं। उस समय ब्रह्मा जी ने अथर्वण ऋषि को उत्पन्न करि के कर्दम की कन्या जो शांति नाम की थी उसे से विवाह कराया, उनके एक कन्या और एक पुत्र उत्पन्न हुआ, पुत्र का नाम दधीच तथा कन्या का नाम नारायणी था। वह भाद्र शुक्ला अष्टमी को जन्मे थे दधीच का विवाह तृण विन्दु की पुत्री वेदवती से हुआ एक समय दधीच की तपस्या से भयभीत होकर इन्द्र ने तप क्षीण करने के लिए एक अप्सरा को भेजा उसे देख ऋषि मोहित हो गये, और उनका वीर्य रखलित हो गया। तब ब्रह्मा जी ने सरस्वती को वीर्य धारण करने के लिए प्रेषित किया और कहा कि अगर तुम यह वीर्य धारण न करोगी तो पृथ्वी भष्म हो जायेगी। तब सरस्वती ने तत्काल अपने योगबल से उस वीर्य को कण्ठ, कान, नाभि और हृदय इन चार स्थानों में धारण किया और उस वीर्य से चार पुत्र उत्पन्न हुए, जो कण्ठ से उत्पन्न वह और उसके वंशज सभी श्रीकण्ठ सारस्वत ब्राह्मण कहलाये, और कान से उत्पन्न हुआ, वह और उसके वंशज कर्णाटकी सारस्वत कहाये और नाभि से उत्पन्न हुआ, वह और उसके वंशज हरिदेव सारस्वत कहे गये, इनके वंश को स्थिर रखने का वर देकर देवी स्वर्ग को चली गई।

श्लोक - कण्ठे जाताश्च श्रीकष्ठाः कर्णे कर्णाटकाः स्वयम् ।
तब नाभौ च यो जाताः सारस्वतं कुलधिपः ॥
हृदिं जो हरिदेवोऽस्ति सर्वे सारस्वताः स्मृताः ।

पीछें ऋषि के अंश से तृणविन्दु की पुत्री वेदवती के गर्भ से पिप्लाद ऋषि ने जन्म लिया। यह बड़े तपस्वी हुए इनका विवाह अनरण्य राजा की पद्मा नामक कन्या से हुआ इनके इनके इस स्त्री से वृहद्वत्स, गौतम, भार्गव, भारद्वाज, कौत्सक वा कौशिक, कश्यप, शाण्डिल्य, अत्रि, पाराशर, कपिल, गर्ग, कनिष्ट, वत्स व मम्म ये बारह पुत्र उत्पन्न हुए इनमें एक एक के बारह सन्तान पैदा हुई और दधीच का वंश बहुत बढ़ा कल्पान्तर के भेद से इनकी अनेक कथा हैं।

'छन्यात या छः जाति ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वर्णन'

ब्रहमा जी की वंश परम्परा में एक ब्रह्मर्षि उत्पन्न हुआ। उनके वंश में पारब्रह्म और पारब्रह्म के कृपाचार्य, कृपाचार्य के दो पुत्र हुए जिनमें छोटे पुत्र शक्ति के पाराशर नामादि के पांच पुत्र हुए इसी पाराशर के वंश में पारिख दूसरे सारस्वत तीसरा पुत्र जो ग्वाला नाम का हुआ चौथा गौतम नाम का पाँचवा शृंगी नाम का पुत्र हुआ।

1. पहला पुत्र पारिख हुआ इसके वंशधर पारिख ब्राह्मण कहाये। या कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

2. दूसरा पुत्र सारस्वत नाम का हुआ इसके वंशधर सारस्वत ब्राह्मण कहाये।

3. तीसरा पुत्र ग्वाला या गौड़ नाम करके हुआ इसके वंशधर गौड़ ब्राह्मण कहाये।

4. चौथा पुत्र गौतम करिके हुआ इसके वंशधर गौतम ब्राह्मण यह गुर्जर गौड़ ब्राह्मण भी कहे गये।

5. पांचवा पुत्र श्रृंगी नाम से हुआ, इसके वंश के सिखावाल ब्राह्मण कहलाये या उत्कल ब्राह्मण दधीच कुल में ही दायमा ब्राह्मण हुए, वह कथा ऐसी है। कि दधीच की सत्यप्रभा नामक स्त्री अपने पति का परलोक गमन सुनकर अपने गर्भ को पीपल के पेड़ के नीचे त्याग कर भष्म हो गई पीछे स्वर्ग में जाकर बालक के निमित्त बहुत दया आई तब उसने देवी की प्रार्थना की तब मूल प्रकृति ने उसके वंश में अपने पूजने का विधान स्वीकार कराकर उस बालक के पालने को आई और पीपल वृक्ष के नीचे उस बालक की स्थिति होने से उसका पिप्लादि हुआ और दयापूर्वक पालित होने से उस वंश के ब्राह्मण दायमा कहलाये। इनको कपालात्मा देवी का जो पुष्कर से बीच कोस है उसका दर्शन पूजा अवश्य करते हैं। इनके भी भेद ग्रामों के नाम से हुआ। दायमा ब्राह्मणों के ग्यारह गोत्र मध्यान्दिनी शाखा शुक्ल यजुर्वेदीय है। छन्यांतो की उत्पत्ति सुनकर और भाटों के बखान के द्वारा लिखी गई है न कि शास्त्र प्रमाण से। यह छः छन्यात गौड़ जाति में हैं।

"दायमा ब्राह्मणों के गोत्रसंख्या" (6 छन्यत जाति)

1. गौतम गोत्र शाखा

सं.	गोत्र	अवटंक
1.	पाटोधा	जोशी
2.	पलोड	जोशी
3.	नाहावाल	जोशी
4.	कुम्बा	जोशी
5.	कण्ठ	जोशी
6.	खटोल	जोशी
7.	खटोज	जोशी
8.	बुडसुडा	व्यास
9.	बगडया	व्यास
10.	वेडवन्त	व्यास
11.	वानडसीदश	व्यास
12.	लेलेधा	व्यास
13.	काकडा	व्यास
14.	भगवाणी	व्यास
15.	भुवाल	व्यास

2. 'वत्स शाखा 17 अवटंक'

सं.	गोत्र	अवटंक
1.	रतावा	व्यास
2.	कोतवाल	व्यास
3.	बलदवा	व्यास
4.	इनाण्या	व्यास
5.	चोलरवा	व्यास
6.	चोपट	व्यास
7.	इटोधा	व्यास
8.	पोलगला	व्यास
9.	नोसरा	व्यास
10.	नामावाल	व्यास
11.	अजमेरा	व्यास
12.	कुकडा	व्यास
13.	तरणावा	व्यास
14.	अवडिग	व्यास

15.	डिडियेल	व्यास
16.	मुस्या	व्यास
17.	भग	व्यास

3. 'भार्गव गोत्र'

सं.	गोत्र	अवटंक
1.	इनाण्या	व्यास
2.	पथाण्य	व्यास
3.	कासल्या	व्यास
4.	शिललोधा	व्यास
5.	कुराडवा	व्यास
6.	जजोध	व्यास
7.	खेवर	व्यास
8.	विसाव	व्यास
9.	लाडनवा	व्यास
10.	वडागण	व्यास
11.	कडलवा	व्यास
12.	कापडोधा	व्यास

4. 'कौच्छस गोत्र'

सं.	गोत्र	अवटंक
1.	डिडवाण्या	व्यास
2.	मालोधा	व्यास
3.	धावडोदा	व्यास
4.	जाडल्या	व्यास
5.	डोमा या आचार्य	आचार्य
6.	मुडेल	आचार्य
7.	माणजवाल	आचार्य
8.	सोसी	आचार्य
9.	गोटेचा	आचार्य
10.	कुदाल	आचार्य
11.	त्रोतावाल	आचार्य

5. 'भारद्वाज गोत्र'

सं.	गोत्र	अवटंक
1.	पेडतवाल	
2.	पेडतवाल	शुक्ल
3.	करेशा	शुक्ल
4.	मालोधा	शुक्ल
5.	आशोपा	शुक्ल
6.	ल्यालि	व्यास
7.	वरमोय	व्यास
8.	इन्दोरवाल	व्यास
9.	हलसुरा	जोशी
10.	भटाल्या	जोशी
11.	गदिया	व्यास
12.	सोल्याणि	व्यास

6. 'काश्यप गोत्र शाखा'

सं.	गोत्र	अवटंक
1.	चौरायडा	
2.	दिरोल्या	
3.	जामावाल	
4.	शिरगोडा	
5.	रायथला	
6.	वडवा	
7.	वलाया	
8.	चोलक्या	

7. शाण्डिल्य गोत्र

1.	खडा
2.	वेडिया
3.	वेड
4.	गोठडावाल
5.	दहेवाल

8. पाराशर गोत्र

1. मेंडा
2. पाराशर्या

9. कपिल गोत्र

1. चीपडा

10. आत्रेय गोत्र

1. सुटवाल
2. जुजणोधा
3. डुवास्या
4. सुकल्या

11. गर्ग गोत्र

1. तुलस्या

(इति छन्यात जाति गौड़ सम्प्रदाय)

मम्म शाखा – इस शाखा के लोग अनाचार के कारण मुसलमान या म्लेच्छ हो गये।

'दशावाल ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

कहा जाता है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टी की वृद्धि हेतु गुजरात देश में वन्नास नदी के समीप ब्रह्म क्षेत्र में विश्वकर्मा से एक दर्शनपुर नामक सुन्दर नगर वनवाया था। जिसे मौजूदा समय में आवडीसा उड़ीसा नाम से कहते हैं। उसमें सिद्धि माता का मन्दिर निर्माण करके दर्भ से 18 सहस्त्र ब्राह्मण निर्माण कर उस नगर में स्थापित किये और सिद्धि माता की उपासना का आदेश दिया। पीछे देवताओं ने उनको कन्याए दी, और भारद्वाज, वशिष्ठ, शाण्डिल्य, कौशिक, श्वेतमुख, पोलस्त्य, कश्यप और पाराशर इन आठ ऋषियों से ब्रह्मा जी ने कहा, कि आप अपने नाम के गोत्र से इनका विवाह कराओं ऋषियों ने वैसा ही किया। देवकन्याओं ने कहा जब तक इस वंश का कोई प्रतिग्रह नहीं लेगा तब तक हम इनके साथ में निर्वाह करेंगी पीछे उन ब्राह्मणों की सेवार्थ 36000 वैश्य स्त्रियों सहित सेवक रूप से दिये वे वैश्य दशावाल कहाये इन सबका ब्रह्म नाम गोत्र है। कलि ने अपने आगमन काल में ब्राह्मण वेष धारण कर ब्राह्मणों की प्रतिज्ञा नष्ट करने को दिशा नगर में प्रवेश किया, और उस नगर में एक ब्राह्मण के यहाँ कन्यादान हो रहा था। वहाँ कलिराज ने ब्राह्मण के रूप से विवाद चलाया कि बिना प्रतिग्रह के विवाह नहीं होता। हालाँकि हम प्रतिग्रह नहीं करते पर यह ब्राह्मण यदि प्रतिग्रह करें तो हम भी कर सकते हैं। उस समय दिशावाल बनियों ने प्रार्थना की वे ब्राह्मण कलियुग की माया से मोहित हो गये, और दान लिया। कलि तो तुरन्त अन्तर्ध्यान हो गया पर ब्राह्मणों की घरवाली देवांगनाए तत्काल प्रतिग्रह दोष के कारण पतियों को छोडकर स्वर्ग में चली गई। तब दिशावाल वैश्यों पर क्रोध से ब्राह्मणों ने आघात करना आरम्भ किया, तब वे व्याकुल होकर जो दशाड नामक गाँव था। उसे छोड़कर तीसरे गाँव में बसे वेपंचा दिशावाल कहे गये, और जो दशाड गाँव में रहे सो वे दिशा दशवाल कहे गये, और जो दिशा गाँव में रहे सो वे वीसा दिशावाल कहे गये। जो दोनों गाँवो को छोडकर तीसरे गाँव में रहे वे पंचादिशावाल अपने कर्मकाण्ड से हीन हो गये, और सत्शूद्र हुए। जब नवदुर्गा

में ब्राह्मण देवी की पूजा में बैठे थे, उस समय एक ऋषि वायडापुर में आये और उन्होंने वहाँ के ब्राह्मणों से विवाहार्थ एक कन्या माँगी पर किसी ने न दी तब क्रोध से उन्होंने श्राप दिया कि यहाँ की कन्याओं का पाणिग्रहण जो भी वायडा ब्राह्मण करेगा। वह तत्काल मर जायेगा। यह जानकर ब्राह्मण बड़े दु:खी हुए और कन्याओं को साथ ले दिशा गाँव में आये, और सिद्धि माता की स्तुति की तब देवी बोली यहाँ 16 सहस्त्र कन्या तुम्हारे पास हैं, और दो सहस्त्र की कमी है। सो दो सहस्त्र झारोले ब्राह्मणों की कन्या एक दैत्य हरण करके ले गया है, उसे मारकर वह कन्याओं को लाओ मैं आप लोगों की सहायता करूँगी तब वे ब्राह्मण उस दैत्य को मार उन दो सहस्त्र कन्याओं को लाये तब वायडे और झारोले दोनो कोटि के ब्राह्मणों ने मिलकर दिशाबाल ब्राह्मणों को अट्ठारह सहस्त्र कन्याओं का संकल्प किया। इन दिशावाल ब्राह्मणों में धोरी, चौधरी, व्यास, जोशी, रावल, पंड्या, अध्यारू मेहता आदि अवटंक हैं।

(गुर्जर सम्प्रदाय के हैं।)

'खेडावाल ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

गुर्जर देश में एक ब्रह्मखेट नाम का नगर है। उस देश में वेणुवत्स नामक एक राजा था, इल्व नगर निर्माण करके रहता था। उसके कोई पुत्र नहीं था। एक समय उस देश में द्रविड़ देश के ब्राह्मण तीर्थ यात्रा के उद्देश्यसे आये, और अपना उत्तरीय वस्त्र नदीपर बिछाकर नदी पार की राजा ने नाविकों से यह वृतान्त सुनकर उनको वहाँ बुलाया, और पुत्र होंने के निमित्त उनसे पुत्रेष्ठ यज्ञ कराया। जब दान लेने का समय आया तब उन दोनों द्रविड़ भ्राताओं में से बडे भाई की इच्छा दान लेने की हुई, और चौदह सौ ब्राह्मण उनके साथी हुए। छोटे भाई ने दान लेने से अनिच्छा प्रकट की, और उसके साथी ढ़ाई सौ ब्राह्मण हुए। राजा ने यह गड़बड़ देश इल्व नगर के द्वार बन्द करा दिये। इतने पर भी वे 250 ब्राह्मण दीवार लाँघ कर निकल गये वे गाँव से बाहर जाकर खड़े हो गये। खड़े होंने कारण इनको खेडावाल ब्राह्मण कहा गया। वे इस समय धर्मकर्म निष्ट गुजरात में ओड उमरेट प्रान्त में तैलंग, द्रविड देश में चीनपट्टन, मदुरा, पंचनन्द, तंजापुर, तिणवल्ली आदि गाँवो में प्रसिद्ध हैं। राजा ने इन ब्राह्मणों को फिर भी ताम्बूलों में लिखकर 24 गाँव दिये और चौदह सौ ब्राह्मणों को स्वर्ण और गऊ दान देकर ब्रह्मखेटकपुर में बसाया। राजा का मन्त्री लाड वैश्य था। उसने इस जाति के ब्राह्मणों को अपने पुरोहित्य में वरण किया। खेड़ावाल ब्राह्मणों में एक खेटुआ ब्राह्मण जाति हैं। यह ओदुम्बर ब्राह्मण की वृति करते हैं।

'खेड़ावाल ब्राह्मणों के गाँव गोत्रादि'

सं.	गाँव	कुलदेवी	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा
1.	मुरेली	उमादेवी	शाण्डिल्य	असित, देवल, शाण्डिल्य	ऋगुवेद	अश्व.
2.	राहोली	मलावी	कंपिल, आंगिरस	वार्हस्पत्य, च्यवन, उपमन्यु	ऋगुवेद	अश्व.

3.	विष्णोली	विश्वावसु	उपमन्यु	वत्साश्रित, भारद्वाज	ऋगुवेद	अश्व.
4.	त्रिणोली	कुलेश्वरी	चित्रानस	विश्वामित्र, देवराज, चित्रानस	ऋगुवेद	अश्व.
5.	आत्रोली	दिवाकरवाई	जातूकर्ण	विश्वामित्र, वच्छस	यजुवेद	मध्या.
6.	पंचोली	आशापुरी	भारद्वाज	आंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज	ऋगुवेद	अश्व.
7.	सिंगाली	मोराही	उपनस	विश्वामित्र, ओदज, देवराज	ऋगुवेद	अश्व.
8.	मोघोली	महालक्ष्मी	वत्सस	उरपराप्रव, च्यवन, भारद्वाज जमदग्नि	ऋगुवेद	अश्व.
9.	वळेली	चामुंडेश्वरी	गौतम	आंगिरस, ओतथ्य, गौतम	ऋगुवेद	अश्व.
10.	कंगाली	महालक्ष्मी	शामनस	भार्गव, च्यवन, ओर्व, जमदग्नि	ऋगुवेद	अश्व.
11.	वडेली	वडेवी	लमबुकरण	असित, देवराज	ऋगुवेद	अश्व.
12.	सिहोली	श्रिया	काश्यप	अवछंद, नैध्रुव, काश्यप	सामवेद	कौथुमी
13.	सियोली	महालक्ष्मी	कौडिन्य	वशिष्ठ, मित्रावरूण, कौडिन्य	ऋगुवेद	अश्व.
14.	रेनाली	भूलेश्वरी	लातपस	वार्हस्पत्य, इन्द्रवाह, समानस	यजुर्वेद	मध्या.
15.	लिहाली	रविदेवी	सजानस	आंगिरस, भारद्वाज, गौतम	यजुर्वेद	मध्या.
16.	नानोली	नित्यादेवी	विल्वस	जानायत, अगस्त्य, वेनाघ	अथर्ववेद	सा.
17.	आदरोली	पिठाई	पोनस	आंगिरस, आस्तीक, वार्हस्पत्य	सामवेद	कौथुमी
18.	काछेली	कृष्णायी	कृष्णात्रि	असित, देवल, विश्वामित्र	यजुर्वेद	मध्या.
19.	मारेली	विल्वई	गार्ग्यस	आंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज	ऋगुवेद	अश्व.
20.	भूपेली	वेहेमाई	मुद्गल	मुद्गल, आंगिरस, भारद्वाज	ऋगुवेद	अश्व.
21.	खुटाली	मालाया	लौकानस	विश्वामित्र, देवराज, ओदल्य	यजुर्वेद	मध्या.
22.	कालोली	पिठाई	वार्हस्पत्य	विश्वामित्र, देवरात	अथर्ववेद	सा.
23.	चंगेली	चंगेली	आंगिरस	अत्रि, शिवशिव, अर्चन	यजुर्वेद	मध्या.
24.	हिरोली	हिरायी	आंगिरस	नैधुव, शौनक, आंगिरस	यजुर्वेद	मध्या.

(इति गुर्जर सम्प्रदाय)

'रायकवाल ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

पूर्व समय में सत्यपुंग नामक एक महर्षि थे। वे 1292 शिष्यों के साथ नन्धावर्त में निवास करते थे। एक समय गुजरात देशान्तरगत कठोदर गाँव के राजा ने यज्ञ करने के निमित्त इन ऋषिराज को बुलाया, और यज्ञ कराकर उनको कठोदर, कुबेरथली, कणभार, कुजाडु, कलोली यह पांच गाँव देकर शिष्यों सहित वहीं निवास कराया। मुनिराज लक्ष्मी की आराधना करते हुए वहाँ रहने लगे। एक समय प्रसन्न हो जप के समय लक्ष्मी ने ऋषि से वर माँगने को कहा परन्तु ऋषि को उस समय निद्रा आगई और लक्ष्मी अन्तर्ध्यान हो गई। तब ऋषि की आँखे खुली पीछे जाकर लक्ष्मी का गमन जान कराय: कराय: ऐसा कहने लगा, अर्थात लक्ष्मी माँ धन कहाँ हैं। और शिष्यों से कहा कि तुमने हमें जगाया नहीं इस कारण तुम सब रैक्ववास अर्थात रायकवाल नाम से विख्यात होंगे अर्थात राय:– लक्ष्मी कोंन से स्थल में है। ऐसे स्थान में निवास करने से रेक्ववास नाम हुआ, इनके गोत्र कुत्स, वत्स, वशिष्ठ, गालव, भारद्वाज, उपमन्यु, कृष्णात्रेय, गर्ग, कश्यप, शाण्डिल्य, अत्रि, कुशिक, पाराशर, गौतम, उद्दालक, कौशिक, आंगिरस, कात्यायन, यह अट्ठारह हैं। कुलदेवी ललिताविका, मूलनाथ, शिव स्थान, कठोदरपुर यजुर्वेद, मध्यान्दिनी शाखा कोकिल मत को मानते हैं। इनमें कुछ समय से छोटे–बड़े दो भेद हो गये हैं सम्वत् 1930 मेष के सूर्य वैशाख शुक्ल पक्ष में द्वितीया के दिन राजा राम ने दोनों को एकत्रित किया था। ये गुर्जर सम्प्रदाय के हैं।

(गुर्जर सम्प्रदाय)

'रोडपलादि ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

अब मैं रोयडा ब्राह्मणों वा नापल, वोरसदा, हरसोला, गोरवाल, वावीसा, और गारूड ब्राह्मणों की उत्पत्ति लिखता हूँ। पूर्वी ओदीच्य ब्राह्मण जो सिद्धिपुर क्षेत्र में निवास करते थे। उनमें से कितने एक ब्राह्मण मारवाड देश में गये। वहाँ जो रोयडा गाँव में बसे थे, वे रोयडा कहाये और जो दूसरे वजवाणा गाँव में रहने से उसी नाम से युक्त हुए। यह लोग खेती बाड़ी का काम करते हैं। कुछ मामूली पढ़े लिखे होते हैं। इनकी कुलदेवी राजेश्वरी हैं इनका भोजन व्यवहार बड़ादरा और म्होड़ ब्राह्मणों में होता है। मौजूदा समय में यह लोग गुजरात देश कठलाद, सरोडा, बीकानेर, अहमदाबाद, घोडासर इन पांच प्रान्तों में निवास करते हैं। दूसरे पूर्वी सहस्त्र ओदीच्य ब्राह्मणों के दो बालक विद्या में पंडित हुए। गुजरात के एक राजा का ऐसा नियम था कि जो विद्वान स्त्री सहित उनके यहाँ जाकर अपनी विद्या की परीक्षा देता उसको गाँव मिलता। इन दोनों ने विचार किया, कि हमारा विवाह हुआ नहीं है, राजा गृहस्थी हुए बिना गाँव देगा, नहीं इससे यह दोनों एक अन्य जाति की स्त्रियों को साथ लेकर अपनी पत्नी के समान सूचित करते हुए राजसभा में गये तब राजा ने इनकी विद्या से प्रसन्न होकर एक को वोरसद तथा दूसरे को नापल ग्राम दिया, नापल से लगे हुए नौ गाँव थे। नापुवोरियागान, मोगरी, नावलि, वेमी, नोमेण, सिंगराय और पुरी उनके नाम थे। पीछे जब वे उन कन्याओं को त्यागने लगे, तब उन्होंने कहा यदि तुम हमारा परित्याग करोगे तो हम राजा से सब भेद खोल

देंगे। तव भय से उन्होंने उन स्त्रीयों को रख लिया, इससे वे अपनी पूर्व जाति से वहिष्कृत हो गये ये नापल और वरसौदे कहाये यह यजुर्वेदीय मध्यान्दिनी शाखा वाले हैं। इनका भोजन और कन्या सम्वन्ध अपने वर्ग में ही होता है। हरसोले की उत्पत्ति इस प्रकार है।

हरसोले – ब्राह्मणों की उत्पत्ति गुजरात में हरीशचन्दपुर एक गाँव है। वह मौजूदा समय में हरसोल कहा जाता है। यह गाँव अहमदाबाद से ईशान में वाईस कोश है। कोई कहते हैं सामला जी इसी पुरी में विराजते हैं। रूदगया महात्मय में इसका उल्लेख है। वहाँ के राजा ने एक यज्ञ करके वह पुर उन ब्राह्मणों को दिया, जो ऋत्विक हुए थे, इस प्रकार इस गाँव के नाम से हरसोले ब्राह्मण कहाये। और उनके सेवक वैश्य भी हरसोले वैश्य कहाये। इन ब्राह्मणों के मुद्गल, कौशिक, भारद्वाज, पाराशर आदि छः गोत्र हैं। इनकी कुलदेवी अष्टभुजी सर्वमंगला देवी है। सामलजी में इनका दर्शन होता है। यह ब्राह्मण इस समय सूरत, म्हांड गदर, खानदेश जिला निवाड़, काशी, हरसौल आदि ग्रामों में पाये जाते हैं।

'गोरवाल वावी से ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

गोरवाल वावी से ब्राह्मणों की उत्पत्ति इस प्रकार है कि एक समय उदैपुर के राजा ने सहस्त्र ओदीच्य ब्राह्मणों को बुलाकर यज्ञ कराया। उसकी दक्षिणा में बाबीस और गोल नामक गाँव और बहुत सा स्वर्ण दान किया, वहाँ रहने वाले वे ब्राह्मण उन गाँवों के नामों से विख्यात हुए। वहाँ परएक गरूडगलिये नामक ब्राह्मणों में निकृष्ट हैं, अधम, चाण्डालादि जातियों के यहाँ कर्म करते हैं, तिथि ग्रह देखते हैं।

(यह भी गुर्जर सम्प्रदाय के अन्तर्गत हैं।)

(इति रोयडा ब्राह्मण उत्पत्ति)

'भार्गव ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

यह प्रमाण वायुप्रोक्त रेवाखण्ड से लिया है। जब शंकर जी कहते हैं, कि रेवानदी के उत्तर की ओर भृगु जी ने बड़ी तपस्या की और शंकर के वरदान तथा माँ लक्ष्मी जी की कृपा से वह स्थान भृगु क्षेत्र कहाया। एक समय भृगु और लक्ष्मी जी का कलह हुआ, तब ब्राह्मणों ने भृगु के भय से असत्य बोला, इस पर लक्ष्मी जी ने वहाँ के चतुर्वेदी ब्राह्मणों को श्राप दिया कि तुम में एकता न होगी और लक्ष्मी बहुत समय तक तुम्हारे यहाँ न रहेगी। इस पर उसी भृगु क्षेत्र में शंकर का भृगु जी ने बड़ा तप किया। तब शिव ने प्रसन्न होकर वर दिया कि यह स्थान वेद शास्त्र सम्पन्न ब्राह्मणों से युक्त होगा। पीछे भृगु की ख्याति नाम की स्त्री से श्री नाम की कन्या उत्पन्न हुई उसका विवाह जब श्रीविष्णु भगवान से हुआ तब नारदादि ऋषि और सब

देवता तथा कश्यपादि महर्षि वहाँ आये तब लक्ष्मी ने विष्णु भगवान की सम्मति से वहाँ बारह हजार ब्राह्मणों को स्थापन किया।

श्लोक - ब्रह्मचर्य व्रतस्थानां पदं ब्राह्मजयैषिणाम् ।
द्वादशैव सहस्त्राणि सन्ति वै सुरसत्तम्

चौबीस सहस्त्र प्रजापत्यि और बारह सहस्त्र ब्रह्म पद की इच्छावाले ब्राह्मण वहाँ लक्ष्मी ने स्थापन किये। वे सब भार्गव ब्राह्मण कहाये।

श्लोक - पंचत्रिशत्सहस्त्राणि वैश्यानामत्र संस्थितिः ।
विश्वकर्माकृतानां च तेषु तिष्टन्तु वै द्विजाः ॥

पैंतीस सहस्त्र वैश्य विश्वकर्मा ने वहाँ उनकी सेवा को स्थापन किये।वे भार्गव वैश्य कहाये यही गौनागौनी तीर्थ है वहीं इनके विवाह होते हैं।

भृगुक्षेत्रं स्थिता ये तु भार्गवास्तव संज्ञया ॥

भृगुक्षेत्र में रहने के कारण यह भार्गव कहाते हैं। इन ब्राह्मणों में दस और बीस भेद हैं। कामलेज गाँवों में जो भार्गवों का समूह है, वे धर्म में बड़ा आलस्य करते हैं, इनका भृगुक्षेत्री ब्राह्मणों से कन्या सम्बन्ध नहीं होता। भृगु क्षेत्र के ब्राह्मण स्वकर्म निष्ठ हैं। (यह भी गुर्जर सम्प्रदाय के हैं।)

27 'मेदपाठ (मेवाड़) ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

यह प्रमाण ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड से लिया गया है। तथा वैश्यों का प्रमाण पद्मपुराण पाताल खण्ड के एकलिंग क्षेत्र महात्म्य के अनुसार डा. मक्खनलाल मिश्र अपनी इस "ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण" नामक पुस्तक में विस्तार से लिखते हैं।

जब नारद जी से तक्षक आदि नागों ने अपने वंश के बिना होने का वृतान्त सुनाया, तब वासिक नाग ने मेवाड देश में जहाँ एकलिंगेश्वर महादेव जी विराजते हैं, वहाँ जाकर शंकर जी की सेवा करने लगा। तब शंकर जी ने प्रसन्न होकर नागराज से आगे होने वाली घटना की शांति के लिए कहा कि मेरे स्थान के समीप तीर्थ भूमि में तुम एक नगर निर्माण करके वहाँ ब्राह्मणों का स्थापन करो वे तुमको आशीर्वाद देंगे उससे तुम्हारी शांति होगी। और उन ब्राह्मणों की सेवा के लिए वैश्य आदि दूसरी जातियाँ स्थापन करो मैं और कात्यायनी उस पुर में निवास करेंगे भट ब्राह्मणों को दान देने से भय हरण करने वाले हुए। इस कारण उस पुर का नाम भयहरण होगा। और हर के भक्त जो ब्राह्मण इस में निवास करेंगे इस कारण इस पुर का दूसरा नाम भट्टहर होगा, और ब्राह्मण जो वैदिक मन्त्रों से इस पुर का रक्षण करते रहेगे इस कारण इस पुर का नाम नागर भी होगा। और पुर के अनुसार ब्राह्मणों के भी तीन नाम होंगे भयहर, मेवाडे और नागर मेवाडे कहायेंगे।

ऐसा कहकर शंकर जी ने कुछ ब्राह्मणों को दर्शन कराया, और कहा यह चौबीस गोत्र के ब्राह्मण हैं। इनको भी भट्टहरपुर में स्थापन करो और इनकी सेवा के निमित्त चतुर्गण वैश्य स्थापन करो। और आधे वास्तु विद्या में कुशल मेवाडे सुतार या सुनार, लोहार, तम्बोली, नापित सब स्थापन करो वे सब मेवाडे नाम से विख्यात होंगे।

श्लोक – **श्री भट्ट हरेर्भट्टान्मेद पाठान्द्विजोतमान् ।**
चतुर्विशतयो गोत्रपतयः पुण्यवृतयः ॥
वणिजो भट्ट संयुक्ता मेदपाठाः पुनस्त्वमी।
शिल्पिनापि च ते भट्ट मेदपाठाः गुणान्विताः ॥

भट्टमेवाडी ब्राह्मणों के शिष्य दूसरी जाति के भी होंगे उनका मेरे समीप त्रयंवायपुर में निवास कराना वे त्रवाय मेवाडे कहावेंगे और चौरासी ग्रामों की वृत्ति करने से चौरासी मेवाडे कहायेंगे यह भट्टमेवाडे ब्राह्मणों की आज्ञा में रहेंगे इनमें एक चौथी जाति वाला भेद पैदा हुआ जो चौबीस गोत्र से पृथक हुआ। अर्थात प्रत्येक गोत्र से पृथक वृत्ति करने के कारण चौबीस नाम से विख्यात होगा, और बन्ध्वुत्वकरण में विख्यात होगा सो–

(भट्टमेवाड़े)

श्लोक - स्ववन्धुत्वेन विख्यातो बन्धुलः पंचविंशकः ।
स्वतन्त्रः स तु विज्ञेयो ज्ञातौ परमशोभनः ॥
भट्टो मुख्यतमस्तेयां गुरुत्वेनोपगीयते ॥

वन्धुल जाति पंचीला ब्राह्मण होगा, यह जाति भेद स्वतन्त्र होगा। परन्तु भट्टमेवाड़े इनके गुरुरूप रहेंगे। यह कहकर शंकर जी अन्तर्ध्यान हो गये और विश्वकर्मा को बुलाकर वासिक नाग ने नगर निर्माण कराया, और यह सब जाति स्थापन की। श्रीभट्टहरिपुर का दान किया। इस क्षेत्र में गणपति, कात्यायनी, देवी, भट्टार्क, शिव, एकलिंग महादेव जी मुख्य हैं। भट्टमेवाड़े ब्राह्मण जो चौबीस गोत्र के हैं, उन सब की बन्धु के समान प्रीति करने से और रक्षण करने से बन्धुल नाम से पंचीसा विख्यात हुआ। इनका भट्टमेवाड़े ब्राह्मणों में भोजन व्यवहार जाति सम्वन्ध एक जगह होताहै। कहीं-कहीं विवाह सम्बन्ध अपने ही वर्ग में करते हैं। भट्टमेवाड़े वैश्य, सुतार, सुनार, तम्बोली आदि जो स्थापन किये उनके कर्म उनके वर्णानुसार ही होते हैं। जिस समय राजा जनमेजय ने सर्पसत्र यज्ञ किया था, और आस्तीक द्वारा यज्ञ समाप्त हुआ, तव वासुक ने प्रसन्न होकर वहाँ नागदहपुर का निर्माण किया और वहाँ कुछ ब्राह्मण और वैश्य स्थापन किये, उन ब्राह्मणों और वैश्यों का नाम नागदह हुआ।

(वैश्य नागदह)

श्लोक - ततो नागदहं नाम पुर निर्माय वासुकिः ।
ब्राह्मणान्कतिचित्तत्र स्थापयामास तत्पुरे ॥
सेवायै द्विजवर्णानां वणिजो द्विगुणास्ततः ।
नागदाहेति नामानः स्थापिताः प्रत्यवर्तयन् ॥

यह ब्राह्मण और वैश्य भट्टमेवाडे के आधीन रहे एक किंविदन्त कथा है। कि एक समय एक नागकन्या का विवाह उत्सव आरम्भ हुआ, तब जो वर व्याहने आया, उस के मुख की विषैली वायु से व्याकुल हो गाँव के द्वार तक भाग गया। इस कारण उसके अनुयायी और वंश के भट्ट मेवाडे कहाये तब उसके छोटे भाई ने उससे विवाह की इच्छा की तो वह भी विपैली वायु से व्याकुल हो चौखट से भाग गया। उसके वंश के चौरासी मेवाडे कहाये तीसरा भाई मूर्च्छित हो भूमि पर गिरा तव नागकन्या की सखी बोली जब ऐसा है, तो मेरे साथ व्याह कौन करेगा। तब नागकन्या ने सोच विचार कर एक गुड़ का नाग बनाय विष उतारने के लिए मूर्च्छित ऊपर डाला, वह उठकर खड़ा हो गया, और उसने उस कन्या के साथ विवाह किया उसके वंश के त्रिवाडी मेवाडे कहाये। इन तिवाडियों में से एकने म्होंड ब्राह्मण की कन्या से विवाह किया, और उसने जाति वालों की न सुनी इस कारण से वो जाति से पृथक हुए और राजस मेवाडे कहाये इन सब में अब भी नाग की पूजा होती है। गुड़मय नाग विवाह के समय पोडसोपचार से पूजा जाता है। व्याह के समय

पर वर मूर्छित होकर पलंग पर लेट जाता है। दुल्हन पास आकर गुड़ के छींटे देती है। तब वर उठकर नाग की पूजा करता है, फिर बाद में विवाहादि कार्य सम्पन्न होता है।

नीचे मेवाडों के गोत्र प्रवरादि की सारणी प्रस्तुत है।

'मेवाडे ब्राह्मणों की गोत्रादि सारणीं'

सं.	गोत्र	प्रवर	अवटंक
1.	कृष्णात्रेय	आर्चे, वत्सश्चेत	कृष्णात्रेय
2.	पाराशर	वशिष्ठ, सित्थ, पाराशर	सीति
3.	गर्ग	गर्ग: च्यवन: आंगिरस्वेति।	
4.	कात्यायन	कपिल, कात्यायन, विश्वामित्राश्चेति।	
5.	शाण्डिल्य	असितो, शाण्डिल्य, देवलश्चेति।	
6.	कुशक	अघमर्षण, कुशक, विश्वामित्राश्चेति।	
7.	कौशिक	देवराज, कौशिक, विश्वामित्राश्चेति।	
8.	वत्स	च्यवन, वत्स, ओर्व, आप्लावान, जमदग्निश्चेति।	
9.	वात्स्य	च्यवन, मौदगल्य, जमदग्नि, वात्सय, ईशवश्चेति।	
10.	भारद्वाज	आंगिरस, भारद्वाज, वार्हस्पत्य, पन्ड्या, उपाध्याय।	
11.	गार्ग्य	च्यवन, गार्ग्य, आंगिरस, ईशवार्हस्पत्यश्चेति।	
12.	उपमन्यु	उतथ्य, आंगिरस, भारद्वाज, उपमन्यु, वार्हस्पत्यश्चेति।	
13.	कौडिन्य	आंगिरस, कौडिन्य, वार्हस्पत्य।	
14.	गौतम	आंगिरस, गौतम, सौतश्येति।	
15.	काश्यप	कृच्छतप्त, कश्यप, मानाति।	
16.	माण्डव्य	मार्कण्डेय: माण्डव्य विश्वामित्राश्चेति।	
17.	चन्द्रात्रेय	कृत्स्त्राचेति।	
18.	भार्गव	च्यवन, भार्गव, आप्लावान, ओर्व, जमदग्नेश्चेति।	
19.	गालव	तपयक्ष: गालव: हारीत: उपकल्पित जयन्तश्चेति ।	
20.	विष्णुवृद्धि	पौतुम्य: उतपुत्र: सदस्यश्चेति।	
21.	मुद्गल	आंगिरस, मोदगल्य, वार्हस्पत्यश्चेति।	

22.	मौनस	भार्गव, मौनस, वेतस्वसश्चेति।
23.	वार्द्धि	दालभ्य, वार्द्धि, वार्हस्पत्यश्चेति।
24.	अत्रि	गावच्छ, अत्रि, पूवातिथ्यश्चेति।

(इति मेवाडे ब्राह्मण का वर्णन)

'मोतापाल ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

जब श्री रामचन्द्र जी पिता की आज्ञा से वन के लिए आये। उस समय ताप्ती नदी के समीप आकर सुमन्त सारथी से कहा, कि मैं यहाँ स्नान करके कुछ ब्राह्मणों को दान करना चाहता हूँ तब वहाँ आये हुए, हिमालय की ओर के ब्राह्मण स्नान कर रहे थे। उनको बुलाया और प्रार्थना की ब्राह्मणों ने प्रार्थना स्वीकार करते हुए दान ग्रहण किया। श्री रामचन्द्र जी ने वहाँ एक सरोवर बनाई जिसका रामसरोवर नाम हुआ। उस ताप्ती के किनारे मुक्ति स्थान में एक नगर स्थापन किया। जिसे मोतगाँव या मुक्तिगाँव कहते हैं। वहाँ अट्ठारह सहस्त्र ब्राह्मणों को स्थापित किया। वे सब मोताल कहाये। उसके चरण धोनें का जो जल बहा उसे मुक्तिदा नदी बह निकली। इन मोताल ब्राह्मणों को एक भेद ओरपाल कहा जाता है। वहीं नागतीर्थ के निकट उत्पलन क्षेत्र है, इसी को ओरपाल कहते हैं। यह शिल्कऊ गाँव से मिला हुआ है। रामचन्द्र भगवान ने इस स्थान में भी ब्रह्मा जी को बुलाकर अट्ठारह सहस्त्र ब्राह्मणों को स्थापन किया। यह सब ओरपाल मोताले ब्राह्मण कहाये। उस क्षेत्र का नाम रामक्षेत्र हुआ इन सबकी कण्व शाखा और सात गोत्र हैं। भारद्वाज, हारीत, गर्ग, कौडन्य, कश्यप, कृष्णात्रेय और माठर। तापी और समुद्र संगम स्थान पर भी रामचन्द्र जी ने गंगातट वासी ब्राह्मणों को बुलाकर वहाँ यज्ञ करके स्थापन किया, और भगवान की आज्ञा से गंगा जी प्रगट हुई।

श्लोक – अष्टादशं सहस्त्राणि गोत्राणि द्वादशैव तु ।
स्थापयामास रामोऽपि मुक्तिमुक्ति प्रदान्द्विजान् ॥

अर्थ – उस समय उन ब्राह्मणों के बारह गोत्र थे। परन्तु अब इनमें भी ऊपर के लिखे सात गोत्री मिलते हैं। यह ब्राह्मण भी सिरस कहाये, मोता और पाल तथा सिरस यह तीन गाँव के ब्राह्मण मोताले कहाते हैं, और कौकिल मुनि के मत को मानते हैं। इनकी स्त्री पति की मृत्यु के पश्चात अपने पिता के गोत्र में मिल जाती है। श्रीमाली, दिशावाल, रायकवाल और कंडोल ब्राह्मण भी कौकिल मत का ही मानते हैं। यह प्रमाण लेख स्कन्दपुराण के तापी महात्म्य में रूद्र भगवान ने कहा है उस वक्त का है।

श्लोक – मौक्तिकादि द्विजाः सर्वे कौकिलस्य मुनेर्मतम् ।
मन्यन्ते ब्राह्मणाश्चान्ये तथा दिक्पालवासिनः ॥

यह मोतालादि ब्राह्मण गुर्जर सम्प्रदाय के हैं। और पंचद्राविण के अन्तर्गत हैं। हरिवंश पुराण और ब्रा.

ठ. मार्तण्ड पुराण व स्कंद पुराण।

(मोताल ब्राह्मण)

'उत्पत्ति उदुम्बर, कापित्थ, शृंगालादि ब्राह्मणों की'

यह प्रमाण ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड से व हरिवंश पुराण से लिया है। जो कि भविष्यपर्व में लिखा है, कि जिस समय भगवान शंकर ने त्रिपुरासुर का वध किया तब उनमें से जो बहुत से असुर बचे वो सब जम्बूमार्ग में जाकर ऋषियों की निवास भूमि में जाकर वृक्षों के नीचे बैठकर तप करने लगे। कोई उदुम्बर अर्थात गूलर के नीचे बैठा उसे उदम्बर गण कहाये, और जो कैथ के वृक्ष के नीचे बैठा उसे कैथ या कापित्थ कहा गया और कितने एक शृंगालवाटी में तप करने वाले बड़ या वट वृक्ष के आश्रित रहे वो वटमूलगण कहाये। जब इनकी तपस्या से ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर वर माँगने को कहा तो उन लोगों ने शंकर जी से बदला लेने की बात कही। इस पर ब्रह्मा जी ने बताया कि भगवान शंकर से बदला लेने की तो बात अलग रही, ऐसी बात तो मन में भी मत सोचना अर्थात शंकर से वैर करके किसी का कल्याण नहीं हो सकेगा। जब फिर दैत्यों ने षट्पुर में जाकर शंकर जी का बड़ा ही घोर तप किया। इस पर शंकर ने प्रसन्न होकर दर्शन दिया और कहा कि जो तुमने मेरी भक्ति की है, और ऋषियों से दीक्षा ली है, इस कारण तुमको वर देता हूँ। कि तुम ऋषियों के साथ स्वर्ग में गमन करोगे, और शेष तपस्वी ब्रह्मवादी जो कैथ या कायस्थ का आश्रय करके रहे हैं उनको मेरे लोक की प्राप्ति नहीं होगी।

श्लोक - औदुम्बरान्वाट मूलान द्विजान्कापित्थ कानपि।
तथा श्रंगालवाटीयान्धर्मयुक्तादृढ़ व्रतान् ॥

और उदम्बर वृक्ष के आश्रय वाले औदुम्बर वटमूल कापित्थ शृंगालवाटीय ब्राह्मण कहावेंगे। और धर्मात्मा दृढ़वृत रहेंगे। मेरा पूजन करने से इच्छित गति होगी। यह कहकर भगवान शंकर अन्तर्ध्यान हो गये, और लोगों के वंशधर कपित्थादि ब्राह्मण कहाये।

(द्रविड़ के गुर्जर सम्प्रदाय अन्तर्गत हैं।)

'अनावला भाटेला ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

श्लोक - एकदा त्रिपुरं जेतुं शिवः सर्वार्थ साधनः ।
अष्टादश सहस्राणि ब्राह्मणान्ब्रह्म वादिनः ॥
वरयामास शान्तयर्थमनादिपुरपत्तने ।

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

यह प्रमाण स्कन्दपुराण के उत्तराखण्ड अनादिपुर में लिखा है। कि एक समय शंकर जी ने अनादिपुर

में अट्ठारह सहस्त्र ब्राह्मणों का त्रिपुरासुरवध के लिए वरण किया। और त्रिपुर को मारकर वहाँ उन ब्राह्मणों को स्थापन कर वहाँ तीर्थ स्थापन किया। पीछे समय बीतने पर वहाँ से ब्राह्मण गंगा किनारे चले गये। त्रेतायुग में जब रामचन्द्र जी ने तीर्थ प्रस्ताव में वृत के लिए तीर्थ पूछा तो अगस्त्य जी ने कहा कि यहाँ से अनादिपुर का स्थान है। जो एक सौ बीस कोस दूर है, आप वहाँ के ब्राह्मणों को गंगा तट से लाकर स्थिर स्थापन करिए, और वहीं वृत करो तब रघुनाथ जी ने हनुमान जी के द्वारा उन ब्राह्मणों को बड़ी कठिनता से बुलवाया महावीर जी उनको गंगा लाने की प्रतिज्ञा से बुला लाये। रामचन्द्र जी ने उनका पूजन किया। और चैत्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन पृथ्वी में बाँण मारकर गंगा प्रकट की वहीं रामगंगा कहलाई वहाँ श्रीरामचन्द्र जी ने ग्यारह दिन यज्ञ किया, पीछे जब ब्राह्मणों को दान देने लगे तब ब्राह्मणों ने दान लेने से असंतुष्टता दिखाई। तब रामचन्द्र जी ने कहा कि जब तुम लोग श्रुति स्मृति अनुसार दान धर्म नहीं मानते, तो आगे आप वेद अध्ययन से हीन हो जाओगे। अध्ययन, यज्ञ और दान तुम्हारे तीन रहेंगे। यह कहकर विश्वकर्मा को बुलाया। और नगर निर्माण कराकर उन अट्ठारह सहस्त्र ब्राह्मणों को दान कर दिया, तथा उस नगर में बसाया। उनमें एक भाग स्त्री विहीन था। तो उनके निमित्त नागकन्याओं को लाकर व्याह दिया। सीता माता की दृष्टि से वे नागकन्याए मनुष्य रूप में हुई। उन वंशों में आज तक स्त्रियों की चोटी में वेंणी या वांण कारका चिन्ह दीख पड़ता है। फिर रघुनाथ जी ने उन ब्राह्मणों को नौ सौ नौ गाँव दिये, और बारह गोत्र अवटंक सहित किये। वे इस प्रकार हैं कश्यप, रैम्य, गौतम, पराशर, उशजा, गालव, अगस्त्रू, गार्ग्य, सांख्यायन, कण्व, वच्छस, वशिष्ठ और नायक इनमें दो अवटंक हैं। सूरत नगर के निकट तीन कोस परएक वादियाव गाँव है। जिसे संस्कृत में वादिताप्य क्षेत्र कहते हैं। वहाँ संवर्ण राजा ने तापी के साथ विवाह किया था, उस में अनादिपुर के 18000 ब्राह्मण बुलाए और वरण में उनको एक सौ सोलह गाँव दिये थे, तथा संम्वरणेंश्वर महादेव का स्थापन किया। उनमें से दो गोत्र के ब्राह्मण वरियाव गाँव में रह गये 10 अनादिपुर में चले गये सर्व कार्य में कुशल नायक कहाये। उनमें जिन्होंने दरिद्रों की दरिद्रता दूर की वह वारिण कहाये। अन्य और –

(द्रविड गुर्जर सम्प्रदाय के अन्तर्गत है।)

श्लोक – नायकाः सर्वकार्येषु वाशिनो विषयेषु च ।
निवस्यन्ति ये तेषां दरिद्राणां दरिद्रताम् ॥
वारिणास्तेन प्रोक्तां ते वारिताप्ये स्थिताऽपि ।
एवं नाना विधानास्ते काले भिन्नेन कर्मणा ॥
वसंत्यद्यापि विख्यातेऽनावालेऽनादिपत्तने ।

(मार्तण्ड)

अर्थ – इस प्रकार वे सब अनादिपुर या अनावला गाँव में निवास करते हैं। यह सब प्रतिग्रह से परान्मुख हुए हैं। इन अट्ठारह हजार ब्राह्मणों में से बारह हजार ब्राह्मणों ने जो नागकन्याओं का प्रतिग्रह स्वीकार किया।

और रामचन्द्र जी ने नौ सो ग्राम दिये वे अब तक अनावले जमींदार देशाई कहे जाते हैं। और जिन्होंने नागकन्या का प्रतिग्रह स्वीकार नहीं किया था, वे भाटेल अनावला कहे जाते हैं। भाटेला शब्द कर्मभ्रष्टता का वाचक है। यह लोग कृषि कर्म करते हैं। इनमें कन्या विक्रय भी होता है। भाटेला देशाई अनावला का भोजन व्यवहार एक पंक्ति में होता है। कन्या व्यवहार में भाटेला कन्या लेते हैं।

'रिवास्तिये ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

यह ब्राह्मण तापी नदी के किनारे श्री रामचन्द्र जी के स्थापित किये हुए हैं। यह श्रोतस्मार्त कर्म में निष्ठ हैं। आचार और भाषा व्यवहार गुजराती और महाराष्ट्रों का मिलकर है, इनकी बस्ती तापी नदी के निकटवर्ती गाँवों में हैं। अब यह कर्म त्याग कर चुके हैं। इस कारण व्यापारनिष्ठ हैं। इस कारण रिवस्तिये ब्राह्मण कहाते हैं। यह व्यापार नौकरी विशेष करते हैं। आचार सम्पन्न कम हैं।

'गयावाल ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

गयामहात्म्य में विष्णु भगवान ने गयासुर दैत्य को दवाकर अपनी सेवा के निमित्त जो ब्राह्मण स्थापित किये, वे गयावाल ब्राह्मण कहाये। यह भगवान विष्णु के वरदान से अपने सिर पर पगड़ी या मुकुट में चमड़ा धारण करते हैं, प्रतापी हुए हैं। इनकी कृपा से पितृगण की मुक्ति मानी गई है। इनके वचनों से श्राद्ध की पूर्ति मानी जाती है। यह गया महात्म्य में है।

'नार्मदीय ब्राह्मण'

नर्मदा नदी के तट पर ओंकार तथा मांधातृ प्रान्त में ये ब्राह्मण निवास करते हैं। कम्बोज ब्राह्मणों की उत्पत्ति इस प्रकार है कि ब्रह्मदेश से ईशान कोंण में कम्बोज या कम्बोडिया देश है वहाँ के निवासी कम्बोजिया ब्राह्मण कहे जाते हैं। इस देश में इरावती नदी बहती है यह ब्राह्मण गौड़ाचार के समान हैं।

'सोंमपुरे ब्राह्मण उत्पत्ति'

सौराष्ट्र या सोरभ देश में सोमपुरी प्रभास पाटण में सोमेश्वर महादेव जी के पास चन्द्रमा ने अपना क्षय रोग दूर करने के लिए यज्ञ किया। और ब्राह्मणों को वरण किया, और दान दक्षिणा देकर सन्तुष्ट किया। फिर उन ब्राह्मणों को वहाँ निवास कराया। वे सब सोमपुरे ब्राह्मण कहाये।

'कपिल ब्राह्मण'

इसी प्रकार कपिल देश के रहने वाले कपिल ब्राह्मण कहाये। लाट देश के लाट ब्राह्मण कहाये। नारद जी के स्थापित किये हुए ब्राह्मण नारदीय ब्राह्मण कहाये। नादोर्य, भारती नन्दवाणो, वह ब्राह्मणों के नाम हैं। जो ग्रामभेद से जानना चाहिए। मैत्रायणी ब्राह्मण तापी नदी तट के वासी कहे जाते हैं।

28 'बत्तीस ग्राम भेद से ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

यह सह्यादि खण्ड का प्रमाण है। कि जब स्कन्द जी ने कहा कि हे मांगह के पुत्र मयूर नामक राजा ने अहिक्षेत्र से कुटुम्ब सहित ब्राह्मणों को बुलाकर स्थापन किया। और बत्तीस गाँव देकर उनको उसी नाम से वरण किया। कदम्ब कानन में तीन गोकर्ण में चार युक्तिमती के किनारे दो गाँवों को स्थापन किया। सीता के दक्षिणी किनारे ध्वजपुर में ब्राह्मणों को निवास कराया, अजपुरी में चार गाँव करि के स्थापन किये। अनन्तदेश के समीप दस ग्रामों को स्थापित किया, और नेत्रावती के उत्तर किनारे एक गाँव को स्थापन करके उनके मध्य गजपुरी में नृसिंह जी को स्थापित किया। जहाँ पूर्व में सिद्धेश्वर और पश्चिम में लवण सागर है, उत्तर में कोटिलिंगेश्वर और दक्षिण में सीता है।वह संसार में वैकुण्ठ नाम से विख्यात है। शेष नेत्रावती के उत्तर किनारे नौ ग्रामों को स्थापन करके वहाँ आये हुए श्रोत्रिय ब्राह्मणों को प्रदान कर दिये। वह ब्राह्मण वहाँ आनन्द से रहने लगे। पीछे राजा मयूर वर्मा अपने बालक पुत्र चन्द्रागढ़ को राज्यभिषेक कर तपस्या करने वन को चले गये। पीछे जब चन्द्रागढ़ बड़ा हुआ तब उन ब्राह्मणों को फिर प्रार्थना करके बुला लाया और एक परचूणनामक नगर निर्माण कर उन ब्राह्मणों को स्थापन किया, और उन ग्रामों के नमानुसार उनके नाम हुए।

श्लोक - कारेऊ नाम के ग्रामे चतुर्भेदांश्च संख्यया।
तथा कर्काटि मध्ये तु ह्यष्टभेदांश्चकार सः ॥
तथैव मरणों ग्रामे द्वितीयं भेद विस्तरम् ।
कानुवीनां तु मध्ये च भेदौ द्वौ-द्वौ च पार्थिवः ॥
पांडिग्रामे वेद संख्यास्त द्वत्कोडील नामके।
मांगवे ग्राम के चैव वेदभम्दे मंहसः ॥
मित्रनाडु ग्राम मध्ये तद्वत्पार्थिव नन्दनः ।
निर्मागक ग्राममध्ये चकार ऋषि संख्यकम् ॥
सीमन्तु ग्राम मध्ये तु नवभेदांश्चकार सः ।
शिवबल्ल्यां विशेषज्ञस्त्रिंशद्वेदं शतोत्तरम् ॥
अष्टादशादि तद्वच्च चत्वारिंशच्च मध्यमा ।
अथाष्टावजपुर्या च तदा नीलां वरेकृताः ॥
कूटेऽण्टौ ग्रहभेदाश्च द्वयं स्कन्दपुरे कृतम ।
पश्चिमें षोडस ग्रामा ह्येवं भेदान्विभज्य च ॥
श्री पांडिग्राम मुख्ये तु पंच भेदाश्चकार सः ।

तथैव कौडिलग्रामे द्वौ-द्वौ भेदौ कृतो मुदा ॥
कारमुरू ग्राम मध्ये द्वौ भेदा वाहु पार्थिवः ।
तथैव चौज्जये ग्रामे भेदानाह स षोडस ॥
तदर्ध कर्तुमार्गे तु भेदानाह महीपतिः ।
चीरकोडी ग्राम कोऽन्यं सदसंम्देद माह सः ।
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - कारेऊ गाँव में चार भेद करके स्थापन किये। वे कारेऊ ब्राह्मण कहाये, कर्कटी गाँव के आठ भेद वाले कर्काटी ब्राह्मण कहाये। दो भेद वाले मरण गाँव के मारण नाम वाले कानुगी गाँव के दो भेद वाले कनुवी, पाडी गाँव के चार भेद वाले पाड़ी कहाये। कोडिल ग्राम के कोड़ चार भेद वाले मांगव गाँव वाले मांगव ब्राह्मण कहाये। मित्रानाडु ग्राम के मित्रनाडु ब्राह्मण कहाये, सात भेद वाले थे। निर्मार्गग्राम के निर्मार्ग ब्राह्मण कहाये नौ भेद वाले सीमान्तु गाँव के सीमान्त ब्राह्मण कहाये। एक सौ तीस भेद वाले शिवल्ली गाँव के शिवल्ली ब्राह्मण कहाये। अट्ठारह, चालीस तथा आठ भेद वाले अजपुरी गाँव के और नीलांवर में बसने वाले अजपुरी ब्राह्मण कहाये, आठ भेद वाले कूट ग्राम वासी कूट ब्राह्मण दो भेद वाले कहाये, स्कन्दपुर वासी स्कन्द ब्राह्मण कहाये, पश्चिम में सोलह ग्रामों में निवासी हुए। इस प्रकार निवास कराया। पांच भेद वाले पांडी ग्राम वासी दो भेद वाले कौडिल गाँव वासी कौडिल ब्राह्मण कहाये। दो भेद वाले कारमूरू ब्राह्मण कहाये कारमूग्राम वासी, सोलह भेद वाले उज्जय ग्राम वासी उज्जय ब्राह्मण कहाये। कर्तुमार्ग में इससे आधे इसी नाम वाले, चीरकोडी ग्राम वासी चीरकोडी ब्राह्मण कहाये।

श्लोक - वामीजरूग्राम के तु द्विभेदं वै चकार सः ।
पुरग्रामे च चत्वारि वल्लमंजे त्रयं तथा ॥
हेनाडुग्राम के नामं वेदम्देदमाचरेत् ।
तथैव इचुके ग्रामे षड् भेदानाह भूमिपः ॥
केमिंजे भेदमेकं च पालिंजद्वितयं तथा।
शिरपादि महाग्रामे पंश्चभेदाश्चकार सः ॥
कोडिपाडि ग्राम मध्ये भेद सश्रषि संख्यकम् ।
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - दो भेद वाले वामीजुरू ग्राम के वामीजुरू कहाये, चार भेद वाले, पुरुग्राम के पुरुग्रामी कहाये तीन भेद वाले, बल्लमजग्रामवासी बल्लमजी कहाये, चार भेद वाले हेनाडुग्राम वासी हेनाड कहाये छै भेद वाले, इचुक ग्राम के इचुक एक भेद वाले, केर्मिज ग्राम वासी केर्मिज दो भेद वाले पालिजग्राम के पालिज

कहाये, पांच भेद वाले सिरपांडि ग्राम के शिरपाडि कहाये, सात भेद वाले कोडिपाडि ग्राम के कोडिपाडि ब्राह्मण कहाये। यह कोंकड देश में रहते हैं। इस प्रकार इनके ग्रामों की संख्या तिहत्तर है। ग्रामों में 206 भेदों को इन गाँवों में स्थापन किया, परन्तु यह सब 32 ग्रामवासी नाम कहकर विख्यात हैं।

(गुर्जर सम्प्रदाय)

(ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड से।)

'अगस्त ब्राह्मण'

अगस्त्य गोत्री ब्राह्मणअपने को अगस्त्य ब्राह्मण कहते हैं। कतु ऋषि ने अगस्त्य के पुत्र इध्मवाह को गोद लेकर अपना वंश चलाया था। यही अगस्त्य ब्राह्मण वंश कहा गया।

'अम्बलवासी ब्राह्मण'

यह ट्रावनकोर के पुजारी ब्राह्मणों की संज्ञा है, कोई इनको नांबुरी जाति में मानते हैं।

'अष्टसहस्त्र ब्राह्मण'

यह द्रविड़ ब्राह्मणों का स्मार्त भेद है, यह आर्कट, त्रिचनापल्ली, तन्जोर, तिन्नावेली, मदुरा आदि स्थानों में पाये जाते हैं, कन्नड़ी और तैलंगी भाषा बोलते हैं। शाकर और रामानुज दोनों सम्प्रदाय मानते हैं। मद मॉंस का किसी प्रकार का सेवन नहीं करते, भोंह के मध्य चन्दन या सिन्दूर का गोलाकार तिलक लगाते हैं।

'अथर्व वेदी ब्राह्मण'

यह ब्राह्मण उड़ीसा के ब्राह्मणों में वेदानुसार एक जाति हैं।

'अहिनरू ब्राह्मण'

यह महाराष्ट्री ब्राह्मणों का कुल भेद है।

'अधिकारी ब्राह्मण'

यह बंगाल व उड़ीसा के ब्राह्मणों काएक कुलभेद है। ये अधिकतर चेतनस्वामी के शिष्य होते हैं। यह उपाधि भेद है पहले पूर्वज शास्त्रादि में अधिकार रखते थे, इस कारण यह पदवी पाई।

'उदेन्य ब्राह्मण'

यह सनाढ्य ब्राह्मणों के 24 कुलो में से एक कुल है।

'ओझा ब्राह्मण'

यह मिथिला के मैथिल ब्राह्मणों का एक चिन्ह या पदवी है। कुछ विद्वानों के अनुसार यह पदवी मिथिला के उन ब्राह्मणों को दी गई थी। जो तन्त्र मन्त्र विद्या के विशेषज्ञ थे। लेकिन आजकल तो खाती, लुहार, बढ़ई भी अपना वंश मैथिल होंने का दावा भरते हैं, और अपने को ओझा कहते हैं। खाती लोगों को यह विचार करना चाहिए कि मिथिला के जो मैथिल ब्राह्मण व्रजक्षेत्र में आकर छिपे और अपना वास्तविक रूप छिपाकर और अन्य अन्य मजदूरियाँ की ये तो उन्होंने अपने प्राण और धर्म रक्षा हेतु किया। क्योंकि औरंगजेब बादशाह ब्राह्मणों का धर्म के पीछे कत्ल करा रहा था, तो इनको तो बादशाह का भय था। परन्तु बढ़ईयों को क्या परशुराम जी का भय सवार हो गया था। जो यज्ञोपवीत तक त्याग न करिके पहिए बनाने लगे। अरे जो यथार्थ में ब्राह्मण हैं, वो प्रमाणित हैं, वही मिथिला के मैथिल ब्राह्मण मान्य हैं न कि अन्य।

'इन्दोरिया ब्राह्मण'

यह एक गौड़ ब्राह्मणों का भेद है। इन्दरगढ़ से निकास होने के कारण ये इन्दोरिये ब्राह्मण कहाये।

'अराढ्य ब्राह्मण'

यह एक प्रकार के तैलंगी उप ब्राह्मण है। यह अर्धमुंडित लिंगायत हैं।

'आभीर गौड़ ब्राह्मण'

जो गौड़ ब्राह्मण आभीर जाति की पुरोहिताई करते हैं।

'ऋषि ब्राह्मण'

कहा जाता है कि इस नाम की एक जाति ब्राह्मणों की है, जो मुख्य पदवी से संकेतिक है।

'आयंगर ब्राह्मण'

दक्षिणी वैशणव ब्राह्मणों की शरण में आयंगर हैं, ये भी प्रशंसनीय हैं, जो आयंगर ब्राह्मण नाम से संज्ञक हैं।

'अद्वेत ब्राह्मण'

बंगाल प्रान्त में शान्तिपुर के वारेन्द्र ब्राह्मण जीव ब्रह्म की एकता मानने से अद्वेत ब्राह्मण संज्ञक हैं।

'अशूद्र प्रतिग्राही ब्राह्मण'

यह वो ब्राह्मण हैं जो शूद्रों के यहाँ का दान नहीं लेते हैं।

'अरबेलु ब्राह्मण'

यह तैलंगा ब्राह्मणों का एक गोत्र भेद है।

'अरबतबकालू ब्राह्मण'

यह कर्णाटकी ब्राह्मणों का एक भेद है। माधवाचार्य की सम्प्रदाय है।

'उलचकामे ब्राह्मण'

यह माइसोर में कर्णाटकी ब्राह्मणों का एक भेद है।

'कानाराकामा ब्राह्मण'

यह कनारी ब्राह्मणों का एक भेद है, यह तैलंगा देश के निवासी कानाराकामा वैदिक ब्राह्मण हैं, और तैलंग कहाते हैं।

'उड़िया ब्राह्मण'

उड़ीसा देश के ब्राह्मण साधारणत: उडिया कहाते हैं। यह जगन्नाथपुरी में रहते हैं। इनका पद साधारण ही हैं।

'कान्युडी ब्राह्मण'

यह एक पहाड़ी ब्राह्मणों की कन्दूरी जाति है, चाँदपुर के परगने में कन्यूडा एक गाँव है। इसके निकास के कारण यह कन्यूडी कहे जाते हैं।

'कृश्नोरा ब्राह्मण'

यह गुजराती नागरों का एक भेद कहा जाता है। यह तीनों वेदों के नामधारी भिक्षुक विशेष हैं।

'कत्थक ब्राह्मण'

यह गायन करने वाली एक जाति है। यह अपने को ब्राह्मण बताते हैं, और गौड़ कुली से उत्पन्न भेद बताते हैं, यह राजपूताना, बनारस, बस्ती, आजमगढ़, रायबरेली आदि स्थानों में पाये जाते हैं।

'कमलाकर ब्राह्मण'

यह महाराष्ट्र ब्राह्मणों में अल्ल का एक भेद है।

'कुनवी गौड़ ब्राह्मण'

यह पद उन गौड़ ब्राह्मणों का है, जो कुनवी या कुर्मी लोगों के यहाँ पुरोहिताई करते हैं।

'कस्ता ब्राह्मण'

महाराष्ट्र में छोटी श्रेणी के ब्राह्मण कस्ता कहाते हैं। यह पूना और खान देश में विशेष रूप से रहते हैं, और कृषि का कार्य करते हैं। यह आचार भ्रष्ट होते हैं।

'कर्कल ब्राह्मण'

चित्तपावन दक्षिणी ब्राह्मणों की अतिसमुदाय की अल्ल है।

'गिरि ब्राह्मणों का समुदाय'

यह भगवान शंकराचार्य के शिष्यों की एक उपाधि है। जो संन्यासियों को दी गई है। उसका भेद है, इस समुदाय मेंदस नाम हैं सरस्वती, भारती, पुरी तीर्थ, आश्रम, वन गिरि, आरण्य, पर्वत और सागर। इनमें सरस्वती, भारती और पुरी नामों का सम्बन्ध श्रृंगेरी मठ से है। तीर्थ और सम्वन्ध द्वारिका के शारदामठ से है। वन और आरण्य का सम्बन्ध जगन्नाथपुरी के गोवर्धन मठ से है गिरि, पर्वत और सागर का सम्वन्ध हिमालय के जोशी मठ से है, सिद्धान्त सबका एक है। इन्हें पुजारी भी कहाते हैं।

'गणक ब्राह्मण'

बंगाल, आसाम, उड़ीसा में यह उन ब्राह्मणों की संज्ञा है। जो ज्योतिष शास्त्र सम्वन्धी कार्य करते हैं, हालाँकि में ज्योतिष शास्त्र का विद्वान बहुत उच्च है। परन्तु अब तो राहु, केतु देखने का काम साधारण रूप से गणकों का रह गया है। अब तो यह ब्राह्मण भी जो गणक हैं मध्य श्रेंणी के गिने जाते हैं। यही लोग पर्वत में जोशी कहे जाते हैं। बंगाल, आसाम में गणक कहीं नक्षत्र ब्राह्मण कहीं ग्रहविप्र, ग्रहाचार्य कहीं देवज्ञ कहे जाते हैं।

विप्रश्च ज्योतिर्गणानाद्वेदनाच्च निरंतरम् ।
वेदधर्म परित्यक्तो व भूव गणको भुवि ॥

ब्रह्म वैदिक अर्थात निरन्तर ज्योतिष में लगे रहने से और वेद धर्म का अनुष्ठान करने से यह ब्राह्मण गणक कहाये।

'कोतवार ब्राह्मण'

युक्त प्रदेश के मिर्जापुर प्रान्त में इस जाति का निवास है। यह गौड़ ब्राह्मणों का भेद है कोई इसे पदवी

भी कहते हैं।

'गौड़ ब्राह्मण'

यह मध्य प्रदेश की एक ब्राह्मण जाति है। जबलपुर से नागपुर पर्यन्त गौड़ ब्राह्मणों की बस्ती है। इस कारण उस देश का नाम गौड़वाना हो गया है। कोई इनको काला ब्राह्मण कहते हैं कारण कि उस देश में जंगल बहुत हैं कोई इनको गौर अर्थात शुक्ल व शुद्ध नाम से पुकारते हैं। यह सब शुक्ल यजुर्वेदीय मध्यान्दिनी शाखा इनका सूत्र आपस्तम्ब है। इनकी कण्व शाखा है। इनमें कोई ऋगुवेदी अश्वलायन सूत्र वाले भी हैं।

'अन्ध वैष्णव ब्राह्मण'

यह रामानुज सम्प्रदाय के तैलंगा ब्राह्मणों की अल्ल है।

'गुरु ब्राह्मण'

ब्राह्मण वंश के शिक्षक पुरुष गुरू कहाते थे। परन्तु अब यह किन्हीं विप्रवंशों की अल्ल हो गई है।

'कसलनाडू ब्राह्मण'

यह तैलंगी ब्राह्मणों की अल्ल का भेद है। कदाचित यह शब्द कोमल नाडू से बिगड़ा हो इनका निकास ओड प्रदेशान्तर्गत कोशला नगरी है। वहाँ से ये तैलंग में जाकर बसे।

'गोस्वामी या गुंसाई ब्राह्मण'

यह वैष्णवों की बल्लभाचार्य संप्रदाय की विशेष रूप से पदवी है। यह भी तैलंगा ब्राह्मण हैं। एक भक्त इनमें से गोकुल में आकर रहे उनके वंशज गोकुलिए गुसांई कहाये। इनका बड़ा ऐश्वर्य है इनके उपास्य राधाकृष्ण हैं। दूसरी सम्प्रदाय के आचार्य भी गोस्वामी कहते हैं।

'अम्मा को दागा ब्राह्मण'

यह कुर्ग देश की ब्राह्मण जाति है। यह कावेरी ब्राह्मण भी कहाते हैं। यह कुर्ग के दक्षिणी, पश्चिमी किनारों पर रहते हैं। कावेरी नदी का पूजन करते हैं। माँस, मंदिरा का सेवन नहीं करते हैं।

'गिरधरोत व्यास ब्राह्मण'

यह मारवाड प्रदेश में पुष्कर के ब्राह्मणों की जाति अल्ल है। इन व्यास संज्ञक ब्राह्मणों के आदि पुरुष गिरधर जी राय थे। यह अमरसिंह के यहाँ नौकर थे। जिन्होंने आगरे की लड़ाई में स्वामी के निमित्त प्राण

त्याग दिये थे। युद्ध के कारण इनका शव जलाया न जा सका इस कारण यह गाढ़े गये, वहाँ इनकी मान्यता होती है। श्रावण शुक्ला तृतीया इनकी स्मृति सूचक मानी जाती है, उस दिन कोई त्योहार इस वंश वाले नहीं मानते हैं। मारवाड़ में दाहिनी ओर को सिरा या चोंच रखकर पगड़ी बाँधी जाती है। परन्तु यह बाँई ओर को चोंच रखकर पगड़ी बाँधते हैं। राज्य से इनको प्रतिष्ठा प्राप्त है।

'गंगापुत्र ब्राह्मण'

गंगा यमुना के किनारे रहने वाली एक सामान्य जाति है। यह गंगा यमुना के किनारे घाटों पर बैठते हैं। स्नान को आये हुए यात्रियो को चन्दन आदि लगाते हैं। यज्ञोपवीत पहनाते हैं। असली गंगापुर की उत्पत्ति तो संकरता लिए है। जैसे –

श्लोक – लेटात्तीवरकन्यायां गंगातीरे च शौंनकः ।
वभूत सद्यो यो वालो गंगापुत्रः प्रकीर्तितः ॥
ब्रह्म वैवर्त पुराण का लेख है।

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ – लेट जाति के पुरुष से तीवरकन्या से गंगा किनारे जो पुत्र उत्पन्न हुआ वह गंगा पुत्र कहाया। और उसके वंश के सब गंगापुत्र कहे गये। परन्तु अब घटवालियों का काम गौड़ादि सभी ब्राह्मण करते हैं। और अपने को गंगापुत्र भी कह देते हैं। परन्तु इन्हें संकर वंश में नहीं गिनना चाहिए।

'गर्ग वंशी ब्राह्मण'

जो ब्राह्मण गर्ग ऋषि की सन्तान हैं, वे गर्गवंशी ब्राह्मण हैं। जो क्षत्रिय गर्ग गोत्री हैं, वे गर्गवंशी क्षत्रिय हैं। यह फेजाबाद, आजमगढ़ और सुल्तानपुर में अधिकतर निवास करते हैं।

'गंगारी ब्राह्मण'

यह परवर्ती ब्राह्मणों का एक भेद है। यह गंगाजी के किनारे रहते हैं। इनमें का एक भेद सौरोला है। पर सौरोला इनसे उच्च गिने जाते हैं। सौरोला ऊँच नीच का विचार रखते हैं। गंगारी ऐसा विचार नहीं करते। सौरोला का एक भेद गैरोला है सौरोला का पुत्र व कन्या यदि व्यभिचार से उत्पन्न कन्या व्याही जाती है, तब वह गंगारी गहरौला कहाते हैं। जब विवाहिता से उत्पन्न हुए के साथ विवाह होता है। जब सौरोला गंगारी कहाते हैं। परन्तु अलखनन्दा से परली ओर के चारों वर्ण गंगारी कहाते हैं। इनमें से घडियाल कंसमार्दिनी के पुजारी हैं। उनियाल महिषमर्दिनी, कालिका आदि के पुजारी हैं। उनके अनेक भेद हैं, जैसे- घड़ियाल, दादाई, उनियाल, मलासी, कोयाल, सिमिथल, कनपूडी, नौतियाल, थपलयाल, रातूरी, दोभाल, चामोली,

हटवाल, महीन्या के जोशी और डिमडी। गढ़वाली ब्राह्मणों में इसका वर्णन कर चुके हैं।

'गन्धरवाल ब्राह्मण'

यह कुरुक्षेत्र में आदि गौड़ों के कुल का एक भेद है ये प्रतिष्ठित हैं।

'गन्धर्व गौड़ ब्राह्मण'

गुजरात में गाने बजाने वाले ब्राह्मणों की एक जाति है।

ब्रह्म वैवर्त पुराण।

'पांचाल की उत्पत्ति'

श्लोक - पंचवक्रात्समुत्पन्नाः पंचभिः कर्मभिर्द्विजाः ।
मनुर्मयस्तया त्वष्टा शिल्पकश्च तथैव च ॥
देवज्ञः पंचमश्चैव ब्राह्मणं पंच कीर्तिता ।
मनुः संहारकर्ता च मयो वै लोकपालकः ॥
त्वष्टा चोत्पत्तिकर्ता च शिल्पिको ग्रहकारकः ।
देवज्ञः सर्वभूषणादिकर्ता वै हितकाम्यया ॥

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड से है शिव द्वारा उत्पत्ति है।)

अर्थ - भगवान शंकर ने पाँच मुख से पाँच कर्म वाले पुत्र उत्पन्न किये। उनके नाम मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पि और देवज्ञ हुए। मनु का कार्य शास्त्रादिक निर्माण, मय का कार्य लोगों के कार्य में आने वाले काष्ठादि पदार्थों के निर्माता, शिल्पी - देवमन्दिरादि के निर्माता, देवज्ञ - का स्वर्ण आदि अलंकारों के निर्माता हुए।

श्लोक - ऋगुवेदश्च मनोश्चैव यजुर्वेदो मयस्य च।
सामवेद स्त्वाष्ट्रकस्यत्वथर्वा शिल्पिकस्यच ॥
सुषुम्णामिथ वेदो उसौ दैवज्ञानां प्रकीर्तितः ॥

अर्थ - मनु का ऋगुवेद, मय का यजुर्वेद, त्वष्टा का सामवेद, शिल्पि का अथर्ववेद और देवज्ञ का सुषुम्णा नामक वेद है। यह सब ब्रह्म स्वरूप है। अब पांचालों का वर्णन करते हैं।

श्लोक - विश्वकर्मा निर्देशेन पुरा सृष्टा विरंचिना ।
चत्वारो मनवो लोक निर्मिताः सृष्टि हेतवे ॥

यो विरंचिः स वैराजः प्रजापतिरूदारधीः ।
अन्तराले गणनाश्च वरिष्ठो लोककारकः ॥
वैराजस्य मुखाज्जज्ञे विप्रः स्वायम्भुवो मनुः ।
स्वरोचिषो मनुः क्षत्री ब्राह्मणों बाहुमण्डलात ॥
रैवताख्यो मनुर्वैश्यो वैराजस्योरूमण्डलात् ।
तामसाख्यो मनुः शूद्रो वैराजस्यां घ्रिमण्डलात् ॥
(ब्रा. द. मार्तण्ड)

अर्थ - विश्वकर्मा जगदीश्वर की आज्ञा से वैराज ने चौदह लोक निर्माण करके चार मनु उत्पन्न किये। उनके मुख से ब्राह्मण की सृष्टि करने वाले स्वयम्भव मनु हुए। बाहू से क्षत्रिय सृष्टि को उत्पन्न करने वाले क्षत्रिय रूप स्वरोचित मनु हुए। उरू से या नाभि से वैश्य सृष्टि को उत्पन्न करने वाले वैश्यरूप रैवत मनु हुए और चरणों से शूद्र सृष्टि के करने वाले तामस मनु हुए।

श्लोक - स्वायम्भुवस्य षट् पुत्रा ज्योष्ठोऽथर्वा प्रकीर्तितः ।
सामवेदो यजुर्वेदः क्रमादृग्वेद एव च ॥
वेदव्यासः पंचमोऽथ प्रियवृत उदीरितः ।
ऐतेषष्मुख्यविप्राश्च तूपविप्रानथो श्रृणु ॥
आधः शिल्पायनश्चैव गौरवायन एव च ।
कायस्थायन आख्यातस्ततो वै मागधायनः ॥
अथर्वादय आद्याश्च मनोः स्वयम्भुवस्य ते ।
षट्पुत्रा मुख्यविप्राश्च कथिता वेदवादिभिः ॥
ऋगुवेदादिक वेदानाममेषामध्ययनं स्मृतम् ।
ते मुख्यवेदिनः सवे मुख्यब्राह्मण संज्ञकाः ॥
स्वायम्भुवमनोः पुत्राः प्रोक्ताः शिल्पायनादयः ।
चत्वार उपविप्राश्च कथिता वेदवादिभिः ॥
आयुर्वेदादिवेदाना मेषा मध्ययनं स्मृतम् ।
ते चोपवेदिनः सर्वे ह्युपब्राह्मण संज्ञकाः ॥

अर्थ - स्वयम्भुव मनु के क्रम से साम, यजु, ऋगु, अथर्व, वेदव्यास और प्रियव्रत ये छः पुत्र हुए। यह मुख्य ब्राह्मण हैं। इनके पीछे चार पुत्र और हुए। वे शिल्पायन, गौरवायन, कापिस्थायन और गंगवायन नाम से विख्यात हुए और अथर्वादिक छै पुत्र मुख्य ब्राह्मण हैं। वे वेदमन्त्रों के पढ़ने के अधिकारी हैं। मुख्य

ब्राह्मणों का शिखा, यज्ञोपवीत, गायत्री में अधिकार है।

तथा चौबोपविप्राणं गायत्री श्रवणं स्मृतम ॥

ये चार गायत्री, ब्राह्मण के मुख से सुन सकते हैं।

श्लोक – अथर्वणस्योपवेदः शिल्पवेदः प्रकीर्तितः ।
तस्मादाथर्वणः प्रोक्ता सर्वे शिल्पिन एव च ॥
शिल्पायनस्य ये पुत्रास्तेषु ज्येष्ठश्च लोहकृत ।
सूत्रधारः प्रस्तरारिस्ताम्रकारः सुवर्णाकः ॥
पांचालानां च सर्वेषा शाखा वै वैश्यकर्मणि ।
तेषां वै पंचगोत्राणां प्रवरं पंचकं स्मृतम् ॥
तेषा वै रूद्रवदैवत्यं त्रिष्टुप् छन्दस्तथैव च ।

अर्थ – अथर्ववेद का उपवेद शिल्पवेद हैं। इस कारण सब शिल्पी अथर्वण होते हैं। इन उपपांचालों में शिल्पायन के पुत्र लोहकार, काष्ठकार, सूत्रधार, प्रस्तरारि या पत्थर की नकाशी करने वाला, ताम्रकार सुवर्णक हुए। इन सबों की वैश्यकर्म शाखा कौडिन्य, आत्रेय, भारद्वाज, गौतम, काश्यप यह गोत्र और सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष, ईशान यह पांच प्रवर हैं।

अश्वलायन, आपस्तम्ब, बोधायन, दाक्षायण और कात्यायन, यह पांच सूत्र हैं। रूद्रदेवता, त्रिष्टुपुछन्द और रूद्र गायत्री का अधिकार है।

श्लोक – शिल्पवेदश्च शिल्पानां पंचानां परिकीर्तितः ।
अध्ययनं च तत्रैव संहिता पंचकं स्मृतम् ॥
शिल्पायनसुतो ज्येष्ठो मनुः शिष्यत्वमेय वै।
पपाठ संहितामाद्यां धातुर्वेदस्य लोहकृत ॥
सूत्रधारो द्वितीयोऽथ मयशिष्यत्वमादरात ।
संहिता सूत्रधाराख्यामपठत कौकमेव च ॥
शिल्पायन सुतस्तक्षा शिल्पः शिष्यत्व मादरात ।
सुशीलसंहिता तस्मात्पपाठ भृगुनन्दन ॥
अथ ताम्रकारः शिष्य शिल्पिकस्या भवत्पुरा ।
शिल्पायन सुतस्तुर्यस्च पठनाम संहिताम् ॥
नाड़िंधमोऽथ शिष्योऽभूद्विश्वज्ञस्यैव पंचमः ।

सुतः शिल्पायनस्यैव पपाठ स्वर्ण संहिताम् ॥

अर्थ – इन्हें शिल्प वेद की पाँच संहिता पढ़नी चाहिए। शिल्पायन के बड़े पुत्र ने मनु का शिष्य बनकर उनसे धनुर्वेद की संहिता पढ़ी, सूत्रधारी ने मय का शिष्य बनकर सुत्राधार संहिता पढ़ी, और कोंक संहिता पढ़ी, तक्षा ने शिल्पी का शिष्य बनकर शैलसंहिता पढ़ी, ताम्रकार ने त्वष्ट्र का शिष्य बनकर ताम्रसंहिता पढ़ी, स्वर्णकार ने देवज्ञ का शिष्य बनकर सुवर्ण संहिता पढ़ी, इस प्रकार पांचों ने पांच शिल्प संहिता पढ़ी। वह पीछे भ्रष्ट होते होते सब कर्मो से रहित हो गये। उस समय विश्वकर्मा के मुख से उत्पन्न हुए, मनु, मय आदि पाँच देवता वाले थे।

श्लोक – नित्यं नैमित्तकं कर्म द्विजातीनां यथाक्रमम् ।
पितृयज्ञं भूतयज्ञं दैवयज्ञं तथैव च ॥
जपयज्ञं ब्रह्मयज्ञं पंचयज्ञांश्चरन्ति वै ।
एवं त्रिविध आचारः कर्तारस्ते द्विजातयः ॥

अर्थ – पांचालों को तो षट्कर्म करने का अधिकार है। यज्ञ करना, कराना, पढ़ना, पढ़ाना, दान लेना, वह षट्कर्म कहे जाते हैं। स्नान तीन काल की संध्या अग्निहोत्र यह सब कर्म करने के हैं। नित्य नैमित्तिक लेना कर्म पांचालों को करना चाहिए। पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, देवयज्ञ, जपयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ यह सब कर्म करने के हैं।

(ये पुराणोक्त कर्म करते हैं।)

29 "अग्रभिक्षु अग्रदानी, आचार्य"

जो ब्राह्मण मृतक के वस्त्रादि दान लेते हैं। सूतक में तथा दशमास पिण्डी में अर्थात वर्षा में तथा अशोच में जो ब्राह्मण हाथी, घोड़ा, पालकी आदि का दान लेते हैं। वे अग्रभिक्षु या अग्रदानी कहे जाते हैं। एकादशा, तीजा आदि सब अशुद्ध हैं उसमें दान लेने के कारण से ही ब्राह्मण जाति श्रेष्ठता से पतित हो गई, और स्पर्श से भी वंचित हुई। युक्तप्रदेश अर्थात गया में यह ब्राह्मण कट्या व बंगाल में अग्रदानी, उड़ीसा में अग्रभिक्षु और पश्चिम में आचार्य माने जाते हैं। यह जाति इसमें तो सन्देह नहीं कि यह ब्राह्मण नहीं हैं। परन्तु ब्राह्मणत्व और ब्राह्मण के कर्म धर्म से बिल्कुल पृथक प्रकिया हैं। और इनके यहाँ सदाँ मृतक का अशौच धन अर्थात अन्नादि आता है। इस कारण यह ब्राह्मणों के उच्च व्यवहार से पृथक हो गये, इनका सम्वन्ध इन्हीं के वर्ग में होता है। प्रायः इनमें पढ़े लिखे लोग वहुत कम पाये जाते हैं। परन्तु अब कुछ लोग पढ़ गये हैं। मनु जी ने कहा कि -

श्लोक - गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन् ।
प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्धयति ॥

अर्थ-गुरु के मृतक होने पर पितृमेध करता हुआ, शिष्य भी प्रेतहारों के साथ दशरात्रि में शुद्ध होता है। तव जो निरंतर प्रेत क्रिया में संलग्न है, तव उनके साथ दूसरी श्रेंणी के ब्राह्मणों की एक पंक्ति कैसे हो सकती है। हाँ इनमें कोई विद्वान होंकर नित्य शुभकर्म अनुष्ठान करें श्रेष्ठ दान लें यज्ञ हवनादि करे अशौच का दान ग्रहण न करें सुआचार हों ब्रह्म वैवर्त कहता है कि -

श्लोक - लोभी विप्रश्च शूद्राणामग्रे दानं गृहीतवान ।
ग्रहणे मृतदानानामग्रदानी वभूव सः ॥

अर्थ - जिन लोभी ब्राह्मणों ने शूद्र से प्रथम दान लिया, तथा मृतक का दान लिया, वह अग्रदानी या कटया ब्राह्मण कहाये। यह शास्त्र मर्यादा का नियम है, सो मैंने लिखा है। किसी दोषी विचारों से नहीं लिखा है, कर्म श्रेष्ठ द्विज प्रत्येक को मान्य होते हैं। ऐसा विद्वानों का मत है। त्रुटियों के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ और फिर ब्राह्मण जाति तो स्वयं बुद्धि श्रेष्ठ जाति है, दया प्रवृति विप्र में मौजूद रहती ही है। मेरा करवद्ध एक ही निवेदन है कि यह पुस्तक ब्रह्म वंश के ही महापुरुषों के कर कमलों तक सीमित रहनी चाहिए। अव आगे मैं कोंकड़ आभीर, भिल्ल ब्राह्मण पर्यन्त जो जातियाँ हैं, तथा कुण्डगोलक जातियाँ हैं, हमने इनका भी स्वरूप लिखा है।

'कन्हाड़े ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

सह्याद्रि खण्ड में स्कन्द जी पूछते हैं, कि हे देव! काराष्ट्र ब्राह्मणों की उत्पत्ति कहिए तब देवादिदेव भगवान शिव ने कहा कि वेदवती नदी के उत्तर में और कृष्णा नदी के दक्षिण में दस योजन के मध्य में कारोष्ट्र देश है। उस देश में ब्राह्मण कन्हाडे नाम से विख्यात हैं।

तद्देशजाश्च विप्रास्तु काराष्ट्रा इति नामतः ।

इनकी देश में निन्दा है। नरवलि के कारण यह निन्दित हैं। इन्होंने व्यभिचार से उत्पन्न रेत के राक्षस की अस्थि से प्रक्षेप किया।

श्लोक – स्वरस्य ह्यस्थि योगेन रेतः क्षिप्तं विभावकम् ।
तेन तेषां समुत्पत्तिर्जाता वै पापकर्मिणाम् ॥

अर्थ – इस देश में विकराल स्वरूपा मातृका पूजी जाती है। यह ब्राह्मण प्रतिवर्ष इस माता की पूजा करते हैं। इनका भोजन दूसरे ब्राह्मणों की पंक्ति के साथ नहीं है। पुरीश, अत्रि, कौशिक, वत्स, हारीत, शाण्डिल्य, माण्डव्य, देवराज और सुदर्शन यह उन ब्राह्मणों के गोत्र हैं। इन्होंने गरदादेवी का यज्ञ किया था, इस कारण इनकी सर्वत्र विजय हुई। इससे यह देवी को नरवलि देते हैं। इनमें तीन आसामियों कानाम पद्या है, यह केवल गायत्री के जानने वाले हैं (पदमात्रां तु गायत्रीपारगाः कोंकड़े स्थिताः)

कथा इस प्रकार है।

कुमुद्वती नदी के किनारे सुमुख नामक एक ब्राह्मण रहता था। उसको कामदेव ने प्रसन्न होकर वसंतोत्सव नामक एक गेंद दी और ऋषि उस गेंद को लेकर वहाँ रहे, एक समय एक तरुण विधवा ब्राह्मणी उस आश्रम में आई और ऋषि को नमस्कार करके खड़ी हुई, ऋषि वोले हे तरुणी तेरे पुत्र होगा। ब्राह्मणी ने आश्चर्य से कहा कि पुत्र तो होगा पर देवी के वरदान से विष देने वाला होगा। और विप देने में अति कुशल होगा, कारण ऋषि ने पूछा तो विधवा तरुणी ने वताया कि कारण यह है कि देवी ने कहा कि पुत्र की इच्छा हो तो प्रति तीसरे वर्ष मेरी प्रीति के निमित्त विषदान का व्रत करना। ऋषि देवाज्ञा को सुनकर चुप हो गये। क्योंकि देववचन तो अटल हुआ करते हैं। पीछे उस गेंद को हाथ में लेकर पीछे एक गर्द्भ की अस्थि वहाँ पड़ी थी, उसको छुआकर उस गेंद को रख दिया। उस गेंद के स्पर्श से एक वड़ा दृढ़ाँग पुरुष उत्पन्न हुआ, और गधर्व अर्थात गधे के समान उसने वचन किया। उसने ऋषि की आज्ञा से उस स्त्री से रति की, उससे जो पुत्र उत्पन्न हुआ वह रवर अर्थात गधा संम्भव गोलक कहाया। यह सब इस वंश के गोलक कहाये। बलिदान के कारण हव्य कव्य से रहित हैं।

(गोलक)

दूसरी कथा प्रसंग इस प्रकार है कि सह्यादि खण्ड के प्रथम अध्याय में लिखा है। कि परशुराम क्षेत्र में नदीपुर नामक एक क्षेत्र है। वहाँ कर्मनिष्ठ ब्राह्मणों का निवास था। उनमें अवगुण सम्पन्न व्यभिचारी एक ब्राह्मण था, उसके निकट सम्बन्धी भी उसकी वजह से दोषी बने जब वह मर गया। तब दूसरे ब्राह्मण अपने को संसर्ग दोष से भ्रष्ट हुआ जानकर शास्त्र प्रमाण से प्रायश्चित करके कृष्णा नदी के तट पर कराड़ नामक क्षेत्र में जाकर रहे इस कारण यह ब्राह्मण कन्हाडे कहाये।

श्लोक - कराहाटभिधे क्षेत्रे कृष्णातीरे गता यतः ।
भिन्ना ज्ञातिः साभवद्वै करहाट भिधानतः ॥
इनमें जो भ्रष्ट हुआ वे पद्या कहाये
तेषां मध्ये च ये भ्रष्टास्ते पद्याख्या भवन्ति हि ।

यह पद्या भी अपांक्त हुए इनको एक वेद का अधिकार है यह सांग ऋगुवेद पढ़ते हैं। अपने पद में रहने से पद्ये कहाये। करहाट में रहने से कनहाड़े कहाये।

श्लोक - स्वस्मिन्नेव पदे वासात्ते पद्यास्तु प्रकीर्तिताः ।
करहाटे तु सत् क्षेत्रे करहाट भिधाः स्मृताः ॥
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - यह शाके सम्वत् 915 में षट्कर्माधिकारी हुए हैं, गोत्र चन्द्रिका में इनके गोत्र, प्रवरादि लिखे हैं।

(इति कन्हाड़े)

'कुन्डगोलक ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

शूद्र कमलकारक में धर्मराज का वाक्य है।

श्लोक - अमृते जारजः कुन्डो मृते भर्तरि गोलकः ।
जारजातः सवर्णायां कुन्डो जीवति भर्तरि ॥
मृते गोलक नामा तु जाति हीनौच तौ स्मृतौ ।
असवर्णासु नारीषु द्विजेरूत्पादिताश्च ये ॥
पर पत्नीषु सर्वासु कुन्डास्ते गोलकाः स्मृताः ।
मातृवर्णा न ते प्रोक्ताः पितृवर्णा न च स्मृताः ॥
अविवाह्यः सुताश्चैषां बन्दुर्भिः पितृमातृतः ।
आदित्य पुराणों
चतुर्णामपि वर्णानां जीवतामन्य संभवः ॥

कंडस्तु संकरीज्ञेयो मृतानामथ गोलकः ।
जातिहीनः समातृणां ग्राह्योत्कर्मनामनी ॥
योज्यो देवपुरे राज्ञा वर्णशंकरभीरूणाः ।
कुन्डो व गोलको विप्रः संध्योपासनमातृवित् ॥
स्नान भोजन संध्यासु देवेणु संपठेच्च तत् ।
एवमेव द्विजैर्जातौ संस्कार्यौ कुन्डगोलकौ ॥
मनुः - जातोवार्यामनार्यायामार्योदर्यो भवेभ्दगणौः ।
जातोप्य नार्यादार्याय मनार्या इति निश्चयः ॥
अनयोः श्राद्धे निषेधमाह याज्ञवल्क्यः ॥
रोगी हीनाति रिक्तांगः काणाः पौनर्भवस्तथा ।
अवकीर्णि कुन्डगोलौ कुनरवी श्यावदंत्तकः ॥
श्राद्धे वर्ज्य इति शेषः ।

अथ - स्त्रियों में कुन्डगोलक पुत्र उत्पन्न होते हैं। पति जीवित होते हैं, परन्तु पर पुरुषों से जो पुत्र उत्पन्न होते हैं, वह कुन्ड कहलाते हैं। और पति के मरने पर जो पर पुरुष से पुत्र उत्पन्न होता है, उसे गोलक कहते हैं। चाहे वे अपने वर्ण में उत्पन्न होवें चाहे जाति से पृथक अंश से हों और सब जातियों की पर स्त्रियों में ब्राह्मण पुरुष से उत्पन्न हो वो कुन्ड गोलक कहे जाते हैं। उनका वर्ण धर्म न माता से मिलता है, न पिता से। उनके साथ पूर्व के सम्बन्धियों का विवाह नहीं होता है, यह कुन्ड गोलक संकर जाति या वर्णसंकर सन्तान के अन्तर्गत आते हैं। चार वर्णो में पति के जीते अन्य पुरुष से उत्पन्न हुआ कुन्ड और पति के मर जाने के पश्चात अन्य पुरुष से उत्पन्न हुआ गोलक कहलाता है। ऐसा आदित्य पुराण का लेख है। राजा को ऐसे पुरुषों की योजना देवद्वार में करनी चाहिए। उनकी माताओं के नाम तथा कर्मो से इनके नाम कमो की व्यवस्था करनी चाहिए। कुन्डगोलक ब्राह्मणों के स्नान, संध्या, भोजन के समय वंदीजन जैसा वचन कहना, संध्योपासन मात्र करना, कोई कहते हैं ब्राह्मण से उत्पन्न हुए कुन्डगोलक का संस्कार करना। मनु कहते हैं नीच स्त्री में उत्तम वर्ण से उत्पन्न हुए कुन्डगोलक संस्कार के योग्य हैं। उत्तम वर्ण की स्त्री में नीच से उत्पन्न कुन्डगोलक संस्कार के योग्य नहीं होते हैं। यज्ञवल्क्य ऋषि ने कहा है कि रोगी, हीनांग अधिकांस छन्गा काना, पौनर्भव अर्थात भेंडा या विकलांग अवकीर्ण कुन्डगोलक को या बुरे नरवों वाला काले दाँत इतने पुरुषों को श्राद्ध में जिमाने का निषेद्ध है।

(गोलक व कुन्डगोलक)

'इति'

---

30 'तलाजिया ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

यह तलाजिए जाति नाम से ब्राह्मण है। इनका प्रमाण स्कन्द पुराण में लिखा है, कि जब रामचन्द्र जी ने शम्बूक नामक शूद्र को मारकर ब्राह्मण के बालक को दोष शांति के लिए भोजन करवाया। फिर प्रभाष क्षेत्र में गये वहाँ से सौराष्ट्र देश में आये। वहाँ दुर्गा देवी ने एक तराल नाम का राक्षस था। उसका वध करके देवी ने उस दैत्य को जमीन में गाड़ दिया, और उसके ऊपर रैवत का शृंग स्थापित करके उस पर अपना स्वरूप द्वारवासिनी नाम से स्थापित किया। वहाँ के धींवर जाति के लोग महान भक्ति के साथ देवी की पूजा करते थे, और लूटमार करते थे। श्री भगवान राम ने वहाँ आकर देवी का दर्शन किया, और ब्राह्मण भोजन करवाया तथा दक्षिणां दी पीछे राम जी ने विप्रों को स्वर्ण मुद्रा देने का विचार किया। ब्राह्मणों ने यह सुनकर प्रसन्नतापूर्वक आगमन किया। लालचवश यहाँ के कुछ धींवर भी ब्राह्मणों का वेष रखकर उनमें जा मिले। तब श्री रामचन्द्र जी ने यह जानकर कि यह संकरता फैलाने वाले महाअपराधी हैं। रामजी ने उनको मारने की इच्छा की तब देवी भगवती ने प्रकट होकर कहा कि भगवन् ये धींवर मेरे भक्त हैं, इन्हें न मारिये। राम ने कहा कि आगे इनसे बड़ा अनर्थ होगा। तब देवी दुर्गा ने श्री राम से कहा –

श्लोक – ततो देव्यब्रवीद्राममेते ब्राह्मणवेशिनः ।
वंदिनः समजायन्तां सशिखाः सूत्रधारिणंः ॥

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

ये सभी लोग शिखा सूत्रधारी कलयुग में बन्दी कहलावेंगे और मेरे वर से इनकी काया पलट होगी तब वे धींवर त्रिनामक गाँव में गये वहाँ यज्ञोपवीत लिया। द्विकर्णा ग्राम में कर्णवेध कराया, उनके सात गोत्र स्थापित हुए। यह नाम मात्र ब्राह्मण नाम मन्त्र से ही यज्ञोपवीत धारण करते हैं।

श्लोक – केवलं द्विजमात्रास्ते सोपवीती ह्यमंत्रकाः ।
तडाडजा द्विजास्ते वै जाता रामप्रसादतः

अर्थ – त्रिग्राम और द्विकर्णा में निवास करने से तडाजिए नाम से विख्यात हुआ इनको –

पादांगगुष्ठोदके दक्षं न श्राद्धे चाधिकारिता ॥

(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ – इनको ब्राह्मणों के पाईतीर्थ लेने का अधिकार नहीं है। यह गाँव गुजरात के निकट गोलवाडा देश में भावनगर से पश्चिम बारह कोस पर तुलजापुर व तलजा नाम से विख्यात हैं। इनकी कुलदेवी द्वारवासिनी है। इनका समूह इस समय तलाजा, झांझमेर, पीथलपुर, सथरा, उचड़ी आदि ग्रामों में है। रघुनाथ जी इस तरह तीर्थ यात्रा करके अयोध्या में लौटे।

(ये गुर्जर सम्प्रदाय के हैं।)

'इति'

31 "गोलक कोंकड़ देश"

श्लोक – केरलाश्च तुरंगाश्च तथा सौराष्ट्र वासिनः ।
कोंकड़ाः करहाटाश्च करनाटाश्च वर्वराः ॥
इत्येते सप्त देशाश्च कोंकणः परि कीर्तिताः ॥

अर्थ – सह्यादि खण्ड में यह प्रमाण लिखा है, कि शौनक ऋषि ने कहा है कि केरल, तुरंग सौराष्ट्र, कोंकण, करहाट, कर्नाटक और वर्वर यह सात देश कोंकण कहे जाते हैं। एक समय महर्षि भार्गव शुक्तिमती नदी के किनारे स्नान के निमित्त गये वह वहाँ स्नान करने लगे। उसी समय कुछ गर्भवती विधवा स्त्रियाँ भूँख से व्याकुल हुई वहाँ आई, और ऋषि से कहा कि हम 32 ग्रामवासी श्रोत्रिय वंश की स्त्री हैं, परन्तु कर्म रेखा से हम विधवा हुई हैं। और गर्भवती हो जाने के कारण बन्धुजनों ने हम लोगों को त्याग दिया। अब हम आपकी शरण में हैं। यह दीन वचन सुनि ऋषि ने उन पर दया की और कोस स्थान पर ले जाकर उनको बसाया और कहा –

श्लोक – क्रियतामत्रा संवासः संततिवों भविष्यति।
गोलका इति नाम्रा ते ख्याति यास्यिन्ति निश्चयम् ॥
आवेदिकी क्रिया सर्वा पुराणापठनं न च ।
कलिंग स्पर्शनं योगः सर्वेसामत्रि गोत्रकम् ॥
पारशष्दं कारर्वेलं वामनं चोलुकं तथा ।
कपित्थं चेति पंचैव ग्रामाः स्युः मुखकारकाः ॥

तुम्हारी सन्तान गोलक नाम से विख्यात होगी, वेद पुराण रहित सब क्रिया तुम्हारी होगी। शिवलिंग स्पर्श का उनको अधिकार न होगा। सब का अत्रि गोत्र होगा। पारकारवेल, वामन, चोलुक, कपित्थ इन पाँच गाँवों में वह सन्तति निवास करेगी। नाम मात्र के ब्राह्मण होकर वह कलयुग में विचरण करेगें।

श्लोक – पात्यतग्रामनामा वै भुक्तिमत्याश्च दक्षिणे ।
तत्राऽष्टौ ब्राह्मणाः श्रेष्ठा समायाताः सभार्यकाः ॥
शूद्राणां वाहक जाताः पतितास्ते न संशयः ।
पात्यतग्रामकोऽन्यस्तु कोटिलिंगश सन्निधौ ॥
तत्र ये ब्राह्मणाः सन्ति तप्तमुद्रांकिताश्च वै ।
कूट साक्षि प्रदानेन पतितास्ते न संशयः ॥
पातित्यग्रामकोऽन्यश्च बक्रनद्यास्तटे शुभे ।

तत्र विप्रा वेदवाह्यस्तन्तुमात्रा द्विजातयः ॥
गायत्रीजपमात्रेण ब्राह्मण इति तान्विदुः ।
ख्याता लोकेषु सर्वत्र स्वग्रामरभिधयैव ते ॥

अर्थ - भुक्तिमती के दक्षिण किनारे पात्यित ग्राम है वहाँ आठ श्रेष्ठ ब्राह्मण अपनी स्त्रियों सहित आये वे शूद्रों के पुरोहित होने से भ्रष्ट हो गये। कोटिलिंगेश के समीप दूसरे पातित ग्राम में जो तप्त मुद्रा भुजाओं में लगाने वाले ब्राह्मण निवास करते थे। वे झूठी गवाही देने के कारण पतित हो गये थे।

वक नदी के किनारे दूसरे पात्यत ग्राम के निवासी ब्राह्मण यज्ञोपवीत धारण नाम के ब्राह्मण हैं। वस गायत्री जप मात्र से ही वे ब्राह्मण हैं वे पात्यित ग्राम के नाम से ही पतित ब्राह्मण कहलाते हैं।

श्लोक - कुंडालकं पट्टिकंच मट्टिनागाभिधं तथा ।
रामेण निर्मिता विप्राः स्थिता ग्राम चतुष्टये ॥
षट्कर्म रहिता ये तु राजन्ते भुवनेश्वर ।
वक्ष्यामि राजशार्दूल ग्राममन्यं वहिष्कृतं ॥
वेलंजीति तमित्याहुः सीतायाश्चोत्तरे तटे ।
कृत्वा मिथुनहत्यां च प्रचरन्ति नराधमाः ॥
सौराष्ट्र ब्राह्मणाः सर्वे शुद्धि प्रापुश्च यत्र वै।
तदा प्रभृति तं ग्रामं वेलंजीति वदन्ति हि ॥
तत्र स्थितान् द्विजान सर्वान्पति तान्प्रवदन्ति हि ।
तेषां दर्शन मात्रेण पातित्यं चानुयास्यति ॥
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - कुन्डालपट्टिक मट्टिनाग ब्राह्मण रामचन्द्र जी के स्थापित किये। इन चार ग्रामों में निवास करने के कारण ग्रामों के नाम से विख्यात हुए। यह भी छः कर्मों से रहित हैं। अव दूसरे वहिष्कृतों की कहते हैं। सीता के उत्तर किनारे वेलंजी ग्राम है यहाँ के निवासी ब्राह्मणों ने मिथुन हत्या की इस कारण वे वेलंजी मिथुन हर ब्राह्मण कहाये। वे सव पतित हैं और इनका दर्शन भी अनिष्ट है।

श्लोक - केरले संस्थिता विप्राः केरलास्ते प्रकीर्तिताः ।
तौलवे तौलवाश्चैव हैगा कोटास्तथैव च ॥
नैम्वरू ब्राह्मणश्चैव यम्वराद्रि द्विजास्तथा ।
परस्परं प्रकुर्वन्ति कन्यासम्वन्ध मेव च ॥
हैगाख्या ब्राह्मणश्चैव कन्या काया ह्यलाभ के ।
नैम्वरू ब्राह्मणानां वै कन्या गृह्वन्ति केचन ॥
(ब्राह्मण उ. मार्तण्ड)

अर्थ - केरल देश के रहने वाले ब्राह्मण कहे गये, तौलवदेश के तौलव ब्राह्मण कहे गये हेगा के हेगा ब्राह्मण कहे गये, कोटा के कोट ब्राह्मण कहे गये। नैम्बरू के नैम्बरू ब्राह्मण, यम्बराद्रि के यम्बराद्रि ब्राह्मण कहे गये। इनके कन्या सम्बन्ध परस्पर होते हैं। जबकि हेगा ब्राह्मणों को कन्या नहीं मिलती तब वे नैम्बरू ब्राह्मणों की कन्या लेते हैं। इनमें किसी की केरली किसी की तौलवी तुलवी और दूसरों की कर्णाटकी भाषा है।

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड से)

'इति'

'गुरडा ब्राह्मण'

यह राजपुताना में निम्न श्रेंणी के ब्राह्मण कहाते हैं। वाभी, वलाई, दैढ़ आदि अछूत जातियों के यहाँ की वृत्ति करते हैं। इस कारण वह निम्न श्रेणी में गिने जाते हैं। कोई इनको ब्रह्मा जी के पुत्र मेध ऋषि की सन्तान मानते हैं। कोई कहते हैं कि इन्होंने मरी गाय को उठा कर फेंका था इस कारण यह पतित हुए हैं। कोई कहते है कि यह गुरु भक्त होंने से गुरडा कहाये जाते हैं।

'अम्मा को दागा ब्राह्मण'

यह कुर्ग देश की ब्राह्मण जाति है। यह कावेरी ब्राह्मण भी कहे जाते हैं। यह कुर्ग के दक्षिणी, पश्चिमी किनारों पर रहते हैं। कावेरी नदी को पूजते हैं। माँस मंदिरा का सेवन नहीं करते ।

'आभीर भिल्ल अर्थात भील जाति ब्राह्मण उत्पत्ति'

कहावत है कि एक वार भगवान रामचन्द्र जी जव विन्ध्यांचल पर्वत के समीप ताप्ती नदी के किनारे पर आये तब एक समय उनको भिल्लों के समूह ने आकर कहा कि हमारे कर्मोनुसार हमें ब्राह्मणों की आवश्यकता है। और तपस्वी ब्राह्मण हमारे ब्राह्मण कृत्यों में आते नहीं हैं। इसलिए हे प्रभो ! हमें ब्राह्मण दीजिए यह सुनकर कृपानिधान रघुनाथ जी प्रसन्न हुए और कहा मैं भूमि में सात रेखाये करता हूँ तुम एक ए्क पर पैर रखो तब वे पहली रेखा पर खड़े हुए तब श्रीराम ने उनसे कहा कि तुम कौन हो वे बोले कि हम भील हैं। पर भील कर्म को छोडकर शुद्ध स्वभाव वाले हैं। दूसरी रेखा पर खड़े होकर अपने को विश्वकर्मा जाति का बताया, तीसरी पर शूद्र चौथी पर सच्छंद और पाँचवी पर वैश्य, तथा छटी पर क्षत्रिय

व सातवीं रेखा पर खड़े होकर अपने को ब्राह्मण बताया। और सर्वगुण सम्पन्न हुए। तब राजचन्द्र जी ने कहा कि भील जाति के कर्म धर्म में तुम्हारा अधिकार होगा। तुम भील आभीर ब्राह्मण कहाओगे। और कानुबाई, रानुबाई कुल देवी होगी। विवाहादि में तुम इन्हीं की पूजा करना, नवरात्रि में प्रतिवर्ष नारा लपेटना अखण्ड दीपक जलाकर तुम सदैव पूजा करना ।

(यह महाराष्ट्र सम्प्रदाय के हैं।)

'देवरूख ब्राह्मणों की उत्पत्ति'

वासुदेव चित्तले नाम का एक चित्तपावन ब्राह्मण था। उसने बावड़ी, कूप, बनाकर अनेक धर्मानिष्ठान किये। उसने बारह वर्ष तक देवी की पूजा की उसको सिद्धि की प्राप्ति हुई पीछे वह परशुराम क्षेत्र में एक श्मशान के समीप सरोवर बनाने की इच्छा से धन के मद से मस्त हो गुणी ब्राह्मणों तक से मृतिका निकलवाने लगा। एक समय देवरूख की ओर से वेदशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण समूह वहाँ आया। उनमें सब कन्हाड़े ब्राह्मण थे। उन्होंने सब स्त्री पुरुषों को मृतिका ढोते हुए देखकर उस ब्राह्मण से पूछा कि यह क्या बात है। तब ब्राह्मणों ने सब वृतान्त सुनाया। वे सुनकर बड़े आश्चर्य में हुए और उससे कहा कि तुम भी तो मृतिका निकालो, वासुदेव ने प्रार्थना की परन्तु वे वाद विवाद करने लगे, तब उस ब्राह्मण ने श्राप दिया कि जो तुम्हारी पंक्ति में भोजन करेंगे तथा सहवास करेंगे वे दरिद्री होंगे और तुम भी तेजहीन लोकनिन्द होंगे। देवरूख प्रदेश से जाने के कारण तुम्हारा नामदेवरूख होगा 1418 शाके सम्वत् में वे चित्तपावन के श्राप से देवरूख ब्राह्मण कहाये ।

(महाराष्ट्र सम्प्रदाय के है)

'इति'

32 "कापित्थ या कायस्थ वंश उत्पत्ति"

'चित्रागुप्त वंशज'

श्लोक -

ब्रह्मोवाच। गच्छ पुरुष भद्रं ते तप आचरतामिति। इत्याज्ञप्तः सत्पुरूषो ययौ धौरेयदेशकान्॥ उज्जयन्याः समीपे तु क्षिप्रायाश्च तटेशुभे। पश्चकोशात्मके क्षेत्रे तपस्तप्तं महत्तरम्॥ ततः कतिपये काले ब्रह्मा लोकपितामहः। उज्जयन्यां ततः श्रीमानाजगास मुदान्धितः॥ यजनार्थाय यज्ञैश्च नानासंभार संयुतः। चित्रगुप्तोऽपि धर्मात्मा कन्याः प्राप सुलक्षणाः वैवस्वतमनो कन्याश्चतस्त्राः शुभलक्षणाः। अष्टौ स्वरूपा नागियाः पितृभक्ति परायणाः॥

तासां समवन्पुत्रा द्वादशैव जगत्प्रियाः। ब्रह्मा वर्ष सहस्त्रां तु यज्ञैरिष्ट्वा सुदक्षिणैः। चित्रगुप्त मुवाचेहं वाक्यं धर्मार्थमेव च। ब्रह्मोवाच। चित्रगुप्त महाबाहो मत्प्रियोऽस्मत्स मुद्भवः॥ चित्रगुप्त सुगुप्तांग तस्मात्त्वं सुविश्रुतः। मम कायात्स मुद्भूतः सर्वांगं प्राप्य सत्वरम्॥ तस्मात् कायस्थ विख्यातो लोके त्वं तु भविष्यति। एते वै तव पुत्राश्च काकपक्षधराः शुभाः॥ सर्वे षोडशवर्षीयाः शुभाचाराः शुभाननाः। परिप्राप्तसदाचारः कायस्था पंचमोमतः॥ धर्मराज गृहंगच्छ कार्यं में कुरू सुव्रत। सदसत्सर्वजन्तुना लेखकः सर्वदैव हि॥ एतान्दास्यामि सर्वान्वै ऋषिभक्ति परांस्तव। एवमुक्त्वा तु विप्रेभ्यो ददौ लोकपितामहः॥

माण्डव्याय ददौ पुत्रं सुरूपमृषिबल्लभम्। मंडपाचल सान्निध्ये मंडपेश्वर सन्निधौ॥ या देवी वर्तते मंडपेश्वरी जगदम्बिका। गृहीत्वागतवान् सोऽपि श्रषिगौडण्य संज्ञकः॥ नाम्ना श्रीनिगमः सोऽपि कायस्थो देव निर्मितः। मांडव्यास्तत्रा श्री गौडा गुरूवः शंसितव्रताः॥ नैगमास्तेऽपि वहप ऋषिभक्ति परायणाः। जाता वै नैगमास्तत्राशतशोऽथ सहस्त्रशः॥

(ब्राह्मण ऊ मार्तण्ड व पदमपुराणा पृष्ठ 4201429)

श्लोक 1 से 20 तक

अर्थ - ब्रह्मा जी की काया से उत्पन्न बालक ने सृष्टी कर्त्ता श्री ब्रह्मा जी की आज्ञानुसार उज्जेन नगरी में छपा नदी के तट पर 1000 वर्ष की तपस्या यज्ञ करने के पश्चात 12 कन्या प्राप्त की तथा ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर कहा हे मुने तेरा नाम चित्रगुप्त है मुझे तू अति प्रिय है। क्योंकि तू मेरी काया से उत्पनं हुआ है।

हे चित्रगुप्त तेरे सव अंग रक्षित हैं और मेरी काया से उत्पन्न होने की वजह से कायस्थ नाम से संसार में जाति विख्यात होगी तथा तेरे वंशधर चित्रगुप्त वंश करिके विख्यात होगा। मेरा वरदान है कि अब तुम सीघ्र ही अपने अंगों को प्राप्त करो । और जो तुम्हारे बारह पुत्र होंगे वे उत्तम आचार करने वाले होंगे। तुम्हारा पांचवां वर्ण मान्य है। तुम मेरा कार्य करना धर्मराज के पास जाकर प्राणियों के पाप पुन्य आदि का लेखा जोखा करना यह समझा कर ब्रह्मा जी चले गये। वाद चित्रगुप्त के 12 पुत्र हुए वारह कन्याओं से वारह ऋषियों को एक-एक पुत्र दिया । जिनका उल्लेख आगे है।

श्लोक –

गौडास्तेऽपिच मांडव्य शिष्यास्ते गुखः स्मृताः । शिष्याणां चैन लक्षैक प्रसंगात्स मुदीरतम्॥ तस्मादर्ध गतास्ते वै लंभितं वासयन्पुरम् द्वतीयं तु सुतं तस्य गौतमाय ददौ ततः॥ गौडेश्वरी तु या देवी वर्तने जगदम्बिका । श्री गौडः सोऽपि कायस्थो बहुधा विश्रुतः शुचिः॥ गौतमो दत्तवांस्तेपां गुर्वर्थे तानृषीन् विभुः। श्री गौडास्तत्रा शिष्यान्वै गुरूवस्ते तपस्विनः॥ तृतीयं च श्री हर्ष हारीतका च वाल्मीकय वशिष्ठो च सोभरि दालभ्याय हंस दशं तस्य पुत्रं तु भट्टाख्य मुनये ददौ च सोरभाय माथुराय ददो ततः श्र॥

अर्थ- यह 12 ऋषियों से कायस्थ 12 प्रकार के तथा तीन शाखा इस प्रकार 15 हैं। मांडव्य ऋषि का श्राप था कि तीन युगों में तो तेरा वंश पुन्यात्मा रहेगा परन्तु कलि युग में हींन हो जायेगे लेकिन वैश्य वर्णा से श्रेप्ठ और जाति ब्राह्मण से छुद्र जानी जायगी। ब्राह्मण समक्ष तेरा वंश वरावरी में नहीं माना जायगा।

इन के अनेकों भेद हैं। 1 चित्रगुप्त वंशज 2. धर्मगुप्त वंशज इनका पुत्र रूद्रगुप्त हुआ इसके चार पुत्र हुए जिनके नाम 1. माथुर या निगम आदि चित्र गुप्त वंशज श्रेप्ठ कायस्थ होते हैं। इनके निम्न गोत्र आस्पद है 1. श्रीवास्तव, 2. सक्सेना, 3. माथुर , 4. कुलश्रेप्ठ 5. चक 6. भटनागर 7 जोहरी 8. सिन्हा 9. निगम 10. वशिप्ठ 11. वाल्मीकि 12. अम्वप्ठ आदि हैं। ये ऊपर लिखे ऋषि आश्रमों के क्षेत्रों मे पृथक पृथक वास करने वाले हैं । और चित्रगुप्त वंशज नाम से विख्यात हैं इन्हें कायस्थ जाती के नाम से भली प्रकार जाना जाता है। लेखन कार्य इनका प्रमुख है। गणित के विशेपज्ञ होते हैं स्वाध्यायी कर्म कान्डी होते हैं।

'कापित्थ या कायस्थ उत्पत्ति'

12 प्रकार के (चित्रागुप्त वंश के) 2 शाखा 14

श्लोक – द्वादश विधि गौड़ ब्राह्मणानां चतुर्भिथि कायित्थानां
मुत्यिमाह पद्मे पातलखण्डे।
सूत उवाच एकदा ब्रहमलोके तु यमः प्रवाच कं प्रति ॥

चर्तुरर्शी तिलंक्षाणां शासनेऽहं नियोजितः ।
असहाय कथं स्थातुं शक्नोमि पुरुषर्णभ॥
ब्रह्मोवाच-प्रात्स्तये पुरुषः सीघ्रमित्युक्ता विपसर्जतान्।
धर्मराजे गते ब्रह्मा समाधिस्थो वभूवह ॥
वच्छरीशन्महा बाहुः श्यामः कमल लोचनं।
लेखनी पट्टिका हस्थो मणीभाजन संयुतः॥
स निर्गतोऽग्रतस्तस्थो नाम देहीत चाब्रवीत्।

(मार्तण्ड पुराण व पद्मपुराण पृ. 420-421)

अर्थ- एक कायस्थ के 12 भेद और तीन शाखा भेद इस प्रकार 15 प्रकार के कायस्थ का लेख उपलब्ध है सो मैं कहता हूँ।

पद्म पुराण मे सूत जी ने कहा है कि एक दिन धर्मराज व्रह्मा जी के पास जाकर बोले कि हे भगवान! मैं चौरासी लाख योनियों का लेखा जोखा लेने देने के लिए आपने नियुक्त किया हूँ। अब आप ही प्रभु सोचिये कि जन्म, मरण, कुकर्म, सुकर्म दण्ड, फल आदि असीमित कार्यो का भार बोझ अकेला मैं कैसे सम्भाल सकता हूँ। अर्थात मैं दूसरे की सहायता के बगैर कार्य सभाँलने में असमर्थ हूँ, मुझे सहायक चाहिए। ऐसा धर्मराज का वचन सुनकर श्रीब्रह्मा जी ने योगबल से एक बालक रूप पुरूष उत्पन्न किया, जो हाथ में कलम और पट्टिका लिये श्रीब्रह्मा जी से बोला कि मेरे को काम बताइये। तब ब्रह्मा जी ने कहा है कि पुरूष! तू जा और तपकर तेरा भला होगा। तब उस पुरुष ने अस्तु कहकर बड़े -बड़े देशों में घूमता हुआ उज्जैन नगरी के समीप छिपा नदी के तट पर जो पाँच कोस का क्षेत्र है। वहाँ बड़ा घोर, तप किया । बहुत समय बीतने पर लोकों के स्वामी ब्रह्मा जी हर्षित होकर उज्जैन नगरी में आये तथा एक महायज्ञ एक हजार वर्ष का किया । उस तपेश्वरी पुरुष जिसका नाम चित्रगुप्त था उसे सुलक्षणों से युक्त बारह कन्या प्राप्त हुई जो चार कन्या वैवस्वत मुनि की सेवा करने और आठ कन्या नागों की सेवा करने प्राप्त हुई। उनसे एक एक पुत्र चित्रगुप्त वंशज हुए । इसके बाद चित्रगुप्त से ब्रह्मा जी ने कहा कि ये तेरे बारह पुत्र हैं संसार में तेरा नाम विख्यात करेंगे।

'कायित्थ 15 भेद'

नोट - जो 4 कन्या वैवस्त मुनि की थीं और 8 कन्या नागों की थीं । इन 12 कन्याओं से एक एक पुत्र उत्पन्न हुए। ये 12 पुत्र एक एक करके 12 ऋषियों को दिये । जो निम्न प्रकार से निम्न क्षेत्रों में रहे। उन ऋषियों के नाम व क्षेत्रों के नाम तथा 12 कायस्थ के अवंब्क जो मों के सामने लगाये जाते हैं। उनका

विवरण प्रस्तुत करता हूँ।

1. पहला पुत्र माण्डव्य ऋषि को दिया । जो माण्डव्य क्षेत्र में रहे । इन्हे माण्डव्य कायस्थ सिन्हा कहते हैं।
2. दूसरा पुत्र श्री हर्ष ऋषि को दिया जो गंगा जमुना क्षेत्र में रहे इन्हें श्री हर्ष कहते हैं।
3. तीसरा पुत्र माथुर ऋषि को दिया जो मथुरा नगरी में रहे इन्हें माथुर कहते हैं।
3. चौथा पुत्र गौतम ऋषि को दिया जो गौड़ेश्वर क्षेत्र में रहे इन्हें श्री वास्तव कहते हैं।
5. पाँचवां पुत्र वाल्मीकि ऋषि को दिया जो मध्य प्रदेश आबूगढ़ क्षेत्र में रहे। इन्हें वाल्मीकि कायस्थ कहते हैं।
6. छटवा पुत्र हरीत ऋषि को दिया जो हरियाणा क्षेत्र में रहे इन्हें श्रोणपति कायस्थ कहते हैं।
7. सातवां पुत्र वशिष्ठ ऋषि को दिया जो अयोध्या के क्षेत्र में रहे इन्हें वशिष्ठ कायस्थ या कुलश्रेष्ठ कहते हैं।
8. आठवां पुत्र हंस ऋषि को दिया जो सुखसेन देश में रहे इन्हें सक्सेना सुखसेन कायस्थ कहते हैं।
9. नोवा पुत्र भट्ट ऋषि को दिया जो भटनगर क्षेत्र में रहे इन्हें भटनागर कायस्थ कहते हैं।
10. दसवां पुत्र दालभ्य ऋषि को दिया जो दालभ्य देश में रहे इन्हें दालभ्य कायस्थ कहते हैं।
11. ग्यारहवां पुत्र सौरभ ऋषि को दिया जो सूर्यमण्डल क्षेत्र में रहे इन्हें सूरजध्वज कायस्थ कहते हैं।
12. बारहवां पुत्र निगम ऋषि को दिया जो उज्जैन क्षेत्र में रहे। इन्हें निगम कायस्थ या जोहरी कहते हैं।

    नोट – इनकी 2 शाखा भेद हुए । जो इस प्रकार हैं।

13. एक शाखा भेद का पुत्र शोभरि ऋषि को दिया जो सोराष्ट्र देश में रहे । इन्हें शोरभ कायस्थ कहते हैं।
14. दूसरा शाखा भेद का पुत्र माण्डल्य ऋषि गोत्र का लंभित नगर में बसा उसे लंभित कायस्थ या चक कहते हैं।

नोट – कायस्थ सभी चित्रगुप्त वंशज हैं। मोटी चोटी सिर पर रखते हैं। मस्तक चन्दन और जनेऊ धारण करते हैं। कर्म काण्डी होते हैं । बुद्धि के तीव्र और गणित तथा लेखन कार्य के प्रकाण्ड विद्वान होते हैं। अन्य संकर जाति कायस्थों की अनेक है। उनका वर्णन पृथक हैं।

'चित्रगुप्त को माण्डव्य ऋषि का श्राप'

श्री ब्रह्मा जी द्वारा उत्पन्न दिव्य पुरुष लेखनी, पट्टिका हाथ लिए सेवा में हाजिर हुआ। सृष्टी रचयिता ब्रह्मा के ही आदेशानुसार उज्जैन क्षेत्र में दीर्घ समय तक उस दिव्य पुरुष ने घोर तप किया । ब्रह्मा जी वहीं फिर प्रकट हुए और चित्रगुप्त द्वारा एक हजार वर्ष की एक महायज्ञ कराया। यज्ञ समाप्ति पर 12 कन्याऐं चित्रगुप्त की सेवार्थ प्राप्त हुई । 12 कन्याओं से 12 पुत्रों की प्राप्ति हुई। चित्रगुप्त ने 12 पुत्रों को ऋषि यों सुपुर्द कर दिया और ब्रह्मा जी की

आज्ञानुसार धर्मराज की मदद के लिए लेखन कार्य करने के लिए धर्मराज के पास चले गये एक समय ऐसा हुआ कि माण्डव्य ऋषि को राजदण्ड में शूली की सजा मिली। उसी में ऋषि का परलोक गमन हुआ। ऋषि क्रोध में थे कि मैंने कोई पाप नहीं किया है इस जीवन में क्या पूर्व के जीवन में भी मेरा कोई पाप नहीं है। मुझे शूली की सजा क्यों मिली, इस वात को लेकर ऋषि क्रोधवन्त होकर धर्मराज पर बरस पड़े। धर्मराज ने लेखाअधिकारी से पूछा तव लेखा अधिकारी ने लेखानुसार वताया कि महाराज जव आप 5 वर्ष के थे, उस वक्त आपने एक कीट की पूँछ के हिस्से में काँटा चुभाया था। वह उस काँटे से तड़प-तड़प कर प्राणों का त्यागन कर परलोक को आया। उस पाप से आपको शूली की सजा मिली है। इतनी सुन ऋषि और भी क्रोध से आग बबूला हो गये और धर्मराज को तो श्राप दिया कि तू सूद्र के घर मनुष्य शरीर में जाकर जन्म ले । तेने मेरे साथ घोर अन्याय किया है। जवकि 6 वर्ष की उम्र में वच्चे को अपने पराये का कोई वोध नहीं होता है और न उसे कोई पाप पुन्य का ज्ञान होता है कि क्या पाप होता है क्या पुन्य । ऐसी हालत में अज्ञान अवस्था का कोई पाप लगता ही नहीं और मुझे इतनी कड़ी सजा शूली की दिला दी और उस लेखाधिकारी चित्रगुप्त से कहा कि तूतो बड़ा निर्दई है, कि जो लेखा करते समय पाप की तुलना उम्र से नहीं कीनी और शूली की सजा लिख दी। जा तेरे लिए मेरा श्राप है, कि तेरे कायस्थ वंश का अस्तित्व नष्ट हो जाये, उसी श्राप से इसी वंश का अस्तित्व हींन हो गया । वैसे कर्म से श्रेष्ठ हैं। कर्मकाण्डी , विद्वान अपने गणित के प्रकाण्ड पंडित होते है। लेखा कार्य में सर्वोपरि श्रेष्ठ, जनेऊ धारण करते हैं। सिर पर लम्बी मोटी चोटी रखते हैं। मस्तक पर रक्त चन्दन धारण करते हैं। गणित के विशेषज्ञ होते हैं।

उधर धर्मराज ने दासी के गर्भ से विदुर भक्त रूप में पुरुष शरीर धारण किया।

यह माण्डव्य ऋषि के श्राप का ही कारण था। जो धर्मराज को श्रापवश मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ। प्रिय सज्जनों जो मुझे लेख प्रमाण मिला वही सत्य लिखा है।

(प्रमाण सत सहस्त्री संहिता पृ॰ 56)

प्रिय बन्धुओ जितनी जानकारी में मुझे उपलब्धि प्रमाणित तरीके से हुई यह लिखा है। विस्तृत जानकारी आगे के संस्करण में लिखूँगा प्रतीक्षा करिये।

किसी भी कायस्थ बन्धु को अगर जातीयता के वारे में विशेष जानकारी हो तो वह जानकारी देने की पा करें।

अवंटक - श्रीवास्तव, कुलश्रेष्ठ माथुर, सक्सेना, भटनागर, निगम, चक, सिन्हा, जोंहरी, आदि

नोट - चित्रगुप्त वंशज कायस्थों के बारे में विद्वानों ने जो लिखा है। सव अलग अलग तोर से लिखा है' किसी विद्वान ने लिखा है कि ये पाँचवें वर्ण के हैं तो किसी ने लिखा है कि ये वैश्यों से बड़े और ब्राह्मण

से छोटी जाती है परन्तु मांडव्य ऋषि के श्राप से ब्राह्मणत्व हीन हुए हैं । आदि आदि अनेकों विद्वानों ने पृथक ही लिखा है। मैं तो यह जानता हूँ कि ब्रह्मा जी की काया से उत्पन्न ऋषि की सन्तान तथा वैवस्तमनु की 8 कन्या 4 कन्या नागों की उनसे 12 पुत्र उत्पन्न होना फिर भी श्रेष्ठ ऋषियों के आश्रमों में शिक्षा प्राप्ति प्रत्यक्ष में कर्म काण्डी सद्रस्य ब्राह्मणों के बुद्धी की वरिष्ठ जाती है ।

इस में तो दो राय नहीं है कि कायस्थ जाती कोई उच्च जाती न हो। यह भले ही ब्राह्मण जाती सम मान्य विद्वानों ने नहीं की है फिर भी उच्च और श्रेष्ठ जाती है। गुणवान की इज्जत करना पंडित जनों का प्रथम लक्ष्य होता है। जिसमें कि कायस्थ जाति बुद्धिवान और कर्म निष्ट विद्वान जाति है। विद्वान सर्वदा पूज्य माना गया है।

पोराण पुरुष (चित्रगुप्त) '15 कायस्थ सारणी'

सं.	ऋषिगोत्र	अवंटक	देव	वेद	स्थल
1.	गौतम	श्रीगौड़कायस्थ	शिव	यजुर्वेद	गौड़ेश्वर क्षेत्र
2.	माण्डव्य	निगम	शिव	यजुर्वेद	माण्डव देश
3.	श्री हर्ष	श्रीवास्तव	शिव	यजुर्वेद	गंगातट क्षेत्र
4.	हारीत	श्रोंणपतिकुल श्रेष्ठ	शिव	यजुर्वेद	हरियाणा
5.	बाल्मीक	बाल्मीक	शिव	यजुर्वेद	आबूगढ़ मध्य प्र.
6.	वशिष्ट	वशिष्ठ	शिव	यजुर्वेद	अयोध्या
7.	हंस	सुखसेन सक्सेना	शिव	यजुर्वेद	सुखसेन देश
8.	दालभ्य	दालभ्य	शिव	यजुर्वेद	दालभ्य नदी तट
9.	भट्ट	भटनागर	शिव	यजुर्वेद	भट्टनगर क्षेत्र
10.	सोरभ	सूर्यध्वज	शिव	यजुर्वेद	सूर्यमण्डल क्षेत्र
11.	माथुर	माथुर	शिव	यजुर्वेद	मथुरा
12.	सोभरि	सोभरि	शिव	यजुर्वेद	सौराष्ट् देश
13.	चक	चक	शिव	यजुर्वेद	गंगा यमुना के क्षेत्र
14.	श्रीवत्सल	श्रीवत्सल	शिव	यजुर्वेद	गंगा यमुना के क्षेत्र
15.	निगम	निगम	शिव	यजुर्वेद	निगम क्षेत्र (उज्जैन)

"ब्रह्म-ज्ञान-ज्योति-वाक्य"

श्लोक -

नमस्तुभ्या पुण्डरीकाक्ष शंख चक्रगदाधार। मामुद्धरास्मादद्य त्वं त्वत्तोऽहं पूर्वमुत्थिता॥ त्वयाहमुद्धृता पूर्वं त्वन्मयाहं जनार्दन। तथान्यानि च भूतानि गगनादीन्यशेषतः। नमस्ते परमात्मात्मन्पुरुषात्मन्नमोऽस्तुते ॥ प्रधानव्यक्तभूताय कालभूताय ते नमः। त्वंकर्त्ता सर्व भूतानां त्वं पाता त्वं विनाशकृत् । स र्दिषु प्रभोब्रह्मविष्णु रूद्रात्मरूपधृक् ॥ सम्भक्षयित्वा सकलं जगत्ये कार्णवी वृ ते । शेषेत्वमेव गोविन्द चिन्त्यमानो मनीषिभिः ॥ भवतोयत्परं तत्वं तन्न जानाति कश्चन । अवतारेषु यद्रूपं तदर्चन्ति दिवौकसः ॥ त्वामारा परं ब्रह्म याता मुक्ति मुमुक्षवः। वासदेव मनाराध्य को मोक्षं समवाप्स्यति ॥ यत्किञ्चिन्मनसा ग्राह्यं यदि प्राग्रां चक्षुरादिभिः। बुद्धया च यत्परिच्छेद्यं तद्रूपमखिलं तव ॥ त्वन्मयाहं त्वदाधारा त्वत्सृष्टात्व त्समाश्रया । माधवीमिति लोकोऽयमभिधत्ते ततोहि माम्॥ जयखिलज्ञानमय जय स्थूलमयाव्यय । जयाऽनन्त जयाव्यक्त जय व्यक्तमय प्रभो॥ परापरात्मन्विश्वात्मश्जय यज्ञपतेऽनघ । त्वंयज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमोङ्कारस्त्वम ग्रयः ॥ त्वं वेदास्त्वं तदङ्गनित्वं यज्ञपुरुषो हरे। सूर्यादयो ग्रहास्तारा नक्षत्राण्यखिलं जगत् ॥ मूर्तामूर्तमदृ यं च दृश्यं च पुरुषोत्तम । यच्चोक्तं यद्य नैवोक्तं मयात्र परमेश्वर । तत्सर्वं त्वं नमस्तुभ्यं भूयो-भूयो नमो नमः ॥

(वि० पु० पृ० 11, 12 अ० 4)

अर्थ - हे शंख चक्र गदा धारण करने वाले कमलनयन भगवान । आप को नमस्कार है। आज आप इस जग से (भवसागर) उद्धार कीजिये पूर्व काल में आप ही से उत्पन्न हुआ। हे जनार्दन पहले भी आप ही ने उद्धार किया था । और मेरे तथा पृथ्वी आकाशादि अन्य सब भूतों के भी आप उपादान कारण हैं। हे परमात्मास्वरूप । आप को नमस्कार है । हे पुरुषोत्तम आपको मेरा नमस्कार है। हे प्रधान और कार्यरूप आप को नमस्कार है। हे कालस्वरुप आप को मेरा वारम्बार नमस्कार है। हे प्रभो जगत की सृष्टि आदि के लिए बृह्मा विष्णु और शिवरूप धारण करने वाले आप ही सम्पूर्ण भूतों की उत्पत्ति पालन औ र नाश करने वाले हैं। और जगत एकार्णवरूप (जलमय) हो जाने पर हे गोविन्द । सब को भक्षणकर अन्त में आप ही मनीषि जन्मोद्वारा चिन्तित होते हुए जल में शयनकरते हैं। हे प्रभो ! आप की जो गति (परितत्व) है उसे कोई भी नहीं जानता अत: आप का जो रूप अवतारों में प्रकट होता है। उसी को देवगण पूजा करते हैं। आप परमब्रह्म की ही आराधना करिके प्राणी जन मुक्त होते हैं । भला वासदेव की अराधना किये बिना कोन मोक्ष प्राप्त कर सकता है। मन से जो कुछ संकल्प किया जाता है । चक्षु आदि इन्द्रियों से जो कुछ ग्रहण करने योग्य

है, बुद्धि द्वारा जो कुछ विचारणीय है। वह सब आप ही का रूप है। हे प्रभो मैं आप ही का दास हूँ। आपके ही आश्रय हूँ। और आप ही के द्वारा उत्पत्ति हुई है, आपको ही प्राप्त हूँ। हे सर्वलोकनायक। हे [illegible]। हे अव्यक्त आप की जय हो। हे अनन्त हे सनातन प्रभो आप की जय हो। हे विश्वपालन। हे गणपति आप की जय हो। हे प्रभो आप ही यज्ञ है। आप ही ओंकार है। और आप ही [illegible] है। हे हरि। आप ही सिद्ध वेदाङ्ग है और यज्ञपुरुष हैं तथा सूर्य आदि ग्रह और नक्षत्र और सम्पूर्ण जगत भी आप हैं। हे पुरुषोत्तम। हे सर्वेश्वर। मूर्त अमूर्त, दृश्य अदृश्य तथा जो कुछ दिख पड़ता है और नहीं पड़ता है वह सब आप ही तो हैं। अतः आप को नमस्कार है बारम्बार नमस्कार है।

श्लोक - सर्वं हेदं ब्रह्मणा हैव सृष्टम् ऋग्भ्यो जातं वैश्यं वर्णमाहुः।
यजुर्वेदं क्षत्रियस्याहुर्योनिं सामवेदो ब्राह्मणानां प्रसूतिः॥

अर्थ - यह सब जगत ब्रह्म द्वारा सृष्ट हुआ है, ऋग्वेद से वैश्यवर्ण की तथा यजुर्वेद से क्षत्रिय वर्ण की सामवेद से ब्राह्मण वर्ण की उत्पत्ति कहते हैं।

([illegible] ब्राह्मण में लिखा है।)

श्लोक - [illegible]
[illegible]।

([illegible] ब्राह्मण में)

अर्थ - [illegible] क्षत्रिय की उत्पत्ति किया [illegible] वैश्य की उत्पत्ति किया। [illegible] ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य से ही [illegible] है।

([illegible] ब्राह्मण में)

श्लोक - दैव्यो वै वर्णो ब्राह्मणः असुर्यः शूद्रः।

अर्थ - ब्राह्मण वर्ण दैवी वर्ण माना है। शूद्र आसुरि वर्ण माना है। [illegible]

श्लोक - [illegible]।
[illegible]॥

([illegible] पुराण)

अर्थ – [illegible]

श्लोक – [illegible]

([illegible])

अर्थ – [illegible]

श्लोक – [illegible]

अर्थ – [illegible]

([illegible])

श्लोक – [illegible]

अर्थ – [illegible]

श्लोक

[illegible]

अर्थ – [illegible]

श्लोक – [illegible]

अर्थ – [illegible]

श्लोक - सृष्टिस्थित्यन्तकरणीं ब्रह्माविष्णु शिवात्मिकाम् ।
स संज्ञां याति भगवनेक एव जनार्दनः ॥

(वि.पु.पृष्ठ 8 श्लोक 66)

अर्थ - परमपिता परमात्मा ही जगत की सृष्टि स्थिति और संहार के लिए ब्रह्मा विष्णु और शिव इन तीनों रूपों को धारण करते हैं।

श्लोक - स एव सृज्यः स च सर्गकर्त्ता, स एव पात्यनित च पाल्यते च ।
ब्रह्माद्यवस्थाभिरशेष मूर्तिर्विष्णुर्वरिष्ठो वरदो वरेण्यः ॥

(वि.पु. 60 श्लोक अ.2)

अर्थ - वे सर्वरूप श्रेष्ठ वरदायक और प्रार्थना के योग्य भगवान विष्णु ही ब्रह्मा आदि अवस्थाओं द्वारा रचने वाले हैं। ये ही रचे जाते हैं। वे ही पालते हैं वे ही पालित होते हैं तथा वो ही संहार करते हैं। और स्वयं ही संहृत होते हैं।

श्लोक - कालस्वरूपं विष्णोंश्च यन्मयोक्तं तवानध ।
तेन तस्य निवोध त्वं परिमाणो पपादनम् ॥
अन्येषां चैव जन्तूनां चराणामंचराश्च ये ।

भू भू भृत्सागरादीनामशेषाणां च सत्तम ॥ काष्टा पश्चदशाख्याता निमेषा मुनि सत्तम । काष्टा त्रिशत्कला त्रिशत्कला मौहूर्ति को विधिः ॥ तावत्संख्ये रहोरात्रां मुहूर्तेर्मानुपं स्मृतं । अहोरात्राणि तावन्ति मासः पक्षद्वयात्मक । तैः षड्भिरयन वर्ण द्वेऽयने दक्षिणोंत्तरे । अयनं दक्षिणं रात्रिर्देवानामुत्तरे दिनम् ।

(वि० पु० पृष्ट 9 श्लोक 6 से 10)

अर्थ - भगवान विष्णु द्वारा कालस्वरूप से ब्रह्मा तथा और भी जो पृथ्वी पर्वत समुद्र आदि चराचर जीव हैं। उनकी आयु का परिमाण किया जात है, प्रन्द्रह निमेष को काष्ठा कहते हैं। तीस काष्ठा की एक कला तथा तीस कला का एक मुहूर्त होता है। तीस मुहूर्त का मनुष्य का एक दिन राति कहा जाता है। और उतने ही दिन रात का दो पक्ष युक्त एक मास होता है। छः महीनों का एक अयन और दक्षिणायन तथा उत्तरायण दो अयन मिलकर एक वर्ष होता है। दक्षिणायन देवताओं की रात्री है, और उत्तरायणो का दिन होता है।

श्लोक -

दिव्येर्वर्ष सहस्त्रौस्त कृतत्रेता दिसंज्ञितम् । चतुर्युगं द्वादशभिस्तद्विभागं निबोध मे ॥ चत्वारि

त्रीणिद्वे चैकं तादिषु यथाक्रभम्। दिव्याव्दानं सहस्त्राणि युगेष्वाहुः पुराविदः ॥ तत्रमाणों शतैः सन्ध्या पूर्वा तत्राभिधीयते। सन्ध्यांशश्चैव तत्तुल्यो युगस्यानन्तरो हिसः॥ सन्ध्यासन्ध्यांशयोरन्तर्थः कालो मुनिसत्तम। युगाख्यः सतु विज्ञेयः कृतत्रेता दिसंज्ञितः॥ तंत्रेता द्वापुरश्च कलिश्चैव चतुर्युगम्। प्रोच्यते तत्सहस्त्रां च ब्रह्मणों दिवसं मुने॥ ब्राह्मणों दिवसे ब्रह्मन्म नवस्तु चतुर्दश। भवन्ति परिमाणां च तेषां काल तं शृणु॥ सप्तर्षयः सुराः शक्रो मनुस्तत्सूनवो नृपाः। एक काले हि सृज्यन्ते सह्रियन्ते च पूर्ववत्।

(विष्णु पुराण पृष्ट-9 श्लोक 11 से 15)

अर्थ - पुरातत्व के जानने वाले सतयुग आदि का परिमाण क्रमशः चार तीन दो और एक हजार दिव्य वर्ष बतलाते हैं, प्रत्येक युग के पूर्व उतने ही सौ वर्ष की संध्या बताई जाती है। और युग के पीछे उतने ही परिमाणवाले संध्याँश होते हैं। अर्थात् सतयुग आदि के पूर्व क्रमशः चार तीन दो और एक सौ दिव्य वर्ष की सन्ध्याएँ और इतने ही वर्ष के सन्ध्यांश होते हैं। इन सन्ध्या और सन्ध्यांशों के बीच का जितना काल होता है। उसे ही सतयुग आदि नाम वाले युग जानना चाहिये। सतयुग त्रेता द्वापुर और कलियुग ये मिलकर चतुर्युग कहलाते हैं। ऐसे हजार चतुर्युग का ब्रह्मा एक दिन होता है। ब्रह्मा के एक दिन में चौदह मनु होते हैं। उनके काल का परिमाण। शप्तर्षि देवगण इन्द्र मनु और मनु के पुत्र राजा लोग पूर्व कल्पनानुसार एक ही काल में रचे जाते हैं और एक ही काल में उनका संहार किया जाता है।

श्लोक-

चतुर्युगाणां संख्याता साधिका ह्येकसप्ततिः। मन्वन्तरं मनोःकलाः सुरादीनां च सत्तम॥ अष्टोशत सहस्त्राणि दिव्यया संख्यया स्मृतम्। द्विपिश्चाशत्तथान्यानि सहस्त्राण्यधिकान तु॥ त्रिंशत्कोटयस्तु सम्पूर्णाः सांख्याताः संख्यया द्विज। सप्तवष्टिस्तथान्यानि नियुतानि महामुने विंशतिस्तु सहस्त्राणि कालोऽय मधिकं विना। मन्वन्तरस्य संखयेयं मानुषैर्षत्सरैर्द्विज॥ चतुर्दशगुणों ह्येषकालो ब्राह्ममहः स्मृतम्। ब्राह्मो नैमित्तिको नाम तस्यान्ते प्रतिसश्चरः॥ तदाहि दह्यते सर्व त्रैलोक्यं भूर्भवादिकम्। जनं प्रयान्ति तापार्ता महर्लोकनिवासिनः॥ एकार्णवे तु त्रैलोक्ये ब्रह्मा नारायणात्मकः। भोगिशय्यां गतः शेते त्रैलोक्य ग्रास वृंहित॥

(वि.पु.पृष्ठ 10 श्लोक 18 से 24)

अर्थ - इकहत्तर चतुर्युग से कुछ अधिक काल का एक मन्वन्तर होता है। यही मनु और देवता आदि का काल है, इस प्रकार दिव्य वर्ष गणना से एक मन्वन्तर में आठलाख वावन हजार वर्ष बताये जाते हैं। मानवी वर्ष गणना के अनुसार मन्वन्तर का परिमाण पूरे तीस करोड़ सरसठ लाख बीस हजार वर्ष है। इससे अधिक नहीं इस काल का चौदह गुना ब्रह्मा का दिन होता है। इसके अनन्तर नैमितिक नामवाला ब्रह्मप्रलय

होता है। उस समय भूलोक भुवर्लोक और स्वर्लोक तीनों जलने लगते हैं और महर्लोक में रहने वाले सिद्धगण अति दुखी होकर जनलोक वासी योगियों द्वारा ध्यान किये जाते हुए नारायणरूप कमल योनि ब्रह्मा जी त्रिलोकी के ग्रास से तृप्त होकर दिन के बराबर ही परिमाणवाली उस रात्रि में शेषसय्यापर शयन करते हैं। और उसके बीत जाने पर पुनः संसार की सृष्टि करते हैं। इसी प्रकार द्वपक्ष मास आदिक्रपि गणन ब्रह्माका एक वर्ष और फिर सौ वर्ष होते हैं। ब्रह्मा का एक वर्ष और फिर सौ वर्ष होते हैं। ब्रह्मा के सौ वर्ष ही उस महात्मा की परमदल है।

श्लोक-

यदास्य ताः प्रजाः सर्वा न व्यवर्धन्त धीमताः। अथान्यान्मा सान्पुत्रान्स दृशानात्मनोऽसृजत्॥ भृगु पुलस्त्यं पुलहं क्रतुमग्ङिरसं तथा। मरीचिं दक्षमत्रि च वशिष्ठ चैव मानसान्॥ नव ब्रह्याण इत्येते पुराणों निश्चयं गताः। ख्यतिं भूतिंच सम्भूतिं क्षमां प्रीतिं तथैव च। प्रसूतिं च ततः सृष्ट्वाददौतेष महात्मनाम्॥ पल्यो भवध्वभित्युक्त्वा तेषामेव तु दत्तवान्।

(विष्णु पुराण पृष्ठ 23 पर 4 से 8 श्लोक)

अर्थ - जब महाबुद्धिमान प्रजापति की वह प्रजा पुत्रपोत्रादि क्रम से न बढ़ी तब उन्होंने भृगु पुलस्त्य पुलह क्रतु अंगिरा मरीच दक्ष अत्रि और वशिष्ठ इन अपने ही समान अन्य मानस पुत्रों की सृष्टि की पुराणों में यह नौ ब्रह्मा माने गये हैं। फिर ख्याति भूति सम्भूति क्षमा प्रीति सन्नति ऊर्जा अनसुया तथा प्रसूति इन नौ कन्याओं को उत्पन्न कर इन्हें उन नौऊ महात्माओं को कि तुम इनकी पत्नी हो ऐसा कहकर सोंप दिया।

श्लोक-

ततो ब्रह्माऽऽत्म सम्भूतं पूर्व स्वायम्भुवं प्रभुः। आत्मानमेव तवान्प्रजापाल्ये मनुं द्विज॥
सतरुपां चतां नारी तपोनिर्धूत कल्मषम्। स्वायम्भवो मनुर्देव पत्नीत्वे जगृहे प्रभुः॥
तस्मात्तु पुरूषाद्देवी शतरूपाव्यजायत। प्रियव्रत्तोत्तानपादौ प्रसूत्याकूति संज्ञितम्॥
कन्याद्वयं चधर्मज्ञ रूपौदार्य गुणान्वितम। ददौ प्रसूतिं दक्षाय आकूतिंरूचयेपुरा॥

(विष्णु पुराण पृष्ठ 24 श्लोक 16 से 19)

अर्थ - परमजगत पिता श्री ब्रह्मा जी ने अपने से उत्पन्न अपने ही स्वरूप स्वायम्भव को प्रजापालने के लिए प्रथम मनु बनाया। उन स्वयम्भवमनु ने (अपने ही साथ उत्पन्न हुई) तप के कारण निष्पाप शतरूपा नाम की स्त्री को अपनी पत्नी रूप से ग्रहण किया। उन स्वायम्भव मनु से शतरूपा देवीने प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र तथा उदार रूप और गुणों से संम्पन्न प्रसूति और आकूति नाम की दो कन्याएँ उत्पन्न की। उनमें से प्रसूति को दक्ष के साथ तथा आकूति को रूचि प्रजापति के साथ विवाह दिया ।

श्लोक-

प्रजापतिः सजग्राह तयोर्जज्ञे सदक्षिणाः। पुत्रो यज्ञो महाभाग दम्पत्योर्मिथुनं

ततः॥ यज्ञस्य दक्षिणायां तु पुत्रा द्वादश जज्ञिरे। यामा इतिसमाख्याता देवाः स्वायम्भवो मुनी॥ प्रसत्यां च तथा दक्षश्चतस्रों विंशितिस्तता।

ससर्ज कन्यास्तासां च सम्यङ् नामानि में श्रृणु॥ श्रद्धा लक्ष्मीर्धृतिस्तुष्टिर्मेधा पुष्टिस्तथा क्रिया। बुद्धिलज्जा वपुः शान्तिः सिद्धिः कीर्तिस्त्रायोदशी॥ यत्यर्थं प्रतिजग्राह धर्मो दाक्षायणीः प्रभुः। ताभ्यः शिष्टाः यवीयस्य एकादश सुलोचनाः॥ ख्यातिः सत्यथ सम्भूतिः स्मृतिः प्रीतिः क्षमा तथा सन्ततिश्चान सूया च उर्ज्जा स्वाहा सुधा तथा॥ भृगुर्गवो मरीचिश्च तथा चैवाङ्गिरामुनिः। पुलस्त्यः पुलहश्चैव क्रतुश्चर्षिवरस्तथा॥ अत्रिर्वशिष्ठो वह्निश्च पितरश्च यथा क्रमम्। ख्यात्याद्या जगृहुः कन्या मुनियों मुनिसत्तम्॥

(विष्णु पुराण पृष्ठ 25 श्लोक 20 से 26)

अर्थ- रूचि प्रजापति ने उसे ग्रहण कर लिया तव उन दम्पति के (स्त्री) यज्ञ और दक्षिणांये युगल (जोल्ला) सन्तान उत्पन्न हुई। यज्ञके 12 बारह पुत्र हुए जो स्वायम्भव मन्वन्तर में याम नाम के देवता कहलाये। तथा दक्ष ने प्रसूति से चौवीसकन्याऐं उत्पन्न की जिनके नाम निम्नप्रकार हैं। श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, तुष्टि, मेघा, पुष्टि, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शांति, सिद्धि और तेरहवी कीर्ति इन दक्ष कन्याओं को धर्म ने पत्नी रूप में ग्रहण किया। इन से छोटी शेष ग्यारह कन्याऐं ख्याति सती सम्भूती स्मृति प्रति क्षमा सन्तति अनुसूया उर्ज्जा स्वाह और स्वधा थीं। ख्याती आदि कन्याओं को क्रमशः भृगु शिव मरीच अंगिरा पुलस्त्य पुलह क्रतु अत्रि वसिष्ठ इन मुनियों तथा अग्नि और पितरों ने ग्रहण किया। इनको पृथक पृथक सन्तानें उत्पन्न हुई।

श्लोक- रोद्राष्येतानि रूपाणि विष्णोर्मुनिवरात्मज। नित्यप्रलयहेतुत्वं जगतोऽस्य प्रयान्ति वै॥ दक्षो मरीचिश्च भृग्वाद्याश्च प्रजेश्वराः। जगत्यत्रा महाभाग नित्यसर्गस्य हेतवः॥ मनवो मनुपुत्राश्च भूपा वीरधराश्च ये। सन्मार्ग निरताः शूरास्ते सर्वे स्थिति कारिणाः॥ सर्गस्थितिविनाशांश्च भगवान्मधुसूदन। तैस्तै रूपेरचिन्त्यात्मा करोत्यव्याहतो विभुः॥

(विष्णु पुराण पृष्ठ 35 श्लोक 36,36,38,40)

अर्थ - ये भगवान विष्णु के बड़े भयंकर रूप है। और ये संसार के नित्य प्रलय के कारण होते हैं। दक्ष मरीचि अत्रि और भृगु आदि प्रजापतिगण इस जगत के नित्य सर्ग के कारण हैं। तथा मनु और मनु के पराक्रमी सन्मार्गपरायण और शूरवीर पुत्र राजागण इस संसार की नित्य स्थिति के कारण है। जिनकी गति कहीं नहीं जासकती वे अचिन्त्यात्मा सर्वव्यापक भगवान मधुसुदन निरन्तर इन मनु आदि रूपों से संसार की उत्पत्ती स्थिति और नाश करते रहते हैं।

श्लोक-ततोऽभिध्यायतस्तस्य जज्ञिरे मानसाः प्रजाः॥ तच्छरीरसमुत्पन्नैः कार्यैस्तैः करणैः सह॥

क्षेत्रज्ञाः समवर्त्तन्त गात्रेभ्यस्तस्य धीमतः। ते सर्वे समवर्त्तन्त ये मया प्रागुदाहृताः॥ देवाद्याः स्थावरान्ताश्च त्रगुण्यविषये स्थिताः। एवं भूता निसृष्टानि चराणि स्थावराणि च॥

(विष्णु पुराण पृष्ठ 23 श्लोक 1,3)

अर्थ - प्रथम में ब्रह्म जी ने सृष्टि रचना की जिसका पीछे वर्णन किया जा चुका है। फिर प्रजापति के ध्यान करने पर उनके देहस्वरूप भूतों से उत्पन्न हुए शरीर और इन्द्रियों के सहित मानस प्रजा उत्पन्न हुई, उस समय मतिमान् ब्रह्माजी के जड़ शरीर से ही जीवों की उत्पत्ति हुई जो पूर्व में लेखक ने उल्लेख किया है। देवताओं से लेकर थल,जल, वायु पर्यन्त वे सभी त्रिगुणात्मक चर और अचर जीव इसी प्रकार उत्पन्न हुए।

श्लोक-रौद्राण्येतानि रूपाणि विष्णों मुंनिवरात्मज। नित्य प्रलयहेतुत्वं जगतोऽस्य प्रयान्ति वै॥ दक्षो मरीचिरत्रिश्च भृग्वाद्याश्च प्रजेश्वराः। जगत्यत्रा महाभाग नित्यसर्गस्य हेतवः॥ मनवो मनुपुत्राश्च भूपावीर्यधराश्चये । सन्मार्गनिरताः शूरास्ते सर्वे स्थितिकारणाः॥ सर्गस्थितिविनाशांश्च भगवान्मधुसूदनः। तैस्तै रूपैरचिन्त्यात्मा करोत्य व्याहतो विभुः॥

(विष्णु पुराण पृष्ठ 24 श्लोक 36 से 40)

अर्थ - भगवान विष्णु के बड़े भयंकर रूप हैं। और ये ही संसार के नित्य प्रलय के कारण होते हैं। दक्ष मरीचि अत्रि भृगु आदि प्रजापति गण इस जगत के नित्य उत्पत्ति के कारण हैं। तथा मनु और मनु के पराक्रमी सन्मार्गपरायण शूरवीर पुत्र राजागण इस संसार की नित्यस्थिति के कारण हैं। भगवान मधुसूदन निरन्तर इन मनु आदि रूपों से संसार की उत्पत्ति नांश करते हैं । यही मन्वन्तरों में युग युग में ब्रह्मा जी का सृष्टि रचना का क्रम है।

श्लोक-बलशौर्याद्यभावश्च पुरूषाणां गुणैर्विना । लङ्घनीयः समस्तस्य बलशौर्य विवर्जितः॥ भवत्यपध्वस्तमतिर्लज्जितः प्रथितः पुमान।

अर्थ - विनागुणों के पुरुषों में बल शौर्य आदि सभी का अभाव हो जाता है। निर्बल तथा अशक्त पुरुष सभी से अपमानित होता है। अपमानित होने पर प्रतिष्ठित पुरुष की बुद्धि बिगड़ जाती है।

नोट - मन्वन्तरों में युगयुग में सृष्टि चौदहमनु तथा दश प्रचेताओं के द्वारा हुई हैं। तथा अट्ठाईस व्यास अवतरित हुए हैं। प्रत्येक द्वापुर में व्यास जी विष्णुअंश से अवतरित होते हैं।

श्लोक-वेदद्रुमस्य मैत्रेयशाखा भेदास्सहस्त्राशः। न शक्तो विस्ताराद्वक्तुं सक्षेंपेण शृणुष्व तम्॥ द्वापरे-द्वापुरे विष्णुर्थाव्यासरूपी महामुने। वेदमेकं सुवहुधा कुरूते जगतो हितः॥ वीर्य तेजों वलं चाल्यं मनुष्याणाम वेक्ष्य च। हिताय सर्व भूतानां वेदभेदान्करोति सः॥ ययासौ कुरूते तन्वा वेदमेकं पृथक प्रभुः। वेदव्यासभिधानां तु सा च मूर्तिर्मधुद्विषः॥

अर्थ - संसार में कल्याण के लिये एक वेद के अनेक भेद कर देते हैं। मनुष्यों के बलवीर्य और तेज को अल्प जानकर वे समस्त प्राणियों के हित के लिये वेदों का विभाग करते हैं, भगवान मधुसूदन की उस मूर्ति का नाम वेदव्यास है। अब तक प्रत्येक द्वापरयुग में इस वैवस्वतमन्वन्तरों के प्रत्येक में चार-चार भाग किये हैं। जिनकी गणना निम्नप्रकार है।

पहले द्वापुर युग में स्वयं ब्रह्मा जी ने विभाजन किया था। दूसरे में वेदव्यास प्रजापति हुए तीसरे में शुक्राचार्य जी चौथे में वृहस्पति जी व्यास हुए। पाँचवें में सूर्य और छटे में मृत्यु व्यास कहलाये। सातवें में इन्द्र आठवें में वशिष्ठ जी वेदव्यास हुए। नौवें में सारस्वत् दशवें दशवें में त्रिधामा व्यास कहे जाते हैं, ग्यारहवें में त्रिसिख बारहवें में भरद्वाज तेरहवें में अन्तरिक्ष चौदहवें में वर्णी नामक व्यास हुए।

प्रन्द्रहवें में त्रय्यारूण सोलहवें में धनंज्जय सत्तरहवें में क्रतुन्जय तथा अठारहवें में जय नामक व्यास हुए, उन्नीसवें में व्यास भारद्वाज हुए, बीसवें में गौतम व्यास हुए इक्कीसवें में हर्यात्मा व्यास हुए बाईसवें में वाजश्रवा मुनि हुए, तेईसवें में सोमसुसमवंशी त्रंणविन्दु व्यास हुए चौवीसवें में भृगु वंशी ऋक्ष, व्यास हुए जो वाल्मीक कहलाये पच्चीसवें शक्ति हुए जिनके पुत्र (पाराशर) हुए छब्वीसवें में पराशर व्यास हुए, सत्ताईसवें में जातुकर्ण व्यास हुए अट्ठाईसवें में कृष्णद्वैपायन व्यास हुऐ बाद आगामी द्वापुर युग में द्रोण पुत्र अश्वस्थामा वेदव्यास हो गये।

श्लोक - आद्यां सर्व पुराणांनां पुराणं ब्रह्ममुच्यते।
अष्टदश पुराणानि पुराणाज्ञाः प्रचक्षते॥

अर्थ - पुराणज्ञ पुरुष कुल अठारह पुराण बतलाते हैं। उन सब में प्राचीनतम ब्रह्मपुराण हैं।

श्लोक-ब्राह्मं पाद्मं वैष्णावं च शैवं भागवतं तथा। तथान्यं नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्॥ आग्नेय मष्टमं चैव भविष्यन्नवमं स्मृतमं। दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैंग्गमेकादशं स्मृतम्॥ वाराहं द्वादशं चैव स्कान्दं चात्र त्रयोदशम्। चतुर्दश वामनं च कौर्म पंश्चदशं तथा॥ मत्स्यं च गरूणां चैव ब्रह्माण्डं च ततः परम्। महा पुराणांन्येतानि ह्यष्टादशमहामुने ॥ तथा चोपपुराणानि मुनिभिः कथितानि च। सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंश मन्वन्तराणि च ॥ सर्वेष्वेतेषु कथ्यन्ते वंशानुचरितं च यत्। यदे तत्तव मैत्रेय पुराणं कथ्यते मया॥ अग्गानि वेदाश्चत्वारों मीमांन्सा न्यायविस्तरः। पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश॥ आयुर्वेदोधनुर्वेदो गान्धर्वश्चैव ते त्रयः-अर्थ शास्त्रं चतुर्थं तु विद्या ह्याष्टादशैवताः।

(विष्णु पुराण पृष्ठ 178 श्लोक 20,29)

अर्थ - प्रथम पुराण ब्रह्मपुराण है। दूसरा पाद्म पु॰ तीसरा वैष्णव या विष्णु पु॰ चौथा शैव पु॰ पाँचवीं भागवत पु॰ छटवी आग्रेय सातवीं मार्कण्डेय आठवीं नारदीय पु॰ नौवी भविष्यति पु॰ दशवीं ब्रह्मवैवर्त पु॰, ग्यारहवीं लिंग पु॰ बारहवीं बाराह पु॰ तेरहवीं मत्स्य पु॰ चौदवीं वामन पु॰ पन्द्रहवीं कोर्मपु सोलहवीं गरुड़ पु॰ सत्तरहवीं ब्रह्ममाण्ड पु॰ अठारहवीं स्कान्द पु॰ ये ही अठारह पुराण है। इनके अलावा मुनि जनों ने और

भी अनेक उपपुराण बतलाये हैं। इन सभी में सृष्टि प्रलय देवता आदिकों के वशं मन्वन्तर और भिन्न-भिन्न राजवंशों के चरित्रों का वर्णन किया गया है। छः वेदांङ्ग चार वेद, मीमांसा,न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र ये ही चौदह विद्या हैं। इन्ही में आयुर्वेद धनुर्वेद और गान्धर्व इन तीनों को और चौथे अर्थशास्त्र को मिलालेने से कुल अठारह विद्या हो जाती हैं। ऐसा विद्वानों का मत मिला है।

नोट-

1. ब्राह्मणजाति- समाज व्यवस्था के उस अंग का नाम है। जिसने सदैव से समूचे समाज को दिशा दी है। (मार्ग दर्शन कराया है।)

2. यज्ञोपवीत (जनेउ) -

श्लोक - यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्चशुभ्रं, यज्ञोपवीतं वलमस्तु तेजः॥

अर्थ – मानव जीवन को सोलह संस्कारों में बांधा गया है। इनमें से जीव के जन्म तक तीन संस्कार और जन्म के बाद नामकरण, अन्नपरासन , मुन्डनसंस्कार के बाद प्रमुखरूप से आठवां संस्कार यज्ञोपवीत का है।

यज्ञोपवीत वेदारंम्भ और समावर्तन यह तीन शैक्षणिक संस्कार होते हैं। इनमें से यज्ञोपवीत मुख्य है। यज्ञोपवीत का अर्थ है, यज्ञ को प्राप्त करने वाला। यज्ञ को भगवान विष्णु ही माना (परमात्मा) है। यज्ञोपवीत को ब्रतबन्ध मौज्जी बंधन, जनेउ संस्कार आदि नामों से भी जाना जाता है।

3. यज्ञोपवीत – यज्ञोपवीत द्वजाति कर्त्तव्य और संम्पूर्ण उत्तरदायत्वों (भार) को निभाने की भावनाओं का प्रतीक है' जो परमपिता ने उसको सोंपे हैं। सभी जातियाँ आर्य जाति का अभिन्न अंग है। ब्राह्मणबालक का जन्म से आठवें वर्ष वसंत ऋतु में क्षत्री का ग्यारहवें वर्ष ग्रीष्म ऋतु में और वैश्य बालक का बारहवें वर्ष शरद ऋतु में जनेउ या यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता है। इसके सूचक हैं 1. ऋषि गण 2. पितृ गण 3. देव ऋण अर्थात मनुष्य को जीवन में तीन बातों का स्मर्ण रखना चाहिये। 1. अध्ययन 2 आज्ञापालन 3. अनुशासन इन्हीं कारणों से संस्कार के समय पर तीन ही वेदियां बनाई जाती हैं। यज्ञोपवीत में पृथक-पृथक ऋषि गोत्र प्रवरों के मुताबिक अलग अलग संख्या की गांठें लगाई जाती हैं।

शास्त्रों में ऋषि कात्यायन ने कहा है।

श्लोक - सदोपवीतनाभाव्यं सदा वद्धशिखेन च ।

अर्थात् ब्राह्मण को सदां यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। जिससे वह समाज और परिवार तथा मानवता के लिये सदा कार्य करता है। श्री मदभागवत् में ग्यारहवें स्कन्द के तेईसवें अध्याय कें सत्तरहवे श्लोक में

कहा है-

श्लोक - ब्राह्मणस्य स्यैव देहोऽयम् क्षुद्र कामायनेस्यते।
कृच्छाय तपसे चेह प्रेत्यानत सुखाय॥

अर्थात ब्राह्मण का यह शरीर क्षुद्र कार्यो में नहीं लगता है। जब तक संसार में है, तब तक कठिन तपोमय जीवन है। शरीर छोड़ने पर भी आत्म तत्व में विलीन होता है। तथा ये भी कहा है। पुरोहित के बारे में –वयं राष्ट्र में आगे आकर परहित के लिये जीवन धारण करते हैं।

श्लोक - चतुर्दस्यष्टमी चैव तथामा चाथ पूर्णिमा।
पर्वाण्येतानि राजेन्द्र रविसंक्रातिरेव च॥
तैल स्त्रीमास संम्भोगी सर्वेष्वेतेषु वै पुमान।
विष्मूत्र भोजनं नाम प्रयाति नरकं मृतः॥

अर्थ – चतुर्थशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और सूर्य की संक्राति ये सव पर्वदिन हैं। इन पर्वदिनों में तैल, स्त्री अथवा माँस का भोजन (भोग) करने वाला पुरुष मरने पर विष्ठा और मूत्र से भरे नरक में पड़ता है।

33 प्रमाण सम्बन्धित पुस्तकें

1. सतसहस्त्री संहिता
2. बाल्मीकि रामायण
3. रामचरित मानस तुलसी कृत
4. ब्राह्मण उत्पत्ति मार्तण्ड पुराण
5. विष्णु पुराण
6. पद्म पुराण
7. देवी भागवत
8. हरिवंश पुराण
9. श्री मद्भागवत
10. लिंङ्ग पुराण
11. सनाढ्य संहिता
12. मत्स्य पुराण
13. जाति भाष्कर — लेखक पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र
14. पंजीकार की पंजी की प्रति 1954 से 2005 — लेखक पं. देवचन्द्र मिश्र व मिथिला पंजी ले. प. श्री गोविन्द मिश्र, सौराठ टोला, पोखरोनी (दरभंगा) सन् 1954
15. मुगलशासन का इतिहास — लेखक शशिनाथ चौधरी
16. मानसरोवर — पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र
17. मिथिला का इतिहास — लेखक श्री कान्त मिश्र
18. हमारा प्रवास — लेकख पं. फूलचन्द मिश्र
19. प्रवास दर्पण — लेखक पं. रामचन्द्र मिश्र
20. मनुस्मृति
21. आदि गौड़ दीपिका
22. मनुस्मृति
23. कुलदीपिका
24. देवीवर–घटककृतिकारका
26. आयनात्रिहुत(दरभंगा)
29. ब्रह्मवैवर्तपुराण